ih. 4. 6. 2. हैतवः पाराशर्यायणात्
— पाराशर्यायणो गार्ग्यायणा-
त्

पारिक्षित

ih. 3. 3. 1. क पारिक्षिता अभवन् (ter).

पारुष्य

16. 4. क्रोधः पारुष्यमेव च

पार्थ

tâ. 1. 25. उवाच पार्थ पश्यैतान्
26. तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः
2. 3. क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ
21. कथं स पुरुषः पार्थ
32. सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ
39. बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ
42. वेदवादरताः पार्थ
55. सर्वान्पार्थ मनोगतान्
72. एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ
3. 16. मोघं पार्थ स जीवति
22. न मे पार्थास्ति कर्त्तव्यम्
23. मनुष्याः पार्थ सर्वशः 4. 11.
4. 33. सर्वं कर्माखिलं पार्थ
6. 40. पार्थ नैवेह नामुत्र
7. 1. मय्यासक्तमनाः पार्थ
10. विद्धि पार्थ सनातनम्
8. 8. याति पार्थानुचिन्तयन्
14. तस्याहं सुलभः पार्थ
19. रात्र्यागमे ऽवशः पार्थ
22. पुरुषः स परः पार्थ
27. नैते सृती पार्थ जानन्
9. 13. महात्मानस्तु मां पार्थ
32. मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य
10. 24. मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्
11. 5. पश्य मे पार्थ रूपाणि
9. दर्शयामास पार्थाय
12. 7. भवामि नचिरात्पार्थ
16. 4. अज्ञानं च . . पार्थ

Gîtâ. 16. 6. आसुरं पार्थ मे शृणु
17. 26. सच्छब्दः पार्थ युज्यते
28. असदित्युच्यते पार्थ
18. 6. इति मे पार्थ निश्चितं मतम्
30. बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी
31. बुद्धिः सा पार्थ राजसी
32. बुद्धिः सा पार्थ तामसी
33. धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी
34. धृतिः सा पार्थ राजसी
35. धृतिः सा पार्थ तामसी
72. कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ
74. पार्थस्य च महात्मनः
78. यत्र पार्थो धनुर्धरः

पार्थिव

Brih. 6. 3. 6. मधुमत्पार्थिवं रजः
Mahânâr. 9. 9; 17. 7.
Amṛita. 30. पार्थिवः पञ्चमात्राणि

पार्वती

Haṁsa. 1. पार्वत्या कथितं तत्त्वम्

पार्श्व

Brih. 1. 1. 1. दिशः पार्श्वे
1. 2. 3. दक्षिणा चोदीची च पार्श्वे
Nṛip. 5. 2. सूर्याचन्द्रमसौ पार्श्वयोः (आसाते)
Garbha. 5. षोडश पार्श्वदन्तोष्ठपट
Haṁsa. 2. अग्निशोभे पार्श्वे भवतः
— शिष्टोभयपार्श्वे भवतः
Râmap. 60. कुरुद्वयं च तत्पार्श्वे

पार्श्वार्चन

Râmap. 85. पार्श्वार्चनं मध्यपद्मार्चनं च

पार्ष्णि

Chûl. 13. पार्ष्णिगः सलिल एव स (पार्ष्णिः पादपृष्ठं तत्तुल्यः संहारे लोकमर्दनात् Nârâyaṇa).

पालाश

Aruṇeya. 5. पालाशं बैल्वमौदुंबरं दण्ड-
म्

पावक

Maitri. 6. 34. तत एव पवमानपावकशु-
चयः
— पवमानपावकशुचिसंघातो
हि जाठरः
Muṇḍ.2. 1. 1. यथा सुदीप्तात् पावकाद्वि-
स्फुलिङ्गाः
Mahânâr. 3. 6. पावकाय विद्महे
Gîtâ. 2. 23. नैनं दहति पावकः
10. 23. वसूनां पावकश्चास्मि
15. 6. न शशांको न पावकः

पावन

Maitri. 6. 7. पवनात्पावनः
Gopî. 5. मण्डनात्पावनं नृणाम्
— पावनं पीतवर्णकम्
Gîtâ. 18. 5. पावनानि मनीषिणाम्

पावनि

Mukti. 2. 33. त्वं पावने शृणु सादरम्

पाश

Kaṭha. 4. 2. ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पा-
शम्
Maitri. 4. 2. सदसत्फलमयैः पाशैः पङ्गु-
रिव बद्धम्
Mahânâr.20. 13. उन्मुक्तो वरुणस्य पाशः
Kaivalya. 11. पाशं दहति पण्डितः
Kshur. 22. पाशं छित्त्वा यथा हंसः

पाशबद्ध

Skanda. 7. पाशबद्धस्तथा जीवः

पाशमुक्त

Skanda. 7. पाशमुक्तः सदाशिवः

पाशुपत

Siras. 5. यस्माद्व्रतमिदं पाशुपतं
— तदेतत् पाशुपतं पशुपा
विमोक्षणाय
Mukti. 1. 37. सावित्र्यात्मा पाशुपतम्
1. *vide* गारुड

पाषाण

Dhyâna. 7. पाषाणेष्विव काञ्चनं Yo
8.
Râmot. 4. पाषाणप्रतिमादिषु

पिङ्गल

Kaush. 4. 19. पिङ्गलस्याणिम्ना तिष्ठ
Chhâ. 8. 6. 1. ताः पिङ्गलस्याणिम्नस्ति
न्ति
— असौ वा आदित्यः पि
Bṛih. 4. 3. 20. शुक्लस्य नीलस्य पिङ्ग
4. 4. 9. पिङ्गलं हरितं लोहितं
6. 4. 15. पुत्रो मे कपिलः पिङ्गलो
येत

पिङ्गला

Kshur. 16. पिङ्गला दक्षिणेन तु

पिण्ड

Maitri. 7. 11. लोहितस्यात्र पिण्डः
Garbha. 3. अर्द्धमासाभ्यन्तरे
Piṇḍa. 1. मृतस्य दीयते पिण्ड
4. प्रथमेन तु पिण्डेन (
with each numb
to दशमेन)
9. पिण्डे पिण्डे शरीर
Gîtâ. 1. 42. लुप्तपिण्डोदकक्रिया

पिण्डदान

Piṇḍa. 9. पिण्डे पिण्डे शरीर
ण्डदानेन संभवः

पिण्डीकरण

Garbha. 1. आपः पिण्डीकरणे

पितापुत्रीय

ush. 2. 15. अथातः पितापुत्रीयं संप्रदानम्.

पितामह

ih. 6. 2. 8. मापराधास्तव च पितामहाः
ivalya. 2. तस्मै स होवाच पितामहश्च
yâna. 12. चतुर्वक्त्रं पितामहम्
tâ. 1. 12. कुरुवृद्धः पितामहः
26. पितॄनथ पितामहान्
34. तथैव च पितामहाः
9. 17. माता धाता पितामहः

पितृ

ush. 1. 1. पितरमासाद्य पप्रच्छ
2. द्वादशत्रयोदशेन पित्रासम्
2. 15. पिता पुत्रं प्रेष्यन्नाह्वयति
— अहतेन वाससा सम्प्रच्छन्नः पिता शेते
— वाचं मे त्वयि दधानीति पिता वाचं ते मयि दध इति पुत्रः (similarly 11 times more).
— तं पितानुमंत्रयते
— स यद्यगदः स्यात्पुत्रस्यैश्वर्ये पिता वसेत्
.. 2. 9. 8. तदस्य पितरो ऽन्वायत्ताः
2. 21. 1. सर्पा गन्धर्वाः पितरस्तन्निधनम्
2. 22. 2. स्वधां पितृभ्यः
3. 11. 4. पिता ब्रह्म प्रोवाच
5. पिता ब्रह्म प्रब्रूयात्
5. 1. 7. प्राणाः प्रजापतिं पितरमेत्योचुः
5. 3. 1. कुमारानु त्वाशिषत्पिता
4. आयस्तः पितुरर्द्धमेयाय
6. 1. 1. तं ह पितोवाच 3.
7. 15. 1. प्राणो ह पिता

Chhâ. 7. 15. 2. स यदि पितरं वा..किंचिद्भृशमिव प्रत्याह
8. 2. 1. पितरः समुत्तिष्ठन्ति
Brih. 1. 4. 16. यत्पितृभ्यो निपृणाति..तेन पितॄणाम्
1. 5 1. मेधया तपसाजनयत्पिता 2.
6. देवाः पितरो मनुष्या एत एव
— मनः पितरः
7. पिता माता प्रजैत एव मन एव पिता
3. 8. 9. दर्वीं पितरो ऽन्वायत्ताः
4. 1. 2. पिता मे ऽमन्यत नाननुशिष्य हरेतेति 3—7.
4. 3. 22. पिता ऽपिता भवति
33. पितॄणां जितलोकानाम् (bis).
5. 2. 1. प्रजापतौ पितरि ब्रह्मचर्यमूषुः
5. 8. 1. स्वधाकारं पितरः (उपजीवन्ति)
5. 12. 1. तद्ध स्माह प्रातृदः पितरम्
6. 2. 1. अनुशिष्टो न्वसि पित्रा
2. द्वे सृती अशृणवं पितॄणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्
— यदन्तरा पितरं मातरं च
3. स आजगाम पितरम्
6. 3. 6. मधु द्यौरस्तु नः पिता Mahânâr. 9. 9; 17. 7.
Tait. 1. 3. 3. पितोत्तररूपम्
2. 8. 1. पितॄणां चिरलोकलोकानाम् (bis).
3. 1. 1. वरुणं पितरमुपससार 3. 2. 1; 3. 3. 1; 3. 4. 1; 3. 5. 1.
Katha. 1. 4. स होवाच पितरं तात
Mahânâr. 2. 4. यस्तद्वेद स पितुः पितासत्
13. 7. मनुष्याः पितरो ऽसुराः
22. 1. प्रजापतिं पितरमुपससार

Mahânâr. 22. 1. पितृणामनृणो भवति.
25. 1. पितृणामेव महिमानं गत्वा
Praśna. 1. 11. पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिम्
2. 8. पितृणां प्रथमा स्वधा
11. पिता त्वं मातरिश्वनः
6. 8. त्वं हि नः पिता यो ऽस्माकमविद्यायाः परं पारं तारयसि
Gauḍa. 4. 15. पुत्राज्जन्म पितुर्यथा
Chûl. 20. पितृणां चोपतिष्ठते
Śiras. 5. येन देवा यान्ति येन पितरः
Garbha. 3. पितू रेतोतिरेकात्पुरुषः
4. पितरः सुहृदस्तथा
Brahma. 2. तत्र..पिता न पिता
— न तत्र देवा ऋषयः पितर ईशते
Nîla. 22. भवेन मरुतां पिता (= पित्रा Nârâyaṇa).
Yogat. 4. यः पिता स पुनः पुत्रो यः पुत्रः स पुनः पिता
Nyâsa. 1. पितृभ्यः श्राद्धतर्पणं कृत्वा
Kaṭhaśru. 1. मातरं पितरं..अनुमोदयित्वा
Aruṇeya. 4. पितरं पुत्रमप्युपवीतम्
Gîtâ. 1. 26. पितृनथ पितामहान्
34. आचार्याः पितरः पुत्राः
42. पतन्ति पितरो ह्येषाम्
9. 17. पिताहमस्य जगतः
25. पितृन्यान्ति पितृव्रताः
10. 29. पितृणामर्यमा चास्मि
11. 43. पितासि लोकस्य चराचरस्य
44. पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
14. 4. अहं बीजप्रदः पिता

पितृकृत

Mahânâr. 18. 1. पितृकृतस्यैनसो ऽवयजनमसि

पितृदेव

Tait. 1. 11. 2. पितृदेवो भव

पितृमन्त्

Bṛih. 4. 1. 2. यथा..पितृमान्..ब्रूयात 3—7.

पितृमेधिक

Nyâsa. 1. एतान् पितृमेधिकान्

पितृयाण

Chhâ. 5. 3. 2. वेत्थ पथोर्देवयानस्य पितृयाणस्य च व्यावर्तना इति
Bṛih. 6. 2. 2. वेत्थो देवयानस्य वा पथः प्रतिपदं पितृयाणस्य वा यत्कृत्वा देवयानं वा पन्थानं प्रतिपद्यन्ते पितृयाणं वा
Praśna. 1. 9. एष ह वै रयिर्यः पितृयाण

पितृलोक

Chhâ. 5. 10. 4. मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोकादाकाशम्
8. 2. 1. पितृलोकेन सम्पन्नो महीयते
Bṛih. 1. 5. 16. मनुष्यलोकः पितृलोको देवलोकः
— कर्मणा पितृलोकः
3. 1. 8. पितृलोकमेव ताभिर्जयत्यतीव हि पितृलोकः
6. 2. 16. मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोकाच्चन्द्रम्
Kaṭha. 6. 5. यथा स्वप्ने तथा पितृलोके

पितृलोककाम

Chhâ. 8. 2. 1. यदि पितृलोककामो भव

पितृवध

Kaush. 3. 1. न मातृवधेन न पितृवधेन

पितृव्रत

Gîtâ. 9. 25. पितॄन्यान्ति पितृव्रताः

पितृहन्

Chhâ. 7. 15. 2. पितृहा वै त्वमसि
3. नैवैनं ब्रूयुः पितृहासीति

पित्त

Maitri. 1. 3. *vide* संघात
3. 4. *vide* वसा
Garbha. 2. अग्निस्थाने पित्तम्
5. पित्तप्रस्थम्

पित्तस्थान

Garbha. 2. पित्तस्थाने वायुः

पित्र्य

Chhâ. 7. 1. 2. अध्येमि..पित्र्यम्
4. नाम वै..पित्र्यः
7. 2. 1. वाग्वै..विज्ञापयति..पित्र्यम्
7. 7. 1. विज्ञानेन वै..विजानाति..पित्र्यम्
Brih. 4. 4. 4. पित्र्यं वा गान्धर्वं वा

पित्र्यावन्त्

Kaush. 1. 2. पञ्चदशात् प्रसूतात् पित्र्यावतः

पिनाकिन्

Trip. 1. 6. पिनाकिनं ह्यमितद्युतिम्
Hamsa. 1. मतं ज्ञात्वा पिनाकिनः

पिन्व्

Mahânâr. 16. 7. ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना..मेधा

पिपासा

Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
3. 5. क्षुत्पिपासा..इति तामसानि

पिपीलक, °लिका

Chhâ. 7. 2. 1. आकीटपतङ्गपिपीलकम्
7. 7. 1; 7. 8. 1; 7. 10. 1.
Brih. 1. 4. 4. आपिपीलिकाभ्यः 16.
Sarvop. 3. ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यन्तम्

पिप्पल

Brih. 4. 3. 36. यथाम्रं वोदुंबरं वा पिप्पलं वा
Swet. 4. 6. तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति
Mund. 3. 1. 1.

पिप्पलाद

Praśna. 1. 1. भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः
Sikhâ. 1. पिप्पलादो ऽङ्गिराः सनत्कुमारश्च
Brahma. 1. अङ्गिरसं भगवन्तं पिप्पलादम्

पिप्पलाशन

Chûl. 8. सुपर्णं पिप्पलाशनम्

पिश्

Brih. 6. 4. 21. त्वष्टा रूपाणि पिंशतु

पिशाच

Maitri. 1. 4. *vide* आदि
7. 8. ditto.
Prâṇâg. 1. रुद्रैः प्रजग्धं यदि वा पिशाचैः

पिशुन

Chhâ. 7. 6. 1. अल्पाः कलहिनः पिशुनाः

पिष्

Brih. 6. 3. 13. तान् पिष्टान् दधनि मधुनि घृत उपसिञ्चति

पीठ

Râmap. 85. पीठाधरोर्ध्वम्
87. पीठस्यांग्निष्वेषु

पीड्

Garbha. 4. अवाङ्मुखः पीडितो ऽहम् (one MS. has अवाङ्मुखपीड्यमानः)

पीडा

Gîtâ. 17. 19. यत्पीडया क्रियते तपः

पीत

Kaush. 4. 19. शुक्लस्य कृष्णस्य पीतस्य
Chhâ. 8. 6. 1. शुक्लस्य नीलस्य पीतस्य — एष शुक्ल एष नील एष पीतः
Kshur. 8. अणुरक्ताश्च पीताश्च
Garbha. 2. धूम्रः पीतः कपिलः पाण्डुरः
Vâsu. 3. पीता भास्वत्यणूपमा

पीतवर्ण, °क

Vâsu. 1. चक्रसमायुक्तं पीतवर्णम्
Gopî. 4. पीतवर्णा मृदो जायन्ते
5. पावनं पीतवर्णकम्

पीतवासस्

Râmap. 25. पीतवासा जटाधरः

पीता (=ष)

Râmap. 80. पीता रतिस्तथा लान्तः

पीताभ

Mahânâr. 11. 12. पीताभा स्यात्तनूपमा

पीताशित

Maitri. 2. 6. यो ऽयं पीताशितमुद्गिरति निगिरतीति

पीतोदक

Katha. 1. 3. पीतोदका जग्धतृणाः

पुंस्

Kaush. 1. 2. प्रजापतिः कर्मभिरयथ्यं पुंसा कर्त्रो मातरि मा निषिञ्च
Brih. 6. 3. 1. पुंसा नक्षत्रेण मन्थं सन्नीय जुहोति
Brih. 6. 4. 20. पुंसे पुत्राय वित्तये
Swet. 4. 3. त्वं स्त्री त्वं पुमानसि
5. 10. नैव स्त्री न पुमानेषः
Muṇd. 2. 1. 5. पुमान् रेतः सिञ्चति योषितायाम्
Siras. 1. पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहम्
Nâr. 3. मनःप्रग्रहवान्पुमान्
Râmap. 8. पुंस्त्र्यंगास्त्रादिकल्पना
Mukti. 1. 41. ज्ञानवैराग्यदं पुंसाम्
2. 66. न विरज्येत यः पुमान्
Gîtâ. 2. 62. ध्यायतो विषयान्पुंसः
71. पुमांश्चरति निःस्पृहः

पुच्छ

Brih. 1. 2. 3. अस्य प्रतीची दिक् पुच्छम्
Tait. 2. 1. 1. इदं पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 2. 1. पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 3. 1. अथर्वाङ्गिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 4. 1. महः पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 5. 1. ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा
Maitri. 6. 33. शिरःपक्षसीपुच्छपृष्ठवान् (ter).
Nâda. 1. मकारस्तस्य पुच्छं वै

पुण्डरीक

Chhâ. 1. 6. 7. तस्य यथा कप्यासं पुण्डरीकमेवमक्षिणी
8. 1. 1. दहरं पुण्डरीकं वेश्म 2.
Brih. 2. 3. 6. पुरुषस्य रूपं . . यथा पुण्डरीकम्
Mahânâr. 10. 7. यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसंस्थम्
Kshur. 10. दहरं पुण्डरीकेति (3 MSS. have तु for ति)
Nâr. 5. तदिदं पुरं पुण्डरीकम् (some MSS. read पुण्डरीकाक्षम्)
Atmapra. 1. यदिदं पुरं ब्रह्मपुरमिदं पुण्डरीकं वेश्म

पुण्डरीकाक्ष

Atmapra. 1. ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षः
Vâsu. 2. गोविन्द पुण्डरीकाक्ष

पुण्ड्र

Vâsu. 2. पुण्ड्रांश्च ऊर्ध्वाः

पुण्ड्रस्थ

Vâsu. 3. पूर्वमभ्यस्य पुण्ड्रस्थम्

पुण्य *adj. & sub.*

Ait. 4. 4. सो ऽस्यायमात्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते
Kaush. 2. 3. शुद्धपक्षे वा पुण्ये नक्षत्रे
Bṛih. 1. 4. 15. महत्पुण्यं कर्म करोति
1. 5. 20. पुण्यमेवामुं गच्छति
3. 2. 13. पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति
4. 3. 15. दृष्ट्वैव पुण्यं च पापं च 16, 17, 34.
22. अनन्वागतं पुण्येन
4. 4. 5. पुण्यः पुण्येन कर्मणा भवति
Maitri. 6. 4. एतदेवाक्षरं पुण्यम्
Muṇḍ 1. 2. 6. एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः
Mahânâr. 8. 2. पुण्यस्य कर्मणो दूराद्गन्धो वाति
Praśna. 3. 7. पुण्येन पुण्यं लोकं नयति
Yogaśi. 9. पुण्यमेतत् समासाद्य
Haṁsa. 2. पूर्वदले पुण्ये मतिः
Nâr. 5. सर्ववेदपारायणं पुण्यं लभते (some MSS. omit पुण्यं)
Vâsu. 1. मदङ्गलेपनं पुण्यम्
Gopî. 5. ततः कोटिगुणं पुण्यम्
— तेषां पुण्यमवाप्नोति
— विष्णुरूपमिदं पुण्यम्
Gîtâ. 7. 9. पुण्यो गन्धः पृथिव्याम्
9. 20. ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकम्
9. 21. क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति
33. किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः
18. 76. संवादं .. । कृष्णार्जुनयोः पुण्यम्

पुण्यकर्मन्

Gîtâ. 7. 28. जनानां पुण्यकर्मणाम्
18. 71. लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्

पुण्यकृत्

Bṛih. 4. 4. 9. तेनैति ब्रह्मवित्पुण्यकृत्तैजसः
Mahânâr. 5. 9. एष पुण्यकृतां लोकान् .. संशिशाधि

पुण्यकृत

Gîtâ. 6. 41. प्राप्य पुण्यकृतां ल्लोकान्

पुण्यजित

Chhâ 8. 1. 6. पुण्यजितो लोकः क्षीयते

पुण्यपाप

Maitri. 6. 18. विद्वान् पुण्यपापे विहाय
Muṇḍ. 3. 1. 3. विद्वान् पुण्यपापे विधूय
Kaivalya. 22. न पुण्यपापे मम नास्ति नाशः
Haṁsa. 2. दग्धे पुण्यपापे

पुण्यपापकर्मन्

Sarvop. 2. पुण्यपापकर्मानुसारी

पुण्यफल

Gîtâ. 8. 28. दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्

पुण्यलोक

Chhâ. 2. 23. 2. सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति
5. 10. 10. पुण्यलोको भवति य एवं वेद
Maitri. 6. 36. पुण्यलोकविजित्यर्थाय

पुण्यादि

Sarvop. 2. मन आदिश्च प्राणादिश्च सत्त्वादिश्चेच्छादिश्च पुण्यादिश्च

पुण्याह

Brih. 6. 3. 1. आपूर्यमाणपक्षस्य पुण्याहे

पुत्र

Kaush. 1. 1. स ह पुत्रं श्वेतकेतुं प्रजिघाय
— गौतमस्य पुत्र
2. 11. पुत्रस्य मूर्धानमभिजिघ्रेत्
— आत्मा वै पुत्र नामासि
— तेजो वै पुत्र नामासि
— पुत्र ते नाम्ना मूर्धानमभिजिघ्रामि
15. पिता पुत्रं प्रेष्यन्नाह्वयति
— एत्य पुत्र उपरिष्टादभिनिपद्यते
— वाचं मे त्वयि दधानीति पिता वाचं ते मयि दध इति पुत्रः (similarly 11 times more).
— स यद्यगदः स्यात्पुत्रस्यैश्वर्ये पिता वसेत्

Chhâ. 1. 5. 2. कौषीतकिः पुत्रमुवाच 4.
3. 1. 1. मरीचयः पुत्राः
3. 11. 4. ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म प्रोवाच
5. ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म प्रब्रूयात्
6. 8. 1. श्वेतकेतुं पुत्रमुवाच
7. 3. 1. पुत्रांश्च पशूंश्चेच्छेय
7. 13. 1. स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति
7. 14. 1. पुत्रांश्च पशूंश्चेच्छते

Brih. 1. 4. 8. तदेतत्प्रेयः पुत्रात्
1. 5. 16. मनुष्यलोकः पुत्रेणैव जय्यः
17. पुत्रमाह त्वं ब्रह्म
— स पुत्रः प्रत्याहाहं ब्रह्म
— पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुः
— एभिरेव प्राणैः सह पुत्रमाविशति

Brih. 1. 5. 17. एनं सर्वस्मात्पुत्रो मुञ्चति तस्मात्पुत्रो नाम
— स पुत्रेणैवास्मिँल्लोके प्रतितिष्ठति
2. 4. 5. न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति 4. 5. 6.
4. 1. 6. तस्यां प्रतिरूपः पुत्रो जायते
6. 4. 14. पुत्रो मे शुक्लो जायेत
15. पुत्रो मे कपिलः पिङ्गलो जायेत
16. पुत्रो मे श्यामो लोहिताक्षो जायेत
18. पुत्रो मे पण्डितः . . जायेत
20. पुंसे पुत्राय वित्तये
28. य एवंविदो ब्राह्मणस्य पुत्रो जायते

Katha. 1. 1. नचिकेता नाम पुत्रः

Swet. 2. 5. शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

Maitri. 1. 2. विराज्ये पुत्रं निधापयित्वा
6. 28. पुत्रदारकुटुंबेषु सक्तस्य
29 ब्रह्मणः पन्थानमारूढाः पुत्राः प्रजापतेः

Prasna. 2. 13. मातेव पुत्रान् रक्षस्व

Gauda. 4. 15. पुत्राज्जन्म पितुर्यथा

Nrip. 1. 4. पुत्राय शुश्रूषवे दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय च

Yogat. 4. यः पिता स पुनः पुत्रो यः पुत्रः स पुनः पिता

Kathasru. 1. भार्यां पुत्रान् . . अनुमोदयित्वा
— निष्क्रम्य पुत्रं दृष्ट्वा 2.
2. अथ पुत्रो वदति
3. दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य

Aruneya. 1. पुत्रान् भ्रातॄन् बन्ध्वादीन्
4. पितरं पुत्रमभ्युपवीतम्

Parama. 1. स्वपुत्रमित्रकलत्रबन्ध्वादी-न् ·

Mukti. 2. यथा पुत्रकामेष्टिना पुत्रम्

Gîtâ. 1. 26. पुत्रान्पौत्रान् सखींस्तथा
34. आचार्याः पितरः पुत्राः
11. 26. धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
44. पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
13. 9. पुत्रदारगृहादिषु

पुत्रकामेष्टि

Mukti. 2. यथा पुत्रकामेष्टिना पुत्रम्

पुत्रद

Râmap. 83. अपुत्रिणां पुत्रदं च

पुत्रपशु

Brih. 6. 4. 12. पुत्रपशूंस्त आददे

Katha. 1. 8. पुत्रपशूंश्च सर्वान्

पुत्रपौत्र

Katha. 1. 23. शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व

पुत्रमय

Brih. 3. 9. 17. य एवायं पुत्रमयः पुरुषः स एषः

पुत्ररोद

Chhâ. 3. 15. 2. न पुत्ररोदं रोदिति
— मा पुत्ररोदं रुदम्

पुत्रैषणा

Brih. 3. 5. 1. पुत्रैषणायाश्च .. व्युत्थाय 4. 4. 22; Nrisut. 6.
— या ह्येव पुत्रैषणा सा वित्तैषणा 4. 4. 22.

पुत्र्य

Kaush. 2. 8. माहं पुत्र्यमघं रुदामिति (MSS. पौत्रम्)
10. मा त्वं पुत्र्यमघं निगाः (one MS. पौत्रम्)

पुनर्

Ait. 4. 4. स इतः प्रयन्नेव पुनर्जायते

Kaush. 2. 12. तस्मादेव पुनरुदीरते 13.

Chhâ. 4. 2. 3. पुनरेव .. सहस्रं गवां .. आदाय
5. 3. 2. वेत्थ यथा पुनरावर्त्तन्ते
5. 10. 5. एतमध्वानं पुनर्निवर्त्तन्ते
7. 26. 2. पुनश्चैकादश स्मृतः
8. 9. 1. स समित्पाणिः पुनरेयाय 8. 10. 3; 8. 11. 2.
2. किमिच्छन् पुनरागमः 8. 10. 3; 8. 11. 2.
8. 15. 1. न च पुनरावर्त्तते Vâsu. 4.

Brih. 1. 2. 7. सा पुनरेकैव देवता भवति
1. 5. 2. स हीदमन्नं पुनः पुनर्जनयते
3. 9. 28. रोहति मूलान्नवतरः पुनः
— न पुनराभवेत्
— को न्वेनं जनयेत्पुनः
4. 3. 11. शुक्रमादाय पुनरेति स्थानम्
15. पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोनि 16, 17, 34, 36.
4. 4. 6. तस्माल्लोकात्पुनरैति
6. 2. 2. वेत्थो यथेमं लोकं पुनरापद्यन्ता ३
— बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिः
16. ते पुनः पुरुषाग्नौ हूयन्ते
6. 4. 5. पुनर्मामैत्विन्द्रियं पुनस्तेज पुनर्भगः पुनरग्निः

Tait. 3. 2. 1. पुनरेव वरुणं पितरमुपससार 3. 3. 1; 3. 4. 1 3. 5. 1.

Katha. 1. 6. सस्यमिवाजायते पुनः
15. अथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः
2. 6. पुनः पुनर्वशमापद्यते मे

Swet. 6. 22. नापुत्रायाशिष्याय वा पुन

Maitri. 6. 4. पुनः पञ्चधा ज्ञेयम्.
9. अन्नत्वं न पुनरुपैति
26. प्राणादयो वै पुनरेव तस्मा-
दभ्युच्चरन्तीह 31.
7. 1. पुनर्विशन्त्यन्तर् 2—6.
Mund.I. 2. 7. जरामृत्युं पुनरेवापि यन्ति
Mahânâr. 4. 12. तन्मे पुनन्तु पुनः पुनः
Prasna. 1. 9. त एव पुनरावर्त्तन्ते
10. एतस्मान्न पुनरावर्त्तन्ते
2. 1. कः पुनरेषां वरिष्ठः
4. 2. पुनः पुनरुदयतः
5. प्रत्यनुभूतं पुनः पुनः प्रत्यनु-
भवति
5. 4. सोमलोके विभूतिमनुभूय
पुनरावर्त्तते
5. यः पुनरेतं त्रिमात्रेणोमि-
त्येतेनैवाक्षरेण.. अभिध्या-
यीत
Kaivalya. 14. पुनश्च जन्मान्तरकर्मयोगात्
Gauda. 1. 23. मकारश्च पुनः प्राज्ञं (नयते)
3. 44. विक्षिप्तं शमयेत् पुनः
46. न च विक्षिप्यते पुनः
4. 19. क्रमकोपो ऽथवा पुनः
83. अस्ति नास्त्यस्ति नास्तीति
नास्ति नास्तीति वा पुनः
Nrisut. 7. पुनः पुनरहन्त्वाच्च
Chûl. 4. तन्यते प्रेरिता पुनः
19. पर्यस्यन्तं पुनः पुनः
Garbha. 4. जन्म जन्म पुनः पुनः
— पुनर्जातः.. पुनर्मृतः
Mahâ. 2. पुनरेव नारायणः सोन्यत्का-
मः 3.
Brahma. 3. स्वप्ने.. गच्छत्यागच्छते पु-
नः
Prânâg. 2. पुनरादाय पुनरुपस्पृशेत्
Brahmab. 11. भिद्यमानं पुनः पुनः
Amrita. 1. अभ्यस्य च पुनः पुनः
34. अपानस्तु पुनर्गुदे

Dhyâna. 21. तोयमाकर्षयेत् पुनः
Yogasi. 6. योगाभ्यासेन वै पुनः
Yogat. 4. या माता सा पुनर्भार्या
— यः पिता स पुनः पुत्रो यः
पुत्रः स पुनः पिता
Kathasru. 1. न पुनरावर्त्तयेत्
Kâlâg. 2. न स पुनरावर्त्तते Atmapra. 1.
Jâbâla. 4. अथ पुनरव्रती वा व्रती वा
Râmap. 28. सधनुष्पाणिना पुनः
52. त्र्यस्रं पुनर्भवेत्
64. पुनरष्टदलं लिखेत्
Râmot. 2. दीर्घानलं पुनः
4. गंगायां वा तटे पुनः
5. पुनरेतया गदया नमस्क-
रोति
Mukti. 2. 11. यावन्नाभ्यस्तं च पुनः पुनः
23. आक्षिप्तग्रन्थेषु यथा पुनः
34. यदा ते विद्यते पुनः
Gîtâ. 4. 35. यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्
5. 1. पुनर्योगं च शंससि
8. 26 अन्ययावर्त्तते पुनः
9. 7. कल्पक्षये पुनस्तानि
8. विसृजामि पुनः पुनः
33. किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः
11. 16. न पुनस्तवादिं पश्यामि
39. पुनश्च भूयो ऽपि नमो न-
मस्ते
49. प्रीतमनाः पुनस्त्वम्
50. भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्म-
हात्मा
16. 13. मे भविष्यति पुनर्धनम्
17. 21. फलमुद्दिश्य वा पुनः
18. 24. साहंकारेण वा पुनः
40. दिवि देवेषु वा पुनः
77. हृष्यामि च पुनः पुनः

पुनरावर्त्तिन्

Gitâ. 8. 16. पुनरावर्त्तिनो ऽर्जुन

पुनरावृत्ति

Brih. 6. 2. 15. तेषां न पुनरावृत्तिः
Mukti. 1. 20. पुनरावृत्तिरहितां मुक्तिम्

पुनरुत्पादन

Chhâ. 3. 17. 5. सोष्यत्यसोष्टेति पुनरुत्पादनमेवास्य

पुनर्जन्मकर

Mukti. 2. 62. पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता

पुनर्जन्मन्

Kshur. 1. यां प्राप्य न पुनर्जन्म
20. पुनर्जन्मविवर्जिताः
Brahmab. 11. पुनर्जन्म न विद्यते
Gîtâ. 4. 9. त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति
8. 15. मामुपेत्य पुनर्जन्म
16. पुनर्जन्म न विद्यते

पुनर्जन्माङ्कुर

Mukti. 2. 63. पुनर्जन्मांकुरं त्यक्त्वा

पुनर्भव

Praśna. 3. 9. तस्मादुपशान्ततेजाः पुनर्भवम्
Kâlâg. 1. तत्समाचरेन्मुमुक्षुर्न पुनर्भवाय

पुनर्मृत्यु

Brih. 1. 2. 7. अप पुनर्मृत्युं जयति 1. 5. 2; 3. 2. 10; 3. 3. 2.
1. 5. 2. तद्धः पुनर्मृत्युमपजयति

पुर्, पुर

Ait. 4. 5. शतं मा पुर आयसीररक्षन्
Chhâ. 8. 5. 3. अपराजिता पूर्ब्रह्मणः
Brih. 2. 5. 18. पुरश्चक्रे द्विपदः पुरश्चक्रे चतुष्पदः
Brih. 2. 15. 18. पुरः पुरुष आविशत्
— अयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयः
Katha. 5. 1. पुरमेकादशद्वारम्
Śwet. 3. 18. नवद्वारे पुरे देही Gîtâ. 5. 13.
Mahânâr. 6. 4. पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी
Praśna. 4. 3. प्राणाग्नय एवैतस्मिन् पुरे जाग्रति
Nâr. 5. तदिदं पुरं पुण्डरीकम्
Atmapra. 1. यदिदं पुरं ब्रह्मपुरम्
Râmap. 44. पुरं दग्ध्वा तथा स्वयम्

पुरःसर

Swet. 2. 11. एतानि रूपाणि पुरःसराणि
Mukti. 1. 41. तत्तच्छान्तिपुरःसरम्

पुरतस्

Katha. 1. 18. मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य
Nrisut. 2. अस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातम्
5. पुरतो ऽस्मात्सर्वस्मात्सुविभातम् 9.
6 सर्वस्य पुरतः सुविभातम्
8. अयं ह्यस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातः
9. आत्मा पुरतो हि सिद्धः

पुरत्रय

Kaivalya. 14. प्रबुद्धः पुरत्रये क्रीडति
15. यस्मिन् लयं याति पुरत्रयं च

पुरमध्यसंस्थ

Mahânâr. 10. 7. यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसंस्थम्

पुरयाचक

Maitri. 7. 8. पुरयाचका अयाज्ययाजकाः

पुरस्

Bṛih. 1. 3. 18. पुर एता भवति
2. 5. 18. पुरः स पक्षी भूत्वा
Mahânâr. 20. 5. वृषेन्द्रः पुर एतु नः
Mukti. 2. 74. पुरस्तिरश्चोर्ध्वमधश्च

पुरस्कृ

Maitri. 7. 8. अर्थं पुरस्कृत्य

पुरस्ताज्ज्योतिस्

Śiras. 1. बलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरित्यहमेव सर्वे

पुरस्तात्

Kaush. 2. 1. ये पुरस्तात्प्रत्याचक्षीरन् 2. 9. पुरस्ताच्चन्द्रमसं दृश्यमानमुपतिष्ठेत
Chhâ. 3. 6. 4. यावदादित्यः पुरस्तादुदेता 3. 7. 4.
3. 8. 4. पुरस्तादस्तमेता 3. 9. 4.
5. 2. 2. पुरस्ताच्चोपरिष्टाच्चाद्भिः परिदधति
6. 8. 6. तदुक्तं पुरस्तादेव
6. 10. 1. पुरस्तात्प्राच्यः स्यन्दन्ते
7. 25. 1. स पुरस्तात्..अहं पुरस्तात्
2. आत्मा पुरस्तात्
Bṛih. 1. 1. 2. अश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत
Katha. 1. 11. यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीतः
Maitri. 1. 2. एतद्वृत्तं पुरस्तात्
6. 9. अग्निः पुरस्तात्परिदधाति
7. 1. पुरस्तादुद्यन्ति
8. वाट्यं पुरस्तादुक्तेऽपि
Muṇḍ. 2. 2. 11. ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्तात्
Mahânâr. 10. 3. यो देवानां प्रथमं पुरस्तात्
Nrip. 2. 4. एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव
5. 2. तस्य पुरस्ताद्वसव आसते
Nrisut. 9. सदेव पुरस्तात्
— सत्यं हीत्थं पुरस्तात्
Nrisut. 9. एतौ हि पुरस्तात्सुविभातमव्यवहार्यमद्वयम्
Śiras. 3. सोमसूर्यः पुरस्तात्
Brahma. 2. यत्सहजं पुरस्तात्
Gîtâ. 11. 40. नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते

पुरा

Kaush. 4. 13. न पुरा कालात् सम्मोहमेति
14. न पुरा कालात् प्रैति
Chhâ. 2. 9. 2. तस्य यत्पुरोदयात् स हिंकारः
2. 24. 3. पुरा प्रातरनुवाकस्योपाकरणात्
7. पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणात्
11. पुरा तृतीयसवनस्योपाकरणात्
4. 16. 2. पुरा परिधानीयायाः
4. न पुरा परिधानीयायाः
5. 3. 7. इयं न प्राक् त्वत्तः पुरा विद्या ब्राह्मणान् गच्छति
Bṛih. 1. 2. 4. न ह पुरा ततः संवत्सर आस
2. 1. 10. नैनं पुरा कालात्प्राणो जहाति
12. नैनं पुरा कालान्मृत्युरागच्छति
6. 2. 3. नो भवान् पुरानुशिष्टानवोचत्
Katha. 1. 21. देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा
Muṇḍ. 1. 1. 2. तां पुरोवाचाङ्गिरे
3. 2. 11. एतत् सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच
Chûl. 4. तेनैवाधिष्ठिता पुरा
Krish. 7. अप्यजेन साजिता पुरा
Gîtâ. 3. 3. पुरा प्रोक्ता मयानघ
10. पुरोवाच प्रजापतिः
17. 23. यज्ञाश्च विहिताः पुरा

पुराकल्प

Śwet. 6. 22. पुराकल्पे प्रचोदितम्

पुराकृत

Maitri. 4. 2. महानदीषूर्मय इवानिवर्त्त-कमस्य यत्पुराकृतम्

1. पुराण *adj.*

Brih. 4. 4. 8. अणुः पन्था विततः पुराणः
18. ते निचिक्युर्ब्रह्म पुराणम्
5. 1. 1. खं पुराणं वायुरं खम्
Katha. 2. 12. गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्
18. शाश्वतो ऽयं पुराणः Gîtâ. 2. 20.
Śwet. 3. 21. वेदाहमेतमजरं पुराणम्
4. 18. प्रज्ञा च तस्मात्प्रसृता पुराणी
Mahânâr. 1. 5. विश्वं पुराणं तमसः पर-स्तात्
Śiras. 5. शाश्वतं वै पुराणमिषम्
— शाश्वतेन वै पुराणेन . . ऊ-र्जेन
Gîtâ. 8. 9. कविं पुराणमनुशासितारम्
11. 38. त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः
15. 4. यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी

2. पुराण

Brih. 2. 4. 10. इतिहासः पुराणम् 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32, 33.
Trip. 5. 9. स पुराणान्यधीते

पुरातन

Kaivalya. 20. पुरातनो ऽहं पुरुषो ऽहमीशः
Gîtâ. 4. 3. योगः प्रोक्तः पुरातनः

पुरिशय

Brih. 2. 5. 18. अयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयः
Praśna. 5. 5. परात्परं पुरिशयं पुरुषमी-क्षते

पुरी

Râmap. 45. पुरीं लंकां समाययौ

पुरीतत्

Kaush. 4. 19. हृदयात्पुरीततमभिप्रतन्व-न्ति
Brih. 2. 1. 19. हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते
— पुरीतति शेते

पुरीष

Chhâ. 6. 5. 1. तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत् पुरीषं भवति

पुरीषिन्

Praśna. 1. 11. दिव आहुः परे अर्द्धे पुरी-षिणम्

पुरुजित्

Gîtâ. 1. 5. पुरुजित्कुन्तिभोजश्च

पुरुरूप

Brih. 2. 5. 19. इन्द्रो मायाभिः पुरुरूपः

पुरुष

Ait. 1. 3. अद्भ्य एव पुरुषं समुद्धृत्य
2. 3. ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रु-वन् सुकृतं बतेति पुरुषो वाव सुकृतम्
3. 13. एतमेव पुरुषं ब्रह्म ततमप-श्यत्
4. 1. पुरुषे ह वा अयमादितो गर्भो भवति
5. 3. अश्वा गावः पुरुषा हस्तिनः
Kaush. 1. 2. पुरुषो वान्यो वा
2. 5. यावद्वै पुरुषो भाषते
— यावद्वै पुरुषः प्राणिति
3. 3. यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं न कंचन पश्यति
— यत्रैतत्पुरुष आर्त्तो मरिष्यन्
4. 3. य एवैष आदित्ये पुरुषस्त-मेवाहमुपासे

Kaush. 4. 4. य एवैष चन्द्रमसि पुरुषः
5. य एवैष विद्युति पुरुषः
6. य एवैष स्तनयित्नौ पुरुषः
7. य एवैष वायौ पुरुषः
8. य एवैष आकाशे पुरुषः
9. य एवैषो ऽग्नौ पुरुषः
10. य एवैषो ऽप्सु पुरुषः
11. य एवैष आदर्शे पुरुषः
12. य एवैष छायायां पुरुषः
13. य एवैष प्रतिश्रुत्कायां पुरुषः
14. य एवैष शब्दे पुरुषः
15. य एवैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नया चरति
16. य एवैष शरीरे पुरुषः
17. य एवैष दाक्षिणे ऽक्षिणि पुरुषः
18. य एवैष सव्ये ऽक्षिणि पुरुषः
19. यो वै बालाक एतेषां पुरुषाणां कर्त्ता
— तौ ह सुप्तं पुरुषमाजग्मतुः
— क्वैष एतद्बालाके पुरुषो ऽशयिष्ट
— यत्रैष एतद्बालाके पुरुषो ऽशयिष्ट
— हिता नाम पुरुषस्य नाड्यः

Chhâ. 1. 1. 2. ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग्रसः
1. 6. 6. य एषो ऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते
1. 7. 5. य एषो ऽन्तरक्षिणि पुरुषो दृश्यते सैवर्क्
2. 6. 1. पुरुषो निधनम् 2. 18. 1.
2. 9. 7. ते पुरुषं दृष्ट्वा कक्षं श्वभ्रमित्युपद्रवन्ति
3. 12. 3. इयं वाव सा यदिदमस्मिन् पुरुषे शरीरम्

Chhâ. 3. 12. 4. यद्वैतत्पुरुषे शरीरमिदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नन्तः पुरुषे हृदयम्
6. तावानस्य महिमा ततो ज्यायांश्च पुरुषः
7. यो ऽयं बहिर्द्धा पुरुषादाकाशः
8. अयं वाव स यो ऽयमन्तःपुरुष आकाशः
3. 13. 7. इदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नन्तःपुरुषे ज्योतिः
3. 14. 1. अथ खलु क्रतुमयः पुरुषो यथाक्रतुरस्मिँल्लोके पुरुषो भवति
3. 16. 1. पुरुषो वाव यज्ञः
4. 10. 3. बहव इमे ऽस्मिन्पुरुषे कामा नानात्यया:
4. 11. 1. य एष आदित्ये पुरुषो दृश्यते
4. 12. 1. य एष चन्द्रमसि पुरुषो दृश्यते
4. 13. 1. य एष विद्युति पुरुषो दृश्यते
4. 15. 1. य एषो ऽक्षिणि पुरुषो दृश्यते 8. 7. 4.
5. तत्पुरुषो ऽमानवः 5. 10. 2.
5. 7. 1. पुरुषो वाव .. अग्निः
5. 11. 6. येन हैवार्थेन पुरुषश्चरेत्
6. 2. 3. यत्र क्वच शोचति स्वेदते वा पुरुषः
6. 4. 7. तिस्रो देवताः पुरुषं प्राप्य 6. 8. 6.
6. 7. 1. षोडशकलः सोम्य पुरुषः
6. 8. 1. यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति
3. यत्रैतत्पुरुषो ऽशिशिषति
5. यत्रैतत्पुरुषः पिपासति
6. पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि सम्पद्यते

6. 14. 1. पुरुषं गन्धारेभ्यो ऽभिनद्धाक्षमानीय
2. आचार्यवान् पुरुषो वेद
6. 15. 1. पुरुषं . . उपतापिनं ज्ञातयः पर्युपासते
6. 16. 1. पुरुषं . . हस्तगृहीतमानयन्ति
8. 12. 3. स उत्तमः पुरुषः
4. स चाक्षुषः पुरुषः
1. 4. 1. पूर्वः . . पाप्मन औषत्तस्मात्पुरुषः
10. एकैकः पुरुषो देवान् भुनक्ति
17 पांक्तः पुरुषः
1. 5. 2. पुरुषो वा अक्षितिः
15. यो ऽयमेवंवित्पुरुषः
2. 1. 2. आदित्ये पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
3. चन्द्रे पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
4. विद्युति पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
5. आकाशे पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
6. वायौ पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
7. अग्नौ पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
8. अप्सु पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
9. आदर्शे पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
11. दिक्षु पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
12. छायामयः पुरुष एतं . ब्रह्मोपासे
13. आत्मनि पुरुष एतं . . ब्रह्मोपासे
15. तौ ह पुरुषं सुप्तमाजग्मतुः
16. य एष विज्ञानमयः पुरुषः 17.
17. अथ हैतत्पुरुषः स्वपिति नाम

Brih. 2. 3. 3. य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषः 5. 5. 2, 3.
5. यो ऽयं दक्षिणे ऽक्षन्पुरुषः 4. 2. 2; 5. 5. 2, 4.
6. तस्य हैतस्य पुरुषस्य रूपम्
2. 5. 1. तेजोमयो ऽमृतमयः पुरुषः (28 times).
18. पुरः पुरुष आविशत्
— अयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयः
3. 2. 11. यत्रायं पुरुषो म्रियते 12.
13. पुरुषस्य मृतस्याग्निं वागप्येति
— क्वायं तदा पुरुषो भवतीति
3. 7. 2. पुरुषं प्रेतमाहुर्व्यस्रंसिषतास्याङ्गानीति
3. 9. 4. दशेमे पुरुषे प्राणाः
10. यो वै तं पुरुषं विद्यात् . . वेद वा अहं तं पुरुषम् 11—17.
— शारीरः पुरुषः स एषः
11. काममयः पुरुषः स एषः
12. आदित्ये पुरुषः स एषः
13. प्रातिश्रुत्कः पुरुषः स एषः
14. छायामयः पुरुषः स एषः
15. आदर्शे पुरुषः स एषः
16. अप्सु पुरुषः स एषः
17. पुत्रमयः पुरुषः स एषः
26. अष्टौ देवा अष्टौ पुरुषाः
— पुरुषान्निरुह्य प्रत्युह्यात्यक्रामत्तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि
28. यथा वृक्षः . . तथैव पुरुषः
4. 3. 2. किंज्योतिरयं पुरुषः 3—6.
7. हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः
8. अयं पुरुषो जायमानः
9. एतस्य पुरुषस्य द्वे एव स्थाने

Bṛih. 4. 3. 9. अत्रायं पुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति 14.
11. हिरण्मयः पुरुष एकहंसः 12
15. असङ्गो ह्ययं पुरुषः 16.
18. अयं पुरुष एतावुभावन्तावनुसञ्चरति
19. अयं पुरुष एतस्मा अन्ताय धावति
21. एवमेवायं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना सम्परिष्वक्तः
36. अयं पुरुष एभ्यो ऽङ्गेभ्यः सम्प्रमुच्य
4. 4. 1. यत्रैष चाक्षुषः पुरुषः पराङ्पर्यावर्त्तते
5. काममय एवायं पुरुष इति
5. 6. 1. मनोमयो ऽयं पुरुषो भाः सत्यः
5. 9. 1. अयमग्निर्वैश्वानरो यो ऽयमन्तः पुरुषे Maitri. 2. 6.
5. 10. 1. यदा वै पुरुषो ऽस्माल्लोकात्प्रैति
5. 15. 1. यो ऽसावसौ पुरुषः सो ऽहमस्मि Iśâ. 16.
6. 2. 12. पुरुषो वा अग्निर्गौतम
13. तस्या आहुत्यै पुरुषः संभवति
14. अग्नौ देवाः पुरुषं जुह्वति तस्या आहुत्यै पुरुषो भास्वरवर्णः संभवति
15. पुरुषो मानस एत्य
6. 3. 1. घ्नन्ति पुरुषस्य कामान्
6. 4. 1. फलानां पुरुषः पुरुषस्य रेतः
Tait. 1. 6. 1. तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः
2. 1. 1. अन्नात्पुरुषः स वा एष पुरुषो ऽन्नरसमयः
2. 8. 1. स यश्चायं पुरुषे यश्चासावादित्ये स एकः 3. 10. 4.

Kaṭha. 1. 8. एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसः
2. 1. उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः
3. 11. अव्यक्तात्पुरुषः परः पुरुषान्न परं किञ्चित्
4. 12. अंगुष्ठमात्रः पुरुषः 13; 6. 17; Śwet. 3. 13; Mahânâr 16. 3.
5. 8. कामं कामं पुरुषो निर्मिमाणः
6. 8. अव्यक्तात्परः पुरुषः
Śwet. 1. 2. भूतानि योनिः पुरुष इति चिन्त्यम्
3. 6. मा हिंसीः पुरुषं जगत्
8. वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्
9. तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम् Mahânâr. 10. 4.
12. महान् प्रभुर्वै पुरुषः
14. सहस्रशीर्षा पुरुषः
15. पुरुष एव इदं सर्वम्
19. तमाहुरग्र्यं पुरुषम्
4. 7. समाने वृक्षे पुरुषो निमग्न Muṇḍ. 3. 1. 2.
Maitri. 2. 6. यदौष्ण्यं स पुरुषो ऽथ य पुरुषः सो ऽग्निर्वैश्वानरः
3. 3. एतानि गुणानि पुरुषेणेरितानि
— नाभिभूयत्यसौ पुरुषः
4. 6. अथ कृत्स्नक्षय एकत्वमेति पुरुषस्य
6. 1. य एषो ऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः Mahânâr. 12. 2.
6. चक्षुरायत्ता हि पुरुषस्य महती मात्रा
— अक्षिण्यवस्थितो हि पुरु सर्वार्थेषु चरति
10. पुरुषश्चेता प्रधानान्तःस्थ
— भोक्ता पुरुषो ऽन्तःस्थः
— तस्माद्भोक्ता पुरुषः

Maitri. 6. 10. पुरुषो ह्यव्यक्तमुखेन त्रिगुणं भुंक्ता इति
18. यदा पश्यन् पश्यति.. पुरुषम्
30. स हि सर्वकाममयः पुरुषः
— अतः पुरुषो ऽध्यवसायसङ्कल्पाभिमानलिङ्गः
35. यो ऽसा आदित्ये पुरुषः सो ऽसा अहम्
— तच्छुक्रं पुरुषमलिङ्गम्
7. 11. पुरुषश्चाक्षुषो यो ऽयम्
Mund.1. 1. 7. यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि
1. 2. 11. यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा
13. येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यम्
2. 1. 2. दिव्यो ह्यमूर्त्तः पुरुषः
5. बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः
10. पुरुष एवेदं विश्वम्
3. 1. 3. यदा पश्यः पश्यते..पुरुषम्
3. 2. 1. उपासते पुरुषं ये ह्यकामाः
8. परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्
Mahânâr. 1. 4 यत ओषधीभिः पुरुषान्पशूंश्च
8. सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि
2. 9. मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्
3. 1. तत्पुरुषस्य विद्महे
2. तत्पुरुषाय विद्महे 3, 4, 15; 17. 4.
11. 2. विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति Mahâ. 3 (पुरुषम्)
12. 1. पुरुषं कृष्णपिंगलम्
Mahânâr. 12. 2. य एष एतस्मिन्मण्डले ऽर्चिषि पुरुषः
3. य एष पुरुष एष भूतानामधिपतिः
13. 2. पुरुषो वै रुद्रस्तन्महः
20. 24. उत्तिष्ठ पुरुष
23. 1. य एष आदित्ये पुरुषः स परमेष्ठी ब्रह्मात्मा
— स वा एष पुरुषः पञ्चधा पञ्चात्मा
Prasna. 3. 3. यथैषा पुरुषे छाया
8. सैषा पुरुषस्यापानमवष्टभ्य
4. 1. एतस्मिन्पुरुषे कानि स्वपन्ति
2. सर्वैष पुरुषो न शृणोति न पश्यति
9. एष हि..विज्ञानात्मा पुरुषः
5. 5. ओमित्येतेनैवाक्षरेण परं पुरुषमभिध्यायीत
— परात्परं पुरिशयं पुरुषमीक्षते
6. 1. षोडशकलं..पुरुषं वेत्थ
— तं त्वा पृच्छामि क्वासौ पुरुष इति
2. इहैवान्तःशरीरे..स पुरुषः
5. पुरुषं प्राप्यास्तं गच्छन्ति
— पुरुष इत्येवं प्रोच्यते
6. तं वेद्यं पुरुषं वेद
Kaivalya. 1 परात्परं पुरुषं याति
20. पुरातनो ऽहं पुरुषो ऽहमीशः
Gauda. 1. 6. चेतोंऽशून् पुरुषः पृथक्
Nrip. 1. 1. यत् पुरुषो मनसाभिगच्छति
4. अन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः
6. पुरुषं नृकेसरिविग्रहम्
4. 3. यो वै नृसिंहः..यश्च पुरुषस्तस्मै वै नमो नमः (4)

Nṛip. 5. 1. षोडशकलो वै पुरुषः पुरुष एवेदं सर्वं पुरुषेण सम्मितं भवति

Chûl. 12. आत्मा पुरुष एव च

— दयावश्च पुरुषस्तथा (Nârâyaṇa seems to read सासुरस्तथा for he says असुरैर्बाणादिभिः सहितः सासुरः)

14. पुरुषं निर्गुणं सांख्यम्

Siras. 3. सूक्ष्मः पुरुषः सर्वम्

— प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषम्

Garbha. 3. पितू रेतोतिरेकात् पुरुषः

Mahâ. 1. तस्मिन्पुरुषाश्चतुर्दशाजायन्ते

— स एष पञ्चविंशकः पुरुषस्तं पुरुषं पुरुषो निवेश्य

2. त्र्यक्षः शूलपाणिः पुरुषो ऽजायत

3. पुरुषः परमात्मा व्यवस्थितः

Brahma. 1. पुरुषः प्राणो हिंसा

2. अस्य पुरुषस्य चत्वारि स्थानानि

— स पुरुषः स प्राणः स जीवः

Prâṇâg. 2. महानवो ऽयं पुरुषः

Nîla. 5. मा हिंसीत् पुरुषान्मम

Dhyâna. 9. पुरुषस्य शरीरे तु

Nyâsa. 2. सह तेनैव पुरुषः

Nâr. 1. पुरुषो ह वै नारायणः

5. प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषम् Atmapra. 1.

Gopî. 5. गोपीचन्दनलिप्ताङ्गं पुरुषं य उपासते

— गोपीचन्दनलिप्ताङ्गः पुरुषो येन पूज्यते

Mukti. 1. मुमुक्षवः पुरुषाः

2. पुरुषस्य..चित्तधर्मः

Mukti. 2. तत्पुरुषप्रयत्नसाध्यम्

— *vide* समाधि

2. 59. तादृग्रूपो हि पुरुषः

Gîtâ. 2. 15. यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषम्

21. कथं स पुरुषः पार्थ

60. पुरुषस्य विपश्चितः

3. 4. नैष्कर्म्यं पुरुषो ऽश्नुते

8. 4. पुरुषश्चाधिदैवतम्

8. परमं पुरुषं दिव्यम्

10. स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्

22. पुरुषः स परः पार्थ

9. 3. अश्रद्दधानाः पुरुषाः

10. 12. पुरुषं शाश्वतं दिव्यम्

11. 18. सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे

38. त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण

13. 19. प्रकृतिं पुरुषं चैव

20. पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुः

21. पुरुषः प्रकृतिस्थो हि

22. देहे ऽस्मिन्पुरुषः परः

23. य एवं वेत्ति पुरुषम्

15. 4. तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये

16. द्वाविमौ पुरुषौ लोके

17. उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः

17. 3. श्रद्धामयो ऽयं पुरुषः

पुरुषदेवत्य

Śikhâ. 1. चतुर्थी विद्युन्मती..पुरुषदेवत्या

पुरुषनाय

Chhâ. 6. 8. 3. अश्वनायः पुरुषनायः 5.

पुरुषयुग

Siras. 7. आसप्तमात्पुरुषयुगात्पुनाति Mahâ. 4.

पुरुषरूप

Bṛih. 4. 2. 3. वामे ऽक्षिणि पुरुषरूपम्

पुरुषर्षभ

Gîtâ. 2. 15. यं हि न व्यथयन्त्येते..पुरुषर्षभ

पुरुषवचस्

Chhâ. 5. 3. 3. वेत्थ यथा पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्ति

5. 9. 1. इति तु पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्ति

पुरुषवाच्

Brih. 6. 2. 2. वेत्थो यतिथ्यामाहुत्यां हुतायामापः पुरुषवाचो भूत्वा समुत्थाय वदन्ती ३

पुरुषविद्

Maitri 6 33. पुरुषविदः प्रजापतेः (ter).

पुरुषविध

Brih. 1 4. 1. आत्मैवेदमग्र आसीत्पुरुषविधः

Tait. 2. 2. 1. स वा एष पुरुषविध एव तस्य पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविधः 2. 3. 1; 2. 4. 1; 2. 5. 1.

पुरुषविधता

Tait. 2. 2. 1. तस्य पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविधः 2. 3. 1; 2. 4. 1; 2. 5. 1.

पुरुषव्याघ्र

Gîtâ. 18. 4. त्यागो हि पुरुषव्याघ्र

पुरुषशरीर

Prâṇâg. 1. अस्मिन्नेव पुरुषशरीरे

पुरुषसंज्ञ

Maitri. 2. 5. अमात्रो ऽदृश्यः पुरुषसंज्ञः

पुरुषाग्नि

Brih. 6. 2. 16. ते पुनः पुरुषाग्नौ हूयन्ते

पुरुषायण

Praśna. 6. 5. एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाः षोडशकलाः पुरुषायणाः

पुरुषायतन

Kshur 10. पुरुषायतनं महत्

पुरुषार्थ

Chûl. 4. स्तूयते पुरुषार्थं च

पुरुषोत्तम

Dhyâna 2. यथा दीपो दृश्यते पुरुषोत्तमः (one MS. omits); Yogat. 2.

Yogat 11. पुरुषोत्तमतत्परः

Gopi. 5. पुरुषोत्तमरूपेण

Gîtâ. 8. 1 किं कर्म पुरुषोत्तम

10. 15. वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम

11. 3 रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम

15. 18. प्रथितः पुरुषोत्तमः

19. जानाति पुरुषोत्तमम्

पुरुहूत

Mahânâr. 20. 3. ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रम्

पुरोडाश

Maitri 6. 36. *vide* आदि

पुरोधस्

Gîtâ. 10. 24 पुरोधसां च मुख्यं माम्

पुरोऽनुवाक्या

Brih. 3. 1. 7. पुरोऽनुवाक्या च याज्या च शस्यैव तृतीया 10.

10. प्राण एव पुरोऽनुवाक्या — पृथिवीलोकमेव पुरोऽनुवाक्यया जयति

पुरोवात

Chhâ .2. 3. 1. पुरोवातो हिंकारः

पुष्

Bṛih. 1. 4. 13. इयं हीदं सर्वं पुष्यति
6. 4. 24. अस्मिन् सहस्रं पुष्यासम्
27. येन विश्वा पुष्यासि वार्याणि
Pinda. 7. वाचं पुष्यति वीर्यवान्
Râmap. 27. पुष्टः कोशलजात्मजः
Mukti. 2. 45. एतास्ता युक्तयः पुष्टाः
Gîtâ. 15. 13. पुष्णामि चौषधीः सर्वाः

पुष्कर

Maitri. 3. 2. बिन्दुरिव पुष्करा इति
6. 2. कः पुष्करः किम्मयो वेति — इदं वाव तत्पुष्करं यो ऽयमाकाशः
Siras. 1. पुष्करमहं पवित्रमहम्
Brahma. 1. खगः कर्कटकः पुष्करः
Brahmab. 15. तावत्तिष्ठति पुष्करे

पुष्करपर्ण

Nṛip. 1. 1. स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवत्

पुष्करपलाश

Chhâ. 4. 14. 3. यथा पुष्करपलाश आपो न श्लिष्यन्ते

पुष्करस्रज्

Bṛih. 6. 4. 21. गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ
Mahânâr. 16. 5. मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजौ

पुष्करिणी

Bṛih. 4. 3. 10. न तत्र . . पुष्करिण्यः . . भवन्त्यथ . . पुष्करिण्यः . . सृजते
6. 4. 23. यथा वायुः पुष्करिणीं समिङ्गयति

पुष्कल

Sarvop. 1. मनआदिचतुर्दशकरणैः पुष्कलैः
Gîtâ. 11. 21. स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः

पुष्टि

Mahânâr. 4. 7. मृत्तिके देहि मे पुष्टिम्
19. 1. श्रीश्च पुष्टिश्चानृण्यम्
20. 1. मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु
Siras 3. शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वम्

पुष्टिकाम

Mahânâr. 20. 1. तेभ्यो बलिं पुष्टिकामो हरामि

पुष्टिपति

Mahânâr. 20. 1. मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु

पुष्टिमन्त्

Chhâ. 5. 16. 1. तस्मात्त्वं रयिमान् पुष्टिमानसि

पुष्प

Kaush. 1. 3. पुष्पाण्यादाय
Chhâ. 3. 1. 2. ऋग्वेद एव पुष्पम्
3. 2. 1. यजुर्वेद एव पुष्पम्
3. 3. 1. सामवेद एव पुष्पम्
3. 4. 1. इतिहासपुराणं पुष्पम्
3. 5. 1. ब्रह्मैव पुष्पम्
Bṛih. 6. 4. 1. ओषधीनां पुष्पाणि पुष्पाणां फलानि
Dhyâna. 7. पुष्पमध्ये यथा गन्धम्
Yogat. 8.
9. पुष्पे गन्धमिवार्पितम्
Âśrama. 3. पुष्पफलमुत्सृजन्तः
Vâsu. 3. यथा गन्धः पुष्पेषु
Gîtâ. 9. 26. पत्रं पुष्पं फलं तोयम्

पुष्पित

Gîtâ. 2. 42. यामिमां पुष्पितां वाचम्

पुष्पिन्

Prâṇâg. 1. अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः

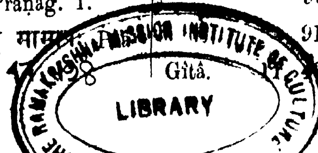
पू

Chhâ. 4. 16. 1. एष ह वै यज्ञो यो ऽयं पवत एष ह यन्निदं सर्वं पुनाति
— यदेष यन्निदं सर्वं पुनाति तस्मादेष एव यज्ञः
5. 10. 10. शुद्धः पूतः पुण्यलोको भवति
Brih. 1. 3. 13. वायुः परेण मृत्युमतिक्रान्तः पवते
3. 9. 8. कतमो ऽध्यर्द्ध इति योऽयं पवत इति
9. यदयमेक इवैव पवते ऽथ कथमध्यर्द्धः
5. 14. 8. शुद्धः पूतो ऽजरो ऽमृतः सम्भवति
[...]tt. 2. 8. 1. भीषास्माद्वातः पवते Nrip 2. 4.
[...]itri. 2. 4. शुद्धः पूतः शून्यः 6. 28. 31.
6. 9. उच्छिष्टोपहतमित्यनेन तत्पावयेत्
— पुनन्तत्त्वं मम दुष्कृतं न यदन्यत्
7. 4. अन्तःशुद्धः पूतः शून्यः
6. शुद्धः पूतो भान्तः क्षान्तः
[...]ṇḍ 2. 1. 6. सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः
[M]ahânâr. 4. 12. तन्मे इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः सविता च पुनन्तु
5. 8. इमास्तदापो वरुणः पुनातु
12. पुनन्तु ऋषयः पुनन्तु वसवः पुनातु वरुणः पुनात्वघमर्षणः
14. 2. आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् Prâṇâg. 1.
— सर्वं पुनन्तु माम् [...] Prâṇâg. 1.

Mahânâr. 17. 6. आसहस्रात्पंक्तिं पुनन्ति 7. 8.
19. 1. तिलाः पुनन्तु मे पापम्
Kaivalya. 24. सुरापानात्पूतो भवति
— ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति
— सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति
— कृत्याकृत्यात्पूतो भवति
Siras. 6. मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रेरयत्पवमानः
7. आचक्षुषः पंक्तिं पुनाति Mahâ. 4
— आसप्तमात्पुरुषयुगात्पुनाति Mahâ. 4.
— शुचिः पूतः कर्मण्यो भवति
Nyâsa. 1. अद्भिः पूताभिराचरेत् Kathasru. 4.
Kâlâg. 2. समस्तमहापातकोपपातकेभ्यः पूतो भवति
Atmapra. 1. तस्मिन्मां धेहि पवमान
Vâsu. 4. सर्वमहापातकेभ्यः पूतो भवति
Gopî. 5. तं तं पूतं विजानीयात्
— पुनात्यादशमं कुलम्
Gîtâ. 4. 10. बहवो ज्ञानतपसा पूताः
10. 31. पवनः पवतामस्मि

पूज्

Vâsu. 4. सर्वैर्देवैः पूज्यो भवति
Gopî. 5. गोपीचन्दनलिप्ताङ्गः पुरुषो येन पूज्यते
— विष्णुपूजितभूतित्वात्
Skanda. 11. सोहम्भावेन पूजयेत्
Râmap. 17. सीतारामौ . . पूज्यौ
38. पूजितावीरपुत्रेण
57. वह्निस्तदायुधैः पूज्यः
90. अंगव्यूहानिलजाद्यैश्च पूज्य
91. मुख्योपहारैर्विविधैश्च पूज्य
Gîtâ. 11. 43. त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्



पूजन

Râmap. 5. ऐश्वर्यं यस्य पूजनात्
Gîtâ. 17. 14. देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम्

पूजा

Râmap. 13. विना यन्त्रेण चेत्पूजा
Gîtâ. 17. 18. सत्कारमानपूजार्थम्

पूजार्ह

Gîtâ. 2. 4. पूजार्हावरिसूदन

पूतपाप

Gîtâ. 9. 20. त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापाः

पूति

Gîtâ. 17. 10. पूतिपर्युषितं च यत्

पूय्

Brih. 5. 12. 1. पूयति वा अन्नमृते प्राणात्

पूरक

Amrita. 9. रेचकपूरककुम्भकाः
12. पूरकस्येति लक्षणम्
Dhyâna. 11. पूरकेण विचिन्तयेत्

पूरुष

Brih. 4. 4. 12. अयमस्मीति पूरुषः
Gîtâ. 3. 19. परमाप्नोति पूरुषः
36. पापं चरति पूरुषः

पूर्णानन्द

Parama. 3. पूर्णानन्दैकरूपरसबोधः (MSS.)
Râmot. 5. पूर्णानन्दैकविज्ञानम्

पूर्त्त

Śwet. 2. 7. न हि ते पूर्त्तमक्षिपत् (so Nârâyaṇa and Śaṁkarânanda).

पूर्व

Kaush. 1. 5. बृहद्रथन्तरे सामनी पूर्वौ पादौ
Kaush. 1. 5. तस्य भूतं च भविष्यच्च पूर्वौ पादौ
2. 5. एतत् पूर्वे विद्वांसो ऽग्निहोत्रं न जुहवांचक्रुः
8. न ह्यस्मात् पूर्वाः प्रजाः प्रैति
10. न ह्यस्याः पूर्वाः प्रजाः प्रैति
Kena. 3. इति शुश्रुम पूर्वेषाम्
Chhâ. 6. 4. 5. पूर्वे महाशाला महाश्रोत्रियाः
7. 11. 1. तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वा (bis).
Brih. 1. 1. 2. तस्य पूर्वे समुद्रे योनिः
1. 4. 1. स यत्पूर्वो ऽस्मात्सर्वस्मात् — यो ऽस्मात्पूर्वो बुभूषति
4. 3. 1. तं सम्राडेव पूर्वः पप्रच्छ
18. पूर्वं च परं च
4. 4. 22. पूर्वे विद्वांसः प्रजां न कामयन्ते
6. 2. 7. वाचा ह स्म वै पूर्व उपयन्ति
8. इयं विद्येतः पूर्वं न कस्मिंश्चन ब्राह्मण उवास
Îśâ. 4. नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्
Tait. 2. 3. 1. तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्य 2. 4. 1; 2. 5. 1; 2. 6. 1.
3. 10. 6. पूर्वं देवेभ्यो ऽमृतस्य ना ३ भायि Nrip. 2. 4.
Katha. 1. 6. अनुपश्य यथा पूर्वे
1. 6. यः पूर्वं तपसो जातमद्भ्यः पूर्वमजायत
Śwet. 2. 16. पूर्वो हि जातः स उ गर्भे अन्तः Mahânâr. 2. 1; Siras. 5.
3. 4. हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वम्
5. 6. ये पूर्वं देवा ऋषयश्च तद्विदुः
6. 5. देवं स्वचित्तस्थमुपास्य पूर्वम्

Śwet. 6. 18. यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्
Maitri. 1. 1. ब्रह्मयज्ञो वा एष यत्पूर्वेषां चयनम्
6. 21. परः पूर्वं प्रतिष्ठाप्य
Gauḍa. 2. 16. जीवं कल्पयते पूर्वम्
4. 21. कथं पूर्वं न गृह्यते
Trip. 2. 1. प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा Nrisut. 3 (bis).
Śiras. 6. न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति
Śikhâ. 1. पूर्वास्य मात्रा पृथिव्यकारः
Yogat. 3. यः स्तन्यं पूर्वं पीत्वापि
Kaṭhaśru. 3. अग्निसंस्थितानि पूर्वाणि दारुपात्राणि
Sarvop. 4. पूर्वं व्यापकं चैतन्यम्
Vâsu. 3. पूर्वमभ्यस्य पुण्ड्रस्थम्
Mukti. 2. 69. मानसीर्वासनाः पूर्वम्
Gîtâ. 4. 15. पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः
— पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्
10. 6. महर्षयः सप्त पूर्वे

पूर्वजन्मार्जित

yâsa. 5. पूर्वजन्मार्जितात्मनः

पूर्वजाति

rbha. 3. पूर्वजातीःस्मरति (so MSS.)

पूर्वतर

ītâ. 4. 15. पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्

पूर्वदल

ṅsa. 2. पूर्वदले पुण्ये मतिः

पूर्वनिष्पन्न

ıḍa. 4. 18. कतरत्पूर्वनिष्पन्नम्

पूर्वपक्ष

ısh. 1. 2. तेषां मार्गैः पूर्वपक्ष आप्यायते
h. 3. 1. 5. पूर्वपक्षापरपक्षाभ्याम् (bis).
— पूर्वपक्षापरपक्षयोः

पूर्वप्रज्ञा

Bṛih. 4. 4. 2. तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च

पूर्वरूप

Tait. 1. 3. 1. पृथिवी पूर्वरूपम्
2. अग्निः पूर्वरूपम्
— आचार्यः पूर्वरूपम्
3. माता पूर्वरूपम्
4. अधरा हनुः पूर्वरूपम्

पूर्ववत्

Kaṭhaśru. 1. तान् सर्वांश्च पूर्ववद्वृणीत्वा
Jâbâla. 4. पूर्ववदग्निमाघ्रापयेत्
Krish. 19. पूर्ववच्च महोदधौ

पूर्वापर

Gauḍa. 4. 21. पूर्वापरापरिज्ञानमजातेः परिदीपकम्
Mukti. 2. 57. त्यक्तपूर्वापरविचारणम्

पूर्वाभ्यास

Gîtâ. 6. 44. पूर्वाभ्यासेन तेनैव

पूर्वामुख

Mahâ. 3. सो ऽध्यायत पूर्वामुखो भूत्वा

पूर्वार्द्ध

Bṛih 1. 1. 1. उद्यन्नु पूर्वार्द्धः

पूर्वाह्ण

Chhâ. 5. 11. 7. समित्पाणयः पूर्वाह्णे प्रतिचक्रमिरे

पूर्वोक्त

Amṛita. 21. पश्चाद् ध्यायेत पूर्वोक्तम्

पूर्वोत्तर

Mukti. 1. 41. पूर्वोत्तरेषु विहितः (?)

पूर्व्य

Swet. 2. 5. युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः
7. जुषेत ब्रह्म पूर्व्यम्

पूषन्

Brih. 1. 4. 13. शौद्रं वर्णमसृजत पूषणमियं वै पूषा
5. 15. 1. तत्त्वं पूषन्नपावृणु Isâ. 15; Maitri. 6. 35.
— पूषन्नेकर्षे . . व्यूह रश्मीन् Isâ. 16.

Nrip. 1. 1. स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः Nrisut. 1.

पृतनाजित्

Mahânâr. 6. 6. पृतनाजितं सहमानम्

पृथक्

Chhâ. 5. 11. 5. पृथगर्हाणि कारयाञ्चकार
5. 14. 1. तस्मात्त्वां पृथग्बलय आयन्ति पृथग्रथश्रेणयो ऽनुयन्ति
5. 18. 1. पृथगिवेममात्मानं वैश्वानरं विद्वांसः

Brih. 2. 4. 10. पृथग्धूमा विनिश्चरन्ति 4. 5. 11; Maitri. 6. 33 (omits वि)

Katha. 4. 14. एवं धर्मान् पृथक् पश्यन्
6. 6. पृथगुत्पद्यमानानाम्

Swet. 1. 6. पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा

Prasna. 3. 4. इतरान् प्राणान् पृथक् पृथगेव सन्निधत्ते

Gauda. 1. 6. चेतोंशून् पुरुषः पृथक्
2. 30. पृथगेवेति लक्षितः
34. न पृथङ्नापृथक्किञ्चित् (MSS. न पृथक्त्वात्पृथ०)
4. 26. नार्थाभासस्ततः पृथक्
36. पृथगन्यस्य दर्शनात्

Gauda. 4. 64. न विद्यन्ते ततः पृथक् 6
78. हेतुं पृथगनाप्नुवन

Parama. 3. न पृथङ्नापृथक्

Mukti. 1. पृथक् शान्तिमनुब्रूहि

Gîtâ. 1. 18. शंखान्दध्मुः पृथक् पृथक्
5. 4. सांख्ययोगौ पृथक्
18. 1. त्यागस्य च . . पृथक्
14. विविधाश्च पृथक् चेष्टाः

पृथक्त्व

Maitri. 6. 14. प्रमेयो ऽपि प्रमाणतां पृ: क्त्वादुपैति

Gauda. 3. 14. जीवात्मनोः पृथक्त्वं यत्

Gîtâ. 9. 15. एकत्वेन पृथक्त्वेन
18. 21. पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानम
29. पृथक्त्वेन धनञ्जय

पृथग्भाव

Katha. 6. 6. इन्द्रियाणां पृथग्भावं मत्वा

Gîta. 13. 30. यदा भूतपृथग्भावम्

पृथग्लक्षण

Maitri. 6. 22. तं पृथग्लक्षणमतीत्य

पृथग्वर्त्मन्

Chhâ. 5. 14. 1. एष वै पृथग्वर्त्मात्मा
5. 18. 2. प्राणः पृथग्वर्त्मात्मा

पृथग्वाद

Gauda. 4. 94. भेदनिम्नाः पृथग्वादाः

पृथग्विध

Gauda. 2. 16. ततो भावान्पृथग्विधान

Gîtâ. 10. 5. मत्त एव पृथग्विधाः
18. 14. करणं च पृथग्विधम
21. नानाभावान्पृथग्विधान्

पृथिवी

Ait. 1. 2. पृथिवी मरः
5. 3. पृथिवी वायुराकाश ज्योतींषि

Kaush. 3. 1. अतृणम्..पृथिव्यां कालकांजान्

Kena. 18. इदं सर्वं दहेयं यदिदं पृथिव्यामिति

22. इदं सर्वमाददीयं यदिदं पृथिव्यामिति

Chhâ. 1. 1. 2. एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपः Brih.6.4.1.

1. 3. 7. पृथिवी थम्

2. 2. 1. पृथिवी हिंकारः 2. 17. 1.

2. पृथिवी निधनम्

3. 12. 2. या वै सा गायत्रीयं वाव सा येयं पृथिवी

3. या वै सा पृथिवीयं वाव सा यदिदमस्मिन्पुरुषे शरीरम्

3. 14. 3. ज्यायान् पृथिव्याः

3. 15. 5. पृथिवीं प्रपद्ये

3. 19. 2. यद्रजतं सेयं पृथिवी

4. 6. 3. पृथिवी कलान्तरिक्षं कला

4. 11. 1. पृथिव्यग्निरन्नमादित्यः

4. 17. 1. अग्निं पृथिव्याः

5. 6. 1. पृथिवी वाव..अग्निः

5. 17. 1. पृथिवीमेव भगवो राजन्

5. 18. 2. पृथिव्येव पादौ

5. 21. 2. पृथिवी तृप्यति पृथिव्यां तृप्यन्त्यां यत्किञ्च पृथिवी चाग्निश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति

7. 2. 1. दिवं च पृथिवीं च 7. 7. 1.

7. 6. 1. ध्यायतीव पृथिवी

7. 8. 1. बलेन वै पृथिवी तिष्ठति

7. 10. 1. येयं पृथिवी यदन्तरिक्षम्

Brih. 1. 1. 1. पृथिवी पाजस्यम्

1. 2. 2. सा पृथिव्यभवत्

1. 5. 11. तस्यै वाचः पृथिवी शरीरम्

— यावत्येव वाक्तावती पृथिवी

18. पृथिव्यै चैनमग्नेश्च

2. 2. 2. अधरयैनं वर्त्तन्या पृथिव्यन्वायत्ता

Brih. 2. 4. 2. सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा 4. 5. 3.

2. 5. 1. पृथिवी सर्वेषां भूतानां मध्वस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु

— पृथिव्यां तेजोमयः..पुरुषः

3. 2. 13. पृथिवीं शरीरं (अप्येति)

3. 3. 2. तं समन्तं पृथिवीं..पर्येति तां समन्तं पृथिवीं..समुद्रः पर्येति

3. 7. 3. यः पृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अन्तरो यं पृथिवी न वेद यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमन्तरो यमयति

3. 8. 3. यदवाक् पृथिव्याः 4, 6, 7.

3. 9. 3. अग्निश्च पृथिवी च वायुश्च 7.

10. पृथिव्येव यस्यायतनम्

6. 2. 11. पृथिव्येव सामित्

16. वृष्टेः पृथिवीं ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति

6. 4. 5. यन्मे ऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीत्

20. द्यौरहं पृथिवी त्वम्

22. यथाग्निगर्भा पृथिवी

Tait. 1. 3. 1. पृथिवी पूर्वरूपम्

1. 7. 1. पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौः

2. 1. 1. अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः

2. 2. 1. याः काश्च पृथिवीं श्रिताः

— पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा

2. 8. 1. तस्येयं पृथिवी वित्तस्य पूर्णा

3. 9. 1. पृथिवी वा अन्नं..पृथिव्यामाकाशः..आकाशे पृथिवी

Śwet. 2. 1. पृथिव्या अध्याभरत्

12. पृथ्व्याप्यतेजोनिलखे 6. 2 (ख्वानि)

Maitri. 1. 4. निमज्जनं पृथिव्याः
5. 1. त्वं यमस्त्वं पृथिवी
6. 4. पृथिवी गार्हपत्यः
Mund. 1. 1. 7. यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भवन्ति
2. 1. 3. पृथिवी विश्वस्य धारिणी Kaivalya. 15; Nâr. 1.
4. अस्य पद्भ्यां पृथिवी
5. ओषधयः पृथिव्याम्
2. 2. 5. यस्मिन्द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतम्
Mahânâr. 5. 7. दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षम्
8. यत्पृथिव्यां रजः स्वमान्तरिक्षे
7. 1. पृथिव्यै स्वाहा 2.
3. भूरग्नये च पृथिव्यै च
14. 2. आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम् Prâṇâg. 1.
22. 1. गार्हपत्यमृक् पृथिवी रथन्तरम्
23. 1. येन सर्वमिदं प्रोतं पृथिवी चान्तरिक्षं च
Praśna. 2. 2. वायुरग्निरापः पृथिवी
5. वायुरेष पृथिवी रयिर्देवः
3. 8. पृथिव्यां या देवता
4. 8. पृथिवी च पृथिवीमात्रा च
6. 4. खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी Kaivalya. 15.
Gauḍa. 3. 12. पृथिव्यामुदरे चैव
Nṛip. 2. 1. प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा पृथिव्यकारः Nṛisut. 3.
Brahmav. 5. पृथिवी ब्रह्म एव च
Śiras. 2. यो वै रुद्रः.. या च पृथिवी
6. पृथिवी त्रिधा त्रिधर्ता धारिता
Śikhâ. 1. पूर्वास्य मात्रा पृथिव्यकारः
Garbha. 1. पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशम्
— का पृथिवी का आपः
— तत्र यत्कठिनं सा पृथिवी
— तत्र पृथिवी धारणे
Nîla. 1. दिवितः पृथिवीमवः
18. ये केच पृथिवीमनु
Nyâsa. 2. पृथिव्यां नाश्रुपातकाः
4. अज्ञः पृथिवी पृथिव्या इत्येषां भूतानाम्
Gopî. 4. पञ्चभूतेषु गन्धवतीयं पृथिव्यासीत्
— पृथिव्याश्च वैभवाद्वर्णभेदाः
Râmap. 86. पृथिव्यब्जे स्वासनाधः प्रकल्प्य
Gîtâ. 1. 19. नभश्च पृथिवीं चैव
7. 9. पुण्यो गन्धः पृथिव्याम्
18. 40. न तदस्ति पृथिव्याम्

पृथिवीक्षित्

Chhâ. 2. 24. 5. नमो ऽग्नये पृथिवीक्षिते Maitri. 6. 35.

पृथिवीपति

Gîtâ. 1. 18. सर्वशः पृथिवीपते

पृथिवीमय

Bṛih. 4. 4. 5. पृथिवीमय आपोमयः

पृथिवीमात्रा

Praśna. 4. 8. पृथिवी च पृथिवीमात्रा च

पृथिवीलोक

Bṛih. 3. 1. 10. पृथिवीलोकमेव पुरोऽनुवाक्यया जयति

पृथिवीश्रित

Maitri. 6. 11. याः काश्चित् पृथिवीश्रिता (cf. Tait. 2. 2. 1).

पृथु

Mahânâr. 6. 4. पृथ्वी पृथ्वी बहुला न उर्वी

rbha. 1. आकाशमवकाशप्रदाने पृथुस्तु (so one MS. and Dîpikâ).

पृथुष्टुक

ih. 6. 4. 21. गर्भं धेहि पृथुष्टुके

पृषदाज्य

ih. 6. 4. 24. कंसे पृषदाज्यं सन्नीय पृषदाज्यस्योपघातं जुहोति

पृष्ठ

hâ. 3. 13. 7. विश्वतः पृष्ठेषु सर्वतःपृष्ठेषु
ih. 1. 1. 1. द्यौः पृष्ठम् 1. 2. 3.
it. 1. 10. 1. कीर्त्तिः पृष्ठं गिरेरिव
itri. 6. 33. शिरःपक्षसीपुच्छपृष्ठवान् (ter).
ind. 1. 2. 10. नाकस्य पृष्ठे Mahânâr. 1. 1.
hânâr. 5. 3. नाकस्य पृष्ठमारुह्य

पृष्ठतस्

ih. 1. 5. 3. पृष्ठत उपस्पृष्टो मनसा विजानाति
tâ. 11. 40. नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते

पृष्ठवंश

rbha. 3. पञ्चमे पृष्ठवंशः (all the MSS. have पृष्ठिवंशः)

पॄ

aush. 4. 2. आकाशे पूर्णम्
8. पूर्णमप्रवृत्ति ब्रह्मेति वा अहमेतमुपासे..एतमेवमुपास्ते पूर्यते प्रजया
hhâ. 3. 11. 6. धनस्य पूर्णाम्
3. 12. 9. तदेतत्पूर्णमप्रवर्त्ति पूर्णामप्रवर्त्तिनीं श्रियं लभते य एवं वेद
rih. 1. 4. 3. तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते

Brih. 2. 1. 5. पूर्णमप्रवर्त्तीति..एतमुपा — एवमुपास्ते पूर्यते प्रजया
2. 4. 2. सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा 4. 5. 3.
4. 3. 20. शुक्लस्य नीलस्य पिङ्गलस्य हरितस्य लोहितस्य पूर्णाः
5. 1. 1. पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते &c., Mukti. 1.
5. 14. 6. य इमांस्त्रीँल्लोकान्पूर्णान्प्रतिगृह्णीयात्
6. 3. 4. ज्वलदसि पूर्णमसि
6. 4. 19. उदपात्रं पूरयित्वा
Tait. 2. 2. 1. तेनैष पूर्णः 2. 3. 1; 2. 4. 1; 2. 5. 1.
2. 8. 1. तस्येयं पृथिवी वित्तस्य पूर्णा
Śwet. 3. 9. तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम् Mahânâr. 10. 4.
Maitri. 1. 1. स पूर्णः खलु..संपद्यते यज्ञः
6. 26. पूरयतीमाल्लोँकान्
Nrip. 5. 10. यतीनां तु शतं पूर्णम्
Kshur. 4. पूरयेत्सर्वमात्मानम्
11. तां नाडीं पूरयन्यतः
Yogat. 3. यस्मिन् जाते भगे पूर्णे (so all MSS.).
12. वायुः पूरत पूरत (so Nârâyaṇa; but 4 MSS. read पूरतपूरतः one पूरकपूरकः and one पूरतः पूरतः)
Mukti. 1. 36. अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णा
1. पूर्णमद इति शान्तिः
2. 52. तावत्पूर्णां समावस्थाम्

पेशस्

Brih. 4. 4. 4. पेशसो मात्रामुपादाय

पेशस्कारिन्

Brih. 4. 4. 4. यथा पेशस्कारी पेशसो मात्रामुपादाय

पैङ्गल

Mukti. 1. 35. शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षुम्
1. *vide* मुक्तिका

पैंग्य

Kaush. 2. 2. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह पैंग्यः
Bṛih. 6. 3. 8. मधुकाय पैंग्याय
9. मधुकः पैंग्यः

पैप्पलाद

Garbha. 5. पैप्पलादं मोक्षशास्त्रम्

पौंस्न

Kaush. 1. 7. केन मे पौंस्नानि नामान्याप्नोषि (MSS. read पौंस्यानि)

पौण्ड्र

Gîtâ. 1. 15. पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखम्

पौतिमाषीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 1. पौतिमाषीपुत्रः कात्यायनीपुत्रात्

पौतिमाष्य

Bṛih. 2. 6. 1. पौतिमाष्यो गौपवनात् (bis); 4. 6. 1 (bis).
— गौपवनः पौतिमाष्यात् 4. 6. 1.

पौत्र

Gîtâ. 1. 26. पुत्रान्पौत्रान् सखींस्तथा
34. मातुलाः श्वशुराः पौत्राः

पौत्रायण

Chhâ. 4. 1. 1. जानश्रुतिः पौत्रायणः 5; 4. 2. 1, 3.
2. जानश्रुतेः पौत्रायणस्य

पौरुशिष्टि

Tait. 1. 9. 1. तपोनित्यः पौरुशिष्टिः

पौरुष

Kaush. 3. 1. इन्द्रस्य प्रियं धामोपजग युद्धेन पौरुषेण च
Mukti. 2. 1. पौरुषं द्विविधं स्मृतम्
6. पौरुषेण प्रयत्नेन 7.
15. पौरुषेण विवेकिना
Gîtâ. 7. 8. शब्दः खे पौरुषं नृषु
18. 25. अनवेक्ष्य च पौरुषम्

पौर्णमास

Kaush. 2. 3. पौर्णमास्यां वामावास्या वा
9. पौर्णमास्यां पुरस्ताच्चन्द्रमसं.. उपतिष्ठेत
Chhâ. 5. 2. 4. पौर्णमास्यां रात्रौ
Aśrama. 3. कार्त्तिक्यां पौर्णमास्याम्

पौर्णमास्य

Kathaśru. 3. यत्पौर्णमास्ये तत्पौर्णमा

पौर्वदैहिक

Gîtâ. 6. 43. लभते पौर्वदैहिकम्

पौलुषि

Chhâ. 5. 11. 1. सत्ययज्ञः पौलुषिः
5. 13. 1. सत्ययज्ञं पौलुषिम्

पौलोम

Kaush. 3. 1. अतृणमहमन्तरिक्षे पौल मान्

पौल्कस

Bṛih. 4. 3. 22. पौल्कसोऽपौल्कसः
Brahma. 2. तत्र.. पौल्कसो न पौल्क
Parama. 3. स पौल्कसो भवेत्

प्यायन

Maitri. 6. 7. अथापो प्यायनात्

प्र

Chhâ. 2. 8. 1. यत्प्रेति स प्रस्तावः

प्रकटित

ti. 2. 24. भावसंवित्प्रकटिताम्

प्रकटीकृ

ap. 2. विद्वद्भिः प्रकटीकृतः

प्रकर्ष

ti. 2. 53. ध्यानाभ्यासप्रकर्षतः

प्रकाश्

ha. 3. 12. गूढात्मा न प्रकाशते
t. 5. 4. सर्वा दिशः . . प्रकाशयन्
6. 23. तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते
ina. 1. 6. यत्सर्वं प्रकाशयति
2. 1. कतर एतत् प्रकाशयन्ते
2. ते प्रकाश्याभिवदन्ति
valya. 17. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चं यत् प्रकाशते
da. 2. 3. स्वप्न आहुः प्रकाशितम्
3. 12. परं ब्रह्म प्रकाशितम्
— यथाकाशः प्रकाशितः
26. अजं प्रकाशते
sut. 2. एष ह्यात्मानं प्रकाशयति
7. प्रकाशते प्रकाशते चेति
vop. 2. तत्र यत् प्रकाशते चैतन्यम्
3. यदा प्रकाशत आत्मा
msa. 2. निरञ्जनः शान्तः प्रकाशितः (so MSS.).
tâ. 5. 16. प्रकाशयति तत्परम्
13. 33. यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः
— क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत

1. प्रकाश *adj.*

tâ. 7. 25. नाहं प्रकाशः सर्वस्य

2. प्रकाश

Maitri. 7. 11. एतत् समीरणे प्रकाशप्रक्षेपकौष्ण्यस्थानीयम्
Gîtâ. 14. 11. प्रकाश उपजायते
22. प्रकाशं च प्रवृत्तिं च

प्रकाशक

Gîtâ. 14. 6. प्रकाशकमनामयम्

प्रकाशन

Garbha. 1. तेजः प्रकाशने
Râmap. 49. वामे तेजः प्रकाशनम्

प्रकाशवन्त्

Chhâ. 4. 5. 2. चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः प्रकाशवान्नाम
3. चतुष्कलं पादं ब्रह्मणः प्रकाशवानित्युपास्ते प्रकाशवानस्मिँल्लोके भवति प्रकाशवतो लोकाञ्जयति
7. 12. 2. स लोकान् प्रकाशवतः . . अभिसिध्यति

प्रकीर्त्ति

Gîtâ. 11. 36. तव प्रकीर्त्त्या जगत्प्रहृष्यति

प्रकृ

Kâlâg. 1. तिर्यक् तिस्रो रेखाः प्रकुर्वीत

प्रकृति

Śwet. 4. 10. मायां तु प्रकृतिं विद्यात्
Maitri. 6. 10. भोक्ता पुरुषो भोज्या प्रकृतिः
Gauḍa. 3. 21. प्रकृतेरन्यथाभावो न कथञ्चिद्भविष्यति 4. 7, 29.
4. 9. प्रकृतिः सेति विज्ञेया स्वभावं न जहाति या
29. अजातिः प्रकृतिस्ततः
91. प्रकृत्याकाशवज्ज्ञेयाः
92. आदिबुद्धाः प्रकृत्यैव
93. प्रकृत्यैव सुनिर्वृताः

Nrip. 4. 3. यो वै नृसिंहः..या प्रकृतिस्तस्मै वै नमो नमः (9).
Garbha. 3. अष्टौ प्रकृतयः षोडश विकाराः
Gopî. 2. प्रकृतिमहदहमायाः
Râmap. 25. प्रकृत्या सहितः श्यामः
26. प्रकृत्या परमैश्वर्या
Râmot. 3. प्रणवत्वात्प्रकृतिः
5. यो वै श्रीरामः..या प्रकृतिः (38)
Gîtâ. 3. 27. प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः
29. प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः
33. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः
— प्रकृतिं यान्ति भूतानि
4. 6. प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय
7. 4. भिन्ना प्रकृतिरष्टधा
5. प्रकृतिं विद्धि मे पराम्
20. प्रकृत्या नियताः स्वया
9. 7. प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्
8. प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य
— अवशं प्रकृतेर्वशात्
10. मयाध्यक्षेण प्रकृतिः
12. प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः
13. दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः
11. 51. सचेताः प्रकृतिं गतः
13. 19. प्रकृतिं पुरुषं चैव
20. हेतुः प्रकृतिरुच्यते
23. य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च
29. प्रकृत्यैव तु कर्माणि क्रियमाणानि
18. 59. प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति

प्रकृतिज

Gîtâ. 3. 5. प्रकृतिजैर्गुणैः
13. 21. भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्
18. 40. सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तम्

प्रकृतिदान्त

Gauda. 4. 86. दमः प्रकृतिदान्तत्वात्

प्रकृतिनिर्मल

Gauda. 4. 98. अलब्धावरणाः सर्वे धर्माः प्रकृतिनिर्मलाः

प्रकृतिभेद

Maitri. 6. 30. प्रकृतिभेदवशात्

प्रकृतिमय

Maitri. 2. 6. प्रकृतिमयो ऽस्य प्रतोदः

प्रकृतिलीन

Mahânâr. 10. 8. तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः

प्रकृतिसम्भव

Gîtâ. 13. 19. विद्धि प्रकृतिसम्भवान्
14. 5. गुणाः प्रकृतिसम्भवाः

प्रकृतिस्थ

Gîtâ. 13. 21. पुरुषः प्रकृतिस्थो हि
15. 7. इन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति

प्रकृत्

Gauda. 1. 5. भोक्ता यश्च प्रकीर्तितः
3. 14. प्रागुत्पत्तेः प्रकीर्तितम्
4. 88. सदा बुद्धैः प्रकीर्तितम्
Amrita. 36. प्राणो वायुः प्रकीर्तितः
Mukti. 2. 57. वासना सा प्रकीर्तिता

प्रकॢप्

Maitri. 6. 12. अन्नकामेनेदं प्रकल्पितं ब्रह्मणा
Râmap. 86. स्वासनाधः प्रकल्प्य

प्रक्षल्

Brih. 6. 3. 6. पाणी प्रक्षाल्य
6. 4. 19. प्रक्षाल्य पाणी

प्रक्षालन

Vâsu. 1. प्रतिदिनमालिप्तं गोपीभिः प्रक्षालनात्

प्रक्षि

2. 41. प्रक्षीणाचित्तदर्पस्य

प्रक्षेपक

7. 11. एतत् समीरणे प्रकाशप्रक्षेपकौष्ण्यस्थानीयम्
— अप्सु प्रक्षेपको लवणस्येव

प्रग्रह

.. 3. 3. मनः प्रग्रहमेव च

प्रघ्रा

1. 2. 3. धूमगन्धं प्रजिघ्राय 4.

प्रचक्ष्

a. 3. 33. ज्ञेयाभिन्नं प्रचक्षते

प्रचर्

i. 6. 31. किमात्मकानि वा एतानीन्द्रियाणि प्रचरन्ति
nâr. 20. 1. ये भूताः प्रचरन्ति
a. 4. 2. ताः पुनः पुनरुदयतः प्रचरन्ति
a. 4. 63. स्वप्नदृक् प्रचरन् स्वप्ने

प्रचलन

i. 1. 4. ध्रुवस्य प्रचलनम्

प्रचार

a. 3. 34. प्रचारः स तु विज्ञेयः

प्रचुद्

6. 3. 6. धियो यो नः प्रचोदयात्
Mahânâr. 15. 2.
.. 6, 22. वेदान्ते परमं गुह्यं..प्रचोदितम्
ri. 6. 7. धियो यो नः प्रचोदयादिति बुद्धयो वै धियस्ता यो ऽस्माकं प्रचोदयात्
hnâr. 3. 1. तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् 17. 4.
3. तन्नो वृषभः प्रचोदयात् 11.

Mahânâr. 3. 4. तन्नो दन्ती प्रचोदयात्
5. तन्नः षष्ठः प्रचोदयात्
6. तन्नो वैश्वानरः प्रचोदयात्
7. तन्नो अग्निः प्रचोदयात्
8. तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्
9. तन्न आदित्यः प्रचोदयात्
10. तन्नो भानुः प्रचोदयात्
12. तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्
13. तन्नो भगवती प्रचोदयात्
14. तन्नो गौरी प्रचोदयात्
15. तन्नो गरुडः प्रचोदयात्
16. तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्
17. तन्नः सिंहः प्रचोदयात्
Nrip. 4. 2.
18. तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्
4. 9. तन्नो महालक्ष्मीः प्रचोदयात्
Nrip. 4. 2.
Hamsa. 2. तनु सूक्ष्म प्रचोदयात् (so 5 MSS.; two have तन्नः सूक्ष्मः and one तनुसूक्ष्माय)

प्रचेतस्

Mahânâr. 13. 3. कद्रुद्राय प्रचेतसे

प्रचोदयितृ

Maitri. 2. 3. प्रचोदयिता वा अस्य
4. प्रचोदयिता वैषो ऽप्यस्य 5, 6.
— प्रचोदयिता वैषो ऽस्य कथम् 5.

प्रछ्

Kaush. 1. 1. तं हाभ्यागतं पप्रच्छ
— हन्ताचार्यं पृच्छानीति स ह पितरमासाद्य पप्रच्छेतीति माप्राक्षीत्
2. तमागतं पृच्छति को ऽसीति
5. तं ब्रह्मा पृच्छति को ऽसीति

Chhâ. 1. 8. 3. हन्त त्वा पृच्छानीति पृच्छेति
4. 4. 4. अपृच्छं मातरम्
5. 3. 5. पञ्च..प्रश्नानप्राक्षीत् Brih. 6. 2. 3.
5. 11. 3. प्रक्ष्यन्ति मामिमे महाशालाः
6. 1. 3. उत तमादेशमप्राक्ष्यः
6. 7. 4. यत्किञ्च पप्रच्छ सर्वं ह प्रतिपेदे
6. 14. 2. स ग्रामाद्ग्रामं पृच्छन्
Brih. 3. 1. 2. एनं पप्रच्छ त्वं..ब्रह्मिष्ठो ऽसी३ इति
— प्रष्टुं दध्रे होताश्वलः
3. 2. 1. जारत्कारव आर्त्तभागः पप्रच्छ
3. 3. 1. भुज्युर्लाह्यानिः पप्रच्छ
— तमपृच्छाम को ऽसीति 3. 7. 1.
— यदा लोकानामन्तानपृच्छाम
— स त्वा पृच्छामि याज्ञवल्क्य
3. 4. 1. उषस्तश्चाक्रायणः पप्रच्छ
3. 5. 1. कहोलः कौषीतकेयः पप्रच्छ
3. 6. 1. गार्गी वाचक्नवी पप्रच्छ
3. 7. 1. उद्दालक आरुणिः पप्रच्छ
3. 8. 1. द्वौ प्रश्नौ प्रक्ष्यामि
— पृच्छ गार्गीति 2, 5.
3. 9. 1. विदग्धः शाकल्यः पप्रच्छ
26. तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि
27. यो वः कामयते स मा पृच्छतु सर्वे वा मा पृच्छत यो वः कामयते तं वः पृच्छामि सर्वान्वा वः पृच्छामीति
28. तान्हैतैः श्लोकैः पप्रच्छ
4. 3. 1. तं सम्राडेव पूर्वः पप्रच्छ

Mund. 1. 1. 3. अङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ
Prasna. 1. 2. यथाकामं प्रश्नान् पृच्छथ
3. कबन्धी कात्यायन उपेत्य पप्रच्छ
2. 1. भार्गवो वैदर्भिः पप्रच्छ
3. 1. कौसल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छ
2. अतिप्रश्नान् पृच्छसि
4. 1. सौर्यायणी च गार्ग्यः पप्रच्छ
5. 1. शैब्यः सत्यकामः पप्रच्छ
6. 1. सुकेशा भारद्वाजः पप्रच्छ
— मामुपेत्यैतं प्रश्नमपृच्छत
— तं त्वा पृच्छामि क्वासौ पुरुष इति
Nrisut. 8. एवं नैवमिति पृष्ट ओमित्येवाह
9. न भेतव्यं पृच्छेतेति
Siras. 1. ते रुद्रमपृच्छन् को भवान्
— ते देवा रुद्रमपृच्छन्
Sikhâ. 1. अथर्वाणं भगवन्तं पप्रच्छ
Brahma. 1. अङ्गिरसं भगवन्तं पिप्पलादं पप्रच्छ
Kâlâg. 1. कालाग्निरुद्रं भगवन्तं सनत्कुमारः पप्रच्छ
Jâbâla. 2. अथ हैनमत्रिः पप्रच्छ 5 Râmot. 4.
5. पृच्छामि त्वा याज्ञवल्क्य
Vâsu. 1. सर्वेश्वरं वासुदेवं पप्रच्छ
Râmot. 2. अथ हैनं भरद्वाजः पप्रच्छ
Mukti. 1. 4. स्तुवन्पप्रच्छ मारुतिः
7. साधु पृष्टं महाबाहो
— श्रीरामचन्द्रं मारुतिः पप्रच्छ
Gîtâ. 2. 7. पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः

प्रच्छद्

Kaush. 2. 15. वसनान्तेन वा प्रच्छाद्य

प्रजक्ष्

g. 1. रुद्रैः प्रजग्धं यदि वा पिशाचैः

प्रजन्

h. 1. 2. तानपरपक्षेण प्रजनयति
4. 16. प्रजायते प्रजया पशुभिः Brih. 6. 1. 6 (bis).
2. 13. 2. मिथुनान्मिथुनात्प्रजायते
6. 2. 3. तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेय
— तत्तेज ऐक्षत बहु स्यां प्रजायेय
4. आप ऐक्षन्त बह्व्यः स्याम प्रजायेमहीति
1. 4. 17. जाया मे स्यादथ प्रजायेय (bis).
3. 9. 28. जीवतस्तत्प्रजायते
6. 1. 8. प्रजायमाना रेतसा 9–11.
2. 2. 1. अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते Maitri. 6. 11
2. 6. 1. सो ऽकामयत बहु स्यां प्रजायेय
i. 6. 15. संवत्सरात्..इमाः प्रजाः प्रजायन्ते
.2. 1. 1. प्रजायन्ते तत्र चैवापियन्ति
nâr. 21. 2. तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजायन्ते
23. 1. पर्जन्येनौषधिवनस्पतयः प्रजायन्ते
a. 1. 3. कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्ते
14. तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्ते
1. 7. विश्वमेनानु प्रजायते
ıa. 3. द्विधा तनूः स्याद्युग्माः प्रजायन्ते
12. सार्वभौमः प्रजायते
5. अस्थिमज्जा प्रजायते
7. दीर्घमायुः प्रजायते

73

प्रजन

Tait. 1. 9. 1. प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च
Gîtâ. 10. 28. प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः

प्रजनन

Tait. 1. 3. 3. प्रजननं सन्धानम्
Mahânâr. 21. 2. प्रजननमिति भूयांसः
— तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजनने रमन्ते
22. 1. प्रजननं वै प्रतिष्ठा..तस्मात्प्रजननं परमं वदन्ति

प्रजननकर्मन्

Prânâg. 2. हिमांशुप्रभाभिः प्रजननकर्मा

प्रजा

Kaush. 2. 8. नास्मात् पूर्वाः प्रजाः प्रैति
— मास्माकं प्राणेन प्रजया पशुभिराप्यायिष्ठाः
— तस्य..प्रजया..आप्यायस्व
9. मास्माकं प्राणेन प्रजया पशुभिरपक्षेष्ठाः
— तस्य..प्रजया.. अपक्षीयस्व
10. न ह्यस्याः पूर्वाः प्रजाः प्रैति
11. येन प्रजापतिः प्रजाः पर्यगृह्णात्
4. 8. एतमेवमुपास्ते पूर्यते प्रजया
11. एतमेवमुपास्ते प्रतिरूपो हैवास्य प्रजायामाजायते नाप्रतिरूपः
16. एतमेवमुपास्ते प्रजायते प्रजया
Chhâ. 1. 3. 1. उद्यन्वा एष प्रजाभ्य उद्गायति
1. 9. 3. यावत्त एनं प्रजायामुत्तमं वेदिष्यन्ते

Chhâ. 2. 11. 2. महान् प्रजया पशुभिर्भवति 12. 2; 13. 2; 14. 2; 15. 2; 16. 2; 17. 2; 18. 2; 19. 2; 20. 2.

2. 16. 2. विराजति प्रजया

3. 11. 4. मनुः प्रजाभ्यः (उवाच) 8. 15. 1.

4. 1. 4. यत्किञ्च प्रजाः साधु कुर्वन्ति

4. 3. 7. जनिता प्रजानाम्

5. 3. 2. वेत्थ यदितो ऽधि प्रजाः प्रयन्तीति

5. 15. 1. तस्मात्त्वं बहुलोसि प्रजया

5. 17. 1. तस्मात्त्वं प्रतिष्ठितो ऽसि प्रजया

5. 19. 2. तृप्यति प्रजया पशुभिः 5. 20. 2; 5. 21. 2; 5. 22. 2; 5. 23. 2.

6. 8. 4. सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः 6

6. 9. 2. इमाः सर्वाः प्रजाः सति सम्पद्य

6. 10. 2. इमाः सर्वाः प्रजाः सत आगम्य

8. 1. 5. यथा ह्येवेह प्रजा अन्वाविशन्ति

8. 3. 2. इमाः सर्वाः प्रजा अहरहर्गच्छन्त्यः

Brih. 1. 2. 5. यज्ञान् प्रजाः पशून्

1. 4. 16. यत्प्रजामिच्छते

17. प्राणः प्रजा 1. 5. 7.

1. 5. 7 पिता माता प्रजैव एव

20. इमाः प्रजाः शोचन्ति

2. 1. 4. तेजस्विनी हास्य प्रजा भवति

5. एवमुपास्ते पूर्यते प्रजया.. नास्यास्माल्लोकात्प्रजोद्वर्तते

7. विषासहिर्हास्य प्रजा भवति

9. रोचिष्णुर्हास्य प्रजा भवति

Brih. 2. 1. 13. आत्मन्विनी हास्य प्रजा भवति

4. 4. 22. प्रजां न कामयन्ते किं प्रजया करिष्यामः

6. 1. 6. प्रजायते ह प्रजया पशुभिः (bis).

6. 2. 2. वेत्थ यथेमाः प्रजाः प्रयत्यो विप्रतिपद्यन्ता३ इति

6. 4. 24. अस्योपसद्यां मा च्छैत्सीत् प्रजया च पशुभिश्च

Tait. 1. 3. 3. प्रजा सन्धिः

4. सन्धीयते प्रजया पशुभि

1. 9. 1. प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च

2. 2. 1. अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते Maitri. 6. 11.

3. 6. 1. महान् भवति प्रजया पशुभि 3. 7. 1; 3. 8. 1; 3. 9. 1.

Swet. 4. 5. बह्वीः प्रजाः सृजमानां स रूपाः

Maitri. 2. 6. बह्वीः प्रजा असृजत

6. 7. ग इति गच्छन्त्यस्मिन्नाग च्छन्त्यस्मादिमाः प्रजाः

8. प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्य Praśna. 1. 8.

9. प्रजास्तत्र यत्र विश्वामृतो ऽसि

15. संवत्सरात्..इमाः प्रजा प्रजायन्ते

16. सिन्धुराजः प्रजानाम्

37. तेनेमे प्राणाः प्राणेभ्यः प्रजा — वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः

7. 7. अस्मिन्नोता इमाः प्रजाः

Muṇḍ. 2. 1. 5. बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः

2. 2. 1. परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम्

Mund. 3. 1. 9. प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानाम्
Mahânâr. 1. 3. तदक्षरे परमे प्रजाः
2. 3. स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु
6. तदपश्यत्तदभवत्प्रजासु
6. 1. जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा
9. 2. बह्वीं प्रजां जनयन्तीम्
4. प्रजापतिः प्रजया संविदानः Nrip. 2. 4.
10. 5. न कर्मणा न प्रजया Kaivalya. 2.
19. 1. श्रद्धा प्रजा च मेधा च (bis).
22. 1. लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति
23. 1. मानसा ऋषयः प्रजा असृजन्त
Praśna. 1. 3. कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्ते
4. एतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यतः
14. तस्मादिमा प्रजाः प्रजायन्ते
2. 1. कत्येव देवाः प्रजां विधारयन्ते
7. तुभ्यं प्राणः प्रजास्त्विमा बलिं हरन्ति
10. इमाः प्राण ते प्रजा आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति
3. 11. न हास्य प्रजा हीयते
Śiras. 4. सार्कं स एको भूतश्चरति प्रजानाम्
6. तदा संहार्यते प्रजा
Mahâ. 1. नास्य प्रजा नसंवत्सरा जायन्ते (Śaṁkarânanda reads अस्य प्रधानसंवत्सरा जायन्ते)
Brahma. 2. सं विभोः प्रजा विज्ञायेरन्
Kathaśru. 2 प्रजां विद्यां छिन्द्यात्
Nâr. 1. प्रजाः सृजेयेति
Gîtâ. 3. 10. सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा
24. उपहन्यामिमाः प्रजाः
10. 6. येषां लोक इमाः प्रजाः

प्रजाकाम

Praśna 1. 4. प्रजाकामो वै प्रजापतिः
9. ऋषयः प्रजाकामाः

प्रजातन्तु

Tait. 1. 11. 1. प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः

प्रजाति

Kaush. 1. 7. केनानन्दं रतिं प्रजातिमिति
2. 15. आनन्दं रतिं प्रजातिं मे त्वयि दधानीति पितानन्दं रतिं प्रजातिं ते मयि दध इति पुत्रः
3. 5. तस्यानन्दो रतिः प्रजातिः परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा
6. प्रज्ञयोपस्थं समारुह्योपस्थेनानन्दं रतिं प्रजातिमाप्नोति
7. न हि प्रज्ञापेत उपस्थ आनन्दं न रतिं न प्रजातिं कांचन प्रज्ञापयेत्
— नाहमेतमानन्दं न रतिं न प्रजातिं प्राज्ञासिषम्
8. न प्रजातिं विजिज्ञासीत.. प्रजातेर्विज्ञातारं विद्यात्
Brih. 6. 1. 6. यो ह वै प्रजातिं वेद..रेतो वै प्रजातिः
14. यद्वा अहं प्रजातिरस्मि त्वं तत्प्रजातिरसीति रेतः
6. 3. 2. मनसे स्वाहा प्रजात्यै स्वाहा
Tait. 1. 9. 1. प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च
3. 10. 3. प्रजातिरमृतमानन्द इत्युपस्थे

प्रजापति

Ait. 5. 3. एष प्रजापतिरेते सर्वे देवाः
Kaush. 1. 3. इंद्रप्रजापती द्वारगोपी 5.
2. 9. पंचमुखो ऽसि प्रजापतिः
10. यत्ते सुसीमे हृदये श्रितमन्तः प्रजापतौ
11. येन प्रजापतिः प्रजाः पर्यगृह्णात्
4. 2. शरीरे प्रजापतिः
16. प्रजापतिरिति वा अहमेतमुपासे
Chhâ. 1. 12. 5. देवो वरुणःप्रजापतिः सविता
1. 13. 2. प्रजापतिर्हिंकारः
2. 22. 1. अनिरुक्तः प्रजापतेः
3. सर्वे ऊष्माणः प्रजापतेरात्मानः
4. प्रजापतिं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्
5. प्रजापतेरात्मानं परिददानीति
2. 23. 3. प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत् 4. 17. 1.
3. 11. 4. एतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच प्रजापतिर्मनवे 8. 15. 1.
5. 1. 7. प्राणाः प्रजापतिं पितरमेत्योचुः
8. 7. 1 इति ह प्रजापतिरुवाच 8. 12. 6.
2. प्रजापतिसकाशमाजग्मतुः
3. तौ ह प्रजापतिरुवाच 4; 8. 8. 1, 2.
8. 8. 4. तौ हान्वीक्ष्य प्रजापतिरुवाच
8. 9. 2. तं ह प्रजापतिरुवाच 8. 10. 3; 8. 11. 2.
8. 11. 3. प्रजापतौ ब्रह्मचर्य्यमुवास
8. 14. 1. प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये

Brih. 1. 5. 14. संवत्सरः प्रजापतिः 15.
21. प्रजापतिर्ह कर्माणि ससृजे
3. 9. 2. इन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च
6. कतमः प्रजापतिरिति..यज्ञः प्रजापतिरिति
17. तस्य का देवतेति प्रजापतिरिति
5. 2. 1. प्रजापतौ पितरि ब्रह्मचर्यमूषुः
5. 3. 1. एष प्रजापतिर्यद्धृदयम्
5. 5. 1. ब्रह्म प्रजापतिं प्रजापतिर्देवान् (असृजत)
6. 3. 3. प्रजापतये स्वाहा
6. 4. 2. प्रजापतिरीक्षाञ्चक्रे हन्तास्मै प्रतिष्ठां कल्पयानि
21. आसिञ्चतु प्रजापतिः
6. 5. 4. तुरः कावषेयः प्रजापतेः प्रजापतिर्ब्रह्मणः
Tait. 2. 8. 1. शतं बृहस्पतेरानन्दाः स एकः प्रजापतेरानन्दः
— शतं प्रजापतेरानन्दाः स एको ब्रह्मण आनन्दः
Swet. 4. 2. तदापस्तत्प्रजापतिः
Maitri. 2. 3. क्रतुं प्रजापतिमब्रुवन्
5. प्रजापतिर्विश्वाख्यः
6. प्रजापतिर्वा एको ऽग्रे ऽतिष्ठत्
5. 1. त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः
2. प्रजापतिर्विश्वेश्वरस्य प्रागुक्ता एतास्तनवः
6. 6. स सत्यं प्रजापतिस्तपस्तप्त्वा
— एषैवास्य प्रजापतेः स्थविष्ठा तनुः
— अनेन हि प्रजापतिः..उपासितो भवति
— एषा वै प्रजापतेर्विश्वभृत्तनुः
8. प्रजापतिर्विश्वसृक् हिरण्यगर्भः 7. 7.

aitri. 6. 15. तस्मात् संवत्सरो वै प्रजापतिः
16. यज्ञो विष्णुः प्रजापतिः
29. ब्रह्मणः पन्थानमारूढाः पुत्राः प्रजापतेः
33. पुरुषविदः . . प्रजापतेः (ter).
hânâr. 1. 1. प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः
7. तदापः स प्रजापतिः
2. 7. प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य
9. 4. प्रजापतिः प्रजया संविदानः Nrip. 2. 4.
12. 3. कतमः स्वयम्भूः प्रजापतिः संवत्सरं इति 23. 1.
15. 6. त्वं रुद्रस्त्वं ब्रह्मा त्वं प्रजापतिः
22. 1. प्रजापतिं पितरमुपससार
śna. 1. 4. प्रजाकामो वै प्रजापतिः
9. संवत्सरो वै प्रजापतिः
12. मासो वै प्रजापतिः
13. अहोरात्रो वै प्रजापतिः
14. अन्नं वै प्रजापतिः
2. 7. प्रजापतिश्चरसि गर्भे
ip. 1. 1. स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवत्
4. स होवाच प्रजापतिः 3. 1; 4. 1; 5. 1, 3.
7. तस्मादिदं सामाङ्गं प्रजापतिः
2. 1. ते प्रजापतिमुपाधावन्
4. देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन् 3. 1; 4. 1, 3; 5. 1, 3; Nrisut. 1, 7, 9.
4. 3. इति तान् प्रजापतिरब्रवीत्
ut. 9. इति ह प्रजापतिर्देवाननुशशास
l. 13. प्रजापतिर्विराट् चैव
hma. 2. प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्
sa. 1. ब्रह्मणे ऽथर्वणे प्रजापतये

Kathaśru. 2. देवा ह वै समेत्य प्रजापतिमब्रुवन्
3. प्रजापतये च प्राजापत्यं चरुम्
Aruṇeya. 1. आरुणिः प्रजापतेर्लोकं जगाम
— तं होवाच प्रजापतिः
Nâr. 1. नारायणात्प्रजापतिर्जायते
Gopî. 5. प्रजापतिर्वायुर्भूत्वा
Gîtâ. 3. 10. पुरोवाच प्रजापतिः
11. 39. प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च

प्रजापतिलोक

Kaush. 1. 3. प्रजापतिलोकं [आगच्छति]
Bṛih. 3. 6. 1. प्रजापतिलोकेषु गार्गीति कस्मिन्नु खलु प्रजापतिलोका ओताश्च प्रोताश्चेति
4. 3. 33. एकः प्रजापतिलोक आनन्दः
— शतं प्रजापतिलोक आनन्दाः

प्रजापतिव्रत

Praśna. 1. 15. ये तत्प्रजापतिव्रतं चरन्ति

प्रजावत्

Mahânâr. 9. 6. प्रजावत्सावीः सौभगम् 17. 7.
17. 6. यस्ते सोम प्रजावत्

प्रजीव्

Chhâ. 3. 16. 7. प्र ह षोडशवर्षशतं जीवति य एवं वेद

प्रज्ञ

Ait. 5. 4. स एतेन प्रज्ञेनात्मनास्माल्लोकादुत्क्रम्य Atmapra. 1.
Mâṇḍû. 7. न प्रज्ञं नाप्रज्ञं Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1; Râmot. 3.

प्रज्ञता

Bṛih. 4. 1. 2. का प्रज्ञता . . वागेव

प्रज्ञप्ति

Gauḍa. 4. 24. प्रज्ञप्तेः संनिमित्तत्वम् 25.

1. प्रज्ञा

Ait. 2. 1. एनमब्रुवन्नायतनं नः प्रजानीहि

Kaush. 3. 2. न हि कश्चन शक्नुयात् सकृद्वाचा नाम प्रज्ञापयितुम्
— एकैकमेतानि सर्वाणि प्रज्ञापयन्ति
7. न हि प्रज्ञापेता वाङ्नाम किंचन प्रज्ञापयेत् (similarly, 9 times more).
— नाहमेतन्नाम प्राज्ञासिषम् (similarly, nine times more).
— न हि प्रज्ञापेता धीः काचन सिध्येन्न प्रज्ञातव्यं प्रज्ञायेत

Bṛih. 4. 1. 2. वाचा वै . . बन्धुः प्रज्ञायते
— सर्वाणि च भूतानि वाचैव . . प्रज्ञायन्ते

Kaṭha. 1. 14. स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्
28. जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन्

Gîtá. 11. 31. न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्
18. 31. अयथावत्प्रजानाति

2. प्रज्ञा

Ait. 5. 3. प्रज्ञा प्रतिष्ठा Atmapra. 1

Kaush. 1. 5. सा प्रज्ञा प्रज्ञया हि विपश्यति
7. केन धियो विज्ञातव्यं कामानिति प्रज्ञयैवेति ब्रूयात्
2. 3. प्रज्ञा नाम देवतावरोधिनी
4. प्रज्ञां ते मयि जुहोमि
15. प्रज्ञां मे त्वयि दधानीति पिता प्रज्ञां ते मयि दध इति पुत्रः
3. 2. आप्नोति प्रज्ञया सत्यं संकल्पम्

Kaush. 3. 3. यो वै प्राणः सा प्रज्ञा ।
वा प्रज्ञा स प्राणः (bis)
4. यथास्यै प्रज्ञायै सर्वाणि
तान्येकं भवन्ति
6. प्रज्ञया वाचं समारुह्य वा
सर्वाणि नामान्याप्नोति
(similarly 9 times mor

Bṛih. 4. 1. 2. प्रज्ञेत्येनदुपासीत
4. 4. 21. प्रज्ञां कुर्वीत ब्राह्मणः

Śwet. 4. 18. प्रज्ञा च तस्मात्प्रसृता
राणी

Praśna. 2. 13. श्रीश्च प्रज्ञां विधेहि नः

Gauḍa. 3. 45. निःसङ्गः प्रज्ञया भवेत्

Brahma. 3. यदात्मा प्रज्ञयात्मानं
न्धत्ते

Gîtâ. 2. 57. तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता
58, 61, 68.
67. तदस्य हरति प्रज्ञाम्

प्रज्ञात्मन्

Kaush. 2. 14. प्राणमेव प्रज्ञात्मानमभि
भूय (bis).
3. 2. प्रज्ञात्मानं मामायुरमृत
त्युपास्व
3. अथ खलु प्राण एव प्र
त्मा (bis).
8. स एष प्राण एव प्रज्ञा
4. 20.
4. 20. एवमेवैष प्रज्ञात्मेदं श
मात्मानमनुप्रविष्टः
— एवमेवैष प्रज्ञात्मैतैरात्म
भुंक्ते

प्रज्ञान

Ait. 5. 2. संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं
ज्ञानम्
— एतानि प्रज्ञानस्य नाम
नि भवंति

5. 3. सर्वं तत् प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम्
— प्रज्ञानं ब्रह्म Atmapra. 1.
ha. 2. 24. प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्
tri. 6. 31. बुद्धिर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञानम्

प्रज्ञानघन

h. 4. 5. 13. आत्मा..कृत्स्नः प्रज्ञानघन एव
ṇḍû. 5. प्रज्ञानघन एवानन्दमयः Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1; Râmot. 3.
7. न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम्
ip. 4. 1. न प्रज्ञं नाप्रज्ञं न प्रज्ञानघनम् Nṛisut. 1; Râmot. 3.
isut. 8. अनुज्ञैकरसो ह्ययमात्मा प्रज्ञानघन एव

प्रज्ञानेत्र

it. 5. 3. सर्वं तत् प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं प्रज्ञानेत्रो लोकः
tmapra. 1. सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञानेत्रे प्रतिष्ठितं प्रज्ञानेत्रो लोकः

प्रज्ञापेत

aush. 3. 7. न हि प्रज्ञापेता वाङ्नाम किंचन प्रज्ञापयेत् (similarly 9 times more).

प्रज्ञामात्रा

aush. 3. 8. दश प्रज्ञामात्रा अधिभूतम्
— यद्धि भूतमात्रा न स्युर्न प्रज्ञामात्राः स्युः
— एवमेवैता भूतमात्राः प्रज्ञामात्रास्वर्पिताः प्रज्ञामात्राः प्राणे अर्पिताः

प्रज्ञावाद

tâ. 2. 11. प्रज्ञावादांश्च भाषसे

प्रज्वल्

Chhâ. 6. 7. 5. तं तृणैरुपसमाधाय प्रज्वालयेत्
6. सान्नेनोपसमाहिता प्राज्वालीत्
Yogaśi. 5. प्रज्वलेद्दीपवार्चिवत्

प्रणख

Chhâ. 1. 6. 6. आप्रणखात्सर्व एव सुवर्णः

प्रणम्

Kaivalya. 5. भक्त्या स्वगुरुं प्रणम्य
Siras. 4. ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति
Śikhâ. 2. प्रणवः..प्राणान् प्रणामयति
Mukti. 1. 5. प्रणमामि मुहुर्मुहुः
Gîtâ. 11. 14. प्रणम्य शिरसा देवम्
35. सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य
44. तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम्

प्रणय

Gîtâ. 11. 41. मया प्रमादात्प्रणयेन वापि

प्रणयन

Praśna. 4. 3. यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते प्रणयनादाहवनीयः प्राणः

प्रणव

Chhâ. 1. 5. 1. य उद्गीथः स प्रणवो यः प्रणवः स उद्गीथः 5; Maitri. 6. 4.
— असौ वा आदित्य उद्गीथ एष प्रणवः Maitri. 6. 4.
Śwet. 1. 13. तद्वोभयं प्रणवेन देहे
14. प्रणवं चोत्तरारणिम् Kaivalya. 11. Brahma. 3; Dhyâna. 20.
Muṇḍ. 2. 2. 4. प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा Dhyâna. 19.
Gauḍa. 1. 25. युञ्जीत प्रणवे चेतः प्रणवो ब्रह्म निर्भयम्

Gauḍa. 1. 25. प्रणवे नित्ययुक्तस्य न भयम्
26. प्रणवो ह्यपरं ब्रह्म प्रणवश्च परः स्मृतः
— अनपरः प्रणवो ऽव्ययः
27. सर्वस्य प्रणवो ह्यादिः
— एवं हि प्रणवं ज्ञात्वा
28. प्रणवं हीश्वरं विद्यात्

Nṛip. 1. 3. तं प्रणवं तत्साम्नो ऽङ्गं वेद
— प्रणवं .. स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति
— प्रणवं यदि जानीयात् स्त्रीशूद्रः
2. 1. तस्य ह वै प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा Nṛisut. 3 (bis).
4. 1. प्रणवं सावित्रीं .. अङ्गानि जानीयात्
5. 9. स प्रणवमधीते

Nṛisut. 3. अग्निरूपं प्रणवं सन्दध्यात्
— आनन्दामृतरूपं प्रणवम्
4. प्रणवेन सञ्चिन्त्य
6. प्रणवेनैव तस्मिन्नवस्थिताः
— प्रणवमेव परमं ब्रह्म

Brahmav. 10. प्रणवस्योपरि स्थिता

Kshur. 3. प्रणवेन शनैः शनैः

Siras. 3. य ओङ्कारः स प्रणवो यः प्रणवः स सर्वव्यापी
4. कस्मादुच्यते प्रणवः
— तस्मादुच्यते प्रणवः
7. प्रणवानामयुतं जप्तं भवति Mahâ. 4.

Śikhâ. 2. प्रणवः सर्वान्प्राणान् प्रणामयति
— प्रणवश्चतुर्द्धावस्थितः
— पञ्चधा पञ्चदैवत्यः प्रणवः परिपठ्यते

Dhyâna. 18. अवाग्जं प्रणवस्याग्रम्

Âtmapra. 1. इत्यक्षरं प्रणवं तदेतदोमिति

Vâsu. 2. यतिः .. प्रणवेन धारयेत्
2. प्रणवेनैकमूर्ध्वपुण्ड्रं वा धारयेत्
4. प्रणवेनोद्धूलनं कुर्यात्

Râmap. 60. तत्सर्वं प्रणवाभ्यां च

Gîtâ. 7. 8. प्रणवः सर्ववेदेषु

प्रणवत्व

Râmot. 3. प्रणवत्वात्प्रकृतिः

प्रणवमय

Vâsu. 2. एते सर्वे प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्रयात्मकाः

प्रणवस्वरूप

Nâr. 5. प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणवस्वरूपम् Atmapra.

प्रणवाख्य

Maitri. 6. 4. उद्गीथं प्रणवाख्यं प्रणेतारम्
25. प्रणवाख्यं प्रणेतारं भारूपम्
7. 5.
— प्रणवाख्यः प्रणेता भारूपः

प्रणवादिक

Nṛip. 1. 3. सर्वे वेदाः प्रणवादिकाः

प्रणश्

Maitri. 6. 27. प्रणश्यति चित्तं तथाश्रयेण सह

Gâruḍa. 2. नष्टं विषं प्रनष्टं विषम् (most MSS. omit two last words).

Gîtâ. 1. 40. कुलक्षये प्रणश्यन्ति
2. 63. बुद्धिनाशात्प्रणश्यति
6. 30. तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति
9. 31. न मे भक्तः प्रणश्यति
18. 72. कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते

प्रणिधा

Gîtâ. 11. 44. तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम्

प्रणिपात

Gîtâ. 4. 34. तद्विद्धि प्रणिपातेन

प्रणी

Kena. 8. येन प्राणः प्रणीयते

Praśna. 4. 3. यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते प्रणयनादाहवनीयः प्राणः

प्रणु

Chhâ. 1. 4. 5. स य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौति

प्रणुद्

Katha. 1. 18. मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य

Maitri. 2. 2. तमः प्रणुदत्येष आत्मा
6. 28. चतुर्जालं ब्रह्मकोशं प्रणुदेद्गुर्वागमेन

Mahânâr. 22. 1. तपसा सपत्नान् प्रणुदामारातीः

प्रणुदन्

Prâṇâg. 2. जराप्रणुदा

प्रणेतृ

Maitri. 6. 4. उद्गीथं प्रणवाख्यं प्रणेतारम्
25. प्रणवाख्यं प्रणेतारम् 7. 5.
— प्रणवाख्यः प्रणेता

प्रतन्

Chhâ. 8. 6. 2. आदित्यात्प्रतायन्ते.. नाडीभ्यः प्रतायन्ते

Mahânâr. 4. 3. एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च

Mahâ. 3. ता इमाः प्रतता आपः

प्रतप्

Gîtâ. 11. 30. भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो

प्रतर्दन

Kaush. 3. 1. प्रतर्दनो ह वै दैवोदासिः

Kaush. 3. 1. प्रतर्दन वरं वृणीष्वेति
— स होवाच प्रतर्दनः (bis).

प्रताप

Maitri. 6. 38. प्रदीपप्रतापवत्

प्रतापवन्त्

Maitri. 6. 5. प्राणोऽग्निः सूर्या इति प्रतापवत्येषा

Gîtâ. 1. 12. शंखं दध्मौ प्रतापवान्

प्रति

Chhâ. 2. 8. 2. यत्प्रतीति स प्रतिहारः
2. 9. 1. मां प्रति मां प्रतीति

Brih. 5. 14. 5. न हैव तद्गायत्र्या एकञ्चन पदं प्रति

प्रतिकॢप्

Brih. 4. 3. 37. यथा राजानमायान्तं..प्रतिकल्पन्ते ..एवमेवंविदं ..प्रतिकल्पन्ते

प्रतिक्रम्

Kaush. 1. 1. स ह समित्पाणिः..प्रतिचक्रमे
4. 19. बालाकिः समित्पाणिःप्रतिचक्रमे

Chhâ. 4. 2. 1. अश्वतरीरथं तदादाय प्रतिचक्रमे
3. अश्वतरीरथं दुहितरं तदादाय प्रतिचक्रमे
5. 11. 7. समित्पाणयः पूर्वाह्णे प्रतिचक्रमिरे

प्रतिगर

Tait. 1. 8. 1. ओमित्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति

प्रतिगॄ

Tait. 1. 8. 1. See preceding quotation.

प्रतिग्रह्

Chhâ. 1. 10. 5. तान् प्रतिगृह्य निदधौ
6. 16. 1. परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति 2.
Bṛih. 4. 1. 3. अप्रतिगृह्यस्य प्रतिगृह्णाति
5. 14. 5. यदि ह वा अप्येवंविद्बहिव प्रतिगृह्णाति
6. य इमांस्त्रींल्लोकान्पूर्णान्प्रतिगृह्णीयात्
— यावतीयं त्रयी विद्या यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्
— यावदिदं प्राणि यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्
— कुत उ एतावत्प्रतिगृह्णीयात्
Nṛip. 2. 1. एतं मन्त्रराजं . . प्रतिगृह्णीयात्
Kaṭhaśru. 1. वल्कलं वा प्रतिगृह्य नान्यत् प्रतिगृह्णीयात्
Aśrama. 2. ददतो न प्रतिगृह्णन्तः
— ददतः प्रतिगृह्णन्तः

प्रतिग्रह

Mahânâr. 4. 11. पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः
5. 2. यच्च उग्रात्प्रतिग्रहात्
14. 2. असतां च प्रतिग्रहम्
Prâṇâg. 1.
Śiras. 2. यो वै रुद्रः . . ये चाष्टौ प्रतिग्रहाः

प्रतिचक्षण

Bṛih. 2. 5. 19. तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय

प्रतिजन्

Praśna. 2. 7. त्वमेव प्रतिजायसे

प्रतिज्ञा

Chhâ. 4. 1. 8. अहं ह्यरा३ इति ह प्रतिजज्ञे
4. 9. 2. अन्ये मनुष्येभ्य इति ह प्रतिजज्ञे
4. 14. 3. इदमिति ह पतिजज्ञे
Bṛih. 6. 2. 5. प्रतिज्ञातो म एष वरः
Gîtâ. 9. 31. कौन्तेय प्रतिजानीहि
18. 65. सत्यं ते प्रतिजाने

प्रतितद्विद्

Kaush. 1. 2. तद्विदे ऽहं प्रतितद्विदे ऽहम्

प्रतिदह्

Chhâ. 2. 22. 4. स त्वा प्रतिधक्ष्यति

प्रतिदिनम्

Vâsu. 1. ममाङ्गं प्रतिदिनमालिप्तम्

प्रतिदिवसम्

Aśrama. 2. प्रतिदिवसमाहृतोञ्छवृत्तिमुपयुञ्जानाः

प्रतिदिश्

Siras. 1. दिशश्च प्रतिदिशश्चाहम्

प्रतिदृश्

Kaṭha. 1. 6. प्रतिपश्य तथापरे

प्रतिदेवता

Muṇḍ. 3. 2. 7. देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु

प्रतिधा

Ait. 4. 4. अस्यायमात्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते

प्रतिन्यायम्

Bṛih. 4. 3. 15. प्रतिन्यायं प्रतियोन्याद्रव
16, 17, 34, 36.

1. प्रतिपद्

Chhâ. 3. 13. 6. प्रतिपद्यते स्वर्गं लोकम्
3. 17. 6. अन्तवेलायामेतत्त्रयं प्रतिपद्येत
4. 15. 6. एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवमावर्तं नावर्तन्ते
5. 11. 3. तेभ्यो न सर्वमिव प्रतिपत्
6. 7. 4. यत्किञ्च पश्यञ्छ सर्वं प्रतिपेदे

h. 1. 4. 10. ऋषिर्वामदेवः प्रतिपेदे
3. 9. 1. स हैतयैव निविदा प्रतिपेदे
4. 3. 14. यमेष न प्रतिपद्यते
6. 2. 2. यत्कृत्वा देवयानं वा पन्थानं प्रतिपद्यन्ते
nd. 1. 2. 2. आज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेत्
śna. 1. 9. दक्षिणं प्रतिपद्यन्ते
4. 10. परमेवाक्षरं प्रतिपद्यते
â. 14. 14. लोकानमलान्प्रतिपद्यते

2. प्रतिपद्

ih. 6. 2. 2. वेत्थो देवयानस्य वा पथः प्रतिपदम्

प्रतिपाल्

hâ. 1. 12. 3. तद्ध वको दाल्भ्यो ग्लावो वा मैत्रेयः प्रतिपालयांचकार

प्रतिपिष्

hâ. 2. 22. 4. स त्वा प्रतिपेक्ष्यति

प्रतिपुरुष

aitri. 2. 5. चेतामात्रः प्रतिपुरुषः क्षेत्रज्ञः 5. 2.

प्रतिपूर्ण

hâ. 4. 10. 3. व्याधिभिः प्रतिपूर्णो ऽस्मि

प्रतिप्रति

ih. 1. 3. 18. य उ हैवंविदं स्वेषु प्रतिप्रतिर्बुभूषति

प्रतिप्रस्थातृ

Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..कः प्रतिप्रस्थाता
4. अपानः प्रतिप्रस्थाता

प्रतिबुध्

ush. 3. 3. स यदा प्रतिबुध्यते 4. 20.

Bṛih. 1. 4. 10. तद्यो यो देवानां प्रत्यबुध्यत
4. 4. 13. यस्यानुवित्तः प्रतिबुद्ध आत्मा
Gauḍa. 2. 2. प्रतिबुद्धश्च वै सर्वः 4. 34.
4. 35. प्रतिबुद्धो न पश्यति 39.
Brahma. 2. प्रतिबुद्धः सर्वविदिति

प्रतिबोध

Kena. 12. प्रतिबोधविदितं मतम्

प्रतिबोधन

Maitri. 2. 6. एतासां प्रतिबोधनायाभ्यन्तरं विविशामि

प्रतिब्रू

Kaush. 1. 1. कथं प्रतिब्रवाणि
2. तं यः प्रत्याह तमतिसृजते ऽथ यो न प्रत्याह
— तं प्रतिब्रूयात् 5.
Chhâ. 4. 4. 4. अपृच्छं मातरं सा मा प्रत्यब्रवीत्
7. 15. 2. किञ्चिद् भृशमिव प्रत्याह
Bṛih. 1. 5. 17. स पुत्रः प्रत्याहाहं ब्रह्म
Maitri. 6. 31. प्रत्याहात्मात्मकानीति

प्रतिभा

Chhâ. 6. 7. 2. न वै मा प्रतिभान्ति भोः
Kaṭha. 2. 6. न साम्परायः प्रतिभाति बालम्

प्रतिमन्

Chhâ. 4. 3. 7. शौनकः कापेयः प्रतिमन्वानः प्रत्येयाय

प्रतिमा

Śwet. 4. 19. न तस्य प्रतिमा अस्ति
Râmot. 4. पाषाणप्रतिमादिषु

प्रतिमात्रा

Nṛisut. 2. मात्रामात्राः प्रतिमात्राः कुर्यात्

प्रतिमुच्

Brahma. 2. आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च

प्रतिमुद्

Maitri. 4. 6. तस्यैव लोके प्रतिमोदतीह यो यस्यानुषक्तः

प्रतियुध्

Gîtâ. 2. 4. इषुभिः प्रतियोत्स्यामि

प्रतियोनि

Brih. 4. 3. 15. प्रतिन्यायं प्रतियोन्याद्रवति 16, 17, 34, 36.

प्रतिरूप

Kaush. 1. 3. प्रतिरूपा च चाक्षुषी
4. 2. आदर्शे प्रतिरूपः
11. प्रतिरूप इति..एतमुपासे Brih. 2. 1. 8.
— एवमुपास्ते प्रतिरूपो हैवास्य प्रजायामाजायते नाप्रतिरूपः

Chhâ. 8. 8. 1. आलोमभ्य आनखेभ्यः प्रतिरूपम्

Brih. 2. 1. 8. एवमुपास्ते प्रतिरूपं हैवैनमुपगच्छति नाप्रतिरूपमथो प्रतिरूपो ऽस्माज्जायते
2. 5. 19. रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव Katha. 5. 9, 10.
3. 9. 22. प्रतिरूपं जातमाहुर्हृदयादिव सृप्तः
4. 1. 6. तस्यां प्रतिरूपः पुत्रो जायते

Katha. 5. 9. रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च 10.

प्रतिलिह्

Brih. 1. 5. 2. घृतं वैवाग्रे प्रतिलेहयन्ति

प्रतिलोम

Brih. 2. 1. 15. प्रतिलोमं वै तद्यद्ब्राह्मणः क्षत्रियमुपेयात्

Brih. 6. 4. 12. प्रतिलोमं शरबर्हिस्तीर्त्वा — शरभृष्टीः प्रतिलोमाः

प्रतिलोमरूप

Kaush. 4. 19. प्रतिलोमरूपमेव तन्मन्ये यत्क्षत्रियो ब्राह्मणमुपनयेत

प्रतिवच्

Chhâ. 2. 22. 3. स त्वा प्रतिवक्ष्यति
4. 1. 3. तमु ह परः प्रत्युवाच 4. 2. 3
5. 11. 7. प्रातर्वः प्रतिवक्तास्मि

Sikhâ. 1. एभ्यो ऽथर्वा प्रत्युवाच

Râmot. 4. तं प्रत्युवाच स्वयमेव याज्ञवल्क्यः

प्रतिवद्

Katha. 1. 15. तथ्सत्यवदद्यथोक्तम्

प्रतिविधा

Kaush. 3. 5. परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा (10 times).

प्रतिविधि

Maitri. 4. 3. अयं..अस्य प्रतिविधिर्भूतात्मनः

प्रतिवेदम्

Âsrama. 1. प्रतिवेदं द्वादश वा

प्रतिवेश

Tait. 1. 4. 3. प्रतिवेशो ऽसि प्र मा भाहि

प्रतिशाखानाडी

Prasna. 3. 6. द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणि

प्रतिश्रु

Chhâ. 4. 5. 1. भगव इति ह प्रतिशुश्राव 4. 6. 2; 4. 7. 2; 4. 8. 2; 4. 9. 1; 4. 14. 2.
7. 12. 1. आकाशेन प्रतिशृणोति

Brih. 6. 2. 1. स भो इति प्रतिशुश्राव

प्रतिश्रुत्का

aush. 4. 2. प्रतिश्रुत्कायामम्तुः
13. प्रतिश्रुत्कायां पुरुषस्तमेवा-
हमुपासे

प्रतिषिच्

râṇâg. 2. तमद्भिः प्रतिषिञ्चामि

प्रतिषिध्

anda. 3. 25. संभवः प्रतिषिध्यते
— कारणं प्रतिषिध्यते

1. प्रतिष्ठा

lit. 2, 1. यस्मिन् प्रतिष्ठिता अन्न-
मदाम
5. 3. सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्र-
तिष्ठितम्
ma. 34. अनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये
प्रतितिष्ठति
hâ. 3. 12. 2, अस्यां हीदं सर्वं भूतं प्र-
तिष्ठितम्
3, अस्मिन्हीमे प्राणाः प्रति-
ष्ठिताः 4.
4. 16. 5, रथो वोभाभ्यां चक्राभ्यां
वर्त्तमानः प्रतितिष्ठत्येवम-
स्य यज्ञः प्रतितिष्ठति, यज्ञं
प्रतितिष्ठन्तम् &c.
5. 1. 3. प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठति
5. 17. 1. तस्मात्त्वं प्रतिष्ठितो ऽसि
प्रजया
7. 4. 2. सङ्कल्पे प्रतिष्ठितानि
3. लोकान्. . प्रतिष्ठितान् प्रति-
ष्ठितः. . अभिसिध्यति
7. 5. 3.
7. 5. 2. चित्ते प्रतिष्ठितानि
7. 24. 1. स भगवः कस्मिन्प्रतिष्ठितः
2. अन्यो ह्यन्यस्मिन्प्रतिष्ठितः
rih. 1. 2. 3. स एषो ऽप्सु प्रतिष्ठितो यत्र
. . . क चैति तदेव प्रतितिष्ठति

Brih. 1. . 3. 17. इह प्रतितिष्ठति
27. साम्नो यः प्रतिष्ठां वेद प्रति
ह तिष्ठति
— वाचि हि खल्वेष एतत्प्राणः
प्रतिष्ठितो गीयते
1. 5. 1. तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् 2.
2. पयसि हीदं सर्वं प्रतिष्ठितम्
17. पुत्रेणैवास्मिँल्लोके प्रतिति-
ष्ठति
3. 9. 20. स आदित्यः कस्मिन्प्रति-
ष्ठित इति चक्षुषीति कस्मि-
न्नु चक्षुः प्रतिष्ठितमिति
(similarly, in 21—24).
26. कस्मिन्नु त्वं चात्मा च प्रति-
ष्ठितौ
— कस्मिन्नु प्राणः प्रतिष्ठितः &c.
4. 1. 7. हृदये ह्येव सर्वाणि भूतानि
प्रतिष्ठितानि
4. 2. 3. हिता नाम नाड्यो ऽन्तर्हृदये
प्रतिष्ठिताः
4. 4. 17. आकाशश्च प्रतिष्ठितः
5. 5. 2. तावेतावन्योन्यस्मिन्प्रतिष्ठि-
तौ रश्मिभिरेषो ऽस्मिन्प्र-
तिष्ठितः
5. 14. 4. सैषा गायत्र्येतस्मिंस्तुरीये
दर्शते पदे . . प्रतिष्ठिता
— तद्वै तत्सत्ये प्रतिष्ठितम्
— तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितं
प्राणो वै बलं तत्प्राणे प्रति-
ष्ठितम्
— एवमेषा गायत्र्यध्यात्मं प्र-
तिष्ठिता
6. 1. 3. प्रतितिष्ठति समे प्रतितिष्ठति
दुर्गे (bis).
— चक्षुषा हि समे च दुर्गे च
प्रतितिष्ठति
Tait. 1. 6. 1. भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति

Tait. 3. 6. 1. सैषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता स य एवं वेद प्रतितिष्ठति
3. 7. 1. प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितं शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः
— तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति 3. 8. 1; 3. 9. 1.
3. 8. 1. अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितं ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः
3. 9. 1. पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठित आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता
Maitri. 2. 3. चेतनवत्प्रतिष्ठापितं 4, 5, 6.
6. 21. प्रतिष्ठाप्य निगृहीतानिलम्
34. हृद्यादित्ये प्रतिष्ठितः
7. 11. चक्षुष्यस्मिन्प्रतिष्ठिता
Mund.2. 2. 7. एष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः
—प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितो ऽन्ने
Mahânâr. 4. 7. त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्
10. 8. यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः
11. 9. तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्
13. 5. प्रतिष्ठिताः प्रत्येवास्याहुतयस्तिष्ठन्ति
22. 1. सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्
— तपसि सर्वं प्रतिष्ठितम्
— दमे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— शमे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— दाने सर्वं प्रतिष्ठितम्
— धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्
23. 1. यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— मानसे सर्वं प्रतिष्ठितम्
Praśna. 1. 15. येषु सत्यं प्रतिष्ठितम्
2. 6. प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्
7. यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि
12. या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता
13. त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्

Praśna. 6. 3. कस्मिन् वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामि
6. कला यस्मिन् प्रतिष्ठिताः
Kaivalya. 19. मयि सर्वं प्रतिष्ठितम्
Nrip. 5. 1. नाभ्यां वा एते अराः प्रतिष्ठिताः
Śiras. 3. हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः Brahma. 2.
Prâṇâg. 2. अयं पुरुषो यो ऽङ्गुष्ठाग्रे प्रतिष्ठितः
Nîla. 2. प्रत्यष्ठाद्भूम्यामधि
Nâda. 8. कलात्रयानना वापि तारमात्रा प्रतिष्ठिता
Amrita. 32. यत्र प्राणः प्रतिष्ठितः
Dhyâna. 11. नाभिस्थाने प्रतिष्ठितम्
Jâbâla. 2. सो ऽविमुक्ते प्रतिष्ठितः Râmot. 4.
— सो ऽविमुक्तः कस्मिन् प्रतिष्ठितः Râmot. 4.
— वरणायां नास्यां च मध्ये प्रतिष्ठितः Ramot. 4.
Atmapra. 1. सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम्
Vâsu. 1. द्वारकायां मया प्रतिष्ठित
Gîtâ. 2. 57. तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता 58, 61, 68.
3. 15. नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्
6. 11. शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य

2. प्रतिष्ठा

Ait. 1. 2. द्यौः प्रतिष्ठा
5. 3. प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञानं ब्रह्म Atmapra. 1.
Kena. 33. तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा
Chhâ. 1. 8. 7. न प्रतिष्ठां लोकमति नयेत्
— प्रतिष्ठां वयं लोकं सामाभिसंस्थापयामः

ā. 5. 1. 3. प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठति
..चक्षुर्वाव प्रतिष्ठा
13. यदहं प्रतिष्ठास्मि त्वं तत्प्र-
तिष्ठासीति
5. 2. 5. प्रतिष्ठायै स्वाहा
5. 17. 1. एष वै प्रतिष्ठात्मा
7. 5. 2. चित्तं प्रतिष्ठा
h. 1. 1. 1. अहोरात्राणि प्रतिष्ठाः
1. 3. 27. साम्नो यः प्रतिष्ठां वेद..
तस्य वै वागेव प्रतिष्ठा
4. 1. 2. अब्रवीत्तु ते तस्यायतनं प्र-
तिष्ठां..आकाशः प्रतिष्ठा
3—7.
7. हृदयं वै..सर्वेषां भूतानां
प्रतिष्ठा
5. 5. 3. स्वरिति प्रतिष्ठा द्वे प्रतिष्ठे 4
6. 1. 3. यो ह वै प्रतिष्ठां वेद..
चक्षुर्वै प्रतिष्ठा
14. यद्वा अहं प्रतिष्ठास्मि त्वं
तत्प्रतिष्ठोऽसि
6. 3. 2. वाचे स्वाहा प्रतिष्ठायै स्वाहा
6. 4. 2. अस्मै प्रतिष्ठां कल्पयानि
it. 2. 1. 1. इदं पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 2. 1. पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 3. 1. अथर्वाङ्गिरसः पुच्छं प्र-
तिष्ठा
2. 4. 1. महः पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 5. 1. ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 7. 1. एतस्मिन्नदृश्ये..अभयं प्र-
तिष्ठां विन्दते
3. 10. 3. तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत
atha. 1. 14. अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां
विद्धि
2. 11. कामस्याप्तिं जगतः प्रतिष्ठां
..स्तोममहदुरुगायं प्रति-
ष्ठां दृष्ट्वा
Mund. 1. 1. 1. ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रति-
ष्ठाम्
3. 2. 7. गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठाः

Mahânâr. 22. 1. सत्यं वाचः प्रतिष्ठा
— धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा
— प्रजननं वै प्रतिष्ठा
Kathaśru. 2. त्वं त्वष्टा त्वं प्रतिष्ठासि
— अहं त्वष्टाहं प्रतिष्ठास्मि
Gitâ. 14. 27. ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम्

प्रतिष्ठावन्त्

Tait. 3. 10. 3. तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत प्रतिष्ठा-
वान् भवति

प्रतिष्ठासंस्ताव

Chhâ. 1. 8. 7. प्रतिष्ठासंस्तावं हि साम

प्रतिष्ठिति

Mahânâr. 13. 5. प्रतिष्ठिताः प्रत्येत्रास्याहुत-
यस्तिष्ठन्त्यथो प्रतिष्ठित्यै

प्रतिसृप्

Chhâ. 5. 2. 6. प्रतिसृप्याञ्जलौ मन्थमा-
धाय

प्रतिस्त्री

Chhâ. 2. 13. 1. प्रतिस्त्री सह शेते सप्रतिहारः

प्रतिहर्तृ

Chhâ. 1. 10. 11. एवमेव प्रतिहर्तारमुवाच
— प्रतिहर्तर्या देवता प्रतिहार-
मन्वायत्ता 1. 11. 8.
1. 11. 8. अथ हैनं प्रतिहर्तोपससाद

प्रतिहार

Chhâ. 1. 10. 11. देवता प्रतिहारमन्वायत्ता
1. 11. 8, 9.
2. 2. 1. आदित्यः प्रतिहारः
2. अग्निः प्रतिहारः
2. 3. 1. विद्योतते स्तनयति स प्रति-
हारः 2. 15. 1.
2. 4. 1. या प्रतीच्यः स प्रतिहारः
2. 5. 1. शरत्प्रतिहारः 2. 16. 1.
2. 6. 1. अश्वः प्रतिहारः 2. 18. 1.
2. 7. 1. श्रोत्रं प्रतिहारः 2. 11. 1.

Chhâ. 2. 8. 1. वल्मतीति स प्रतिहारः
2. 9. 6. यदूर्ध्वं मध्यन्दिनात्प्रागप-
राह्णात्स प्रतिहारः
2. 10. 2. प्रतिहार इति चतुरक्षरम्
2. 12. 1. अङ्गारा भवन्ति स प्रतिहारः
2. 13. 1. प्रतिस्त्री सह शेते स प्रति-
हारः
2. 14. 1. अपराह्णः प्रतिहारः
2. 17. 1. दिशः प्रतिहारः
2. 19. 1. अस्थि प्रतिहारः
2. 20. 1. नक्षत्राणि प्रतिहारः
2. 21. 1. नक्षत्राणि वयांसि मरीचयः
स प्रतिहारः

प्रतिहारभाजिन्

Chhâ. 2. 9. 6. प्रतिहारभाजिनो ह्येतस्य
साम्नः

प्रतिहृ

Chhâ. 1. 10. 11. तां चेदविद्वान् प्रतिहरिष्य-
सि 1. 11. 8.
1. 11. 9. इमानि भूतान्यन्नमेव प्रति-
हरमाणानि जीवन्ति
— तां चेदविद्वान् प्रत्यहरिष्यः
2. 9. 6. तस्मात्ते प्रतिहृता नावपद्यन्ते

प्रती

Kaush. 1. 4. तं पञ्चशतान्यप्सरसां प्र-
तियन्ति
Brih. 6. 2. 4. तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्या-
वः
Katha. 1. 10. माभिवदेत् प्रतीतः
11. यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीतः
Sarvop. 2. नित्यत्वेन प्रतीयमानः

प्रतीक

Brih. 1. 5. 1. सो ऽन्नमत्ति प्रतीकेन 2.
2. मुखं प्रतीकम्
6. 2. 3. इति ह प्रतीकान्युदाजहार

प्रतीकाश

Mahânâr. 11. 7. पद्मकोशप्रतीकाशम्
Mahâ. 3; Brahma 3.
Haṁsa. 2. परमहंसो भानुकोटिप्रतीकाशः

प्रतीक्षा

Katha. 1. 8. आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सूनृ-
त

प्रतीर्

Brih. 2. 5. 17. दधीचे ऽश्व्यं शिरः प्रत्यै-
रयतम्

प्रतीष्

Nrip. 1. 1. हृदि प्रतीष्य कवयो मनी-
षा (one MS. has प्रतीप्य
and another प्रतीक्ष्य)

प्रतॄ

Śwet. 2. 8. ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत ..स्रोतां-
सि
Prâṇâg. 1. प्र प्रदातारं तारिषः

प्रतोद

Maitri. 2. 6. प्रकृतिमयो ऽस्य प्रतोदः

प्रत्न

Chhâ. 3. 17. 7. आदित्प्रत्नस्य रेतसः
Mahânâr. 6. 7. प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरे

प्रत्यक्ष

Chhâ. 5. 2. 1 अनो ह वै नाम प्रत्यक्षम्
Tait. 1. 1. 1. त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वा-
मेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्या-
मि 1. 12. 1 (अवादि-
षम्)

प्रत्यक्षद्विष्

Brih. 4. 2. 2. परोक्षप्रिया इव हि देवाः
प्रत्यक्षद्विषः

प्रत्यक्षरम्

rip. 2. 2. तस्मात् प्रत्यक्षरमुभयत ओ-ङ्कारो भवति

प्रत्यक्षावगम

ità 9. 2. प्रत्यक्षावगमं धर्म्यम्

प्रत्यगात्मन्

atha. 4. 1. काश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत्

arvop. 1. प्रत्यगात्मा परमात्मा . . कथम्

3. तदा त्वंपदार्थः प्रत्यगात्मेत्युच्यते

प्रत्यगानन्द

ār. 5 प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणवस्वरूपम् Atmapra. 1.

प्रत्यगेकरस

risut. 9. परः प्रत्यगेकरसः

प्रत्यङ्मुख

Kshur. 2. 1 प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठति सर्वतोमुखः

प्रत्यञ्च्

hhā. 2. 4. 1. याः प्रतीच्यः स प्रतिहारः

2. 12. 2. न प्रत्यङ्ङग्निमाचामेन्न निष्ठीवेत्तद्व्रतम्

3. 3. 1. ये ऽस्य प्रत्यञ्चो रश्मयस्ता एवास्य प्रतीच्यो मधुनाड्यः

3. 13. 3. प्रत्यङ् सुषिः सो ऽपानः

3. 15. 2. राज्ञी नाम प्रतीची

4. 5. 2. प्रतीची दिक् कला

6. 10. 1. पश्चात्प्रतीच्यः

Brih. 1. 2. 3. अस्य प्रतीची दिक् पुच्छम्

3. 8. 9. प्रतीच्यो ऽन्या यां यां च दिशम्

3. 9. 22. किंदेवतो ऽस्यां प्रतीच्यां दिश्यसि

Brih. 4. . 2. 4. प्रतीची दिक् प्रत्यञ्चः प्राणाः

Katha. 5. 3. अपानं प्रत्यगस्यति

Śwet. 2. 16. प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति 3. 2; Siras. 5 (bis).

Maitri. 6. 17. प्रतीच्यनन्तः

Praśna. 1. 6. यत्प्रतीचीं . . प्रकाशयति

Śiras. 1. प्राञ्चः प्रत्यञ्चो ऽहम्

4. दक्षिणाः प्रत्यञ्चः . . अभिव्रजन्त्येके

प्रत्यनीक

Gītā. 11. 32. ये ऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः

प्रत्यनुभू

Praśna. 4. 5. देशदिगन्तरैश्च प्रत्यनुभूतं पुनः पुनः प्रत्यनुभवति

प्रत्यय

Maitri. 6. 10. अत्र दृष्टं नाम प्रत्ययम्

Rāmap. 39. प्रत्ययार्थं च

प्रत्यरा

Śwet. 1. 4. विंशतिप्रत्यराभिः

प्रत्यवसृप्

Brih. 2. 1. 19. ताभिः प्रत्यवसृप्य पुरीतति शेते

प्रत्यवाय

Gītā. 2. 40. प्रत्यवायो न विद्यते

प्रत्यस्

Kaush. 2. 8. हरिततृणे वा प्रत्यस्यति

Brih. 4. 4. 7. वल्मीके मृता प्रत्यस्ता शयीत

प्रत्याख्या

Brih. 6. 2. 8. को हि त्वैवं ब्रुवन्तमर्हति प्रत्याख्यातुमिति

प्रत्याचक्ष्

Kaush. 2. 1. ये पुरस्तात् प्रत्याचक्षीरन् 2

Tait. 3. 10. 1. न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत

प्रत्याजन्

Kaush. 1. 2. तेषु तेषु स्थानेषु प्रत्याजायते

प्रत्याधान

Bṛih. 2. 2. 1. तस्येदमेवाधानमिदं प्रत्याधानम्

प्रत्यायन

Chhâ. 3. 19. 3. प्रत्यायनं प्रति घोषा उलूलवो ऽनूत्तिष्ठन्ति

प्रत्याश्रु

Bṛih. 6. 3. 4. आश्रितमसि प्रत्याश्रावितमसि

प्रत्यास्वर

Chhâ. 1. 3. 2. स्वर इतीममाचक्षते स्वर इति प्रत्यास्वर इत्यमुम्

प्रत्याहार

Maitri. 6. 18. प्राणायामः प्रत्याहारः

Amrita. 5. प्रत्याहारः स उच्यते

6. प्रत्याहारस्तथा ध्यानम्

प्रत्युत्थायिन्

Bṛih. 6. 2. 16. लोकान् प्रत्युत्थायिनः

प्रत्युपकार

Gîtâ. 17. 21. यत्तु प्रत्युपकारार्थम्

प्रत्यूह्

Chhâ. 8. 3. 2. अनृतेन हि प्रत्यूढाः

Bṛih. 1. 2. 7. पशून्देवताभ्यः प्रत्यौहत्

3. 9. 26. यस्तान्पुरुषान्निरुह्य प्रत्युह्य

Nṛisut. 7. स एतत् सर्वं . . प्रत्युह्य

प्रत्ये

Chhâ. 4. 1. 7. नाविदमिति प्रत्येयाय

8. अविदमिति प्रत्येयाय

Chhâ. 4. 3. 7. शौनकः कापेयः प्रतिमन्वानः प्रत्येयाय

Bṛih. 5. 5. 2. नैनमेते रश्मयः प्रत्याय[illegible]

Kaṭhaśru. 2. एतच्चैतच्चानवेक्षमाणाः [illegible]त्यायन्ति

प्रत्येनस्

Bṛih. 4. 3. 37. उग्राः प्रत्येनसः सूतग्राम[illegible]

38.

प्रथ्

Gîtâ. 15. 18. अतो ऽस्मि लोके वेदे च [illegible] थितः पुरुषोत्तमः

प्रथम

Ait. 4. 1. तदस्य प्रथमं जन्म

Kena. 1. केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्त[illegible]

27. एनत्प्रथमो विदांचकार [illegible]

Chhâ. 2. 9. 3. यत्प्रथमोदिते स प्रस्ताव[illegible]

8. यत्प्रथमास्तमिते तन्निधन[illegible]

2. 23. 1. यज्ञो ऽध्ययनं दानमिति [illegible] थमः

3. 6. 1. यत्प्रथमममृतं तद्वसव उ[illegible] पजीवन्ति

5. 19. 1. यद्भक्तं प्रथममागच्छेत् — स यां प्रथमामाहुतिं जुहु[illegible] यात्

Bṛih. 1. 3. 12. वाचमेव प्रथमामत्यवहत्

5. 5. 1. प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यम्

5. 14. 6. अस्या एतत्प्रथमं पदमा[illegible] मुयात्

Kaṭha. 1. 5. बहूनामेमि प्रथमः

10. एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृ[illegible]

Śwet. 2. 1. युञ्जानः प्रथमं मनः

13. योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति

Maitri. 6. 33. सेयं प्रजापतेः प्रथमा चिति[illegible]

Muṇḍ. 1. 1. 1. ब्रह्मा देवानां प्रथमः संब[illegible] भूव

Mahânâr. 6. 1. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विध[illegible] र्मन्

ahânâr. 10. 3. यो देवानां प्रथमं पुरस्तात्
rasna. 2. 8. पितृणां प्रथमा स्वधा
ândû. 3. वैश्वानरः प्रथमः पादः Nrip. 4. 1; Nrisut 1; Râmot. 3.
9. वैश्वानरो ऽकारः प्रथमा मात्रा
rip. 1. 1. रेतः प्रथमं यदासीत्
— अनुष्टुप् प्रथमा भवति
2. तस्मान्नः प्रथमं पादं जानीयात्
4. उग्रं प्रथमस्याद्यम्
5. वीरं प्रथमस्यार्द्धान्त्यम्
7. विष्णुं प्रथमस्यान्त्यम्
2. 1. सा प्रथमः पादो भवति Nrisut 3 (bis).
2. अष्टाक्षरः प्रथमः पादो भवति
— प्रथमं प्रथमेन युज्यते
3. उग्रं प्रथमं स्थानं जानीयात्
7. भुंक्ते ऽसौ प्रथमं प्रभुः
s. 1. अहमेकः प्रथममासीत्
5. या सा प्रथमा मात्रा
â. 1. प्रथमा रक्ता ब्राह्मी ब्रह्मदेवत्या
6. आग्नेयी प्रथमा मात्रा
9. घोषिणी प्रथमा मात्रा
12. प्रथमायां तु मात्रायाम्
a. 4. प्रथमेन तु पिण्डेन
sa. 2. चिणीति प्रथमम्
— प्रथमे चिञ्चिणी गात्रम्
g. 2. यास्य प्रथमा रेखा
ot. 2. अकारः प्रथमाक्षरः

प्रथमज, °जा

. 5. 4. 1. य एवमेतं..प्रथमजं वेद
. 3. 10. 6. अहमस्मि प्रथमजाः Nrip. 2. 4.
ânâr. 2. 7. प्रजापतिः प्रथमजाः

प्रथमान्तार्द्ध

Nrip. 1. 6. महा प्रथमान्तार्द्धस्याद्यम्

प्रद

Hamsa. 1. भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् Gopî. 5.
Gopî. 5. चतुर्वर्गफलप्रदम्
Mukti. 2. 30. परमोपशमप्रदा
Gîtâ. 2. 43. जन्मकर्मफलप्रदाम्
17. 9. दुःखशोकामयप्रदाः

प्रदक्षिणम्

Kathasru. 2. प्रदक्षिणमावृत्य

प्रदक्षिणीकृ

Hamsa. 1. स्वाधिष्ठानं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य

प्रदह्

Chhâ. 4. 1. 2. तस्त्वा मा प्रधाक्षीः

प्रदा

Kaush. 3. 1. अरुन्मुखान् यतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छम्
Chhâ. 1. 10. 3. तानस्मै प्रददौ
5. 24. 4. यद्यपि चण्डालायोच्छिष्टं प्रयच्छेत्
Brih. 1. 5. 1. पशुभ्य एकं प्रायच्छत् 2.
2. देवेभ्यो ऽन्नाद्यं प्रयच्छति
3. 3. 2. तानिन्द्रः..वायवे प्रायच्छत्
6. 4. 19. प्रीर्येतरस्याः प्रयच्छति
27. एनं मात्रे प्रदाय स्तनं प्रयच्छति
Katha. 1. 25. आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व
Maitri. 6. 33. अन्तरिक्षमुत्क्षिप्त्वा वायवे प्रायच्छत्
— दिवमुत्क्षिप्त्वेन्द्राय प्रायच्छत्

Maitri. 6. 33. आत्मविदुत्क्षिप्य ब्रह्मणे प्रायच्छत्
Nrip. 2. 1. तेभ्य एतं मन्त्रराजं . . प्रायच्छत्
Gâruda. 1. भारद्वाजो जीवितुकामेभ्यः शिष्येभ्यः प्रायच्छत्
Gopî. 5. तिलमात्रं प्रदाय
Mukti. 2. 12. तस्य सिद्धिं प्रयच्छन्ति

प्रदातृ

Prâṇâg. 1. प्र प्रदातारं तारिषः

प्रदान

Prâṇâg. 1. प्राणाय प्रदानाय स्वाहा (so MSS ; printed text has प्रधानाय)
Gopî. 5. तिलमात्रप्रदानेन

प्रदिश्

Śwet. 2. 16. एषो ऽह देवः प्रदिशो ऽनु सर्वाः
Mahânâr. 2. 7. परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च
Śiras. 5. एको ह देवः प्रदिशो ऽनु सर्वाः
Gîtâ. 8. 28. दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्

प्रदिह्

Gîtâ. 2. 5. रुधिरप्रदिग्धान्

प्रदीप्

Gîtâ. 11. 29. यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतंगा विशन्ति

प्रदीप

Maitri. 6. 38. प्रदीपप्रतापवत्

प्रदु

Chhâ. 5. 24. 3. यथेषीकातूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेतैवं हास्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयन्ते

प्रदुष्

Gîtâ. 1. 41. प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः

प्रदुह्

Mahânâr. 1. 9. स आपः प्रदुघे उभे इ अन्तरिक्षमथो सुवः

प्रदृश्

Śwet. 2. 15. दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्ये
Nâda. 5. मन्त्र एव प्रदर्शितः
Gîtâ. 1. 39. प्रपश्यद्भिर्जनार्दन
2. 8. न हि प्रपश्यामि
11. 49. तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य

प्रदेश

Gauḍa. 4. 33. संवृते ऽस्मिन् प्रदेशे वै
Garbha. 3. गुल्फजठरकटिप्रदेशाः

प्रद्युत्

Bṛih. 4. 4. 2. एतस्य हृदयस्याग्रं प्रद्योत

प्रद्योत

Bṛih. 4. 4. 2. तेन प्रद्योतेनैष आत्मा नि ष्क्रामति

प्रद्राणक

Chhâ. 1. 10. 1. इभ्यग्रामे प्रद्राणक उवा

प्रद्रु

Bṛih. 6. 2. 3. अनादृत्य वसतिं कुमा प्रदुद्राव

प्रद्विष्

Gîtâ. 16. 18. प्रद्विषन्तो ऽभ्यसूयकाः

प्रधान

Śwet. 1. 10. क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः
6. 16. प्रधानक्षेत्रज्ञपतिः
Maitri 6. 10. पुरुषश्चेता प्रधानान्तःस्थः — भूतात्मा ब्रह्मस्य क प्रधानः

Maitri. 6. 10. अनेनैव प्रधानस्य भोज्यत्वं व्याख्यातम्
— प्रधानस्य व्यक्ततां गतस्य

प्रधानज

Swet. 6. 10. तन्तुभिः प्रधानजैः

प्रधि

Brih. 1. 5. 15. प्रधिर्वित्तम्
— प्रधिनागादित्येवाहुः

प्रध्मा

Chhâ. 6. 14. 2. प्राङ्वोदङ्वाधराङ्वा प्रध्मायीत

Gîtâ. 1. 14. दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः

प्रध्यै

Sikhâ. 2. ध्येयमीशानं प्रध्यायन्ति

प्रध्वंस्

Chhâ. 8. 1. 4. यदेनज्जरा वाप्नोति प्रध्वंसते वा

प्रध्वंसन

Brih. 2. 6. 3. मृत्युः प्राध्वंसनः प्रध्वंसनात् 4. 6. 3.
— प्रध्वंसन एककृषेः

प्रध्वंसिन्

Maitri. 1. 4. तृणवनस्पतयोऽद्भूतप्रध्वंसिनः

प्रपञ्च

Swet. 6. 6. यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्त्ततेऽयम्

Kaivalya. 17. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चम्

Gauda. 1. 17. प्रपञ्चो यदि विद्येत

प्रपञ्चोपशम

Mândû. 7. एकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमम् Nrip. 4. 1; Nrisut. 1; Râmot. 2.
12. प्रपञ्चोपशमः शिवो ऽद्वैतः Nrisut. 2.

Gauda. 2. 35. प्रपञ्चोपशमो ऽद्वयः

प्रपत्

Ait. 2. 1. एता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्यर्णवे प्रापतन्

Maitri. 6. 12. अहरहः प्रपतन्त्यन्नमाभिजिघृक्षमाणानि

प्रपतन

Maitri. 1. 4. शिखरिणां प्रपतनम्

प्रपद्

Ait. 3. 11. स ईक्षत कतरेण प्रपद्यै
12. एतया द्वारा प्रापद्यत

Chhâ. 2. 22. 3. इन्द्रं शरणं प्रपन्नोऽभूवम्
4. प्रजापतिं शरणं प्रपन्नो ऽभूवं .. मृत्युं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्
3. 15. 3. अरिष्टं कोशं प्रपद्ये ऽमुनाऽमुना ऽमुना (similarly, 4 times more).
4. स यदवोचं प्राणं प्रपद्य इति प्राणो वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किञ्च तमेव तत्प्रापत्सि
5. यदवोचं भूः प्रपद्य इति पृथिवीं प्रपद्ये ऽन्तरिक्षं प्रपद्ये दिवं प्रपद्य इत्येव तदवोचं (similarly in 6, 7).
8. 13. 1. श्यामाच्छबलं प्रपद्ये शबलाच्छ्यामं प्रपद्ये
8. 14. 1. प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये

Tait. 1. 4. 3. प्र मा भाहि प्र मा पद्यस्व

Katha. 5. 7. योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय

Swet. 4. 21. अजात इत्येवं कश्चिद्भीरुः प्रपद्ये (so 3 MSS.)
6. 18. मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये

Maitri. 6. 30. तेन देवनिकायानां स्वधामानि प्रपद्यते

Mahânâr. 4. 11. हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये
6. 3. दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये
17. 1. सद्योजातं प्रपद्यामि
Gauḍa. 4. 35. प्रबुद्धो न प्रपद्यते
56. संसारं न प्रपद्यते
Nṛip. 3. 1. तामिहायुषे शरणं प्रपद्ये
Kshur. 20. तद्भाविताः प्रपद्यन्ते
Garbha. 4. तत् प्रपद्ये महेश्वरम्
— तत् प्रपद्ये नारायणम्
Nyâsa. 2. वानप्रस्थं प्रपद्यते
4. ब्रह्म प्रपद्यते ऽजरममरम-
क्षरमव्ययं प्रपद्यते
5. ऊर्ध्वं प्रपद्यते देहात्
Gîtâ. 2. 7. शाधि मां त्वां प्रपन्नम्
4. 11. ये यथा मां प्रपद्यन्ते
7. 14. मामेव ये प्रपद्यन्ते
15. न मां..प्रपद्यन्ते नराधमाः
19. ज्ञानवान्मां प्रपद्यते
20. प्रपद्यन्ते ऽन्यदेवताः
15. 4. तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये

प्रपदन

Chhâ. 8. 6. 5. विदुषां प्रपदनम्

प्रपितामह

Gîtâ. 11. 39. प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च

प्रपीड्

Śwet. 2. 9. प्राणान् प्रपीड्य

प्रफर्वी

Bṛih. 6. 4. 19. अन्यामिच्छ प्रफर्व्यम्
(Roer and my MS. read प्रपूर्व्यां)

प्रबन्ध्

Chhâ. 6. 8. 2. यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धः

प्रबुध्

Kaivalya. 14. प्रबुद्धः पुरत्रये क्रीडति
Gauḍa. 1. 16. यदा जीवः प्रबुध्यते
4. 35. प्रबुद्धो न प्रपद्यते
Nṛisut. 7. स यदा प्रबुध्यते तदैतत्स
र्वमस्मादेवोत्तिष्ठति

प्रबोध

Gauḍa. 3. 40. दुःखक्षयः प्रबोधश्च
Haṁsa. 1. ब्रह्मविद्याप्रबोधः

प्रब्रू

Chhâ. 3. 11. 5. ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म
प्रब्रूयात्
4. 10. 2. मा त्वाग्नयः परिप्रवोच
प्रब्रूह्यस्मै
4. हन्तास्मै प्रब्रवामेति
6. 14. 2. तस्य यथाभिनहनं प्रमुच्य
प्रब्रूयात्
8. 8. 1. यदात्मनो न विजानीथस्त
न्मे प्रब्रूतमिति
Bṛih. 1. 4. 1. अथान्यन्नाम प्रब्रूते
Katha. 1. 13. प्रब्रूहि तं श्रद्दधानाय मह्य
14. प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबो
Muṇḍ. 1. 1. 1. अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह
2. भारद्वाजाय सत्यवाहाय
प्राह
Mahânâr. 9. 13. वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्
Gauḍa. 2. 27. लोकान् लोकविदः प्राहुः
Râmot. 4. श्रीरामः प्राह शंकरम्
Gîtâ. 4. 1. विवस्वान्मनवे प्राह
6. 2. यं सन्न्यासमिति प्राहुः
13. 1. एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ
15. 1. अश्वत्थं प्राहुरव्ययम्
18. 2. प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः
3. इत्येके..प्राहुर्मनीषिणः

प्रभव

Śwet. 3. 4. यो देवानां प्रभवश्चोद्भव
4. 12.
Katha. 6. 11. योगो हि प्रभवाप्ययौ

ândû. 6. प्रभवाप्ययौ हि भूतानां Nrip. 4. 1; Nrisut 1; Râmot. 3.
auda. 1. 6. प्रभवः सर्वभावानाम्
itâ. 7. 6. प्रभवः प्रलयस्तथा
9. 18. प्रभवः प्रलयः स्थानम्
10. 2. न मे विदुः सुरगणाः प्रभवम्
8. अहं सर्वस्य प्रभवः

प्रभविष्णु

â. 13. 16. ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च

1. प्रभा

it. 1. 4. 3. प्र मा भाहि प्र मा पद्यस्व
uda. 4. 81. प्रभातं भवति स्वयम्

2. प्रभा

â. 7. 8. प्रभास्मि शशिसूर्ययोः

प्रभाव

hur. 19. प्रभावादिहजन्मनि

प्रभाशून्य

kti. 2. 55. प्रभाशून्यं मनःशून्यम्

प्रभाष्

â. 2. 54. स्थितधीः किं प्रभाषेत

प्रभाहीन

map. 4. प्रभाहीनांस्तथा कृत्वा

प्रभिद्

ha. 6. 15. यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः

प्रभु

â. 7. 6. 1. ये प्रभवो ध्यानापादांशा इवैव ते भवन्ति
t. 3. 12. महान् प्रभुर्वै पुरुषः
17. सर्वस्य प्रभुमीशानम्
tri. 3. 2. आत्मस्थं प्रभुं .. नापश्यत्
5. 1. विश्वक्रीडारतिप्रभुः
6. 16. सर्वः कश्चित् प्रभुः साक्षी

Mahânâr. 11. 1. अक्षरं परमं प्रभुम्
16. 3. प्रभुः प्रीणाति विश्वभुक्
Kaivalya. 7. उमासहायं परमेश्वरं प्रभुम्
Gauda. 1. 8. इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टिः
10. ईशानः प्रभुरव्ययः
2. 13. एवं कल्पयते प्रभुः
Nrisut. 2. परिभवासहः प्रभुः
Chûl. 7. भुंक्ते ऽसौ प्रथमं प्रभुः (one MS. has विभुः)
Nâda. 20. विमलः केवलः प्रभुः
Gîtâ. 5. 14. लोकस्य सृजति प्रभुः
9. 18. गतिर्भर्त्ता प्रभुः साक्षी
24. भोक्ता च प्रभुरेव च
11. 4. मन्यसे यदि .. प्रभो
14. 21. अतीतो भवति प्रभो

प्रभुविमित

Chhâ. 8. 5. 3. प्रभुविमितं हिरण्मयम्

1. प्रभू

Mund. 2. 1. 1. सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः
8. सप्त प्राणाः प्रभवन्ति Mahânâr. 8. 4.
Praśna. 6. 2. यस्मिन्नेताः षोडशकलाः प्रभवन्ति
Nrip. 1. 4. य ओषधीनां प्रभवति तारापतिः सोमः
Gîtâ. 8. 18. प्रभवन्त्यहरागमे
19. प्रभवत्यहरागमे
16. 9. प्रभवन्त्युग्रकर्माणः

प्रभू

Brih. 6. 3. 4. विभूरसि प्रभूरसि

प्रभृति

Maitri. 1. 4. मरुत्तभरतप्रभृतयः
Jâbâla. 6. संवर्तकारुणिश्वेतकेतुदुर्वासऋभुनिदाघजडभरतदत्तात्रेयरैवतकप्रभृतयः

प्रमद्

Tait. 1. 11. 1. स्वाध्यायान्मा प्रमदः
— सत्यान्न प्रमदितव्यम्
— धर्मान्न प्रमदितव्यम्
— कुशलान्न प्रमदितव्यम्
— भूत्यै न प्रमदितव्यम्
— स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्
2. देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्
2. 5. 1. तस्माच्चेन्न प्रमाद्यति
Katha. 2. 6. प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्

प्रमा

Maitri. 6. 14. अनेनैव प्रमीयते हि कालः
— न विना प्रमाणेन प्रमेयस्योपलब्धिः
— प्रमेयो ऽपि प्रमाणतां पृथक्त्वादुपैति

प्रमाण

Maitri. 6. 14. सौक्ष्म्यत्वादेतत्प्रमाणम्
— न विना प्रमाणेन प्रमेयस्योपलब्धिः
Nrisut. 9. प्रमाणैरेतैरवगतः
Sarvop. 4. प्रमाणाप्रमाणसाधारणा
Kâlâg. 1. किं द्रव्यं किं स्थानं कति प्रमाणम्
— अथ सनत्कुमार प्रमाणमस्य
Mukti. 2. किं वा तत्र प्रमाणम्
— अष्टोत्तरशतोपनिषदः प्रमाणम्
2. 31. गुरुशास्त्रप्रमाणैस्तु
Gîtâ. 3. 21. स यत्प्रमाणं कुरुते
16. 24. तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते

प्रमाणता

Maitri. 6. 14. प्रमेयो ऽपि प्रमाणतां पृथक्त्वादुपैति

प्रमाथिन्

Gîtâ. 2. 60. इन्द्रियाणि प्रमाथीनि
6. 34. प्रमाथि बलवद्दृढम्

प्रमाद

Maitri. 3. 5. प्रमादो जरा ..इति ता सानि
Mund. 3. 2. 4. न च प्रमादात्तपसो वा लिङ्गात्
Yogaśi. 8. आलस्याच्च प्रमादतः
Gîtâ. 11. 41. मया प्रमादात्प्रणयेन वा
14. 8. प्रमादालस्यनिद्राभिः
9. तमः प्रमादे सञ्जयत्युत
13. प्रमादो मोह एव च
17. प्रमादमोहौ तमसो भवत
18. 39. निद्रालस्यप्रमादोत्थम्

प्रमायुक

Brih. 1. 4. 8. न हास्य प्रियं प्रमायुकं वति

प्रमित

Kaush. 1. 3. विभुप्रमितम्

प्रमी

Mahânâr. 25. 1. य एवं विद्वानुदगयने प्र यते
— यो दक्षिणे प्रमीयते

प्रमुखे

Gîtâ. 2. 6. ते ऽवस्थिताः प्रमुखे

प्रमुखतस्

Gîtâ. 1. 25. भीष्मद्रोणप्रमुखतः

प्रमुच्

Chhâ. 6. 14. 2. अभिनहनं प्रमुच्य
8. 13. 1. चन्द्र इव राहोर्मुखात्
Brih. 4. 3. 36. यथाम्र..बन्धनात्प्र
4. 4. 7. यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते
Katha 6. 14.

Katha. 1. 11. त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम्
3. 15. निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते
Mahânâr. 5. 11. तस्मात्पापात्प्रमुच्यते
Kaivalya. 17. सर्वबन्धैः प्रमुच्यते
Garbha. 4. यदि योन्याः प्रमुच्येऽहम् (ter).
Nîla. 13. प्रमुञ्च धन्वनः..ज्याम्
Dhyâna. 1. सर्वपापैःप्रमुच्यते (one MS. omits); Yogat. 1; Gîtâ. 10. 3.
Nâr. 5. पञ्चमहापातकोपपातकेभ्यः प्रमुच्यते
Gîtâ. 5. 3. सुखं बन्धात्प्रमुच्यते

प्रमुद्

Brih. 4. 3. 10. न तत्र..प्रमुदो भवन्त्यथ ..प्रमुदः सृजते

प्रमुह्

Mund. 1. 2. 10. नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः

प्रमोद

Tait. 2. 5. 1. प्रमोद उत्तरः पक्षः
Katha. 1. 28. अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदान्
Parama. 3. न द्वेष्टि न प्रमोदश्च

प्रयतात्मन्

Gîtâ. 9. 26. अश्नामि प्रयतात्मनः

प्रयत्न

Maitri. 6. 34. तत्प्रयत्नेन शोधयेत्
Mukti. 2. तत्पुरुषप्रयत्नसाध्यम् — *vide* समाधि
2. 6. पौरुषेण प्रयत्नेन 7.
15. तस्मात्सौम्य प्रयत्नेन
63. अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन..ज्योतिरान्तरम्
Gîtâ. 6. 45. प्रयत्नाद्यतमानस्तु

प्रयत्नतस्

Gauda. 3. 45. एकीकुर्यात् प्रयत्नतः

प्रयम्

Kaush. 2. 11. अस्मै प्रयन्धि मघवन्नृजीषिन्
Katha. 3. 17. प्रयतः श्राद्धकाले वा

प्रया

Brih. 4. 3. 38. यथा राजानं प्रयियासन्तम्
Maitri. 1. 4. अस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः
3. 2. अभिभूतत्वात् सम्मूढत्वं प्रयातः
— व्ययमश्चाभिमानित्वं प्रयातः 6. 30.
5. 2. तत्परेणेरितं विषमत्वं प्रयाति
— तद्रजः खल्वीरितं विषमत्वं प्रयाति
6. 14. कालाद्वृद्धिं प्रयान्ति च
7. 10. ब्रह्मणो ऽन्तिकं प्रयाताः
Mund. 1. 2. 11. सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
Kaivalya. 24. प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम्
Nâr. 3. प्रयाति परमं पारम्
Gîtâ. 8. 5. यः प्रयाति स मद्भावं याति
13. यः प्रयाति त्यजन्देहम्
23. प्रयाता यान्ति
24. तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म

प्रयाज

Prânâg. 3. शारीरयज्ञस्य..के प्रयाजाः
4. महाभूतानि प्रयाजाः

प्रयाणकाल

Gîtâ. 7. 30. प्रयाणकाले ऽपि च
8. 2. प्रयाणकाले च कथम्
10. प्रयाणकाले मनसाचलेन

76

प्रयुज्

Swet. 2. 10. गुहानिवाताश्रयेण प्रयोजयेत्

Prasna. 5. 6. प्रयुक्ता अन्योन्यसक्ताः
— क्रियासु .. सम्यक् प्रयुक्तासु

Sikhâ. 1. किमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यम्
— ओमित्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यम्
2. ईशा वा सर्वमिदं प्रयुक्तम्

Gîtâ. 3. 36. अथ केन प्रयुक्तो ऽयम्
17. 26. सदित्येतत्प्रयुज्यते

प्रयोग

Garbha. 3. ऋतुकाले प्रयोगात्

प्रयोगकल्प

Maitri. 6. 18. तथा तत्प्रयोगकल्पः

प्रयोगस्थ

Maitri. 6. 9. ध्यानं प्रयोगस्थं मनो विद्विष्टुतम्

प्रयोग्य

Chhâ. 8. 12. 3. यथा प्रयोग्य आचरणे युक्तः

प्रयोजन

Mukti. 2. सिद्धा वा किं प्रयोजनम्
— नित्यानन्दावाप्तिः प्रयोजनं भवति

प्ररुह्

Chhâ. 5. 2. 3. प्ररोहेयुः पलाशानि Brih. 6. 3. 7-12.

Brih. 3. 9. 28. कस्मान्मूलात्प्ररोहति (bis).

Mahânâr. 4. 3. काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती

प्रलप्

Gîtâ. 5. 9. प्रलपन्विसृजन् गृह्णन्

प्रलय

Gîtâ. 7. 6. प्रभवः प्रलयस्तथा
9. 18. प्रभवः प्रलयः स्थानम्
14. 2. प्रलये न व्यथन्ति च
14. प्रलयं याति देहभृत्
15. रजसि प्रलयं गत्वा

प्रलयान्त

Gîtâ. 16. 11. चिन्तां .. प्रलयान्तामुपाश्रिताः

प्रली

Gauda. 3. 4. घटादिषु प्रलीनेषु

Chûl. 17. यस्मिन् भावाः प्रलीयन्ते

Nâr. 1. नारायणे प्रलीयन्ते

Gîtâ. 8. 18. राज्यागमे प्रलीयन्ते
19. भूत्वा भूत्वा प्रलीयते
14. 15. तथा प्रलीनस्तमसि

प्रलूता (?)

Gâruda. 2. लूतानां प्रलूतानाम् (so MSS. and Weber)

प्रलोभदण्ड

Maitri. 6. 28. प्रलोभदण्डं धनुर्गृहीत्वा

प्रवच्

Chhâ. 3. 11. 4. ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्र[illegible] प्रोवाच
8. 8. 4. एतामुपनिषदं प्रोवाच

Brih. 2. 5. 16. अश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदी[illegible] वाच
17. स वां मधु प्रावोचत्

Tait. 1. 8. 1. ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्य[illegible] न्नाह
3. 1. 1. तस्मा एतत्प्रोवाचान्नं प्रा[illegible] चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमि[illegible]

Katha. 1. 19. एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति
2. 8. न नरेणावरेण प्रोक्त ए[illegible] सुविज्ञेयः

atha. 2. 9. प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय
5. 6. हन्त त इदं प्रवक्ष्यामि
wet. 1. 12. सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममे-
तत्
6. 21. प्रोवाच सम्यगृषिसंघजुष्टम्
laitri. 6. 34. मनो हि द्विविधं प्रोक्तम्
Brahmab. 1.
Mund. 1. 2. 13. प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्म-
विद्याम्
Iahânâr. 2. 4. प्र तद्वोचे अमृतं नु विद्वान्
7. 5. प्रोवाचोपनिषदिन्द्रः
10. 8. यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः
22. 1. किं भगवन्तः परमं वद-
न्तीति तस्मै प्रोवाच
Prasna. 6. 5. समुद्र इत्येवं प्रोच्यते
— पुरुष इत्येवं प्रोच्यते
Nrip. 1. 2. अथ सावित्री गायत्री या
यजुषा प्रोक्ता
Brahmav. 1. ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि
Gâruda. 1.
4. तत्र देवास्त्रयः प्रोक्ताः
Kshur. 13. इन्द्रवज्र इति प्रोक्तः (3
MSS. have प्रोक्तं)
Amrita. 9. प्राणायामास्त्रयः प्रोक्ताः
Dhyâna. 1. योगतत्त्वं प्रवक्ष्यामि (one
MS. omits) ; Yogat. 1.
Yogasi. 1. योगशिखां प्रवक्ष्यामि
Krish. 3. प्रोवाच भगवान् स्वयम्
5. माया सा त्रिविधा प्रोक्ता
6. प्रोक्ता सात्त्वी च रुद्रस्य
Skanda. 10. देहो देवालयः प्रोक्तः
Râmap. 58. एवमुद्देशतः प्रोक्तम्
(3 MSS. have प्रोक्तः)
Mukti. 2. 61. वासना द्विविधा प्रोक्ता
62. पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता
Gità. 3. 3. पुरा प्रोक्ता मयानघ
4. 1. प्रोक्तवानहमव्ययम्
3. योगः प्रोक्तः पुरातनः

Gîtâ. 4. 4. त्वमादौ प्रोक्तवानिति
16. तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि
6. 33. यो ऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः
8. 1. अधिभूतं च किं प्रोक्तम्
11. तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये
9. 1. प्रवक्ष्याम्यनसूयवे
10. 40. एष तूद्देशतः प्रोक्तः
13. 11. एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम्
12. ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि
14. 1. परं भूयः प्रवक्ष्यामि
16. 6. दैवो विस्तरशः प्रोक्तः
17. 18. तदिह प्रोक्तं राजसम्
18. 13. सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि
19. प्रोच्यते गुणसंख्याने
29. प्रोच्यमानमशेषेण
37. तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तम्

प्रवचन

Tait. 1. 3. 3. प्रवचनं सन्धानम्
1. 9. 1. स्वाध्यायप्रवचने
(13 times)
1. 11. 1. स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्र-
मदितव्यम्
Katha. 2. 23. नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः
Mund. 3. 2. 3.

प्रवता

Tait. 1. 4. 3. यथापः प्रवता यन्ति

प्रवद्

Swet. 3. 21. जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य
ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति
नित्यम्
Mund. 1. 1. 2. अथर्वणे यां प्रवदेत
Mahânâr. 5. 12. रजोभूमिस्त्वमाँरोदयस्व
प्रवदन्ति धीराः
Nrip. 2. 4. प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं व-
दत्युक्थ्यम्
Râmap. 18. नमस्त्वैवर्यं प्रवदत्
Râmot. 3. मन्त्रतः प्रवदन्ति ये

Gîtâ. 2. 42. प्रवदन्त्यविपश्चितः
5. 4. बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः
10. 32. वादः प्रवदतामहम्

प्रवर्ग्य

Mahânâr. 25. 1. यत्सञ्चरत्युपविशत्युत्तिष्ठते च स प्रवर्ग्यः

प्रवर्त्तक

Śwet. 3. 12. सत्त्वस्यैष प्रवर्त्तकः

प्रवस्

Kaush. 2. 11. अथ प्रोष्यायन् पुत्रस्य मूर्धानमभिजिघ्रेत्

Chhâ. 4. 4. 5. स ह वर्षगणं प्रोवास
4. 10. 2. तस्मै हाप्रोष्यैव प्रवासाञ्चक्रे
5. 1. 8. संवत्सरं प्रोष्य 9, 10, 11; Brih. 6. 1. 8—12.

प्रवाह

Mukti. 2. 53. ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहः

प्रवाहण

Chhâ. 1. 8. 1. प्रवाहणो जैवलिः 2, 8; 5. 3. 1.

Brih. 6. 2. 1. जैवलिं प्रवाहणम्
4. प्रवाहणस्य जैवलेः

प्रविद्

Tait. 1. 5. 1. चतुर्थीं माहाचमस्यः प्रवेदयते मह इति

Mund. 1. 2. 9. यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्

प्रविभज्

Praśna. 2. 3. पञ्चधात्मानं प्रविभज्य
3. 1. आत्मानं वा प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठते

Gîtâ. 11. 13. प्रविभक्तमनेकधा
18. 41. कर्माणि प्रविभक्तानि

प्रविली

Mund. 3. 2. 2. इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः

Mukti. 2. 17. वासना प्रविलीयते

Gîtâ. 4. 23. समग्रं प्रविलीयते

प्रविविक्तभुज्

Mâṇḍu. 4. प्रविविक्तभुक्तैजसः Nrip. 4. 1; Râmot. 3.

Gauḍa. 1. 3. तैजसः प्रविविक्तभुक् 4.

प्रविविक्ताहारतर

Brih. 4. 2. 3. तस्मादेष प्रविविक्ताहारतर इवैव भवति

प्रविविच्

Gauḍa. 1. 4. प्रविविक्तं तु तैजसम्

प्रविश्

Ait. 2. 3. यथायतनं प्रविशतेति
4. अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत् (similarly, 7 times more).

Kaush. 1. 5. तं ब्रह्मगंधः प्रविशति
— तं ब्रह्मरसः प्रविशति
— तं ब्रह्मतेजः प्रविशति
— तं ब्रह्मयशः प्रविशति
2. 12. एताः सर्वा देवता वायुमेव प्रविश्य
13. एताः सर्वा देवता प्राणमेव प्रविश्य
14. अथैनद्वाक् प्रविवेश (similarly, 4 times more).

Chhâ. 1. 4. 2. देवा वै मृत्योर्बिभ्यतस्त्रयीं विद्यां प्राविशन्
3. स्वरमेव प्राविशन्
4. तत्प्रविश्य देवा अमृता अभया अभवन्
5. य एतदेवं विद्वान्..स्वरममृतमभयं प्रविशति तत्प्रविश्य..अमृतो भवति
5. 1. 8. प्रविवेश ह वाक् Brih. 6. 1. 8.

i. 5.	1.	9. प्रविवेश ह चक्षुः Brih. 6. 1. 9.
		10. प्रविवेश ह श्रोत्रम् Brih. 6. 1. 10.
		11. प्रविवेश ह मनः Brih. 6. 1. 11.
. 1.	4.	7. स एष इह प्रविष्ट आनखाग्रेभ्यः
.4.	4.	10. अन्धं तमः प्रविशन्ति Isâ. 9, 12.
		13. अस्मिन्सन्देहे गहने प्रविष्टः
6.	1.	12. प्रविवेश ह रेतः
. 1.	4.	3. तं त्वा भग प्रविशानि..स मा भग प्रविश
ha.	1.	7. वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिः
	3.	1. गुहां प्रविष्टौ परमे परार्द्धे
	4.	6. गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तम्
		7. गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तीम्
	5.	9. अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टः
		10. वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टः
itri.	2.	6. अभ्यन्तरं प्राविशत्
	5.	2. भूतेषु चरति प्रविष्टः
	6.	10. यद्वत्..कामिन्यः प्रविष्टाः स्पृशतीन्द्रियार्थांस्तद्वद्यो न स्पृशति प्रविष्टान्
sna.	1.	6. आदित्य उदयन्यत्प्राचीं दिशं प्रविशति
uḍa.	4.	49. नालातं प्रविशन्ति ते
		51. न विज्ञानं प्रविशन्ति ते
		54. एवं हेतुफलाजातिं प्रविशन्ति मनीषिणः
up.	5.	10. यत्र न मृत्युः प्रविशति यत्र न दुःखम्
isut.		7. तदेतत् सर्वमस्मिन् प्रविशति
		9. भूतानि..सृष्ट्वा प्रविश्य
ras.		1. सो ऽन्तरादन्तरं प्राविशद्दिशश्चान्तरं प्राविशत्
Nyâsa.		2. गुहां प्रवेष्टुमिच्छामि
Aruṇeya.		5. यतयो हि भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशन्ति
Gîtâ.	2.	70. समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्
		— तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
	11.	54. प्रवेष्टुं च परन्तप

प्रवृ

Maitri.	6.	7. स वा एवं प्रवरणीय आत्मकामेन

प्रवृत्

Chhâ. 5.	13.	2. प्रवृत्तोऽश्वतरीरथो दासीनिष्कः
Śwot.	2.	12. पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते
Maitri.	6.	28. सम्यग्योगः प्रवर्त्तते
Gauḍa.	4.	78. सदृशे तत्प्रवर्त्तते
Aruṇeya.		4. मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते Gîtâ. 10. 8.
Mukti.	2.	22. प्रवर्त्तते बहिः स्वार्थे वासनामात्रकारणम्
		28. वासना न प्रवर्त्तते
Gîtâ.	1.	20. प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते
	3.	16. एवं प्रवर्त्तितं चक्रम्
	5.	14. स्वभावस्तु प्रवर्त्तते
	11.	32. लोकान्समाहर्त्तुमिह प्रवृत्तः
	16.	10. प्रवर्त्तन्ते ऽशुचिव्रताः
	17.	24. प्रवर्त्तन्ते विधानोक्ताः

प्रवृत्ति

Gîtâ.	11.	31. नहि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्
	14.	12. लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणाम्
		22. प्रकाशं च प्रवृत्तिं च
	15.	4. यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी
	16.	7. प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च 18. 30.
	18.	46. यतः प्रवृत्तिर्भूतानाम्

प्रवृध्

Gîtâ. 11. 32. कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः
14. 14. यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु

प्रवृष्

Chhâ. 5. 10. 6. मेघो भूत्वा प्रवर्षति

प्रवृह्

Chhâ. 4. 17. 1. रसान् प्रावृहत् 2, 3.
Katha. 2. 13. प्रवृह्य धर्म्यम्
6. 17. तं स्वाच्छरीरात्प्रवृहेत्

प्रवे

Kaush. 2. 6. तस्मिन् यजुर्मयं प्रवयति
Chhâ. 2. 11. 1. एतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतम् 2.
2. 12. 1. एतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतम् 2.
2. 13. 1. एतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम् 2.
2. 14. 1. एतद्बृहदादित्ये प्रोतम् 2.
2. 15. 1. एतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतम् 2.
2. 16. 1. एतद्वैराजमृतुषु प्रोतम् 2.
2. 17. 1. एताः शक्वर्यो लोकेषु प्रोताः 2.
2. 18. 1. एता रेवत्यः पशुषु प्रोताः 2.
2. 19. 1. एतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम् 2.
2. 20. 1. एतद्राजनं देवतासु प्रोतम् 2.
2. 21. 1. एतत्साम सर्वस्मिन् प्रोतम् 2.
5. 24. 3. यथेषीकातूलमग्नौ प्रोतम्
Brih. 3. 6. 1. यदिदं सर्वमप्स्वोतं च प्रोतं च कस्मिन्नु खल्वाप ओताश्च प्रोताश्च
— कस्मिन्नु खलु वायुरोतश्च प्रोतश्च (similarly, nine times more).
3. 8. 3. कस्मिंस्तदोतं च प्रोतं चेति 6.
4. आकाश एव तदोतं च प्रोतं च 7.
Brih. 3. 8. 7. कस्मिन्नु खल्वाकाश ओतश्च प्रोतश्च
11. एतस्मिन्नु खल्वक्षरे .. आकाश ओतश्च प्रोतश्चेति
Maitri. 6. 3. एताभिः सर्वमिदमोतं प्रो[illegible]
Mahânâr. 2. 3. स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजा[illegible]
23. 1. येन सर्वमिदं प्रोतम्
Nrip. 2. 4. स्नेहो यथा पललपिण्डं प्रोतमनुप्राप्तं व्यतिषक्तः
Nrisut. 8. ओतश्च प्रोतश्च ह्ययमा[illegible] सिंहः
— ओतश्च प्रोतश्चैष ओङ्का[illegible]
Chûl. 17. यस्मिन् सर्वमिदं प्रोतम्
Siras. 4. शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्रा[illegible]
6. यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोत[illegible] Brahma. 2.
Brahma. 2. तेन सर्वमिदं प्रोतम्
Gîtâ. 7. 7. मयि सर्वमिदं प्रोतम्

प्रवेश

Kathaśru. 3. अपां प्रवेशमग्निप्रवेशम्
Jâbâla. 5. अपां प्रवेशो वा अग्नि[illegible]शे वा

प्रव्यथ्

Gîtâ. 11. 20. लोकत्रयं प्रव्यथितं म[illegible]त्मन्
23. लोकाः प्रव्यथितास्तथाह[illegible]
45. भयेन च प्रव्यथितं मनो[illegible]

प्रव्यथितान्तरात्मन्

Gîtâ. 11. 24. दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा

प्रव्रज्

Kaush. 4. 19. तं ह पाणावभिपद्य प्रवव्र[illegible]
Chhâ. 8. 8. 3. शान्तहृदयौ प्रवव्रजतुः
8. 9. 2. शान्तहृदयः प्राव्राजीः 8. 10. 3; 8. 11. 2.

â. 8. 10. 1. शान्तहृदयः प्रवव्राज 8. 11. 1.

ı. 4. 4. 22. एतमेव प्रव्राजिनो लोकमिच्छन्तः प्रव्रजन्ति

4. 5. 2. प्रव्रजिष्यन्वा अरे ऽहम्

tri. 7. 8. चाटजटनटभटप्रव्रजितरङ्गावतारिणः

śna. 6. 1. स तूष्णीं रथमारुह्य प्रवव्राज

hasru. 1. प्राचीमुदीचीं वा दिशं प्रव्रजेत्

ıla. 4. वनी भूत्वा प्रव्रजेत्
— यदि वेतरथा ब्रह्मचर्यादेवं प्रव्रजेत्
— यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्

प्रव्रज्याज्य

itri. 6. 28. प्रव्रज्याज्यं . . धनुर्गृहीत्वा

प्रव्राजिन्

ı 4. 4. 22. एतमेव प्रव्राजिनो लोकमिच्छन्तः प्रव्रजन्ति

प्रशंस्

. 1. 5. 16. तस्माद्विद्यां प्रशंसन्ति

3. 2. 13. यत्प्रशशंसतुः कर्म हैव तत्प्रशशंसतुः

3. 3. 2. स वायुमेव प्रशशंस

3. 8. 9. ददतो मनुष्याः प्रशंसन्ति

ânâr.21. 2. दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसन्ति

la. 3. 13. जीवात्मनोरनन्यत्वमभेदेन प्रशस्यते

17. 26. प्रशस्ते कर्मणि तथा

प्रशंसा

1. 5. 2. स ऊर्जमुपजीवतीति प्रशंसा

प्रशंसाकाम

2. 9. 3. तस्माच्चे प्रस्तुतिकामाः प्रशंसाकामाः

प्रशम्

Muṇḍ.3. 2. 5. कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः

Kaivalya. 6. शिवं प्रशान्तममृतं ब्रह्म
7. त्रिलोचनं नीलकण्ठं प्रशान्तम्

Amṛita. 14. प्रशान्तस्येति लक्षणम्

Gîtâ. 6. 7. जितात्मनः प्रशान्तस्य

प्रशाखा

Maitri. 7. 11. प्रशाखयैवोत्क्रम्य

प्रशान्तचित्त

Muṇḍ.1. 2. 13. प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय

प्रशान्तमनस्

Gîtâ. 6. 27. प्रशान्तमनसं ह्येनम्

प्रशान्तवृत्तिक

Mukti. 2. 54. प्रशान्तवृत्तिकं चित्तम्

प्रशान्तात्मन्

Gîtâ. 6. 14. प्रशान्तात्मा विगतभीः

प्रशास्

Bṛih. 5. 6. 1. सर्वमिदं प्रशास्ति यदिदं किञ्च

प्रशासन

Chhâ. 5. 3. 7. क्षत्रस्यैव प्रशासनमभूत्

Bṛih. 3. 8. 9. एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने (5 times).

प्रशिस्

Nṛip. 2. 4. विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः

प्रश्न

Chhâ. 5. 3. 5. पञ्च . . प्रश्नानप्राक्षीत्
Bṛih. 6. 2. 3.

Bṛih. 3. 8. 1. द्वौ प्रश्नौ प्रक्ष्यामि

Tait. 2. 6. 1. अथातो ऽनु प्रश्नाः
Maitri. 1. 2. दुःशक्यमेतत् प्रश्नम् (one MS. has अशक्यं मा पृच्छ प्रश्नं)
4. 5. अथोत्तरं प्रश्नमनुब्रूहि
Praśna. 1. 2. यथाकामं प्रश्नान् पृच्छथ
6. 1. मामुपेत्यैतं प्रश्नमपृच्छत
Mukti. 1. 30. *vide* तित्तिरि
1. *vide* गारुड

प्रश्वस्

Tait. 1. 11 3. तेषां त्वयासनेन प्रश्वसितव्यम्

प्रष्टृ

Katha. 2. 9. त्वादृङ् नो भूयात्..प्रष्टा

प्रसङ्ग

Gîtâ. 18. 34. प्रसंगेन फलाकांक्षी

प्रसञ्ज्

Chhâ. 4. 1. 2. तन्मा प्रसाङ्क्षीः
Gauḍa. 4. 13. न व्यवस्था प्रसज्यते
Gîtâ. 16. 16. प्रसक्ताः कामभोगेषु

प्रसद्

Katha. 6. 13. तत्त्वभावः प्रसीदति
Nṛisut. 4. आत्मानं..अनुष्टुभा नत्वा प्रसाद्य
9. नमस्ते भगवन् प्रसीद
Yogaśi. 9. प्रसन्नं परमेष्ठिनम्
Râmap. 11. नैवं विना देवः प्रसीदति
13. देवता न प्रसीदति
85. पद्मासनस्थः प्रसन्नः
Râmot. 4. ततः प्रसन्नो भगवान्
Gîtâ. 2. 10. प्रहसन् इव भारत
11. 25. प्रसीद देवेश जगन्निवास 45.
31. नमो ऽस्तु ते देववर प्रसीद
44. प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्
11. 47. मया प्रसन्नेन..रूपं परं दर्शितम्

प्रसन्नचेतस्

Gîtâ. 2. 65. प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते

प्रसन्नवदन

Râmap. 26. प्रसन्नवदनो जेता

प्रसन्नात्मन्

Maitri. 6. 20. प्रसन्नात्मात्मनि स्थित्वा
Râmap. 48. धनुर्धरः प्रसन्नात्मा
Gîtâ. 18. 54. ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा

प्रसभम्

Gîtâ. 2. 60. हरन्ति प्रसभं मनः
11. 41. सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं

प्रसमीक्ष्

Śwet. 2. 14. आत्मतत्त्वं प्रसमीक्ष्य

प्रसव

Śwet. 2. 7. सवित्रा प्रसवेन जुषेत पूर्व्यम्
Gauḍa. 1. 7. विभूतिं प्रसवं त्वन्ये मन्यन्ते

प्रसवितृ

Nṛip. 2. 4. सविता प्रसविता

प्रसाद

Katha. 2. 20. धातुः प्रसादात् Śwet. 3. 20; Mahânâr. 8. 3.
Maitri. 6. 20. चित्तस्य हि प्रसादेन ह
Brahmav. 2. प्रसादान्तःसमुत्थस्य वह्नेः
Gopî. 5. तत्प्रसादात्सर्वदैव चतुर्वर्गफलप्रदम्
Skanda. 14. नृसिंह देवेश तव प्रसा
Gîtâ. 2. 64. प्रसादमधिगच्छति
65. प्रसादे सर्वदुःखानां

18. 37. आत्मबुद्धिप्रसादजम्
56. मत्प्रसादादवाप्नोति
58. मत्प्रसादात्तरिष्यसि
62. तत्प्रसादात्परां शान्तिम्
73. स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत
75. व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्

प्रसिच्

sh. 2. 7. त्रिः प्रसिच्योद्दपात्रम्

प्रसिध्

tri. 6. 10. भोक्तृत्वाच्चैतन्यं प्रसिद्धं तस्य

da. 2. 5. प्रसिद्धेनैव हेतुना
4. 17. न ते हेतुः प्रसिद्ध्यति
3. 8. न प्रसिध्येदकर्मणः

प्रसु

â.5. 12. 1. तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते

i. 2. 1. 3. अहरहर्हे सुतः प्रसुतो भवति

1. प्रसू (प्रसवे)

ish. 1 2 पञ्चदशात्प्रसूतात्पित्र्यावतः

t. 5. 2. ऋषिं प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे

nânâr. 1. 4. यतः प्रसूता जगतः प्रसूती

tri. 2. 6. एतयोरन्तरा देवौष्ण्यं प्रासुवत्

i. 3. 10. अनेन प्रसविष्यध्वम्

2. प्रसू (प्रेरणे)

t. 1. 8. 1. ओमिति ब्रह्मा प्रसौति

et. 2. 3. सविता प्रसुवाति तान्

प्रसूति

itri. 2. 6. एतेषामन्तरा प्रसूतिरेवोदानस्य
6. 10. यांवैन प्रसूतिः

hânâr. 1. 4. यतः प्रसूता जगतः प्रसूती

Gauda. 1. 8. कालात्प्रसूतिं भूतानाम्

प्रसृ

Swet. 4. 18. प्रज्ञा च तस्मात्प्रसृता पुराणी

Mund. 2. 2. 11. अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतम्

Gîtâ. 15. 2. अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखाः
4. यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी

प्रसृज्

Katha. 1. 10. स्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत् प्रतीतः
11. यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीतः . . मत्प्रसृष्टः

प्रस्कन्द्

Praśna. 1. 13 प्राणं वा एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते

प्रस्तब्ध

Brih. 6. 3. 4. प्रस्तब्धमसि

प्रस्ताव

Chhâ. 1. 10. 9. या देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां चेदविद्वान् प्रस्तोष्यसि 1. 11. 4.
2. 2. 1. अग्निः प्रस्तावः
2. आदित्यः प्रस्तावः
2. 3. 1. मेघो जायते स प्रस्तावः 2. 15. 1.
2. 4. 1. यद्वर्षति स प्रस्तावः
2. 5. 1. ग्रीष्मः प्रस्तावः 2. 16. 1.
2. 6. 1. अजयः प्रस्तावः 2. 18. 1.
2. 7. 1. वाक् प्रस्तावः 2. 11. 1.
2. 8. 1. यत्प्रेति स प्रस्तावः
2. 9. 3. यत्प्रथमोदिते स प्रस्तावः
2. 10. 1. प्रस्ताव इति त्र्यक्षरम्
2. 12. 1. धूमो जायते स प्रस्तावः
2. 13. 1. उपमन्त्रयते स प्रस्तावः
2. 14. 1. उदितः प्रस्तावः

Chhâ. 2. 17. 1. अन्तरिक्षं प्रस्तावः
2. 19. 1. त्वक् प्रस्तावः
2. 20. 1. वायुः प्रस्तावः
2. 21. 1. अथ इमे लोकाः स प्रस्तावः

प्रस्तावभाजिन्

Chhâ. 2. 9. 3. प्रस्तावभाजिनो ह्येतस्य साम्नः

प्रस्तु

Chhâ. 1. 10. 9. तां चेदविद्वान् प्रस्तोष्यसि 1. 11. 4.
1. 11. 5. तां चेदविद्वान् प्रास्तोष्यः
Brih. 1. 3. 28. प्रस्तोता साम प्रस्तौति स यत्र प्रस्तुयात्
Maitri. 6. 5. ओमित्युक्तेनैताः प्रस्तुताः
Nrip. 2. 4. प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण

प्रस्तुतिकाम

Chhâ. 2. 9. 3. तस्मात्ते प्रस्तुतिकामाः

प्रस्तोतृ

Chhâ. 1. 10. 8. स ह प्रस्तोतारमुवाच
9. प्रस्तोतर्या देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां चेदविद्वान् प्रस्तोष्यसि 1. 11. 4.
1. 11. 4. अथ हैनं प्रस्तोतोपससाद
Brih. 1. 3. 28. प्रस्तोता साम प्रस्तौति
Prânâg. 3. शारीरयज्ञस्य..कः प्रस्तोता
4. व्यानः प्रस्तोता

प्रस्थ

Garbha. 5. पित्तप्रस्थं.. मेदप्रस्थौ द्वौ

प्रस्था

Praśna. 2. 4. तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्व एव प्रातिष्ठन्ते
— तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रातिष्ठन्ते

प्रस्यन्दिन्

Brih. 3. 9. 28. त्वच एवास्य रुधिरं प्रस्यन्दि

प्रस्वप्

Brih. 4. 3. 9. स यत्र प्रस्वपिति
— स्वेन ज्योतिषा प्रस्वपि

प्रहरण

Gîtâ. 1. 9. नानाशस्त्रप्रहरणाः

प्रहा

Gîtâ. 2. 39. कर्मबन्धं प्रहास्यसि
55. प्रजहाति यदा कामान्
3. 41. पाप्मानं प्रजहि ह्येनम्

प्रहाणि

Swet. 1. 11. जन्ममृत्युप्रहाणिः

प्रहि

Kaush. 1. 1. स ह पुत्रं श्वेतकेतुं प्रजि
2. 3. दूतं वा प्रहिणुयात्
Swet. 6. 18. यो वै वेदांश्च प्रहिणोति

प्रहु

Brih. 1. 5. 2. हुतं च प्रहुतं च
— देवेभ्यो जुह्वति च प्र च हति

प्रहृ

Râmap. 17. स्थितानि च प्रहृतान्येवं

प्रहृष्

Gîtâ. 5. 20. न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य
11. 36. जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च

प्रह्लाद

Gîtâ. 10. 30. प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम्

प्रह्लादीय

Kaush. 3. 1. दिवि प्रह्लादीयानतृणमहं

प्राकाश्यभूत

Maitri. 7. 8. प्राकाश्यभूता वै ते तस्का

प्राकृत

aitri. 3. 2. एषो ऽभिभूतः प्राकृतैर्गुणैः
6. 10. प्राकृतमन्नं भुंक्ता इति
— प्राकृतमन्नं . . महदाद्यं विशेषान्तम्
uda. 4. 86. शरः प्राकृत उच्यते
map. 15. प्राकृतश्च महाद्रुमः
84. न देयं प्राकृते जने
tâ. 18. 28. अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः

प्राक्तन

ukti. 2. 5. प्राक्तनस्तदसौ यत्नाज्जेतव्यः

प्राक्शिरस्

ih. 6. 3. 6. जघनेनाग्निं प्राक्शिराः संविशति

प्रागुक्त

aitri. 5. 2. इत्यस्य प्रागुक्ता एतास्तनवः
lmap. 82. प्रागुक्तमृषिसेवितम्

प्राग्गुण

lmap. 18. नमस्त्वैक्यं प्रवदेत्प्राग्गुणेन

प्राचीनयोगीपुत्र

ih. 6. 5. 2. कार्शकेयीपुत्रः प्राचीनयोगीपुत्रात्
— प्राचीनयोगीपुत्रः साञ्जीवीपुत्रात्

प्राचीनयोग्य

â. 5. 13. 1. प्राचीनयोग्य कं त्वमात्मानमुपास्से
. 1. 6. 2. इति प्राचीनयोग्योपास्व
. 2. 6. 2. गौतमः सैतवप्राचीनयोग्याभ्याम्
— सैतवप्राचीनयोग्यौ पाराशर्यात्

प्राचीनशाल

Chhâ. 5. 11. 1. प्राचीनशाल औपमन्यवः

प्राचीनातान

Kaush. 1. 5. ऋचश्च सामानि च प्राचीनातानानि (so MSS).

प्राच्य

Swet. 5. 5. प्राच्यांश्च सर्वान् परिणामयेद्यः
Praśna. 1. 6. तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते

प्राच्यादिदिश्

Maitri. 6. 17. न ह्यस्य प्राच्यादिदिशः कल्पन्ते

प्राजापत्य

Chhâ. 1. 2. 1. उभये प्राजापत्याः
2. 9. 5. तस्मात्ते सत्तमाः प्राजापत्यानाम्
Brih. 1. 2. 7. प्राजापत्यमालभन्ते
1. 3. 1. द्वया ह प्राजापत्याः
4. 4. 4. प्राजापत्यं वा ब्राह्मं वा
5. 2. 1. त्रयाः प्राजापत्याः . . ब्रह्मचर्यमूषुः
5. 15. 1. पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य Iśâ. 16.
Maitri. 6. 36. प्राजापत्यमासहस्रसंवत्सरान्तक्रतुना
Mahânâr. 22. 1. प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णेयः
23 1. मानसं वै प्राजापत्यं पवित्रम
Siras. 3. प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषम्
Garbha. 2. वायुतो हृदयं प्राजापत्यात् क्रमात्
Kathaśru. 3. प्रजापतये च प्राजापत्यं चरुम्
Nâr. 4. विन्दते प्राजापत्यम्
Aśrama. 1. गायत्रो ब्राह्मणः प्राजापत्यो बृहन्

Âsrama. 1. सदा परदारवर्जी प्राजापत्यः
— अथवा . . अष्टाचत्वारिंशद्वर्षवासी च प्राजापत्यः
Jâbâla. 4. तद्वैके प्राजापत्यामेवेष्टिं कुर्वन्ति
Gopî. 4. ततः प्राजापत्यं रायस्पोषं गौष्पत्यं च

प्राज्ञ

Brih. 4. 3. 21. एवमेवायं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना सम्परिष्वक्तः
35. शारीर आत्मा प्राज्ञेनात्मनान्वारूढः
Katha. 3. 13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञः
Maitri. 7. 6. यः प्राज्ञो विधरणः
Mâṇḍû. 5. आनन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञः Nrip. 4. 1 (3 MSS. read अज्ञानभुक् *q. v.*); Râmot. 3.
11. प्राज्ञो मकारः
Gauḍa. 1. 1. घनप्रज्ञस्तथा प्राज्ञः
3. आनन्दभुक्तथा प्राज्ञः
4. आनन्दस्तु तथा प्राज्ञम्
11. प्राज्ञः कारणबद्धस्तु
12. न सत्यं नापि चानृतं प्राज्ञः किञ्चन संवेत्ति
13. उभयोः प्राज्ञतुर्ययोः
— बीजनिद्रायुतः प्राज्ञः
14. प्राज्ञस्त्वस्वप्ननिद्रया
21. मकारभावे प्राज्ञस्य
23. मकारश्च पुनः प्राज्ञं (नयते)
Nrisut. 1. आनन्दभुक् चेतोमुखश्चतुरात्मा प्राज्ञः (Nârâyaṇa reads अज्ञानभुक्)
2. सुषुप्तस्थानश्चतुरात्मा प्राज्ञः
9. तथाहि प्राज्ञैः सैषाविद्या जगत्सर्वं (3 MSS. read प्राज्ञे)
Yogaśi. 3. ध्यायेत सततं प्राज्ञः
Gîtâ. 17. 14. देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम्

प्राज्ञात्मक

Râmot. 3. प्राज्ञात्मकस्तु भरतः (so MSS. प्र°)

प्राञ्च्

Chhâ. 2. 4. 1. याः प्राच्यः स्यन्दन्ते उद्गीथः
2. 9. 6. प्रागपराह्णात्स प्रतिहारः
7. प्रागस्तमयात्स उपद्रवः
3. 1. 2. तस्य ये प्राञ्चो रश्मय एवास्य प्राच्यो मधुना
3. 13. 1. प्राङ् सुषिः स प्राणः
3. 15. 2. तस्य प्राची दिग्जुहूर्नाम
4. 5. 2. प्राची दिक् कला
4. 6. 1. पश्चादग्नेः प्राङुपोपविवेश 4. 7. 1; 4. 8. 1.
5. 3. 7. इयं न प्राक्त्वत्तः पुरा ब्राह्मणान् गच्छति
6. 10. 1. पुरस्तात्प्राच्यः स्यन्दन्ते
6. 14. 1. प्राङ् वा उदङ् वाधराङ् प्रध्मायीत
Brih. 1. 2. 3. तस्य प्राची दिक् शिरः
3. 8. 9. प्राच्यो ऽन्या नद्यः स्यन्दन्ते
3. 9. 20. किंदेवतो ऽस्यां प्राच्यां दिश्यसि
4. 2. 4. तस्य प्राची दिक् प्राञ्चः प्राणाः
6. 4. 2. स एतं प्राञ्चं ग्रावाणमात्मन एव समुदपारयत्
Katha. 6. 4. प्राक् शरीरस्य विस्रसः
Maitri. 6. 15. यः प्रागादित्यात् सो ऽकालः
17. प्रागनन्तो दक्षिणतो ऽनन्तः
Praśna. 1. 6. आदित्य उदयन्यत्प्राचीं दिशं प्रविशति
Gauḍa. 3. 1. प्रागुत्पत्तेरजं सर्वम्
14. प्रागुत्पत्तेः प्रकीर्तितम्

1. 1. प्राञ्चः प्रत्यञ्चो ऽहम्
4. उदञ्चः प्राञ्चो ऽभिव्रज-
न्त्येके
...asru. 1. प्राचीमुदीचीं वा दिशम्
...eya. 4. उपनयनादूर्ध्वं..प्राग्वा
5. 23. प्राक् शरीरविमोक्षणात्

प्राञ्जलि

11. 21. केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृ-
णन्ति

प्राण्

...sh. 2. 5. न तावत् प्राणितुं शक्नोति
— यावद्वै पुरुषः प्राणिति
3. 2. प्राणं प्राणन्तं सर्वे प्राणा अ-
नुप्राणन्ति
...a. 8. यत्प्राणेन न प्राणिति
...a. 1. 3. 3. यद्वै प्राणिति स प्राणः
5. 1. 8. प्राणन्तः प्राणेन 9, 10, 11; Brih. 6. 1. 8—12.
...h. 1. 4. 7. प्राणन्नेव प्राणो नाम भवति
1. 5. 1. यच्च प्राणिति यच्च न 2.
23. प्राण्याच्चैवापान्याच्च
3. 4. 1. यः प्राणेन प्राणिति स त
आत्मा सर्वान्तरः
...3. 2. 7. 1. को ह्येवान्यात्कः प्राण्यात्
...d. 2. 2. 1. एजत्प्राणन्निमिषच्च यत्

प्राण

1. 4. नासिकाभ्यां प्राणः प्राणा-
द्वायुः
2. 4. वायुः प्राणो भूत्वा नासिके
प्राविशत्
3. 4. यत्प्राणेनाजिघृक्षत्तन्नाशक्नो-
त्प्राणेन ग्रहीतुं स यद्धैन-
त्प्राणेनाग्रहैष्यत्
11. यदि प्राणेनाभिप्राणितं..
को ऽहम्
1. 2. तेषां प्राणैः पूर्वपक्ष आप्या-
यते

Kaush. 1. 5. स आगच्छत्यमितौजसं प-
र्यङ्कं स प्राणः
6. यदन्यद्देवेभ्यश्च प्राणेभ्यश्च
तत् सदथ यद्देवाश्च प्राणाश्च
तत्त्यम्
7. प्राणेनेति ब्रूयात्
2. 1. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह कौ-
षीतकिः
— एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो म-
नो दूतम्
— एतस्मै प्राणाय ब्रह्मणे..
देवताः..बलिं हरन्ति 2.
2. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह पैङ्ग्यः
— एतस्य प्राणस्य..वाक् पर-
स्ताच्चक्षुरारुन्धते
— मनः परस्तात्प्राण आरुन्धते
3. प्राणो नाम देवतावरोधिनी
4. प्राणं ते मयि जुहोमि
5. प्राणं तदा वाचि जुहोति
— वाचं तदा प्राणे जुहोति
8. मास्माकं प्राणेन प्रजया प-
शुभिराप्याययिष्ठाः
— तस्य प्राणेन प्रजया पशु-
भिराप्यायस्व
9. मास्माकं प्राणेन प्रजया प-
शुभिरपक्षेष्ठाः
— तस्य प्राणेन..अपक्षीयस्व
12. आदित्यमेव तेजो गच्छति
वायुं प्राणः (similarly, 3 times more).
13. तस्य चक्षुरेव तेजो गच्छ-
ति प्राणं प्राणः (similarly, twice more).
— तस्य प्राणमेव तेजो गच्छ-
ति प्राणं प्राणस्ता वा एताः
सर्वा देवताः प्राणमेव प्र-
विश्य प्राणे मृत्वा न मृ-
च्छन्ते

Kaush. 2. 14. अथैनत्प्राणः प्रविवेश
— प्राणे निःश्रेयसं विदित्वा प्राणमेव प्रज्ञात्मानमभिसंभूय (bis).
15. प्राणं मे त्वयि दधानीति पिता प्राणं ते मयि दध इति पुत्रः
— प्राणान्मे त्वयि दधानीति
3. 2. स होवाच प्राणो ऽस्मि
— आयुः प्राणः प्राणो वा आयुर्यावद्यस्मिञ्छरीरे प्राणो वसति तावदायुः
— प्राणेन..अमृतत्वमाप्नोति
— एकभूयं वै प्राणा गच्छन्ति
— एकभूयं वै प्राणा भूत्वा
— वाचं वदन्तीं सर्वे प्राणा अनुवदन्ति (similarly, 4 times more).
— अस्ति त्वेव प्राणानां निःश्रेयसमिति
3. अथ खलु प्राण एव प्रज्ञात्मा (bis).
— सैषा प्राणे सर्वाप्तिर्यो वै प्राणः सा प्रज्ञा या वा प्रज्ञा स प्राणः (bis).
— अथास्मिन् प्राण एवैकधा भवति (bis) ; 4. 20.
— आत्मनः प्राणा यथायतनं विप्रतिष्ठन्ते प्राणेभ्यो देवाः 4. 20.
5. प्राण एवास्या एकमङ्गमुदूळ्हम्
6. प्रज्ञया प्राणं समारुह्य प्राणेन सर्वान् गन्धानाप्नोति
7. नहि प्रज्ञापेतः प्राणो गन्धं कंचन प्रज्ञापयेत्
8. प्रज्ञामात्राः प्राणे ऽर्पिताः स एष प्राणः प्रज्ञात्मा
4. 20. स एष प्राण एव प्रज्ञात्मा

Kena. 1. केन प्राणः प्रथमः प्रैति यु
2. स उ प्राणस्य प्राणः
8. यत्प्राणेन न प्राणिति प्राणः प्रणीयते

Chhâ 1. 1. 5. वागेवर्क् प्राणः साम
— एतन्मिथुनं यद्वाक् च प्रा
1. 2. 2. ते ह नासिक्यं प्राणमु थमुपासांचक्रिरे
7. य एवायं मुख्यः प्राणः 1. 5. 3.
9. तेनेतरान्प्राणानवति
1. 3. 3. यद्वै प्राणिति स प्राणः
— प्राणापानयोः सन्धिः व्यानः
6. प्राण एवोत्प्राणेन ह्युत्तिः
1. 5. 4. प्राणांस्त्वं भूमानमभिगा तात्
1. 7. 1. प्राणः साम...प्राणो ऽम
1. 8. 4. स्वरस्य का गतिरिति प्र इति होवाच प्राणस्य गतिः
1. 11. 5. प्राण इति होवाच सर्वा ह वा इमानि भूतानि णमेवाभिविशन्ति प्राण भ्युज्जिहते
1. 13. 2. प्राणः स्वरः
2. 7. 1. प्राणेषु पंचविधं परोवरी सामोपासीत
2. प्राणेषु पंचविधं परोवरी सामोपास्ते
2. 11. 1. प्राणो निधनमेतद्गायत्रं णेषु प्रोतम्
3. 12. 3. अस्मिन्हीमे प्राणाः प्रति ताः 3. 12. 4.
3. 13. 1. प्राङ् सुषिः स प्राणः
3. 15. 3. प्राणं प्रपद्ये ऽमुना ऽमुना ऽमु
4. यदवोचं प्राणं प्रपद्य प्राणो वा इदं सर्वं भू

3. 16. 1. प्राणा वाव वसवः
2. माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय
3. प्राणा वाव रुद्राः
4. माहं प्राणानां रुद्राणां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय
5. प्राणा वावादित्याः
6. माहं प्राणानामादित्यानां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय

3. 18. 2. प्राणः पादः
4. प्राण एव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः

4. 3. 3. प्राणो वाव संवर्गः
— प्राणमेव वागप्येति प्राणं चक्षुः प्राणं श्रोत्रं प्राणं मनः
— प्राणो ह्येवैतान् सर्वान् संवृङ्क्ते
4. तौ वा एतौ द्वौ संवर्गौ वायुरेव देवेषु प्राणः प्राणेषु

4. 8. 3. प्राणः कला चक्षुः कला

4. 10. 5. प्राणो ब्रह्म
— विजानाम्यहं यत्प्राणो ब्रह्म
— प्राणं च हास्मै तदाकाशं चोचुः

4. 13. 1. प्राण आकाशो द्यौर्विद्युत्

5. 1. 1. प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च Brih. 6. 1. 1 (वै for वाव)
6. प्राणा अहंश्रेयसि व्यूदिरे
7. प्राणाः प्रजापतिं पितरमेत्योचुः
8. प्राणन्तः प्राणेन 9, 10, 11; Brih. 6. 1. 8–12.
12. प्राण उच्चिक्रमिष्यन्..इतरान् प्राणान् समखिदत्
15. प्राणा इत्येवाचक्षते प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति

5. 7. 1. प्राणो धूमः Brih. 6. 2. 12.

Chhâ. 5. 14. 2. प्राणस्त्वेष आत्मनः
— प्राणस्त उदक्रमिष्यद्यन्मां नागमिष्यः

5. 18. 2. प्राणः पृथग्वर्त्मात्मा

5. 19. 1. तां जुहुयात्प्राणाय स्वाहेति प्राणस्तृप्यति
2. प्राणे तृप्यति चक्षुस्तृप्यति

6. 5. 2. यो ऽणिष्ठः स प्राणः
4. आपोमयः प्राणः 6. 6. 5; 6. 7. 6.

6. 6. 3. स प्राणो भवति

6. 7. 1. आपोमयः प्राणो न पिबतो विच्छेत्स्यते

6. 8. 2. प्राणमेवोपश्रयते
6. मनः प्राणे प्राणस्तेजसि 6. 15. 1, 2;

7. 4. 2. अन्नस्य संक्लृप्त्यै प्राणाः सङ्कल्पन्ते प्राणानां संक्लृप्त्यै मन्त्राः सङ्कल्पन्ते

7. 10. 1. व्याधीयन्ते प्राणाः
— आनन्दिनः प्राणाः

7. 15. 1. प्राणो वा आशाया भूयान्
— प्राणे सर्वं समर्पितं प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणाय ददाति प्राणो ह पिता प्राणो माता &c.
4. प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति

7. 26. 1. आत्मतः प्राणः

8. 12. 3. शरीरे प्राणो युक्तः

Brih. 1. 1. 1. वातः प्राणः

1. 2. 3. स एष प्राणस्त्रेधा विहितः
6. प्राणा वै यशो वीर्यं तत्प्राणेषूत्क्रान्तेषु

1. 3. 3. प्राणमूचुस्त्वं न उद्गायेति
— प्राण उदगायद्यः प्राणे भोगस्तं देवेभ्य आगायत्
7. आसन्यं प्राणमूचुः

Brih. 1. 3. 7. तेभ्य एष प्राण उदगायत्
13. अथ प्राणमत्यवहत्
19. प्राणो वा अङ्गानां रसः
— यस्मात्कस्माच्चाङ्गात्प्राण उत्क्रामति
23. प्राणो वा उत्प्राणेन हीदं सर्वमुत्तब्धम्
24. स प्राणेन चोदगायत्
27. वाचि..प्राणः प्रतिष्ठितः
1. 4. 7. प्राणन्नेव प्राणो नाम भवति
17. प्राणः प्रजा 1. 5. 7.
1. 5. 3. मनो वाचं प्राणं तान्यात्मनेऽकुरुत
— प्राणोऽपानः..एतत्सर्वं प्राण एव
4. प्राणोऽसौ लोकः
5. प्राणः सामवेदः
6. प्राणो मनुष्याः
10. यत्किञ्चाविज्ञातं प्राणस्य तद्रूपं प्राणो ह्यविज्ञातः प्राण एनं तद्भूत्वावति
12. ततः प्राणोऽजायत
13. प्राणस्यापः शरीरम्
— यावानेव प्राणस्तावत्य आपः
14. प्राणभृतः प्राणं न विच्छिन्द्यात्
17. प्राणैः सह पुत्रमाविशति
— एनमेते दैवाः प्राणा अमृता आविशन्ति
20. दैवः प्राण आविशति स वै दैवः प्राणः
21. यो ऽयं मध्यमः प्राणः
— तस्मादेत एतेनाख्यायन्ते प्राणाः
22. यथैषां प्राणानां मध्यमः प्राणः

Brih. 1. 5. 23. प्राणाद्वा एष उदेति प्र ऽस्तमेति
1. 6. 3. प्राणो वा अमृतम्
— ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः
2. 1. 10. नैनं पुरा कालात्प्राणो हाति
17. प्राणानां विज्ञानेन विज्ञा मादाय
— तद्गृहीत एव प्राणो भव
18. प्राणान् गृहीत्वा स्वे शरी रे..परिवर्त्तते
20. सर्वे प्राणाः..व्युच्चरन्ति
— प्राणा वै सत्यम् 2. 3. 6
2. 2. 1. अयं वाव शिशुर्यो ऽयं म ध्यमः प्राणः
— प्राणाः स्थूणा
3. प्राणा वै यशः..प्राणा दाह
— प्राणा वा ऋषयः प्राणान् दाह
2. 3. 4. इदमेव मूर्त्तं यदन्यत्प्राणा
5. अथामूर्त्तं प्राणः
2. 5. 4. अयमध्यात्मं प्राणः
15. आत्मनि..सर्वे प्राणाः
3. 1. 5. उद्गात्रर्त्विजा वायुना प्रा न प्राणो वै यज्ञस्योद्गा तद्यो ऽयं प्राणः स वा
10. प्राण एव पुरोऽनुवाक्या
3. 2. 2. प्राणो वै ग्रहः
11. उदस्मात्प्राणाः क्रामन्त्य नेति
13. वातं प्राणः (अप्येति)
3. 4. 1. यः प्राणेन प्राणिति स आत्मा सर्वान्तरः
3. 7. 16. यः प्राणे तिष्ठन् प्राणाद रो यं प्राणो न वेद य प्राणः शरीरं यः प्रा न्तरो यमयति

3. 9. 4. दशेमे पुरुषे प्राणाः
8. अन्नं चैव प्राणश्चेति
9. कतम एको देव इति प्राण इति
26. कस्मिन्नु त्वं चात्मा च.. प्राण इति कस्मिन्नु प्राणः
4. 1. 3. प्राणो वै ब्रह्मेति (bis).
— प्राण एवायतनम्
— का प्रियता..प्राण एव.. प्राणस्य वै..कामाय &c.
— प्राणो वै..परमं ब्रह्म नैनं प्राणो जहाति
4. 2. 4. तस्य प्राची दिक् प्राञ्चः प्राणाः (similarly, 6 times more).
4. 3. 7. प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः
12. प्राणेन रक्षन्नवरं कुलायम्
36. आद्रवति प्राणायैव
37. अन्तकाले सर्वे प्राणा अभिसमायन्ति
4. 4. 1. एनमेते प्राणा अभिसमायन्ति
2. तमुत्क्रामन्तं प्राणोऽनुत्क्रामति प्राणमनूत्क्रामन्तं सर्वे प्राणा अनूत्क्रामन्ति
6. न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति Nrisut. 5 (ter).
7. अयमशरीरोऽमृतः प्राणः
18. प्राणस्य प्राणं (ये विदुः)
22. विज्ञानमयः प्राणेषु
5. 5. 2. प्राणैरयममुष्मिन् (प्रतिष्ठितः).
5. 8. 1. तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः
5. 12. 1. पूयति वा अन्नमृते प्राणात्
— प्राणो ब्रह्मेत्येक आहुस्तन्न तथा शुष्यति वै प्राण ऋतेऽन्नात्

Brih. 5. 12. 1. प्राणो वै रं प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते
5. 13. 1. प्राणो वा उक्थं प्राणो हीदं सर्वमुत्थापयति
2. प्राणो वै यजुः प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते
3. प्राणो वै साम प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि
4. प्राणो वै क्षत्रं प्राणो हि वै क्षत्रं त्रायते हैनं प्राणः क्षणितोः
5. 14. 3. प्राणोऽपानो व्यान इत्यष्टावक्षराणि
4. प्राणो वै बलं तत्प्राणे प्रतिष्ठितम्
— प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे
— यस्मा अन्वाह तस्य प्राणांस्त्रायते
6. 1. 7. ते हेमे प्राणा अहंश्रेयसे विवदमाना ब्रह्म जग्मुः
13. अथ ह प्राण उत्क्रमिष्यन्
— एवमिमान् प्राणान् संववर्ह
6. 3. 2. प्राणाय स्वाहा वसिष्ठायै स्वाहा
6. 4. 24. मयि प्राणांस्त्वयि मनसा जुहोमि
Tait. 1. 5. 3. भूरिति वै प्राणः
— सर्वे प्राणा महीयन्ते
1. 7. 1. प्राणोऽपानो व्यान उदानः समानः
2. 2. 1. तस्य प्राण एव शिरः
2. 3. 1. प्राणं देवा अनुप्राणन्ति
— प्राणो हि भूतानामायुः (bis).
— ये प्राणं ब्रह्मोपासते
3. 1. 1. अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति

Tait. 3. 3. 1. प्राणं ब्रह्मेति व्यजानात्प्राणाद्धि..भूतानि जायन्ते प्राणेन जातानि जीवन्ति प्राणं प्रयन्ति

3. 7. 1. प्राणो वा अन्नं..प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितं शरीरे प्राणः

Katha. 4. 7. या प्राणेन संभवत्यदितिः

5. 3. ऊर्ध्वं प्राणमुन्नयति

5. न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन

6. 2. प्राण एजति निःसृतम्

Śwet. 2. 9. प्राणान् प्रपीड्येह संयुक्तचेष्टः क्षीणे प्राणे &c.

Maitri. 2. 6. प्राणो ऽपानः समान उदानो व्यानः

— य ऊर्ध्वमुत्क्रामत्येष वाव स प्राणः

4. 5. कालो यः प्राणः

6. 1. अयं यः प्राणो यश्चासा आदित्यः

— अन्तरात्मा प्राणः

2. अर्वाग्विचरत एतौ प्राणादित्यौ

5. प्राणो ऽग्निः सूर्या इति प्रतापवत्येषा

— प्राणो ऽपानो व्याना इति प्राणवत्येषा

8. एष हि खल्वात्मा..प्राणः 7. 7.

— प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः Praśna. 1. 8.

9. प्राणाय स्वाहा..इति पञ्चभिरभिजुहोति

— प्राणो ऽग्निर्विश्वो ऽसीति च

— प्राणो ऽग्निः परमात्मा Prâṇâg. 2.

11. अन्नमयो ह्ययं प्राणः

— प्राणांश्चोत्सृजति

Maitri. 6. 12. अन्नेनाभिषिक्ताः पचन्ति प्राणाः

13. प्राणो वा अन्नस्य रसो म प्राणस्य

— अन्नं पशूनां प्राणः

19. यदा वै..विद्वान्..प्राण

— प्राणो वै तुर्याख्ये धारये प्राणम्

20. वाङ्मनःप्राणनिरोधनात्

21. *vide* युज्

25. एवं प्राणमथोङ्कारं..यु क्ति

— एकत्वं प्राणमनसोः

26. इमान् प्राणान्..उद्धृत्य

— प्राणसंस्पर्शेनोज्ज्वलति

31. वाक् श्रोत्रं चक्षुर्मनः प्रा

32. तस्माद्वा..सर्वे प्राणाः. उच्चरन्ति

33. प्राणो वै वायुः प्राणो ऽ

— प्राणो ऽपानो व्यानः सम उदानः

35. यस्य हि सोमः प्राणा अप्ययङ्कुराः

37. तत् त्रेधाभिहितममा आ त्ये प्राणे 7. 11.

— तेनेमे प्राणाः प्राणेभ्यः प्र

Mund. 1. 1. 8. अन्नात्प्राणो मनः सत्यम्

2. 1. 3. एतस्माज्जायते प्राणः K valya. 15.

4. वायुः प्राणः

8. सप्त प्राणाः प्रभवन्ति.. चरन्ति प्राणाः Mahâ 8. 4.

2. 2. 2. स प्राणस्तदु वाङ्मनः

5. मनः सह प्राणैश्च सर्वैः

✓3. 1. 4. प्राणो ह्येष यः सर्वभूतै र्भाति

ṇḍ.3. 1. 9. यस्मिन् प्राणः पञ्चधा सं-
विवेश
— प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजा-
नाम्
iânâr.12. 3. आकाशः प्राणो लोकपा-
लकः
14. 1. प्राणो वा आपः (most
MSS. have प्राणाः)
15. 8. प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि9.
— प्राणाय स्वाहा
16. 1. श्रद्धायां प्राणे निविश्यामृतं
हुतं प्राणमन्नेनाप्यायस्व
2. प्राणानां ग्रन्थिरसि
17. 6. यांस्ते सोम प्राणांस्ताञ्जुहो-
मि
23. 1. अन्नेन प्राणाः प्राणैर्बलम्
— अन्नात्प्राणा भवन्ति भूतानां
प्राणैर्मनः
24. 1. प्राणे त्वमसि सन्धाता
25. 1. प्राण उद्गाता
ṡna. 1. 4. मिथुनमुत्पादयते रयिं च
प्राणं च
5. आदित्यो ह वै प्राणः
6. प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु
सन्निधत्ते
— सर्वान् प्राणान् रश्मिषु स-
न्निधत्ते
7. विश्वरूपः प्राणोऽग्निरुदयते
10. एतद्वै प्राणानामायतनम्
12. कृष्णपक्ष एव रयिः शुक्लः
प्राणः
13. अहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः
— प्राणं वा एते प्रस्कन्दन्ति ये
दिवा रत्या संयुज्यन्ते
2. 3. तान् वरिष्ठः प्राण उवाच
4. ते प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति
6. प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्

Praśna. 2. 7. तुभ्यं प्राणः प्रजास्त्विमा
बलिं हरन्ति यः प्राणैः प्र-
तितिष्ठसि
9. इन्द्रस्त्वं प्राण तेजसा
10. प्राण ते प्रजा आनन्दरूपाः
11. व्रात्यस्त्वं प्राण एक ऋषिः
13. प्राणस्येदं वशे सर्वम्
3. 1. कुत एष प्राणो जायते
3. आत्मन एष प्राणो जायते
4. एवमेवैष प्राण इतरान् प्रा-
णान् पृथक् पृथगेव सन्नि-
धत्ते
5. चक्षुःश्रोत्रे मुखनासिकाभ्यां
प्राणः स्वयं प्रातिष्ठते
8. आदित्यो ह वै बाह्यः प्राण
उदयत्येष ह्येनं चाक्षुषं प्रा-
णमनुगृह्णानः
10. यच्चित्तस्तेनैष प्राणमायाति
— प्राणः .. यथासङ्कल्पितं
लोकं नयति
11. य एवंविद्वान् प्राणं वेद
12. अध्यात्मं चैव प्राणस्य वि-
ज्ञाय
4. 3. यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते प्रणय-
नादाहवनीयः प्राणः
8. प्राणश्च विधारयितव्यं च
11. प्राणा भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति
यत्र
6. 4. स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धा-
म्
Kaivalya. 8. स एव विष्णुः स प्राणः
Gauḍa. 1. 6. सर्वं जनयति प्राणः
2. 20. प्राण इति प्राणविदः
Nṛip. 1. 4. प्राणा वा इन्द्रियाणि पशवः
4. 3. यो वै नृसिंहः.. यश्च प्राण-
स्तस्मै वै नमो नमः (27)
Nṛisut. 2. प्राणस्य द्रष्टा.. प्राणस्य सा-
क्षी

Kshur. 5. प्राणान् सञ्चारयेद्योगी
— भूत्वा तत्र गतः प्राणः
9. ततः सञ्चारयेत्प्राणान्
Chûl. 12. कालः प्राणश्च भगवान्
Śiras. 3. हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः Brahma. 2.
4. प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति
— सर्वान् प्राणान् संभक्ष्य
6. तत्प्राणो अभिरक्षति शिरः
Śikhâ. 1. सर्वान् प्राणान्..उत्क्रामयति
2. सर्वान् प्राणान् प्रणामयति
Garbha. 3. मात्रा..प्राण आप्यायते
Mahâ. 1. प्राणश्चतुर्दशी आत्मा
Brahma. 1. प्राणो ह्येष आत्मा
— तथैवैष प्राणो यदा याति
— पुरुषः प्राणो हिंसा
2. स पुरुषः स प्राणः स जीवः
— हृदि प्राणश्च ज्योतिश्च
Prâṇâg. 1. अमृतं प्राणे जुहोमि
— प्राणाय प्रदानाय स्वाहा
4. प्राणो ब्राह्मणाच्छंसी
Nâda. 12. यदि प्राणैर्वियुज्यते 14.
Amṛita. 25. प्राणस्तेन हि गच्छति
32. त्रिंशत्पर्वाङ्गुलः प्राणो यत्र प्राणः प्रतिष्ठितः
— एष प्राण इति ख्यातः
34. प्राण आद्यो हृदि स्थाने
36. प्राणो वायुः प्रकीर्तितः
Kaṭhaśru. 1. प्राणापानव्यानोदानसमानान्
Haṁsa. 1. विशुद्धौ प्राणान्निरुध्य
Nâr. 1. नारायणात्प्राणो जायते
Jâbâla. 1. अत्र हि जन्तोः प्राणेषूत्क्रममाणेषु (प्राणैरुत्क्रममाणस्य is a variant); Râmot. 1.
Jâbâla. 4. अग्निर्ह वै प्राणः प्राणमेवैत करोति
— एष वा अग्नेर्योनिर्यः प्र
प्राणं गच्छ स्वाहा
Râmap. 80. प्राणो ऽग्नो विषया यु
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..यश्च प्र (11).
Mukti. 2. 51. प्राणो यावन्नाभ्युदितः
52. बहिरस्तंगते प्राणे
Gîtâ. 1. 33. प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि
4. 29. अपाने जुह्वति प्राणं ऽपानं तथापरे
30. प्राणान्प्राणेषु जुह्वति
8. 10. भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य म्यक्
12. मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणम
18. 33. मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः

प्राणकर्मन्

Maitri. 6. 10. एवं सर्वाणीन्द्रियकर्मा प्राणकर्माणि
Gîtâ. 4. 27. प्राणकर्माणि चापरे

प्राणदेवता

Brahma. 1. प्राणदेवतास्ताः सर्वा ना

प्राणनिग्रह

Amṛita. 7. दोषा दह्यन्ते प्राणनिग्र

प्राणपरिस्पन्द

Mukti. 2. 48. एकं प्राणपरिस्पन्दः

प्राणबन्धन

Chhâ. 6. 8. 2. प्राणबन्धनं हि मनः

प्राणभृत्

Bṛih. 1. 5. 14. सर्वमिदं प्राणभृदनुप्रा
— एतां रात्रिं प्राणभृतः न विच्छिन्द्यात्
3. 1. 7. यत्किञ्चेदं प्राणभृदिति

प्राणमय

ih. 1. 5. 3. वाङ्मयो मनोमयः प्राणमयः

4. 4. 5. विज्ञानमयो मनोमयः प्राणमयः

it. 2. 2. 1. अन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः

2. 3. 1. एतस्मात्प्राणमयादन्यो ऽन्तर आत्मा मनोमयः

2. 8. 1. एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति 3. 10. 5 (उपसंक्रम्य)

rvop. 1. अयमन्नमयः प्राणमयः.. कथम्

2. तदा प्राणमयः कोश इत्युच्यते

प्राणवन्त्

itri. 6. 5. प्राणो ऽपानो व्याना इति प्राणवत्येषा

13. प्राणवान्..भवति यो हैवं वेद

प्राणविद्

da. 2. 20. प्राण इति प्राणविदः

प्राणशरीर

á. 3. 14. 2. मनोमयः प्राणशरीरः Maitri. 2. 6.

प्राणशरीरनेतृ

d.2. 2. 7. मनोमयः प्राणशरीरनेता

प्राणसंशित

á.3. 17. 6. प्राणसंशितमसि

प्राणसञ्चारिन्

itri. 6. 21. ऊर्ध्वगा नाडी ..प्राणसञ्चारिणी

प्राणसंज्ञक

itri. 6. 19. अप्राणादिह यस्मात्सम्भूत प्राणसंज्ञको जीवः

प्राणसन्धारण

Kathaśru. 1. प्राणसन्धारणार्थं Jâbâla.6.

प्राणसमृद्ध

Maitri. 6. 11. प्राणसमृद्धो भूत्वा मन्ता भवति

प्राणस्पन्द,°न्दन

Mukti. 2. 26. वासनावशतः प्राणस्पन्दः

27. प्राणस्पन्दनवासने

45. प्राणस्पन्दनिरोधनम्

49. प्राणस्पन्देन चाल्यते

प्राणाख्य

Maitri. 1. 1. कः सो ऽभिध्येयो ऽयं यः प्राणाख्यः

प्राणाग्नि

Praśna. 4. 3. प्राणाग्नय एवैतस्मिन् पुरे जाग्रति

प्राणाग्निहोत्र

Mukti. 1. *vide* सरस्वतीरहस्य

प्राणादि

Maitri. 6. 26. प्राणादयो वै पुनरेव तस्माद्भ्युच्चरन्तीह 31.

Gauḍa. 2. 19. प्राणादिभिरनन्तैश्च भावैः

Amṛita. 35. अथ वर्णास्तु पञ्चानां प्राणादीनाम्

Śarvop. 2. प्राणादिचतुर्दशवायुभेदाः — मनआदिश्च प्राणादिश्च

प्राणाधिप

Śwet. 5. 7. प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः

प्राणापान

Bṛih. 6. 4. 12. प्राणापानौ त आददे

Tait. 3. 10. 2. योगक्षेम इति प्राणापानयोः

Muṇḍ.2. 1. 7. प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च

Nyâsa. 4. तदभ्यासेन प्राणापानौ संयम्य

Gîtâ. 4. 29. प्राणापानगती रुद्ध्वा
5. 27. प्राणापानौ समौ कृत्वा
15. 14. प्राणापानसमायुक्तः

प्राणायाम

Maitri. 6. 18. प्राणायामः प्रत्याहारः
Kshur. 24. प्राणायामसुतीक्ष्णेन
Amṛita. 6. प्राणायामो ऽथ धारणा
8. प्राणायामैर्दहेद्दोषान्
9. प्राणायामास्त्रयः प्रोक्ताः
10. प्राणायामः स उच्यते
Gîtâ. 4. 29. प्राणायामपरायणाः

प्राणाय्य

Chhâ. 3. 11. 5. प्राणाय्याय वान्तेवासिने

प्राणाराम

Tait. 1. 6. 2. सत्यात्म प्राणारामं मन आनन्दम्

प्राणिन्

Ait. 5. 3. यत्किंचेदं प्राणि
Chhâ. 2. 11. 2. स य एवमेतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतं वेद प्राणी भवति
Bṛih. 5. 14. 3. स यावदिदं प्राणि तावद्ध जयति
6. यावदिदं प्राणि यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्
Sarvop. 3. सर्वप्राणिबुद्धिषु
— सर्वप्राणिबुद्धिस्थः
Gîtâ. 15. 14. प्राणिनां देहमाश्रितः

प्रातःसवन

Chhâ.2. 24. 1. वसूनां प्रातःसवनम्
6. तस्मै वसवः प्रातःसवनं संप्रयच्छन्ति
3. 16. 1. यानि चतुर्विंशतिवर्षाणि तत्प्रातःसवनम्
Chhâ. 3. 16. 1. गायत्रं प्रातःसवनम्
2. इदं मे प्रातःसवनं मा॰ न्दिनं सवनमनुसन्तनु॰
Kâlâg. 2. प्रथमा रेखा सा .. प्रा॰ सवनम्

प्रातर्

Chhâ. 1. 10. 6. स ह प्रातः संजिहान उ॰
5. 11. 5.
1. 12. 3. इहैव मा प्रातरुपसमी॰
5. 3. 6. स ह प्रातः सभाग उद्दे॰
5. 11. 7. प्रातर्वः प्रतिवक्तास्मि
6. 13. 1. मा प्रातरुपसीदथाः
Bṛih. 1. 5. 14. ततः प्रातर्जायते
6. 3. 6. प्रातरादित्यमुपतिष्ठते
Mahânâr.22. 1. अग्निहोत्रं सायं प्रात॰ स्विष्टं सुहुतम्
25. 1. यत्सायं प्रातरत्ति तत्स॰ धो यत्सायंप्रातर्मध्यां॰ च तानि सवनानि
Nyâsa. 1. अमावास्यायां प्रातरे॰
Kathaśru. 3. यत् प्रातः सो ऽयं प्रात॰
Nâr. 5. प्रातरधीयानः
Âśrama. 3. उदुंबराः प्रातरुत्थाय
Gopi. 4. य एतद्रहस्यं सायं प्रात॰ येत्

प्रातरनुवाक

Chhâ. 2. 24. 3. पुरा प्रातरनुवाकस्यो॰ रणात्
4. 16. 2. उपाकृते प्रातरनुवाके

प्रातर्दन

Kaush. 2. 5. अथातः संयमनं प्रातर्द॰

प्रातिश्रुत्क

Bṛih. 2. 5. 6. अयमध्यात्मं श्रौत्रः॰ श्रुत्कः..पुरुषः
3. 9. 13. य एवायं श्रौत्रः प्रा॰ त्कः पुरुषः स एषः

प्रातृद

, 5. 12. 1. तद्ध स्माह प्रातृदः पितरम्
— स ह स्माह पाणिना मा प्रातृद

प्रादुर्भू

a. 15. तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव
â. 1. 12. 2. तस्मै श्वा श्वेतः प्रादुर्बभूव

प्रादेश

tri. 6. 38. शरीरप्रादेशाङ्गुष्ठमात्रम्

प्रादेशमात्र

â. 5. 18. 1. प्रादेशमात्रमभिविमानमात्मानम्

प्रादेशशरीरमात्र

ri. 6. 38. अङ्गुष्ठप्रादेशशरीरमात्रम्

प्रादेशिनी

âg. 1. प्रादेशिन्या समाने

प्राधान्यतस्

. 10. 19. प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ

प्राध्वंसन

. 2. 6. 3. अथर्वा दैवो मृत्योः प्राध्वंसनात् 4. 6. 3.
— मृत्युः प्राध्वंसनः प्रध्वंसनात् 4. 6. 3.

प्रान्त

. 7. त्रयाणामक्षरे प्रान्ते

प्राप्

. 1. 3. विजरां वा अयं नदीं प्रापत्
2. 14. तत्प्राप्य यदमृता देवाः
. 4. 5. 1. प्राप्ताः सोम्य सहस्रं स्मः
प्रापय न आचार्यकुलम्
4. 9. 1. प्राप ह्याचार्यकुलम्
3. आचार्याद्धैव विद्या विदिता साधिष्ठं प्रापयति

Chhâ. 5. 3. 6. तस्मै ह प्राप्तायार्हाञ्चकार
5. 11. 5. तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः पृथगर्हाणि कारयाञ्चकार
6. 4. 7. तिस्रो देवताः पुरुषं प्राप्य 6. 8. 6.
7. 6. 1. य इह मनुष्याणां महत्तां प्राप्नुवन्ति

Brih. 1. 4. 17. यावदेतेषामेकैकं न प्राप्नोति
4. 2. 4. अभयं वै जनक प्राप्तो ऽसि
4. 4. 6. प्राप्यान्तं कर्मणस्तस्य
5. 13. 4. प्र क्षत्रमत्रमाप्नोति
5. 14. 7. असावदो मा प्रापदिति
— अहमदः प्रापमिति वा
6. 2. 16. ते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति
— ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति
6. 3. 1. स यः कामयेत महत्प्राप्नुयाम्
6. 4. 28. परमां वत काष्ठां प्रापत्

Tait. 3. 10. 1. यया कया च विधया बह्वन्नं प्राप्नुयात्

Katha. 2. 10. न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत्
— अनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम्
3. 14. प्राप्य वरान्निबोधत
5. 6. यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति
6. 12. नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यः

Śwet. 2. 12. प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्

Maitri. 2. 6. यो ऽयं स्थविष्ठो धातुरन्नस्यापाने प्रापयति
4. 3. तपसा प्राप्यते सत्त्वं . . मनसः प्राप्यते ह्यात्मा

Muṇḍ 3. 2. 5. ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीराः

Mahânâr. 17. 6. ते सोमं प्राप्नुवन्ति 7, 8.

Praśna. 6. 5. समुद्रं प्राप्यास्तं गच्छन्ति
— पुरुषं प्राप्यास्तं गच्छन्ति

Gauda. 2. 3. वैतथ्यं तेन वै प्राप्तम्
4. 85. प्राप्य सर्वज्ञतां कृत्स्नाम्
Kshur. 1. यां प्राप्य न पुनर्जन्म
Prânâg. 4. मोक्षं च प्राप्नुयात्
Yogat. 7. तेन सर्वमिदं प्राप्तम्
Nyâsa. 5. ये प्राप्य परमां गतिम्
Sarvop. 2. प्राप्तशरीरसंबन्धवियोगम्
Râmap. 83. प्राप्नुवन्ति क्षणात्सम्यक्
Râmot. 4. मुक्ता मां प्राप्नुवन्ति ते
Mukti. 1. 15. मत्सायुज्यपदवीं प्राप्नोति
20. मुक्तिं प्राप्नोति मानवः
1. देहत्रयभंगं प्राप्य
Gîtâ. 2. 37. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्
57. तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्
72. नैनां प्राप्य विमुह्यति
5. 5. यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानम्
20. न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्
6. 41. प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकान्
8. 21. यं प्राप्य न निवर्त्तन्ते
25. योगी प्राप्य निवर्त्तते
9. 33. इमं प्राप्य भजस्व माम्
12. 4. ते प्राप्नुवन्ति मामेव
16. 13. इमं प्राप्स्ये मनोरथम्
18. 50. सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म.. आप्नोति
62. स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्
71. लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्

प्राप्ति

Nrisut. 5. अतो नान्यत्र प्राप्तिः
Gopî. 2. ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः
Gîtâ. 2. 13. तथा देहान्तरप्राप्तिः

प्रायण

Mahânâr. 22. 1. अग्निहोत्रं..यज्ञक्रतूनां प्रायणम्

Âsrama. 1. आप्रायणाद्गुरोरपरित्यागी
(2 MSS. have आप्रयाणात्)

प्रायणान्त

Prasna. 5. 1. स यः..प्रायणान्तमोङ्कारमभिध्यायीत

प्रायश्चित्तीय

Prânâg. 2. प्रायश्चित्तीयस्त्वधस्तात्

प्रारभ्

Mukti. 1. 43. प्रारब्धक्षयपर्यन्तम्
— प्रारब्धे तु क्षयं गते
1. प्रारब्धक्षयात् 2.
Gîtâ. 18. 15. यत्कर्म प्रारभते नरः

प्रार्थ्

Katha. 1. 25. सर्वान् कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व
4. 2. ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते
Âsrama. 2. आत्मानं प्रार्थयन्ते (times); 3 (4 times) (ter).
Vâsu. 2. धारणान्मुक्तिदो भवेति प्रार्थयन्
Gîtâ. 9. 20. स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते

प्रावरण

Brih. 4. 2. 3. अथैनयोरेतत्प्रावरणम्

प्रावार

Brih. 6. 2. 7. प्रावाराणां परिधानस्य

1. प्राश्

Brih. 6. 4. 19. उद्धृत्य प्राश्नाति प्राश्यैस्याः प्रयच्छति
25. अनन्तर्हितेन जातरूपेण प्राशयति
Kathasru. 1. औषधवत् प्राश्नीयात्
3. स यः..सायं प्राश्नीयात्

..la. 4. उद्धृत्य प्राश्नीयात् साज्यं हविरनामयम्
5. प्राश्याचम्यायं विधिः परिव्राजिनाम्

2. प्राश्

..i. 24. इमामस्य प्राशं जहि

प्राश्नीपुत्र

..h. 6. 5. 2. साञ्जीवीपुत्रः प्राश्नीपुत्रादासुरिवासिनः
— प्राश्नीपुत्र आसुरायणात्

प्रास्

... 2. 4. 12. सैन्धवखिल्य उदके प्रास्तः
..tri. 6. 37. अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यक्

प्रास्था

..śna. 2. 4. तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्व एव प्रातिष्ठन्ते
— तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रातिष्ठन्ते
3. 1. आत्मानं वा प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठते
5. मुखनासिकाभ्यां प्राणः स्वयं प्रातिष्ठते

प्रिय

. 1. 3. प्रिया च मानसी
4. तस्य प्रिया ज्ञातयः सुकृतमुपयन्ति
2. 4. यस्य प्रियो बुभूषेत्
— प्रियो हैव भवति
3. 1. इन्द्रस्य प्रियं धामोपजगाम
5. 12. 2. अत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्त्यन्नं पश्यति प्रियम् 5. 13. 2; 5. 14. 2; 5. 15. 2; 5. 16. 2; 5. 17. 2.
1. 4. 8. अन्यमात्मनः प्रियं ब्रुवाणं ब्रूयात् प्रियं रोत्स्यतीति
— आत्मानमेव प्रियमुपासीत

Bṛih. 1. 4. 8. आत्मानमेव प्रियमुपास्ते न हास्य प्रियं प्रमायुकम्
10. एषां तन्न प्रियं यन्मनुष्या विद्युः
2. 4. 4. प्रिया वतारे नः सती प्रियं भाषसे
5. न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति (similarly, nine times more); 4. 5. 6 (similarly, 11 times more).
4. 1. 3. प्रियमित्येनदुपासीत
4. 3. 21. यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तः
4. 5. 5. प्रिया वै खलु नो भवती सती प्रियमवृधत्

Tait. 1. 11. 1. आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य
2. 5. 1. तस्य प्रियमेव शिरः

Katha. 2. 3. स त्वं प्रियान्. . अत्यस्राक्षीः

Muṇḍ. 1. 2. 6. प्रियां वाचमभिवदन्त्यः

Mahânâr. 2. 7. प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्

Kṛish. 26. वृन्दा भक्तिः प्रिया बुद्धिः

Mukti. 2. 54. समाधिर्योगिनां प्रियः

Gîtâ. 1. 23. प्रियचिकीर्षवः
5. 20. न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य
7. 17. प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः
9. 29. न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः
11. 44. प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्
12. 14. यो मद्भक्तः स मे प्रियः 16. 15. स च मे प्रियः
17. भक्तिमान्यः स मे प्रियः
19. भक्तिमान्मे प्रियो नरः
20. भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः
17. 7. त्रिविधो भवति प्रियः
18. 65. प्रियोऽसि मे

प्रियकृत्तम

Gîtâ. 18. 69. कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः

प्रियङ्गु

Bṛih. 6. 3. 13. अणुप्रियङ्गवः

प्रियतम

Nṛisut. 2. अस्मात् सर्वस्मात् प्रियतम आनन्दघनं हि

प्रियतर

Gîtâ. 18. 69. अन्यः प्रियतरो भुवि

प्रियता

Bṛih. 4. 1. 3. का प्रियता..प्राण एव

प्रियरूप

Katha. 2. 3. प्रियरूपांश्च कामान्..अत्यस्राक्षीः

प्रियहित

Gîtâ. 17. 15. सत्यं प्रियहितं च यत्

प्रियाप्रिय

Chhâ. 8. 12. 1. आत्तो वै सशरीरः प्रियाप्रियाभ्यां न वै सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति
— अशरीरं वाव सन्तं न प्रियाप्रिये स्पृशतः

प्री

Katha. 1. 16. तमब्रवीत्प्रीयमाणः
Maitri. 6. 9. स प्रीतः प्रीणातु विश्वम्
Mahânâr. 6. 7. स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्व
16. 3. प्रभुः प्रीणाति विश्वभुक्
Praśna. 2. 4. ते प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति
Nṛip. 4. 3. कैर्मन्त्रैर्देवः स्तुतः प्रीतो भवति
— ततो देवः प्रीतो भवति
Râmot. 5. कैर्मन्त्रैः स्तुतः श्रीरामः प्रीतो भवति
Gîtâ. 10. 1. यत्ते ऽहं प्रीयमाणाय

प्रीतमनस्

Gîtâ. 11. 49. व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वम्

प्रीति

Râmap. 77. क्ष्वेलः प्रीतिश्च सामरा
Gîtâ. 1. 36. का प्रीतिः स्याज्जनार्दन
17. 8. *vide* विवर्धन

प्रीतिकर

Vâsu. 1. मम प्रीतिकरं..विष्णुन्दनम्

प्रीतिपूर्वक

Gîtâ. 10. 10. भजतां प्रीतिपूर्वकम्

प्रे

Ait. 4. 4. आत्मा कृतकृत्यो वयो प्रैति स इतः प्रयन्नेव पुनर्जायते
Kaush. 1. 2. ये वै के चास्माल्लोकात् यन्ति
2. 8. न ह्यस्मात् पूर्वाः प्रजाः
10. न ह्यस्याः पूर्वाः प्रजाः
15. पिता पुत्रं प्रेष्यन्नाह्वयति
— यद्यु वै प्रेयात्तथैवैनं समपयेयुः
4. 14. न पुरा कालात् प्रैति
Kena. 1. केन प्राणः प्रथमः प्रैति यु
2. प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति 13.
Chhâ. 2. 4. 2. न हाप्सु प्रैत्यप्सुवान् भ
3. 14. 1. तथेतः प्रेत्य भवति
4. एतमितः प्रेत्याभिसंभवितास्मि
3. 16. 7. यो ऽहमनेन न प्रेष्यामि
5. 3. 2. वेत्थ यदितो ऽधि प्रजाः यन्तीति

3. 5. 9. 2. तं प्रेतं दिष्टमितो ऽग्नय एव हरन्ति
6. 8. 6. पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि सम्पद्यते
8. 3. 1. यो यो ह्यस्येतः प्रैति
2. ये चास्येह जीवा ये च प्रेताः
8. 8. 5. प्रेतस्य शरीरं भिक्षया . . संस्कुर्वन्ति
1. 1. 4. 15. स्वं लोकमदृष्ट्वा प्रैति
1. 5. 17. यदा प्रैष्यन्मन्यते
— यदैवंविदस्माल्लोकात्प्रैति
2. 4. 12. न प्रेत्य संज्ञास्ति 13; 4. 5. 13.
3. 7. 2. पुरुषं प्रेतमाहुर्व्यस्रंसिषतास्याङ्गानीति
3. 8. 10. अक्षरं गार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः
— अक्षरं गार्गि विदित्वास्माल्लोकात्प्रैति स ब्राह्मणः
3. 9. 28. तस्मात्तदा तृण्णात्प्रैति रसः
4. 4. 11. तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति Iśâ. 3.
5. 10. 1. यदा वै पुरुषो ऽस्माल्लोकात् प्रैति
5. 11. 1. एतद्वै परमं तपो यं प्रेतमरण्यं हरन्ति
— एतद्वै परमं तपो यं प्रेतमग्नावभ्यादधति
6. 2. 2. वेत्थ यथेमाः प्रजाः प्रयत्यो विप्रतिपद्यन्ता३ इति
— बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिः
4. प्रेहि तु तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्यावः
6. 4. 4. अस्माल्लोकात्प्रयन्ति
12. अस्माल्लोकात्प्रैति
1. 4. 2. प्र मा यन्तु ब्रह्मचारिणः

Tait. 2. 6. 1. उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चन गच्छती३ आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चित्समश्नुता३उ
2. 8. 1. अस्माल्लोकात्प्रेत्यैतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामति 3. 10. 5 (उपसंक्रम्य)
3. 1. 1. यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
3. 2. 1. अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
3. 3. 1. प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
3. 4. 1. मनः प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
3. 5. 1. विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
3. 6. 1. आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
Katha. 1. 20. येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये
Nṛip. 1. 1. अनुष्टुभं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
— वाचैव प्रयन्ति वाचैवोद्यन्ति
3. 1. आकाशं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति
Nyâsa. 1. प्रेतस्य मन्त्रैः संस्कारोपतिष्ठते
Gitâ. 17. 4. प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये
28. न च तत्प्रेत्य नो इह
18. 12. भवत्यत्यागिनां प्रेत्य

प्रेक्ष्

Gauḍa. 2. 8. तानयं प्रेक्षते गत्वा

प्रेक्षक

Maitri. 2. 7. निस्पृहः प्रेक्षकवदवस्थितः

प्रेत्यसंभव

Bṛih. 3. 9. 28. वृक्षो ऽञ्जसा प्रेत्यसंभवः

प्रेयस्

Bṛih. 1. 4. 8. एतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयो वित्तात्प्रेयो ऽन्यस्मात्

Katha. 2. 1. अन्यच्छ्रेयो ऽन्यदुतैव प्रेयः
— हीयते ऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते
2. श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः
— श्रेयो हि धीरो ऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दः . . वृणीते

प्रेर्

Maitri. 7. 11. स प्रेरयति मारुतम्
Chûl. 4. तन्यते प्रेरिता पुनः
Siras. 6. मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रेरयत्पवमानो ऽधि शीर्षतः

प्रेरितृ

Śwet. 1. 6. पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा
12. भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा

प्रेष्

Kena. 1. केनेषितं पतति प्रेषितं मनः

प्रेष्ठ

Katha. 2. 9. प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठ
Mahânâr. 20. 1. वितुदस्य प्रेष्ठाः

प्रोक्ष्

Bṛih. 1. 2. 7. सर्वदेवत्यं प्रोक्षितं प्राजापत्यमालभन्ते

प्लव

Muṇḍ. 1. 2. 7. प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपाः

प्लवन

Piṇḍa. 8. भावानां प्लवनं तथा

प्लुत

Nṛip. 3. 1. ह्रस्वा वा दीर्घा वा प्लुता वेति
— यदि प्लुता भवति
Śikhâ. 1. स्थूलह्रस्वदीर्घप्लुतः

प्लुतप्रयोग

Śikhâ. 1. चतुर्थः शान्तात्मा प्लुतप्रयोगे

प्लुषि

Bṛih. 1. 3. 22. समः प्लुषिणा समो मशके

फट्

Nṛip. 2. 2. ओमस्त्राय फट्

फणिन्

Râmap. 71. फणिसंयुतम्

फल

Chhâ. 6. 12. 1. न्यग्रोधफलमत आहर
Bṛih. 6. 3. 1. सर्वौषधं फलानीति संभृ
6. 4. 1. पुष्पाणां फलानि फलं पुरुषः
Maitri. 7. 9. रतिमात्रं फलमस्याः
Kaivalya. 24. एवं विदित्वैनं कैवल्यं लमश्नुते
Gauḍa. 4. 14. हेतोरादिः फलं येषामादि तुः फलस्य च 15.
— हेतोः फलस्य चानादिः
16. संभवे हेतुफलयोः
17. फलादुत्पाद्यमानः सन्
— फलमुत्पादयिष्यति
18. यदि हेतोः फलात्सिद्धिः
23. फलं चापि स्वभावतः
76. हेत्वभावे फलं कुतः
Nṛip. 5. 3. मन्त्रराजस्य . . फलं नो हि
Śikhâ. 2. क्रतुशतस्यापि फलमवाप्नोति
Nyâsa. 2. विहितानोत्तरः फलैः MSS. have ॰त्तरफलैः
Haṁsa. 1. भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् Gopî. 5.
Kâlâg. 1. काः शक्तयः किं फलन्ति च

rama. 3. पुष्पफलमुत्सृजन्तः
— शीर्णपर्णफलभोजिनः

pî. 5. नाश्वमेधकृतः फलम्
— चतुर्वर्गफलप्रदम्
— काञ्चनाद्रिसमं फलम्

ıkti 2. 36. *vide* शालिन्

tâ. 2. 47. मा फलेषु कदाचन
51. फलं त्यक्त्वा मनीषिणः
5. 4. उभयोर्विन्दते फलम्
12. फले सक्तो निबध्यते
7. 23. अन्तवत्तु फलं तेषाम्
9. 26. पत्रं पुष्पं फलं तोयम्
14. 16. सात्त्विकं निर्मलं फलम्
— रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्
17. 12. अभिसन्धाय तु फलम्
21. फलमुद्दिश्य वा पुनः
25. तदित्यनभिसन्धाय फलम्
18. 6. संगं त्यक्त्वा फलानि च
9. संगं त्यक्त्वा फलं चैव
12. त्रिविधं कर्मणः फलम्

फलकर्मकर्तृ

vet. 5. 7. गुणान्वयो यः फलकर्मकर्त्ता

फलच्छिन्नपाश

itri. 6. 30. तत्फलच्छिन्नपाशो निराशः

फलद

map. 20. फलदश्चैव सर्वेषां साधकानाम्

ıkti. 2. 10. भवन्ति फलदा मताः

फलभोगिन्

rbha. 4. गतास्ते फलभोगिनः

फलविशुद्धाङ्गिन्

Nyâsa. 2. तस्मात् फलविशुद्धाङ्गी

फलसिद्धि

Gauḍa. 4. 18. फलसिद्धिश्च हेतुतः

फलहस्त

Kaush. 1. 4. शतं फलहस्ताः

फलहेतु

Gîtâ. 2. 49. कृपणाः फलहेतवः

फलाकांक्षिन्

Gîtâ. 18. 34. प्रसंगेन फलाकाङ्क्षी

फलिन्

Prâṇâg. 1. याः फलिनीर्या अफलाः

फेन

Śiras. 6. मथ्यमानं फेनो भवति फेनादण्डं भवति

फेनप

Aśrama. 3. वैखानसा उदुंबरा बालखिल्याः फेनपाश्च
— फेनपा उन्मत्तकाः शीर्णपर्णफलभोजिनः

बक

Krish. 15. गर्वो रक्षः खगो बकः

बडवा

Bṛih. 1. 4. 4. बडवेतराभवत्

बदर

Aśrama. 3. तदाहृतोदुंबरबदरनीवारश्यामाकैः

बधिर

Kaush. 3. 3. जीवति श्रोत्रापेतो बधिरान् हि पश्यामः

Chhâ. 5. 1. 10. यथा बधिरा अशृण्वन्तः Brih. 6. 1. 10.
Nrisut. 6. अन्धा बधिरा मुग्धाः

बन्ध्

Maitri. 4. 2. सदसत्फलमयैः पाशैः पङ्गुरिव बद्धम्
6. 30. अध्यवसायसङ्कल्पाभिमानलिङ्गो बद्धः (bis).
Mahânâr. 10. 1. त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति
Gauda. 2. 32. न बद्धो न च साधकः
Nrip. 5. 2. रक्षोघ्नं..कण्ठे बाहौ वा शिखायां वा बध्नीयात्सः
Kshur. 24. छित्त्वा तन्तुं न बध्यते (bis).
Śiras. 3. द्विधा त्रिधा बद्धस्त्वम्
Prânâg. 1. मा ते बध्नाम्योषधिम्
Nâda. 6. न बध्यते कर्मचारी
Amrita. 18. बध्वा योगासनं सम्यक्
Yogaśi. 2. आसनं पद्मकं बध्वा
Skanda. 6. तुषेण बद्धो व्रीहिः स्यात्
Mukti. 2. 16. मनो बद्धं विदुर्बुधाः
Gîtâ. 4. 14. कर्मभिर्न स बध्यते
14. 6. सुखसंगेन बध्नाति
16. 12. आशापाशशतैर्बद्धाः

बन्ध

Śwet. 6. 16. संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः
Maitri. 6. 30. अध्यवसायात्मबन्धमुपागतः
34. मन एव..कारणं बन्धमोक्षयोः Brahmab. 2.
— बन्धाय विषयासङ्गि
Brahmab. 2. बन्धाय विषयासक्तम्
10. न बन्धो न च शासनम्
Sarvop. 1. कथं बन्धः कथं मोक्षः
— सो ऽभिमान आत्मनो बन्धः
Mukti. 2. क्लेशरूपत्वाद्बन्धो भवति
2. 68. बन्धो हि वासनाबन्धः
Gîtâ. 5. 3. सुखं बन्धात्प्रमुच्यते
18. 30. बन्धं मोक्षं च या वेत्ति

बन्धन

Chhâ. 6. 8. 2. बन्धनमेवोपश्रयते
Brih. 4. 3. 36. यथाम्रं..बन्धनात्प्रमुच्य
Maitri. 6. 34. को न मुच्येत बन्धनात्
Nâr. 5. जन्मसंसारबन्धनात् Atmapra. 1.

बन्धनस्थ

Maitri. 4. 2. बन्धनस्थस्येवास्वातन्त्र्यम्

बन्धमोचक

Mukti. 1. 46. पठतां बन्धमोचकम्

बन्धु

Brih. 1. 1. 2. समुद्र एवास्य बन्धुः
4. 1. 2. वाचा वै सम्राड् बन्धुः प्रज्ञायते
Mahânâr. 2. 5. स नो बन्धुर्जनिता
Nrip. 1. 1. सतो बन्धुमसति निरविन्दन्
Kathasru. 1. बन्धूननुमोदयित्वा
Aruneya. 1. पुत्रान् भ्रातॄन् बन्ध्वादीन्
Parama. 1. स्वपुत्रमित्रकलत्रबन्ध्वादी
Gîtâ. 1. 27. सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
6. 5. आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः
6. बन्धुरात्मात्मनस्तस्य
9. सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु

बन्धुवर्ग

Maitri. 1. 4. मिषतो बन्धुवर्गस्य

बभस

Chhâ. 4. 3. 7. हिरण्यदंष्ट्रो बभसः

बभ्रु

Nîla. 9. उत बभ्रुर्विलोहितः
22. बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च

a. 23. विरूपाक्षेण बभ्रुणा (so 5 MSS.)

बभ्रुकर्ण

a. 22. बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च

बर्कु

h. 4. 1. 4. बर्कुर्वार्ष्णः

बर्हिस्

hâ. 5. 18. 2. लोमानि बर्हिः Brih. 6. 4. 3; Mahânâr. 25. 1.

बल्

ikti. 2. 40. बलन्ति हृदि वासनाः

1. बल *adj.*

ish. 13. बलं ज्ञानं सुराणां वै

2. बल

hâ. 2. 22. 5. इन्द्रे बलं ददानीति
7. 8. 1. बलं वाव विज्ञानाद्भूयः
— बलेन वै पृथिवी तिष्ठति बलेनान्तरिक्षं बलेन द्यौः &c
— बलेन लोकस्तिष्ठति बलमुपास्स्वेति
2. स यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतम्
— अस्ति भगवो बलाद्भूय इति बलाद्वाव भूयो ऽस्तीति
7. 9. 1. अन्नं वाव बलाद्भूयो ऽस्ति
7. 26. 1. आत्मतो बलम्
ı. 5. 14. 4. तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितं प्राणो वै बलम्
— तस्मादाहुर्बलं सत्यादोगीयः
t. 1. 2. 1. वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्
3. 10. 2. बलमिति विद्युति
iânâr. 12. 3. आदित्यो वै तेज ओजो बलम्
15. 1. ओजो ऽसि सहो ऽसि बलमसि
23. 1. प्राणैर्बलं बलेन तपः

Nrisut. 3. तत्तेज आत्मचैतन्यरूपं बलमवष्टभ्य
Brahma. 2. बलमस्तु तेजः
Gopî. 5. बलारोग्यविवर्द्धनम्
Gîtâ. 1. 10. बलं भीष्माभिरक्षितम्
— बलं भीमाभिरक्षितम्
3. 36. बलादिव नियोजितः
7. 11. बलं बलवतां चाहम्
16. 18. अहंकारं बलं दर्पम् 18. 53.
17. 5. कामरागबलान्विताः
8. *vide* विवर्द्धन

बलदा

Nrip. 2. 4. य आत्मदा बलदाः

बलप्रमथन

Mahânâr. 17. 2. बलप्रमथनाय नमः

बलवन्त्

Chhâ. 2. 22. 1. श्लक्ष्णं बलवदिन्द्रस्य
5. सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्याः
7. 8. 1. शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते
Gîtâ. 6. 34. प्रमाथि बलवद्दृढम्
7. 11. बलं बलवतां चाहम्
16. 14. सिद्धो ऽहं बलवान् सुखी

बलविकरण

Mahânâr. 17. 2. बलविकरणाय नमः

बलहीन

Mund. 3. 2. 4. नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः

बलि

Kaush. 2. 1. सर्वा देवताः.. बलिं हरन्ति 2. 2.
— सर्वाणि भूतानि.. बलिं हरन्ति 2. 2.
Chhâ. 2. 21. 4. सर्वा दिशो बलिमस्मै हरन्ति
5. 14. 1. तस्मात्त्वां पृथग्बलय आयन्ति

Brih. 6. 1. 13. तस्यो मे बलिं कुरुतेति
Tait. 1. 5. 3. सर्वे ऽस्मै देवा बलिमावहन्ति
Mahânâr. 20. 1. ये भूताः प्रचरन्ति..बलिमिच्छन्तः..तेभ्यो बलिं ..हरामि
Praśna. 2. 7. तुभ्यं प्राणः प्रजास्त्विमा बलिं हरन्ति
Śiras. 1. बलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरित्यहमेव सर्वे

बलिन्

Chhâ. 7. 8. 1. स यदा बली भवति

बलिष्ठ

Tait. 2. 8. 1. आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः

बलीयंस्

Brih. 1. 4. 14. अबलीयान् बलीयांसमाशंसते धर्मेण

बहिःप्रज्ञ

Mâṇḍû. 3. जागरितस्थानो बहिःप्रज्ञः Nṛip. 4. 1; Râmot. 3.
7. नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञम् Râmot. 3.
Gauḍa. 1. 1. बहिःप्रज्ञो विभुर्विश्वः
Nṛip. 4. 1. न बहिःप्रज्ञं नान्तःप्रज्ञम्

बहिःसूत्र

Brahma. 2. बहिःसूत्रं त्यजेद्बुधः
— बहिःसूत्रं त्यजेद्विद्वान् Aruneya. 3 (2 MSS. have त्रिवृत्सूत्रम्)

बहिरात्मक

Maitri. 6. 1. बहिरात्मकया गत्यान्तरात्मनो ऽनुमीयते गतिः

बहिरात्मन्

Maitri. 6. 1. असौ वा आदित्यो बहिरात्मा
— अन्तरात्मकया गत्या बहिरात्मनो ऽनुमीयते गतिः

बहिर्धा

Chhâ. 3. 2. 7. बहिर्धा पुरुषादाकाशः (bis)

बहिर्माया

Nṛip. 5. 1. बहिर्मायया वेष्टितं भव... (ter).

बहिर्वेष्टित

Nṛip. 5. 1. तस्मान्मायया बहिर्वेष्टि... भवति (bis).

बहिश्चित्त

Gauḍa. 2. 13. नियतांश्च बहिश्चित्तः (MSS. read बहिश्चित्तम्)

बहिश्चेतस्

Gauḍa. 2. 9. बहिश्चेतोगृहीतं सत् ... (MSS. in both cas... read बहिश्चेतसा गृही... हि सत्)

बहिष्ठ

Mukti. 2. 52. बहिष्ठं कुम्भकं विदुः

बहिष्पवमान

Chhâ. 1. 12. 4. बहिष्पवमानेन स्तोष्यमा...

बहिस्

Brih. 3. 9. 28. त्वगस्योत्पाटिका बहिः
4. 3. 12. बहिः कुलायादमृतश्चरि...
Katha. 5. 9. रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च
Swet. 3. 18. हंसो लेलायते बहिः
Maitri. 5. 2. असा आत्मान्तर्बहिश्च
6. 1. द्वौ..अस्य पन्थाना अ... र्बहिश्च
8. बहिः कृत्वेन्द्रियार्थान्
19. यदा वै बहिर्विद्वान्... न्द्रियार्थांश्च ..निवेश्य... त्वा
Mahânâr. 11. 6. अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्या... Vâsu. 3.

nda. 2. 14. द्वयकालाश्च ये बहिः
15. स्फुटा एव च ये बहिः
ip. 5. 1. मायया बहिर्वेष्टितं भवति (bis).
r. 2. अन्तर्बहिश्च नारायणः
nap. 65. तद्बहिर्द्वादशदलम्
66. तद्बहिः षोडशदलम्
68. लिखित्सम्यक्तता बहिः
70. वषट्कारं च तद्बहिः
not. 5. यो ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्याप्नोति विराट् (36).
ka. 2. 22. प्रवर्त्तते बहिः स्वार्थं वासनामात्रकारणम्
52. बहिरस्तं गते प्राण
. 5. 27. स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यान्
13. 15. बहिरन्तश्च भूतानाम्

बहु

sh. 3. 1. बह्वीः समा अतिक्रम्य
. 25. श्रियमाजगाम बहुशोभमानाम्
. 1. 5. 2. बहवो वै ते भविष्यन्ति
4. बहवो मे भविष्यन्तीति
4. 4. 2. बह्वहं चरन्ती परिचारिणी 4.
4. 10 3. बहव इमे ऽस्मिन्पुरुषे कामा नानात्ययाः
5. 13. 1. तव बहु विश्वरूपं कुले दृश्यते
6. 2. 3. बहु स्यां प्रजायेय (bis); Tait. 2. 6. 1.
4. बह्व्यः स्याम प्रजायेमहि
6. 7. 3. तेन ततो ऽपि न बहु ददृशे
5. तेन ततो ऽपि बहु ददृशे
7. 10. 1 अन्नं बहु भविष्यति
7. 13. 1. यद्यपि बहव आसीरन्
1. 4. 10. बहवः पशवो मनुष्यं भुञ्ज्युः
— एकस्मिन् .. आदीयमाने ऽप्रियं भवति किमु बहुषु

Brh. 2. 5. 19. बहूनि चानन्तानि च
3. 8. 10. बहूनि वर्षसहस्राणि
12. तदेव बहु मन्येध्वम्
4. 3. 13. रूपाणि देवः कुरुते बहूनि
4. 4. 21. नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्
5. 14. 5. यदि ह वा अप्येवंविद्बह्विव प्रतिगृह्णाति
8. यदि ह वा अपि बह्विवाग्नावभ्यादधाति
— एवंविद्यद्यपि बह्विव पापं कुरुते
6. 2. 2. बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिः
7. बहोरनन्तस्यापर्यन्तस्य
6. 4. 1. बहवो मर्या ब्राह्मणायनाः
— बहु वा इदं .. रेतः स्कन्दति
Tait. 3. 9. 1. अन्नं बहु कुर्वीत तद्व्रतम्
3. 10. 1. यया कया च विधया बह्वन्नं प्राप्नुयात्
Katha. 1. 5. बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः
23. वृणीष्व बहून् पशून्
2. 3. यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः
4. न त्वा कामा बहवो ऽलोलुपन्त Maitri. 7. 9 (लोलुपन्ते)
7. श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तो ऽपि बहवो यं न विद्युः
23. न मेधया न बहुना श्रुतेन Mund. 3. 2. 3.
5. 13. एको बहूनां यो विदधाति कामान् Swet. 6. 13.
Swet. 4. 5. बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः
5. 12. बहूनि चैव रूपाणि
6. 12. एको वशी निष्क्रियाणां बहूनाम्

Maitri. 2. 6. सो ऽत्मानमभिध्यात्वा बह्वीः प्रजा असृजत
3. 4. अन्यैश्चामयैर्बहुभिः परिपूर्णम्
Mund.2. 1. 5. बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः
Mahânâr. 9. 2. बह्वीं प्रजां जनयन्तीं सरूपाम्
Kshur. 8. नाडीभिर्बहुभिर्वृता
Brahma. 3. एको मनीषी निष्क्रियाणां बहूनाम्
Prâṇâg. 1. बह्वीः शतविचक्षणाः
Dhyâna. 3. विस्तीर्णं योजनान्बहून्
Gopî. 5. बहुनात्र किमुक्तेन
Râmap. 83. बहुना किमनेन वै
Mukti. 2. 63. बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन
Gîtâ. 1. 9. अन्ये तु बहवः शूराः
2. 36. अवाच्यवादांश्च बहून्
4. 5. बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि
10. बहवो ज्ञानतपसा पूताः
7. 19. बहूनां जन्मनामन्ते
10. 42. अथवा बहुनैतेन
11. 6. बहून्यदृष्टपूर्वाणि
28. यथा नदीनां बहवो ऽम्बुवेगाः

बहुदंष्ट्राकराल

Gîtâ. 11. 23. बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालम्

बहुदक्षिण

Bṛih. 3. 1. 1. बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे

बहुदायिन्

Chhâ. 4. 1. 1. बहुदायी बहुपाक्य आस

बहुधा

Chhâ. 4. 3. 6. बहुधा वसन्तम्
Kaṭha. 2. 8. बहुधा चिन्त्यमानः
Kaṭha. 5. 12. एकं रूपं बहुधा यः करो
Swet. 4. 1. य एको ऽवर्णो बहुधा शक्तियोगात्
5. 3. एकैकं जालं बहुधा वि कुर्वन्
6. 12. एकं बीजं बहुधा यः करो
Maitri. 5. 1. बहुधा संस्थितिस्त्वयि
Mund.1. 2. 1. त्रेतायां बहुधा सन्तता
9. अविद्यायां बहुधा वर्तमा
2. 1. 7. तस्माच्च देवा बहुधा सं सूताः
2. 2. 6. बहुधा जायमानः
Mahânâr. 1. 6. बहुधा जातं जायमा 13. 2.
Praśna. 1. 4. एतौ मे बहुधा प्रजाः क ष्यतः
Gauḍa. 3. 24. बहुधा मायया जायते
Nṛisut. 4. नत्वा च बहुधा दृष्ट्वा
Brahma. 3. एकं सन्तं बहुधा यः करो
Prâṇâg. 1. यदन्नमग्नि बहुधा विरा
Brahmab. 12. एकधा बहुधा चैव
Gîtâ. 9. 15. बहुधा विश्वतोमुखम्
13. 4. ऋषिभिर्बहुधा गीतम्

बहुपाक्य

Chhâ. 4. 1. 1. बहुदायी बहुपाक्य आ

बहुपुत्रिन्

Mahânâr. 19. 1. ब्रह्मण्यं बहुपुत्रिणम्

बहुबाहूरूपाद

Gîtâ. 11. 23. रूपं महत्ते . . बहुबाहू दम्

बहुभयावस्थ

Maitri. 4. 2. यमविषयस्थस्येव यावस्थम्

बहुमत

Gîtâ. 2. 35. येषां च त्वं बहुमतः

बहुल

ā. 5. 15. 1. एष वै बहुल आत्मा.... तस्मात्त्वं बहुलोसि प्रजया च धनेन च

5. 18. 2. सन्देहो बहुलः

hânâr. 6. 4. पृश्न पृथ्वी बहुला न उर्वी

बहुलायास

ā. 18. 24. क्रियते बहुलायासम्

बहुवक्त्रनेत्र

ā. 11. 23. रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम्

बहुविद्

hā. 7. 5. 2. यद्यपि बहुविदचित्तो भवति

बहुविध

ā. 4. 32. एवं बहुविधा यज्ञाः

बहुशस्

ita. 20. दिव्यमन्त्रेण बहुशः कुर्यादात्ममलच्युतिम्

बहुशाख

tā. 2. 41. बहुशाखा ह्यनन्ताश्च

बहूदक

rama. 4. कुटीचरा बहूदका हंसाः परमहंसाश्च

— बहूदकाः..साधुवृत्तेषु ब्राह्मणकुलेषु भैक्षाचर्यं चरन्तः

बहूदर

ā. 11. 23. बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालम्

बह्वङ्कुर

aut. 9. सैषा चित्रा सुदृढा बह्वङ्कुरा

बह्वृच

ll. 9. बह्वृचाः शास्त्रकोविदाः

Mukti. 1. ऐतरेयकौषीतकीनादबिन्द्वात्मप्रबोधनिर्वाणमुद्गलाक्षमालिकात्रिपुरासौभाग्यबह्वृचानाम्

बाण

Prasna. 2. 2. वयमेतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामः

3. एतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामि

बाणवन्त्

Brih. 3. 8. 2. द्वौ बाणवन्तौ

Nila. 15. विशल्यो बाणवाँ उत

बाधक

Parama. 3. न बाधक इति चेत्तद्बाधकोऽस्त्येव

बान्धव

Kathasru. 3. तस्य सन्न्यासो गुरुभिरनुज्ञातस्य बान्धवैश्च

बाभ्रव

Brih. 2. 6. 3. विदर्भीकौण्डिन्यो वत्सनपातो बाभ्रवात् 4. 6. 3.

— वत्सनपाद्बाभ्रवः पथः सौभरात् 4. 6. 3.

बाल

Kaush. 3. 3. जीवति मनोऽपेतो बालान् हि पश्यामः

Chhâ. 5. 1. 11. यथा बाला अमनसः

5. 24. 5. यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासते

Katha. 2. 6. न साम्परायः प्रतिभाति बालम्

4. 2. पराचःकामाननुयन्ति बालाः

Mund. 1. 2. 9. वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः

Gauda. 3. 8. यथा भवति बालानाम्

Nṛip. 5. 2. एतन्महाचक्रं बालो वा युवा वा वेद

Gîtâ. 5. 4. बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः

बालक

Krish. 19. क्रीडते बालको भूत्वा

Mukti. 2. 7. लालयेच्चित्तबालकम्

बालखिल्य

Aśrama. 3. वैखानसा उदुंबरा बालखिल्याः फेनपाश्च (2 MSS. have बालि°)

— बालखिल्या जटाधराः (one MS. has बालि°)

बालाकि

Kaush. 4. 1. गार्ग्यो बालाकिः

3. स होवाच बालाकिः (16 times).

19. बालाकिस्तूष्णीमास

— एतावन्नु बालाका३ इति

— एतावदित्युवाच बालाकिः

— यो वै बालाक एतेषां... कर्त्ता

— बालाकिः समित्पाणिः प्रतिचक्रमे

— क्वैष एतद्बालाके पुरुषो ऽशयिष्ट

— बालाकिर्न विजज्ञे

— यत्रैष एतद्बालाके पुरुषो ऽशयिष्ट

बालाग्र

Śwet. 5. 9. बालाग्रशतभागस्य

Dhyâna. 6. बालाग्रशतसाहस्रार्द्धम्

बालाग्रमात्र

Siras. 5. बालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये

बालिश

Gauḍa. 4. 83. आवृणोत्येव बालिशाः

बाल्य

Bṛih. 3. 5. 1. बाल्येन तिष्ठासेत्

— बाल्यं च पाण्डित्यं च [illegible] विद्य

बाहु

Kaush. 2. 8. दक्षिणं बाहुमन्वावर्त्तते [illegible]

Bṛih. 5. 5. 3. भुव इति बाहू द्वौ बाहू [illegible]

Swet. 3. 3. सं बाहुभ्यां धमति Mahânâr. 2. 2.

Nṛip. 5. 2. कण्ठे बाहौ वा .. [illegible]

Nila. 4. नमस्ते अस्तु बाहुभ्याम्

12. उभाभ्यां .बाहुभ्याम्

Nyâsa. 3. ऊर्ध्वको बाहुर्विमुक्तम [illegible] (vide ऊर्ध्वगोपायु)

Haṁsa. 2. बाहू कालश्च

बाहुच्छिन्न

Kaush. 3. 3. जीवति बाहुच्छिन्नः.. [illegible] वं हि पश्यामः

बाहुमूल

Vâsu. 2. ललाटकण्ठहृदयबाहुमूले

बाहुल्य *adj.*

Parama. 1. न तु बाहुल्यो ऽपि (बाहुल्यमस्यास्तीति बाहु[illegible] Nârâyaṇa)

बाह्य

Bṛih. 2. 4. 7. न बाह्या ञ्छब्दा ञ्छक्नुयाद्ग्रहणाय 8, 9; 4. 5. 8-[illegible]

4. 3. 21. न बाह्यं किञ्चन वेद नान्तरम् (bis).

Katha. 5. 11. न लिप्यते लोकदुःखेन बा[illegible]

Muṇḍ. 2. 1. 2. स बाह्याभ्यन्तरः

Praśna. 3. 1. कथं बाह्यमभिधत्ते

8. आदित्यो ह वै बाह्यः प्रा[illegible]

5. 6. क्रियासु बाह्याभ्यन्तरम[illegible]

माक्ष

la 2. 16. बाह्यानाध्यात्मिकांश्चैव
ut. 9. बाह्यान्तरवीक्षणात्
âna. 9. बाह्याभ्यन्तरे स्थितः
5. 27. स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यान्

बाह्यतस्

5. तद् सर्वस्यास्य बाह्यतः
da. 2. 38. तत्त्वं दृष्ट्वा तु बाह्यतः
isa. 4. देवागारेषु बाह्यतः

बाह्यदोष

ha. 5. 11. न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः

बाह्यप्राण

ita. 32. बाह्यप्राणः सगोचरः

बाह्यस्पर्श

5. 21. बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा

बिन्दु

tri. 3. 2. अमृतो ऽस्यात्मा बिन्दुरिव पुष्करा इति (so MS; printed text has अद्बिन्दुरिव)
6. 35. ये बिन्दव इवाभ्युच्चरन्ति
na. 4. बीजाक्षरात्परं बिन्दुं नादं बिन्दोः परे स्थितम् (four MSS. read बिन्दु in first instance).
a. 2. बिन्दुस्तु नेत्रम्
23. बिन्दुवत्सर्वमूर्द्धनि
p. 68. नादबिन्दुसमायुतम्
73. बिन्दुनादैः
ot. 2. बिन्दुः पञ्चमाक्षरो भवति
ti. 1. 31. बिन्दुर्नादः शिरः शिखा

बिन्दुपूर्वक

ot. 2. दीर्घानलं बिन्दुपूर्वकम्

बिम्ब.

2. 14. यथैव बिंबं मृदयोपलिप्तम्

बिल

Chhâ. 3. 15. 1. द्यौरस्योत्तरं बिलम्

बिस

Mukti. 2. 13. बिसच्छेदाद्गुणा इव

बिसतन्तु

Mukti. 2. 47. ते निबध्नन्ति नागेन्द्रं.. बिसतन्तुभिः

बीज

Ait. 5. 3. बीजानीतराणि चेतराणि च
Chhâ. 6. 3. 1. त्र्येण्येव बीजानि भवन्ति
Swet. 6. 12. एकं बीजं बहुधा यः करोति
Maitri. 6. 10. तस्माद्बीजं भोज्यम्
— नहि बीजस्य स्वादुपरिग्रहः
31. यथैवेह बीजस्याङ्कुरा वा
Gauda. 4. 59. यथा मायामयाद्बीजात्
Nrip. 3. 1. शक्तिं बीजं च नो ब्रूहि
— आकाशं बीजं विद्यात्
Nrisut. 2. स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिः (ter); 3 (4 times).
Dhyâna. 16. तस्याद्दुर्बीजमाहत्य
Hamsa. 2. हंमिति बीजं स इति शक्तिः
Râmap. 22. बीजशक्ती न्यसेत्
59. तन्मध्ये बीजमालिख्य
60. लिखेद्बीजान्तरे रमाम्
61. लिखेद्बीजं हृदादिभिः
73. बीजं च सौकरम्
Mukti. 2. 26. बीजांकुरक्रमः
— द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य 48.
63. स्थितिः सम्भृष्टबीजवत्
Gîtâ. 7. 10. बीजं मां सर्वभूतानाम्
9. 18. निधानं बीजमव्ययम्
10. 39. यच्चापि सर्वभूतानां बीजम्

बीजतुल्यत्व

Garbha. 3. उभयोर्बीजतुल्यत्वान्नपुंसकम्

बीजत्व

Nrisut. 2. बीजत्वात्साक्षित्वाच्च (ter).

बीजनिद्रायुत

Gauḍa. 1. 13. बीजनिद्रायुतः प्राज्ञः

बीजप्रद

Gîtâ. 14. 4. अहं बीजप्रदः पिता

बीजसम्भव

Maitri. 6. 10. यस्माद्बीजसम्भवाः पशवः

बीजाक्षर

Dhyâna. 4. बीजाक्षरात्परं बिन्दुम्

बीजांकुराख्य

Gauḍa. 4. 20. बीजाङ्कुराख्यो दृष्टान्तः

बीजादिक

Râmap. 87. बीजादिकांश्चाग्निदेशादिकांश्च

बीजाद्य

Râmap. 88. वृत्तत्रयं बीजाद्यं क्रमाद्भावयेत्

बुडिल

Chhâ. 5. 11. 1. बुडिल आश्वतराश्विः
5. 16. 1. बुडिलमाश्वतराश्विम्
Bṛih. 5. 14. 8.

बुद्धान्त

Bṛih. 4. 3. 16. आद्रवति बुद्धान्तायैव 34.
17. बुद्धान्ते रत्वा चरित्वा
18. स्वप्नान्तं च बुद्धान्तं च

बुद्धि

Kaṭha. 3. 3. बुद्धिं तु सारथिं विद्धि
10. मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः
12. दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या
6. 10. बुद्धिश्च न विचेष्टते
Maitri. 6. 30.

Swet. 3. 4. स नो बुद्ध्या शुभया ...
नक्तु 4. 1, 12.
5. 8. बुद्धेर्गुणेनात्मगुणेन चैव
Maitri. 6. 5. बुद्धिर्मनो ऽहङ्कारा ...
चेतनवत्येषा
7. धियो यो नः प्रचोदयाद् ...
बुद्धयो वै धियः
10. तत्र बुद्ध्यादीनि स्वादूनि ...
वन्ति
31. बुद्धिर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञा ...
Praśna. 4. 8. बुद्धिश्च बोद्धव्यं च
Kaivalya. 22. न जन्म देहेन्द्रियबुद्धि ...
Gauḍa 2. 25. बुद्धिरिति च तद्विदः
Nrisut. 2. बुद्धेर्द्रष्टा...बुद्धेः साक्षी
Siras. 5. बुद्ध्या सञ्चितं स्थापि...
तु रुद्रे (bis).
Garbha. 1. बुद्ध्या बुध्यति
3. बुद्धिर्गन्धरसादिज्ञाना ...
Mahâ. 1. पञ्चदशी बुद्धिः
Prâṇâg. 4. बुद्धिः पत्नी
Sarvop. 2. इष्टविषये बुद्धिः सुख...
— अनिष्टविषये बुद्धिर्दुः...
द्धिः
3. सर्वप्राणिबुद्धिषु
Haṁsa. 2. त्वायत्ये गमनादौ बुद्धि ...
Krish. 26. वृन्दा भक्तिः प्रिया बुद्धि ...
Mukti. 2. 71. मनोबुद्धिसमन्वितात्म्
Gîtâ. 2. 39. एषा ते ऽभिहिता सा...
बुद्धिः
— बुद्ध्या युक्तो यया पा...
41. व्यवसायात्मिका बुद्धि ...
— बुद्धयो ऽव्यवसायिना ...
49. बुद्धौ शरणमन्विच्छ
52. बुद्धिर्व्यतितरिष्यति
53. समाधावचला बुद्धिः
65. बुद्धिः पर्यवतिष्ठते
66. नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य

3. 1. मता बुद्धिर्जनार्दन
2. बुद्धिं मोहयसीव मे
40. इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः
42. मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः
43. एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा
5. 11. कायेन मनसा बुद्ध्या
6. 25. बुद्ध्या धृतिगृहीतया
7. 4. खं मनो बुद्धिरेव च
10. बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि
10. 4. बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः
12. 8. मयि बुद्धिं निवेशय
13. 5. बुद्धिरव्यक्तमेव च
18. 17. बुद्धिर्यस्य न लिप्यते
29. बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव
30. बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी
31. बुद्धिः सा पार्थ राजसी
32. बुद्धिः सा पार्थ तामसी
51. बुद्ध्या विशुद्धया युक्तः

बुद्धिग्राह्य

6. 21. बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्

बुद्धिनाश

2. 63. स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति

बुद्धिनिर्मल

ur. 11. सुतीक्ष्णं बुद्धिनिर्मलम् (2 MSS. have ब्रह्मनिर्मलम्)

बुद्धिभेद

3. 26. न बुद्धिभेदं जनयेत्

बुद्धिमन्त्

15. संक्षिप्यात्मनि बुद्धिमान्
4. 18. स बुद्धिमान्मनुष्येषु
7. 10. बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि
15. 20. एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात्

बुद्धियुक्त

Gîtâ. 2. 50. बुद्धियुक्तो जहातीह
51. कर्मजं बुद्धियुक्ता हि

बुद्धियोग

Gîtâ. 2. 49. बुद्धियोगाद्धनञ्जय
10. 10. ददामि बुद्धियोगं तम्
18. 57. बुद्धियोगमुपाश्रित्य

बुद्धिवृद्धिमन्त्

Râmap. 60. वेष्टयेद्बुद्धिवृद्धिमान् (Weber has शुद्धबुद्धि°)

बुद्धिशून्य

Mukti. 2. 55. बुद्धिशून्यं चिदात्मकम्

बुद्धिसंयोग

Gîtâ. 6. 43. तत्र तं बुद्धिसंयोगम्

बुद्धिस्थ

Sarvop. 3. सर्वप्राणिबुद्धिस्थः

बुद्धीन्द्रिय

Maitri. 2. 6. बुद्धीन्द्रियाणि यानीमान्येतान्यस्य रश्मयः
Garbha. 5. बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि
Prâṇâg. 4.

बुद्ध्यन्तस्थ

Maitri 6. 34. यो बुद्ध्यन्तस्थो ध्यायी

बुद्बुद

Chûl. 17. बुद्बुदाः सागरे यथा
18. जायन्ते बुद्बुदा इव
Garbha. 3. सप्तरात्रोषितं बुद्बुदम्

बुध्

Bṛih. 2. 1. 15. तं पाणिना पेषं बोधयाञ्चकार
4. 3. 14. तं नायतं बोधयेत्
Kaṭha. 6. 4. इह चेदशकद्बोद्धुम्

Swet. 1. 8. अनीशश्चात्मा बुध्यते भो- क्तृभावात् [M. M. proposes to read बध्यते].
Maitri. 6. 17. एतस्मादाकाशादेष खल्वि- दं चेतामात्रं बोधयति
Praśna. 4. 8. बुद्धिश्च बोद्धव्यं च
Gauḍa. 1. 16. अजमनिद्रमस्वप्नमद्वैतं बु- ध्यते तदा
2. 11. क एतान् बुध्यते भेदान्
12. स एव बुध्यते भेदान्
4. 19. एवं हि सर्वथा बुद्धैः
42. जातिस्तु देशिता बुद्धैः
75. द्वयाभावं स बुद्ध्वैव
78. बुद्ध्वा निमित्ततां सत्याम्
79. वस्त्वभावं स बुद्ध्वैव
80. विषयः स हि बुद्धानाम्
88. सदा बुद्धैः प्रकीर्तितम्
98. आदौ बुद्धास्तथा मुक्ता बु- ध्यन्त इति नायकाः
99. क्रमते न हि बुद्धस्य ज्ञानम्
— नैतद्बुद्धेन भाषितम्
100. बुद्ध्वा पदमनानात्वम्
Nrisut. 6. नृसिंहानुष्टुभैश्च बुबुधिरे
9. नित्यः शुद्धो बुद्धः
— अत एव शुद्धः... बुद्धः
— नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तम्
Garbha. 1. बुद्ध्या बुद्ध्यति
Yogasi. 9. लब्धयोगेन बोद्धव्यम्
Haṁsa. 2. शुद्धो बुद्धो नित्यः
Gîtâ. 3. 43. एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा
4. 17. कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बो- द्धव्यं च विकर्मणः
— अकर्मणश्च बोद्धव्यम्
10. 9. बोधयन्तः परस्परम्
15. 20. एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात्

बुध

Chûl. 19. कारणैर्व्यञ्जयेद्बुधः
Brahma. 2. बहिःसूत्रं त्यजेद्बुधः
3. यं ज्ञात्वा मुच्यते बुधः
Nâda. 7. वारुणीं तां विदुर्बुधाः
Mukti. 2. 16. मनोबद्धं विदुर्बुधाः
62. पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता...
Gîtâ. 4. 19. तमाहुः पण्डितं बुधाः
5. 22. न तेषु रमते बुधः
10. 8. बुधा भावसमन्विताः

बृह्

Śiras. 4. बृहद्बृहत्या बृंहयति
Sikhâ. 2. ब्रह्माबृहत् सर्वकरणानि सम्प्रतिष्ठाप्य ध्यानात्

बृहज्जाबाल

Mukti. 1. 32. बृहज्जाबालतापनी
1. *vide* गारुड

1. बृहत्

Kaush. 4. 2. आदित्ये बृहत्
3. बृहत्पाण्डरवासा अति
19. बृहत्पाण्डरवासः सो- जन्निति
Chhâ 1. 2. 11. वाग्घि बृहती तस्या पतिः
2. 14. 1. एतद्बृहदादित्ये प्रोतम्
2. स य एवमेतद्बृहदा- प्रोतं वेद
Brih. 1. 3. 20. वाग्वै बृहती तस्या एष
2. 1. 3. बृहन्पाण्डरवासाः राजा
15. बृहन्पाण्डरवासः सो- जन्निति
Katha. 5. 2. अद्रिजा ऋतं बृहत् ... nâr. 9, 3; 17. 8; 3. 1.
Śwet. 1. 6. सर्वाजीवे सर्वसंस्थे
2. 3. बृहज्ज्योतिः करिष्य
4. विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः

. 3. 7. ततः परं ब्रह्म परं बृहन्तम्
].3. 1. 7. बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपम्
nâr. 16. 4. बृहद्वदेम विदथे सुवीराः
:. 4. बृहद्धृहत्या बृंहयति
ma. 1. गायत्रो ब्राह्मणः प्राजापत्यो बृहन्निति
— आप्रायणाद्गुरोरपरित्यागी नैष्ठिको बृहन्निति

2. बृहत्

h. 1. 5. बृहद्रथन्तरे (bis).
:i. 7. 2. पञ्चदशो बृहत्..दक्षिणत उद्यन्ति
nâr 22. 1. आहवनीयः साम सुवर्गो लोको बृहत्

बृहत्त्व

it. 9. तद्वा एतद्ब्रह्माद्वयं बृहत्त्वात्

बृहत्सामन्

9. रथन्तरे बृहत्साम्नि
10. 35. बृहत्साम तथा साम्नाम्

बृहत्सेन

1. नारदो बृहत्सेनाय बृहत्सेन इन्द्राय

बृहत्सोम

r. 6. 1. बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः

बृहदारण्यक

1. 30. बृहदारण्यकं तथा
1. *vide* मुक्तिका

बृहद्रथ

1. 2. बृहद्रथो वै नाम राजा
2. 1. महाराज बृहद्रथ

बृहस्पति

· 2. 11. तेन तं ह बृहस्पतिरुद्गीथमुपासांचक्रे एतमु एव बृहस्पतिं मन्यन्ते

Chhâ. 2. 22. 1. क्रौञ्चं बृहस्पतेः
Brih. 1. 3. 20. एष उ एव बृहस्पतिः
— तस्मादु बृहस्पतिः
Tait. 1. 1. 1. शं न इन्द्रो बृहस्पतिः 1. 12. 1.
2. 8. 1. शतमिन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः
— शतं बृहस्पतेरानन्दाः स एकः प्रजापतेरानन्दः
Maitri. 7. 9. बृहस्पतिर्वै शुक्रो भूत्वा
Mahânâr. 4. 12. तन्मे .. बृहस्पतिः सविता च पुनन्तु
19. 2. बृहस्पतये स्वाहा
Nrip. 1. 1. स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु Nrisut. 1.
Jâbâla. 1 बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यम् Ramot. 1.
Gitâ. 10. 24. मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्

बृहस्पतिप्रसूत

Prâṇâg. 1. बृहस्पतिप्रसूतास्ताः (bis)

बैल्व

Aruneya. 5. पालाशं बैल्वमौदुंबरं दण्डम्

बोद्धृ

Chhâ. 7. 8. 1. उपसीदन्..बोद्धा भवति
7. 9. 1. अन्नस्याये..बोद्धा भवति
Prasna. 4. 9. एष हि..मन्ता बोद्धा कर्त्ता

बोध

Parama. 3. पूर्णानन्दैकरूपरसबोधः

बोधस्वरूप

Atmapra. 1. कारणरूपं बोधस्वरूपं विज्ञानघनम्

बोधिन्

Mahânâr. 6. 5. अस्माकं बोध्यविता तनूनाम्

ब्रह्म

Śwet. 1. 9. अयं यदा विन्दते ब्रह्ममेतत् (ब्रह्ममिति मकारान्तम् Com; but Nârâyaṇa reads ब्रह्म ह्येतत् here and in verse 12.)
12. सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्

ब्रह्मकर्मन्

Gîtâ. 18. 42. ब्रह्मकर्म स्वभावजम्

ब्रह्मकर्मसमाधि

Gîtâ. 4. 24. ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना

ब्रह्मकुलदर्प

Tejo. 13. न ब्रह्मकुलदर्पं च (5MSS. read पर्व for दर्प)

ब्रह्मकोश

Maitri. 6. 28. चतुर्जालं ब्रह्मकोशं प्रणुदेत्
38. चतुर्जालं ब्रह्मकोशं भिन्द्यात्

ब्रह्मगन्ध

Kaush. 1. 5. तं ब्रह्मगन्धः प्रविशति

ब्रह्मगवी

Brih. 3. 7. 1. ब्रह्मगवीरुदजसे

ब्रह्मचक्र

Śwet. 1. 6. तस्मिन् हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे
6. 1. येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम्

ब्रह्मचर्य

Chhâ. 4. 4. 1. ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्यामि
3. ब्रह्मचर्यं भगवति वत्स्यामि
4. 10. 1. सत्यकामे जाबाले ब्रह्मचर्यमुवास
6. 1. 1. श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्

Chhâ. 8. 4. 3. ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणानु-न्दन्ति
8 5. 1. यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्र-मेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्ये-विन्दते (similarly 5 more in this secti
4. य एवैतावरं च ण्यं च ..ब्रह्मचर्येणानुविन्द
8. 7. 3. द्वात्रिंशतं वर्षाणि ब्रह्म-षतुः
8. 11. 3. एकशतं ह वै वर्षा-ब्रह्मचर्य्यमुवास
Brih. 5. 2. 1. प्रजापतौ पितरि ब्रह्म-मूषुः
— उषित्वा ब्रह्मचर्यं देवाः
6. 2. 4. तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं-त्स्यावः
Katha. 2. 15. यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं च-न्ति Gîtâ. 8. 11.
Mund. 2. 1 7. श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं वि-श्च
3. 1. 5. सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्ये-त्यम्
Praśna. 1. 2. तपसा ब्रह्मचर्येण श्र-10; 5. 3.
13. ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ संयुज्यन्ते
15. तेषामेवैष ब्रह्मलोको तपो ब्रह्मचर्यम्
Mahâ. 2. बिभ्रच्छ्रियं सत्यं ब्रह्म-
Aruṇeya. 4. ब्रह्मचर्यमहिंसां चाप-च सत्यं च
Jâbâla. 4. ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही-
— यदि वेतरथा ब्रह्मच-प्रव्रजेत्
Mukti. 1. 52. ब्रह्मचर्योपपन्नम्
Gîtâ. 17. 14. ब्रह्मचर्यमहिंसा च

ब्रह्मचर्याश्रम

l. 2. ब्रह्मचर्याश्रमे खिन्नः

ब्रह्मचारिन्

2. 23. 2. ब्रह्मचार्याचार्यकुलवासी
4. 3. 5. ब्रह्मचारी बिभिक्षे
7. वयं ब्रह्मचारिन्नेदमुपास्महे
4. 10. 2. तम्रो ब्रह्मचारी कुशलमग्नीन् परिचचारीत्
3. ब्रह्मचारिन्नशान
4. तम्रो ब्रह्मचारी कुशलं नः परिचचारीत्
3. 1. 2. त्वमेव ब्रह्मचारिणमुवाच
1. 4. 2. आ मा यन्तु ब्रह्मचारिणः
— वि मा यन्तु ब्रह्मचारिणः
— प्र मा यन्तु ब्रह्मचारिणः
— दमायन्तु ब्रह्मचारिणः
— शमायन्तु ब्रह्मचारिणः
3. एवं मां ब्रह्मचारिणो धातरायन्तु सर्वतः
n. 5. 2. अस्य तामसो ऽंशो ऽसौ स ब्रह्मचारिणो यो ऽयं रुद्रः (similarly twice more.)
âr. 21. 2. दम इति नियतं ब्रह्मचारिणः
22. 1. दमेन ब्रह्मचारिणः सुवरगच्छन्
11. ब्रह्मचारी च व्रात्यश्च
sru. 3. ब्रह्मचारी वेदमधीत्य
. 1. ब्रह्मचारिणे शान्ताय दान्ताय
ya. 2. गृहस्थो ब्रह्मचारी वानप्रस्थो वा
— कुटीचरो ब्रह्मचारी
5. ब्रह्मचारिणां मृत्पात्रं वालाबुपात्रं दारुपात्रं वा
2. ब्रह्मचारी गृहस्थो वानप्रस्थो यतिर्वा

Âsrama. 1. तत्र ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधा भवन्ति
Jâbâla. 3. अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः
Vâsu. 2. ब्रह्मचारी वानप्रस्थो वा

ब्रह्मचारिव्रत

Gîtà. 6. 14. ब्रह्मचारिव्रते स्थितः

ब्रह्मजज्ञ

Katha. 1. 17. ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा

ब्रह्मजज्ञान

Nyâsa. 1. ब्रह्मजज्ञानमिति

ब्रह्मज्ञान

Gopî. 2. ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः

ब्रह्मज्योतिस्

Maitri. 6. 36. द्वे वाव खल्वेते ब्रह्मज्योतिषो रूपके

ब्रह्मणस्पति

Brih. 1. 3. 21. एष उ एव ब्रह्मणस्पतिः
— तस्मादु ब्रह्मणस्पतिः
Mahânâr. 14. 2. पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिः Prâṇâg. 1.
Nrip. 2. 4. प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थम

ब्रह्मण्य

Mahânâr. 19. 1. ब्रह्मण्यं बहुपुत्रिणम्
Nâr. 5. ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः
Atmapra. 1. ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो गरुडध्वजः
— ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः

ब्रह्मतत्त्व

Mahânâr. 11. 4. नारायणः परं ब्रह्मतत्त्वम्
Śwet. 2. 15. यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं . . प्रपश्येत्

Mukti. 2. 65. ब्रह्मतत्त्वं न जानाति

ब्रह्मतेजस्

Kaush. 1. 5. तं ब्रह्मतेजः प्रविशति

ब्रह्मत्व

Nâr. 3. ब्रह्मत्वं च गत्वामृतत्वं च गच्छति

1. ब्रह्मदत्त *adj.*

Mahânâr. 4. 5. तेन या ब्रह्मदत्तासि

2. ब्रह्मदत्त

Bṛih. 1. 3. 24. ब्रह्मदत्तश्चैकितानेयः

ब्रह्मदेवत्य

Siras. 5. या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या (one MS. has दै)

Sikhâ. 1. प्रथमा रक्ता ब्राह्मी ब्रह्मदेवत्या

ब्रह्मद्वार

Maitri. 4. 4. ब्रह्मद्वारमिदमित्येवैतदाह

ब्रह्मद्वारपार

Maitri. 6. 28. तं ब्रह्मद्वारपारं निहत्यायम्

ब्रह्मधामन्

Muṇd. 3. 2. 1. स वेदैतत्परमं ब्रह्मधाम
4. तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम

Brahma. 1. परं ब्रह्मधाम क्षेत्रज्ञमुपैति

ब्रह्मधी

Maitri. 7. 11. अजस्रं ब्रह्मधीयालम्बं वा

ब्रह्मन्

Ait. 3. 13. एतमेव पुरुषं ब्रह्म ततमम- पश्यत्
5. 3. एष ब्रह्मैष इन्द्रः
— प्रज्ञानं ब्रह्म Atmapra. 1.

Kaush. 1. 3. तं ब्रह्माहाभिधावत मम यशसा

Kaush. 1. 4. ब्रह्म विद्वान् ब्रह्माभि
— ब्रह्म विद्वान् ब्रह्मैवाभि
5. तस्मिन् ब्रह्मास्ते
— तं ब्रह्मा पृच्छति कोसी
7. स ब्रह्मेति विज्ञेयः
— सा या ब्रह्मणो जिति व्यष्टिः

2. 1. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह षीतकिः
— एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो दूतम्
— एतस्मै प्राणाय ब्रह्मणे देवताः . . बलिं हरंति
2. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह
— एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो क् परस्ताच्चक्षुरारुन्धं
6. उक्थं ब्रह्मेति ह स्माह ष्कभृंगारः
12. एतद्वै ब्रह्म दीप्यते (4 tim
13 (4 times).

4. 1. ब्रह्म ते ब्रवाणीति Bṛi
2. 1. 1.
8. पूर्णमप्रवृत्ति ब्रह्मेति वा हमेतमुपासे
19. मृषा वै खलु मा संवा ष्ठा ब्रह्म ते ब्रवाणीति

Kena. 4. तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि 5
9. दभ्रमेवापि नूनं त्वं वे ब्रह्मणो रूपम्
14. ब्रह्म ह देवेभ्यो वि तस्य ह ब्रह्मणो विजं वा अमहीयन्त
26. सा ब्रह्मेति होवाच ब्र वा एतद्विजये मही मिति ततो हैव वि कार ब्रह्मेति
27. एतत् प्रथमो विदा ब्रह्मेति 28.

Chhâ. 1. 7. 5. अन्तरक्षिणि पुरुषो दृश्यते ..तद्ब्रह्म
3. 5. 1. ब्रह्मैव पुष्पम्
2. ते वा एते गुह्या आदेशा एतद्ब्रह्माभ्यतपन्
3. 10. 1. यत्पंचमममृतं तत्साध्या उपजीवन्ति ब्रह्मणा मुखेन
3. 10. 3. साध्यानामेवैको भूत्वा ब्रह्मणैव मुखेन
3. 11. 2. मा विराधिषि ब्रह्मणा
4. एतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच 8. 15. 1.
— ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म प्रोवाच
5. ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म प्रब्रूयात्
3. 12. 7. तद्वैतद्ब्रह्मेतीदं वाव तद्योऽयं बहिर्धा पुरुषादाकाशः
3. 14. 1. सर्वं खल्विदं ब्रह्म
4. एष म आत्मान्तर्हृदय एतद्ब्रह्म
3. 18. 1. मनो ब्रह्मेत्युपासीत
— आकाशो ब्रह्म
2. तदेतच्चतुष्पाद्ब्रह्म
3. वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः
4. प्राण एव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः
5. चक्षुरेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः
6. श्रोत्रमेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः
3. 19. 1. आदित्यो ब्रह्मेत्यादेशः
4. आदित्यं ब्रह्मेत्युपास्ते
4. 5. 2. ब्रह्मणश्च ते पादं ब्रवाणि.. चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः 4. 6. 3; 4. 7. 3; 4. 8. 3.
3. य एतमेवं विद्वांश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणः .. उपास्ते 4. 6. 4; 4. 7. 4; 4. 8. 4.
4. 10. 5. प्राणो ब्रह्म कं ब्रह्म खं ब्रह्मेति स होवाच विजानाम्यहं यत्प्राणो ब्रह्म

Chhâ. 4. 15. 1. एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्म 8. 3. 4; 8. 7. 4; 8. 8. 3; 8. 10. 1; 8. 11. 1; Maitri. 2. 2; Nṛisut. 8 (four times).
6. स एतान् ब्रह्म गमयति 5. 10. 2.
4. 16. 2. मनसा संस्करोति ब्रह्मा
— ब्रह्मा व्यववदति 4.
4. 17. 8. यत्रैवंविद्ब्रह्मा भवति 9.
9. एवंविदं ह वा एषा ब्रह्माणमनु गाथा
10. मानवो ब्रह्मा
— एवंविद्ध वै ब्रह्मा यज्ञं.. अभिरक्षति तस्मादेवंविदमेव ब्रह्माणं कुर्वीत
5. 11. 1. को न आत्मा किं ब्रह्मेति
7. 1. 5. यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते (bis).
7. 2. 2. यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते (and similarly in each section down to the 14th)
7. 3. 1. मनो हि ब्रह्म
8. 3. 4. एतस्य ब्रह्मणो नाम सत्यमिति
8. 5. 3. अपराजिता पूर्ब्रह्मणः
8. 14. 1. ते यदन्तरा तद्ब्रह्म
Brih. 1. 3. 21. वाग्वै ब्रह्म तस्या एष पतिः
1. 4. 6. सैषा ब्रह्मणोऽतिसृष्टिः
9. किमु तद्ब्रह्मावेत्
10. ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् 11; Maitri. 6. 17 (ह वा)
— अहं ब्रह्मास्मीति (bis).
11. सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद्ब्रह्म
— ब्रह्मैवान्तत उपनिश्रयति
15. तदेतद्ब्रह्म क्षत्रं विट् शूद्रः
— अग्निनैव देवेषु ब्रह्माभवत्
— एताभ्यां हि रूपाभ्यां ब्रह्माभवत्

Bṛih. 1. 5. 17. पुत्रमाह त्वं ब्रह्म
— स पुत्रः प्रत्याहाहं ब्रह्म
— यद्वै किञ्चानूक्तं तस्य सर्वस्य ब्रह्मेत्येकता
1. 6. 1. एतदेषां ब्रह्मैतद्धि सर्वाणि ..बिभर्त्ति 2, 3.
2. 1. 2. आदित्ये पुरुष एतमेवाहं ब्रह्मोपासे (similarly, in 3—13).
15. ब्रह्म मे वक्ष्यतीति
2. 2. 3. वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना (bis).
— वाग्घ्यष्टमी ब्रह्मणा संवित्ते
2. 3. 1. द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे Maitri. 6. 3. 15.
2. 4. 5. न वा अरे ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय ब्रह्म प्रियं भवति 4. 5. 6.
6. ब्रह्म तं परादाद्यो ऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद 4. 5. 7.
— इदं ब्रह्म..इदं सर्वं यदयमात्मा 4. 5. 7.
2. 5. 1. इदममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वं (14 times).
19. तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरम्
— अयमात्मा ब्रह्म सर्वानुभूः
2. 6. 3. परमेष्ठी ब्रह्मणः 4. 6. 3.
— ब्रह्म स्वयंभु ब्रह्मणे नमः 4. 6. 3; 6. 5. 4.
3. 1. 6. ब्रह्मणर्त्विजा मनसा चन्द्रेण मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा
— सो ऽसौ चन्द्रः स ब्रह्मा
9. ब्रह्मा यज्ञं..गोपायति
3. 4. 1. यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म 2; 3. 5. 1.
3. 9. 9. स ब्रह्म त्यदित्याचक्षते
19. किं ब्रह्म विद्वानिति

Bṛih. 3. 9. 28. विज्ञानमानन्दं ब्रह्म
4. 1. 2. वाग्वै ब्रह्मेति..वाग्वै परमं ब्रह्म
3. प्राणो वै ब्रह्मेति..प्राणो सम्राट् परमं ब्रह्म (similarly, 4—7).
4. 3. 37. इदं ब्रह्मायाति
4. 4. 5. स वा अयमात्मा ब्रह्म
6. ब्रह्मैव सन् ब्रह्माप्ये Nṛisut 5 (ter).
7. अत्र ब्रह्म समश्नुते Kath 6. 14.
— अयमशरीरो ऽमृतः प्रा ब्रह्मैव
9. एष पन्था ब्रह्मणा ह्यनुवि Jâbâla. 5.
17. विद्वान्ब्रह्मामृतो ऽमृतम्
18. ते निचिक्युर्ब्रह्म पुराणम्
25. महानज आत्मा..अभ ब्रह्म
— अभयं वै ब्रह्माभयं हि ब्रह्म भवति य एवं वे Nrisut. 8 (4 times).
5. 1. 1. ओं खं ब्रह्म
5. 3. 1. एतद्ब्रह्मैतत्सर्वम्
5. 4. 1. महद्यक्षं प्रथमजं वेद स ब्रह्मेति सत्यं ह्येव ब्रह्म
5. 5. 1. आपः सत्यमसृजन्त स ब्रह्म ब्रह्म प्रजापतिम्
5. 7. 1. विद्युद्ब्रह्मेत्याहुः .. य वेद विद्युद्ब्रह्मेति विद्यु ब्रह्म
5. 12. 1. अन्नं ब्रह्मेत्येक आहुस् तथा
— प्राणो ब्रह्मेत्येक आहुस् तथा
6. 1. 6. प्राणा अहंश्रेयसे विवद ना ब्रह्म जग्मुः
6. 3. 3. ब्रह्मणे स्वाहा..क्षत्राय स

b. 6. 5. 4. प्रजापतिर्ब्रह्मणः
b. 1. 1. 1. नमो ब्रह्मणे . . त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि 1. 12. 1 (अवादिषं)
1. 4. 1. ब्रह्मणः कोशो ऽसि
1. 5. 1. मह इति तद्ब्रह्म
3. मह इति ब्रह्म ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते
— ता यो वेद स वेद ब्रह्म
1. 6. 2. मह इति ब्रह्मणि (प्रतितिष्ठति)
— आकाशशरीरं ब्रह्म
1. 8. 1. ओमिति ब्रह्म
— ओमिति ब्रह्मा प्रसौति
— ब्रह्मोपाप्नुवानिति ब्रह्मैवोपाप्नोति
2. 1. 1. सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद . . सो ऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता
2. 2. 1. ये ऽन्नं ब्रह्मोपासते
2. 3. 1. ये प्राणं ब्रह्मोपासते
2. 4. 1. आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् 2. 9. 1.
2. 5. 1. विज्ञानं देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते
— विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद
— ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा
2. 6. 1. असन्नेव स भवत्यसद्ब्रह्मेति वेद चेत् । अस्ति ब्रह्मेति चेद्वेद
2. 8. 1. शतं प्रजापतेरानन्दाः स एको ब्रह्मण आनन्दः
3. 1. 1. अधीहि भगवो ब्रह्मेति 3. 2. 1; 3. 3. 1; 3. 4. 1; 3. 5. 1.
— तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति

Tait. 3. 2. 1. अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्
— तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति 3. 3. 1; 3. 4. 1; 3. 5. 1.
3. 3. 1. प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 4. 1. मनो ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 5. 1. विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 6. 1. आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 10. 4. तद्ब्रह्मेत्युपासीत ब्रह्मवान्भवति
— तद्ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत
Katha. 1. 9. अवात्सीर्गृहे मे ऽनश्नन् ब्रह्मन् . . नमस्ते ऽस्तु ब्रह्मन्
2. 16. एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म
25. यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनम्
3. 2. अक्षरं ब्रह्म यत्परम्
5. 6. गुह्यं ब्रह्म सनातनम्
8. तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतम् 6. 1.
Śwet. 1. 1. किं कारणं ब्रह्म
7. उद्गीतमेतत्परमं तु ब्रह्म
— लीना ब्रह्मणि तत्पराः
16. तद्ब्रह्मोपनिषत्परं Brahma. 3.
2. 5. युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः
7. जुषेत ब्रह्म पूर्व्यम्
11. ब्रह्मण्यभिव्यक्तिकराणि
3. 7. ततः परं ब्रह्म परं बृहन्तम्
4. 2. तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदापः
5. 6. तद्ब्रह्मा वेदते ब्रह्मयोनिम् (Nârâyaṇa reads तद्ब्रह्म विन्दते)
6. 10. स नो दधातु ब्रह्माव्ययम्
18. यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्
21. ब्रह्म ह श्वेताश्वतरो ऽथ विद्वान्

Maitri. 4. 4. अस्ति ब्रह्मेति ब्रह्मविद्याविदब्रवीत्
— ओं ब्रह्मणो महिमा
— विद्यया तपसा चिन्तया चोपलभ्यते ब्रह्म
— स ब्रह्मणः पर एता भवति
— अनेन त्रिकेण ब्रह्मोपास्ते
5. ब्रह्मा रुद्रो विष्णुः
6. ब्रह्मणो वावैता अग्र्यास्तनवः
6. ब्रह्म खल्विदं वाव सर्वम्
5. 1. त्वं ब्रह्मा त्वं च वै विष्णुः
2. अस्य राजसो ऽंशो ऽसौ ..ब्रह्मा
6. 3. यदमूर्त्तं तत्सत्यं तद्ब्रह्म यद्ब्रह्म तज्ज्योतिः
4. ऊर्ध्वमूलं त्रिपाद्ब्रह्म
— एको ऽश्वत्थनामैतद्ब्रह्म
5. ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्यधिपतिवत्येषा
— एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म Praśna. 5. 2.
12. अन्नकामेनेदं प्रकल्पितं ब्रह्मणा
14. यः कालं ब्रह्मेत्युपासीत
16. तस्मादादित्यात्मा ब्रह्म
— आदित्यो ब्रह्मेत्येके
18. यदा पश्यन् पश्यति..ब्रह्म योनिम्
20. ब्रह्म तर्केण पश्यति
22. द्वे वाव ब्रह्मणी अभिध्येये शब्दश्चाशब्दश्च
— परे ऽशब्दे ऽव्यक्ते ब्रह्मण्यस्तंगताः
— द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये शब्दब्रह्म परं च यत्
— शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति Brahma. 17.

Maitri. 6. 24. आदित्यवर्णमूर्जस्वन्त
— तद्ब्रह्म चामृतं शुक्रम
26. यदुज्ज्वलत्येतद्ब्रह्मणो
पम्
27. ब्रह्मणो वावैतत्तेजः
29. ब्रह्मणः पन्थानमारुह्य
33. अथात्मविदुक्षिप्य
प्रायच्छत्
34. यथैवं ब्रह्मणि स्यात्
— ब्रह्मणः पदव्योमानुस
विरुद्धम्
35. नमो ब्रह्मणे सर्वक्षिते
— एतद्ब्रह्मैतदमृतमेतद्भर्गः
— आपो ज्योती रसोऽमृत
Śiras. 6; Prâṇâg
Mahânâr. 13.1; 15.
38. तद्ब्रह्माभिष्टूयमानम्
7. 10. देवासुराः..ब्रह्मणोऽभि
प्रयाताः
11. त्रिष्वेकपाच्चरेद्ब्रह्म

Muṇḍ.1. 1. 1. ब्रह्मा देवानां प्रथमः
भूव
2. अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्म
8. तपसा चीयते ब्रह्म
9. तस्मादेतद्ब्रह्म..जायते
2. 1. 10. कर्म तपो ब्रह्म परामृतम्
2. 2. 2. तदेतदक्षरं ब्रह्म
4. ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते Dhyâna. 19.
9. विरजं ब्रह्म निष्कलम्
11. ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म
श्चाद्ब्रह्म दक्षिणतः
— ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरि
3. 2. 9. ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति

Mahânâr. 1. 6. तदेव ब्रह्म परमं कवी
7. तदेव शुक्रममृतं तद्ब्रह्म
3. 18. सत्यो ब्रह्मा प्रचोदयात्
5. 10. ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहम
यो ऽहमस्मि ब्रह्माहम

âr. 7. 6. नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्तु
8. 1. ब्रह्मैतदुपास्यैतत्तपः
9. 1. ब्रह्मा देवानाम् 17. 8.
13. उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानम्
11. 13. स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः Kaivalya. 8.
12. 1. ऋतं सत्यं परं ब्रह्म Nrip. 1. 6.
3. ब्रह्मणः सायुज्यं . . आप्नोति
13. 1. तद्ब्रह्म तदाप आपो ज्योतिः 15. 3.
15. 1. अक्षरं ब्रह्म सम्मितम्
— ब्रह्म जुषस्व नः
4. ओं तद्ब्रह्म
6. त्वं ब्रह्मा त्वं प्रजापतिः
10. ब्रह्मणि स आत्मामृतत्वाय 16. 1.
16. 4. त्वया जुष्ट ऋषिर्भवतु . . या ब्रह्मा
17. 5. ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु
6. ब्रह्म मेतु मां . . ब्रह्म मे ऽव
7. ब्रह्ममेधया . . ब्रह्म मे ऽव
8. ब्रह्ममेधवा . . ब्रह्म मे ऽव
21. 2. न्यास इति ब्रह्मा ब्रह्मा हि परः परो हि ब्रह्मा
23. 1. न्यास इत्याहुर्मनीषिणो ब्रह्माणम्
— ब्रह्मा विश्वः कतमः
— स एव परमेष्ठी ब्रह्मात्मा
24. 1. ब्रह्मन् त्वमसि विश्वसृक्
— ब्रह्मणे त्वा महसे
— ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद्ब्रह्मणो महिमानम्
25. 1. मनो ब्रह्मा Garbha. 5.
a. 1. 1. परं ब्रह्मान्वेषमाणाः
2. 6. यशः क्षत्रं ब्रह्म च
4. 4. अहरहर्ब्रह्म गमयाति

Praśna. 6. 7. एतावदेवाहमेतत्परं ब्रह्म वेद
Kaivalya. 6. शिवं प्रशान्तं . . ब्रह्म योनिम्
10. ब्रह्म परमं याति
16. यत् परं ब्रह्म सर्वात्मा
17. तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा
19. तद्ब्रह्माद्वयमस्म्यहम्
Mâṇḍû. 2. सर्वं ह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ब्रह्म Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1; Râmot. 3.
Gauḍa. 1. 25. प्रणवो ब्रह्म निर्भयम्
26. प्रणवो ह्यपरं ब्रह्म
3. 1. जाते ब्रह्मणि वर्त्तते
12. परं ब्रह्म प्रकाशितम्
33. ब्रह्म ज्ञेयमजं नित्यम्
35. तदेव निर्भयं ब्रह्म
46. निष्पन्नं ब्रह्म तत्तदा
Nṛip. 1. 4. स ब्रह्मा स शिवः स हरिः
6. ब्रह्मणो ऽधिपतिः
— तस्मादिदं साम सच्चिदानन्दमयं परं ब्रह्म
7. ब्रह्मणः सायुज्यं सलोकतां यन्ति
— आत्मनि ब्रह्मण्यानुष्टुभं जानीयात्
— परं ब्रह्म तारकं व्याचष्टे
2. 1. ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः Nṛisut. 3; Śikhâ. 1.
4. 3. यो वै नृसिंहः . . यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः (1)
5. 2. ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा नाभ्याम्
Nṛisut. 1. आत्मानमोमिति ब्रह्मणैकीकृत्य ब्रह्म चात्मना ओमित्येकीकृत्य
— त्रिशरीरं परं ब्रह्मानुसन्दध्यात्
2. अमृतमभयं ब्रह्मैव

Nṛisut. 2. इममात्मानं परं ब्रह्मानुसन्दध्यात्
3. अकारं ब्रह्माणं नाभौ
— ब्रह्माणमेव . . सम्पूज्य
4. परमं ब्रह्मोङ्कारम् (ter).
— परमं ब्रह्म संभाव्य
— आत्मानं . . ब्रह्मणैकीकुर्यात्
Râmot. 3.
— योगारूढो ब्रह्मण्येवानुष्टुभं सन्दध्यात्
5. नृसिंहे ब्रह्मणि वर्त्तते (bis).
— ब्रह्म भवति य एवं वेद (bis).
— नृसिंहे देवे परे ब्रह्मणि वर्त्तते . . तस्मादयं . . ब्रह्मैव
— एतदेव ब्रह्मापि सर्वज्ञम्
— परमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात्
— परमेव ब्रह्म भवति य एवं वेद
6. एवंवित् स्वप्रकाशं परमेव ब्रह्म भवति
— प्रणवमेव परमं ब्रह्म
— ओङ्कारे परे ब्रह्मणि पर्यवसितः
— आत्मनैवात्मानं परमं ब्रह्म पश्यति
✓ 7. ब्रह्मैवेदं सर्वं सच्चिदानन्दरूपम्
— तस्य ब्रह्मणो नाम ब्रह्मेति
— मकारेण परमं ब्रह्मान्विच्छेत्
— मकारेण ब्रह्मणा सन्दध्यात्
— ब्रह्म ह वा इदं सर्वम्
— सततं ह्येतद्ब्रह्म
— अकारेण परमं ब्रह्मान्विष्य
— एनं मकारार्थेन परेण ब्रह्मणैकीकुर्यात्
9. ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी

Nṛisut. 9. सिद्धं हि ब्रह्म
— विष्णुरीशानो ब्रह्मा
— तद्वा एतद्ब्रह्माद्वयं बृहत्त्वा
— आत्मा ब्रह्मैव ब्रह्मात्मैव

Brahmav. 1. ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्
3. ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म
Amṛit. 20; Gîtâ. 8. 13
5. पृथिवी ब्रह्म एव च
14. तत्परं ब्रह्म गीयते
— ध्रुवं हि चिन्तयेद्ब्रह्म

Chûl. 10. मंत्रोपनिषदं ब्रह्म
17. यस्मिन् सर्वमिदं प्रोतं ब्रह्म
स्थावरजङ्गमम्
21. ब्रह्म ब्रह्मविधानं तु

Siras. 1. ब्रह्माब्रह्माहम्
— ब्रह्म ब्राह्मणैश्च (तर्पयामि)
2. यो वै रुद्रः . . यश्च ब्रह्मा
3. यद्वैगुतं तत्परं ब्रह्म यत्
ब्रह्म स एकः
4. ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयं
— कस्मादुच्यते परं ब्रह्म
— तस्मादुच्यते परं ब्रह्म
5. यस्माद्भूतमिदं पाशुपतं
तस्माद्ब्रह्म
6. अण्डाद्ब्रह्मा भवति ब्रह्मा
वायुः

Sikhâ. 1. चतुष्पादेतदक्षरं परं ब्रह्म
2. ब्रह्मा बृहत् सर्वकरणा
सम्प्रतिष्ठाप्य
— ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्राः सम्प्र
यन्ते
— ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च

Mahâ. 1. नारायण आसीन्न ब्रह्मा
3. तत्र ब्रह्मा चतुर्मुखो ऽजाय
— स ब्रह्मा स ईशानः

Brahma. 1. विरजं निष्कलं शुभ्रमक्ष
यद्ब्रह्म
— परापरं ब्रह्मात्मा
2. चतुष्पादं ब्रह्म विभाति

hma. 2. जागरिते ब्रह्मा
— यत्परं ब्रह्म विभाति
— एकमेव परं ब्रह्म विभाति
— यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रम्
ṇâg. 1. त्वं यज्ञस्त्वं ब्रह्मा त्वं रुद्रः
2. विश्वं तु त्वाहुतयः सर्वा यत्र ब्रह्मा
4. इदं वा ब्रह्म यः पठेत्
a. 16. द्वादश्यां ब्रह्म शाश्वतम्
17. सदोदितं परं ब्रह्म
hmab. 6. ब्रह्म सम्पद्यते तदा
8. तदेव निष्कलं ब्रह्म
— तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा ब्रह्म सम्पद्यते ध्रुवम्
16. शब्दाक्षरं परं ब्रह्म
21. तद्ब्रह्माहमिति स्मृतम्
âna. 8. ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः Gîtâ. 5. 20.
12. ब्रह्माणं रक्तगौराङ्गम्
5. अव्यक्तं ब्रह्म निराश्रयम्
9. तद्ब्रह्माणं तदध्यात्मम्
14. तद्राद्यं ब्रह्म तत्परम्
ṣa. 1. यद्ब्रह्माभ्युदय दिवं च लोकम्
— ब्रह्मणे ऽथर्वणे . . इति हुत्वा
4. ब्रह्म प्रपद्यते
5. तद्ब्रह्म तत्परायणम्
u. 1. त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं सर्वम्
2. त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारः
— अहं ब्रह्माहं यज्ञो ऽहं वषट्कारः
1. ब्रह्माणमिदमब्रुवन्
3. ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यन्तम् (so MSS.)
— सत्यं ज्ञानमनन्तमानन्दं ब्रह्म
4. तत्पदार्थः परमात्मा परं ब्रह्मेत्युच्यते

Haṁsa. 1. स वै ब्रह्म परमात्मेत्युच्यते
2. दशमं परमं ब्रह्म भवेत्
Parama. 3. तद्ब्रह्माहमस्मि (MSS. omit अस्मि)
Aruṇeya. 3. खल्वहं ब्रह्म सूत्रम्
— ब्रह्म सूत्रमहमेव विद्वान्
Nâr. 1. नारायणाद्ब्रह्मा जायते
2. ब्रह्मा च नारायणः
5. प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषम् Atmapra. 1.
— कारणरूपमकारं परं ब्रह्म Atmapra. 1.
Gâruḍa 1. ब्रह्मा नारदाय . . प्रायच्छत्
3. इत्याह भगवान् ब्रह्मा
Jâbâla. 1. रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे Râmot. 1.
1. तद्ब्रह्मैतदुपासितव्यम्
Vâsu. 1. मद्भक्तैर्ब्रह्मादिभिर्धारितम्
2. ब्रह्मैवाहमस्मीति भावयन्
3. मद्रूपमव्ययं ब्रह्म
— परं ब्रह्म भवाम्यहम्
Gopî. 2. परं ब्रह्मैव विष्णुः
4. मायाशबलितं ब्रह्मासीत्
— महदाद्या ब्रह्मणो महामायासंमिलितात्
— मायासहितब्रह्मसंभोगवशात्
5. सगुणं ब्रह्म चिद्घनानन्दैकरूपम्
— परब्रह्मानन्दैकरूपम्
— श्रीकृष्णाख्यं परं ब्रह्म
Kṛish. 6. भक्ते ब्रह्मणि राजसी
14. कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम्
22. तच्चक्रं ब्रह्म रूपधृक्
Skanda. 5. स एव हि परं ब्रह्म तद्ब्रह्माहं न संशयः
14. वेदात्मकं ब्रह्म निजं विजानते
Râmap. 6. परं ब्रह्माभिधीयते

Râmap. 7. ब्रह्मणो रूपकल्पना
10. ब्रह्मण्येवं हि पञ्चधा
Râmot. 2. तदेव तारकं ब्रह्म त्वं विद्धि
3. परं ब्रह्म रामचन्द्रश्चिदात्मकः सो ऽहम्
4. त्वत्तो वा ब्रह्मणो वापि
5. श्रीरामेणैवं शिक्षितो ब्रह्मा
— मनसा संस्मरन् ब्रह्मा
— यः परं ब्रह्म (4 MSS. omit).
— यत्तारकं ब्रह्म (4).
— यो ब्रह्मा विष्णुरीश्वरः
Mukti. 1. 31. ब्रह्मकैवल्यजाबालश्वेताश्वः
1. *vide* सरस्वतीरहस्य
2. 64. ब्रह्म न ब्रह्मवित्स्वयम्
Gîtâ. 3. 15. ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्
— तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म
4. 24. ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्
— ब्रह्मैव तेन गन्तव्यम्
31. यान्ति ब्रह्म सनातनम्
32. वितता ब्रह्मणो मुखे
5. 6. ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति
10. ब्रह्मण्याधाय कर्माणि
19. निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः
6. 38. विमूढो ब्रह्मणः पथि
7. 29. ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नम्
8. 1. किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मम्
3. अक्षरं ब्रह्म परमम्
17. अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः
24. तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म
10. 12. परं ब्रह्म परं धाम
11. 15. ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थम्
37. गरीयसे ब्रह्मणो ऽप्यादिकर्त्रे
13. 12. अनादिमत्परं ब्रह्म
30. ब्रह्म सम्पद्यते तदा
14. 3. मम योनिर्महद्ब्रह्म
4. तासां ब्रह्म महद्योनिः

Gîtâ. 14. 27. ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम्
17. 23. ओं तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणः
18. 50. यथा ब्रह्म तथाप्नोति नि[illegible]ध मे

ब्रह्मनाल

Mukti. 1. 19. काश्यां तु ब्रह्मनाले [illegible]

ब्रह्मनिर्वाण

Gîtâ. 2. 72. ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति
5. 24. स योगी ब्रह्मनिर्वाणम्
25. लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम्
26. अभितो ब्रह्मनिर्वाणम्

ब्रह्मनिष्ठ

Muṇḍ. 1. 2. 12. श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्
3. 2. 10. श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः
Praśna. 1. 1. ते हैते ब्रह्मपरा ब्रह्मनि[illegible]

ब्रह्मनीड

Maitri. 6. 15. संवत्सरो वै..ब्रह्मनी[illegible]

ब्रह्मपथ

Chhâ. 4. 15. 6. एष देवपथो ब्रह्मपथः
Maitri. 6. 30. एषो ऽत्र ब्रह्मपथः

ब्रह्मपदवी

Maitri. 6. 30. एषात्र ब्रह्मपदवी

ब्रह्मपर

Śwet. 5. 1. *vide* ब्रह्मपुर
Praśna. 1. 1. ते हैते ब्रह्मपरा ब्रह्मनि[illegible]

ब्रह्मपुर

Chhâ. 8. 1. 1. अस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं [illegible]रीकं वेश्म 2.
4. ब्रह्मपुरे सर्वं समाहित[illegible]
5. एतत्सत्यं ब्रह्मपुरम्
Śwet. 5. 1. द्वे अक्षरे ब्रह्मपुरे [illegible]
(so Nârâyaṇa; the[illegible] MSS. have ब्रह्मपरे[illegible]

.2. 2. 7. दिव्ये ब्रह्मपुरे..आत्मा प्रतिष्ठितः

na. 1. दिव्ये ब्रह्मपुरे सम्प्रतिष्ठिताः
— दिव्ये ब्रह्मपुरे..यद्ब्रह्म विभाति

pra. 1. यदिदं पुरं ब्रह्मपुरमिदं पुण्डरीकं वेश्म

ब्रह्मपुरुष

3. 13. 6. एते पञ्च ब्रह्मपुरुषाः
— एतान् पञ्च ब्रह्मपुरुषान् (bis).

ब्रह्मपूत

âr.14. 2. ब्रह्मपूता पुनातु माम्
Prâṇâg. 1.
5. 3. स ब्रह्मपूतो भवति

ब्रह्मप्राप्त

6. 18. ब्रह्मप्राप्तो विरजो ऽभूत्

ब्रह्मबन्धु

6. 1. 1. ब्रह्मबन्धुरिव भवति

ब्रह्मभाव

20. तेनैव ब्रह्मभावेन परमानन्दमश्नुते

ब्रह्मभावमय

na. 2. ब्रह्मभावमयं सूत्रम्

ब्रह्मभुवन

8. 16. आब्रह्मभुवनाल्लोकाः

ब्रह्मभूत

5. 24. ब्रह्मभूतो ऽधिगच्छति
6. 27. ब्रह्मभूतमकल्मषम्
18. 54. ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा

ब्रह्मभूय

" 5. ब्रह्मभूयाय भवति
14. 26. ब्रह्मभूयाय कल्पते
18. 53.

ब्रह्ममय

Kaush. 1. 7. ब्रह्ममयो महानिति
Nṛip. 5. 2. ब्रह्ममयममृतमयं भवति

ब्रह्ममुख

Mukti. 1. ब्रह्ममुखाद्वेदान्तश्रवणादि कृत्वा

ब्रह्ममेधा

Mahânâr.17. 7. ब्रह्ममेधया मधुमेधया ब्रह्म मे ऽव
8. ब्रह्ममेधवा मधुमेधवा ब्रह्म मे ऽव (मेधवा छान्दसो यास्थाने वाशब्दः स एवार्थः Nârâyaṇa).

ब्रह्मयज्ञ

Maitri. 1. 1. ब्रह्मयज्ञो वा एष यत्पूर्वेषां चयनम्

ब्रह्मयशस्

Kaush. 1. 5. तं ब्रह्मयशः प्रविशति

ब्रह्मयोगयुक्तात्मन्

Gîtâ. 5. 21. स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा

ब्रह्मयोनि

Śwet. 5. 6. तद्ब्रह्मा वेदते ब्रह्मयोनिम्
Muṇḍ.3. 1. 3. यदा पश्यः पश्यते..पुरुषं ब्रह्मयोनिम्
Mahânâr. 23. 1. विज्ञानादानन्दो ब्रह्मयोनिः
Nṛip. 3. 1. तां विद्यां ब्रह्मयोनिं सरूपाम्

ब्रह्मरन्ध्र

Haṁsa. 1. ब्रह्मरन्ध्रं ध्यायन्
— आधाराद्ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तम्
Vâsu. 3. ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये

ब्रह्मरस

Kaush. 1. 5. तं ब्रह्मरसः प्रविशति

ब्रह्मरूप

Krish. 15. ब्रह्मरूपा ऋचः स्त्रियः

ब्रह्मरूपिन्

Kshur. 17. विरजा ब्रह्मरूपिणी

ब्रह्मर्षि

Swet. 4. 15. यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयः

ब्रह्मलोक

Kaush. 1. 3. स ब्रह्मलोकं [आगच्छति] — एतस्य ब्रह्मलोकस्यारो हृदः

Chhâ. 8. 3. 2. एतं ब्रह्मलोकं न विन्दन्ति

8. 4. 1. अपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः

2. सकृद्विभातो ह्येष ब्रह्मलोकः

3. ये..ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणानुविन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः

8. 5. 3. अरश्च ह वै ण्यश्चार्णवौ ब्रह्मलोके

4. य एवैतावरं च ण्यं चार्णवौ ब्रह्मलोके ब्रह्मचर्येणानुविन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः

8. 12. 6. ब्रह्मलोके तं..देवा आत्मानमुपासते

8. 13. 1. अकृतं..ब्रह्मलोकमभिसंभवामि

8. 15. 1. ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते

Brih. 3. 6. 1. ब्रह्मलोकेषु गार्गीति कस्मिन्नु खलु ब्रह्मलोका ओताश्च प्रोताश्चेति

4. 3. 32. एष ब्रह्मलोकः सम्राडिति 33; 4. 4. 23.

33. स एको ब्रह्मलोक आनन्दः

6. 2. 15. ब्रह्मलोकान् गमयति तेषु ब्रह्मलोकेषु..वसन्ति

Katha. 2. 17. ब्रह्मलोके महीयते 3. 16. Gopî. 1.

Katha. 6. 5. छायातपयोरिव ब्रह्म

Maitri. 6. 30. ब्रह्मलोकमतिक्रम्य

Muṇḍ. 1. 2. 6. एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः

3. 2. 6. ते ब्रह्मलोकेषु परान्त Mahânâr. 10. 6; valya. 4.

Praśna. 1. 15. तेषामेवैष ब्रह्मलोकः

16. तेषामसौ विरजो ब्रह्म

5. 5. स सामभिरुन्नीयते लोकम्

Gopî. 5. सर्वान्वेदान्.. ब्रह्म स्थापयामास

Amṛita. 2. ब्रह्मलोकपदान्वेषी

ब्रह्मलोकग

Gopî. 5. श्रुतयो ब्रह्मलोकगाः

ब्रह्मलोकस्थ

Mukti. 1. अत एव ब्रह्मलोकस्था

ब्रह्मवन्त्

Tait. 3. 10 4. तद्ब्रह्मेत्युपासीत ब्रह्मवा भवति

ब्रह्मवर

Gopî. 5. इति ब्रह्मवरं लब्ध्वा

ब्रह्मवर्चस

Kaush. 2. 15. यशो ब्रह्मवर्चसं कीर्तिस्त्वा जुषतामिति

4. 8. पूर्यते प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन

16. प्रजायते प्रजया..ब्रह्मवर्चसेन

Chhâ. 2. 16. 2. विराजति प्रजया पशुब्रह्मवर्चसेन

3. 13. 3. ब्रह्मवर्चसमन्नाद्यमित्युपासीत

.3. 18. 3. भाति च तपति च..ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद 4, 5, 6.
5. 12. 2. भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले 5. 13. 2; 5. 14. 2; 5. 15. 2; 5. 16. 2; 5. 17. 2.
5. 19. 2. तृप्यति प्रजया..ब्रह्मवर्चसेन 5. 20. 2; 5. 21. 2 5. 22. 2; 5. 23. 2.
6. 4. 28. श्रिया यशसा ब्रह्मवर्चसेन
1. 3. 1. सह नौ ब्रह्मवर्चसम्
4. सन्धीयते..ब्रह्मवर्चसेन
3. 6. 1. महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन 3. 7. 1; 3. 8. 1; 3. 9. 1.

ब्रह्मवर्चसिन्

2. 12. 2. ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति 3. 13. 3.

ब्रह्मवादिन्

2. 24. 1. ब्रह्मवादिनो वदन्ति Swet. 1. 1; Kathaśrú. 1.
5. 1. मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव
3. 21. ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम्
6. 7. इत्याहुर्ब्रह्मवादिनः (ter).
— एष भर्गो इति रुद्रो ब्रह्मवादिनः
2. 2. अक्षराणां न्यासमुपदिशन्ति ब्रह्मवादिनः
3. 1. मीमांसन्ते ब्रह्मवादिनः
3. यदुक्तं ब्रह्मवादिभिः
5. व्याख्यातं ब्रह्मवादिभिः
3. इति वदन्ति ब्रह्मवादिनः
17. 24. सततं ब्रह्मवादिनाम्

ब्रह्मविद्

9. 2. ब्रह्मविदिव वै सोम्य भासि
14. 2. ब्रह्मविद इव सोम्य ते मुखं भाति

Brih. 3. 7. 1. स ब्रह्मवित्स लोकवित्
4. 4. 8. तेन धीरा अपि यन्ति ब्रह्मविदः
9. तेनैति ब्रह्मवित्पुण्यकृत्
Tait. 2. 1. 1. ब्रह्मविदाप्नोति परम्
Katha. 3. 1. छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति
Śwet. 1. 1. अधिष्ठिताः केन..ब्रह्मविदः
Maitri. 6. 18. ब्रह्मविदो दोषा नाश्रयन्ति
Muṇḍ. 1. 1. 4. यद्ब्रह्मविदो वदन्ति
3. 1. 4. एष ब्रह्मविदां वरिष्ठः
Brahma. 3. इति ब्रह्मविदो विदुः
Dhyâna. 8. ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः Gîtâ. 5. 20.
Jâbâla. 2. एतद्वै सन्धिं सन्ध्यां ब्रह्मविद उपासते Râmot. 4.
5. तेनैति सन्न्यासी ब्रह्मवित्
Mukti. 2. 64. ब्रह्म न ब्रह्मवित्स्वयम्
Gîtâ. 8. 24. ब्रह्मविदो जनाः

ब्रह्मविद्या

Chhâ. 7. 1. 2 अध्येमि..ब्रह्मविद्याम्
4. नाम वै..ब्रह्मविद्या
7. 2. 1. वाग्वै..विज्ञापयति..ब्रह्मविद्याम्
7. 7. 1. विज्ञानेन वै..विजानाति ..ब्रह्मविद्याम्
Brih. 1. 4. 9. ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तः
Maitri. 2. 3. इयं ब्रह्मविद्या सर्वोपनिषद्विद्या वा
6. 29. अनया ब्रह्मविद्यया..ब्रह्मणः पन्थानमारूढाः
Muṇḍ. 1. 1. 1. ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्
2. तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्याम्
1. 2. 13. प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्
3. 2. 10. तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत

Kaivalya. 1. अधीहि भगवन् ब्रह्मविद्याम्
Brahmav. 1. ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि Gâruḍa. 1.
2. रहस्यं ब्रह्मविद्यायाम्
Brahma. 1. तस्मै स होवाच ब्रह्मविद्यां वरिष्ठाम्
Amṛita. 1. परमं ब्रह्मविद्यायाः
Haṁsa. 1. ब्रह्मविद्याप्रबोधो हि केनोपायेन जायते
Krish. 7. देवकी ब्रह्मविद्या सा
Mukti. 1. *vide* सरस्वतीरहस्य

ब्रह्मविद्याविद्

Maitri. 4. 4. अस्ति ब्रह्मेति ब्रह्मविद्याविदब्रवीत्

ब्रह्मविद्वस्

Kaush. 1. 4. ब्रह्मविद्वान् ब्रह्माभिप्रैति — ब्रह्मविद्वान् ब्रह्मैवाभिप्रैति

ब्रह्मविधान

Chûl. 21. ब्रह्म ब्रह्मविधानं तु

ब्रह्मविषय

Maitri. 6. 35. एतच्छुक्रमेतदमृतमेतद्ब्रह्मविषयम्

ब्रह्मशायिन्

Chûl. 21. लीनास्या ब्रह्मशायिने

ब्रह्मशाला

Maitri. 6. 28. एवं ब्रह्मशालां विशेत्

ब्रह्मसंसद्

Katha. 3. 17. य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि

ब्रह्मसंस्थ

Chhâ. 2. 23. 2. ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति

ब्रह्मसंस्पर्श

Gîtâ. 6. 28. सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शम्

ब्रह्मसदन

Jâbâla. 1. सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसद (ter). ; Râmot. 1 (ter

ब्रह्मसलोकता

Mahânâr. 5. 3. गच्छेद्ब्रह्मसलोकताम्

ब्रह्मसूत्रपद

Gîtâ. 13. 4. ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव

ब्रह्मस्वरूप

Nṛip. 1. 2. ब्रह्मस्वरूपं निरञ्जनम्

ब्रह्महत्या

Mahânâr.17. 6. ब्रह्महत्यां वा एते घ्नन्ति
Kaivalya. 24. ब्रह्महत्यायाः पूतो भव
Nṛip. 5. 4. स ब्रह्महत्यां तरति Râ 2.
Râmot. 4. ब्रह्महत्यादिपापेभ्यः

ब्रह्महन्

Chhâ. 5. 10. 9. गुरोस्तल्पमावसन्ब्रह्म
Mahânâr.19. 1. ब्रह्महा गुरुतल्पगः
Parama. 3. स ब्रह्महा भवेत्

ब्रह्महन्तृ

Gopî. 5. ब्रह्महन्ता कृतघ्नश्च

ब्रह्माकार

Mukti. 2. 53. ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवा

ब्रह्माण्ड

Parama. 1. अयं ब्रह्माण्डं च हित्वा
Aruṇeya. 1. ब्रह्माण्डं च विसृजेत्
Râmot. 5. यो ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्भाति

ब्रह्मात्मन्

Haṁsa. 2. ब्रह्मात्मसन्निधौ

ब्रह्मादि

Vâsu. 2. ब्रह्मादयस्त्रयो मूर्तयः

5. एवं ब्रह्मादयो देवाः
11. ब्रह्मादीनां वाचको ऽयम्

ब्रह्मादिवन्दित

5. 10. ब्रह्मादिवन्दितं योगिध्येयम्

ब्रह्माद्य

16. ब्रह्माद्यं स्थावरान्तं च

ब्रह्माधिपति

ıâr.17. 5. ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिः
Nṛip. 1. 6.

ब्रह्मानन्द

1. ब्रह्मानन्दकारणम्
2. एष ब्रह्मानन्दरूपः
— ब्रह्मानन्दैकरूपम्
3. ब्रह्मानन्दैकविग्रहः
5. ब्रह्मानन्दामृतम् (3)

ब्रह्मानन्दकर

. 1. 25. ब्रह्मानन्दकरी शिवा

ब्रह्मामृत

a. 12. ब्रह्मामृतं पिबेत्

ब्रह्माग्नि

4. 24. ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्
25. ब्रह्माग्नावपरे यज्ञम्

ब्रह्मार्ह

. 1. 1. ब्रह्मार्होसि गौतम

ब्रह्मालङ्कार

. 1. 4. तं ब्रह्मालङ्कारेणालङ्कुर्वन्ति
— स ब्रह्मालङ्कारेणालङ्कृतः

ब्रह्मिष्ठ

3. 1. 2. यो वो ब्रह्मिष्ठः
— कथं नो ब्रह्मिष्ठो ब्रुवीत
— याज्ञवल्क्य ब्रह्मिष्ठो ऽसी३ इति
— नमो वयं ब्रह्मिष्ठाय कुर्मः

13

Praśna. 3. 2. ब्रह्मिष्ठो ऽसीति तस्मात्ते ऽहं ब्रवीमि
Kaṭhaśru. . 2. सो ऽब्रवीद्ब्रह्मिष्ठेभ्यः
— ततो वै ते ब्रह्मिष्ठा न वदन्तो न वदन्तः

ब्रह्मैक

Śiras. 3. विश्वरूपो ऽसि ब्रह्मैकस्त्वम्

ब्रह्मैकता

Maitri. 6. 35. एषा वै ब्रह्मैकता

ब्रह्मोडुप

Śwet. 2. 8. ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत . . स्रोतांसि

ब्रह्मोद्भव

Gîtâ. 3. 15. कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि

ब्रह्मोद्य

Bṛih. 3. 8. 1. न वै जातु युष्माकमिमं कश्चिद्ब्रह्मोद्यं जेता 12.

ब्रह्मोपनिषद्

Chhâ.3. 11. 3. य एतामेवं ब्रह्मोपनिषदं वेद

ब्राह्म

Kena. 32. ब्राह्मीं वाव त उपनिषदमब्रूम
Bṛih. 4. 4. 4. प्राजापत्यं वा ब्राह्मं वा
Śiras. 5. स गच्छेद्ब्राह्मं पदम्
Śikhâ. 1. प्रथमा रक्ता ब्राह्मी ब्रह्मदेवत्या
Nâda. 11. ब्राह्मीति द्वादशी मता
Nyâsa. 2. ब्राह्मीमिष्टिं यजेत्
Gîtâ. 2. 72. एषा ब्राह्मी स्थितिः

1. ब्राह्मण *adj.*

Âśrama. 1. गायत्रो ब्राह्मणः प्राजापत्यो बृहन्निति
— यावद्ग्रहणान्तं वा वेदस्य स ब्राह्मणः

Aśrama. 1. अथवा चतुर्विंशतिवर्षाणि गुरुकुलवासी स ब्राह्मणः (two MSS. read ब्राह्मः)

2. ब्राह्मण

Kaush. 2. 9. ब्राह्मणस्त एकं मुखम्

4. 19. प्रतिलोमरूपमेव तन्मन्ये यत् क्षत्रियो ब्राह्मणमुपनयेत

Chhâ. 1. 8. 2. ब्राह्मणयोर्वदतोर्वाचं श्रोष्यामि

2. 20. 2. ब्राह्मणान्न निन्देत्तद्व्रतम्

4. 1. 7. यत्रारे ब्राह्मणस्यान्वेषणा तदेनमृच्छेति

5. 3. 7. इयं न प्राक् त्वत्तः पुरा विद्या ब्राह्मणान् गच्छति

7. 15. 1. प्राणो ब्राह्मणः

2 ब्राह्मणं वा किञ्चिद्भृशमिव प्रत्याह

8. 14. 1. यशो ऽहं भवामि ब्राह्मणानाम्

Bṛih. 1. 4. 11. ब्राह्मणः क्षत्रियमधस्तादुपास्ते राजसूये

15 ब्राह्मणो मनुष्येषु (अभवत्)

— ब्राह्मणे मनुष्येषु (लोकमिच्छन्ते)

2. 1. 15. प्रतिलोमं वै तद्यद् ब्राह्मणः क्षत्रियमुपेयात्

3. 1. 1. कुरुपञ्चालानां ब्राह्मणाः

— कः स्विदेषां ब्राह्मणानामनूचानतमः

2. ब्राह्मणा भगवन्तः 3. 8. 1, 12; 3. 9. 27.

— ते ह ब्राह्मणा न दधृषुः 3. 9. 27.

— ते ह ब्राह्मणाश्चुक्रुधुः

3. 5. 1. ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्च.. व्युत्थाय भिक्षाचर्यं चरन्ति

Bṛih. 3. 5. 1. ब्राह्मणः पाण्डित्यं नि

— अमौनं च मौनं च निर्वि

थ ब्राह्मणः

— स ब्राह्मणः केन स्या

स्यात्तेनेदृश एव

3. 8. 8. तदक्षरं.. ब्राह्मणा अभि

दन्ति

10. एतदक्षरं विदित्वास्मा

काल्प्रैति स ब्राह्मणः

3. 9. 18. त्वां स्विदिमे ब्राह्मणा

ङ्गारावक्षयणक्रता३ इ

19. कुरुपञ्चालानां ब्राह्मणान

वादीः

4. 4. 21. प्रज्ञां कुर्वीत ब्राह्मणः

22. तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्म

विविदिषन्ति

23. एष नित्यो महिमा ब्रा

णस्य

— अविचिकित्सो ब्राह्मणो

वति

5. 1. 1. वेदो ऽयं ब्राह्मणा विदुः

6. 2. 8. इयं विद्येतः पूर्वं न कस्मि

ब्राह्मण उवास

6. 4. 12. यमेवंविद्वान् ब्राह्मणः

पति

28. य एवंविदो ब्राह्मणस्य

त्रो जायते

Tait. 1. 8. 1. ओमिति ब्राह्मणः प्रव

ाह

1. 11. 3. येके चास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्म

4. ये तत्र ब्राह्मणाः सम्म

Katha. 1. 7. वैश्वानरः प्रविशत्यतिथि

ह्मणो गृहान्

8. यस्यानश्नन् वसति ब्राह्म

गृहे

Maitri. 7. 10. ब्राह्मणो नाविदिकमर्थ

Mund. 1. 2. 12. ब्राह्मणो निर्वेदमायात्

hânâr. 15. 5. ब्राह्मणेभ्यो ह्यनुज्ञाता गच्छ देवि
17. 6. त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात्
— ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति 7, 8.
7. य इमं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् 8.
25. 1. एतौ वै सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वानभिजयति तस्माद्ब्राह्मणो महिमानमाप्नोति
l. 20. ब्राह्मणो नियतव्रतः
is. 1. ब्रह्म ब्राह्मणैश्च..ब्राह्मणान् ब्राह्मण्येन..तर्पयामि
4. ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति
7. य इदमथर्वशिरो ब्राह्मणोऽधीते
ā. 4. य इमां महोपनिषदं ब्राह्मणोऽधीते
ṇḍa. 3. अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा
— शतं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा
— सहस्रं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा
la. 5. अयज्ञोपवीती कथं ब्राह्मणः
i. 3. ब्राह्मणानां तु सर्वेषाम्
ot. 2. य एतत्तारकं ब्राह्मणो नित्यमधीते
ti. 1. 15. विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम
2. 46. ब्राह्मणस्य विजानतः
5. 18. ब्राह्मणे गवि हस्तिनि
9. 33. किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः
17. 23. ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च
18. 41. ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्

ब्राह्मणकुल

ma. 4. साधुवृत्तेषु ब्राह्मणकुलेषु

ब्राह्मणयोनि

10. 7. ब्राह्मणयोनिं वा क्षत्रिययोनिं वा वैश्ययोनिं वा

ब्राह्मणहन्

Chhâ. 7. 15. 2. ब्राह्मणहा वै त्वमसि
3. न ब्राह्मणहासीति

ब्राह्मणाच्छंसिन्

Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..को ब्राह्मणाच्छंसी
4. प्राणो ब्राह्मणाच्छंसी

ब्राह्मणादि

Chûl. 21. ये विदुर्ब्राह्मणादयः
Brahma. 3. कर्मण्यधिकृताः..ब्राह्मणादयः

ब्राह्मणायन

Bṛih. 6. 1. 4. बहवो मर्या ब्राह्मणायनाः ..अस्माल्लोकात्प्रयन्ति

ब्राह्मण्य

Gauḍa. 4. 85. ब्राह्मण्यं पदमद्वयम्
Siras. 1. ब्राह्मणान् ब्राह्मण्येन..तर्पयामि
Brahma. 3. ब्राह्मण्यं सकलं तस्य

ब्राह्मेष्टि

Nyâsa 1 ब्राह्मेष्टिं निर्वपेत्

ब्रू

Ait. 2. 1. ता एनमब्रुवन्नायतनं नः प्रजानीहि
2. ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति
3. ता अब्रुवन् सुकृतं बत
— ता अब्रवीद्यथायतनं प्रविशत
5. अशनायापिपासे अब्रूताम् ..स ते अब्रवीत्
Kaush. 1 3. तं ब्रह्माहाभिधावत मम यशासा
6. तमाह कोऽहमस्मीति सत्यमिति ब्रूयात्
— इदं सर्वमसीत्येवैनं तदाह

Kaush. 1. 7. तमाह केन मे पौंस्नानि नामान्याप्नोषीति प्राणेनेति ब्रूयात्
— प्रज्ञयैवेति ब्रूयात्तमाह आपो वै खलु मे
2. 1. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह कौषीतकिः
2. प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह पैङ्ग्यः
3. अर्थं ब्रूयाद्दूतं वा प्रहिणुयात्
6. उक्थं ब्रह्मेति ह स्माह शुष्कभृंगारः
15. यद्युवा उपाभिगदः स्यात् समासेनैवं ब्रूयात्
3. 2. तद्धैक आहुरेकभूयं वै प्राणा गच्छन्ति
3. तमाहुरुदक्रमीच्चित्तम्
7. अन्यत्र मे मनो ऽभूदित्याह (7 times; नौ..आहतुः bis).
4. 1. ब्रह्म ते ब्रवाणीति 19; Bṛih. 2. 1. 1.

Kena. 5. येनाहुर्मनो मतम्
16. ते ऽग्निमब्रुवन् जातवेद एतद्विजानीहि
17. अग्निर्वा अहमस्मीत्यब्रवीत्
20. वायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहि
21. वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीत्
24. इन्द्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि
32. उपनिषदं भो ब्रूहि..ब्राह्मीं वाव त उपनिषदमब्रूमेति

Chhâ. 1. 1. 8. यद्धि किंचानुजानात्योमित्येव तदाह
1. 7. 8. तस्मादु हैवंविदुद्गाता ब्रूयात्
1. 8. 6. यस्त्वेतर्हि ब्रूयान्मूर्धा ते विपतिष्यतीति 8.
2. 1. 2. तदुताप्याहुः साम्नैनमुपागादिति

Chhâ. 2. 1. 2. तदाहुरसाम्नैनमुपागात्
— असाधुनैनमुपागादित्येव तदाहुः
3. अथोताप्याहुः साम नो [illegible] नेति
— यत्साधु भवति साधु [illegible] त्येव तदाहुः
— असाधु वतेत्येव तदाहुः
2. 22. 3. स त्वा प्रतिवक्ष्यतीति [illegible] यात्
4. स त्वा प्रतिपेक्ष्यतीति [illegible] यात्..स त्वा प्रतिध[illegible] तीत्येनं ब्रूयात्
3. 14. 4. इति ह स्माह शाण्डिल्यः
3. 16. 2. स ब्रूयात्प्राणा वसवः
4. स ब्रूयात्प्राणा रुद्राः
6. स ब्रूयात्प्राणा आदित्याः
7. एतद्ध स्म वै तद्विद्वान महिदास ऐतरेयः
3. 17. 5. तस्मादाहुः सोष्यत्यसोष्ट
4. 1. 3. स युग्वानमिव रैक्कमात्थ
4. 3. 7. महान्तमस्य महिमानमा[illegible]
4. 4. 2. सत्यकाम एव जाबालो [illegible] वीथाः
4. 5. 2. ब्रह्मणश्च ते पादं ब्रवाणि [illegible] ब्रवीतु मे भगवान् 4. 6. [illegible] 4. 7. 3; 4. 8. 3.
4. 9. 2. भगवांस्त्वेव मे कामं ब्रू[illegible]
4. 14. 3. ब्रवीतु मे भगवानिति
5. 2. 3. यद्यप्येनच्छुष्काय स्था[illegible] ब्रूयात्
5. 3. 4. कथं सो ऽनुशिष्टो ब्रवी[illegible]
— मा भगवानब्रवीदनु [illegible] शिषामिति
6. कुमारस्यान्ते वाच[illegible] थास्तामेव मे ब्रूहीति Bṛih. 6. 2. 5.
5. 11. 6. तमेव नो ब्रूहीति

Bṛih. 4. 1. 2. अब्रवीन्मे जित्वा शैलिनिः similarly, in 3—7.
— यथा मातृमान्पितृमानाचार्यवान् ब्रूयात्तथा..अब्रवीत् 3—7.
— अब्रवीत्तु ते तस्यायतनं प्रतिष्ठां न मे ऽब्रवीदिति 3—7.
— स वै नो ब्रूहि 3—7.
4. चक्षुषा वै पश्यन्तमाहुरद्राक्षीरिति स आहाद्राक्षमिति
4. 2. 1. ब्रवीतु भगवानिति
4. 3. 14. तं नायतं बोधयेदित्याहुः
— अथो खल्वाहुर्जागरितदेश एवास्यैषः
— अत ऊर्ध्वं निमोक्षाय ब्रूहि 15, 16, 33.
4. 4. 1. एकीभवति न पश्यतीत्याहुः (similarly, 7 times more).
5. अथो खल्वाहुः काममय एवायं पुरुष इति
9. तस्मिञ्छुक्लमुत नीलमाहुः
5. 1. 1. इति ह स्माह कौरव्यायणीपुत्रः
5. 2. 1. ब्रवीतु नो भवानिति 2, 3.
— दाम्यतेति न आत्थेति
2. दत्तेति न आत्थेति
3. दयध्वमिति न आत्थेति
5. 7. 1. विद्युद्ब्रह्मेत्याहुः
5. 12. 1. अन्नं ब्रह्मेत्येक आहुस्तन्न तथा
— प्राणो ब्रह्मेत्येक आहुस्तन्न तथा
— तद्ध स्माह प्रातृदः पितरम्
— स ह स्माह पाणिना मा प्रातृद
5. 14. 4. य एव ब्रूयादहमदर्शमिति

Bṛih. 5. 14. 4. तस्मादाहुर्बलं सत्यादो...
8. यन्नु हो तद्गायत्रीविदब्रू...
6. 2. 6. मानुषाणां ब्रूहीति
8. को हि त्वैवं ब्रुवन्तमर्हति प्रत्याख्यातुमिति
6. 3. 12. एतं नापुत्राय वानन्तेवासि...ने वा ब्रूयात्
6. 4. 4. तद्विद्वानुद्दालक आरुणिरा...
— तद्विद्वान्नाको मौद्गल्य आ...
— तद्विद्वान्कुमारहारित आ...
28. एतमाहुरतिपिता बताभूः
Iśā. 10. अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदेवा...हुरविद्यया
13. अन्यदेवाहुः संभवादन्यदा...हुरसंभवात्
Tait. 1. 8. 1. ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्ना...
Katha. 1. 15. मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः
16. तमब्रवीत्प्रीयमाणः
22. त्वं च मृत्यो यन्न सुज्ञे...यमात्थ
29. यत्साम्पराये महति ब्रू...नस्तत्
2. 15. तत्ते पदं सङ्ग्रहेण ब्रवीमि
3. 4. इन्द्रियाणि हयानाहुः
— भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः
6. 10. तामाहुः परमां गतिम् Maitri. 6. 30.
12. अस्तीति ब्रुवतः
Śwet. 3. 19. तमाहुरग्र्यं पुरुषम्
Maitri. 1. 2. वरं वृणीष्वेति राजानम...वीत्
— स त्वं नो ब्रूहीति 7. 11
2. 1. शाकायन्यः सुप्रीतस्त...वीद्राजानम्
2. इत्याह भगवान्मैत्रिः
— इत्येवं ह्याह 4. 3; 6. 1 (b...) 3, 4, 5, 6, 7, 11, 12, 15, 16, 17, 18, 19, 22, 25, 26, 27, 28; 7. 8, 9.

ri. 2. 3. क्रतुं प्रजापतिमब्रुवन्
— यद्भगवन् वेत्सि तदस्माकं ब्रूहि
4. 4. अस्ति ब्रह्मेति ब्रह्मविद्याविदब्रवीत्
— इत्येवैतदाह यस्तपसापहतपाप्मा
— इत्येवैतदाह यः सुयुक्तो ऽजस्रं चिन्तयति
5. श्रेयः कतमो यः सो ऽस्माकं ब्रूहि
6. 7. इत्याहुर्ब्रह्मवादिनः (ter).
30. अत्रैका आहुः
31. को नियन्ता वेत्याह
7. 8. शमयाम इत्येवं ब्रुवाणाः
11. विनिर्गतं मातृकमेवमाहुः
ıânâr. 1. 6. तदेवर्त्तं तदु सत्यमाहुः
21. 2. अग्नय इत्याहुः
— अग्निहोत्रमित्याहुः
23. 1. न्यास इत्याहुर्मनीषिणो ब्रह्माणम्
24. 1. न्यासमेषां तपसामतिरिक्तमाहुः
śna. 1. 11. दिव आहुः परे अर्द्धे पुरीषिणम्
— सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितम्
3. 2. ब्राह्मिष्ठो ऽसीति तस्मात्ते ऽहं ब्रवीमि
6. 1. तमहं कुमारमब्रुवं नाहमिमं वेद
2. 1. वैतथ्यं सर्वभूतानां स्वप्न आहुः
3. वैतथ्यं तेन वै प्राप्तं स्वप्न आहुः प्रकाशितम्
5. एकमाहुर्मनीषिणः
26. एकत्रिंशक इत्याहुः
2. 4. देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्
3. 1; 4. 1, 3; 5. 1, 3; Nṛisut. 1. 7, 9.

Nṛip. 3. 1. शक्तिं बीजं च नो ब्रूहि
— यामिंद्रसेनेत्युत आहुः
4. 1. अङ्गमन्त्रान्नो ब्रूहि
3. कैर्मन्त्रैर्देवः स्तुतः प्रीतो भवति..तन्नो ब्रूहि
— इति तान् प्रजापतिरब्रवीत्
5. 1. महाचक्रं नाम चक्रं नो ब्रूहि
3. मन्त्रराजस्य..फलं नो ब्रूहि
Nṛisut. 7. किमिदमेवमित्यु इत्येवाहाविचिकित्सन्
8. एवं नैवामिति पृष्ट ओमित्येवाह
9. ब्रूतैष दृष्टो ऽदृष्टो वेति
— ब्रूह्येव भगवन्निति ते देवा ऊचुः
— आह ओमित्यनुजानीध्वम्
— ब्रूतैनमिति ज्ञातो ऽज्ञातश्च
— ब्रूतैवैनमात्मासिद्धमिति होवाच
Śiras. 1. सो ऽब्रवीदहमेकः प्रथममासीत्
5. रुद्रमेकत्वमाहुः (bis).
7. इत्याह भगवान्
Mahâ. 1. तदाहुरेको ह वै नारायणः
4. इत्याह भगवान् हिरण्यगर्भः
Brahma. 1. एवं सुषुप्तो ब्रूते
2. सूचनात्सूत्रमित्याहुः
Dhyâna. 16. तस्याहुर्बीजमाहत्य
Kaṭhaśru. 2. देवा ह वै समेत्य प्रजापतिमब्रुवन्
— सो ऽब्रवीद्ब्रह्मिष्ठेभ्यः
Piṇḍa. 1. ब्रह्माणमिदमब्रुवन्
Parama. 1. तं भगवानाह
Gâruḍa. 3. इत्याह भगवान् ब्रह्मा
Kâlâg. 2. इत्याह भगवान् कालाग्निरुद्रः

Jâbâla. 3. किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहि
4. प्राणं गच्छ स्वाहेत्येवमेवै-तदाह
Vâsu. 1. ऊर्ध्वपुण्ड्रविधिं..मे ब्रूहीति
Gopî. 5. एवं मुनिरब्रवीत्
— एवं मुनयो ऽब्रुवन्
Râmap. 42. सुग्रीवस्त्वाह
Râmot. 5. तन्नो ब्रूहि भगवन्
Mukti. 1. 51. मा मा ब्रूयाद्वीर्यवती तथा स्याम्
Gîtâ. 1. 2. राजा वचनमब्रवीत्
7. संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते
21. इदमाह महीपते
28. विषीदन्निदमब्रवीत्
2. 7. निश्चितं ब्रूहि तन्मे
3. 42. इन्द्रियाणि पराण्याहुः
4. 1. मनुरिक्ष्वाकवे ऽब्रवीत्
19. तमाहुः पण्डितं बुधाः
5. 1. तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्
8. 21. तमाहुः परमां गतिम्
10. 13. आहुस्त्वामृषयः सर्वे
— स्वयं चैव ब्रवीषि मे
11. 3. एवमेतद्यथात्थ त्वम्
35. नमस्कृत्वा भूय एवाह कृ-ष्णम्
14. 16. कर्मणः सुकृतस्याहुः
16. 8. जगदाहुरनीश्वरम्

भ

Maitri. 6. 7. भ इति भासयतीमाँल्लोकान्

भक्ति

Śwet. 6. 23. यस्य देवे परा भक्तिः
Kaivalya. 2. श्रद्धाभक्तिध्यानयोगात्
5. भक्त्या स्वगुरुं प्रणम्य
Vâsu. 3. भक्त्या जानाति वाथ यः
— मद्भक्त्या सिध्यति स्व
4. मय्यचला भक्तिश्चास्य धते
Kṛish. 26. वृन्दा भक्तिः प्रिया बुधैः
Râmot. 4. क्षेत्रे ऽस्मिन्योऽर्चयेद्भक्त्या
Mukti. 1. 4. भक्त्या शुश्रूषया..सुक
14. यस्तु पठते भक्तितो मयि
48. मद्भक्तिविमुखाय
Gîtâ. 8. 10. भक्त्या युक्तो योगबलेन चै
22. भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया
9. 14. नमस्यन्तश्च मां भक्त्या
26. यो मे भक्त्या प्रयच्छति
29. ये भजन्ति तु मां भक्त्या
11. 54. भक्त्या त्वनन्यया
13. 10. भक्तिरव्यभिचारिणी
18. 54. मद्भक्तिं लभते पराम्
55. भक्त्या मामभिजानाति
68. भक्तिं मयि परां कृत्वा

भक्तिमन्त्

Gîtâ. 12. 17. भक्तिमान्यः स मे प्रियः
19. भक्तिमान्मे प्रियो नरः

भक्तियोग

Mukti. 1. 16. भक्तियोगेन त्वापरे
Gîtâ. 14. 26. भक्तियोगेन सेवते

भक्त्युपहृत

Gîtâ. 9. 26. तदहं भक्त्युपहृतम्

भक्तृ

Śiras. 4. भक्ता ज्ञानेन भजति

भक्ष्

Chhâ. 5. 10. 4. तं देवा भक्षयन्ति
Bṛih. 1. 3. 24. राजानं भक्षयन्नुवाच
6. 2. 16. तांस्तत्र देवाः..भक्षयं

भग

Chhâ. 5. 2. 7. तुरं भगस्य धीमहि

6. 4. 5. पुनर्मामैत्विन्द्रियं पुनस्तेजः पुनर्भगः

1. 4. 3. तं त्वा भग प्रविशानि
— स मा भग प्रविश
— नि भगाहं त्वयि मृजे
3. यस्मिन् जाते भगे पूर्णे तस्मिन्नेव भगे रमेत्

भगवत्

1. 8. 3. भगवन्तावग्रे वदताम्
7. हन्ताहमेतद् भगवत्तो वेदानि 8.

1. 11. 1. भगवन्तं वा अहं विविदिषाणि
2. भगवन्तं वा अहमेभिः सर्वैरार्त्विज्यैः पर्यैशिषम्
— भगवतो वा अहमवित्त्यान्यानवृषि
3. भगवांस्त्वेव मे सर्वैरार्त्विज्यैरिति
4. मा भगवानवोचत् 6, 8.

1. 12. 2. अन्नं नो भगवानागायतु

4. 1. 8. त्वं नु भगवः सयुग्वा रैक्कः

4. 2. 2. अनु म एतां भगवो देवतां शाधि
4. अन्वेव मा भगवः शाधीति

4. 3. ब्रह्मचर्यं भगवति वत्स्याम्युपेयां भगवन्तमिति

5. 1. भगव इति प्रतिशुश्राव 4. 6. 2; 4. 7. 2; 4. 8. 2; 4. 14. 2.
2. ब्रवीतु मे भगवान् 4. 6. 3; 4. 7. 3; 4. 8. 3; 4. 14. 3.

9. 2. भगवांस्त्वेव मे कामे ब्रूयात्

1. 7. भगवन् को नः श्रेष्ठः
12. भगवन्नेधि त्वन्नः श्रेष्ठः

3. 1. अनु हि भगव इति
2. न भगव इति 3.

Chhâ. 5. 3. 4. भगवानब्रवीदनु त्वाशिषमिति
6. भगवन् गौतम वित्तस्य वरं वृणीथाः

5. 11. 2. भगवन्तो ऽयमारुणिः
4. भगवन्तो ऽयं कैकेयः
5. यक्ष्यमाणो वै भगवन्तः.. वसन्तु भगवन्तः

5. 12. 1. दिवमेव भगवो राजन्
(similarly, five times more).

6. 1. 4. कथं नु भगवः स आदेशः
7. न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुः
— भगवांस्त्वेवमेतद्ब्रवीतु

6. 5. 4. भूय एव मा भगवान् विज्ञापयतु 6. 6. 5; 6. 8. 7; 6. 9. 4; 6. 10. 3; 6. 11. 3; 6. 12. 3; 6. 13. 3; 6. 14. 3; 6. 15. 3; Nrisut. 7 (नो)

6. 12. 1. इदं भगवः.. भिन्नं भगवः ..इमा धाना भगवः.. न किञ्चन भगवः

7. 1. 1. अधीहि भगवः
2. ऋग्वेदं भगवो ऽध्येमि
3. सो ऽहं भगवो मन्त्रवित्
— सो ऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवान्..तारयतु
5. अस्ति भगवो..भूय इति ..तन्मे भगवान् ब्रवीतु (so in each Section to the 14th).

7. 16. 1. सो ऽहं भगवः सत्येनातिवदानीति
-- सत्यं भगवो विजिज्ञासे (similarly in each Section to the 23rd).

7. 24. 1. स भगवः कस्मिन् प्रतिष्ठितः

Chhâ. 7. 26. 2. भगवान् सनत्कुमारः
8. 7. 3. इति भगवतो वचो वेदयन्ते
4. यो ऽयं भगवो ऽप्सु परिख्यायते
8. 8. 1. भगव आत्मानं पश्यावः
3. आवां भगवः साध्वलङ्कृतौ
8. 9. 2. यथैव खल्वयं भगवः
8. 10. 3. यद्यपीदं भगवः शरीरम्
Bṛih. 2. 4. 2. यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी 4. 5. 3.
3. यदेव भगवान्वेद तन्मे ब्रूहीति
2. 4. 13. अत्रैव मा भगवानमूमुहत्
3. 1. 2. ब्राह्मणा भगवन्तः 3. 8. 1, 12 ; 3. 9. 27.
3. 7. 1. नाहं तद्भगवन्वेदेति
— नाहं तं भगवन्वेदेति
4. 2. 1. नाहं तद्भगवन्वेद यत्र गमिष्यामि . . ब्रवीतु भगवान्
4. यो नो भगवन्नभयं वेदयसे
4. 3. 14. सो ऽहं भगवते सहस्रं ददामि 15, 16, 33 ; 4. 4. 7.
4. 4. 23. सो ऽहं भगवते विदेहान्ददामि
4. 5. 4. यदेव भगवान्वेत्थ तदेव मे विब्रूहि
14. अत्रैव मा भगवान्मोहान्तमापीपिपत्
6. 1. 13. मा भगव उत्क्रमीः
6. 2. 4. वरं भगवते गौतमाय दद्मः
Tait. 3. 1. 1. अधीहि भगवो ब्रह्मेति 3. 2. 1; 3. 3. 1; 3. 4. 1; 3. 5, 1.
Śwet. 3. 11. सर्वव्यापी स भगवान्
5. 4. एवं स देवो भगवान् वरेण्यः
Maitri. 1. 2. आत्मविद्भगवाञ्छाकायन्यः
— भगवन्नाहमात्मवित्
3. भगवन् . . निःसारे ऽस्मिञ्छरीरे किं कामोपभोगैः

Maitri. 1. 4. भगवंस्त्वं नो गतिः
2. 1. भगवाञ्छाकायन्यः
— यः कतमो भगवा इ
2. इत्याह भगवान्मैत्रि
3. भगवता मैत्रिणाख्या
— भगवन् शकटमिवा मिदं शरीरम्
— यद्भगवन् वेत्सि तद ब्रूहि
4. भगवन् कथमनेनेदृशेष्टेन
3. 1. भगवन् यद्येवं . . सू
2. आत्मस्थं प्रभुं भगव नापश्यत्
4. 1. भगवन्नमस्ते ऽस्तु
5. भगवन्नभिवादयसि
6. 13. विश्वभृद्वै नामैषा तनूः तो विष्णोः
30. भगवानसावादित्यः
7. 10. भगवन् वयमात्मकाम
Muṇḍ. 1. 1. 3. कस्मिन्नु भगवो विज्ञा
Mahânâr. 3. 13. तन्नो भगवती प्रचोदय
22. 1. किं भगवन्तः परमं व
Praśna. 1. 1. भगवन्तं पिप्पलादमुप
3. भगवन् कुतो ह वा प्रजाः प्रजायन्ते
2. 1. भगवन् कत्येव देवाः विधारयन्ते
3. 1. भगवन् कुत एष प्राणो यते
4. 1. भगवन्नेतस्मिन्पुरुषे स्वपन्ति
5. 1. स यो ह वै तद्भगवन् ष्येषु प्रायणान्तमोङ्का भिध्यायीत
6. 1. भगवन् हिरण्यनाभः प्रश्नमपृच्छत

valya. 1. भगवन्तं परमेष्ठिनं परिसमेत्य
— अधीहि भगवन् ब्रह्मविद्याम्
la. 4. 82. यस्य कस्य च धर्मस्य ग्रहेण भगवानसौ (MSS. read यस्य धर्मस्य ग्रहणं भगवानपि सोऽश्नुते)
84. भगवानाभिरस्पृष्टः
3. 1. शक्ति . . ब्रूहि भगवः
4. 1. अङ्गमन्त्रान्नो ब्रूहि भगवः
3. तन्नो ब्रूहि भगवः
— ओं यो वै नृसिंहो देवो भगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः (similarly, 31 times).
5. 1. महाचक्रं नाम चक्रं नो ब्रूहि भगवः
3. मन्त्रराजस्य . . फलं नो ब्रूहि भगवः
9. इममेव नो भगवन्नोङ्कारमात्मानमुपदिश
— ब्रूह्येव भगवन्निति ते देवा ऊचुः
— पश्याम एव भगवन्
— नमस्ते भगवन् प्रसीद
6. विष्णुश्च भगवान्देवः
7. ध्यानक्रियाभ्यां भगवान् भुंक्ते
12. कालः प्राणश्च भगवान्
2. यो वै रुद्रः स भगवान् . . तस्मै वै नमो नमः (31 times).
3. य ईशानः स भगवान् महेश्वरः
4. कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः . . तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः
6. व्यापको हि भगवान् रुद्रः

Siras. 7. इत्याह भगवान्
Sikhâ. 1. अथर्वाणं भगवन्तं पप्रच्छ
Mahâ. 4. इत्याह भगवान् हिरण्यगर्भः
Brahma. 1. अङ्गिरसं भगवन्तं पिप्पलादम्
Nîla. 13. पग ता भगवो वप
Hamsa. 1. भगवन् सर्वधर्मज्ञ
Parama. 1. इति नारदो भगवन्तमुपगम्योवाच तं भगवानाह
Aruṇeya. 1. केन भगवन् कर्माणि . . विसृजामि
Gâruḍa. 3. इत्याह भगवान् ब्रह्मा
Kâlâg. 1. कालाग्निरुद्रं भगवन्तम्
— अधीहि भगवंस्त्रिपुण्ड्रविधिसतत्त्वम्
— तं होवाच भगवान्
2. इत्याह भगवान् कालाग्निरुद्रः
Jâbâla. 4. भगवन् सन्न्यासमनुब्रूहि
— एवमेवैतद्भगवन्निति वै याज्ञवल्क्यः 5.
Vâsu. 1. नमस्कृत्य भगवन्तम्
— श्रीभगवन्नूर्ध्वपुण्ड्रविधिं . . मे ब्रूहीति
— तं होवाच भगवान्वासुदेवः
Krish. 1. भगवन्तं सनातनम्
3. प्रोवाच भगवान् स्वयम्
10. वंशस्तु भगवान् रुद्रः
Râmap. 65. ओं नमो भगवते वासुदेवाय
Râmot. 4. ततः प्रसन्नो भगवान्
5. तन्नो ब्रूहि भगवन्निति
— यो वै श्रीरामः स भगवान् (47 times).
— य ओं नमो भगवते वासुदेवाय महाविष्णुः (44)
Gîtâ. 10. 14. न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुः
17. चिन्त्योऽसि भगवन्मया

भगवद्दृश

Chhâ. 4. 9. 3. श्रुतं ह्येव मे भगवद्दृशेभ्यः 7. 1. 3.

भगवल्लोक

Atmapra. 1. वैकुण्ठं भगवल्लोकं गमिष्यति

भगेश

Śwet. 6. 6. धर्मावहं पापनुदं भगेशम्

भग्नभाण्डोदधि

Krish. 19. भग्नभाण्डोदधिर्गृहे

भङ्ग

Mukti. 1. देहत्रयभंगं प्राप्य

भज्

Chhâ. 5. 19. 1. यद्भक्तं प्रथममागच्छेत्

Brih. 1. 5. 1. द्वे देवानभाजयत् 2.

Katha. 1. 13. स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्ते

Mahânâr. 17. 1. भवे भवे नातिभवे भजस्व माम्

20. 10. श्री मे भजत

Śiras. 4. ऋषिभिर्नान्यैर्भक्तैः

— भक्त्या ज्ञानेन भजति

Vâsu. 1. मद्भक्तैर्ब्रह्मादिभिर्धारितम्

Gopî. 5. तत्र भवत्यः . . कृष्णं भजिष्यथ

Krish. 6. भक्ते ब्रह्मणि राजसी

Râmap. 38. पूजितावीरपुत्रेण भक्तेन

94. तद्भक्ता ये लब्धकामांश्च भुक्त्वा

Mukti. 1. 21. मत्सारूप्यं भजत्ययम्

23. मत्सामीप्यं भजत्ययम्

24. मत्सायुज्यं . . भजेत्

49. मद्भक्ताय सुशीलाय

2. 72. मम रूपमीदृशं भजस्व

Gîtâ. 4. 3. भक्तो ऽसि मे सखा चेति

11. तांस्तथैव भजाम्यहम्

Gîtâ. 6. 31. सर्वभूतस्थितं यो मां [भ]जति

47. श्रद्धावान्भजते यो माम्

7. 16. चतुर्विधा भजन्ते माम्

21. यो यो यां यां तनुं भ[क्तः]

28. भजन्ते मां दृढव्रताः

9. 13. भजन्त्यनन्यमनसः

23. ये ऽप्यन्यदेवता भक्ता [य]जन्ते

29. ये भजन्ति तु मां भ[क्त्या]

30. भजते मामनन्यभाक्

31. न मे भक्तः प्रणश्यति

33. भक्ता राजर्षयस्तथा

— लोकमिमं प्राप्य भजस्व

34. मन्मना भव मद्भक्तः

10. 8. इति मत्वा भजन्ते मा[म्]

10. भजतां प्रीतिपूर्वकम्

12. 1. भक्तास्त्वां पर्युपासते

* 20. भक्तास्ते ऽतीव मे प्रि[याः]

भजन

Mukti. 1. 16. केचित्त्वन्नामभजनात्

18. मन्नामभजनात्कपे

भञ्ज्

Brahmab. 14. तद्भग्नं न च जानाति

Krish. 19. भग्नभाण्डोदधिर्गृहे

भट

Maitri. 7. 8. *vide* रङ्गावतारिन्

1. भद्र

Mahânâr. 9. 7. यद्भद्रं तन्न आसुव

16. 4. विश्वाची भद्रा सुम[न]माना

Nrip. 1. 1. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम भद्रं पश्येमाक्षभिर्यज[त्राः]

2. 4; Nrisut. 1.

7. भद्रं तृतीयस्यान्त्यम्

2. 3. भद्रमष्टमं (स्थाने . . . यात्)

* 12. 14, 16 यो मद्भक्तः . . .

2. 4. कस्मादुच्यते भद्रमिति
— यः स्वयं भद्रो भूत्वा सर्वदा भद्रं ददाति
— तस्मादुच्यते भद्रमिति
4. एष एव भद्रः
5. एष एव भद्र एष हि व्याप्ततमः
— एष एव भद्र एष ह्येवोत्कृष्टः
— एतदेव भद्रमेतद्धि महाविभूति
6. भद्रमभद्रं . . बुबुधिरे
). 32. भद्राय रघुवीराय (3 MSS. have रुद्राय for भ०)
6. 2. चन्द्राय नमो भद्राय नमः
i. 1. भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

2. भद्र

i. 1. 5. भद्रयज्ञायज्ञीये शीर्षण्ये

भद्रत्व

t. 7. भद्रत्वान्मृत्युमृत्युत्वात्

भद्रासन

a. 18. भद्रासनमथापि वा

भय

1. 3. 1. अपहन्ता ह वै भयस्य तमसो भवति
8. 9. 1. अप्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श 8. 10. 1; 8. 11 1.
1. 4. 2. तत एवास्य भयं वीयाय
— द्वितीयाद्वै भयं भवति
4. 3. 13. उतेवापि भयानि पश्यन्
20. यदेव जाग्रद्भयं पश्यति
2. 7. 1. एतस्मिन्नुदरमन्तरं कुरुतेऽथ तस्य भयं भवति
— तत्त्वेव भयं विदुषो मन्वानस्य
a. 1. 12. स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति

Katha. 6. 2. महद्भयं वज्रमुद्यतम्
3. भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः। भयादिन्द्रश्च . . धावति
Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
3. 5. सम्मोहो भयं . . इति तामसानि
7. 1. भास्वरो गुणभुग् भयः
Gauda. 1. 25. न भयं विद्यते क्वचित्
Nrisut. 6. द्वितीयाद्भयमेव पश्यन्तः
Sikhâ. 2. दुःखभयेभ्यः सन्तारयति
Amrita. 27. भयं क्रोधमथालस्यम्
Tejo. 12. लोभं मोहं भयं दर्पम्
14. न भयं सुखदुःखं च
Nyâsa. 2. भयं किमनुपश्यति
— गर्भवासभयाद्भीतः
Gopî. 1. मृत्योर्भयाच्च संरक्षणी
Gîtâ. 2. 34. भयाद्रणादुपरतम्
40. त्रायते महतो भयात्
10. 4. भयमभयमेव च
11. 45. भयेन च प्रव्यथितं मनो मे
12. 15. हर्षामर्षभयोद्वेगैः
18. 8. कायक्लेशभयात्
30. कार्याकार्ये भयाभये
35. यया स्वप्नं भयं शोकम्

भयदर्शिन्

Gauda. 3. 39. अभये भयदर्शिनः

भयानक

Gîtâ. 11. 27. दंष्ट्राकरालानि भयानकानि

भयावह

Swet. 2. 8. स्रोतांसि सर्वाणि भयावहानि
Gîtâ. 3. 35. परधर्मो भयावहः

भरगत्व

Maitri. 6. 7. तस्माद्भरगत्वाद्भर्गः

भरत

Maitri. 1. 4. मरुत्तभरतप्रभृतयः
Râmap. 50. शत्रुघ्नभरतौ
51. भरताद्यस्तु सुग्रीवम्
53. सुग्रीवं भरतं तथा
Râmot. 3. प्राज्ञात्मकस्तु भरतः
Mukti. 1. 1. सीताभरतसौमित्रिशत्रुघ्नाद्यैः

भरतर्षभ

Gîtâ. 3. 41. नियम्य भरतर्षभ
7. 11. कामोऽस्मि भरतर्षभ
16 ज्ञानी च भरतर्षभ
8. 23. वक्ष्यामि भरतर्षभ
13. 26. तद्विद्धि भरतर्षभ
14. 12. विवृद्धे भरतर्षभ
18. 36. शृणु मे भरतर्षभ

भरतश्रेष्ठ

Gîtâ. 17. 12. इज्यते भरतश्रेष्ठ

भरतसत्तम

Gîtâ. 18. 4. निश्चयं शृणु..भरतसत्तम

भरद्वाज

Briḥ. 2. 2. 4. इमावेव गोतमभरद्वाजाव-
यमेव गोतमो ऽयं भरद्वाजः
Râmot. 1. भरद्वाजः पप्रच्छ याज्ञव-
ल्क्यम्
5. भरद्वाजो याज्ञवल्क्यमुवाच

भर्गस्

Briḥ. 6. 3. 6. भर्गो देवस्य धीमहि
Maitri. 6. 7.
Maitri. 6. 7. अथ भर्गा इति..भाभिर्ग-
तिरस्य हीति भर्गो भर्जय-
तीति वैष भर्गा इति रुद्रः
— भरगत्वाद्भर्गः
34. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गः
Mahânâr. 15. 2.
Maitri. 6. 35. एतद्ब्रह्मैतदमृतमेतद्भर्गः
(bis).

भर्गाख्य

Maitri. 6. 7. सविता वै देवस्ततो यो
भर्गाख्यस्तं चिन्तयामि
— यो ह वा अमुष्मिन्नाि
निहितस्तारकोऽक्षिणि
भर्गाख्यः

भर्तृ

Briḥ. 1. 3. 18. भर्ता स्वानां श्रेष्ठः पुर
भवति
Gîtâ. 9. 18. गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी
13. 22. भर्ता भोक्ता महेश्वरः

भल्लाक्ष

Chhâ. 4. 1. 2. हो होयि भल्लाक्ष भ
(one MS. has भल्ला

1. भव

Mahânâr. 17. 1. भवे भवे नातिभवे
Mukti. 2. 28. भवभावनवर्जनात्
Gîtâ. 10. 4. सुखं दुःखं भवो ऽभाव
11. 2. भवाप्ययौ हि भूतानाम्

2. भव

Maitri. 6. 8. शम्भुर्भवो रुद्रः 7. 7.
Chûl. 12. शर्वो भवश्च रुद्रश्च
Nîla. 22. भवेन मरुतां पिता
24. नमो भवाय नमः शर्वा

भवत्

Chhâ. 4. 4. 1. ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्या
Briḥ. 4. 5. 5. प्रिया वै खलु नो भ
सती
— हन्त तर्हि भवत्येतद्व्याख
स्यामि
5. 2. 1. ब्रवीतु नो भवान् 2, 3.
6. 2. 3. इति वाव किल नो भ
पुरानुशिष्टानवोचत्

2. 4. भवानेव गच्छत्विति
7. मा नो भवान् बहोः..अभ्यवदान्यो भूत्
— उपैम्यहं भवन्तमिति
1. ते रुद्रमपृच्छन् को भवान्
5. तत्र भवत्यः..कृष्णं भजिष्यथ
2. 5. जेतव्यो भवता कपे
30. भवानज्ञाततत्पदः
1. 7. भवान्भीष्मश्च कर्णश्च
11. भवन्तः सर्व एव हि
4. 4. अपरं भवतो जन्म
10. 12. पवित्रं परमं भवान्
11. 31. को भवानुग्ररूपः
— विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यम्

भवबन्धन

1. 6. मुच्येयं भवबन्धनात्

भवभाव

4. नमस्ते भवभावाय (most MSS. °भामाय; one has °भवाय)

भवभूत

6. 5. तं विश्वरूपं भवभूतमीड्यम्

भवमन्यु

4. नमस्ते भवमन्यवे

भवारि

92. गदारिशंखाब्जधरं भवारिम्

भविष्य

7. 26. भविष्याणि च भूतानि

भविष्यद्वृत्ति

3. 14. भविष्यद्वृत्त्या गौणं तत्

भवोद्भव

:.17. 1. भवोद्भवाय नमः

भस्मन्

Chhâ. 5. 24. 1. यथाङ्गारानपोह्य भस्मनि जुहुयात्
Śiras. 5. अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म etc.
— सर्वं ह वा इदं भस्म
— व्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्
Kâlâg. 1. यद्द्रव्यं तदाग्नेयं भस्म
— अग्निरिति भस्मेत्यनेन चाभिमंत्र्य
2. त्रिपुण्ड्रं भस्मना करोति
Gâruḍa. 3. भस्मना मोक्षयति
Vâsu. 4. अग्नेर्भस्मासि
Mukti. 1. 38. हृदयं कुण्डली भस्म
1. *vide* गारुड

भस्ममुष्टि

Kaṭhaśru. 3. अरणिदेशाद्भस्ममुष्टिं पिबेदित्येके

भस्मसात्कृ

Gîtâ. 4. 37. भस्मसात्कुरुते ऽर्जुन
— भस्मसात्कुरुते तथा

भस्मान्त

Bṛih. 5. 15. 1. अथेदं भस्मान्तं शरीरम् Îśâ. 17.

1. भा

Chhâ. 3. 18. 3. सो ऽग्निना ज्योतिषा भाति च तपति च (similarly in 4, 5, 6.
— भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद 4, 5, 6.
4. 9. 2. ब्रह्मविदिव वै सोम्य भासि
4. 14. 2. ब्रह्मविद इव सोम्य ते मुखं भाति
4. 15. 4. एष हि सर्वेषु लोकेषु भाति

Bṛih. 1. 3. 16. असौ चन्द्रः परेण मृत्युमतिक्रान्तो भाति
1. 5. 22. भास्याम्यहमिति चन्द्रमाः
Kaṭha. 5. 14. किमु भाति विभाति वा
15. न तत्र सूर्यो भाति..नेमा विद्युतो भान्ति..तमेव भान्तमनुभाति सर्वम् Śwet. 6. 14; Muṇḍ. 2. 2. 10.
Maitri. 6. 16. यो ऽमुष्मिन् भाति मण्डले
Muṇḍ.3. 2. 1. यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम्
Nṛip. 5. 10. यत्र न नक्षत्राणि भान्ति
Râmap. 24. उत्पन्नं सीतया भाति
Skanda. 2. न निजं निजवद्भाति

2. भा

Kaush. 1. 6. संभूतो भायै (भार्यायै is a variant).
Maitri. 6. 7. भाभिर्गतिरस्य हीति भर्गः

भाःसत्य

Bṛih. 5. 6. 1. मनोमयो ऽयं पुरुषो भाःसत्यः

भाग

Śwet. 5. 9. शतधा कल्पितस्य च भागः
Mahânâr. 19. 2. नान्यो भागो यत्नान्मे
Dhyâna. 6. तस्य भागस्य भागशः — तस्य भागस्य भागार्द्धम्

भागधेय

Bṛih. 6. 3. 1. तेभ्यो ऽहं भागधेयं जुहोमि

भागवत

Mukti. 1. 2. अन्यैर्भागवतैश्चापि

भागवित्ति

Bṛih. 6. 3. 9. चूलाय भागवित्तये
10. चूलो भागवित्तिः

भागशस्

Dhyâna. 6. तस्य भागस्य भागशः

भागार्द्ध

Dhyâna. 6. तस्य भागस्य भागार्द्धम्

भागिन्

Ait. 2. 5. एतासु भागिन्यौ करोमि — भागिन्यावेवास्यामशनापिपासे भवतः

भाण्

Bṛih. 1. 2. 4. स भाणकरोत् सैव वाग्भवत्

भाण्ड

Krish. 19. भग्नभाण्डोदधिर्गृहे

भानवीय

Maitri. 6. 31. भानवीयाश्च मरीचयः

भानु

Maitri. 6. 35. एतद्भानुरर्णवः
Mahânâr. 3. 10. तन्नो भानुः प्रचोदयात्
Haṁsa. 2. भानुकोटिप्रतीकाशः

भानुमण्डल

Nâda. 7. भानुमण्डलसङ्काशा न्मात्रा तथोत्तरा

भान्त

Maitri. 7. 6. भान्तः क्षान्तः शान्तः

भामनी

Chhâ. 4. 15. 4. एष उ एव भामनीः

भामित

Śwet. 4. 22. वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीः (2 MSS. read मिनो)

भारत

Nâda. 12. स राजा भारते वर्षे
Gîtâ. 1. 24. एवमुक्तः..गुडाकेशेन भारत

2\. 10. प्रसन्न इव भारत
14\. तांस्तितिक्षस्व भारत
18\. तस्माद्युध्यस्व भारत
28\. व्यक्तमध्यानि भारत
30\. देहे सर्वस्य भारत
3\. 25. यथा कुर्वन्ति भारत
4\. 7. ग्लानिर्भवति भारत
42\. उत्तिष्ठ भारत
7\. 27. द्वन्द्वमोहेन भारत
11\. 6. पश्याश्चर्याणि भारत
12\. 2. सर्वक्षेत्रेषु भारत
13\. 33. कृत्स्नं प्रकाशयति भारत
14\. 3. ततो भवति भारत
8\. तन्निबध्नाति भारत
9\. रजः कर्मणि भारत
10\. सत्त्वं भवति भारत
15\. 19. सर्वभावेन भारत 18. 62.
20\. कृतकृत्यश्च भारत
16\. 3. भवन्ति . . भारत
17\. 3. श्रद्धा भवति भारत

भारद्वाज

6\. 2. पाराशर्यो भारद्वाजात्
— भारद्वाजो भारद्वाजाच्च गौतमाच्च
— गौतमो भारद्वाजात्
— भारद्वाजः पाराशर्यात्
3\. आसुरिर्भारद्वाजात् 4. 6. 3.
— भारद्वाज आत्रेयात् 4. 6. 3.
1\. 5. गर्दभीविपीतो भारद्वाजः
— भारद्वाजो ऽब्रवीत्
1\. 2. स भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजो ऽङ्गिरसे
1\. 1. सुकेशा च भारद्वाजः 6. 1.
6\. 1. षोडशकलं भारद्वाज पुरुषं वेत्थ
1\. इन्द्रो भारद्वाजाय भारद्वाजो जीवितुकामेभ्यः शिष्येभ्यः

भारद्वाजीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 1. गौतमीपुत्रो भारद्वाजीपुत्रात् 2.
— भारद्वाजीपुत्रः पाराशरीपुत्रात् 2.

भारूप

Chhâ. 3. 14. 2. भारूपः सत्यसंकल्पः Maitri. 2. 6.
Maitri. 6. 4. भारूपं विगतनिद्रं विरजम् 25; 7. 5.
25\. भारूपो विगतनिद्रो विजरः

1. भार्गव *adj.*

Tait. 3. 6. 1. सैषा भार्गवी वारुणी विद्या
Chûl. 10. पठन्ते भार्गवा ह्येतत्

2. भार्गव

Praśna. 1. 1. भार्गवो वैदर्भिः 2. 1.

भार्या

Bṛih. 3. 7. 1. तस्यासीद्भार्या गन्धर्वगृहीता
4\. 5. 1. याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतुः
Yogat. 4. या माता सा पुनर्भार्या या भार्या जननी हि सा
Nyâsa. 2. लोकाद्भार्यया सहितः
Kaṭhaśru. 1. भार्यां पुत्रान् . . अनुमोदयित्वा

भालुकीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. राथीतरीपुत्रो भालुकीपुत्रात्
— भालुकीपुत्रः क्रौञ्चिकीपुत्राभ्याम्

भाल्लवय

Chhâ. 5. 11. 1. इन्द्रद्युम्नो भाल्लवयः
5\. 14. 1. इन्द्रद्युम्नं भाल्लवयम्

भाव

Śwet. 6. 4. भावांश्च सर्वान् विनियोज-
येद्यः
Mund 2. 1. 1. तथाक्षरा द्विविधाः सोम्य
भावाः
Gauda. 2. 13. विकरोत्यपरान् भावान्
16. ततो भावान् पृथग्विधान्
17. सर्पधारादिभिर्भावैः
19. प्राणादिभिरनन्तैश्च भावैरेतै-
र्विकल्पितः
29. यं भावं दर्शयेद्यस्य तं भावं
स तु पश्यति
33. भावैरसद्भिरेवायम्
— भावा अप्यद्वयेनैव
3. 20. अजातस्यैव भावस्य
— अजातो ह्यमृतो भावः
22. स्वभावेनामृतो यस्य भावः
Kshur. 20. एवं शुभाशुभैर्भावैः
Chúl. 18. यस्मिन् भावाः प्रलीयन्ते
Siras. 3. भावं भावेन..वसति
4. सर्वान् भावान् परित्यज्य
Brahmab. 7. अस्वरेण हि भावेन भावो
नाभाव इष्यते
Dhyâna. 10. सकले निष्कले भावे
Tejo. 14. एतद्भावविनिर्मुक्तम्
Pinda. 8. भावानां प्लवनं तथा
Râmot. 5. देवासुरमनुष्यादिभावात्मा
(9)
Mukti. 1. 23. मयि सर्वात्मके भावः
2. 4. अथ चेदशुभो भावः
24. भावसंवित्प्रकटिताम्
Gîtâ. 2. 16. नासतो विद्यते भावः
7. 12. ये चैव सात्त्विका भावाः
13. त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः
15. आसुरं भावमाश्रिताः
24. परं भावमजानन्तः 9. 11.
8. 4. अधिभूतं क्षरो भावः

2·1 अतः स्मार्त भावना द्वैताद्वैत भावना

Gîtâ. 8. 5. यः प्रयाति स मद्भावं
6. यं यं वापि स्मरन्भा
— सदा तद्भावभावितः
20. परस्तस्मात्तु भावो ऽ
10. 5. भवन्ति भावा भूताना
17. केषु केषु च भावेषु
18. 17. यस्य नाहङ्कृतो भावः
20. सर्वभूतेषु येनैकं भाव

भावगत

Mund.2. 2. 3. आयम्य तद्भावगतेन
सा

भावग्राह्य

Śwet. 5. 14. भावग्राह्यमनीडाख्य

भावन

Mukti. 2. 25. दृढाभ्यस्तपदार्थैकभा
28. भवभावनवर्जनात्

भावना

Tejo. 7. स्वभावभावनाग्राह्यम्
Mukti. 1. 37. त्रिपुराकठभावना
1. *vide* गारुड
2. 48. द्वितीयं दृढभावना
57. दृढभावनया
Gîtâ. 2. 66. न चायुक्तस्य भावना

भावनात्रयनाशन

Mukti. 1. 40. एवमष्टोत्तरशतं भाव
नाशनम्

भावयितृ

Ait. 4. 3. सा भावयित्री भावा
भवति

भावरहित

Sarvop. 2. भावसाक्षि स्वयं भा
तम्

भावसंशुद्धि

Gîtâ. 17. 16. भावसंशुद्धिरिति

भावसमन्वित

10. 8. बुधा भावसमन्विताः

भावसाक्षिन्

2. भावसाक्षि स्वयं भावरहितम्

भावाभावकर

5. 14. भावाभावकरं शिवम्

भाष्

2. 5. यावद्वै पुरुषो भाषते — न तावद्भाषितुं शक्नोति

3. 6. यामेव कुमारस्यान्ते वाचमभाषथाः Brih. 6. 2. 5.

4. 4. प्रिया वतारे नः सती प्रियं भाषसे

4. 99. नैतद्बुद्धेन भाषितम्

2. 11. प्रज्ञावादांश्च भाषसे

11. 14. कृताञ्जलिरभाषत

भाषा

2. 54. स्थितप्रज्ञस्य का भाषा

भाषितृ

4. 18. शुश्रूषितां वाचं भाषिता

1. भास्

6. 7. भ इति भासयतीमाँल्लोकान्

2. तद्गतविशेषाविशेषज्ञो यदा भासते

14. स्वेनैव भासते

15. 6. न तद्भासयते सूर्यः

12. जगद्भासयते ऽखिलम्

2. भास्

6. 5. यदेतदादित्यस्य शुक्लं भाः 6.

7. 4. यदेतदक्ष्णः शुक्लं भाः (bis).

4. 3. 9. स्वेन भासा स्वेन ज्योतिषा

Katha. 5. 15. तस्य भासा सर्वमिदं विभाति Swet. 6. 14; Mund. 2. 2. 10.

Gîtâ. 11. 12. यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः

30. भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो

भास्कर

Maitri. 7. 2. धाता भास्करः

Mahânâr. 3. 8. भास्कराय विद्महे

भास्वन्त्

Chhâ. 7. 11. 2. तेजस्वतो लोकान् भास्वतो ऽपहततमस्कानभिसिध्यति

Maitri. 6. 5. अग्निर्वायुरादित्या इति भास्वत्येषा

Nrip. 2. 1. विराडेक ऋषिर्भास्वती Nrisut. 3.

Sikhâ. 1. रुचिरा भास्वती स्वभा

Vâsu. 3. पीता भास्वत्यणूपमा

Gîtâ. 10. 11. ज्ञानदीपेन भास्वता

भास्वर

Maitri. 6. 17. अस्यैतद्भास्वरं रूपम्

7. 1. निर्गुणः शुद्धो भास्वरः

Mahânâr. 11. 12. विद्युल्लेखेव भास्वरा Vâsu. 3.

भास्वरवर्ण

Brih. 6. 2. 14. तस्या आहुत्यै पुरुषो भास्वरवर्णः संभवति

भिक्ष्

Kaush. 2. 1. यथा ग्रामं भिक्षित्वा 2. 2.

Chhâ. 1. 10. 2. इभ्यं कुल्माषान् खादन्तं बिभिक्षे

4. 3. 5. ब्रह्मचारी बिभिक्षे

Jâbâla. 5. शुचिरद्रोही भिक्षाणः (so Saṁkarânanda, but see भैक्षाण)

भिक्षा

Chhâ. 4. 3. 7. दत्तास्मै भिक्षामिति

8. 8. 5. प्रेतस्य शरीरं भिक्षया.. संस्कुर्वन्ति

Nyâsa. 4. भिक्षादिर्वैदलं पात्रम्

Aruṇeya. 5. भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशन्ति

भिक्षाचर्य

Bṛih. 3. 5. 1. भिक्षाचर्यं चरन्ति 4. 4. 22.

Aśrama. 4. स्वपुत्रगृहेषु भिक्षाचर्यं चरन्तः

भिक्षाशन

Nyâsa. 3. भिक्षाशनं दध्यात्

भिक्षाशिन्

Kaṭhaśru. 4. भिक्षाशी न दद्यात्

भिक्षु

Parama. 3. यादृच्छिको भवेद्भिक्षुः

— अनिकेतस्थितिरेव स भिक्षुः

— यस्माद्भिक्षुः.. ब्रह्महा भवेत्

— यस्माद्भिक्षुः.. पौल्कसो भवेत्

— यस्माद्भिक्षुः.. आत्महा भवेत्

— यस्माद्भिक्षुर्हिरण्यं यो न दृष्टं च

Mukti. 1. 35. शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षुं (?)

1. *vide* मुक्तिका

भिद्

Chhâ. 6. 12. 1. भिन्धीति भिन्नं भगवः

— एकां भिन्धीति भिन्ना भगवः

Bṛih. 4. 2. 3. यथा केशः सहस्रधा भिन्नः 4. 3. 20.

Maitri. 2. 6. खानीमानि भित्त्वोदितः

6. 24. तमोलक्षणं भित्त्वा तमः

— अथाविष्टं भित्त्वा

Maitri. 6. 30. सौरं द्वारं भित्त्वा

— यो भित्त्वा सूर्यमण्डल

38. लोभजालं भिनत्ति

— चतुर्जालं ब्रह्मकोशं

— सौरसौम्याग्नेयसात्त्वि

नि मण्डलानि भित्त्व

Muṇḍ. 2. 2. 8. भिद्यते हृदयग्रन्थिः

Praśna. 6. 5. भिद्येते तासां नामरू

Gauḍa. 2. 4. संवृतत्वेन भिद्यते

3. 6. रूपकार्यसमाख्याश्च

19. मायया भिद्यते ह्येतत्

— तत्त्वतो भिद्यमाने हि

4. 11. भिन्नं नित्यं कथं च

Nṛisut. 8. शतधा सहस्रधा भि

Brahmav. 11. सूर्यं भित्त्वा तदापरं

12. सूर्यं भित्त्वा तु मूर्धा

Kshur. 11. तद्भित्त्वा कण्ठमायाति

Chûl. 2. भिन्ने तमसि चैश्वरे

Brahmab. 14. भिद्यमानं पुनः पुनः

15. भिन्ने तमसि चैकत्व

Amṛita. 38. यस्यैष मण्डलं भित्त्

Dhyâna. 3. भिद्यते ध्यानयोगेन

Yogaśi. 6. भिन्दन्ति योगिनः सू

7. कपालसम्पुटं भित्त्वा

Yogat. 10. उकारेणैव भिद्यते

Nyâsa. 5. भित्त्वा मूर्धानमव्यय

Piṇḍa. 2. भिन्ने पञ्चात्मके देहे

Krish. 27. तस्मान्न भिन्ना एतास्

भिर्भिन्नो न वै विभुः

Gîtâ. 7. 4. भिन्ना प्रकृतिरष्टधा

भिदा

Nṛisut. 2. नैव तत्र काचन भिदा

8. नात्र काचन भिदास्ति

— अत्र भिदामिव मन्

भिषज्

Maitri. 6. 13. अन्नं भिषक् स्मृतम्

1. भी

ı. 1. 4. 2. देवा वै मृत्योर्बिभ्यतः
, 1. 4. 2. सो ऽबिभेत्तस्मादेकाकी बिभेति
— कस्मान्नु बिभेमीति
— कस्माद्ध्यभेष्यत्
4. 3. 33. याज्ञवल्क्यो बिभयांचकार
2. 4. 1. आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कदाचन 2. 9. 1 (कुतश्चन)
ıa. 1. 12. न जरया बिभेति
ânár. 20. 4. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि
la. 3. 39. योगिनो बिभ्यति ह्यस्मात्
'. 2. 1. देवा ह वै मृत्योः पाप्मभ्यः संसाराच्चाबिभयुः
— तस्माद्यो मृत्योः पाप्मभ्यः संसाराच्च बिभीयात्
4. स्वयं यतः कुतश्चिन्न बिभेति
ıt. 9. न भेतव्यं पृच्छेतेति
a. 2. गर्भवासभयाद्भीतः
11. 21. केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति
36. रक्षांसि भीतानि
50. आश्वासयामास च भीतमेनम्

2. भी

1. 5. 3. ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एव Maitri. 6. 30.
1. 11. 3. ह्रिया देयं भिया देयम्

भीतभीत

11. 35. सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य

भीति

2. 4. सर्वाणि भूतानि भीत्या पलायन्ते

1. भीम

Nṛip. 2. 4. मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम् (a variant is नभीमं=अभयंकरम्)
— मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः

2. भीम

Gîtâ. 1. 4. भीमार्जुनसमा युधि
10. बलं भीमाभिरक्षितम्

भीमकर्मन्

Gîtâ. 1. 15. भीमकर्मा वृकोदरः

भीरु

Swet. 4. 21. अजात इत्येवं कश्चिद्भीरुः प्रपद्ये

भीषण

Nṛip. 1. 5. हं भी तृतीयस्यार्द्धान्त्यम्
6. षणं तृतीयान्तार्द्धस्याद्यम्
2. 3. भीषणं सप्तमं (स्थानं जानीयात्)
4. कस्मादुच्यते भीषणमिति
— तस्मादुच्यते भीषणमिति
Nṛisut. 4. एष एव भीषणः
5. एष एव भीषण एष हि व्याप्ततमः
— एष एव भीषण एष ह्येवोत्कृष्टः
— एतदेव भीषणमेतद्धि महाविभूति
6. भीषणमभीषणं . . बुबुधिरे

भीषणत्व

Nṛisut. 7. नृसिंहत्वाद्भीषणत्वात्

भीषा

Tait. 2. 8. 1. भीषास्माद्वातः पवते भीषोदेति सूर्यः &c.; Nṛip. 2. 4.

भीष्म

Gîtâ. 1. 8. भवान्भीष्मश्च कर्णश्च
10. बलं भीष्माभिरक्षितम्
11. भीष्ममेवाभिरक्षन्तु
25. भीष्मद्रोणप्रमुखतः
2. 4. कथं भीष्ममहं संख्ये
11. 26. भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रः
34. द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च

भुक्तभोग

Śwet. 4. 5. जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः Mahânâr. 9. 2.

भुक्ति

Haṁsa. 1. भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् Gopî. 5.

भुज्

Kaush. 4. 20. तद्यथा श्रेष्ठी स्वैर्भुंक्ते यथा वा स्वाः श्रेष्ठिनं भुंजन्त्येवमेवैष प्रज्ञात्मैतैरात्मभिर्भुंक्ते एवमेवैत आत्मान एतमात्मानं भुंजन्ति
Chhâ. 8. 9. 1. नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति 2; 8. 10. 2, 4; 8. 11. 1, 2.
Bṛih. 1. 4. 10. पशवो मनुष्यं भुञ्ज्युरेवं.. पुरुषो देवान् भुनक्ति
15. एनमविदितो न भुनक्ति
1. 5. 17. एतन्मा सर्वं सन्नयमितोऽभुनजत्
Iśâ 1. तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः
Tait. 2. 1. 1. सह नौ भुनक्तु 3. 1. 1; Kaṭha 6. 19.
Śwet. 1. 12. भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च
Maitri. 6. 10. प्राकृतमन्नं भुंक्त्वा इति
— तस्मात्त्रिगुणं भोज्यम्
— तस्माद्बीजं भोज्यम्
— भोक्ता पुरुषो भोज्या प्रकृतिः
Maitri. 6. 10. पुरुषो ह्यव्यक्तमुखेन त्रिगु... भुंक्ता इति
Mahânâr. 4. 11. यन्मया भुक्तमसाधूनाम्
19. 1. गणान्नं गणिकान्नं.. भुक्त...
Kaivalya. 18. त्रिषु धामसु यद्भोग्यम्(... in one MS.); Gauḍa. ... 5 (ज्यं)
Gauḍa. 1. 5. स भुञ्जानो न लिप्यते
2. 22. भोज्यमिति च तद्विदः
Chûl. 7. भुंक्ते ऽसौ प्रथमं प्रभुः
Garbha. 4. आहारा विविधा भुक्ताः
Râmap. 94. लब्धकामांश्च भुक्त्वा
Gîtâ. 2. 5. श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यम्
— भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्
37. जित्वा वा भोक्ष्यसे मही...
3. 12. यो भुंक्ते स्तेन एव सः
13. भुंजते ते त्वघं पापाः
9. 21. ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालम्
11. 33. भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्
13. 21. भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्
15. 10. भुञ्जानं वा गुणान्वितम्

भुज्यु

Bṛih. 3. 3. 1. भुज्युर्लाह्यायनिः 2.

भुवन

Chhâ. 4. 3. 6. भुवनस्य गोपाः Nṛip. 2...
Tait. 3. 10. 6. अहं विश्वं भुवनमभ्यभव... Nṛip. 2. 4.
Kaṭha. 5. 9. अग्निर्यथैको भुवनं प्रवि...
10. वायुर्यथैको भुवनं प्रवि...
Śwet. 2. 17. यो विश्वं भुवनमाविवेश
3. 2. संसृज्य विश्वा भुवनानि... Śiras. 5.
4. 4. यतो जातानि भुवनानि विश्वा
15. स एव काले भुवनस्य...

;. 6. 15. एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये
17. ज्ञः सर्वगो भुवनस्यास्य गोप्ता
ri. 6. 38. महो देवो भुवनान्याविवेश
d.1. 1. 1. विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता
inâr. 1. 1. अम्भस्यपारे भुवनस्य मध्ये
6. विश्वं बिभर्त्ति भुवनस्य नाभिः
2. 3. विश्वा भुवनानि विद्वान्
5. धामानि वेद भुवनानि विश्वा
5. 9. एष सर्वस्य भूतस्य भव्ये भुवनस्य गोप्ता
6. 1. जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा
9. 4. य आविवेश भुवनानि विश्वा Nrip. 2. 4.
13. 2. भूतं भव्यं भुवनम्
a. 2. 24. भुवनानीति च तद्विदः
2. 4. यमप्येति भुवनं साम्पराये
— क्षियन्ति भुवनानि विश्वा
. 6. इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे (bis).
p. 17. जातान्याभ्यां भुवनानि द्विसप्त

भुवनेश

6. 7. विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्

भुवर्लक्ष्मी

nâr. 4. 9. भूर्लक्ष्मीर्भुवर्लक्ष्मीः सुवः कालकर्णी Nrip. 4. 2.

भुवर्लोक

5, 6. स भुवर्लोकं जयति
ya. 1. *vide* तपोलोक

भुवस्

2. 23. 3. भूर्भुवः स्वरिति
3. 15. 3. भुवः प्रपद्येऽमुनामुनामुना
6. यदवोचं भुवः प्रपद्ये
4. 17. 3. भुव इति यजुर्भ्यः
Chhâ. 4. 17. 5. भुवः स्वाहेति दक्षिणाग्नौ जुहुयात्
Brih. 5. 5. 3. भुव इति बाहू 4.
6. 3. 3. भुवः स्वाहा.. भूर्भुवः स्वः स्वाहा 6.
6. 4. 25. भुवस्ते दधामि
— भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि
Tait. 1. 5. 1. भूर्भुवः सुवरिति.. व्याहृतयः
— भुव इत्यन्तरिक्षम्
2. भुव इति वायुः
— भुव इति सामानि
3. भुव इत्यपानः
1. 6. 1. भुव इति वायौ
Maitri. 6. 5. भूर्भुवः स्वरिति लोकवत्येषा
6. अनुव्याहरन्भूर्भुवः स्वरिति
— नाभिर्भुवो भूः पादाः
— तस्माद्भूर्भुवःस्वरित्युपासीत
35. भूर्भुवः स्वरोम् Mahânâr. 13. 1; 15. 2, 3; Siras. 6; Prâṇâg. 1.
Mahânâr. 7. 1. भुवो वायवे
— भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे
— भूर्भुवः सुवरग्निरोम्
2. भुवो ऽन्नं वायवे
— भूर्भुवः सुवरन्नं चन्द्रमसे
— भूर्भुवः सुवरन्नमोम्
3. भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च
— भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च
— भूर्भुवः सुवर्महरोम्
5. भूर्भुवः सुवश्छन्द ओम्
8. 1. भूर्भुवः सुवर्ब्रह्म
14. 1. भूर्भुवः सुवराप ओम्
15. 3. ओं भूर्भुवः सुवर्महः
Śiras. 2. यो वै रुद्रः.. यच्च भुवः
3. भूस्ते आदिर्मध्यं भुवः

Mahâ. 3. भुव इति व्याहृतिः

Râmot. 5. भूर्भुवः स्वः (47 times).

भुवोलोक

Nâda. 3. भुवोलोकस्तु जानुनोः

1. भू

Ait. 2. 4. अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत् (similarly, 7 times more).

5. भागिन्यावेवास्यां..भवतः

3. 13. स जातो भूतान्यभिव्यैक्षत्

4. 1. पुरुषे ह वा अयमादितो गर्भो भवति

2. आत्मानमत्र गतं भावयति

3. सा भावयित्री भावयितव्या भवति

— आत्मानमेव तद् भावयति

5. 2. एतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति

Kaush. 1. 2. तमिह वृष्टिर्भूत्वा वर्षति

5. तस्य भूतं च भविष्यच्च पूर्वौ पादौ

6. तेजो भूतस्य भूतस्यात्मा भूतस्य भूतस्य

2. 1. मनो दूतं वेद दूतवान् भवति

— गोप्तृमान् भवति

— संश्रावयितृमान् भवति

— परिवेष्ट्रीमान् भवति

— एष धर्मो ऽयाचतो भवति 2.

— सर्वाणि भूतान्ययाचमानायैव बलिं हरन्ति 2. 2.

4. यस्य प्रियो बुभूषेत्

— प्रियो हैव भवति

5. ताः कर्ममय्यो हि भवन्ति

6. सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्यायाभ्यर्च्यन्ते..युज्यन्ते..सन्नमन्ते

Kaush. 2. 6. यथैतत्..तेजस्वितम...
शास्त्रेषु भवत्येवं स सर्वे...
भूतेषु..भवति

— एष उ एवैतदिन्द्रस्यात्म...
भवति

7. त्रीण्युपासनानि भवन्ति

9. तेन मुखेन सर्वाणि भूता...
त्सि

11. अश्मा भव परशुर्भव हि...
ण्यमस्तृतं भव

14. तदमृतो भवति य एवं...

15 यथा समापयितव्यो भ...

3. 2. एकभूयं वै प्राणा भूत्वा

3. अथास्मिन् प्राण एवैक...
भवति (bis); 4. 20.

4. यथास्यै प्रज्ञायै सर्वाणि...
तान्येकं भवन्ति

7. अन्यत्र मे मनोऽभूदित्य...
(7 times; and नौ..
हतुः bis).

8. न साधुना कर्मणा भू...
भवति

4. 3. सर्वेषां भूतानां मूर्द्धा भ...

4. अन्नस्यात्मा भवति

5. सत्यस्यात्मा भवति

6. शब्दस्यात्मा भवति

7. जिष्णुर्ह वा अपराजयि...
रन्यतस्त्यजायी भवति

9. विषासहिर्ह वा अन्ये...
वति

10. तेजस आत्मा भवति

12. द्वितीयवान् हि भवति

17. एतेषां सर्वेषामात्मा भ...
18.

19. क्वैतदभूत्..यत्रैतदभू...

— तास्तु तदा भवति यदा...
स्वप्नं न कंचन पश्यति

20. सर्वेषां च भूतानां श्रैष्ठ्यं...
पर्येत्

4. 20. सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं . . पर्येति
2. प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति 13.
13. भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः
31. अभि हैनं सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति
1. 2. एषां भूतानां पृथिवी रसः
4. इति विमृष्टं भवति
7. आपयिता ह वै कामानां भवति
8. समर्द्धयिता ह वै कामानां भवति
10. तदेव वीर्यवत्तरं भवति
— एतस्याक्षरस्योपव्याख्यानं भवति
2. 13. स ह नैमिषीयानामुद्गाता बभूव
14. आगाता ह वै कामानां भवति
3. 1. अपहन्ता ह वै भयस्य तमसो भवति य एवं वेद
7. अन्नवानन्नादो भवति 1. 13. 4; 2. 8. 3; Tait. 3. 6. 1; 3. 7. 1; 3. 8. 1; 3. 9. 1.
4. 4. देवा अमृता अभया अभवन्
5. यदमृता देवास्तदमृतो भवति
5. 2. बहवो वै ते भविष्यन्ति
4. बहवो मे भविष्यन्तीति
8. 1. त्रयो होद्गीथे कुशला बभूवुः
9. 1. इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यन्ते
2. परोवरीयो हास्य भवति 2. 7. 2.
3. परोवरीयः . . जीवनं भविष्यति
4. परोवरीय एव . . जीवनं भवति

Chhâ. 1. 10. 5. साम एव सुभिक्षा बभूव
1. 11. 5. सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति
7. सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यादित्यमुच्चैः सन्तं गायन्ति
9. सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यन्नमेव प्रतिहरमाणानि जीवन्ति
2. 1. 3. यत्साधु भवति साधु वर्तेति
— यदसाधु भवत्यसाधु वर्तेति
2. 4. 2. अप्सुमान् भवति
2. 5. 2. ऋतुमान् भवति
2. 6. 2. भवन्ति हास्य पशवः पशुमान् भवति
2. 9. 2. तस्मिन्निमानि सर्वाणि भूतान्यन्वायत्तानि
2. 10. 3. त्रिभिस्त्रिभिः समं भवति
4. निधनमिति त्र्यक्षरं तत् सममेव भवति
6. परो हास्यादित्यस्य जयाज्जयो भवति
2. 11. 2. प्राणी भवति
— महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान् कीर्त्या 12. 2; 13. 2; 14. 2; 15. 2; 16. 2; 17. 2; 18. 2; 19. 2; 20. 2.
2. 12. 1. अंगारा भवन्ति स प्रतिहारः
2. ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति 3. 13. 3.
2. 13. 2. मिथुनी भवति
2. 14. 2. तेजस्व्यन्नादो भवति 3. 13. 1.
2. 17. 2. लोकी भवति 4. 11. 2; 4. 12. 2; 4. 13. 2.
2. 18. 2. पशुमान् भवति

Chhâ. 2. 19. 2. अंगी भवति
2. 21. 2. सर्वं ह भवति
2. 22. 3. इन्द्रं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्
4. प्रजापतिं शरणं प्रपन्नो ऽभूवं .. मृत्युं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्
2. 23. 2. सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति
3. 6. 3. वसूनामेवैको भूत्वा (similarly, 4 times more).
3. 11. 3. सकृद्दिवा हैवास्मै भवति Kathaśru. 1.
3. 12. 1. गायत्री वा इदं सर्वं भूतं .. वाग्वा इदं सर्वं भूतं गायति
2. अस्यां हीदं सर्वं भूतं प्रतिष्ठितम्
6. पादो ऽस्य सर्वा भूतानि
3. 13. 2. श्रीमान्यशस्वी भवति
4. कीर्त्तिमान् व्युष्टिमान् भवति
5. ओजस्वी महस्वान् भवति
8. चक्षुष्यः श्रुतो भवति
3. 14. 1. यथाक्रतुरस्मिँल्लोके पुरुषो भवति तथेतः प्रेत्य भवति
3. 15. 4. प्राणो वा इदं सर्वं भूतम्
3. 16. 2. अगदो ह भवति 4, 6.
3. 17. 6. अपिपास एव स बभूव — तत्रैते द्वे ऋचौ भवतः
3. 18. 1. इत्युभयमादिष्टं भवति 2.
3. 19. 1. ते आण्डकपाले रजतं च सुवर्णं चाभवताम्
3. सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामाः (bis).
4. 3. 8. सर्वमस्येदं दृष्टं भवत्यन्नादो भवति य एवं वेद
4. 5. 3. प्रकाशवानस्मिँल्लोके भवति
4. 6. 4. अनन्तवानस्मिँल्लोके भवति
4. 7. 4. ज्योतिष्मानस्मिँल्लोके भवति

Chhâ. 4. 8. 4. आयतनवानस्मिँल्लोके भवति
4. 16. 3. स इष्ट्वा पापीयान् भव...
5. स इष्ट्वा श्रेयान् भवति
4. 17. 8. यत्रैवंविद्ब्रह्मा भवति 9.
5. 1. 1. ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च भवति B... 6. 1. 1.
2. वसिष्ठो ह स्वानां भ... Brih. 6. 1. 2 (bis, o...ting ह)
5. आयतनं ह स्वानां भ... Brih. 6. 1. 5 (bis, o...ting ह)
15. प्राणो ह्येवैतानि सर्वा... वति 7. 15 .4
5. 2. 1. किं मे ऽन्नं भविष्यती... — न ह वा एवंविदि कि... नन्नं भवति
2. किं मे वासो भविष्यति... — लम्भुको ह वासो भ... नग्नो भवति
5. 3. 3. पञ्चम्यामाहुतावापः पु... वचसो भवन्ति 5. ...
7. क्षत्रस्यैव प्रशासनमभू...
5. 9. 2. यतः संभूतो भवति
5. 10. 5. वायुर्भूत्वा धूमो भव... मो भूत्वाभ्रं भवति
6. अभ्रं भूत्वा मेघो भव... — यो रेतः सिञ्चति तद्भू... व भवति
8. असकृदावर्त्तीनि भ... भवन्ति
10. पुण्यलोको भवति य... वेद
5. 12. 2. भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं... 5. 13. 2; 5. 14. 2; ... 2; 5. 16. 2; 5. 17. ...
5. 13. 2. अन्धो ऽभविष्यो यन्मा... नागमिष्यः

5. 18. 1. सर्वेषु भूतेषु . . अन्नमत्ति
5. 24. 2. तस्य . . सर्वेषु भूतेषु . . हुतं भवति
5. एवं सर्वाणि भूतान्यग्निहोत्रमुपासते
6. 1. 1. ब्रह्मबन्धुरिव भवति
3. येनाश्रुतं श्रुतं भवति
4. कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति
6. एवं सोम्य स आदेशो भवतीति
6. 2. 4. तदेव भूयिष्ठमन्नं भवति
6. 3. 1. एषां भूतानां त्रीण्येव बीजानि भवन्ति
4. त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति 6. 4. 7; 6. 8. 6.
6. 4. 6. यदु रोहितमिवाभूत् . . यदु शुक्लमिवाभूत् . . यदु कृष्णमिवाभूत्
7. यद्वविज्ञातमेवाभूत्
5. 1. स्थविष्ठो धातुस्तत् पुरीषं भवति
2. . . तन्मूत्रं भवति
3. . . तदस्थि भवति
6. 1. तत्सर्पिर्भवति
2. तन्मनो भवति
3. स प्राणो भवति
4. सा वाग् भवति
7. 6. एका कलातिशिष्टाभूत्
8. 1. सता सोम्य तदा सम्पन्नो भवति
— स्वमपीतो भवति
3. नेदममूलं भविष्यति 5.
6. तदुक्तं पुरस्तादेव भवति
9. 2. यद्यद्भवन्ति तदा भवन्ति 6. 10. 2.
10. 1. समुद्र एव भवन्ति

Chhâ. 6. 16. 1. स यदि तस्य कर्त्ता भवति
2. यदि तस्याकर्त्ता भवति
7. 1. 5. तत्रास्य यथाकामचारो भवति (so in each section down to the 14th).
7. 2. 1. यद्वै वाङ्नाभविष्यत्
7. 4. 1. नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति 7. 5. 1.
7. 5. 2. यद्यपि बहुविदचित्तो भवति
— यद्यल्पविच्चित्तवान् भवति
7. 6. 1. ध्यानापादांशा इवैव ते भवन्ति
7. 8. 1. यदा बली भवत्यथोत्थाता भवत्युत्तिष्ठन् परिचरिता भवति &c.
7. 9. 1. अद्रष्टाश्रोतामन्ताबोद्धाकर्त्ताविज्ञाता भवति
— द्रष्टा भवति श्रोता भवति मन्ता भवति &c.
7. 10. 1. यदा सुवृष्टिर्न भवति . . अन्नं कनीयो भविष्यति
— यदा सुवृष्टिर्भवत्यानन्दिनः प्राणा भवन्त्यन्नं बहु भवति
2. तृप्तिमान् भवति
7. 14. 2. अमोघा हास्याशिषो भवन्ति
7. 15. 4. अतिवादी भवति
7. 25. 2. स स्वराड् भवति
— सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति 8. 1. 6; 8. 4. 3; 8. 5. 4.
— अन्यराजानस्ते क्षय्यलोका भवन्ति
— सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवति 8. 1. 6.
7. 26. 2. स एकधा भवति त्रिधा भवति

Chhâ. 8. 1. 4. सर्वाणि च भूतानि
5. यं यमन्तमभिकामा भवन्ति
8. 2. 1. यदि पितृलोककामो भवति (similarly, eight times more in this section).
10. यं यमन्तमभिकामो भवति
8. 4. 2. अनन्धो भवति..अविद्धो भवति..अनुपतापी भवति
8. 6. 3. नाडीषु सृप्तो भवति
— तेजसा हि तदा सम्पन्नो भवति
4. अबलिमानं नीतो भवति
— यावदस्माच्छरीरादनुत्क्रान्तो भवति
6. विश्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति Katha. 6. 16.
8. 8. 2. साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ भूत्वा (bis).
4. यतर एतदुपनिषदो भविष्यन्ति देवा वासुरा वा
8. 9. 1. शरीरे साध्वलङ्कृते साध्वलङ्कृतो भवति..एवमेवायमस्मिन्नन्धे ऽन्धो भवति 2.
8. 10. 1. यद्यपीदं शरीरमन्धं भवत्यनन्धः स भवति 3.
2. अप्रियवेत्तेव भवति 4.
8. 11. 1. नो एवेमानि भूतानि (जानाति) 2.
— विनाशमेवापीतो भवति 2.
8. 14. 1. यशो ऽहं भवामि ब्राह्मणानाम्
8. 15. 1. अहिंसन्त्सर्वभूतानि
Bṛih. 1. 1. 2. हयो भूत्वा देवानवहत्
1. 2. 1. अर्चते वै मे कमभूत्
— क ह वा अस्मै भवति
2. सा पृथिव्यभवत्

Bṛih. 1. 2. 4. स संवत्सरो ऽभवत्
— सैव वागभवत्
5. सर्वस्यैतस्यात्ता भवति
र्वमस्यान्नं भवति
7. तन्मेध्यमभूत्
— एकैव देवता भवति मृ
रेव
— मृत्युरस्यात्मा भवति
— एतासां देवतानामेको
वति
1. 3. 7. ततो देवा अभवन्..
त्यात्मना..य एवं वे
8. क्व नु सो ऽभूद्यो न इ
सक्त
9. दूरं ह वा अस्मान्मृत्युर्
12. यदा मृत्युमत्यमुच्यत
ऽग्निरभवत् (simila
in 13–16.).
18. पुर एता भवति
— एवंविदं स्वेषु प्रतिप्रा
भूषति न हैवालं भा
भ्यो भवति
— अलं भार्य्येभ्यो भवति
— य एवैतमनु भवति
25. भवति हास्य स्वम्
26. भवति हास्य सुवर्णम्
1. 4. 1. ततो ऽहन्नामाभवत्
— अथान्यन्नाम प्रब्रूते य
भवति
— यो ऽस्मात्पूर्वो बुभूषति
2. द्वितीयाद्वै भयं भवति
3. पतिश्च पत्नी चाभवताम्
4. सा गौरभवत्
— बडवेतराभवत्
— अजेतराभवत्
5. ततः सृष्टिरभवत्सृष्ट्या
एतस्यां भवति य एवं
6. अतिसृष्ट्यां हास्यैतस्यां
भवति य एवं वेद

4. 7. प्राणन्नेव प्राणो नाम भवति
— अकृत्स्नो ह्येषो ऽत एकैकेन भवति
— अत्र ह्येते सर्वे एकं भवन्ति
8. न हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति
9. ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तः
— यस्मात्तत्सर्वमभवत्
10. तस्मात्तत्सर्वमभवत्
— यो यो देवानां प्रत्यबुध्यत स एव तदभवत्
— स इदं सर्वं भवति
— अहं मनुरभवं सूर्यश्चेति
— आत्मा ह्येषां स भवति
— अप्रियं भवति
11. स पापीयान् भवति
14. एतद्ध्येवैतदुभयं भवति
15. अग्निनैव देवेषु ब्रह्माभवत्
— एताभ्यां हि रूपाभ्यां ब्रह्माभवत्
16. अयं वा आत्मा सर्वेषां भूतानां लोकः
— सर्वाणि भूतान्यरिष्टिमिच्छन्ति

1. 5. 3. अन्यत्रमना अभूवम् (bis).
8. वागेनं तद्भूत्वावति
9. मन एनं तद्भूत्वावति
10. प्राण एनं तद्भूत्वावति
12. नास्य सपत्नो भवति
17. किञ्चिदक्ष्णयाकृतं भवति
18. यया यद्यदेव वदति तत्तद्भवति
19. येनानन्द्येव भवति
20. सर्वेषां भूतानामात्मा भवति
— सर्वाणि भूतान्यवन्ति (bis)
— अमैवासां तद्भवति
21. मृत्युः श्रमो भूत्वोपयेमे
— एतस्यैव सर्वे रूपमभवन्

Bṛih. 1. 5. 21. यस्मिन् कुले भवति
23. अथैष श्लोको भवति
2. 1. 2. सर्वेषां भूतानां मूर्द्धा राजा भवति
3. अहरहर्ह सुतः प्रसुतो भवति
4. तेजस्वी ह भवति तेजस्विनी हास्य प्रजा भवति
6. जिष्णुर्हापराजिष्णुर्भवति
7. विषासहिर्ह भवति विषासहिर्हास्य प्रजा भवति
9. रोचिष्णुर्ह भवति रोचिष्णुर्हास्य प्रजा भवति
11. द्वितीयवान् ह भवति
13. आत्मन्वीह भवत्यात्मन्विनी हास्य प्रजा भवति
14. एतावन्नू ३ इत्येतावद्धीति नैतावता विदितं भवति
16. यत्रैष एतत्सुप्तो ऽभूत्. . क्वैष तदाभूत्
17. यत्रैष एतत्सुप्तो ऽभूत्
— तद्गृहीत एव प्राणो भवति
18. उतेव महाराजो भवति
19. अथ यदा सुषुप्तो भवति
20. सर्वाणि भूतानि व्युच्चरन्ति
2. 2. 3. तदेष श्लोको भवति 4. 4. 6, 7.
4. सर्वस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति य एवं वेद
2. 3. 6. सकृद्विद्युत्तेव ह वा अस्य श्रीर्भवति य एवं वेद
2. 4. 5. न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति (similarly, nine times more); 4. 5. 6 (similarly 11 times more).
— न वा अरे भूतानां कामाय 4. 5. 6.

Bṛih. 2. 4. 6. भूतानि तं परादुर्यो ऽन्यत्रात्मनो भूतानि वेद 4. 5. 7.
6. इमानि भूतानीदं सर्वं यदयमात्मा 4. 5. 7.
10. अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम् 4. 5. 11; Maitri. 6. 32.
12. एवं वा अर इदं महद्भूतम्
— एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय 4. 5. 13.
14. यत्र हि द्वैतमिव भवति 4. 5. 15.
— यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवाभूत् 4. 5. 15.

2. 5. 1. सर्वेषां भूतानां मधु . . सर्वाणि भूतानि मधु (14 times).
15. सर्वेषां भूतानामधिपतिः सर्वेषां भूनानां राजा
— आत्मनि सर्वाणि भूतानि
18. पुरः स पक्षी भूत्वा
19. रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव Kaṭha. 5. 9, 10.

3. 1. 1. ब्राह्मणा अभिसमेता बभूवुः
— जनकस्य वैदेहस्य विजिज्ञासा बभूव
— शृङ्गयोराबद्धा बभूवुः
2. होताश्वलो बभूव

3. 2. 13. क्वायं तदा पुरुषो भवति
— पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति

3. 3. 1. क्व पारिक्षिता अभवन् (ter).
2. इन्द्रः सुपर्णो भूत्वा
— यत्राश्वमेधयाजिनो ऽभवन्

3. 4. 2. एवमेवैतद् व्यपदिष्टं भवति

3. 5. 1. उभे ह्येते एषणे एव भवतः 4. 4. 22.

Bṛih. 3. 7. 1. सर्वाणि च भूतानि ... ब्धानि भवन्ति 2.
— सर्वाणि च भूतानि . . ... यति
2. अस्याङ्गानि . . सूत्रेण ... न्वृब्धानि भवन्ति
15. यः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन् ...

3. 8. 3. यद्भूतं च भवच्च भविष्य... 4, 6, 7.
10. अन्तवदेवास्य तद्भवति

3. 9. 20. हृदये रूपाणि प्रतिष्ठिता... भवन्ति
21. हृदये श्रद्धा प्रतिष्ठिता... वति
22. हृदये रेतः प्रतिष्ठितं भ...
23. हृदये सत्यं प्रतिष्ठितं भ...

4. 1. 2. सर्वाणि च भूतानि वा... . . प्रज्ञायन्ते
— सर्वाण्येनं भूतान्यभिक्ष... न्ति देवो भूत्वा देवान... 3—7.
3. वधाशङ्का भवति यां ... मेति
4. स आहाद्राक्षमिति तत्... भवति
7. हृदयं वै सर्वेषां भूताना... यतनं . . भूतानां प्रतिष्ठा... दये ह्येव सर्वाणि भूता... प्रतिष्ठितानि भवन्ति

4. 2. 3. हिता नाम नाड्यो ऽन्त... प्रतिष्ठिता भवन्ति
— एष प्रविविक्ताहारतर... वैव भवति

4. 3. 3. चन्द्रमा एवास्य ज्योति... वति
4. अग्निरेवास्य ज्योतिर्भव...
5. वागेवास्य ज्योतिर्भवति...
6. आत्मैवास्य ज्योतिर्भव...

3. 7. स्वप्नो भूत्वेमं लोकमतिक्रामति
9. द्वे एव स्थाने भवतः
— यथाक्रमोऽयं परलोकस्थाने भवति
— अयं पुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति 14.
10. न पन्थानो भवन्ति . . न . . प्रमुदो भवन्ति . . न तत्र . . स्रवन्त्यो भवन्ति
11. तदेते श्लोका भवन्ति 4. 4. 8; Râmot. 3 (अथ)
14. दुर्भिषज्यं हास्मै भवति
15. अनन्वागतस्तेन भवति 16.
22. पितापिता भवति
— स्तेनो ऽस्तेनो भवति
— तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान् हृदयस्य भवति
32. सलिल एको द्रष्टाद्वैतो भवति
— अन्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति
33. राद्धः समृद्धो भवति
35. यत्रैतदूर्ध्वोच्छ्वासी भवति 38.
37. एवंविदं सर्वाणि भूतानि प्रतिकल्पन्ते

4. 4. 1. तथारूपज्ञो भवति
2. सविज्ञानो भवति
4. ब्राह्मं वान्येषां वा भूतानाम्
5. यथाकारी यथाचारी तथा भवति
— साधुकारी साधुर्भवति
— पापकारी पापो भवति
— पुण्यः पुण्येन कर्मणा भवति
— यथाकामो भवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते

Bṛih. 4. 4. 7. अथ मर्त्यो ऽमृतो भवति Katha. 6. 14, 15.
14. य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति Katha. 6. 2, 9; Swet. 3. 1, 10, 13; 4. 17, 20.
22. एतमेव विदित्वा मुनिर्भवति
23. तितिक्षुः समाहितो भूत्वा
— अविचिकित्सो ब्राह्मणो भवति
25. अभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेद Nrisut. 8 (four times).

4. 5. 1. याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतुः
— मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव

5. 5. 1. सत्यभूयमेव भवति
2. स यदोत्क्रमिष्यन् भवति 5. 9. 1; Maitri. 2. 6.

5. 9. 1. तस्यैष घोषो भवति Maitri. 2. 6.

5. 12. 1. एकधाभूयं भूत्वा (bis).
— अन्ने . . सर्वाणि भूतानि विष्टानि
— प्राणे . . सर्वाणि भूतानि रमन्ते
— सर्वाणि ह वा अस्मिन्भूतानि विशन्ति सर्वाणि भूतानि रमन्ते य एवं वेद

5. 14. 8. कथं हस्ती भूतो वहसि

6. 1. 1. ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भवत्यपि च येषां बुभूषति
2. वसिष्ठः स्वानां भवत्यपि च येषां बुभूषति
14. न ह वा अस्यानन्नं जग्धं भवति

6. 2. 2. आपः पुरुषवाचो भूत्वा
7. मा नो भवान् . . अभ्यवदान्यो भूत्
14. तस्याग्निरेवाग्निर्भवति

Brih. 6. 2. 16. ते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति
— ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति
6. 3. 1. उपसद्भुती भूत्वा
3. भूताय स्वाहा..भविष्यते स्वाहा
6. माध्वीर्गावो भवन्तु नः Mahânâr. 9. 10; 17. 7.
— अहमेवेदं सर्वं भूयासम्
— अहं मनुष्याणामेकपुण्डरीकं भूयासम्
13. चतुरौदुंबरो भवति
— दश ग्राम्याणि धान्यानि भवन्ति
6. 4. 1. एषां वै भूतानां पृथिवी रसः
3. यावान्..लोको भवति तावानस्य लोको भवति
7. इत्ययशा एव भवति
8. इति यशस्विनावेव भवतः
10. इत्यरेता एव भवति
11. इति गर्भिण्येव भवति
12. उत ह्येवंवित्परो भवति
26. तद्ब्रह्ममेव नाम भवति
28. वीरवती भव
— अतिपिता बताभूरतिपितामहो बताभूः

Iśâ. 6. यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानम्
7. यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूत्

Tait. 1. 1. 1. शं नो भवत्वर्यमा 1. 12. 1.
1. 4. 1. अमृतस्य देव धारणो भूयासम्
1. 6. 2. एतत्ततो भवति
1. 11. 2. मातृदेवो भव पितृदेवो भवाचार्यदेवो भवातिथिदेवो भव

Tait. 2. 1. 1. तदप्येष श्लोको भवति 2. 2. 1; 2. 3. 1; 2. 4 ... 2. 5. 1; 2. 6. 1; 2. 7 ... 2. 8. 1.
2. 2. 1. अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्
— अन्नाद्भूतानि जायन्ते Maitri. 6. 12.
— अद्यते ऽत्ति च भूतानि Maitri. 6. 12.
2. 3. 1. प्राणो हि भूतानामायुः
2. 6. 1. असन्नेव स भवत्यसद्ब्र... वेद चेत्
— सच्च त्यच्चाभवत्
— सत्यं चानृतं च सत्य... वत्
2. 7. 1. रसं ह्येवायं लब्ध्वा... भवति
— अथ सो ऽभयं गतो भ...
— अथ तस्य भयं भवति
2. 8. 1. सैषानन्दस्य मीमांसा... वति
3. 1. 1. यतो वा इमानि भू... जायन्ते
3. 2. 1. अन्नात्..भूतानि जाय...
3. 3. 1. प्राणात्..भूतानि जाय...
3. 4. 1. मनसः..भूतानि जाय...
3. 5. 1. विज्ञानात्..भूतानि ... यन्ते
3. 6. 1. आनन्दात्..भूतानि ... यन्ते
— महान् भवति प्रजया ... शुभिः 3. 7. 1; 3. 8 ... 3. 9. 1.
3. 10. 3. तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत प्रति... वान् भवति
— तन्मह इत्युपासीत म... भवति
— तन्मन इत्युपासीत म... वान् भवति

3. 10. 4. तद्ब्रह्मेत्युपासीत ब्रह्मवान् भवति
1. 11. यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीतः
16. तथैव नाम्ना भवितायमग्निः
2. 1. श्रेय आददानस्य साधु भवति
9. त्वादृङ् नो भूयात्..प्रष्टा
14. अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च
18. नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्
25. यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनम्
3. 5. यस्त्वविज्ञानवान् भवति 7.
6. यस्तु विज्ञानवान् भवति 8.
12. एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा
4. 6. गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो भूतेभिर्व्यपश्यत
7. या भूतेभिर्व्यजायत
15. यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्तं तादृगेव भवति
— एवं मुनेर्विजानत आत्मा भवति
5. 6. यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति
6. 11. अप्रमत्तस्तदा भवति
18. ब्रह्मप्राप्तो विरजो ऽभूत्
1. 2. भूतानि योनिः पुरुष इति चिन्त्यम्
2. 14. कृतार्थो भवते वीतशोकः
3. 7. ईशं तं ज्ञात्वा अमृता भवन्ति
15. यद्भूतं यच्च भव्यम् Kaivalya 9.
4. 3. त्वं जातो भवसि विश्वतो मुखः
9. भूतं भव्यं यच्च वेदा वदन्ति
5. 6. ते तन्मया अमृता वै बभूवुः
6. 20. दुःखस्यान्तो भविष्यति

Maitri. 1. 4. *vide* आदि
4. 3. अनेनोर्ध्वभाग्भवति
— न स्वधर्मातिक्रमेणाश्रमी भवति
4. स ब्रह्मणः पर एता भवति
5. 2. स वा एकस्त्रिधा भूतः
— उद्भूतत्वाद्भूतं भूतेषु चरति
— स भूतानामधिपतिर्बभूव
6. 3. स वा एष ओमित्येतदात्मा-भवत्
5. भूतं भव्यं भविष्यदिति कालवत्येषा
— प्रस्तुता अर्चिता अर्पिता भवन्ति
6. अनेन हि प्रजापतिः..उपासितो भवति
7. र इति रञ्जयतीमानि भूतानि
9. आचान्तो भूत्वात्मेज्यानः
10. अनेनैव..व्याख्या कृता भवति
— तस्याप्येवं..अमृतत्वं भवति
— एवं प्रधानस्य..उपलब्धिर्भवति
— बुद्ध्यादीनि स्वादूनि भवन्ति
— इन्द्रियार्थान् पञ्च स्वादूनि भवन्ति
11. न यद्यभात्यमन्ता..भवति
— यदि खल्वभाति प्राणसमृद्धो भूत्वा मन्ता भवति &c
12. सर्वाणि..भूतान्यहरहः प्रपतन्ति
13. अन्नवान्..आनन्दवांश्च भवति यो हैवं वेद
— यावन्तीह वै भूतान्यन्नमदन्ति
14. कालात् स्रवन्ति भूतानि
15. कालः पचति भूतानि

Maitri. 6. 20. तदात्मनात्मानं दृष्ट्वा निरात्मा भवति
21. निरात्मकत्वान्न सुखदुःखभाग्भवति
25. सो ऽपि प्रणवाख्यः प्रणेता भारूपः . . भवति
28. भूतेन्द्रियार्थानतिक्रम्य
— इमानि खलु भूतानि हन्ति
32. तस्माद्वा . . सर्वाणि च भूतान्युच्चरन्ति
— अस्यैवैतानि विश्वा भूतानि
33. आनन्दी मोदी भवति
34. अत्रेमे श्लोका भवन्ति
— यच्चित्तस्तन्मयो भवति
— चेतसः . . यत् सुखं भवेत्
35. आदित्यस्य मध्ये उदित्वा मयूखे भवतः
37. तेनान्नं भवत्यन्नाद्भूतानामुत्पत्तिः
7. 8. *vide* आदि
9. बृहस्पतिर्वै शुक्रो भूत्वा
Mund. 1. 1. 3. सर्वमिदं विज्ञातं भवति
2. 1. 9. येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा Mahânâr. 8. 5.
2. 2. 4. शरवत्तन्मयो भवेत् Dhyâna. 19.
3. 1. 4. विजानन् विद्वान् भवते नातिवादी
3. 2. 9. ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति
— नास्याब्रह्मवित्कुले भवति Mândû. 10.
— गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तो ऽमृतो भवति
Mahânâr. 1. 2. तदेव भूतं तदु भव्यमानमिदम्
4. विवेश भूतानि चराचराणि
11. य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति
2. 3. यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

Mahânâr. 2. 6. तदपश्यत्तदभवत्प्रजासु
7. परीत्य लोकान्परीत्य तानि
4. 13. दुर्मित्रियास्तस्मै भूयासु
5. 9. एष सर्वस्य भूतस्य भुवनस्य गोप्ता
6. 4. भवा तोकाय तनयाय
7. 6. अनिराकरणं धारयितयासम्
12. 3. एष भूतानामधिपतिः
13. 2. विश्वं भूतं भव्यं भुवनम्
5. यस्य वैकंकत्यग्निहोत्रणी भवति
14. 1. विश्वा भूतान्यापः
15. 6. अन्तश्चरसि भूतेषु Prân 1.
16. 4. त्वया जुष्ट ऋषिर्भवतु
20. 1. ये भूताः प्रचरन्ति
15. ज्योतिरहं विरजा वि॰ प्मा भूयासम् 16-21, 25.
21. 2. दानमिति सर्वाणि भूत॰ प्रशंसन्ति
22. 1. दमो भूतानां दुराधर्षम्
— शमो भूतानां दुराधर्षम्
— दानेन द्विषन्तो मित्रा भ॰ न्ति
— पितॄणामनृणो भवति
23. 1. यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा ॰ वन्ति
— ओषधिवनस्पतिभिरन्न॰ वति
— अन्नात्प्राणा भवन्ति भू॰ नाम्
24. 1. स भूतं स च भव्यं जि॰
Praśna. 2. 4. ते ऽश्रद्दधाना बभूवुः
10. कामायान्नं भविष्यति
3. 5. तस्मादेताः सप्तार्चिषो भ॰ न्ति

Nrip. 1. 2. चत्वारः पादा भवन्ति
3. आयुर्यशःकीर्तिज्ञानैश्वर्यवान् भवति
4. इदं सर्वं विश्वानि भूतानि
5. मुमुक्षुर्भवति जपात्
— कलौ नान्येषां भवति
— यो जानीते स मुमुक्षुर्भवति
6. तमेवं विद्वानमृत इह भवति
7. महाविष्णुर्भवति
1. सा प्रथमः पादो भवति Nrisut. 3 (bis)
— सा द्वितीयः पादो भवति Nrisut. 3.
— सा तृतीयः पादो भवति Nrisut. 3.
— सा साम्नश्चतुर्थः पादो भवति
2. अष्टाक्षरः प्रथमः पादो भवत्यष्टाक्षरास्त्रयः पादा भवन्ति
— द्वात्रिंशदक्षरानुष्टुब् भवति
— तस्य हि पञ्चाङ्गानि भवन्ति
— चत्वार्यङ्गानि भवन्ति
— सप्रणवं सर्वं पञ्चमं भवति
— तस्माद्व्यतिषक्तान्यङ्गानि भवन्ति
— तस्मात्त्र्यक्षरमुभयत ओङ्कारो भवति
3. एकादशपदानुष्टुब् भवति
4. सर्वाणि भूतान्युद्गृह्णाति
— सर्वाणि भूतानि विरमति
— सर्वाणि भूतानि स्वतेजसा ज्वलति
— एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाः
— सर्वेषां भूतानां ना वीर्यतमः
— एतद्रूपमक्षरं भवति
— सर्वाणि भूतानि भीत्या पलायन्ते

Nrip. 2. 4. स्वयं भद्रो भूत्वा
3. 1. यदि ह्रस्वा भवति .. दीर्घा भवति .. यदि भवति ज्ञानवान् भव[ति]
— सर्वेषां .. भूतानामाका[श] परायणम्
— सर्वाणि .. भूतान्याका[शा]देव जायन्ते
4. 2. महालक्ष्मीः .. चतुर्विंश[तिः] रा भवति
— नृसिंहगायत्री देवानां .. [निदा]नं भवति
— य एवं वेद स निदान[वान्] भवति
3. कैर्मन्त्रैर्देवः स्तुतः प्रीतो [भ]वति
— ततो देवः प्रीतो भवति MSS. read स्तुतो दे[वः]
5. 1. तस्मात् षडरं भवति ष[डरं] भवति
— ऋतुभिः सम्मितं भवति
— मध्ये नाभिर्भवति
— नाभ्यां वा एते अराः [प्रति]ष्ठिता भवन्ति
— मायया वा एतत् सर्वं वे[ष्टितं] भवति
— मायया बहिर्वेष्टितं भ[वति] (bis).
— अष्टारमष्टपत्रं चक्रं भ[वति]
— गायत्र्या सम्मितं भवति
— द्वादशारं द्वादशपत्रं [चक्रं] भवति
— जगत्या सम्मितं भवति
— बहिर्मायया वेष्टितं भ[वति] (ter).
— षोडशारं षोडशपत्रं [चक्रं] भवति
— पुरुषेण सम्मितं भवति

5. 1. द्वात्रिंशदरं द्वात्रिंशत्पत्रं चक्रं भवति
— अनुष्टुभा सम्मितं भवति
— अरैर्वा एतत् सुबद्धं भवति (some MSS. read सुदर्शनं भवति)
2. तस्य मध्ये नाभ्यां तारकं भवति
— यदक्षरं नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति
— षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवति (similarly, 4 times more).
— एतन्महाचक्रं . . अमृतमयं भवति
— एतन्महाचक्रं बालो वा युवा वा वेद स महान् भवति स गुरुर्भवति . . उपदेष्टा भवति
— यां काञ्चिद्दद्यात्सा दक्षिणा भवति
3. स वायुपूतो भवति Siras. 7; Mahâ. 4.
— स आदित्यपूतो भवति
— स सोमपूतो भवति Siras. 7; Mahâ. 4.
— स सत्यपूतो भवति Siras. 7; Mahâ. 4.
— स लोकपूतो भवति
— स ब्रह्मपूतो भवति
— स विष्णुपूतो भवति
— स रुद्रपूतो भवति
— स वेदपूतो भवति (2 MSS. read देवपूतः)
— स सर्वपूतो भवति Siras. 7; Mahâ. 4.
10. तदेतन्निष्कामस्य भवति

ut. 3. भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा (4 times).

Nrisut. 3. सा चतुर्थः पादो भवति
5. ब्रह्म भवति य एवं वेद (bis).
— परमेव ब्रह्म भवति य एवं वेद
6. ज्योतिरभवत् . . ज्योतिर्भवति
— आनन्दघनं शून्यमभवत्
— एवंवित् . . परमेव ब्रह्म भवति
— परे ब्रह्मणि पर्यवसितो भवेत्
7. स स्वराड् भवति य एवं वेद (ter).
— तस्यादिरयमकारः स एव भवति
— तस्यान्त्यो ऽयं मकारः स एव भवति
— अतिनमाम्यत्यहं भूत्वा
8. एकमेव तद्भवति (4 times).
9. माया चाविद्या च स्वयमेव भवति
— भूतानीन्द्रियाणि . . सृष्ट्वा

Kshur. 5. भूत्वा तत्र गतः प्राणः
20. तद्भाविताः प्रपद्यन्ते

Siras. 1. वर्त्तामि च भविष्यामि च
3. अपाम सोमममृता अभूम
4. सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति
— साकं स एको भूतश्चरति प्रजानाम्
5. तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम्
6. न भूतं नोत भव्यं यदासीत्
— स एवेदमावरीवर्ति भूतम्
— उच्छ्वसिते तमो भवति
— मथ्यमानं फेनो भवति
— फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्म भवति

Śiras.	6. गायत्र्या लोका भवन्ति	Brahma.	1. यो ह्येष महिमा बभूव एषः
	7. अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति Mahâ. 4.		— आत्मनो महिमा बभूव
	— अनुपनीत उपनीतो भवति Mahâ. 4.		2. पुरुषस्य चत्वारि स्थानानि भवन्ति
	— स सूर्य्यपूतो भवति Mahâ. 4.		— नोच्छिष्टो नाशुचिर्भवेत्
	— स सर्वैर्वेदैर्ज्ञातो भवति Mahâ. 4; Kâlâg. 2.	Prâṇâg.	1. संसारविमुक्तिर्भवति
	— स सर्वैर्वेदैरनुध्यातो भवति Mahâ. 4.		2. अभयं सर्वभूतेभ्यो न भ दहं कदाचन (so all MSS.)
	— स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति Mahâ. 4; Kâlâg. 2; Vâsu. 4.		— सर्वेषामेव सूनुर्भवति
	— तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति Mahâ. 4.		— एकऋषिर्भूत्वा
	— गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि जप्तानि भवन्ति Mahâ. 4.		— आहवनीयो भूत्वा
	— रुद्राणां शतसहस्राणि जप्तानि भवन्ति Mahâ. 4.		— दक्षिणाग्निर्भूत्वा
	— प्रणवानामयुतं जप्तं भवति Mahâ. 4.		— गार्हपत्यो भूत्वा
	— शुचिः पूतः कर्मण्यो भवति		4. भूतान्यनुयाजाः
Garbha.	1. इष्टानिष्टानि ..दशविधा भवन्ति	Nila.	7. शिवं बभूव ते धनुः
	3. एकरात्रोषितं कललं भवति		10. उत त्वा विश्वा भूतानि
	— अन्धाः खञ्जाः कुब्जा वामनका भवन्ति		— हस्ते बभूव ते धनुः
	— नवमे मासि सर्वलक्षणज्ञानसम्पूर्णो भवति	Nâda.	7. भानुमण्डलसङ्काशा भवे
	5. त्रीणि स्थानानि भवन्ति		11. एकादशी भवेन्मौनी
Mahâ.	3. पूर्वामुखो भूत्वा		13. भवेद्यक्षो महात्मवान्
	— पश्चिमामुखो भूत्वा		18. मनो लीनं यदा भवेत्
	— उत्तरामुखो भूत्वा	Brahmab.	7. अस्वरं भावयेत्परम्
	— दक्षिणामुखो भूत्वा		12. भूते भूते व्यवस्थितः
Brahma.	1. सम्प्रतिष्ठिता भवन्ति कथम्		20. भूते भूते च वसति विज्ञा
	— कस्यैष महिमा बभूव		22. यद्भूतेषु वसत्यधि
		Dhyâna.	8. एवं सर्वाणि भूतानि मा सूत्रमिवात्मनि
		Nyâsa.	3. विमुक्तमार्गो भवति
			4. पृथिव्या इत्येषां भूताना
		Kaṭhaśru.	1. स सन्न्यस्तो भवति
			— कथं सन्न्यस्तो भवति
			— यद्यपुत्रो भवति
			— यद्यशक्तो भवति
			2. स स्वर्ग्यो भवति
			4. विमुक्तमार्गो भवेत्
		Piṇḍa.	3. अहमाकाशगो भूत्वा

op. 2. पुण्यपापकर्मानुसारी भूत्वा
3. स्वरूपलाभहेतुर्भूत्वा
sa. 2. एकविंशतिसहस्राणि षट् शतान्यधिकानि भवन्ति
— हृदयाद्यङ्गन्यासकरन्यासौ भवतः
— अग्निश्चोभे पार्श्वे भवतः
— पश्यत्यनागारश्च शिष्टोभयपार्श्वे भवतः
— तस्याष्टधा वृत्तिर्भवति
— आग्नेय्यां निद्रालस्यादयो भवन्ति
— यदा हंसो नादे लीनो भवति
— दशमं परमं ब्रह्म भवेत्
rama. 1. यद्येको ऽपि भवति
3. यादृच्छिको भवेद्भिक्षुः
— स ब्रह्महा भवेत्
— स पौल्कसो भवेत्
— स आत्महा भवेत्
— कृतकृत्यो भवति
1. सर्वाणि च भूतानि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते
2. नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्
— य एवं वेद स विष्णुरेव भवति
3. अघेभ्यो विमुक्तो भवति
— घोरेभ्यो विमुक्तो भवति
2. समस्तमहापातकोपपातकेभ्यः पूतो भवति
— तेन सर्वे देवा ध्याता भवन्ति
— स सततं रुद्रजापी भवति
— यस्त्वेतदधीते सोऽप्येवमेव भवति
na. 1. चत्वार आश्रमाः षोडशभेदा भवन्ति
— ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधा भवन्ति

Aśrama. 2. गृहस्था अपि चतुर्विधा भवन्ति
3. वानप्रस्था अपि चतुर्विधा भवन्ति
4. परिव्राजका अपि चतुर्विधा भवन्ति
Jâbâla. 1. सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् (ter); Râmot. 1 (ter).
— अमृतीभूत्वा मोक्षी भवति Râmot. 1.
— तेन वरणा भवतीति Râmot. 4.
2. तेन नासी भवतीति Râmot. 4.
— कतमं चास्य स्थानं भवति Râmot. 4.
— द्यौर्लोकस्य परस्य च संनिधिर्भवति Râmot. 4.
3. एतैर्ह वा अमृतो भवति (4 MSS. add कथं जानीयां)
4. ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत्
— गृही भूत्वा वनी भवेत्
— वनी भूत्वा प्रव्रजेत्
5. ब्रह्मभूयाय भवति
6. लाभालाभौ समौ भूत्वा
Atmapra. 1. द्वैताद्द्वैतमभयं भवति
Vâsu. 1. मुक्तिसाधनं भवति
2. धारणान्मुक्तिदो भव
— ब्रह्मैवाहमस्मीति भावयन्
3. स्वमात्मानं भावयेत्
— भूतेष्वहमवस्थितः
— भूतेषु तथात्मावस्थितोऽस्म्यहम्
— परं ब्रह्म भवाम्यहम्
— अस्थीनि चक्ररूपाणि भवन्त्येव दिने दिने
4. सर्वमहापातकेभ्यः पूतो भवति

Vâsu. 4. सर्वग्रंथीयाजी भवति
— सर्वैर्देवैः पूज्यो भवति
Gopî. 5. राजभिः सत्कृतो भवेत्
— अभिध्याप्यायतो भूत्वा
— साक्षाद्विष्णुमयो भवेत्
— न तत्तुल्यं भवेल्लोके
— प्रजापतिर्वायुर्भूत्वा
— गोपिकाः श्रुतयो ऽभवन्
Krish. 12. यष्टिरूपो ऽभवद्विधिः
14. शेषनागो ऽभवद्रामः
19. क्रीडते बालको भूत्वा
Skanda. 13. वसेदेकान्तिको भूत्वा
Râmap. 21. अभिमुखो भवेत्
28. तदा कोणत्रयं भवेत्
52. ऽयस्तं पुनर्भवेत्
88. क्रमाद्भावयेच्च
Râmot. 2. अकारः प्रथमाक्षरो भवति
— उकारो द्वितीयाक्षरो भवति
— मकारस्तृतीयाक्षरो भवति
— अर्द्धमात्रश्चतुर्थाक्षरो भवति
— बिन्दुः पञ्चमाक्षरो भवति
— नादः षष्ठाक्षरो भवति
— तारकत्वात्तारको भवति
— सो ऽविमुक्तमाश्रितो भवति
— स महान् भवति
3. सा सीता भवति ज्ञेया
— य एवं वेद स मुख्यो भवति
4. स मुक्तो भविता शिव
5. कैर्मन्त्रैः स्तुतः श्रीरामः प्रीतो भवति
— यो वै श्रीरामः . . यश्च भूतं भव्यं भविष्यत् (35)
Mukti. 1. 6. येन मुक्तो भवाम्यहम्
22. सदाचाररतो भूत्वा
25. मदुपासनया भवेत्
43. जीवन्मुक्ता भवन्ति ते
Mukti. 2. क्लेशाल्पत्वाद्बन्धो भवति
— नित्यानन्दावाप्तिः प्रयोजनं भवति
— तत्पुरुषप्रयत्नसाध्यं भवति
— जीवन्मुक्त्यादिलाभो भवति
— अत्र श्लोका भवन्ति
2. 10. भवन्ति फलदा मताः
11. तावन्न फलसम्प्राप्तिर्भवति
36. वैदेहमुक्तिगो भवेत्
55. मुनिभावितः
58. भावितं तीव्रसंवेगात्
— भवत्याशु . . विगतेतरवासनः
70. अन्तःशान्तः समदेहो भव चिन्मात्रवासनः
71. शेषस्थिरसमाधानो भव त्वं भव
74. सुपूर्णभूमाहमितीह भाव
75. सदैव तृप्तो ऽहमितीह भवय
Gîtâ. 1. 13. स शब्दस्तुमुलो ऽभवत्
44. नरके नियतं वासो भवति
46. तन्मे क्षेमतरं भवेत्
2. 9. तूष्णीं बभूव ह
12. नचैव न भविष्यामः
20. नायं भूत्वा भविता वा भूयः
28. अव्यक्तादीनि भूतानि
34. अकीर्त्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति
35. येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा
45. निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन
47. मा कर्मफलहेतुर्भूः
48. सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा
63. क्रोधाद्भवति सम्मोहः
69. यस्यां जाग्रति भूतानि

3. 11. देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः
— परस्परं भावयन्तः
14. अन्नाद्भवन्ति भूतानि
— यज्ञाद्भवति पर्जन्यः
30. निराशीर्निर्ममो भूत्वा
33. प्रकृतिं यान्ति भूतानि
4. 6. भूतानामीश्वरो ऽपि सन्
7. ग्लानिर्भवति भारत
12. सिद्धिर्भवति कर्मजा
35. येन भूतान्यशेषेण
6. 2. योगी भवति कश्चन
17. योगो भवति दुःखहा
42. कुले भवति धीमताम्
46. तस्माद्योगी भवार्जुन
7. 11. धर्माविरुद्धो भूतेषु कामः
23. तद्भवत्यल्पमेधसाम्
26. भविष्याणि च भूतानि
8. 6. सदा तद्भावभावितः
19. भूत्वा भूत्वा प्रलीयते
20. भूतेषु सर्वेषु नश्यत्सु
22. यस्यान्तःस्थानि भूतानि
27. योगयुक्तो भवार्जुन
9. 5. न च मत्स्थानि भूतानि
25. भूतानि यान्ति भूतेज्याः
31. क्षिप्रं भवति धर्मात्मा
34. मन्मना भव मद्भक्तः 18. 65.
10. 5. भवन्ति भावा भूतानाम्
20. भूतानामन्त एव च
22. भूतानामस्मि चेतना
34. उद्भवश्च भविष्यताम्
39. भूतं चराचरम्
11. 2. भवाप्ययौ हि भूतानाम्
12. भवेद्युगपदुत्थिता
32. ऋते ऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे

Gîtâ. 11. 33. निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्
46. तेनैव रूपेण..भव
50. भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा
12. 7. भवामि नचिरात्पार्थ
10. मत्कर्मपरमो भव
13. 15. बहिरन्तश्च भूतानाम्
16. अविभक्तं च भूतेषु
27. समं सर्वेषु भूतेषु
30. यदा भूतपृथग्भावम्
14. 3. सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति
17. प्रमादमोहौ तमसो भवतः
21. अतीतो भवति प्रभो
15. 13. भूतानि धारयाम्यहमोजसा
— सोमो भूत्वा रसात्मकः
14. अहं वैश्वानरो भूत्वा
16. क्षरः सर्वाणि भूतानि
16. 2. दया भूतेष्वलोलत्वम्
3. भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य
13 मे भविष्यति पुनर्धनम्
17. 2. त्रिविधा भवति श्रद्धा
3. सत्त्वानुरूपा.. श्रद्धा भवति
7. त्रिविधो भवति प्रियः
18. 12. भवत्यत्यागिनां प्रेत्य
21. वेत्ति सर्वेषु भूतेषु
46. यतः प्रवृत्तिर्भूतानाम्
54. समः सर्वेषु भूतेषु
57. मच्चित्तः सततं भव
69. भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरः

2. भू

Muṇḍ. 2. 2. 7. यस्यैष महिमा भुवि
Râmap. 5. भुवि स्यादथ तत्त्वतः
79. दीर्घयुक्ता भूः

Gîtâ. 18. 69. अन्यः प्रियतरो भुवि

भूगृह

Râmap. 70. भूगृहं वज्रशूलाद्यम्

भूतगण

Maitri. 3. 3. चतुरशीतिधा परिणतं भूतगणम्

Gîtâ. 17. 4. प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये

भूतग्राम

Gîtâ. 8. 19. भूतग्रामः स एवायम्
9. 8. भूतग्राममिदं कृत्स्नम्
17. 6. शरीरस्थं भूतग्रामम्

भूततस्

Gauḍa. 3. 23. भूततोऽभूततो वापि

भूतदर्शन

Gauḍa. 4. 25. दृश्यते भूतदर्शनात्

भूतपाल

Bṛih. 4. 4. 22. एष भूतपालः Maitri. 7. 7.

भूतप्रकृति

Gîtâ. 13. 34. भूतप्रकृतिमोक्षं च

भूतभर्तृ

Gîtâ. 13. 16. भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयम्

भूतभव्य

Bṛih. 4. 4. 15. ईशानं भूतभव्यस्य Kaṭha. 4. 5.

Kaṭha. 4. 12. ईशानो भूतभव्यस्य 13.

भूतभावन

Gîtâ. 9. 5. ममात्मा भूतभावनः
10. 15. भूतभावन भूतेश

भूतभाविन्

Chûl. 5. जनित्री भूतभाविनी

भूतभावोद्भवकर

Gîtâ. 8. 3. भूतभावोद्भवकरो विसर्गः

भूतभृत्

Gîtâ. 9. 5. भूतभृन्न च भूतस्थः

भूतमहेश्वर

Gîtâ. 9. 11. परं भावं . . मम भूतमहेश्वरम्

भूतमात्रा

Kaush. 3. 5. परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा (10 times).
8. ता वा एता दशैव भूतमात्रा अधिप्रज्ञम्
— यद्धि भूतमात्रा न स्युर्न प्रज्ञामात्राः स्युर्यद्वा प्रज्ञामात्रा न स्युर्न भूतमात्राः स्युः
— एवमेवैता भूतमात्राः प्रज्ञामात्रास्वर्पिताः

भूतयोनि

Muṇḍ. 1. 1. 6. यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः

Kaivalya. 7. मुनिर्गच्छति भूतयोनिम्

भूतल

Kṛish. 1. गृह्यन्ते नैव भूतले

भूतवत्

Gauḍa. 4. 41. अचिन्त्यान् भूतवत्स्पृशेत्

भूतविद्

Bṛih. 3. 7. 1. स भूतवित्स आत्मवित्

भूतविद्या

Chhâ. 7. 1. 2. अध्येमि . . भूतविद्याम्
4. नाम वै . . भूतविद्या
7. 2. 1. वाग्वै . . विज्ञापयति . . विद्याम्

hâ. 7. 7. 1. विज्ञानेन वै..विजानाति .. भूतविद्याम्

भूतविशेषसंघ

i. 11. 15. सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्

भूतशब्द

itri. 3. 2. भूतशब्देनोच्यन्ते (bis).

भूतसम्मोहन

il. 2. भूतसम्मोहने काले

भूतसर्ग

i. 16. 6. द्वौ भूतसर्गौ लोके ऽस्मिन्

भूतस्थ

i. 9. 5. भूतभृन्न च भूतस्थः

भूतात्मन्

tri. 3. 2. यो ह..शरीर इत्युक्तं स भूतात्मेत्युक्तम्
3. यः कर्ता सो ऽयं वै भूतात्मा
— असौ भूतात्मान्तःपुरुषेणाभिभूतः
— अभिभूयत्ययं भूतात्मा
5. भूतात्मा तस्मान्नानारूपाण्याप्नोति
4. 1. अस्य को विधिर्भूतात्मनः
2. येषां सक्तस्तु भूतात्मा
3. अयं..अस्य प्रतिविधिर्भूतात्मनः
6. 10. तस्यायं भूतात्मा ह्यन्नम्
— सोमसंज्ञो ऽयं भूतात्मा
hmab. 12. एक एव हि भूतात्मा
rop. 2. भूतात्मज्ञानावृते

भूतात्माख्य

ri. 3. 2. अस्ति खल्वन्यो ऽपरो भूतात्माख्यः

भूतादि

Gîtâ. 9. 13. ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्

भूतादिक

Râmap. 85. भूतादिकं शोधयेत्

भूताधिपति

Brih 4. 4. 22. एष भूताधिपतिरेष भूतपालः Maitri. 7. 7.

भूति

Tait. 1. 11. 1. भूत्यै न प्रमदितव्यम्
Gîtâ. 18. 78. तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवाणि

भूतिकाम

Mund. 3 1. 10. तस्मादात्मज्ञमर्चयेद्भूतिकामः

भूतेश

Gîtâ. 10. 15. भूतभावन भूतेश

भूपति

Krish. 17. कलिः स कंसभूपतिः

भूतित्व

Gopi. 5. विष्णुपूजितभूतित्वात्

भूतेज्य

Gîtâ. 9. 25. भूतानि यान्ति भूतेज्याः

भूमन्

Chhâ. 1. 5. 4. प्राणांस्त्वं भूमानमभिगायतात्
7. 23. 1. यो वै भूमा तत् सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमानं भगवो विजिज्ञासे
7. 24 1. यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा

Chhâ. 7. 24. 1. यो वै भूमा तदमृतम्
Mukti. 2. 74. सुपूर्णभूमाहमितीह भावय

भूमि

Bṛih. 5. 14. 1. भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टाक्षराणि
Katha. 1. 23. भूमेर्महदायतनं वृणीष्व
Śwet. 3. 14. स भूमिं विश्वतो वृत्वा
Maitri. 6. 4. आकाशवाय्वग्न्युदकभूम्यादयः
27. भूमावयस्पिण्डं निहितम्
Mahânâr. 1. 4. तोयेन जीवान्विससर्ज भूम्याम्
4. 5. भूमिर्धेनुर्धरित्री च
5. 12. रजोभूमिस्त्वमारोदयस्व
15. 5. भूम्यां पर्वतमूर्धनि
Kaivalya. 23. न भूमिरापो न च वह्निरस्ति
Nṛip. 5. 2. सप्तद्वीपवती भूमिः
Śiras. 6. नवान्तरिक्षाणि नव भूम इमाः (भूमयः has lost its last syllable; one MS. has भूव)
Prâṇâg. 1. अन्नं भूमौ निक्षिप्य
Nila. 2. प्रत्यष्ठाद्भूम्यामधि
Aruṇeya. 2. भूमावप्सु वा विसृजेत्
5. आसनशयनादिकं भूमौ
Kṛish. 27. भूमावुत्तारितं सर्वम्
Râmap. 37. विचेरतुस्तदा भूमौ
Gîtâ. 2. 8. अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धम्
7. 4. भूमिरापो ऽनलो वायुः

भूमित्व

Maitri. 6. 27. अचिरेणैति भूमित्वम्

भूमिबुध्न

Chhâ. 3. 15. 1. अन्तरिक्षोदरः कोशो भूमिबुध्नः

भूमिभाग

Amṛita. 17. भूमिभागे समे रम्ये

भूयस्

Kaush. 3. 8. न साधुना कर्मणा भूयान् Bṛih. 4. 4. 22.
Chhâ. 3. 11. 6. एतदेव ततो भूय इति
6. 5. 4. भूय एव मा भगवान् विज्ञापयतु 6. 6. 5; 6. 8. 7; 6. 9. 4; 6. 10. 3; 6. 11. 3; 6. 12. 3; 6. 13. 3; 6. 14. 3; 6. 15. 3; Nṛisut. 7 (नो)
7. 1. 5. अस्ति भगवो नाम्नो भूय इति नाम्नो वाव भूयो ऽस्ति (similarly in each Section down to the 14th)
7. 2. 1. वाग्वाव नाम्नो भूयसी (similarly in each down to 14th.)
8. 9. 3. एतं त्वेव ते भूयो ऽनुव्याख्यास्यामि 8. 10. 4; 8. 11. 3.
Bṛih. 1. 2. 6. भूयसा यज्ञेन भूयो यजेय
1. 4. 17. नेच्छंश्चनातो भूयो विन्देत्
4. 4. 10. ततो भूय इव ते तमः (प्रविशन्ति) Iśâ. 9, 12.
Katha. 1. 16. वरं तवेहाद्य ददामि भूयः
3. 8. यस्माद्भूयो न जायते
Swet. 1. 10. तस्याभिध्यानात्..भूयः
13. स भूय एवेन्धनयोनिगृह्यः
5. 3. भूयः सृष्ट्वा पतयस्तथेशः
6. 3. विनिवृत्य भूयः
Maitri. 6. 9. अग्निर्भूय एवोपरिष्टात्पिदधाति
Mahânâr. 21. 2. प्रजननमिति भूयांसः
24. 1. भूयो न मृत्युमुपयाहि
Praśna. 1. 2. भूय एव तपसा..संवत्सरं संवत्स्यथ
Chûl. 18. नश्यन्ते व्यक्ततां भूयो जायन्ते

hma. 1. भूयस्तेनैव स्वमाय गच्छति
rita. 38. न स भूयो ऽभिजायते Gîtâ. 13. 23.
âsa. 5. भूयस्ते न निवर्त्तन्ते
â. 2. 20. नायं भूत्वा भविता वा न भूयः
6. 43. यतते च ततो भूयः
7. 2. यज्ज्ञात्वा नेह भूयो ऽन्यत्
10. 1. भूय एव महाबाहो
18. भूयः कथय
11. 35. नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णम्
39. पुनश्च भूयो ऽपि नमो नमस्ते
50. स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः
14. 1. परं भूयः प्रवक्ष्यामि
15. 4. यस्मिन् गता न निवर्त्तन्ति भूयः
18. 64. सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु

भूयिष्ठ

hâ. 6. 2. 4. यत्र..वर्षति तदेव भूयिष्ठमन्नं भवति
ih. 5. 15. 1. भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम Iśâ. 18.
hânâr. 21. 2. तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजायन्ते तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजनने रमन्ते

भूयोजन्मन्

ikti. 2. 35. भूयोजन्मविनिर्मुक्तम्

भूर्

hâ. 2. 23. 3. भूर्भुवः स्वरिति
3. 15. 3. भूः प्रपद्ये ऽमुनामुनामुना
5. यदवोचं भूः प्रपद्य इति
4. 17. 3. भूरित्यृग्भ्यः
4. भूः स्वाहा Bṛih. 6. 3. 3, 6.

Bṛih. 5. 5. 3. तस्य भूरिति शिरः 4.
6. 3. 3. भूर्भुवः स्वः स्वाहा 6.
6. 4. 25. भूस्ते दधामि
— भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि
Tait. 1. 5. 1. भूर्भुवः सुवरिति .. व्याहृतयः
— भूरिति वा अयं लोकः
2. भूरिति वा अग्निः
— भूरिति वा ऋचः
3. भूरिति वै प्राणः
1. 6. 1. भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति
Maitri. 6. 5. भूर्भुवः स्वरिति लोकवत्येषा
6. अनुव्याहरद्भूर्भुवः स्वरिति
— नाभिर्भुवो भूः पादाः
— एतस्माद्भूर्भुवः स्वरित्युपासीत
35. भूर्भुवः स्वरोम् Mahânâr. 13. 1; 15. 2; Śiras. 6; Prâṇâg. 1.
Mahânâr. 7. 1. ओं भूरग्नये
— भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे
— भूर्भुवः सुवरग्निरोम्
2. भूरन्नमग्नये
— भूर्भुवः सुवरन्नं चन्द्रमसे
— भूर्भुवः सुवरन्नमोम्
3. भूरग्नये च पृथिव्यै च
— भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे च
— भूर्भुवः सुवर्महरोम्
5. भूर्भुवः सुवश्छन्द ओम्
8. 1. भूर्भुवः सुवर्ब्रह्म
14. 1. भूर्भुवः सुवराप ओम्
15. 3. ओं भूर्भुवः सुवर्महः
Śiras. 2. यो वै रुद्रः..यश्च भूः
3. भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते
Mahâ. 3. भूरिति व्याहृतिः
Kaṭhaśru. 8. भूः स्वाहेत्यप्सु जुहुयात्

Jâbâla. 6. एतत्सर्वं भूः स्वाहेत्यप्सु परित्यज्य

Râmot. 5. भूर्भुवः स्वः (47 times).

भूरि

Tait. 1. 4. 1. कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्

भूरिद्युम्न

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

भूर्लक्ष्मी

Mahânâr. 4. 9. भूर्लक्ष्मीर्भुवर्लक्ष्मीः सुवः कालकर्णी Nrip. 4. 2.

भूर्लोक

Nrip. 5. 6. स भूर्लोकं जयति

Nâda. 3. भूर्लोकः पादयोस्तस्य

Aruneya. 1. *vide* तपोलोक

Kâlâg. 2. प्रथमा रेखा सा..भूर्लोकः

भूष्

Râmap. 71. राज्यादिभूषितम्

भृ

Ait. 4. 1. आत्मन्येवात्मानं बिभर्त्ति

3. तं स्त्री गर्भं बिभर्त्ति

Brih. 1. 2. 4. तमेतावन्तं कालमबिभः

1. 3. 18. न हैवालं भार्य्येभ्यो भवति — यो वै तमनु भार्य्यान्बुभूर्षति स हैवालं भार्य्येभ्यो भवति

1. 6. 1. एतदेषां ब्रह्मैतद्धि सर्वाणि नामानि बिभर्त्ति (similarly in 2, 3.)

Swet. 1. 8. व्यक्ताव्यक्तं भरते विश्वमीशः

3. 6. यामिषुं..हस्ते बिभर्ष्यस्तवे Nîla. 5.

5. 2. यस्तमग्रे ज्ञानैर्बिभर्त्ति

Maitri. 6. 1. द्विधा वा एष आत्मानं बिभर्त्ति

Mahânâr. 1. 6. विश्वं बिभर्त्ति भुवनस्य नाभिः

Mahâ. 2. बिभ्रच्छ्रियं सत्यं ब्रह्मचर्यम्

Gîtâ. 15. 17. बिभर्त्यव्यय ईश्वरः

भृगु

Tait. 3. 1. 1. भृगुर्वै वारुणिः

Gîtâ. 10. 25. महर्षीणां भृगुरहम्

भृगुविस्तर

Chûl. 11. पठ्यते भृगुविस्तरे

भृगूत्तम

Chûl. 10. अथर्वाणो भृगूत्तमाः

भृज्

Maitri. 6. 7. भर्जयतीति वैष भर्गः

भृम्

Râmap. 68. ह्रं स्रं भृं वृं ल्रं शृं जृं च

भृश

Chhâ. 7. 15. 2. किञ्चिद्भृशमिव प्रत्याह

भृशम्

Mukti. 2. 9. सन्दिग्धायामपि भृशम्

भेक

Maitri. 1. 4. अन्धोदपानस्थो भेक इवाहम्

6. 22. भेकाविःकृन्धिका

भेद

Maitri. 6. 10. त्रिगुणभेदपरिणामत्वात्

7. 11. भेदाश्चैते ऽस्य चत्वारः

Gauda. 2. 1. अन्तःस्थानात्तु भेदानाम्

5. भेदानां हि समत्वेन

11. उभयोरपि वैतथ्यं भेदानाम्

— क एतान्बुध्यते भेदान्

da. 2. 12. स एव बुध्यते भेदान्
3. 6. आकाशस्य न भेदोऽस्ति
15. नास्ति भेदः कथञ्चन
18. द्वैतं तद्भेद उच्यते
4. 94. भेदे विचरतां सदा
ấna. 3. नान्यो भेदः कदाचन
vop. 2. प्राणादिचतुर्दशवायुभेदाः
3. कूटस्थाद्युपहितभेदानाम्
ama. 2. तयोर्भेद एक एव विभ्रमः
ında. 10. यथान्तरं (!) न भेदाः स्युः
kti. 1. 13. पञ्चाशद्भेदतो हरे
ā. 17. 7. तेषां भेदमिमं शृणु
18. 29. बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव

भेदनिम्न

ıda. 4. 94. भेदनिम्नाः पृथग्वादाः

भेरी

ā. 1. 13. ततः शंखाश्च भेर्यश्च

भेरीनाद

ıısa. 2. नवमो भेरीनादः

भेषजकृत

hâ. 4. 17. 8. भेषजकृतो ह वा एष यज्ञः

भैक्ष

ȧla. 6. भैक्षमाचरन्नुदरपात्रेण
anda. 12. भैक्षमाचरेद्देहरक्षणे

भैक्षचर्य, °र्या.

nd. 1. 2. 11. शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः
aśru. 1. चतुर्षु वर्णेषु भैक्षचर्यं चरेत्

भैक्षाचर्य (!)

ma. 4. भैक्षाचर्यं चरन्तः(so MSS.)

भैक्षाण

a. 5. शुचिरद्रोही भैक्षाणः

(So 2 good MSS. and Nârâyaṇa. The latter says भैक्षेण अनिति प्राणिति जीवति भैक्षाणः। यद्वा शानजन्तः "अनित्यमागमशासनमिति" कामयानशब्दवन्मुगभावः स्वार्थिकोऽण्। The reading explained by Śaṁkarânanda is भिक्षाणः)

भैक्ष्य

Gîtâ. 2. 5. श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यम्

भोक्तृ

Katha. 3. 4. आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः
Śwet. 1. 9. भोक्तृभोगार्थयुक्ता
12. भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च
Maitri. 6. 10. पुरुषश्चेता..स एव भोक्ता
— भोक्ता पुरुषो ऽन्तःस्थः
— तस्माद्भोक्ता पुरुषः
— अस्य निर्गुणो भोक्ता
16. होता भोक्ता हविर्मन्त्रः
Kaivalya. 18. भोक्ता भोगश्च यद्भवेत्
Gauḍa. 1. 5. भोक्ता यश्च प्रकीर्तितः
2. 22. भोक्तेति च भोक्तृविदः
Gîtâ. 5. 29. भोक्तारं यज्ञतपसाम्
9. 24. भोक्ता च प्रभुरेव च
13. 22. भर्ता भोक्ता महेश्वरः

भोक्तृत्व

Maitri. 6. 10. भोक्तृत्वाच्चैतन्यं प्रसिद्धं तस्य
Mukti. 2. कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिलक्षणः
Gîtâ. 13. 20. सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुः

भोक्तृभाव

Śwet. 1. 8. अनीशश्चात्मा बुध्यते भोक्तृभावात्

भोक्तृविद्

Gauḍa. 2. 22. भोक्तेति च भोक्तृविदः

भोग

Bṛih. 1. 3. 2. यो वाचि भोगस्तं देवेभ्य आगायत् (similarly in 3—7).
4. 3. 33. सर्वैर्मानुष्यकैर्भोगैः सम्पन्नतमः

Kaivalya. 12. स्त्रियन्नपानादिविचित्रभोगैः
18. भोक्ता भोगश्च यद्भवेत्

Gauḍa. 1. 3. त्रिधा भोगं निबोधत
9. भोगार्थं सृष्टिरित्यन्ये

Nyâsa. 2. भोगांस्त्यजति सुस्थितान्

Mukti. 2. 41. क्षीयन्ते भोगवासनाः

Gîtâ. 1. 32. किं भोगैर्जीवितेन वा
33. राज्यं भोगाः सुखानि च
2. 5. भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्
3. 11. इष्टान्भोगान्हि वः
5. 22. ये हि संस्पर्शजा भोगाः

भोगायमान

Śiras. 6. भोगायमानो यदा शयते रुद्रः

भोगार्थ

Śwet. 1. 9. भोक्तृभोगार्थयुक्ता

भोगिन्

Gîtâ. 16. 14. ईश्वरो ऽहमहं भोगी

भोगेच्छा

Mukti. 2. 15. भोगेच्छां दूरतस्त्यक्त्वा

भोगैश्वर्यगति

Gîtâ. 2. 43. भोगैश्वर्यगतिं प्रति

भोगैश्वर्यप्रसक्त

Gîtâ. 2. 44. भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम्

भोजन

Chhâ. 5. 2. 7. वयं देवस्य भोजनमित्याचामति

Gîtâ. 11. 42. विहारशय्यासनभोजनेषु
17. 10. भोजनं तामसप्रियम्

भोजिन्

Aśrama. 3. शीर्णपर्णफलभोजिनः

भोज्यत्व

Maitri. 6. 10. अनेनैव प्रधानस्य भोज्यत्वं व्याख्यातम्

भ्रम्

Bṛih. 6. 3. 4. भ्रमदसि ज्वलदसि

Swet. 1. 6. तस्मिन् हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे
6. 1. येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम्

Maitri. 4. 2. पाप्मना गृहीत इव भ्राम्यमाणम्
7. 8. मिथ्यादृष्टान्तहेतुभिर्भ्राम्यन्

Yogat. 5. भ्रमन्तो यानि जन्मानि

Mukti. 2. 60. भ्रान्तं पश्यति दुर्दृष्टिः

Gîtâ. 1. 30. भ्रमतीव च मे मनः
18. 61. भ्रामयन् सर्वभूतानि

भ्रमर

Mukti. 1. 24. भ्रमरकीटवत्

भ्राज्

Śwet. 2, 14. तेजोमयं भ्राजते तत्सुधातम्
5. 4. सर्वा दिशः..प्रकाशयन् भ्राजते

Muṇḍ. 1. 2. 5. एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु

भ्राजस्

Mahânâr. 1. 3. येनादित्यस्तपति तेजसा भ्राजसा च
15: 1. बलमसि भ्राजो असि

भ्राजस्वन्त्

ânâr. 20. 8. सूर्य्याय त्वा भ्राजस्वते (bis).

भ्रातृ

. 7. 15. 1. प्राणो भ्राता
2. स यदि . . भ्रातरं वा . . किञ्चिद्भृशं प्रत्याह
8. 2. 3. भ्रातरः समुत्तिष्ठन्ति
ıeya. 1. पुत्रान् भ्रातॄन् . . विसृजेत्
1. 26. आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्

भ्रातृलोक

. 8. 2. 3. भ्रातृलोकेन सम्पन्नो महीयते

भ्रातृलोककाम

. 8. 2. 3. यदि भ्रातृलोककामो भवति

भ्रातृव्य

. 1. 3. 7. परास्य द्विषन् भ्रातृव्यो भवति
2. 2. 1. सप्त द्विषतो भ्रातृव्यानवरुणद्धि
3. 10. 4. पर्य्येणं म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः परि ये ऽप्रिया भ्रातृव्याः

भ्रातृहन्

. 7. 15. 2. भ्रातृहा वै त्वमसि
3. न भ्रातृहासीति

भ्रू

6. 4. 5. अन्तरेण स्तनौ वा भ्रुवौ वा निमृंज्यात्
4. भ्रुवोर्ल्ललाटमध्ये तु
ıa. 22. भ्रुवोर्मध्ये नयेल्लयम्
23. भ्रुवोर्मध्ये ललाटस्तु
. 14. भ्रुवोर्ल्ललाटमध्यस्थम्
5. दृष्टिं श्रोत्रे स्थाप्य तथा भ्रुवि (3 MSS. have भुवि)

39

Kâlâg. 1. भ्रुवोर्मध्यतः
Jâbâla. 2. भ्रुवोर्घ्राणस्य च यः सन्धिः Râmot. 4.
Vâsu. 3. ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये
Gîtâ. 5. 27. चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः
8. 10. भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्

भ्रूणहत्या

Kaush. 3. 1. न स्तेयेन न भ्रूणहत्यया
Mahânâr. 17. 7. भ्रूणहत्यां वा एते घ्नन्ति
19. 1. भ्रूणहत्यां तिलाः शमयन्तु
Nrip. 5. 4. स भ्रूणहत्यां तरति Râmot. 2.

भ्रूणहन्

Brih. 4. 3. 22. भ्रूणहाभ्रूणहा
Mahânâr. 5. 11. भ्रूणहा गुरुतल्पगः

भ्रूमध्य

Nrisut. 3. मकारं रुद्रं भ्रूमध्ये

मकर

Gîtâ. 10. 31. झषाणां मकरश्चास्मि

मकार

Mâṇḍû. 8. अकार उकारो मकारः Nâr. 5; Atmapra. 1.
11. मकारस्तृतीया मात्रा
Gauḍa. 1. 23. मकारश्च पुनः प्राज्ञम्
Nrip. 2. 1. तृतीया द्यौः स मकारः Nrisut. 3; Sikhâ. 1.
Nrisut. 2. ईश्वरश्चतूरूपो मकार एव चतूरूपो ह्ययं मकारः
3. मकारं रुद्रं भ्रूमध्ये
5. मकारो महाविभूत्यर्थः
— परमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात्
7. तस्यान्त्यो ऽयं मकारः

Nṛisut. 7. मकारेण परमं ब्रह्मान्विच्छत्
— आत्मानमन्विष्य मकारेण ब्रह्मणा सन्दध्यात्
— मकारेण मनआद्यवितारं ..अन्विच्छेत्

Brahmav. 7. मकारः परिकीर्तितः
9. मकारश्चाग्निसङ्काशः

Śikhâ. 1. सा लुप्तमकारः

Nâda. 1. मकारस्तस्य पुच्छं वै

Amrita. 4. अस्वरेण मकारेण

Yogat. 10. मकारे लभते नादम्

Kâlâg. 2. तृतीया रेखा सा..मकारः

Vâsu. 2. अकारोकारमकाराः

Râmot. 2. मकारस्तृतीयाक्षरो भवति
3. मकाराक्षरसम्भवः

मकारभाव

Gauḍa. 1. 21. मकारभावे प्राज्ञस्य

मकाररूप

Nṛisut. 2. स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्मकाररूपैः

मकारार्थ

Nṛisut. 7. सिंहमाकृष्य .. मकारार्थेनानेनात्मनैकीकुर्यात्
(another reading is मकारार्धेनार्थेनानेनात्मनै०)
— एनं मकारार्थेन परेण ब्रह्मणैकीकुर्यात्

मक्षिका

Bṛih. 3. 3. 2. यावद्वा मक्षिकायाः पत्त्रम्

Praśna. 2. 4. यथा मक्षिका मधुकरराजानमुत्क्रामन्तं सर्वा एवोत्क्रामन्ते

मघ

Maitri. 7. 1. योगीश्वरः सर्वज्ञो मघः

मघवन्, मघवन्त्

Kaush. 2. 11. अस्मै प्रयन्धि मघवन्नृजीषिन्

Kena. 24. मघवन्नेतद्विजानीहि

Chhâ. 8. 9. 2. मघवन्यच्छान्तहृदयः प्रव्राजीः 8. 10. 3; 8. 11. 2
3. एवमेवैष मघवन्निति होवाच 8. 10. 4; 8. 11. 3.
8. 11. 3. मघवान्..ब्रह्मचर्यमुवास
8. 12. 1. मघवन्मर्त्यं वा इदं शरीरम्

Mahânâr. 20. 3. स्वस्ति नो मघवा धातु
4. मघवञ्छग्धि
11. स्वस्ति नो मघवा करोतु

Praśna. 2. 5. एष पर्जन्यो मघवानेषः

मघाद्य

Maitri. 6. 14. मघाद्यं श्रविष्ठार्द्धमाग्नेयम्

मच्चित्त

Gitâ. 6. 14. मनः संयम्य मच्चित्तः
10. 9. मच्चित्ता मद्गतप्राणाः
18. 57. मच्चित्तः सततं भव
58. मच्चित्तःसर्वदुर्गाणि..तरिष्यसि

मज्ज्

Kaush. 1. 4. तमित्वा सम्प्रतिविदो मज्जन्ति

Katha. 2. 3. यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः

मज्जन्, मज्जस्, मज्जा

Chhâ. 2. 19. 1. मज्जा निधनम्
2. संवत्सरं मज्ज्ञो नाश्नीयात्
ब्रूतं मज्ज्ञो नाश्नीयादिति
6. 5. 3. यो मध्यमः स मज्जा

Bṛih. 3. 9. 28. मज्जा मज्जोपमा कृता

Tait. 1. 7. 1. चर्म मांसं स्नावास्थि मज्जा

Maitri. 1. 3. *vide* संघात

itri. 3. 4. *vide* वसा
bha. 2. अस्थिभ्यो मज्जा मज्जातः शुक्रम्
5. पञ्च मज्जाशतानि
da. 5. अस्थिमज्जा प्रजायते

मज्जोपम

h. 3. 9. 28. मज्जा मज्जोपमा कृता

मटची

â. 1. 10. 1. मटचीहतेषु कुरुषु

मणि

l. 1. त्रिसूत्रं मणिमव्ययम्

मणिकर्णी

ot. 4. मणिकर्ण्यां वा मत्क्षेत्रे वा

मणिगण

ma. 2. सूत्रे मणिगणा इव
Gîtâ. 7. 7.

मणिगणसूत्र

op. 3. मणिगणसूत्रमिव सर्वक्षेत्रेष्वनुस्यूतत्वेन

मणिपुष्पक

1. 16. सुघोषमणिपुष्पकौ

मणिपूरक

sa. 1. मणिपूरकं च गत्वा

मणिसूत्र

na. 8. एवं सर्वाणि भूतानि मणिसूत्रमिवात्मनि

मण्ड

. 4. 16. घृतात्परं मण्डमिवातिसूक्ष्मम्

मण्डन

5. गोपीचन्दनमण्डनम्
— मण्डनात्पावनं नृणाम्

मण्डल

Brih. 2. 3. 3. य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषः 5. 5. 2, 3.
5. 5. 2. शुद्धमेवैतन्मडलं पश्यति
Maitri. 6. 16. यो ऽमुष्मिन् भाति मण्डले
38. सौरसौम्याग्नेयसात्त्विकानि मण्डलानि
Mahânâr. 12. 2. आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपति
— तदृचा मण्डलम्
— य एष एतस्मिन्मण्डले अर्चिषि पुरुषः
— स यजुषा मण्डलम्
— य एष एतस्मिन्मण्डले ऽर्चिर्दीप्यते
— स साम्ना मण्डलम्
Amrita. 17. जप्त्वा चैवाथ मण्डलम्
26. सुषिरं मण्डलं विदुः
38. यस्यैष मण्डलं भित्त्वा
Râmap. 71. एवं मण्डलमालिख्य
Mukti. 1. 34. चूडानिर्वाणमण्डलम्

मण्डलब्राह्मण

Mukti. 1. *vide* मुक्तिका

मति

Ait. 5. 2. मेधादृष्टिर्धृतिर्मतिः
Chhâ. 7. 18. 1. मतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति मतिं भगवो विजिज्ञासे
Brih. 2. 4. 5. आत्मनो वा अरे.. मत्या
3. 4. 2. न मतेर्मन्तारं मन्वीथाः
4. 3. 28. न हि मन्तुर्मतेर्विपरिलोपः
Katha. 2. 9. नैषा तर्केण मतिरापनेया
Pinda. 5. मतिस्तस्याभिजायते
Hamsa. 2. पूर्वदले पुण्ये मतिः
— याम्ये क्रूरे मतिः
Gîtâ. 6. 36. दुष्प्राप इति मे मतिः

Gîtâ. 18. 70. ज्ञानयज्ञेन..इष्टः स्यामिति मे मतिः
78. तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम

मतिमन्त्

Yogaśi. 4. मतिमानुपलक्षयेत्

मत्कर्मकृत्

Gîtâ. 11. 55. मत्कर्मकृन्मत्परमः

मत्कर्मपरम

Gîtâ. 12. 10. मत्कर्मपरमो भव

मत्पर

Gîtâ. 2. 61. युक्त आसीत मत्परः 6. 14.
12. 6. कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः
18. 57. सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः

मत्परम

Gîtâ. 11. 55. मत्कर्मकृन्मत्परमः
12. 20. श्रद्दधाना मत्परमाः

मत्परायण

Gîtâ. 9. 34. युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः

मत्संस्थ

Gîtâ. 6. 15. मत्संस्थामधिगच्छति

मत्सर

Parama. 2. *vide* आदि
Krish. 15. मत्सरो मुष्टिको ऽजयः

मत्स्थ

Gîtâ. 9. 4. मत्स्थानि सर्वभूतानि
5. न च मत्स्थानि भूतानि
6. तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय

मत्स्य

Kaush. 1. 2. मत्स्यो वा शकुनिर्वा
Chhâ. 1. 4. 3. यथा मत्स्यमुदके परिपश्येत्
Râmot. 5. मत्स्यकूर्माद्यवताराः (10).

मथ्

Chhâ. 6. 6. 1. दध्नः सोम्य मथ्यमानस्य
Siras. 6. अप्स्वङ्गुल्या मथिते मथितम्
— मथ्यमानं फेनो भवति
Brahmab. 20. सततं मन्थयितव्यम्

मथुरा

Gopî. 5. मथुरायां वसुदेवसद्मन्याविर्भविष्यति

मद्

Brih. 6. 4. 9. दिग्धविद्धामिव मादयेमाम्
Mahânâr. 9. 11. अनुष्वधमावह मादयस्व
Mukti. 2. 44. मत्तो यथा दुष्टमतंगजः

मद

Parama. 2. *vide* आदि
Mukti. 2. 60. मदवशादिव
Gîtâ. 16. 10. दम्भमानमदान्विताः
17. धनमानमदान्विताः
18. 35. विषादं मदमेव च

मदामद

Katha. 2. 21. कस्तं मदामदं देवं मदन्यो ज्ञातुमर्हति

मदाश्रय

Gîtâ. 7. 1. योगं युञ्जन्मदाश्रयः

मदिरोन्मत्त

Maitri. 4. 2. मदिरोन्मत्त इव मदिरोन्मत्तम्

मद्गत

à. 6. 47. मद्गतेनान्तरात्मना

मद्गतप्राण

à. 10. 9. मच्चित्ता मद्गतप्राणाः

मद्

hâ. 4. 8. 1. मद्रुष्टे पादं वक्तेति
2. तं मद्गुरुपनिपत्याभ्युवाद
atri. 6. 34. मद्गुर्हंसस्तेजोवृषः

मद्भक्त

tâ. 7. 23. मद्भक्ता यान्ति मामपि
9. 34. मन्मना भव मद्भक्तः
18. 65.
11. 55. मद्भक्तः संगवर्जितः
12. 14. यो मद्भक्तः स मे प्रियः
16.
13. 18. मद्भक्त एतद्विज्ञाय
18. 68. मद्भक्तेष्वभिधास्यति

1. मद्भाव

tâ. 10. 6. मद्भावा मानसा जाताः

2. मद्भाव

tâ. 4. 10. मद्भावमागताः
13. 18. मद्भावायोपपद्यते
14. 19. मद्भावं सो ऽधिगच्छति

मद्यप

hâ. 5. 11. 5. न कदर्यो न मद्यपः

मद्याजिन्

tâ. 9. 25. यान्ति मद्याजिनो ऽपि माम्
34. मद्याजी मां नमस्कुरु
18. 65.

मद्र

h. 3. 3. 1. मद्रेषु चरकाः पर्यव्रजाम
3. 7. 1. मद्रेष्ववसाम

मद्रूप

Vâsu. 3. मद्रूपमव्ययं ब्रह्म

मद्व्यपाश्रय

Gîtâ. 18. 56. कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः

मधु

Chhâ. 5. 2. 4. दधिमधुनोरुपमथ्य
6. 9. 1. यथा मधु मधुकृतो निस्तिष्ठन्ति
Brih. 2. 5. 1. सर्वेषां भूतानां मधु.. सर्वाणि भूतानि मधु (14 times).
16. इदं वै तन्मधु (4 times).
— यन्मध्वाथर्वणो वां..प्रयदीमुवाच
17. स वां मधु प्रावोचत्
6. 3. 6. मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः Mahânâr. 9. 8; 17. 7.
— मधु नक्तमुतोषसः Mahânâr. 9. 9; 17. 7.
— मधु द्यौरस्तु नः पिता Mahânâr. 9. 9; 17. 7.
13. दधनि मधुनि घृत उपसिञ्चति
6. 4. 25. दधि मधु घृतं सन्नीय
Mahânâr. 13. 1. मधु क्षरन्ति तद्ब्रह्म 15. 3.
17. 6. मधु मेतु मां (bis).
Siras. 6. मधु क्षरन्ति यद्ध्रुवम्

मधुक

Brih. 6. 3. 8. मधुकाय पैंग्याय
9. मधुकः पैंग्यः

मधुकरराजन्

Prasna. 2. 4. यथा मक्षिका मधुकरराजानमुत्क्रामन्तं सर्वा एवोत्क्रामन्ते

Brahma. 1. स नियच्छति मधुकरराजानं माक्षीकवत्

मधुकृत्

Chhâ. 3. 1. 2. ऋच एव मधुकृतः
3. 2. 1. यजूंष्येव मधुकृतः
3. 3. 1. सामान्येव मधुकृतः
3. 4. 1. अथर्वाङ्गिरस एव मधुकृतः
3. 5. 1. गुह्या एवादेशा मधुकृतः
6. 9. 1. यथा मधु मधुकृतो निस्तिष्ठन्ति

मधुज्ञान

Gauḍa. 3. 12. द्वयोर्द्वयोर्मधुज्ञाने परं ब्रह्म प्रकाशितम्

मधुत्व

Maitri. 6. 22. यथा सम्पन्ना मधुत्वं नानारसाः

मधुनाडी

Chhâ. 3. 1. 2. प्राच्यो मधुनाड्यः
3. 2. 1. दक्षिणा मधुनाड्यः
3. 3. 1. प्रतीच्यो मधुनाड्यः
3. 4. 1. उदीच्यो मधुनाड्यः
3. 5. 1. ऊर्द्ध्वा मधुनाड्यः

मधुमन्त्

Bṛih. 6. 3. 6. मधुमत्पार्थिवं रजः Mahânâr. 9. 9; 17. 7.
— मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः Mahânâr. 9. 10; 17. 7.
— सर्वा च सावित्रीमन्वाह सर्वाश्च मधुमतीः

Mahânâr. 9. 12. समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारत्

मधुमत्तम

Tait. 1. 4. 1. जिह्वा मे मधुमत्तमा

मधुमेधा

Mahânâr. 17. 7. ब्रह्ममेधया मधुमेधया ब्रह्म मे ऽव मधुमेधया
8. ब्रह्ममेधवा मधुमेधवा ब्रह्म मे ऽव मधुमेधवा (मेधवा छान्दसो यास्थाने वाशब्दः स एवार्थः Nârâyaṇa).

मधुर

Garbha. 1. *vide* रस

मधुवादिन्

Mahânâr. 11. 14. जिह्वा मे मधुवादिनी

मधुसूदन

Nâr. 5. ब्रह्मण्यो मधुसूदनः Atmapra. 1.

Gîtâ. 1. 35. घ्नतो ऽपि मधुसूदन
2. 1. उवाच मधुसूदनः
4. द्रोणं च मधुसूदन
6. 33. साम्येन मधुसूदन
8. 2. देहे ऽस्मिन्मधुसूदन

मध्य

Kaush. 2. 7. एतयैवावृता मध्ये सन्तम्

Chhâ. 3. 5. 3. एतदादित्यस्य मध्ये क्षोभत इव
3. 11. 1. एकल एव मध्ये स्थाता
3. 16. 2. प्राणानां वसूनां मध्ये
4. प्राणानां रुद्राणां मध्ये
6. प्राणानामादित्यानां मध्ये
6. 11. 1. यो मध्ये ऽभ्याहन्यात्
6. 13. 2. मध्यादाचामेति

Kaṭha. 4. 12. मध्य आत्मनि तिष्ठति
5. 3. मध्ये वामनमासीनं..उपासते

Śwet. 4. 14. सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये

Śvet. 4. 19. न मध्ये परिजग्रभत्
Mahânâr. 1. 10.
5. 13. अनाद्यनन्तं कलिलस्य मध्ये
6. 15. एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये
Maitri. 6. 35. एतद्यदादित्यस्य मध्ये
(4 times).
38. रविमध्ये . . सोममध्ये . .
तेजोमध्ये . . सत्त्वमध्ये
Mahânâr. 1. 1. अम्भस्यपारे भुवनस्य मध्ये
11. 10. तस्य मध्ये महानग्निः
11. तस्य मध्ये वह्निशिखा
Mahâ. 3 ; Vâsu. 3.
13. तस्याः शिखाया मध्ये
Vâsu. 3.
Praśna. 3. 5. मध्ये तु समानः
Kaivalya. 5. मध्ये विशदं विशोकम्
Gauda. 1. 27. मध्यमन्तस्तथैव च
Nrip. 5. 1. मध्ये नाभिर्भवति
2. मध्ये नाभ्यां तारकं भवति
Brahmav. 8. तस्य मध्ये व्यवस्थितः
Kshur. 14. ऊरोर्मध्ये तु संस्थाप्य
15. तासां मध्ये वराः स्मृताः
16. तयोर्मध्ये वरं स्थानम्
Atharvaśiras. 3. भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते
5. बालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये
Śikhâ. 2. शिवमाकाशं मध्ये ध्रुवस्थम्
Mahâ. 3. तस्य मध्ये महानर्चिः (so MSS.; cf. Mahânâr. 11. 10.
— तस्यै शिखायै मध्ये
Brahma. 2. तेषां मध्ये यत्परं ब्रह्म
Nâda. 4. भ्रुवोर्ल्ललाटमध्ये तु
Amrita. 36. अपानस्तस्य मध्ये तु
37. समानस्तस्य मध्ये तु
Dhyâna. 7. पुष्यमध्ये यथा गन्धं पयोमध्ये यथा घृतम्
— तिलमध्ये यथा तैलम्
Yogat. 1.

Dhyâna. 22. भ्रुवोर्मध्ये नयेल्लयम्
23. भ्रुवोर्मध्ये ललाटस्तु
Yogat. 8. पुष्यमध्ये यथा गन्धं पयोमध्ये ऽस्ति सर्पिवत्
9. तस्य मध्ये स्थितं मनः
13. घटमध्ये यथा दीपम्
Nyâsa. 5. वृषणापानयोर्मध्ये
Haṁsa. 2. मध्ये वैराग्यम्
Atmapra. 1. य आत्मा हेमपुण्डरीकमध्ये
— हृत्पद्ममध्ये सर्वं तत् प्रज्ञानेत्रम्
Jâbâla. 2. वरणायां नास्यां च मध्ये
Râmot. 4.
Vâsu. 3. हृदयस्थोर्ध्वपुण्ड्रमध्ये हृदयकमलमध्ये वा
— मध्याद्यन्तविवर्जितम्
— ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये
Râmap. 22. कीलो मध्ये ऽविनाभाव्यः
58. मध्ये तारद्वयं लिखेत्
59. तन्मध्ये बीजमालिख्य
88. मध्ये क्रमादर्कविध्वग्नितेजांसि
Mukti. 1. 44. सर्वोपनिषदां मध्ये
Gîtâ. 1. 21. सेनयोरुभयोर्मध्ये
24; 2. 10.
8. 10. भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्
10. 20. अहमादिश्च मध्यं च
32. मध्यं चैवाहमर्जुन
11. 16. नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि
14. 18. मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः

मध्यग, °गत

Yogaśi. 4. तस्य मध्यगतो वह्निः
Mukti. 1. 1. रत्नमण्डपमध्यगे

मध्यतस्

Brih. 5. 5. 1. प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं मध्यतो ऽनृतम्
6. 4. 3. चर्माधिषवणे समिद्धो मध्यतस्तौ मुष्कौ
Tait. 3. 10. 1. एतद्वै मध्यतो ऽन्नं राद्धं मध्यतो ऽस्मा अन्नं राध्यते
Kâlâg. 1. भ्रुवोर्मध्यतः

मध्यन्दिन

Chhâ. 2. 9. 5. यत् सम्प्रति मध्यन्दिने स उद्गीथः
6. यदूर्ध्वं मध्यन्दिनात्प्रागपराह्णात्स प्रतिहारः
2. 14. 1. मध्यन्दिन उद्गीथः
Mahânâr. 25. 1. यत्सायं प्रातर्मध्यन्दिनं च तानि सवनानि
Nâr. 5. मध्यन्दिनमादित्याभिमुखो ऽधीयानः

मध्यपद्मार्चन

Râmap. 85. पार्श्वार्चनं मध्यपद्मार्चनं च

मध्यपूर्ण

Mukti. 2. 56. मध्यपूर्णं शिवात्मकम्

मध्यम

Chhâ. 6. 5. 1. यो मध्यमस्तन्मांसम्
2. यो मध्यमस्तल्लोहितम्
3. यो मध्यमः स मज्जा
Brih. 1. 5. 21. यो ऽयं मध्यमः प्राणः
22. यथैषां प्राणानां मध्यमः प्राणः
2. 2. 1. अयं वाव शिशुर्यो ऽयं मध्यमः प्राणः
Katha. 1. 5. बहूनामेमि मध्यमः
Praśna. 5. 6. क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु
Gauda. 3. 16. *vide* दृष्टि
Gauda. 4. 76. उत्तमाधममध्यमान्
Garbha. 1. *vide* निषाद

मध्यमिका

Prâṇâg. 1. मध्यमिकया व्याने

मध्यस्थ

Mahânâr 11. 12. नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखा Vâsu. 3.
Gîtâ. 6. 9. सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु

मध्वद

Katha. 4. 5. य इमं मध्वदं वेद आत्मानम्

मन्

Kaush. 2. 8. मन्ये ऽहं मां तद्विद्वांसम्
3. 1. यं त्वं मनुष्याय हिततमं मन्यसे
— एतदेवाहं मनुष्याय हिततमं मन्ये
4. 19. प्रतिलोमरूपमेव तन्मन्ये यत्क्षत्रियो ब्राह्मणमुपनयेत
Kena. 5. यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्
9. यदि मन्यसे सुवेदेति
— मन्ये विदितम्
— देवेष्वथ नु मीमांस्यमेव ते (one MS. has अथनु मीमांस्यमेव)
10. नाहं मन्ये सुवेदेति
11. यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः
12. प्रतिबोधविदितं मतम्
Chhâ. 1. 2. 10. एतमु एवांगिरसं मन्यन्ते
11. एतमु एव बृहस्पतिं मन्यन्ते

Chhâ. 1. 2. 12. एतमु एवायास्यं मन्यन्ते
6. 1. 3. येन..अमतं मतम्
7. 13. 1. न मन्वीरन्न विजानीरन् .. अथ मन्वीरन्नथ विजानीरन्
7. 15. 4. एवं मन्वान एवं विजानन् 7. 25. 2.
7. 18. 1. यदा वै मनुते ऽथ विजानाति नामत्वा विजानाति मत्वैव विजानाति
7. 19. 1. यदा वै श्रद्दधात्यथ मनुते नाश्रद्दधन्मनुते श्रद्दधदेव मनुते
7. 26. 1. एवं मन्वानस्यैवं विजानतः
8. 5. 2. आत्मानमनुविद्य मनुते
8. 8. 5. अमुं लोकं जेष्यन्तो मन्यन्ते
8. 12. 5. यो वेदेदं मन्वानीति स आत्मा

Brih. 1. 2. 7. तमनवरुध्यैवामन्यत
1. 4. 7. मन्वानो मनः
9. ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तो मनुष्या मन्यन्ते
16. एतद्विदितं मीमांसितम्
17. अकृत्स्न एव तावन्मन्यते
1. 5. 17. यदा प्रैष्यन्मन्यते
2. 1. 16. तदु ह न मेने गार्ग्यः
2. 4. 5. आत्मा वा अरे..मन्तव्यः 4. 5. 6.
14. इतर इतरं मनुते 4. 5. 15.
— केन कं मन्वीत 4. 5. 15.
3. 4. 2. न मतेर्मन्तारं मन्वीथाः
3. 8. 12. तदेव बहु मन्येध्वम्
3. 9. 25. यत्रैतदन्यत्रास्मन्मन्यासै
26. तं ह न मेने शाकल्यः
— अस्थीन्यपजह्रुरन्यन्मन्यमानाः

Brih. 4. 1. 2. पिता मे ऽमन्यत नाननुशिष्य हरेतेति 3—7.
4. 3. 1. स मेने न वदिष्ये
20. तदत्राविद्यया मन्यते
— अहमेवेदं सर्वमस्मीति मन्यते
28. यद्वै तन्न मनुते मन्वानो वै तन्न मनुते..न तु तद्द्वितीयमस्ति..यन्मन्वीत
31. अन्यो ऽन्यन्मन्वीत
4. 4. 2. एकीभवति न मनुते
17. तमेव मन्य आत्मानम्
4. 5. 6. आत्मनि खल्वरे दृष्टे श्रुते मते
6. 1. 7. यस्मिन्व उत्क्रान्त इदं शरीरं पापीयो मन्यते
14. एतमेव तदनमनग्नं कुर्वन्तो मन्यन्ते

Tait. 2. 7. 1. तत्त्वेव भयं विदुषो मन्वानस्य

Katha. 1. 2. कुमारं..श्रद्धाविवेश सो ऽमन्यत
24. एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरम्
2. 4. विद्याभीप्सिनं नचिकेतसं मन्ये Maitri. 7. 9 (प्सितम्)
12. अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा
13. विवृतं सद्म नचिकेतसं मन्ये
19. हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते हतम्
22. महान्तं विभुमात्मानं मत्वा 4. 4.
5. 14. तदेतदिति मन्यन्ते ऽनिर्देश्यं परमं सुखम्
6. 6. इन्द्रियाणां पृथग्भावं..मत्वा

Katha. 6. 11. तां योगमिति मन्यन्ते
Swet. 1. 6. पृथगात्मानं . . मत्वा
12. भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा
Maitri. 1. 2. अशाश्वतं मन्यमानः शरीरम्
2. 6. सो ऽमन्यत . . अभ्यन्तरं विविशामि
— अमन्यतार्थानश्नानीति
3. 2. अहं सो ममेदमित्येवं मन्यमानः 6. 30.
6. 36. आस्यमाहवनीयमिति मत्वा
7. 10. अतश्चिरं ध्यात्वामन्यत
Mund 1. 2. 10. इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठम्
3. 2. 2. कामान् यः कामयते मन्यमानः
Prasna. 4. 8. मनश्च मन्तव्यं च
Mândû. 7. शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते Nrisut. 1 (शिवं शान्तम्)
Gauda. 1. 7. मन्यन्ते सृष्टिचिन्तकाः
8. मन्यन्ते कालचिन्तकाः
28. सर्वव्यापिनमोङ्कारं मत्वा
4. 24. परतन्त्रास्तिता मता
67. तन्मतेनैव गृह्यते
Nrip. 3. 1. मीमांसन्ते ब्रह्मवादिनः
4. 1. शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते Râmot. 3.
Nrisut. 8. अत्र भिदामिव मन्यमानः
Nâda. 11. ध्रुवेति दशमी मता
— ब्राह्मीति द्वादशी मता
Brahmab. 11. एक एवात्मा मन्तव्यः
Hamsa. 1. मतं ज्ञात्वा पिनाकिनः
Parama. 1. स एव वेदपुरुष इति विदुषो मन्यन्ते
Jâbâla. 1. यत्र क्वचन गच्छति तदेव मन्येत Râmot. 1.
Mukti. 1. 14. एकैकोपनिषन्मता
Mukti. 2. 10. भवन्ति फलदा मताः
29. यदा न मनुते मनः
37. संकल्प एव तन्मन्ये
Gîtâ. 2. 19. यश्चैनं मन्यते हतम्
26. नित्यं वा मन्यसे मृतम्
35. मंस्यन्ते त्वां महारथाः
3. 1. मता बुद्धिर्जनार्दन
27. कर्ताहमिति मन्यते
28. इति मत्वा न सज्जते
31. ये मे मतमिदं नित्यम्
32. नानुतिष्ठन्ति मे मतम्
5. 8. युक्तो मन्येत तत्त्ववित्
6. 22. मन्यते नाधिकं ततः
32. स योगी परमो मतः
34. तस्याहं निग्रहं मन्ये
46. ज्ञानिभ्यो ऽपि मतो ऽधिक
47. स मे युक्ततमो मतः
7. 18. ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्
24. मन्यन्ते मामबुद्धयः
8. 26. जगतः शाश्वते मते
9. 30. साधुरेव स मन्तव्यः
10. 8. इति मत्वा भजन्ते माम्
14. सर्वमेतदृतं मन्ये
11. 4. मन्यसे यदि तच्छक्यम्
18. सनातनस्त्वं पुरुषो मतो
41. सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तम्
12. 2. ते मे युक्ततमा मताः
13. 2. तज्ज्ञानं मतं मम
16. 5. निबन्धायासुरी मता
18. 6. निश्चितं मतमुत्तमम्
9. स त्यागः सात्त्विको मतः
32. मन्यते तमसावृता
59. न योत्स्य इति मन्यसे

मनआदि

Nrisut. 7. मनआद्यवितारं मनआदिसाक्षिणमन्विच्छेत्

Sarvop. 1. मनआदिचतुर्दशकरणैः
2. मनआदिभिश्चतुर्भिः करणैः
— मनआदिश्च प्राणादिश्च .. पञ्च वर्गाः

मनआनन्द

Tait. 1. 6. 2. सत्यात्मप्राणारामं मनआनन्दम्

मनःक्षय

Maitri. 6. 20. यदात्मनात्मानं .. मनःक्षयात् पश्यति

मनःपूति

Maitri. 6. 9. मनःपूतिमुच्छिष्टोपहतमित्यनेन तत्पावयेत्

मनःप्रग्रहवन्त्

Katha. 3. 9. मनःप्रग्रहवान्नरः
Har. 3. मनःप्रग्रहवान्पुमान्

मनःप्रसाद

Gitâ. 17. 16. मनःप्रसादः सौम्यत्वम्

मनःशान्तिपद

Maitri. 6. 34. इह मनःशान्तिपदमनुसरति

मनःशून्य

Mukti. 2. 55. प्रभाशून्यं मनःशून्यम्

मनःषष्ठ

Gitâ. 15. 7. मनःषष्ठानीन्द्रियाणि

मनन

Ramap. 12. मननात्त्राणनान्मन्त्रः
Mukti. 1. श्रवणमनननिदिध्यासनानि

मनस्

Ait. 1. 4. हृदयान्मनो मनसश्चन्द्रमाः
2. 4. चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्

Ait. 3. 8. तन्मनसाजिघृक्षत् &c,
11. यदि मनसा ध्यातं .. अथ को ऽहम्
5. 2. यदेतद्धृदयं मनश्चैतत्

Kaush. 1. 4. तं मनसात्येति
— तां मनसैवात्येति
7. केन नपुंसकानीति मनसेति
2. 1. एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो मनो दूतम्
2. श्रोत्रं परस्तान्मन आरुंधते मनः परस्तात् प्राण आरुंधते
3. मनो नाम देवतावरोधिनी
4. मनस्ते मयि जुहोमि
13 तस्य मन एव तेजो गच्छति
— एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यन्मनसा ध्यायति
14. अथैनन्मनः प्रविवेश .. तन्मनसा ध्यायच्छिश्ये
15. मनो मे त्वयि दधानीति पिता मनस्ते मयि दध इति पुत्रः
3. 2. मनसा ध्यानं (प्रज्ञापयितुं)
— मनो ध्यायत् सर्वे प्राणा अनुध्यायन्ति
3. मनः सर्वैर्ध्यानैः सहाप्येति (bis) ; 4. 20.
4. मन एवास्मिन् सर्वाणि ध्यानान्यभिविसृज्यन्ते मनसा सर्वाणि ध्यानान्याप्नोति
5. मन एवास्या एकमङ्गमुदूळ्हम्
6. प्रज्ञया मनः समारुह्य मनसा सर्वाणि ध्यानान्याप्नोति
7. अन्यत्र मे मनोऽभूदित्याह (7 times ; नौ मनः bis).

Kaush. 3. 8. न मनो विजिज्ञासीत म-
न्तारं विद्यात्
Kena. 1. केनेषितं पतति प्रेषितं मनः
2. मनसो मनः
3. न वाग्गच्छति नो मनः
5. यन्मनसा न मनुते येनाहुर्म-
नो मतम्
30. यद्देतद्गच्छतीव च मनः
Chhâ. 1. 2. 6. अथ ह मन उद्गीथमुपासां-
चक्रिरे
1. 7. 3. मनः साम..मनो ऽमः
2. 7. 1. मनो निधनम्
2. 11. 1. मनो हिंकारः
2. 22. 2. एतानि मनसा ध्यायन्नप्र-
मत्तः स्तुवीत
3. 13. 4. तन्मनः स पर्जन्यः
3. 18. 1. मनो ब्रह्मेत्युपासीत
4. 3. 3. प्राणं मनः (अप्येति)
4. 8. 3. श्रोत्रं कला मनः कला
4. 16. 1. तस्य वाक् च मनश्च वर्त्तनी
2. तयोरन्यतरां मनसा संस्क-
रोति ब्रह्मा
5. 1. 5. मनो ह वा आयतनम्
Brih. 6. 1. 5.
8. ध्यायन्तो मनसा 9, 10.
11. मनो होच्चक्राम..प्रविवेश
ह मनः Brih. 6. 1. 11.
15. न श्रोत्राणि न मनांसि
5. 18. 2. मनो ऽन्वाहार्यपचनः
5. 22. 2. मनस्तृप्यति मनसि तृप्यति
पर्जन्यस्तृप्यति
6. 5. 1. यो ऽणिष्ठस्तन्मनः
4. अन्नमयं हि सोम्य मनः
6. 6. 5 ; 6. 7. 6.
6. 6. 2. तन्मनो भवति
6. 8. 2. तन्मनो दिशं दिशं पतित्वा
— प्राणबन्धनं हि सोम्य मनः

Chha. 6. 8. 6. वाङ्मनसि सम्पद्यते म
प्राणे 6. 15. 1, 2.
7. 3. 1. मनो वाव वाचो भूयः
— वाचं च नाम च मनो ऽनु
यति
— यदा मनसा मनस्यति
— मनो ह्यात्मा मनो हि
को मनो हि ब्रह्म मन
पास्व
2. यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते
यन्मनसो गतम् &c.
— अस्ति भगवो मनसो
इति मनसो वाव भू
ऽस्ति
7. 4. 1. सङ्कल्पो वाव मनसो
यान्
7. 26. 1. आत्मतो मनः
8. 6. 5. यावत् क्षिप्येन्मनस्ताव
दित्यं गच्छति
8. 12. 5. मनो ऽस्य दैवं चक्षुः..ए
दैवेन चक्षुषा मनसा..
श्यन् रमते
Brih. 1. 2. 1. तन्मनो ऽकुरुत
4. स मनसा वाचं मिथुनं
मभवत्
6. तस्य शरीर एव मन
सीत्
1. 3. 6. मन ऊचुस्त्वम्न उद्गायेति
— मन उदगायद्यो मनसि
ऽगस्तं देवेभ्य आगायत्
16. अथ मनो ऽत्यवहत्
1. 4. 7. मन्वानो मनः
17. मन एवास्यात्मा
1. 5. 3. मनो वाचं प्राणं तान्या
ने ऽकुरुत
— मनसा ह्येव पश्यति मन
शृणोति Maitri. 6. 3

1\. 1. 5. 3. ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एव Maitri. 6. 30.
— पृष्ठत उपस्पृष्टो मनसा विजानाति
4\. मनो ऽन्तरिक्षलोकः
5\. मनो यजुर्वेदः
6\. मनः पितरः
7\. मन एव पिता
9\. यत्किञ्च विजिज्ञास्यं मनसस्तद्रूपं मनो हि विजिज्ञास्यं मन एनं तद्भूत्वावति
12\. मनसो द्यौः शरीरम्
— यावदेव मनस्तावती द्यौः
19\. दैवं मन आविशति तद्वै दैवं मनः
2\. 1. 17. गृहीतं मनः
2\. 4. 11. सर्वेषां सङ्कल्पानां मन एकायनम् 4. 5. 12.
3\. 1. 6. ब्रह्मणर्त्विजा मनसा चन्द्रेण मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा
— इदं मनः सो ऽसौ चन्द्रः
9\. मन एवेत्यनन्तं वै मनः
3\. 2. 7. मनो वै ग्रहः..मनसा हि कामान्कामयते
13\. मनश्चन्द्रं (अप्येति)
3\. 7. 20. यो मनसि तिष्ठन्मनसो ऽन्तरो यं मनो न वेद यस्य मनः शरीरं यो मनो ऽन्तरो यमयति
3\. 9. 10. मनो ज्योतिः 11—17.
4\. 1. 6. मनो वै ब्रह्म (bis).
— मन एवायतनम्
— कानन्दता..मन एव
— मनसा वै..स्त्रियमभिहार्यते
— मनो वै..परमं ब्रह्म
— नैनं मनो जहाति

Brih. 4. 4. 6. मनो यत्र निषक्तमस्य
18\. मनसो ये मनो विदुः
4\. 4. 19. मनसैवानुद्रष्टव्यम्
5\. 8. 1. तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः
6\. 1. 8. विद्वांसो मनसा 9. 10, 12.
11\. यथा मुग्धा अविद्वांसो मनसा
14\. त्वं तदायतनमसीति मनः
6\. 3. 2. मनसे स्वाहा प्रजात्यै स्वाहा
6\. 4. 24. मयि प्राणांस्त्वयि मनसा जुहोमि
Îśâ. 4. अनेजदेकं मनसो जवीयः
Tait. 1. 7. 1. चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्त्वक्
2\. 4. 1. यतो वाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह 2. 9. 1; Brahma. 3.
3\. 1. 1. अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति
3\. 4. 1. मनो ब्रह्मेति व्यजानान्मनसो ह्येव..भूतानि जायन्ते मनसा जातानि जीवन्ति मनः प्रयन्ति
3\. 10. 3. तन्मन इत्युपासीत
Kaṭha. 3. 3. मनः प्रग्रहमेव च
4\. आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्
5\. अयुक्तेन मनसा सदा
6\. युक्तेन मनसा सदा
10\. अर्थेभ्यश्च परं मनः
— मनसस्तु परा बुद्धिः
13\. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञः
4\. 11. मनसैवेदमाप्तव्यम्
6\. 7. इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्त्वमुत्तमम्
9\. हृदा मनीषा मनसाभिक्लृप्तः Śwet. 3. 13; 4. 17, 20 (2 MSS.); Mahânâr. 1. 11.

Katha. 6. 10. यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह Maitri. 6. 30.
12. नैव वाचा न मनसा

Śwet. 2. 1. युञ्जानः प्रथमं मनः
2. युक्तेन मनसा वयम्
3. युक्त्वाय मनसा देवान्
4. युञ्जते मन उत युञ्जते धियः
6. तत्र सञ्जायते मनः
8. हृदीन्द्रियाणि मनसा सन्निवेश्य
9. मनो धारयेताप्रमत्तः

Maitri. 2. 6. रथः शरीरं मनो नियन्ता
4. 3. सत्त्वात् सम्प्राप्यते मनो मनसः प्राप्यते ह्यात्मा
5. निहितमस्माभिरेतत्.. मनसि
6. 5. बुद्धिर्मनोऽहङ्कारा इति चेतनवत्येषा
9. ध्यानं प्रयोगस्थं मनो विद्वद्भिष्टुतम्
13. मनः प्राणस्य विज्ञानं मनसः
19. यदा वै..विद्वान् मनो नियम्य
20. वाङ्मनःप्राणनिरोधनात्
21. *vide* युज्
24. शिखास्य मनः
25. एकत्वं प्राणमनसोः
31. वाक् श्रोत्रं चक्षुर्मनः प्राणः
34. स्वयोना उपशान्तस्य मनसः
— मनोहि द्विविधं प्रोक्तम् Brahmab. 1.
— लयविक्षेपरहितं मनः
— तावन्मनो निरोद्धव्यम्
34. एवमन्तर्गतं यस्य मनः
— मन एव..कारणं बन्धमोक्षयोः Brahmab. 2.

Maitri. 7. 11. मनः कायाभिमाहन्ति
Mund. 1. 1. 8. अन्नात्प्राणो मनः सत्या
2. 1. 3. मनः सर्वेन्द्रियाणि च Kaivalya. 15; Nâr.
2. 2. 2. स प्राणस्तदु वाङ्मनः
5. मनः सह प्राणैश्च सर्वैः
3. 1. 10. यं यं लोकं मनसा सं भाति

Mahânâr. 4. 7. मनसा दुर्विचिन्तितम्
12. यन्मे मनसा..दुष्कृतं तम् 19. 1.
12. 3. मनो मन्युर्मनुर्मृत्युः
14. 3. यदह्ना पापमकार्षं मन
4. यद्रात्र्या पापमकार्षं नसा
16. 6. गन्धर्वेषु च यन्मनः
23. 1. मानसेन मनसा साधु श्यति
— मनीषया मनो मनसा न्तिः
— प्राणैर्मनो मनसश्च विज्ञा
24. 1. ज्ञात्वा तमेवं मनसा हृ
✓ 25. 1. मनो ब्रह्मा Garbha. 5

Praśna. 2. 2. वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रं च
12. या च मनसि सन्तता
3. 9. इन्द्रियैर्मनसि सम्पद्यम
4. 2. परे देवे मनस्येकीभवा
4. मनो ह वाव यजमानः
8. मनश्च मन्तव्यं च
5. 4. यदि द्विमात्रेण मनसि स्पद्यते
6. 4. इन्द्रियं मनो ऽन्नम्

Gauda. 1. 2. मनस्यन्तस्तु तैजसः
2. 25. मन इति मनोविदः
3. 29. द्वयाभासं स्पन्दते मनः (bis).
30. अद्वयं च द्वयाभासं
31. मनसो ह्यमनीभावे

la. 3. 34. निगृहीतस्य मनसः
40. मनसो निग्रहायत्तम्
41. मनसो निग्रहस्तद्वत्
1. 1. तस्यान्तर्मनसि कामः समवर्त्तत
— यत् पुरुषो मनसाभिगच्छति
— अधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्
it. 2. मनसो द्रष्टा . . मनसःसाक्षी
4. मनसा ब्रह्मणैकीकुर्यात्
Râmot. 3.
r. 3. मनो हृदि निरुध्य च
Gîtâ. 8. 12.
11. मनसस्तु क्षुरं गुह्य
5. सर्वं ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि
6. प्राणो अभिरक्षति . . अन्नमथो मनः
2. विष्णुर्मनसि नादान्ते
1. मनसा सङ्कल्पयति
1. दशेन्द्रियाणि मन एकादशम्
2. सोन्यत्कामो मनसा ध्यायते 3.
— बिभ्रत् . . मन ऐश्वर्यम्
4. मनो रथः
18. मनो लीनं यदा भवेत्
3. मनसो मुक्तिरिष्यते
— निर्विषयं . . मनः कार्यम्
4. सन्निरुद्धं मनो हृदि
20. मनसा मन्थानभूतेन
5. मनश्चैवातिचञ्चलम्
15. मनः सङ्कल्पकं ध्यात्वा
31. मनसा चिन्तयेदात्मनात्मनि
3. मनः सर्वत्र संयम्य
9. तस्य मध्ये स्थितं मनः
4. विद्यया मनसि संयोगो मनसाकाशः

Gâruḍa. 3. मनसा मोक्षयति
Haṁsa. 2. तस्मान्मनो हंसो विचार्यते
— तस्मिन्मनो विलीयते
— मनसि सङ्कल्पविकल्पे
Parama. 2. न गन्धं न च मनो ऽपि
Nâr. 2. मनःप्रग्रहवान्पुमान्
Jâbâla. 5. मनसा वाचा वा सन्न्यसेत्
Skanda. 11. ध्यानं निर्विषयं मनः
12. स्नानं मनोमलत्यागः
Râmot. 5. मनसा संस्मरन् ब्रह्म
Mukti. 1. वाङ्मे मनसीति शान्तिः
2. 16. मनोबद्धं विदुर्बुधाः
17. मनो निर्वासनीभावमाचर
21. यस्य निर्वासनं मनः
29. यदा न मनुते मनः
35. जीवन्मुक्तस्य तन्मनः
37. मनो मूलमिदं स्थितम्
38. मनसः स्वस्य निग्रहे
39 मनसो ऽभ्युदयो नाशः
— शमनो नाशमभ्येति मनो ज्ञस्य हि शृंखला
40. यावन्न विजितं मनः
42. जयेदादौ स्वकं मनः
43. न शक्यते मनो जेतुम्
71. मनोबुद्धिसमन्विताम्
Gîtâ. 1. 30. भ्रमतीव च मे मनः
60. हरन्ति प्रसभं मनः
2. 67. यन्मनो ऽनुविधीयते
3. 6. य आस्ते मनसा स्मरन्
7. यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्य
40. इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः
42. इन्द्रियेभ्यः परं मनः
— मनसस्तु परा बुद्धिः
5. 11. कायेन मनसा बुद्ध्या
13. सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्य
19. येषां साम्ये स्थितं मनः

Gîtâ. 6. 12. तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा
14. मनः संयम्य मच्चित्तः
24. मनसैवेन्द्रियग्रामम्
25. आत्मसंस्थं मनः कृत्वा
26. मनश्चञ्चलमस्थिरम्
34. चञ्चलं हि मनः कृष्ण
35. मनो दुर्निग्रहं चलम्
7. 4. खं मनो बुद्धिरेव च
8. 10. प्रयाणकाले मनसाचलेन
10. 22. इन्द्रियाणां मनश्चास्मि
11. 45. भयेन च प्रव्यथितं मनो मे
12. 2. मय्यावेश्य मनः
8. मय्येव मन आधत्स्व
15. 9. अधिष्ठाय मनश्चायम्
17. 11. यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय
18. 15. शरीरवाङ्मनोभिः
33. मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः

मनसस्पति

Tait. 1. 6. 2. आप्नोति मनसस्पतिम्

मनसिज

Râmap. 3. राहुर्मनसिजं यथा

मनस्य

Chhâ. 7. 3. 1. स यदा मनसा मनस्यति
7. 4. 1. यदा वै सङ्कल्पयतेऽथ मनस्यति
7. 5. 1. अथ सङ्कल्पयते ऽथ मनस्यति

मनस्वन्त्

Maitri. 6. 13. मनस्वान्..भवति यो हैवं वेद

मनीष्, मनीषा

Ait. 5. 2. मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः
Katha. 6. 9. हृदा मनीषा मनसाभिक्लृप्तः Śwet. 3. 13; 4. 17, 20 (2 MSS); Mahânâr 1.11.
Mahânâr.23. 1. मेधया मनीषा मनी
मनः
Nrip. 1. 1. हृदि प्रतीष्य कवयो म
Hamsa. 2. नैरृत्ये पापे मनीषा

मनीषिन्

Iśâ. 8. कविर्मनीषी परिभूः
Katha. 3. 4. भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः
Mahânâr.23. 1. न्यास इत्याहुर्मनीषि
ब्रह्माणम्
Gauda. 2. 1. वैतथ्यं सर्वभूतानां
आहुर्मनीषिणः
5. एकमाहुर्मनीषिणः
4. 54. एवं हेतुफलाजातिं प्र
न्ति मनीषिणः
Brahma. 3. एको मनीषी निष्क्रि
बहूनाम्
Tejo. 2. मुनीनां च मनीषिणाम्
Gîtâ. 2. 51. फलं त्यक्त्वा मनीषिण
18. 3. इत्येके..प्राहुर्मनीषिण
5. पावनानि मनीषिणाम्

1. मनु

Chhâ. 3. 11. 4. प्रजापतिर्मनवे मनुः प्र
भ्यः 8. 15. 1.
Brih. 1. 4. 10. अहं मनुरभवं सूर्यश्च
Nrip. 4. 3. यो वै नृसिंहः..यश्च
स्तस्मै वै नमो नमः
Gîtâ. 4. 1. विवस्वान्मनवे प्राह म
क्ष्वाकवे ऽब्रवीत्
10. 6. चत्वारो मनवस्तथा

2. मनु

Mahânâr. 12. 3. आदित्यो वै..मनो
र्मनुः
Râmot. 4. श्रीरामचन्द्रस्य मनुं

मनुष्य

Kaush. 3. 1. यं त्वं मनुष्याय हि
मन्यसे

ush. 3. 1. एतद्देवाहं मनुष्याय हित-
तमं मन्ये
hâ. 2. 9. 3. तदस्य मनुष्या अन्वायत्ताः
2. 22. 2. आशां मनुष्येभ्यः (आगा-
यानि)
4. 9. 2. अन्ये मनुष्येभ्य इति प्रति-
जज्ञे
7. 2. 1. देवांश्च मनुष्यांश्च 7. 7. 1.
7. 6. 1. ध्यायन्तीव देवमनुष्यास्त-
स्माद्य इह मनुष्याणां म-
हतां प्राप्नुवन्ति
7. 8. 1. बलेन देवमनुष्याः(तिष्ठन्ति)
7. 10. 1. यद्देवमनुष्याः
h. 1. 1. 2. अश्वो मनुष्यान् (अवहत्)
1. 4. 3. ततो मनुष्या अजायन्त
9. ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्य-
न्तो मनुष्या मन्यन्ते
10. तथर्षीणां तथा मनुष्याणाम्
— बहवः पशवो मनुष्यं भुञ्ज्युः
— यदेतन्मनुष्या विद्युः
15. ब्राह्मणो मनुष्येषु (अभवत्)
— लोकमिच्छन्ते ब्राह्मणे मनु-
ष्येषु
16. यन्मनुष्यान्वासयते . . तेन
मनुष्याणाम्
1. 5. 2. पयो ह्यग्रे मनुष्याश्च पशव-
श्चोपजीवन्ति
6. देवाः पितरो मनुष्या एत एव
— प्राणो मनुष्याः
3. 8. 9. ददतो मनुष्याः प्रशंसन्ति
4. 3. 33. स यो मनुष्याणां राद्धः स-
मृद्धः . . स मनुष्याणां परम
आनन्दः
— ये शतं मनुष्याणामानन्दाः
5. 2. 1. देवा मनुष्या असुराः
2. अथ हैनं मनुष्या ऊचुर्ब्रवी-
तु नो भवानिति

Bṛih. 5. 8. 1. हन्तकारं मनुष्याः (उपजी-
वन्ति)
6. 3. 6. अहं मनुष्याणामेकपुण्ड-
रीकं भूयासम्
Tait. 2. 3. 1. प्राणं देवा अनुप्राणन्ति मनु-
ष्याः पशवश्च ये
Kaṭha. 1. 20. येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये
25. न हीदृशा लम्भनीया म-
नुष्यैः
27. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः
2. 2. श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः
3. यस्यां मज्जन्ति बहवो म-
नुष्याः
4. 8. जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्ये-
भिः
Maitri. 6. 34. मन एव मनुष्याणां कारणं
बन्धमोक्षयोः Brahmab.
2.
Muṇḍ. 2. 1. 7. साध्या मनुष्याः पशवो व-
यांसि
Mahânâr. 13. 7. मनुष्याः पितरो ऽसुराः
Praśna. 5. 1. स यो ह . . मनुष्येषु प्राय-
णान्तमोङ्कारमभिध्यायीत
Nṛip. 5. 7. स मनुष्यानाकर्षयति
Râmot. 5. देवासुरमनुष्यादिभावात्मा
Gîtâ. 1. 44. उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्या-
णाम्
3. 23. मनुष्याः पार्थ सर्वशः 4. 11.
4. 18. स बुद्धिमान्मनुष्येषु
7. 3. मनुष्याणां सहस्रेषु
18. 69. न च तस्मान्मनुष्येषु

मनुष्यकाम

Chhâ. 1. 7. 6. तेषां चेष्टे मनुष्यकामानां च
8. तांश्चाप्नोति मनुष्यकामांश्च

मनुष्यकृत

Mahânâr. 18. 1. मनुष्यकृतस्यैनसो ऽवयज-
नमसि

मनुष्यगन्धर्व

Tait. 2. 8. 1. ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः
— ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः

मनुष्यज

Mahânâr.16. 6. दैवी मेधा मनुष्यजा

मनुष्यलोक

Bṛih. 1. 5. 16. मनुष्यलोकः पितृलोको देवलोकः
— मनुष्यलोकः पुत्रेणैव जय्यः
3. 1. 8. मनुष्यलोकमेव ताभिर्जयत्यध इव हि मनुष्यलोकः

Praśna. 3. 7. उभाभ्यामेव मनुष्यलोकं (नयति)
5. 3. तमृत्रो मनुष्यलोकमुपनयन्ते

Gîtâ. 15. 2. कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके

मनोकृत

Praśna. 3. 3. मनोकृतेनायात्यस्मिञ्छरीरे

मनोगत

Parama. 3. सर्वे कामा मनोगता व्यावर्त्तन्ते (सर्वान् कामानात्मनो गतान् व्यावर्त्तेरन् MSS.)

Gîtâ. 2. 55. सर्वान्पार्थ मनोगतान्

मनोजवा

Muṇḍ.1. 2. 4. काली कराली च मनोजवा च

मनोदृश्य

Gauḍa. 3. 31. मनोदृश्यमिदं द्वैतम्

मनोद्वार

Kshur. 12. मनोद्वारेण तीक्ष्णेन

मनोनाश

Mukti. 2. 10. वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशाः
35. सरूपो ऽसौ मनोनाशः
36. अरूपस्तु मनोनाशः
39. मनोनाशो महोदयः

मनोनुकूल

Śwet. 2. 10. मनोनुकूले न तु चक्षुपीडने

मनोन्मन

Mahânâr. 17. 2. मनोन्मनाय नमः

मनोपेत

Kaush. 3. 3. जीवति मनोपेतो बालान्हि पश्यामः

मनोमय

Chhâ. 3. 14. 2. मनोमयः प्राणशरीरः Maitri. 2. 6.

Bṛih. 1. 5. 3. वाङ्मयो मनोमयः प्राणमयः
4. 4. 5. विज्ञानमयो मनोमयः प्राणमयः
5. 6. 1. मनोमयो ऽयं पुरुषो भाः सत्यः

Tait. 1. 6. 1. तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः
2. 3. 1. अन्यो ऽन्तर आत्मा मनोमयः
2. 4. 1. एतस्मान्मनोमयादन्यो ऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः
2. 8. 1. एतं मनोमयमात्मानमुपक्रामति 3. 10. 5 (उपसंक्रम्य)

Muṇḍ.2. 2. 7. मनोमयः प्राणशरीरनेता

Amṛita. 17. कृत्वा मनोमयीं रक्षाम्

Sarvop. 1. मनोमयो विज्ञानमय आनन्दमयः कथम्

rvop. 2. तदा मनोमयः कोश इत्यु-
च्यते

मनोरथ

tâ. 16. 13. इमं प्राप्स्ये मनोरथम्

मनोविद्

uda. 2. 25. मन इति मनोविदः

मनोवृत्ति

ukti. 2. 53. ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहः

मन्तृ

aush. 3. 8. न मनो विजिज्ञासीत मन्ता-
रं विद्यात्
hâ. 7. 8. 1. उपसीदन्..मन्ता भवति
7. 9. 1. अन्नस्यायै..मन्ता भवति
ih. 3. 4. 2. न मतेर्मन्तारं मन्वीथाः
3. 7. 23. अमतो मन्ता
— नान्यो ऽतो ऽस्ति मन्ता
3. 8. 11. अमतं मन्तृ
— नान्यदतो ऽस्ति मन्तृ
4. 3. 28. न हि मन्तुर्मतेर्विपरिलोपः
aitri. 6. 7. चेता मन्ता गन्तोत्स्रष्टा
11. यदि खल्वभाति..मन्ता
भवति
asna. 4. 9. एष हि..मन्ता बोद्धा कर्त्ता

मन्त्र्

ih. 3. 2. 13. तौ होत्क्रम्य मन्त्रयाञ्चक्राते

मन्त्र

hâ. 7. 3. 1. मन्त्रानधीयीय
7. 4. 1. नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति
मन्त्रेषु कर्माणि 7. 5. 1.
2. प्राणानां संक्लृप्त्यै मन्त्राः सं-
कल्पन्ते मन्त्राणां संक्लृप्त्यै
कर्माणि संकल्पन्ते
7. 14. 1. आशेद्धो वै स्मरो मन्त्रा-
नधीते

Chhâ. 7. 26. 1. आत्मतो मन्त्राः
Maitri. 6. 9. मन्त्रं पठति
16. होता भोक्ता हविर्मन्त्रः
36. *vide* आदि
Mund.1. 2. 1. मन्त्रेषु कर्माणि..अपश्यन्
Praśna. 6. 4. अन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः
Nrip. 2. 1. साथर्वणैर्मन्त्रैरथर्ववेदः
Nrisut. 3; Śikhâ. 1.
4. प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं
वदत्युक्थम्
4. 3. कैर्मन्त्रैर्देवः स्तुतः प्रीतो भ-
वति
— एतैर्द्वात्रिंशन्मन्त्रैर्नित्यं देवं
स्तुवध्वम्
— य एतैर्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तौति
Nrip. 5. 2. सर्वेषां मन्त्राणामुपदेष्टा भ-
वति
Nâda. 5. मन्त्र एव प्रदर्शितः
Amrita. 21. क्रमशो मन्त्र निर्दिशेत्
(so MSS; मन्त्र=मन्त्रम्
Nârâyana).
Yogaśi. 1. यदा तु ध्यायते मन्त्रम्
Nyâsa. 1. प्रेतस्य मन्त्रैः संस्कारोपति-
ष्ठते
Parama. 3. न मन्त्रं न ध्यानं नोपासनं
च
Aruneya. 4. इत्यनेन मन्त्रेण कृत्वा
Kâlâg. 1. के मन्त्राः काः शक्तयः
Jâbâla. 4. अनेन मन्त्रेणाग्निमाजिघ्रेत्
Vâsu. 1. द्रव्यमन्त्रस्थानादिसहितम्
4. अग्नेर्भस्मासीदं विष्णुस्त्रीणि
पदेति मन्त्रैः
Râmap. 11. मन्त्रो ऽन्वर्थादिसंज्ञकः
12. अर्थं मन्त्रो वदत्ययम्
— मननात्त्राणनान्मन्त्रः
20. मन्त्रो ऽयं वाचकः
23. सर्वेषामेव मन्त्राणाम्

Râmap. 29. तथैव तस्य मन्त्राश्च
67. मन्त्रान्मन्त्री समालिखेत्
Râmot. 4. मन्त्रेणानेन मां शिव
— उपदेक्ष्यसि मन्मन्त्रम्
5. कैर्मन्त्रैः स्तुतः..प्रीतो भवति
— एतैः सप्तचत्वारिंशन्मन्त्रैः
— य एतैर्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तौति
Mukti. 2. 12. मन्त्राः संकीलिता इव
Gîtâ. 9. 16. मन्त्रो ऽहमहमेवाज्यम्

मन्त्रद्वय

Râmap. 72. लिखेन्मन्त्रद्वयं तथा

मन्त्रराज

Nṛip. 1. 1. स एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभमपश्यत्
2. 1. मन्त्रराजं..प्रायच्छत्
— मन्त्रराजं..प्रतिगृह्णीयात्
3. 1. मन्त्रराजस्य..शक्तिं..ब्रूहि
4. 1. मन्त्रराजस्य..अङ्गमन्त्रान्नो ब्रूहि
5. 2. द्वात्रिंशदक्षरं मन्त्रराजम्
3. मन्त्रराजस्य..फलं नो ब्रूहि
— य एतं मन्त्रराजं..नित्यमधीते 4–9.
Nṛisut. 2. मन्त्रराजेन तुरीयं विद्यात्

मन्त्रराजजापक

Nṛip. 5. 10. एकेन मन्त्रराजजापकेन तत्समम्

मन्त्रराजाध्यायिक

Nṛip. 5. 10. तद्वा एतत्परमं धाम मन्त्रराजाध्यायिकस्य

मन्त्रराजार्ण

Râmap. 69. विलिखेन्मन्त्रराजार्णान्

मन्त्रविद्

Chhâ. 7. 1. 3. मन्त्रविदेवास्मि नात्मवित्

मन्त्रसंयुक्त

Chûl. 13. मन्त्रसंयुक्तैरथर्वविहितैः

मन्त्रसिद्ध

Râmot. 4. जीवन्तो मन्त्रसिद्धाः स्युः

मन्त्रहीन

Gîtâ. 17. 13. मन्त्रहीनमदक्षिणम्

मन्त्रार्थ

Maitri. 6. 34. मन्त्रार्थं विचिनोति

मन्त्रिका

Mukti. 1. 32. क्षुरिकामन्त्रिका
1. *vide* मुक्तिका

मन्त्रिन्

Râmap. 11. जप्तव्यो मन्त्रिणा
62. लिखेय मन्त्र्यभितो गिरम्
67. मन्त्रान्मन्त्री समालिखेत्

मन्त्रोपनिषद्

Chûl. 10. मन्त्रोपनिषदं ब्रह्म (उपनिषद्शब्दो ऽकारान्तो नपुंसकमस्ति Nârâyaṇa).

मन्त्रोपासक

Nâr. 5. ओं नमो नारायणायेति मन्त्रोपासकः Atmapra 1 (one MS. has मन्त्र पासनं and another मन्त्रोपायनं followed b गमयिष्यति)

मन्थ

Chhâ. 5. 2. 4. सर्वौषधस्य मन्थम्
— मन्थे सम्पातमवनयेत्
5 (4 times).

5. 2. 6. अञ्जलौ मन्थमाधाय
6. 3. 1. मन्थं सन्नीय जुहोति
2. मन्थे संस्रवमवनयति (20 times).

मन्थन

1. 3. 5. अग्नेर्मन्थनम्

मन्थानभूत

nab. 20. मनसा मन्थानभूतेन

मन्द

. 2. 2. प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते
3. 29. तानकृत्स्नविदो मन्दान्

मन्द्र

. 7. 11. मन्द्रं जनयति स्वरम्

मन्मनस्

9. 34. मन्मना भव मद्भक्तः 18. 65.

मन्मय

4. 10. वीतरागभयक्रोधा मन्मयाः

मन्यु

ār.12. 3. आदित्यो वै.. मनो मन्युः
14. 3. मन्युश्च मन्युपतयश्च..रक्षन्ताम् 4.
18. 3. मन्युरकार्षीन्नाहं करोमि मन्युः करोति मन्युः कर्त्ता मन्युः कारयिता एतत्ते मन्यो मन्यवे स्वाहा
25. 1. मन्युः पशुः
3. यन्मन्युर्जायामावहत् Kathaśru. 4.

मन्युकृत

ār.14. 3. मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् 4.

मन्युपति

r.14. 3. मन्युपतयश्च..रक्षन्ताम् 4.

मन्वन्तर

Râmot. 4. मन्वन्तरसहस्रैस्तु

मन्वीश

Śwet. 3. 13. हृदा मन्वीशो मनसाभिक्लृप्तः (this has very slight authority; *vide* मनीष्).

ममत्व

Aruṇeya. 3. *vide* आदि

मयूख

Maitri. 6. 26. सूर्यान्मयूखाश्च तथैव. 31.
35. आदित्यस्य मध्ये उदित्वा मयूखे भवतः

मयोभू

Bṛih. 6. 4. 27. यो मयोभूर्यो रत्नधाः

मर

Ait. 1. 2. अंभो मरीचीर्मरमापः — पृथिवी मरः

मरण

Chhâ. 3. 17. 5. तन्मरणमेवास्यावभृथः
Katha. 1. 25. मरणं मानुप्राक्षीः
5. 6. यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति
Mahânâr. 25. 1. यन्मरणं तदवभृथः
Gauḍa. 3. 9. मरणे संभवे चैव
Prâṇâg. 4. अवभृथं मरणात् (one MS. has मरणं)
Śiras. 4. *vide* महाभय
Râmap. 2. राक्षसा येन मरणं यान्ति
Râmot. 2. *vide* महद्भय
Mukti. 1. 20. यत्र कुत्रापि वा काश्यां मरणे
2. 25. जन्मजरामरणकारणम्
Gîtâ. 2. 34. मरणादतिरिच्यते

1. मरीचि

Ait. 1. 2. अंभो मरीचीर्मरमापः
— अन्तरिक्षं मरीचयः

Chhâ. 2. 21. 1. नक्षत्राणि वयांसि मरीचयः स प्रतिहारः

3. 1. 1. मरीचयः पुत्राः

Maitri. 6. 31. भानवीयाश्च मरीचयः

Praśna. 4. 2. यथा..मरीचयो ऽर्कस्यास्तं गच्छतः

2. मरीचि

Gîtâ. 10. 21. मरीचिर्मरुतामस्मि

मरुत्

Chhâ. 3. 9. 1. तन्मरुत उपजीवन्ति सोमेन मुखेन
3. मरुतामेवैको भूत्वा
4. मरुतामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता

Bṛih. 1. 4. 12. विश्वेदेवा मरुत इति

Mahânâr. 20. 2. मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहन्

Maitri. 2. 1. मरुन्नाम्नेति विश्रुतो ऽसि
6. 30. तस्मै नमस्कृत्वा..मरुदुत्तरायणं गतः
7. 3. मरुतः..पश्चादुद्यन्ति

Nṛip. 2. 1. संवर्त्तको ऽग्निर्मरुतो विराट्
Nṛisut. 3; Sikhâ. 1.

Nîla. 22. भवेन मरुतां पिता

Gîtâ. 10. 21. मरीचिर्मरुतामस्मि
11. 6. अश्विनौ मरुतस्तथा
22. मरुतश्चोष्मपाश्च

मरुतात्मज

Mukti. 1. 12. शाखा यजुषो मरुतात्मज

मरुत्त

Maitri. 1. 4. मरुत्तभरतप्रभृतयः

मरुत्सुत

Mukti. 2. 9. न दोषाय मरुत्सुत

मरुद्वृधा

Mahânâr. 5. 4. मरुद्वृधे वितस्तया[...] शुष्मा

मत्कारी

Gâruḍa. 2. ओं तत्कारीं मत्कारीं[...]
(so 3 MSS.; two o[...]
तत्कारीं मत्कारीं; W[...]
तत्कारीं सत्का°)

मर्त्य

Chhâ. 4. 3. 6. तं..नाभिपश्यन्ति [...]
7. 24. 1. यदल्पं तन्मर्त्यम्
8. 3. 5. यन्ति तन्मर्त्यम्
8. 12. 1. मर्त्यं वा इदं शरीर[...] मृत्युना

Bṛih. 1. 4. 6. मर्त्यः सन्नमृतानसृज[...]
2. 3. 1. द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे[...]र्त्यं चामृतं च
2. एतन्मर्त्यमेतत् स्थि[...]त्सत्
— एतस्य मर्त्यस्यैतस्य [...]तस्यैतस्य सत एष र[...]
3. 9. 4. यदास्माच्छरीरान्मर्त्य[...]त्क्रामन्ति
28. मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृ[...] (bis).
4. 4. 7. अथ मर्त्यो ऽमृतो भ[...]
Kaṭha. 6. 14, 15.
6. 2. 2. द्वे सृती अशृणवं पि[...] महं देवानामुत मर्त्य[...]

Kaṭha. 1. 6. सस्यमिव मर्त्यः पच्य[...]
26. मर्त्यस्य .. सर्वेन्द्रि[...] जरयन्ति तेजः
28. जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः[...]
2. 13. एतच्छ्रुत्वा संपरिगृह्य[...]
5. 5. न प्राणेन नापानेन [...] जीवति कश्चन

i. 4. 2. मर्त्ये ऽनर्था इवास्थिताः
inâr.10. 1. महो देवो मर्त्यौं आविवेश
a. 3. 21. न भवत्यमृतं मर्त्यं न मर्त्यममृतं तथा 4. 7.
3. किमु धूर्त्तिरमृतं मर्त्यं च (one MS. has मर्त्यस्य with Rig-veda).
10. 3. असम्मूढः स मर्त्येषु

मर्त्त्यता

a. 3. 19. मर्त्त्यताममृतं व्रजेत्
20. मर्त्त्यतां कथमेष्यति 4. 6.
22. स्वभावेनामृतो यस्य भावो गच्छति मर्त्त्यताम्
4. 8. स्वभावेनामृतो यस्य धर्मो गच्छति मर्त्त्यताम्

मर्त्यरूप

p. 3. राक्षसान्मर्त्यरूपेण

मर्त्यलोक

a. 1. 25. ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके
9. 21. क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति

मर्मजंघानुकीर्त्तन

r. 13. इन्द्रवज्र इति प्रोक्तो मर्मजंघानुकीर्त्तनम्

मर्मन्

ha. 5. सप्तोत्तरं मर्मशतम्

मर्मप्राणविमोचन

14. ऊरोर्मध्ये तु संस्थाप्य मर्मप्राणविमोचनम्

मर्य

6. 4. 4. बहवो मर्या ब्राह्मणायनाः ..प्रयन्ति

मल

Maitri. 6. 34. समाधिनिर्धौतमलस्य चेतसः
Gauḍa. 3. 8. गगनं मलिनं मलैः..आत्मापि मलिनो मलैः
Amṛita. 7. दह्यन्ते धमनान्मलाः
Skanda. 12. स्नानं मनोमलत्यागः
Gîtâ. 3. 38. यथादर्शो मलेन च

मलिन

Gauḍa. 3. 8. गगनं मलिनं मलैः..आत्मापि मलिनो मलैः
Mukti. 2. 61. शुद्धा च मलिना तथा — मलिना जन्महेतुः स्यात्
62. पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता मलिना वासना

मलोद्वासस्

Bṛih. 6. 4. 6. श्रीर्ह वा एषा स्त्रीणां यन्मलोद्वासास्तस्मान्मलोद्वाससं..अभिक्रम्योपमन्त्रयेत

मशक

Chhâ. 6. 9. 3. दंशो वा मशको वा 6.10.2.
Bṛih. 1. 3. 22. समो मशकेन
Maitri. 1. 4. यथेमे दंशमशकादयः

मसूर

Bṛih. 6. 3. 13. गोधूमाश्च मसूराश्च

मस्तक

Mahânâr.11. 11. आपादतलमस्तकम्

मस्तिष्क

Śiras. 6. मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रेरयत्पवमानः

मह्

Chhâ. 8. 8. 4. आत्मैवेह मह्य्यः

Chhâ. 8. 8. 4. आत्मानमेवेह महयन्
Śiras. 4. महति महीयते

मह् *adj.*

Śwet. 2. 4. मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः
Maitri. 6. 38. महो देवो भुवनान्याविवेश
Mahânâr. 10. 1. महो देवो मर्त्याँ आविवेश

महत्

Ait. 2. 1. महत्यर्णवे प्रापतन्
Kaush. 1. 7. ब्रह्ममयो महानिति
Kena. 13. न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः
Chhâ. 2. 11. 2. महान् प्रजया पशुभिर्भवति महान् कीर्त्या 12. 2; 13. 2; 14. 2; 15. 2; 16. 2; 17. 2; 18. 2; 19. 2; 20. 2.
4. 3. 7. महान्तमस्य महिमानमाहुः
5. 2. 4. यदि महज्जिगमिषेत्
6. 7. 3. यथा सोम्य महतोऽभ्याहितस्य 5.
6. 11. 1. महतो वृक्षस्य यो मूलेऽभ्याहन्यात्
Bṛih. 1. 4. 15. महत्पुण्यं कर्म करोति
2. 4. 10. अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम् 4. 5. 11; Maitri. 6. 32.
12. एवं वा अर इदं महद्भूतम्
4. 2. 1. यथा वै.. महान्तमध्वानमेष्यन्
4. 4. 14. न चेदवेदिर्महती विनष्टिः [a MS. in Poona College reads न चेदवेदीः &c.]
20. अज आत्मा महान् ध्रुवः
22. स वा एष महानजः 24, 25.
5. 4. 1. महद्यक्षं प्रथमजं वेद
6. 3. 1. स यः कामयेत महत्प्राप्नुयाम्

Tait. 3. 6. 1. महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या 3. 7. 1; 3. 8. 9. 1.
3. 10. 3. तन्मह इत्युपासीत : भवति
Katha. 1. 23. भूमेर्महदायतनं वृणी
29. यत्साम्पराये महति नस्तत्
2. 20. महतो महीयान् Św 20; Mahânâr. 1. 1;
22. महान्तं विभुमात्मानं 4. 4.
3. 10. बुद्धेरात्मा महान् पर
11. महतः परमव्यक्तम्
13. ज्ञानमात्मनि महति च्छेत्
15. अनाद्यनन्तं महतः पर
6. 2. महद्भयं वज्रमुद्यतम्
7. सत्त्वादधि महानात्मा तोऽव्यक्तमुत्तमम्
Śwet. 3. 8. वेदाहमेतं पुरुषं महा
12. महान् प्रभुर्वै पुरुषः
19. तमाहुरग्र्यं पुरुषं मह
Maitri. 1. 4. महतीं श्रियं त्यक्त्वा
6. 6. चक्षुरायत्ता हि पु महती मात्रा
Muṇḍ. 2. 2. 1. आविः सन्निहितं गु नाम महत्पदम्
Mahânâr. 1. 5. यन्महतो महान्तम्
11. 8. विश्वस्यायतनं महत् Kaivalya. 16; Bra 3; Dhyâna. 23.
10. तस्य मध्ये महानग्निः
20. 11. महाँ इन्द्रो वज्रबाहुः
Kaivalya. 20. तद्ब्रह्महानहम्
Nṛip. 3. 1. महतीं श्रियमश्नुते — महतीं श्रियमाप्नुयात्

lrip. 5. 2. एतन्महाचक्रं..वेद स महान् भवति
risut. 4. एष एव महान्
5. एष एव महानेष हि व्याप्ततमः
— एष एव महानेष ह्येवोत्कृष्टः
— एतदेव महदेतद्धि महाविभूति
6. महान्तममहान्तं .. बुबुधिरे
hur. 10. पुरुषायतनं महत्
ras. 4. अव्यक्ते महति तमसि द्योतयति
arbha. 4. यन्त्रेणापीड्यमानो महता दुःखेन
hâ. 3. तस्य मध्ये महार्नाचिः (so MSS; cf Mahânâr. 11)
ahma. 2. त्रिवृत् सूत्रं च यन्महत्
ânâg. 2. महानवो ऽयं पुरुषः
da. 11. नवमी महती नाम
pî. 2. प्रकृतिमहदहमाद्याः
mot. 2. स महान् भवति
kti. 1. 35. महच्छारीरकं शिखा
1. *vide* जाबालि
â. 1. 3. पश्यैतां.. महतीं चमूम्
14. महति स्यन्दने स्थितौ
45. अहो बत महत्पापम्
2. 40. त्रायते महतो भयात्
4. 2. स कालेनेह महता
9. 6. वायुः सर्वत्रगो महान्
11. 23. रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम्
14. 3. मम योनिर्महद्ब्रह्म
4. तासां ब्रह्म महद्योनिः
18. 77. विस्मयो मे महान् राजन्

महता

7. 6. 1. य इह मनुष्याणां महतां प्राप्नुवन्ति

महत्तर

Maitri. 7. 11. तेभ्यस्तुर्यं महत्तरम्

महत्त्व

Nrisut. 7. महत्त्वान्महस्त्वात्
— उग्रत्वाद्वीरत्वान्महत्त्वात् (bis).

महदाद्य

Maitri. 6. 10. महदाद्यं विशेषान्तम्
Gopî. 4. महदाद्या ब्रह्मणो महामायासंमिलितात्

महद्भय

Râmot. 2. गर्भजन्मजरामरणसंसारमहद्भयात्

महद्यशस्

Śwet. 4. 19. यस्य नाम महद्यशः
Mahânâr. 1. 10 (तस्य)

महर्

Mahânâr. 15. 2. ओं महः
3. भूर्भुवः सुवर्महर्जनस्तपः सत्यम्
Śiras. 2. यो वै रुद्रः.. यच्च महः (some MSS. omit).

महर्जगत्

Nâda. 3. नाभिदेशे महर्जगत्

महर्त्विज्

Prâṇâg. 4. वेदा महर्त्विजः

महर्लोक

Nrip. 5. 6. स महर्लोकं जयति
Nâda. 16. नवम्यां च महर्लोकम्
Aruṇeya. 1. *vide* तपोलोक

महर्षि

Śwet. 3. 4. विश्वाधिको रुद्रो महर्षिः
4. 12; Mahânâr. 10. 3.

Gîtâ. 10. 2. न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः
— महर्षीणां च सर्वशः
6. महर्षयः सप्त पूर्वे
25. महर्षीणां भृगुरहम्
11. 22. महर्षिसिद्धसंघाः

महस्

Chhâ. 3. 13. 5. एतदोजश्च महश्चेत्युपासीत
Tait. 1. 5. 1. चतुर्थीं माहाचमस्यः प्रवेदयते मह इति तद्ब्रह्म
2. मह इत्यादित्यः
— मह इति चन्द्रमाः
3. मह इति ब्रह्म
— मह इत्यन्नम्
1. 6. 2. मह इति ब्रह्मणि (प्रतितिष्ठति)
2. 4. 1. महः पुच्छं प्रतिष्ठा
3. 10. 3. तन्मह इत्युपासीत महान् भवति
Mahânâr. 13. 2. पुरुषो वै रुद्रस्तन्महः
24. 1. उपयामगृहीतो ऽसि ब्रह्मणे त्वा महसे

महस्त्व

Nṛisut. 7. महस्त्वान्महस्त्वात्

महस्वन्त्

Chhâ. 3. 13. 5. ओजस्वी महस्वान् भवति
Mahânâr. 24. 1. श्रद्धासत्यो महस्वान्

महाकपि

Mukti. 2. 17. आचराशु महाकपे

महाकारण

Nṛisut. 3. महासूक्ष्मं महाकारणे च संहृत्य

महाग्रास

Śiras. 3. तस्मै महाग्रासाय वै नमो नमः

महाचक्र

Nṛip. 5. 1. महाचक्रं नाम चक्रं नो
— षडरं वा एतत् सुद
महाचक्रम्
2. तदेव चक्रं सुदर्शनं महा
क्रम्
— तद्वा एतन्महाचक्रं सा
कामिकं मोक्षद्वारम्
— एतन्महाचक्रं बालो
युवा वा वेद स म
भवति

महाचित्त्व

Nṛisut. 7. महासत्त्वान्महाचित्त्वा
हानन्दत्वात्

महाचैतन्य

Nṛisut. 2. ततो ऽविक्रियो महाचैत

महाज्ञान

Gauḍa. 4. 95. ते हि लोके महाज्ञानाः

महाज्ञेय

Mahânâr. 11. 3. नारायणं महाज्ञेयम्

महातपस्

Dhyâna. 2. महामायो महातपाः (
MS. omits); Yogat.

महात्मन्

Chhâ. 4. 3. 6. महात्मनश्चतुरो देव ए
कः स जगार
Katha. 1. 16. तमब्रवीत्प्रीयमाणो महा
Śwet. 4. 17. एष देवो विश्वकर्मा म
त्मा
5. 3. सर्वाधिपत्यं कुरुते महा
6. 23. तस्यैते कथिता ह्यर्थाः
काशन्ते महात्मनः
Maitri. 6. 15. कालः पचति भूतानि स
र्वाण्येव महात्मनि

Maitri. 7. 11. इतीभावो महात्मनः
Chûl. 8. पश्यन्त्यस्यां महात्मानम्
Gîtâ. 7. 19. स महात्मा सुदुर्लभः
8. 15. नाप्नुवन्ति महात्मानः
9. 13. महात्मानस्तु मां पार्थ
11. 12. भासस्तस्य महात्मनः
20. लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्
37. कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
50. भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा
18. 74. पार्थस्य च महात्मनः

महात्मवन्त्

..la. 13. भवेद्यक्षो महात्मवान्

महादुर्गा

..hânâr. 3. 13. महादुर्गायै धीमहि

महादेव

..hânâr. 3. 1. सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि
2. महादेवाय धीमहि 17. 4.
..nda. 1. अच्युतो ऽस्मि महादेव
4. स एव हि महादेवः
..iot. 5. यो वै श्रीरामः..यश्च महादेवः (43).

महादेवत्व

..sut. 7. महादेवत्वान्महेश्वरत्वात्

महाद्युतिकर

..inâr. 3. 9. महाद्युतिकराय धीमहि

महाद्रुम

..ip. 15. प्राकृतश्च महाद्रुमः

महाधनुर्धर

..i. 1. 4. महाधनुर्धराश्चक्रवर्तिनः

महाधी

Gauḍa. 4. 89. सर्वज्ञता हि सर्वत्र भवतीह महाधियः

महानदी

Maitri. 4. 2. महानदीषूर्मिय इवानिवर्तकमस्य यत्पुराकृतम्

महानन्द

Nṛisut. 8. एतदद्वयं स्वप्रकाशं महानन्दमात्मैव

महानन्दत्व

Nṛisut. 7. महासत्त्वान्महाचित्त्वान्महानन्दत्वात्

महानारायण

Mukti. 1. 34. महानारायणाह्वयम्
1. *vide* गारुड

महानुभाव

Gîtâ. 2. 5. गुरूनहत्वा हि महानुभावान्

महान्धकार

Maitri. 4. 2. महान्धकारमिव रागान्धम्

महान्यग्रोध

Chhâ. 6. 12. 2. अणिम्न एव महान्यग्रोधस्तिष्ठति

महापथ

Chhâ. 8. 6. 2. महापथ आतत उभौ ग्रामौ गच्छति

महापद्म

Râmap. 68. द्वात्रिंशारं महापद्मम्

महापद्मक

Gâruḍa. 3. यदि महापद्मकदूतस्त्वं यदि वा महापद्मकः स्वयम्

महापातक

Kâlâg. 2. समस्तमहापातकोपपातकेभ्यः

Vâsu. 4. सर्वमहापातकेभ्यः

महापाप्मन्

Gîtâ. 3. 37. महाशनो महापाप्मा

महापीठ

Nṛisut. 3. महापीठे सपरिवारं तं.. सन्दध्यात्

महापुरुष

Parama. 1. स एव वेदपुरुषः..महापुरुषः

महाप्रभुत्व

Nṛisut. 7. महानन्दत्वान्महाप्रभुत्वाच्च

महाप्रस्थान

Kaṭhaśru. 3. महाप्रस्थानं वृद्धाश्रमं वा गच्छेत्

Jâbâla. 5. वीराध्वाने वा .. महाप्रस्थाने वा

महाबाहु

Mukti. 1. 7. साधु पृष्टं महाबाहो

Gîtâ. 1. 18. सौभद्रश्च महाबाहुः
2. 26. तथापि त्वं महाबाहो
68. तस्माद्यस्य महाबाहो
3. 28. तत्त्ववित्तु महाबाहो
43. जहि शत्रुं महाबाहो
5. 3. निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो
6. 35. असंशयं महाबाहो
38. अप्रतिष्ठो महाबाहो
7. 5. जीवभूतां महाबाहो
10. 1. भूय एव महाबाहो
11. 23. रूपं महत्ते..महाबाहो
14. 5. निबध्नन्ति महाबाहो

Gîtâ. 18. 1. सन्न्यासस्य महाबाहो त्वम्
13. महाबाहो..निबोध मे

महाब्राह्मण

Bṛih. 2. 1. 18. महाराजो भवत्युतेव म ब्राह्मणः
19. महाराजो वा महाब्राह्मणो वा

महाभय

Śiras. 4. गर्भजन्मव्याधिजरामर संसारमहाभयात्तारय

महाभूत

Prâṇâg. 4. महाभूतानि प्रयाजाः

Gîtâ. 13. 5. महाभूतान्यहंकारः

महाभूमि

Kaṭha. 1. 24. महाभूमौ नचिकेतस्त्वं

महामति

Amṛita. 22. दृष्टिं विनिधार्य महाम

महामत्स्य

Bṛih. 4. 3. 18. यथा महामत्स्य उभे ऽनुसञ्चरति

महामनस्

Chhâ. 2. 11. 2. महामनाः स्यात्तद्व्रतम्
6. 1. 2. महामना अनूचानमानी

महामाय

Nṛisut. 5. महामायं महाविभूति

Dhyâna. 2. महामायो महातपाः
Yogat. 2 (in both ces Nârâyaṇa re महाकायः, but we omit the passage a gether from Dhyâ bindu.

Gopî. 2. प्रकृतिमहदहमाद्या महा याः

महामाया

4. ब्रह्मणो महामायासम्मिलितात्

महामुनि

la. 1. 22. वन्द्यश्चैष महामुनिः

महायोगिन्

âna. 2. विष्णुर्नाम महायोगी (one MS. omits); Yogat. 2.

महायोगेश्वर

i. 11. 9. महायोगेश्वरो हरिः

महारथ

i. 1. 4. द्रुपदश्च महारथः
6. सर्व एव महारथाः
17. शिखण्डी च महारथः
2. 35. मंस्यन्ते त्वां महारथाः

महाराज

2. 1. 18. उतेव महाराजो भवति
— यथा महाराजो जानपदान् गृहीत्वा
19. यथा कुमारो वा महाराजो वा

ri. 2. 1. महाराज बृहद्रथ

महारौरव

ma. 3. स याति नरकान् घोरान् महारौरवमेव च (MSS.)

महार्णव

1. 4. अन्यानां शोषणं महार्णवानाम्

महालक्ष्मी

âr. 4. 9. तन्नो महालक्ष्मीः प्रचोदयात् Nṛip. 4. 2.

Nṛip. 1. 3. चतुर्विंशत्यक्षरा महालक्ष्मीर्यजुः
4. 2. एषा ह वै महालक्ष्मीर्यजुर्गायत्री
— य एतां महालक्ष्मीं याजुषीं वेद

महावाक्य

Mukti. 1. 38. *vide* अग्निहोत्रक
1. *vide* गारुड

महाविद्या

Gâruḍa. 3. य इमां महाविद्याममावास्यायां शृणुयात्
— य इमां महाविद्याममावास्यायामधीयानो धारयेत्

महाविभूति

Nṛisut. 5. महामायं महाविभूति
— एतद्देवोग्रमेतद्धि महाविभूति (so with each word of the Mantra.)
— चिन्मात्रं महाविभूतिम्

महाविभूत्यर्थ

Nṛisut. 5. मकारो महाविभूत्यर्थः

महाविष्णु

Nṛip. 1. 6. महा प्रथमान्तार्द्धस्याद्यम्
7. विष्णुं प्रथमस्यान्त्यम्
— स कृतपुरश्चरणो ऽपि महाविष्णुर्भवति
2. 3. महाविष्णुं तृतीयं (स्थानं जानीयात्)
4. कस्मादुच्यते महाविष्णुमिति
— तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति

Râmap. 1. चिन्मये ऽस्मिन्महाविष्णौ

Râmot. 5. विश्वंधरं महाविष्णुम्
— यो वै श्रीरामः.. महाविष्णुः (44).

महावीर

Dhyâna. 11. चतुर्भुजं महावीरम्

महावृष

Chhâ. 4. 2. 5. ते हैते रैक्वपर्णा नाम महावृषेषु

महाव्याधि

Krish. 17. अघासुरो महाव्याधिः

महाशंख

Gîtâ. 1. 15. पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखम्

महाशन

Gîtâ. 3. 37. महाशनो महापाप्मा

महाशाल

Chhâ. 5. 11. 1. एते महाशाला महाश्रोत्रियाः
3. इमे महाशाला महाश्रोत्रियाः
6. 4. 5. पूर्वे महाशाला महाश्रोत्रियाः
Mund.1. 1. 3. शौनको ह वै महाशालः
Brahma. 1.

महाशूलिनी

Mahânâr. 3. 13. महाशूलिन्यै विद्महे

महाश्रोत्रिय

Chhâ. 5. 11. 1. एते महाशाला महाश्रोत्रियाः
3. इमे महाशाला महाश्रोत्रियाः
6. 4. 5. पूर्वे महाशाला महाश्रोत्रियाः

महासंहिता

Tait. 1. 3. 1 ता महासंहिता इत्याचक्षते
4. इतीमा महासंहिताः
Tait. 1. 3. 4. य एवमेता महासंहिता व्याख्याता वेद

महासत्त्व

Nrisut. 7. महासत्त्वान्महाचित्त्वान्महानन्दत्वात्

महासुहय

Brih. 6. 1. 13. यथा महासुहयः सैन्ध

महासूक्ष्म

Nrisut. 3. महास्थूलं महासूक्ष्मे म सूक्ष्मं महाकारणे च इत्य

महासेन

Mahânâr. 3. 5. महासेनाय धीमहि

महास्त्र

Mund.2. 2. 3. धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्र

महास्थूल

Nrisut. 3. महास्थूलं महासूक्ष्मे.. इत्य

महाहरि

Skanda. 4. स एव हि महाहरिः

महि

Brih. 6. 3. 5. आमंस्यामंहि ते महि

महिदास

Chhâ. 3. 16. 7. महिदास ऐतरेयः (so the MSS.; but printed text reads मही°)

महिमन्

Kena. 14. अस्माकमेवायं महिमेति
Chhâ. 1. 1. 9. एतस्यैवाक्षरस्य.. महिम्ना रसेन
3. 12. 6. तावानस्य महिमा
4. 3. 7. महान्तमस्य महिमानम्

7. 24. 1. स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नि
2. गोअश्वमिह महिमेत्याचक्षते
1. 1. 2. अश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत
— एनं पश्चान्महिमान्वजायत
— एतौ वा अश्वं महिमानावभितः
3. 9. 2. महिमान एवैषामेते
4. 4. 23. एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य
2. 20. पश्यति . . महिमानमात्मनः
3. 20. पश्यति . . महिमानमीशम् Mahânâr. 8. 3.
4. 7. अस्य महिमानमिति वीतशोकः Muṇḍ. 3. 1. 2.
6. 1. देवस्यैष महिमा तु लोके
2. 3. कस्यैष खल्वीदृशो महिमा
4. स्वे महिम्नि तिष्ठति 6. 28.
3. 1. यद्येवमस्यात्मनो महिमानं सूचयसि
4. 4. ओं ब्रह्मणो महिमा
6. 21. इन्द्रियाणि संयोज्य महिमानं निरीक्षेत (so MS.)
28. स्वे महिम्नि तिष्ठमानं दृष्ट्वा
38. स्वे महिम्नि तिष्ठमानं पश्यति
2. 7. यस्यैष महिमा भुवि
24. 1. य एवं वेद ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद्ब्रह्मणो महिमानम्
25. 1. देवानामेव महिमानं गत्वा
— पितॄणामेव महिमानं गत्वा
— सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वानभिजयति तस्माद्ब्राह्मणो महिमानमाप्नोति
4. 5. महिमानमनुभवति 5. 3.

Nṛisut. 7. स्वे महिम्नि सदा समासते
Brahma. 1. कस्यैष महिमा बभूव
— यो ह्येष महिमा बभूव क एषः
— आत्मनो महिमा बभूव
Gîtâ. 11. 41. अजानता महिमानं तवेमम्

महिष

Mahânâr. 9. 1. महिषो मृगाणाम् 17. 8.

मही

Mahânâr. 1. 3. येनावृतं खं च दिवं मही च (so Nârâyaṇâ ; other MSS. read महीं च)
13. 7. मेदिनी पृथिवी महती मही
Gîtâ. 1. 35. किन्नु महीकृते
2. 37. जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

महीक्षित्

Gîtâ. 1. 25. सर्वेषां च महीक्षिताम्

महीतल

Krish. 8. सो ऽवतीर्णो महीतले

महीपति

Gîtâ. 1. 21. इदमाह महीपते

महीभृत्

Râmap. 4. राज्यार्हाणां महीभृताम्

महीय्

Kena. 14. ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त
26. ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वम्
Chhâ 8. 2. 1. पितृलोकेन सम्पन्नो महीयते (similarly, 9 times more).
8. 10. 1. स्वप्ने महीयमानश्चरत्येष आत्मा
Tait. 1. 5. 2. सर्वे लोका महीयन्ते

Tait. 1. 5. 2. सर्वाणि ज्योतींषि महीयन्ते
3. सर्वे वेदा महीयन्ते
— सर्वे प्राणा महीयन्ते
Katha. 2. 17. ब्रह्मलोके महीयते 3. 16; Gopî. 1.
Śiras. 4. महति महीयते
Nâda. 14. सोमलोके महीयते
Gopî. 5. विष्णुलोके महीयते

महीयंस्

Katha. 2. 20. महतो महीयान् Swet. 3. 20; Mahânâr. 1. 1; 8. 3.

महीस्थित

Râmap. 1. राजते यो महीस्थितः

महेश्वर

Śwet. 4. 10. मायिनं तु महेश्वरम्
6. 7. तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्
Mahânâr. 10. 8. तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः
Nṛip. 4. 3. यो वै नृसिंहः..यश्च महेश्वरस्तस्मै वै नमो नमः (3)
5. 2. ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा नाभ्याम्
Brahmav. 1. ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्
Śiras. 3. य ईशानः स भगवान् महेश्वरः
4. कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः..तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः
Garbha. 4. तत् प्रपद्ये महेश्वरम्
Kâlâg. 2. प्रथमा रेखा सा..महेश्वरः
Kṛish. 20. खड्गरूपो महेश्वरः
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..यश्च महेश्वरः (42).
Mukti. 1. 20. स महेश्वरः
Gîtâ. 5. 29. सर्वलोकमहेश्वरम्
10. 3. वेत्ति लोकमहेश्वरम्
Gîtâ. 13. 22. भर्त्ता भोक्ता महेश्वरः

महेश्वरत्व

Nṛisut. 7. महादेवत्वान्महेश्वरत्वा

महेष्वास

Râmap. 33. रामभद्र महेष्वास
Gîtâ. 1. 4. अत्र शूरा महेष्वासाः

महैलापत्रक

Gâruḍa. 3. यदि महैलापत्रकदूता यदि वा महैलापत्रकः यम्

महोदधि

Kṛish. 19. पूर्ववच्च महोदधौ

महोदय

Mukti. 2. 39. मनोनाशो महोदयः

महोपनिषद्

Mahânâr. 24. 1. एतद्वै महोपनिषदं दे गुह्यम्
Nṛip. 1. 7. य एवं वेदेति महोप 4. 3; 5. 10.
— य एतां महोपनिषदं वे
Mahâ. 1. अथातो महोपनिषदमे
4. य इमां महोपनिषदं ब्र णोऽधीते (य इदं 2 MS

महोरगदष्ट

Maitri. 4. 2. महोरगदष्ट इव विषय

मा

Chhâ. 4. 1. 1. सर्वत आवसथान् मा ज्वक्रे

मांस

Chhâ. 2. 19. 1. मांसमुद्गीथः
6. 5. 1. यो मध्यमस्तन्मांसम्
Bṛih. 1. 1. 1. नभो मांसानि
3. 9. 28. मांसान्यस्य शकराणि

ait. 1. 7. 1. चर्म मांसं स्नावास्थि मज्जा
laitri. 1. 3. *vide* संघात
3. 4. मांसेनानुलिप्तम्
arbha. 2. शोणितान्मांसं मांसान्मेदः
inda. 4. मांसत्वक्शोणितोद्भवः

मांसौदन

rih. 6. 4. 18. मांसौदनं पाचयित्वा

मांस्पृष्ट

rih. 4. 4. 8. अणुः पन्था विततः पुराणो मांस्पृष्टः

माक्षीक, °का

rahma. 1. स नियच्छति मधुकरराजानं माक्षीकवत्
— यथा माक्षीकेकेन तन्तुना जालं विक्षिपति (4 MSS. have माक्षिकेन)

माण्टि

ı. 2. 6. 3. आत्रेयो माण्टेः 4. 6. 3.
— माण्टिर्गौतमात् 4. 6. 3.

माण्डव्य

ı. 6. 5. 4. माण्डूकायनिर्माण्डव्यात्
— माण्डव्यः कौत्सात्

माण्डूकायनि

ı. 6. 5. 4. साञ्जीवीपुत्रो माण्डूकायनेः
— माण्डूकायनिर्माण्डव्यात्

माण्डूकायनीपुत्र

ı. 6. 5. 2. जायन्तीपुत्रो माण्डूकायनीपुत्रात्
— माण्डूकायनीपुत्रो माण्डूकीपुत्रात्

माण्डूकीपुत्र

ı. 6. 5. 2. माण्डूकायनीपुत्रो माण्डूकीपुत्रात्

Bṛih. 6. 5. 2. माण्डूकीपुत्रः शाण्डिलीपुत्रात्

माण्डूक्य

Mukti. 1. 26. माण्डूक्यमेकमेवालम्
30. *vide* तित्तिरि
1. *vide* गारुड

मातरिश्वन्

Kena. 21. मातरिश्वा वा अहमस्मीति
Iśâ. 4. तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति
Praśna. 2. 11. पिता त्वं मातरिश्वनः

मातुल

Gîtâ. 1. 26. आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्
34. मातुलाः श्वशुराः पौत्राः

मातृ

Kaush. 1. 2. पुंसा कर्त्रा मातरि मा निषिञ्च
Chhâ. 4. 4. 1. जबालां मातरमामन्त्रयाञ्चक्रे
4. अपृच्छं मातरम्
5. 24. 5. यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासते
7. 15. 1. प्राणो माता
2. स यदि..मातरं वा.. किञ्चिद्भृशमिव प्रत्याह
8. 2. 2. मातरः समुत्तिष्ठन्ति
Bṛih. 1. 5. 7. पिता माता प्रजैत एव.. वाङ्माता
4. 3. 22. मातामाता
6. 2. 2. यदन्तरा पितरं मातरं च
6. 4. 27. एनं मात्रे प्रदाय स्तनं प्रयच्छति
28. अथास्य मातरमभिमन्त्रयते
Tait. 1. 3. 3. माता पूर्वरूपम्
Mahânâr. 13. 7. सर्वभूतानां माता मेदिनी

Mahânâr. 15. 1. गायत्री छन्दसां माता
Prasna. 2. 13. मातेव पुत्रान् रक्षस्व
Garbha. 3. मातू रेतोतिरेकात्स्त्री
— मात्रा..प्राण आप्यायते
4. मातरो विविधा दृष्टाः
Brahma. 2. तत्र..माता न माता
Yogat. 4. या माता सा पुनर्भार्या
Kaṭhaśru. 1. मातरं पितरं..अनुमोदयित्वा
Kṛish. 16. दया सा रोहिणी माता
20. रज्जुर्मातादितिस्तथा
Gîtâ. 9. 17. माता धाता पितामहः

मातृक

Maitri. 7. 11. विनिर्गतं मातृकमेवमाहुः

मातृकाद्य

Nṛip. 5. 2. षोडशसु पत्रेषु मातृकाद्याः सबिन्दुकाः षोडशकला भवन्ति

मातृदेव

Tait. 1. 11. 2. मातृदेवो भव

मातृमन्त्

Bṛih. 4. 1. 2. यथा मातृमान्..ब्रूयात् 3—7.

मातृलोक

Chhâ. 8. 2. 2. मातृलोकेन सम्पन्नो महीयते

मातृलोककाम

Chhâ. 8. 2. 2. यदि मातृलोककामो भवति

मातृवध

Kaush. 3. 1. न मातृवधेन न पितृवधेन

मातृहन्

Chhâ. 7. 15. 2. मातृहा वै त्वमसि
3. न मातृहासीति

मात्र

Mukti. 2. 22. वासनामात्रकारणम्

मात्रा

Chhâ. 2. 24. 16. एष ह वै यज्ञस्य मात्रां य एवं वेद
3. 19. 1. तत्संवत्सरस्य मात्राम यत
Bṛih. 4. 3. 9. अस्य लोकस्य सर्वा मात्रामपादाय
32. अन्यानि भूतानि मात्र पजीवन्ति
4. 4. 4. पेशसो मात्रामुपादाय
Tait. 1. 2. 1. वर्णः स्वरः। मात्रा बल
Maitri. 6. 3. ओमिति तिस्रो मात्राः
6. चक्षुरायत्ता हि पुरु महती मात्रा चक्षुषा मात्राश्चरति
Prasna. 5. 6. तिस्रो मात्रा मृत्युमत्य
Mâṇḍû. 8. पादा मात्रा मात्राश्च पा
9. अकारः प्रथमा मात्रा
10. उकारो द्वितीया मात्रा
11. मकारस्तृतीया मात्रा
Gauḍa. 1. 19. मात्रासम्प्रतिपत्तौ 20,
24. पादा मात्रा न संशयः
Nṛip. 2. 1. प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा Nṛisut. 3 (bis).
Nṛisut. 2. मात्राभिरोङ्कारेण चैकी यात्
— मात्रामात्राः प्रतिमात्राः यात्
3. मात्रामात्राः प्रतिमात्राः त्वा
— मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञा कल्परूपं चिन्तयन्
Brahmav. 4. तिस्रो मात्रार्द्धमात्रा च
9. तिस्रो मात्रास्तथा ज्ञेयाः

s. 3. तिस्रो मात्राः परस्तु सः
5. या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या
— या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या
— या सा तृतीया मात्रेशानदेवत्या
— या सार्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्या

â. 1. पूर्वास्य मात्रा पृथिव्यकारः
ı. 6. आग्नेयी प्रथमा मात्रा
7. भवेन्मात्रा तथोत्तरा
8. तासां मात्रा प्रतिष्ठिता
9. घोषिणी प्रथमा मात्रा
12. प्रथमायां तु मात्रायाम्
14. पञ्चम्यामथ मात्रायाम्

ita. 21. स्थूलातिस्थूलमात्रायाम्
aśi. 6. दीपशिखायां या मात्रा सा मात्रा परमेष्ठिनः

मात्राद्वादशयोग

ur. 3. मात्राद्वादशयोगेन प्रणवेन

मात्राधार

ur. 24. मात्राधारेण योगवित्

मात्रालिङ्गपद

ita. 4. मात्रालिङ्गपदं त्यक्त्वा

मात्रास्पर्श

2. 14. मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय

मात्सर्य

ri. 3. 5. मात्सर्यं नैष्कारुण्यं..इति तामसानि

माधव

1. 14. माधवः पाण्डवश्चैव
37. सुखिनः स्याम माधव

माध्यन्दिन

Chhâ. 2. 24. 1. रुद्राणां माध्यन्दिनं सवनम्
7. पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणात्
10. तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनं सवनं संप्रयच्छन्ति

3. 16. 2. इदं मे प्रातःसवनं माध्यन्दिनं सवनमनुसन्तनुत
3. चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यन्दिनं सवनम्
— त्रैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनम्
4. इदं मे माध्यन्दिनं सवनं तृतीयसवनमनुसन्तनुत

Kâlâg. 2. द्वितीया रेखा सा..माध्यन्दिनं सवनम्

माध्यन्दिनायन

Bṛih. 4. 6. 2. जाबालायनो माध्यन्दिनायनात्
— माध्यन्दिनायनः सौकरायणात्

माध्व

Bṛih. 6. 3. 6. माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः Mahânâr. 9. 8; 17. 7.
— माध्वीर्गावो भवन्तु नः Mahânâr. 9. 10; 17. 7.

मान

Kaush. 1. 1. यो न मानमुपागाः
Tejo. 14. तथा मानापमानयोः Gîtâ. 6. 7; 12. 18.
Parama. 2. न मानापमानं च
Gîtâ. 14. 25. मानापमानयोस्तुल्यः
16. 10. दम्भमानमदान्विताः
17. धनमानमदान्विताः
17. 18. सत्कारमानपूजार्थम्

मानत्व

Nṛisut. 7. मानत्वान्मुक्तत्वात्

मानव

Chhâ. 4. 15. 6. इमं मानवमावर्त्तं नावर्त्तन्ते
4. 17. 10. मानवो ब्रह्मा
Swet. 6. 20. यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः
Râmap. 17. ततो रामो मानवो मायया-धात्
Mukti. 1. 20. मुक्तिं प्राप्नोति मानवः
Gîtâ. 3. 17. आत्मतृप्तश्च मानवः
31. अनुतिष्ठन्ति मानवाः
18. 46. सिद्धिं विन्दति मानवः

मानवन्त्

Tait. 3. 10. 3. तन्मन इत्युपासीत मानवान् भवति

1. मानस *adj.*

Brih. 2. 5. 7. अयमध्यात्मं मानसः .. पुरुषः
6. 2. 15. पुरुषो मानस एत्य
Mahânâr. 23. 1. मानसेन मनसा साधु पश्यति मानसा ऋषयः प्रजा असृजन्त
Mukti. 2. 69. मानसीर्वासनाः पूर्वम्
Gîtâ. 10. 6. मद्भावा मानसा जाताः
17. 16. तत्तपो मानसमुच्यते

2. मानस

Maitri. 6. 24. मानसे च विलीने तु
Mahânâr. 21. 2. मानसमिति विद्वांसस्तस्माद्विद्वांस एव मानसे रमन्ते
23. 1. मानसं वै प्राजापत्यं पवित्रम्
— मानसे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मान्मानसं परमं वदन्ति
Gîtâ. 1. 47. शोकसंविग्नमानसः

मानसामान्य

Gauda. 1. 21. मानसामान्यमुत्कटम्

मानसी

Kaush. 1. 3. प्रिया च मानसी

मानिन्

Katha. 2. 6. अयं लोको नास्ति पर इति मानी

1. मानुष *adj.*

Chhâ. 5. 1. 4. सं हास्मै कामाः पद्यन्ते दैवाश्च मानुषाश्च
5. 3. 6. मानुषस्य .. वित्तस्य वरं णीथाः
— तवैव राजन् मानुषं वित्त
Brih. 1. 4. 17. चक्षुर्मानुषं वित्तम्
2. 5. 13. अयमध्यात्मं मानुषः .. पुरुषः
6. 2. 6. मानुषाणां ब्रूहीति
Tait. 1. 9. 1. मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च
2. 8. 1. स एको मानुष आनन्दः
— ते ये शतं मानुषा आनन्दाः
3. 10. 2. इति मानुषीः समाज्ञाः
Gîtâ. 4. 12. क्षिप्रं हि मानुषे लोके
9. 11. मानुषीं तनुमाश्रितम्
11. 51. दृष्ट्वेदं मानुषं रूपम्

2. मानुष

Brih. 2. 5. 13. मानुषं सर्वेषां भूतानां मध्वस्य मानुषस्य सर्वाणि भूतानि मधु
— यश्चायमस्मिन्मानुषे .. पुरुषः
Gopî. 2. गोपीचन्दनसंसक्तमानुषाणाम्

मानुष्यक

Brih. 4. 3. 33. सर्वैर्मानुष्यकैर्भोगैः सम्पन्नतमः

मामक

i. 1. 27. मामकं धाम यास्यसि
44. वैदेहीं मामकीं मुक्तिम्
2. 4. मामकं पदमाप्नुहि
1. 1. मामकाः पाण्डवाश्चैव
9. 7. प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्
15. 12. तत्तेजो विद्धि मामकम्

माया

2. 5. 19. इन्द्रो मायाभिः पुरुरूपः
1. 10. विश्वमायानिवृत्तिः
4. 9. तस्मिंश्चान्यो मायया सन्निरुद्धः
10. मायां तु प्रकृतिं विद्यात्
a. 1. 16. न येषु जिह्ममनृतं न माया च
2. 19. मायैषा तस्य देवस्य
31. स्वप्नमाये यथा दृष्टे
3. 19. मायया भिद्यते ह्येतत्
24. इन्द्रो मायाभिरित्यपि
— मायया जायते तु सः
27. सतो हि मायया जन्म युज्यते न तु तत्त्वतः
28. असतो मायया जन्म तत्त्वतो नैव युज्यते
— वन्ध्यापुत्रो न तत्त्वेन मायया वापि जायते
29. स्पन्दते मायया मनः (bis).
4. 58. सा च माया न विद्यते
61. चित्तं चलति मायया (bis).
3. 1. माया वा एषा नारसिंही
— मायामेतां शक्तिं विद्यात्
— य एतां मायां शक्तिं वेद
5. 1. मायया वा एतत् सर्वं वेष्टितम्
— नात्मानं माया स्पृशति
— मायया बहिर्वेष्टितम् (bis).
— क्षेत्रं क्षेत्रं वा मायैषा सम्पद्यते

Nṛisut. 9. मायया ह्यन्यदिव
— माया च तमोरूपानुभूतेः
— एवमेवैषा माया..क्षेत्राणि दर्शयित्वा
— माया चाविद्या च स्वयमेव भवति
— मूढ इव व्यवहरन्नास्ते माययैव
— मायया नासंवित्तिः स्वप्रकाशे

Chûl. 3. विकारजननीं मायाम्
Sarvop. 1. आत्मा माया चेति कथम्
4. सा मायेत्युच्यते
Gopî. 4. मायासहितब्रह्मसंभोगवशात्
Krish. 5. माया सा त्रिविधा प्रोक्ता
6. माया त्रेधा ह्युदाहृता
7. अजय्या वैष्णवी माया
12. मायया मोहितं जगत्
13. तस्य माया जगत्कथम्
Râmap. 17. ततो रामो मानवो मायाधात्
61. कोणपार्श्वे रमामाये
89. मायाविद्ये ये
Gîtâ. 7. 14. मम माया दुरत्यया
— मायामेतां तरन्ति ते
15. माययापहृतज्ञानाः
18. 61. भ्रामयन् सर्वभूतानि.. मायया

मायापरिमोहित

Kaivalya. 12. स एवं मायापरिमोहितात्मा

मायामय

Maitri. 4. 2. इन्द्रजालमिव मायामयम्
Gauḍa. 4. 59. यथा मायामयाद्बीजात्
69. यथा मायामयो जीवः
Râmap. 29. नमो मायामयाय च

मायामात्र

Gauḍa. 1. 17 मायामात्रमिदं द्वैतम्
Nṛisut. 1. त्रयमप्येतत् सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
— त्रयमत्रापि सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
5. इदं सर्वं यदयमात्मा मायामात्रम्

मायाविग्रहधारण

Kṛish. 11. हरिः साक्षान्मायाविग्रहधारणः

मायाशबलित

Gopî. 4. मायाशबलितं ब्रह्मासीत्

मायाहस्तिन्

Gauḍa. 4. 44. मायाहस्ती यथोच्यते

मायिन्

Śwet. 4. 9. अस्मान्मायी सृजते विश्वमेतत्
10. मायिनं तु महेश्वरम्

मायोपम

Gauḍa. 4. 58. जन्म मायोपमं तेषाम्

मारण

Râmap. 73. ग्रहमारणकर्मणि

मारुत

Maitri. 7. 11. स प्रेरयति मारुतम्
— मारुतस्तूरसि चरन्
Amṛita. 19. एकेन मारुतमाकृष्य
30. द्विमात्रो मारुतस्तथा
38. मारुतो याति मूर्धनि
Gîtâ. 2. 23. न शोषयति मारुतः

मारुति

Mukti. 1. 4. स्तुवन्पप्रच्छ मारुतिः
49. हितपुत्राय मारुते
Mukti. 1. श्रीरामचन्द्रं मारुतिः
2. 24. अनुरूपां च मारुते
63. अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन मा
71. शेषस्थिरसमाधानो त्वं भव मारुते

मार्ग

Maitri. 6. 10. चतुर्दशविधस्य मार्गस
Amṛita. 25. येनासौ पश्यते मार्गम्
Parama. 1. योगिनां परमहंसानांऽयं मार्गः
— यो ऽयं परमहंसमार्गः
Mukti. 1. 24. गुरूपदिष्टमार्गेण
2. 5. शुभाशुभाभ्यां मार्गा

मार्गशीर्ष

Gîtâ. 10. 35. मासानां मार्गशीर्षो ऽ

मार्दव

Gîtâ. 16. 2. मार्दवं ह्रीरचापलम्

मालामनु

Râmap. 63. तेषु मालामनोर्वर्णान्

मालामन्त्र

Râmap. 74. मालामन्त्रो ऽधुनेरि

माल्यहस्त

Kaush. 1. 4. शतं माल्यहस्ताः

माष

Chhâ. 5. 10. 6. तिलमाषाः Bṛih. 6. 13.

माषमात्र

Nyâsa. 5. माषमात्रीं तथा दृष्टि

मास्, मास

Kaush. 2. 8. मासि मास्यमावास्यायाम्
Chhâ. 4. 15. 5. यान् षडुदङ्ङेति मास न्मासेभ्यः संवत्स 5. 10. 1.

5. 9. 1. दश वा मासानन्तः शयित्वा
5. 10. 3. अपरपक्षाद्यान् षड् दक्षिणैति मासांस्तान्
4. मासेभ्यः पितृलोकम्
1. 1. 1. मासाश्चार्द्धमासाश्च पर्वाणि
3. 8. 9. अर्द्धमासा मासा ऋतवः Mahânâr. 1. 9.
3. 9. 5. द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य
6. 2. 15. आपूर्यमाणपक्षाद्यान् षण्मासानुदङ्ङादित्य एति मासेभ्यो देवलोकम्
16. अपक्षीयमाणपक्षाद्यान् षण्मासान्दक्षिणादित्य एति मासेभ्यः पितृलोकम्
6. 4. 22. दशमे मासि सूतवे
. 1. 4. 3. यथा मासा अहर्जरं (यन्ति)
ri. 6. 28. षड्भिर्मासैस्तु युक्तस्य
ânâr.25. 1. ये अर्द्धमासाश्च मासाश्च
ina. 1. 12. मासो वै प्रजापतिः
bha. 3. मासाभ्यन्तरे कठिनम्
— नवमे मासि सर्वलक्षणज्ञानसम्पूर्णो भवति
ta. 28. त्रिभिर्मासैर्न संशयः
29. षष्ठे मासि न संशयः
asru. 1. चतुरो मासान् वार्षिकान्
eya. 3. अष्टौ मासानेकाकी यतिश्चरेत् (the prevailing reading of MSS. is मासु or मास्सु)
ma. 3. शेषानष्टौ मासान्
8. 24. षण्मासा उत्तरायणम्
25. षण्मासा दक्षिणायनम्
10. 35. मासानां मार्गशीर्षो ऽहम्

मासत्रय

ha. 3. मासत्रयेण पादप्रदेशः

मासद्वय

Garbha. 3. मासद्वयेन शिरः

माहाचमस्य

Tait. 1. 5. 1. एतां चतुर्थीं माहाचमस्यः प्रवेदयते मह इति

माहात्म्य

Gîtâ. 11. 2. माहात्म्यमपि चाव्ययम्

माहारजन

Brih. 2. 3. 6. यथा माहारजनं वासः

माहित्थि

Brih. 6. 5. 4. कौत्सो माहित्थेः
— माहित्थिर्वामकक्षायणात्

मि

Mândû. 11. मिनोति ह वा इदं सर्वम् Nrisut. 2.

मिताहार

Gopî. 5. मिताहारो जितेन्द्रियः

मिति

Mândû. 11. मितेरपीतेर्वा Nrisut. 2.

1. मित्र

Mahânâr.22. 1. दानेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति
23. 1. यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति
Gauda. 4. 35. मित्राद्यैः सह सम्मन्त्र्य
Parama. 1. स्वपुत्रमित्रकलत्रबन्ध्वादीन्
Krish. 17. शमो मित्रं सुदामा यः
Gîtâ. 6. 9. सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु
12. 18. समः शत्रौ च मित्रे च

2. मित्र

Tait. 1. 1. 1. शं नो मित्रः शं वरुणः 1. 12. 1.

Mahânâr. 12. 3. आदित्यो वै..मित्रः
Nṛip. 2. 4. इन्द्रो वरुणो मित्रोऽर्यमा

मित्रद्रोह

Gîtâ. 1. 38. मित्रद्रोहे च पातकम्

मित्रानुग्रहण

Maitri. 3. 5. मित्रानुग्रहणं परिग्रहावलंबः

मित्रारिपक्ष

Gîtâ. 14. 25. तुल्यो मित्रारिपक्षयोः

मित्रावरुण

Maitri. 7. 5. मित्रावरुणौ..ऊर्ध्वा उच्यन्ति

मिथुन

Chhâ. 1. 1. 5. तद्वा एतन्मिथुनं यद्वाक् च प्राणश्चर्क् च साम च
6. तदेतन्मिथुनमोमित्येतदस्मिन्नक्षरे संसृज्यते
— यदा वै मिथुनौ समागच्छतः
2. 13. 1. एतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम्
2. स य एवमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतं वेद मिथुनीभवति मिथुनान्मिथुनात्प्रजायते
Bṛih. 1. 2. 4. स मनसा वाचं मिथुनं समभवत्
1. 4. 4. एवमेव यदिदं किञ्च मिथुनमापिपीलिकाभ्यः .. असृजत
1. 5. 12. तौ मिथुनं समैताम्
Praśna. 1. 4. स मिथुनमुत्पादयते
15. ते मिथुनमुत्पादयन्ते

मिथुनीभू

Chhâ. 2. 13. 2. स य एवमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतं वेद मिथुनीभवति

मिथ्या

Gauḍa 2. 7. मिथ्यैव खलु ते स्मृत
4. 32.
Mukti. 2. 14. मिथ्या संसारवासना
Gîtâ. 18. 59. मिथ्यैष व्यवसायस्ते

मिथ्याचार

Gîtâ. 3. 6. मिथ्याचारः स उच्यते

मिथ्याज्ञान

Parama. 2. संशयविपरीतमिथ्याज्ञानां यो हेतुः

मिथ्यादर्शन

Maitri. 4. 2. स्वप्न इव मिथ्यादर्शन

मिथ्यादृष्टान्तहेतु

Maitri. 7. 8. मिथ्यादृष्टान्तहेतुभिर्न्

मिथ्यामनोरम

Maitri. 4. 2. चित्रभित्तिरिव मिथ्यारमम्

मिश्र

Ait. 5. 3. इमानि च क्षुद्रमिश्राणि
Bṛih. 1. 5. 2. मिश्रं ह्येतत्
Gîtâ. 18. 12. अनिष्टमिष्टं मिश्रं च

मिष्

Ait. 1. 1. नान्यत्किञ्चन मिषत्
Maitri. 1. 4. मिषतो बन्धुवर्गस्य
Mahânâr. 5. 6. विश्वस्य मिषतो वशी

मिह्

Bṛih. 1. 1. 1. यन्मेहति तद्वर्षति
Mahânâr. 9. 11. घृतं मिमिक्षे (Nârâ derives this from root मिक्ष्)

1. मी (गतौ)

Mahânâr. 17. 6. ब्रह्म मेतु मां मधु मां..मधु मेतु माम्

2. मी (हिंसायां)

...a. 3. 1. तस्य मे तत्र न लोम चनामीयत स यो मां वेद न ह वै तस्य केनचन कर्मणा लोको मीयते

मीढुष्टम

17. या ते हेतिर्मीढुष्टम

मीमांसा

...5. 11. 1. महाश्रोत्रियाः समेत्य मीमांसां चक्रुः

1. 5. 21. अथातो व्रतमीमांसा

2. 8. 1. सैषानन्दस्य मीमांसा भवति

मीळ्हुष्टम

...âr. 13. 3. मीळ्हुष्टमाय तव्यसे

मुक्तकिल्बिष

...âr. 5. 3. निर्मुक्तो मुक्तकिल्बिषः

मुक्तत्व

...t. 7. मानत्वान्मुक्तत्वात्

मुक्तसङ्ग

3. 9. मुक्तसंगः समाचर

18. 26. मुक्तसंगो ऽनहंवादिन्

मुक्ति

3. 1. 3. सा मुक्तिः सातिमुक्तिः 4, 5, 6.

...ab. 3. निर्विषयस्यास्य मनसो मुक्तिरिष्यते

10. न मुमुक्षा न मुक्तिश्चेत्

...a. 1. भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् Gopî. 5.

...a. 13. स एवं मुक्तिमाप्नुयात्

... 4. देहि तज्जन्तोर्मुक्तिम्

— सर्वेषां मुक्तिसिद्धये

13. न मुक्तिग्रन्थसञ्चयम् (most MSS. मुक्तं for मुक्ति)

Vâsu. 1. मुक्तिसाधनं भवति

Krish. 5. यशोदा मुक्तिगेहिनी

Mukti. 1. 5. त्वद्रूपं ज्ञातुमिच्छामि . . मुक्तये

15. मुक्तिरेकेति चक्षिरे

17. चतुर्धा मुक्तिरीरिता

18. कैवल्यमुक्तिरेकैव

19. सालोक्यमुक्तिमाप्नोति

20. मुक्तिं प्राप्नोति मानवः

22. सैव सालोक्यसारूप्यमुक्तिः

23. सैव सालोक्यसारूप्यसामीप्यमुक्तिः

25. सैव सायुज्यमुक्तिः स्यात्

— चतुर्विधा तु या मुक्तिः

26. इयं कैवल्यमुक्तिस्तु

29. विदेहमुक्ताविच्छा चेत्

44. वैदेहीं मामकीं मुक्तिं यान्ति

1. विदेहमुक्तिः सैव कैवल्यमुक्तिः

— कैवल्यमुक्तिर्ज्ञानमात्रेणोक्ता

मुक्तिका

Mukti. 1. 40. कलिजाबालिसौभाग्यरहस्यऋचमुक्तिका

1. ईशावास्यबृहदारण्यकजाबालहंसपरमहंससुबालमन्त्रिकानिरालम्बत्रिशिखीब्राह्मणमण्डलब्राह्मणाद्वयतारकपैंगलभिक्षुतुरीयातीताध्यात्मतारसारयाज्ञवल्क्यशाट्यायनीमुक्तिकानाम्

मुक्तिद

Vâsu. 2. धारणान्मुक्तिदो भव

मुख

Ait. 1. 4. मुखं निरभिद्यत.. मुखाद्वाक्
2. 4. अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्
Kaush. 2. 9. ब्राह्मणस्त एकं मुखं तेन मुखेन राज्ञो ऽसि तेन मुखेन मामन्नादं कुरु (similarly 3 times more).
— त्वयि पञ्चमं मुखं तेन मुखेन &c.
3. 1. नास्य पापं चकृषो मुखान्नीलं वेतीति
Chhâ. 3. 6. 1. तद्वसव उपजीवन्त्यग्निना मुखेन (similarly 4 times more).
3. वसूनामेवैको भूत्वाग्निनैव मुखेन (similarly 4 times more).
4. 2. 5. तस्या ह मुखमुपोद्गृह्णन्
— अनेनैव मुखेनालापयिष्यथा इति
4. 14. 2. ब्रह्मविद इव सोम्य ते मुखं भाति
8. 13. 1. चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य
Brih. 1. 4. 6. मुखाच्च योनेः.. अग्निमसृजत
1. 5. 2. सोऽन्नमत्ति प्रतीकेनेति मुखं प्रतीकं मुखेनेत्येतत्
5. 14. 8. मुखं ह्यस्याः सम्राण्न विदाञ्चकार.. तस्या अग्निरेव मुखम्
5. 15. 1. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् Isâ. 15; Maitri. 6. 35.
6. 4. 9. मुखेन मुखं सन्धाय 10, 11, 21.
Swet. 4. 21. रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखम्
Mahânâr. 25. 1. यन्मुखं तदाहवनीयः
Kshur. 4. उरोमुखकटिग्रीवम्
Garbha. 3. षष्ठे मुखनासिकाक्षिश्रोत्राणि
5. मुखे आहवनीयः
— मुखेऽन्तर्वेदिः (so MS
Prâṇâg. 2. आहवनीयो भूत्वा मु
तिष्ठति
Nîla. 14. निशीर्य शल्यानां मुख
Tejo. 4. मुखानि त्रीणि विन्दति
Piṇḍa. 6. हस्ताङ्गुल्यः शिरो मु
Haṁsa. 2. मुखे रुद्रः (so MSS.)
Praśna. 3. 5. मुखनासिकाभ्याम्
Mukti. 1. 42. वेदविद्याव्रतस्नातदेशि
मुखात्
Gîtâ. 1. 29. मुखं च परिशुष्यति
4. 32. वितता ब्रह्मणो मुखे
11. 25. दंष्ट्राकरालानि च ते
खानि

मुखतस्

Tait. 3. 10. 1. एतद्वै मुखतोऽन्नं राद्धं
खतो ऽस्मा अन्नं रा

मुखवन्त्

Maitri. 6. 5. गार्हपत्यो दक्षिणाग्निर
नीया इति मुखवन्त्ये

मुख्य

Chhâ. 1. 2. 7. य एवायं मुख्यः प्राण
1. 5. 3.
Parama. 1. तच्च न मुख्योस्ति को
इति चेदयं मुख्यः
Râmot. 3. य एवं वेद स मुख्यो
वति (one MS. has
ख्यो)
Gîtâ. 10. 24. पुरोधसां च मुख्यम्

मुख्यत्व

Gauḍa. 3. 14. मुख्यत्वं हि न युज्यते

मुख्यद्वार

1. 5. तस्मादिदमेव मुख्यद्वारं कलौ (so most MSS.; some read मोक्षद्वारम्)

मुख्योपहार

p. 91. मुख्योपहारैर्विविधैश्च पूज्य

मुच्

.6. 16. 2. स न दह्यते ऽथ मुच्यते
1. 5. 17. सर्वस्मात्पुत्रो मुञ्चति
3. 8. 12. यदस्मात्तमस्कारेण मुच्येध्वम्
a. 6. 8. यं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः
1. 8. ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः 2. 15; 4. 16; 5. 13; 6. 13.
i. 4. 4. यैः परिपूर्णो ऽभिभूतः. . तैर्वैव मुक्तः
6. 30. अतस्तद्विपरीतो मुक्तः (bis.)
34. को न मुच्येत बन्धनात्
a. 2. 32. न मुमुक्षुर्न वै मुक्तः
4. 98. आदौ बुद्धास्तथा मुक्ताः
1. 5. तेनैव संसारान्मुच्यते मोचयति मुमुक्षुर्भवति
t. 9. सत्यो मुक्तो निरञ्जनः
— नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तम्
r. 25. यदा कामात् स मुच्यते (not in 5 MSS.)
. 2. एतामधीत्य द्विजो गर्भवासान्मुच्यते
na. 3. यं ज्ञात्वा मुच्यते बुधः
g. 1. नो मुञ्चन्त्वंहसः (bis).
19. शनैर्मुञ्चेत् कलेवरम्
nab. 1. मुक्तं निर्विषयं स्मृतम् (so MSS.)
5. यमुक्त्वा मुच्यते योगी
ra. 1. यमिष्ट्वा मुच्यते योगी

Vâsu. 3. स मुक्तो नात्र संशयः
Râmot. 4. मुक्ताः सन्तु न चान्यथा
— मुक्ता मां प्राप्नुवन्ति ते
— स मुक्तो भविता शिव
6. मुच्येयं भवबन्धनात्
— येन मुक्तो भवाम्यहम्
Mukti. 2. 16. मुक्तमित्यभिधीयते
20. मुक्त एवोत्तमाशयः
Gîtâ. 3. 13. मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः
31. मुच्यन्ते ते ऽपि कर्मभिः
5. 28. यः सदा मुक्त एव सः
8. 5. मुक्त्वा कलेवरम्
12. 15. हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तः
18. 40. सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तम्
71. सो ऽपि मुक्तो ऽशुभात् (so Thomson's text, but others शुभान् &c.)

मुञ्ज

Katha. 6. 17. प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकाम्

मुण्ड

Aśrama. 4. परमहंसा नदण्डधरा मुण्डाः
Jâbâla. 5. मुण्डो ऽपरिग्रहः शुचिः
Mukti. 1. 30. *vide* तित्तिरि

मुण्डक

Mukti. 1. *vide* गारुड

1. मुद्

Chhâ. 6. 11. 1. मोदमानस्तिष्ठति
Bṛih. 4. 3. 13. उतेव स्त्रीभिः सह मोदमानः
Katha. 1. 12. शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके 18.
2. 13. अणुमेतमाप्य स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा
Kṛish. 4. मोदितास्ते सुराः सर्वे (some MSS. have मोहिताः)
Râmap. 40. मोदते राघवस्तदा
Gîtâ. 16. 15. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये

2. मुद्

Bṛih. 4. 3. 10. न तत्र..मुदः..मुदः प्रमुदः सृजते

मुद्गल

Mukti. 1. 35. वासुदेवं च मुद्गलम्
1. *vide* बह्वृच

मुद्रा

Râmap. 49. मुद्रां ज्ञानमयीं याम्ये

मुनि

Bṛih. 3. 5. 1. बाल्यं च पाण्डित्यं च निर्विद्याथ मुनिः
4. 4. 22. एतमेव विदित्वा मुनिर्भवति
Kaṭha. 4. 15. एवं मुनेर्विजानत आत्मा भवति
Mahânâr. 21. 2. शम इत्यरण्ये मुनयः
22. 1. शमेन नाकं मुनयो ऽन्वविन्दन्
Kaivalya. 7. मुनिर्गच्छति भूतयोनिम्
Gauḍa. 1. 29. स मुनिर्नेतरो जनः
2. 35. मुनिभिर्वेदपारगैः
Śiras. 5. मुनयोऽवाग्वदन्ति न तस्य ग्रहणम्
Tejo. 2. मुनीनां च मनीषिणाम्
12. मुनीनां तत्त्वयुक्तं तु
Gopî. 5. एवं मुनिरब्रवीत्
(some MSS. read मनुः)
— एवं मुनयो ऽब्रुवन्
Krish. 26. सुदामा नारदो मुनिः
Ramap. 57. वसिष्ठवामदेवादिमुनिभिः
91. वसिष्ठाद्यैर्मुनिभिः
Mukti. 1. 2. सनकाद्यैर्मुनिगणैः
15. मुनिदुर्लभाम्
2. 24. मुनयो विदुः
55. समाधिर्मुनिभावितः
Gîtâ. 2. 56. स्थितधीर्मुनिरुच्यते
69. सा निशा पश्यतो मुनेः
Gîtâ. 5. 6. योगयुक्तो मुनिः
28. मुनिर्मोक्षपरायणः
6. 3. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगम्
10. 26. सिद्धानां कपिलो मुनिः
37. मुनीनामप्यहं व्यासः
14. 1. यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे

मुनिश्रेष्ठ

Mukti. 1. 15. राम केचिन्मुनिश्रेष्ठा

मुमुक्षा

Brahmab. 10. न मुमुक्षा न मुक्तिश्च

मुमुक्षु

Śwet. 6. 18. मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्र
Gauḍa. 2. 32. न मुमुक्षुर्न वै मुक्तः
Nṛip. 1. 5. तेनैव संसारान्मुच्यते
चयति मुमुक्षुर्भवति
— यो जानीते स मुमुक्षु
2. 4. मुमुक्षवो ब्रह्मवादिनः
Brahmab. 3. निर्विषयं..मनः का मुक्षुणा
Kâlâg. 1. तत्समाचरेन्मुमुक्षुर्न वाय
Vâsu. 3. मुमुक्षुर्धारयेन्नित्यम्
Mukti. 1. 26. मुमुक्षूणां विमुक्तये
1. मुमुक्षवः पुरुषाः
Gîtâ. 4. 15. पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः

मुमूर्षु

Râmot. 4. मुमूर्षोर्दक्षिणे कर्णे

मुष्क

Bṛih. 6. 4. 3. चर्माधिषवणे..तौ

मुष्टि

Chhâ. 7. 3. 1. द्वे वाक्षौ मुष्टिरनुभ

मुष्टिक

Krish. 15. मत्सरो मुष्टिको ज

मुह्

.. 2. 4. 12. अत्रैव मा भगवानमूमुहत्
6. 1. 11. यथा मुग्धा अविद्वांसो मनसा
ha. 2. 5. दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढाः Maitri. 7. 9.
6. वित्तमोहेन मूढम्
et. 4. 7. अनीशया शोचति मुह्यमानः Mund. 3. 1. 2.
i. 7. 10. तदिमे मूढा उपजीवन्ति
1.1. 2. 7. एतच्छ्रेयो ये ऽभिनन्दन्ति मूढाः
8. जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढाः
nt. 6. अन्धा बधिरा मुग्धाः
9. मूढैरात्मैव दृष्टा
— अमूढो मूढ इव व्यवहरन्नास्ते
h. 11. मायया मोहितं जगत्
kti. 1. 48. शास्त्रगर्त्तेषु मुह्यते
i. 2. 13. धीरस्तत्र न मुह्यति
3. 2. बुद्धिं मोहयसीव मे
4. 16. कवयो ऽप्यत्र मोहिताः
5. 15. तेन मुह्यन्ति जन्तवः
7. 13. मोहितं नाभिजानाति माम्
15. न मां दुष्कृतिनो मूढाः
25. मूढो ऽयं नाभिजानाति लोकः
8. 27. योगी मुह्यति कश्चन
9. 11. अवजानन्ति मां मूढाः
16. 20. मूढा जन्मनि जन्मनि

मुहुस्

i. 1. 5. प्रणमामि मुहुर्मुहुः
18. 76. हृष्यामि च मुहुर्मुहुः

मुहूर्त्त

h. 1. 3. मुहूर्त्ता येष्टिहाः
4. स आगच्छति मुहूर्त्तान् येष्टिहान्

Brih. 3. 8. 9. निमेषा मुहूर्त्ता अहोरात्राणि
Mahânâr. 1. 8. कला मुहूर्त्ताः काष्ठाश्च
Atmapra. 1. आत्मप्रबोधोपनिषदं मुहूर्त्तमुपासित्वा

मूक

Kaush. 3. 3. जीवति वागपेतो मूकान् हि पश्यामः
Nrisut. 6. मुग्धाः क्लीबा मूकाः

मूढग्राह

Gîtâ. 17. 19. मूढग्राहेणात्मनः

मूढत्व

Maitri. 3. 5. मूढत्वं निर्व्रीडत्वं..इति तामसानि

मूढयोनि

Gîtâ. 14. 15. मूढयोनिषु जायते

मूत्र

Chhâ. 6. 5. 2. स्थविष्ठो धातुस्तन्मूत्रं भवति

मूत्रद्वार

Maitri. 3. 4. अथ मूत्रद्वारेण निष्क्रान्तम्

मूत्रपुरीष

Swet. 2. 13. मूत्रपुरीषमल्पम्
Garbha. 5. अनियतं मूत्रपुरीषमाहारपरिमाणात्

मूर्छ्

Ait. 1. 3. अद्भ्य एव पुरुषं समुद्धृत्यामूर्च्छयत्
Chhâ. 7. 10. 1. आप एवेमा मूर्त्ताः (bis).
Brih. 2. 3. 1. द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्त्तं चैवामूर्त्तं च Maitri. 6. 3.
2. एतन्मूर्त्तं यदन्यद्वायोश्चान्तरिक्षात्
— तस्यैतस्य मूर्त्तस्य..एष रसो य एष तपति

Brih. 2. 3. 4. इदमेव मूर्त्तं यदन्यत्प्राणात्
— एतस्य मूर्त्तस्य..एष रसो यच्चक्षुः
Maitri. 6. 3. यन्मूर्त्तं तदसत्यम्
Praśna. 1. 5. रयिर्वा एतत्सर्वं यन्मूर्त्तं चामूर्त्तं च
Gauḍa. 2. 23. मूर्त्त इति मूर्त्तविदः
Nâr. 2. मूर्त्तामूर्त्तं च नारायणः

मूर्त्तविद्

Gauḍa. 2. 23. मूर्त्त इति मूर्त्तविदः

मूर्त्ति

Ait. 3. 2. ताभ्यो ऽभितप्ताभ्यो मूर्त्तिर-जायत या वै सा मूर्त्तिर-जायतान्नं वै तत्
Śwet. 1. 13. वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्त्ति-र्न दृश्यते
Maitri. 6. 14. कालो मूर्त्तिरमूर्त्तिमान्
Mahânâr. 15. 6. विश्वमूर्त्तिषु
Praśna. 1. 5. तस्मान्मूर्त्तिरेव रयिः
Vâsu. 2. ब्रह्मादयस्त्रयो मूर्त्तयः
Râmap. 16. रेफारूढा मूर्त्तयः स्युः
Gîtâ. 14. 4. मूर्त्तयः सम्भवन्ति याः

मूर्धन्

Kaush. 2. 11. पुत्रस्य मूर्द्धानमभिजिघ्रेत्
— पुत्र ते नाम्ना मूर्द्धानमभि-जिघ्रामीति त्रिरस्य मूर्द्धा-नमभिजिघ्रेत्
— त्रिरस्य मूर्द्धानमभिहिंकु-र्यात्
4. 3. सर्वेषां भूतानां मूर्द्धा भवति
Chhâ. 1. 8. 6. यस्त्वेतर्हि ब्रूयान्मूर्द्धा ते विपतिष्यतीति मूर्द्धा ते विपतेत् 8.
1. 10. 9. मूर्द्धा ते विपतिष्यति 10, 11; 1. 11. 4, 6, 8; Brih. 3. 7. 1; 3. 9. 26.
1. 11. 5. मूर्द्धा ते व्यपतिष्यत् 7, 9.
Chhâ. 5. 12. 2. मूर्द्धात्वेष आत्मन इति
वाच मूर्द्धा ते व्यप...
यन्मां नागमिष्यः
5. 18. 2. मूर्द्धैव सुतेजाः
8. 6. 6. तासां मूर्द्धानमभिनिः...
का Kaṭha. 6. 16.
Brih. 1. 3. 24. त्यस्य राजा मूर्द्धानं पातयतात्
2. 1. 2. सर्वेषां भूतानां मूर्द्धा (bis).
3. 6. 1. मा ते मूर्द्धा व्यपप्तत्
3. 9. 26. तस्य ह मूर्द्धा विपपात
4. 4. 2. चक्षुषो वा मूर्ध्नो वा
Maitri. 6. 21. तीर्त्वा पारमपारेण ...
युञ्जीत मूर्द्धनि
23. मूर्द्ध्नि स्थाने ततो ...
Muṇḍ. 2. 1. 4. अग्निर्मूर्द्धा
Brahmav. 12. सूर्यं भित्त्वा तु मूर्द्धनि
Śiras. 6. मूर्द्धानमस्य संसीव्य
Brahma. 2. नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्...
3. तुरीयं मूर्द्ध्नि संस्थिता
Prâṇâg. 2. एकऋषिर्भूत्वा मूर्द्धनि ...ति
4. मूर्द्धा द्रोणकलशः
Amṛita. 38. मारुतो याति मूर्द्धनि
Nyâsa. 5. भित्त्वा मूर्द्धानमव्यय...
— अयं मूर्द्धानमस्य देह...
Gîtâ. 8. 12. मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राण...

मूल

Chhâ. 6. 8. 4. तस्य क्व मूलं स्याद...ऽन्नात्
— मूलमन्विच्छ 6.
6. तस्य क्व मूलं स्यादन्य...
6. 11. 1. वृक्षस्य यो मूले ऽभ्याह...
Brih. 3. 9. 28. वृक्षो वृक्णो रोहति ...
— मर्त्यः..कस्मान्मूला...
इति (bis).

na. 1. 5. पञ्चबुद्ध्यादिमूलाम्
16. आत्मविद्यातपोमूलम्
Brahma. 3.
5. क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलम् (bis).
na. 23. नासिकायां तु मूलतः
3. तुलसीमूलमृत्तिकाम्
ti. 2. 37. मनो मूलमिदं स्थितम्
15. 2. अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि

मूलप्रकृति

ot. 3. मूलप्रकृतिसंज्ञिता

मूलाग्नि

it. 3. मूलाग्नावग्निरूपं प्रणवं सन्दध्यात्

मूषक

da. 2. गृहगोधानां मूषकाणाम्

मृ

h. 2. 12. अथैतन्म्रियते यन्न ज्वलति
— अथैतन्म्रियते यन्न दृश्यते (bis).
— अथैतन्म्रियते यन्न विद्योतते
— वायौ मृत्वा न मृच्छन्ते
13. अथैतन्म्रियते यन्न वदति
— अथैतन्म्रियते यन्न पश्यति
— अथैतन्म्रियते यन्न शृणोति
— अथैतन्म्रियते यन्न ध्यायति
— प्राणे मृत्वा न मृच्छन्ते
3. 3. यत्रैतत्पुरुष आर्त्तो मरिष्यन्
10. 8. जायस्व म्रियस्वेति
11. 3. जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते न जीवो म्रियते
5. 21. अनुशुष्य हैवान्ततो म्रियते
2. 11. यत्रायं पुरुषो म्रियते 12.
— आध्मातो मृतः शेते
13. यत्रास्य पुरुषस्य मृतस्याग्निं वागप्येति

Brih. 4. 3. 8. स उत्क्रामन् म्रियमाणः
4. 4. 7. यथा हि निर्ल्वयनी वल्मीके मृता
6. 2. 13. यदा म्रियते ऽथैनमग्नये हरन्ति
Katha. 2. 17. न जायते म्रियते वा विपश्चित् Gîtâ. 2. 20 (कदाचित्)
Gauda. 4. 68. जायते म्रियते ऽपि च 69, 70.
Nrip. 1. 3. स मृतो ऽधो गच्छति
— आचार्यस्तेनैव मृतो ऽधो गच्छति
7. यत्रकुत्रापि म्रियेत
2. 4. मृत्युमपमृत्युं च मारयति
Garbha. 4. जातश्चाहं मृतश्चैव
— मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृतः
Prâṇâg. 4. वाराणस्यां मृतो वापि
Amṛita. 38. यत्र यत्र म्रियेद्वापि
Nyâsa. 1. अथाहिताग्निर्म्रियेत
Piṇḍa. 1. मृतस्य दीयते पिण्डम्
Gopî. 4. मृतो मोक्षमश्नुते
5. म्रियते यत्रकुत्रचित्
Râmot. 4. गंगायां वा तटे पुनर्म्रियते
— यत्रकुत्रापि वा मृताः
Mukti. 1. 19. मृतो मत्सारमाप्नुयात्
Gîtâ. 2. 26. नित्यं वा मन्यसे मृतम्
27. ध्रुवं जन्म मृतस्य च

मृग

Mahânâr. 9. 1. महिषो मृगाणाम् 17. 8.
Maitri. 6. 18. नाश्नयन्ति मृगद्विजाः
Nrip. 2. 4. मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम्
— मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः
Gîtâ. 10. 30. मृगाणां च मृगेन्द्रः

मृगेन्द्र

Gîtâ. 10. 30. मृगाणां च मृगेन्द्रः

मृच्छ्

Kaush. 2. 12. वायौ मृत्वा न मृच्छन्ते
13. प्राणे मृत्वा न मृच्छन्ते

मृज्

Kshur. 12. पादस्योपरि मर्मृज्य (Pâ. 7. 4. 65).

मृड्

Nrip. 2. 4. मृडा जरित्रे सिंह स्तवानः
Nîla. 7. तया नो मृड जीवसे

मृतसूतक

Maitri. 6. 9. मृतसूतकाद्या

मृत्तिका

Chhâ. 6. 1. 4. मृत्तिकेत्येवं सत्यम्
Mahânâr. 4. 6. मृत्तिके हर मे पापम्
7. मृत्तिके देहि मे पुष्टिम्
Vâsu. 3. तुलसीमूलमृत्तिकाम्
Gopî. 1. गोपीचन्दनमृत्तिकाया निरुक्त्या

मृत्पात्र

Aruṇeya. 5. मृत्पात्रं वा अलाबुपात्रं दारुपात्रं वा

मृत्पिण्ड

Chhâ. 6. 1. 4. एकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातम्

मृत्यव

Maitri. 2. 6. अनेन खल्वीरितः परिभ्रमतीदं शरीरं चक्रमिव मृत्यवेन
3. 3. एतानि गुणानि पुरुषेणेरितानि चक्रमिव मृत्यवेन

1. मृत्यु

Ait. 1. 4. नाभ्या अपानो ऽपानान्मृत्युः
Ait. 2. 4. मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्रविशत्
Kaush. 4. 2. शब्दे मृत्युः
14. मृत्युरिति वा अहमेतमुपा
Bṛih. 2. 1. 12.
Chhâ. 1. 4. 1. देवा वै मृत्योर्बिभ्यतः
3. तानु तत्र मृत्युः . . पर्यपश्य
2. 22. 3. सर्वे स्पर्शा मृत्योरात्मान
4. मृत्युं शरणं प्रपन्नो ऽभूव
5. मृत्योरात्मानं परिहराणी
7. 26. 2. न पश्यो मृत्युं पश्यति
8. 4. 1. न जरा न मृत्युर्न शोकः
8. 12. 1. शरीरमात्तं मृत्युना
Bṛih. 1. 2. 1. मृत्युनैवेदमावृतमासीदश नायया
— अशनाया हि मृत्युः
7. एकैव देवता भवति मृत्यु
— नैनं मृत्युराप्नोति मृत्यु स्यात्मा भवति
1. 3. 9. दूरं ह्यस्या मृत्युर्दूरं ह अस्मान्मृत्युर्भवति
10. पाप्मानं मृत्युमपहत्य 1
— नेत्पाप्मानं मृत्युमन्ववा नि
11. एना मृत्युमत्यवहत्
12. यदा मृत्युमत्यमुच्यत 13—16.
— परेण मृत्युमतिक्रान्तः 13—16.
16. एनमेषा देवता मृत्युम वहति
28. मृत्योर्माऽमृतं गमय (
— मृत्युर्वा असत्
— मृत्युर्वै तमः
1. 4. 11. पर्जन्यो यमो मृत्युरी
1. 5. 21. मृत्युः श्रमो भूत्वोपयें
— तान्याप्त्वा मृत्युरवा
23. नेन्मा पाप्मा मृत्युराप

b. 2. 1. 12. नैनं पुरा कालान्मृत्युराग- च्छति
3. 1. 3. सर्वं मृत्युनाप्तं सर्वं मृत्यु- नाभिपन्नं केन यजमानो मृत्योराप्तिमतिमुच्यते
3. 2. 10. इदं सर्वं मृत्योरन्नं कास्वि- त्सा देवता यस्या मृत्युर- न्नम्
— अग्निर्वै मृत्युः
3. 5. 1. मृत्युं जरामत्येति
3. 9. 14. तस्य का देवतेति मृत्युरिति
28. मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृक्णः (bis).
4. 3. 7. अतिक्रामति मृत्यो रूपाणि
4. 4. 19. मृत्योः स मृत्युमाप्नोति Katha. 4. 10; Atmapra. 1.
11. अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा Maitri. 7. 9.
14. विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा
b. 2. 8. 1. मृत्युर्धावति पञ्चमः Katha. 6. 3; Nrip. 2. 4.
ha. 1. 4. मृत्यवे त्वां ददामीति
10. वीतमन्युर्गौतमो माभि मृ- त्यो
13. त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो
15. मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः
22. त्वं च मृत्यो यन्न सुविज्ञे- यमात्थ
29. यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो
2. 25. मृत्युर्यस्योपसेचनम्
4. 2. ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पा- शम्
11. मृत्योः स मृत्युं गच्छति
b. 2. 12. न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः
3. 8. तमेव विदित्वातिमृत्युमेति 6. 15.
ri. 1. 3. *vide* आद्य
95

Maitri. 4. 2. दुर्निवार्यमस्य मृत्योरागम- नम्
7. 11. न पश्यन् मृत्युं पश्यति
Mahânâr. 5. 9. एष मृत्यो हिरण्मयः
12. 3. मन्युर्मनुर्मृत्युः
24. 1. भूयो न मृत्युमुपयाहि
Praśna. 6. 6. यथा मा वो मृत्युः परि- व्यथाः
Kaivalya. 9. ज्ञात्वा तं मृत्युमत्येति
Nṛip. 2. 1. देवा ह वै मृत्योः . . अबि- भयुः
— तेन वै सर्वे मृत्युमजयन्
— तस्माद्यो मृत्योः . . बिभी- यात्
— स मृत्युं जयति
4. मृत्युमपमृत्युं च मारयति
3. 1. स मृत्युं तरति 5. 4; Râmot. 2.
4. 3. यो वै नृसिंहः . . यश्च मृ- त्युस्तस्मै वै नमो नमः (24)
5. 10. यत्र न मृत्युः प्रविशति यत्र न दुःखम्
Nṛisut. 8. मृत्योर्मृत्युमाप्नोति
Śiras. 2. यो वै रुद्रः . . यश्च मृत्युः
Haṁsa. 1. तं विदित्वा न मृत्युमेति
Gopî. 1. मृत्योर्भयाच्च संरक्षणी
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः . . यश्च मृ- त्युः (15).
Gîtâ. 2. 27. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः
9. 3. मृत्युसंसारवर्त्मनि
19. अमृतं चैव मृत्युश्च
10. 34. मृत्युः सर्वहरश्चाहम्
12. 7. मृत्युसंसारसागरात्
13. 8. जन्ममृत्युजराव्याधिदुःख- दोषानुदर्शनम्
25. ते ऽपि चातितरन्त्येव मृ- त्युम्
14. 20. जन्ममृत्युजरादुःखैः

2. मृत्यु

Bṛih. 2. 6. 3. अथर्वा दैवो मृत्योः प्राध्वंसनात् 4. 6. 3.
— मृत्युः प्राध्वंसनः प्रध्वंसनात् 4. 6. 3.

मृत्युतारक

Nṛip. 5. 2. एतद्ब्रह्मोग्रं मृत्युतारकम्

मृत्युपाश

Kaṭha. 1. 18. मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य
Śwet. 4. 15. तमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति
Śiras. 5. पशवो ऽनुनामयन्तं मृत्युपाशान्

मृत्युप्रोक्त

Kaṭha. 3. 16. मृत्युप्रोक्तं सनातनम्
6. 18. मृत्युप्रोक्तां . . विद्याम्

मृत्युमत्

Praśna. 5. 6. तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ता अन्योन्यसक्ताः

मृत्युमुख

Kaṭha. 1. 11. त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात् प्रमुक्तम्
3. 15. निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते

मृत्युमृत्यु

Nṛip. 1. 4. मृत्युं चतुर्थस्याद्यं साम जानीयात्
5. मृत्युं चतुर्थस्यार्द्धान्त्यं साम जानीयात्
2. 3. मृत्युमृत्युं नवमं (स्थानं जानीयात्)
4. कस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति
— यस्य छायामृतं यो मृत्युमृत्युः

Nṛip. 2. 4. तस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमि
Nṛisut. 4. एष एव मृत्युमृत्युः
5. एष एव मृत्युमृत्युरेष ह्यात्मतमः
— एष एव मृत्युमृत्युरेषो ह वोत्कृष्टः
— एतदेव मृत्युमृत्युरेतदि हाविभूति
6. मृत्युमृत्युममृत्युमृत्युं . . बुधिरे

मृत्युमृत्युत्व

Nṛisut. 7. भद्रत्वान्मृत्युमृत्युत्वात्

मृत्युरूपिणी (=श)

Râmap. 77. सस्रक्ष्मा मृत्युरूपिणी

1. मृद्

Vâsu. 2. विष्णोर्नुकमिति मर्द्दयेत्

2. मृद्, मृदा

Śwet. 2. 14. यथैव बिंबं मृदयोपलिप्त
Maitri. 6. 27. मृद्वत्संस्थमयस्पिण्डम्
Gauḍa. 3. 15. मृल्लोहविस्फुलिङ्गाद्यैः
Sarvop. 4. मृद्विकारेषु मृदिव
Gopî. 4. पीतवर्णा मृदो जायन्ते

मृदङ्गनाद

Haṁsa. 2. अष्टमो मृदङ्गनादः

मृदितकषाय

Chhâ. 7. 26. 2. तस्मै मृदितकषायाय तमसः पारं दर्शयति

मृदु

Chhâ. 2. 22. 1. मृदु श्लक्ष्णं वायोः
Râmap. 86. मृदुश्लक्ष्णसतूलिकायाम्

मृदुप्रभ

Maitri. 6. 30. ये नैकरूपास्त्वधस्तादश्म यो अस्य मृदुप्रभाः

मृदुलोहित

aitri. 6. 30. कपिला मृदुलोहिताः

मृद्विकार

rvop. 4. मृद्विकारेषु मृद्विव

मृध्

ahânâr. 20. 2. अप मृधो नुदस्व

मृन्मय

hâ. 6. 1. 4. सर्वं मृन्मयं विज्ञातम्
thaśru. 3. मृन्मयान्यप्सु जुहुयात्

मृषा

ush. 4. 19. मृषा वै खलु मा संवादयिष्ठा ब्रह्म ते ब्रवाणीति
uḍa. 4. 33. सर्वे धर्मा मृषा स्वप्ने

मेखला

uṇeya. 5. अजिनं मेखलां यज्ञोपवीतं च त्यक्त्वा

मेघ

hâ. 2. 3. 1. मेघो जायते स प्रस्तावः 2. 15. 1.
2. 4. 1. मेघो यत् संप्लवते स हिंकारः
3. 19. 2. यदुल्वं स मेघो नीहारः
5. 10. 6. अभ्रं भूत्वा मेघो भवति मेघो भूत्वा प्रवर्षति

मेघघोष

ish. 18. मेघघोषस्तु स स्मृतः

मेघनाद

ṁsa. 2. दशमो मेघनादः

मेदस्, मेद

aitri. 3. 4. *vide* वसा
rbha. 2. मांसान्मेदो मेदसः स्नावा
5. मेदमस्थी द्वौ
map. 74. मेदश्च कामिका

मेदिनी

Mahânâr. 13. 7. सर्वभूतानां माता मेदिनी

मेदोवृद्धि

Kathaśru. 1. यथा मेदोवृद्धिर्न जायते

मेधा

Ait. 5. 2. मेधा दृष्टिर्धृतिर्मतिः
Bṛih. 1. 5. 1 मेधया तपसाजनयत्पिता 2
Tait. 1. 4. 1. स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु
— ब्रह्मणः कोशो ऽसि मेधयापिहितः
Kaṭha. 2. 23. न मेधया न बहुना श्रुतेन Muṇḍ. 3. 2. 3.
Mahânâr. 2. 7. सनिं मेधामयासिषम्
16. 4. मेधा देवी जुषमाणा
— सा नो जुषस्व द्रविणेन मेधे
5. मेधां म इन्द्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती मेधां मे अश्विनावुभावाधत्ताम्
6. अप्सरासु च या मेधा.. दैवी मेधा मनुष्यजा सा मां मेधा सुरभिर्जुषताम्
7. आ मां मेधा..जगम्या
— सा मां मेधा सुप्रतीका जुषताम्
19. 1. श्रद्धा प्रजा च मेधा च (bis)
23. 1. श्रद्धया मेधा मेधया मनीषा
Râmap. 75. मेधामरविभूषिता
76. मेधया युक्ता दीर्घा
Gîtâ. 10. 34. स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा

मेधाविन्

Chhâ 6. 14. 2. पण्डितो मेधावी
Bṛih. 4. 3. 33. मेधावी राजा
Kaṭha. 3. 16. उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी
Brahmab. 18. ग्रन्थमभ्यस्य मेधावी
Amṛita. 1. शास्त्राण्यधीत्य मेधावी

Mukti. 1. 52. मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्
Gîtâ. 18. 10. मेधावी छिन्नसंशयः

मेध्य

Brih. 1. 1. 1. अश्वस्य मेध्यस्य (bis).
1. 2. 7. मेध्यं म इदं स्यात्
— तन्मेध्यमभूत्

मेरु

Gîtâ. 10. 23. मेरुः शिखरिणामहम्

मेष

Brih. 1. 4. 4. अविरितरा मेष इतरः

मैत्र

Mukti. 2. 34. मैत्रादिभिर्गुणैर्युक्तम्
Gîtâ. 12. 13. मैत्रः करुण एव च

मैत्रायणी

Mukti. 1. 32. मैत्रायणी कौषीतकी
1. *vide* जाबालि

मैत्रावरुण

Brih. 6. 4. 28. इलासि मैत्रावरुणी
Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..को मैत्रावरुणः
4. समानो मैत्रावरुणः

मैत्रि

Maitri. 2. 2. इत्याह भगवान्मैत्रिः
3. भगवता मैत्रिणाख्याता

मैत्री

Mukti. 2. 69. मैत्र्यादिवासनानाम्नीः

मैत्रेय

Chhâ. 1. 12. 1. बको दाल्भ्यो ग्लावो वा मैत्रेयः 3.

मैत्रेयी

Brih. 2. 4. 1. मैत्रेयीति होवाच याज्ञवल्क्यः 4. 5. 2.
Brih. 2. 4. 2. सा होवाच मैत्रेयी 3, 1[illegible]
4. 5. 3, 4, 14.
5. मैत्रेय्यात्मनो वा अरे द[illegible]
नेन
4. 5. 1. मैत्रेयी च कात्यायनी च
— मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभू[illegible]
6. मैत्रेय्यात्मनि खल्वरे दृ[illegible]
15. उक्तानुशासनासि मैत्रेयि
Mukti. 1. 32. कालाग्निरुद्रमैत्रेयी
1. *vide* जाबालि

मैथिली

Râmap. 43. आदाय मैथिलीमद्य

मैथुन

Chhâ. 3. 17. 3. यन्मैथुनं चरति
Katha. 4. 3. मैथुनानेतेनैव विजानाति
Maitri. 3. 4. शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूत[illegible]

मोक्ष्

Gâruda. 3. तृणेन मोक्षयति काष्ठेन मोक्षयति
— चक्षुषा मोक्षयति
— भस्मना मोक्षयति
— मनसा मोक्षयति
Asrama. 4. आत्मानं मोक्षयन्ते
Râmot. 4. मोक्षयिष्यामि मा शुचः
Gîtâ. 18. 66.
Gîtâ. 4. 16. यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् 9. 1.
9. 28. मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः

मोक्ष

Swet. 6. 16. संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः
Maitri. 6. 30. अध्यवसायस्य दोषक्ष[illegible]
द्धि मोक्षः
34. एतज्ज्ञानं च मोक्षं च
— मन एव..कारणं बन्ध[illegible]
मोक्षयोः Brahmab. 2.

aitri. 6. 30. मोक्षे निर्विषयं स्मृतम्
(so MS.)
uda. 4. 30. अनन्तता चादिमतो मोक्षस्य न भविष्यति
arbha. 3. क्षराक्षरं मोक्षं चिन्तयति
ânâg. 4. मोक्षं च प्राप्नुयात्
arvop. 1. कथं बन्धः कथं मोक्षः
— तन्निवृत्तिर्मोक्षः
opi. 4. मृतो मोक्षमश्नुते
5. स वै मोक्षं समश्नुते
âmap. 92. मोक्षमाप्नोति सर्वः
94. अमला यान्ति मोक्षम्
Iukti. 2. 68. मोक्षः स्याद्वासनाक्षयः
itâ. 7. 29. जन्ममरणमोक्षाय
13. 34. भूतप्रकृतिमोक्षम्
18. 30. बन्धं मोक्षं च या वेत्ति

मोक्षकर

âmap. 82. सेवकानां मोक्षकरम्

मोक्षकांक्षिन्

itâ. 17. 25. क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः

मोक्षद

opi. 5. कामदं मोक्षदं चैव

मोक्षद्वार

Trip. 1. 5. *vide* मुख्यद्वार
5. 1. सार्वकामिकं मोक्षद्वारम् 2.

मोक्षद्वारबिल

mrita. 26. मोक्षद्वारबिलं चैव सुषिरं मण्डलं विदुः

मोक्षपरायण

itâ. 5. 28. मुनिर्मोक्षपरायणः

मोक्षमन्त्र

Jâbâla. 4. मोक्षमन्त्रमथ्येवं विदेत्

मोक्षलक्षण

Maitri. 6. 20. मोक्षलक्षणमित्येतत्परं रहस्यम्
30. निरध्यवसायः . . तिष्ठेदेतन्मोक्षलक्षणम्

मोक्षशास्त्र

Garbha. 5. पैप्पलादं मोक्षशास्त्रम्

मोक्षार्थित्व

Mukti. 2. 68. मोक्षार्थित्वमपि त्यज

मोक्षिन्

Jâbâla. 1. अमृतीभूत्वा मोक्षी भवति
Râmot. 1.

मोघकर्मन्

Gîtâ. 9. 12. मोघाशा मोघकर्माणः

मोघज्ञान

Gîtâ. 9. 12. मोघज्ञाना विचेतसः

मोघम्

Gîtâ. 3. 16. मोघं पार्थ स जीवति

मोघाशा

Gitâ. 9. 12. मोघाशा मोघकर्माणः

मोद

Tait. 2. 5. 1. मोदो दक्षिणः पक्षः

मोदिन्

Maitri. 6. 33. तत्रानन्दी मोदी भवति

मोह

Brih. 2. 4. 13. न वा अरे ऽहं मोहं ब्रवीमि
4. 5. 14.
3. 5. 1. मोहं जरां मृत्युमत्येति
Iśâ. 7. को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः
Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
6. 10. सुखदुःखमोहसंज्ञं . . इदं जगत्

Prasna. 2. 3. मा मोहमापद्यथ
Nrisut. 2. निरस्ताखिलाविद्यातमोमोहः
Tejo. 12. लोभं मोहं भयं दर्पम्
Parama. 2. *vide* आदि
Aruneya. 3. *vide* आदि
Atmapra. 1. शोकमोहविनिर्मुक्तम्
Râmot. 3. निरस्ताविद्यातमोमोहः
Gîtâ. 4. 35. यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि
11. 1. मोहो ऽयं विगतो मम
14. 13. प्रमादो मोह एव च
17. प्रमादमोहौ तमसो भवतः
22. मोहमेव च पाण्डव
16. 10. मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्
18. 7. मोहात्तस्य परित्यागः
25. मोहादारभ्यते कर्म
60. कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्
73. नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा

मोहकलिल

Gîtâ. 2. 52. यदा ते मोहकलिलम्

मोहजाल

Maitri. 7. 8. मोहजालस्यैष वै योनिः
Gîtâ. 16. 16. मोहजालसमावृताः

मोहन

Gîtâ. 14. 8. मोहनं सर्वदेहिनाम्
18. 39. सुखं मोहनमात्मनः

मोहमदिरोन्मत्त

Maitri. 4. 2. मदिरोन्मत्त इव मोहमदिरोन्मत्तम्

मोहात्मक

Nrisut. 9. तदेतज्जडं मोहात्मकम्

मोहान्त

Brih. 4. 5. 13. अत्रैव मा भगवान्मोहान्तमापीपिपत्

मोहिन्

Gîtâ. 9. 12. प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः

मौद्गल्य

Brih. 6. 4. 4. नाको मौद्गल्यः Tait. 1. 9. 1.

मौन

Chhâ. 8. 5. 2. यन्मौनमित्याचक्षते
Brih. 3. 5. 1. अमौनं च मौनं च निर्विद्य
Mukti. 2. 21. सन्त्यक्तवासनान्मौनादृते
Gîtâ. 10. 38. मौनं चैवास्मि गुह्यानाम्
17. 16. मौनमात्मविनिग्रहः

मौनिन्

Gîtâ. 12. 19. तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी

मौनी

Nâda. 11. एकादशी भवेन्मौनी

म्लुच्

Brih. 1. 5. 22. म्लोचन्ति ह्यन्या देवता न वायुः

यकृत्

Brih. 1. 1. 1. यकृच्च क्लोमानश्च पर्वताः

यक्ष

Kena. 15. तन्न व्यजानन्त किमिदं यक्षमिति
16. विजानीहि किमेतद्यक्षमिति 20, 24.
19. नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षम् 23.
25. तां होवाच किमेतद्यक्षमिति
Brih. 5. 4. 1. महद्यक्षं प्रथमजं वेद
Maitri. 1. 4. *vide* आदि
7. 6. ditto.
8. ditto.

Nrip. 1. 2. यक्षगन्धर्वाप्सरोगणैः
5. 7. स यक्षानाकर्षयति
Vâda. 13. भवेद्यक्षो महात्मवान्
Gitâ. 10. 23. वित्तेशो यक्षरक्षसाम्
11. 22. गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः
17. 4. यक्षरक्षांसि राजसाः

यच्चित्त

Maitri. 6. 34. यच्चित्तस्तन्मयो भवति
Praśna. 3. 10. यच्चित्तस्तेनैष प्राणमायाति

यच्छब्द

Dhyâna. 5. अनाहतं च यच्छब्दम्

यच्छ्रद्ध

Gitâ. 17. 3. यो यच्छ्रद्धः स एव सः

यज्

Kaush. 1. 1. चित्रो ह वै गार्ग्यायणिर्य-
क्ष्यमाणः
— श्वेतकेतुं प्रजिघाय याजयेति
Chhâ. 1. 10. 6. राजासौ यक्ष्यते
1. 11. 1. अथ हैनं यजमान उवाच
3. तथेति ह यजमान उवाच
2. 22. 2. स्वर्गं लोकं यजमानाय
2. 24. 2. क्व तर्हि यजमानस्य लोकः
5. लोकं मे यजमानाय विन्दै-
ष वै यजमानस्य लोकः
9, 14.
6. एतास्म्यत्र यजमानः पर-
स्तादायुषः 10, 15.
4. 16. 3. यज्ञं रिष्यन्तं यजमानोऽनु-
रिष्यति स इष्ट्वा पापी-
यान् भवति
5. यज्ञं प्रतितिष्ठन्तं यजमानो
ऽनुप्रतितिष्ठति स इष्ट्वा श्रे-
यान् भवति
4. 17. 10. यज्ञं यजमानं.. अभिरक्षति
5. 11. 5. यक्ष्यमाणो वै भगवन्तो
ऽहमस्मि

Chhâ. 8. 5. 1. यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्मच-
र्यमेव तत्.. इष्ट्वात्मानम-
नुविन्दते
Brih. 1. 2. 6. भूयसा यज्ञेन भूयो यजेय
1. 3. 28. आत्मने वा यजमानाय आ
1. 4. 6. अमुं यजामुं यजेति
16. यज्जुहोति यद्यजते तेन दे-
वानां लोकः
3. 1. 1. बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे
3. केन यजमानः.. आप्तिम-
तिमुच्यते 4, 5.
6. केनाक्रमेण यजमानः स्वर्गं
लोकमाक्रमते
3. 8. 9. यजमानं देवाः.. अन्वा-
यत्ताः
10. अस्मिँल्लोके जुहोति यजते
4. 1. 2. इष्टं हुतमाशितं पायितम्
4. 5. 11.
3. अयाज्यं याजयति
6. 3. 1. तां त्वा घृतस्य धारया यजे
6. 4. 2. वाजपेयेन यजमानस्य
Katha. 3. 2. यः सेतुरीजानानाम्
Maitri. 1. 1. यजमानश्चित्वैतानग्नीन्
6. 9. आत्मन्नेव यजति
33. करैर्यजमानमन्तरिक्षमु-
त्क्षिप्त्वा
— करैर्यजमानं दिवमुत्क्षिप्त्वा
— करैर्यजमानस्यात्मविदे
ऽवदानं करोति
34. तस्मादग्निर्यष्टव्यः (bis).
— यजमानो हविर्गृहीत्वा
— सो ऽस्मिन्नग्नी यजामहे
35. लोकमस्मै यजमानाय धे-
हि (ter).
— सर्वमस्मै यजमानाय धेहि
— तस्मिन्नेव यजमानाः सैन्धव
इव व्लीयन्ते
36. मन्त्र.. स्थालीपाकादिभि-
र्यष्टव्यमन्तर्वेद्याम्

Muṇḍ 1. 2. 6. सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति

2. 1. 6. संवत्सरश्च यजमानश्च

Mahânâr. 25. 1. आत्मा यजमानः Garbha. 5; Prâṇâg. 4.

Praśna. 4. 4. मनो ह वाव यजमानः

— स एनं यजमानमहरहर्ब्रह्म गमयति

Nṛip. 5. 8. सोऽग्निष्टोमेन यजते

— स उक्थ्येन यजते

— स षोडशिना यजते

— स वाजपेयेन यजते

— सो ऽतिरात्रेण यजते

— सो ऽप्तोर्यामेण यजते

— स सर्वैः क्रतुभिर्यजते

Chûl. 7. इज्यमानां सुयज्वभिः

Śiras. 7. तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति Mahâ. 4.

Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य . . को यजमानः

Nyâsa. 2. ब्राह्मीमिष्टिं यजेत्

Kaṭhaśru. 1. यजमानस्याङ्गानृत्विजः समारोप्य

3. इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः

Kâlâg. 1. त्र्यंबकं यजामहे

Atmapra. 1. यमिष्ट्वा मुच्यते योगी

Aśrama. 2. शतसंवत्सराभिः क्रियाभिर्यजन्तः (4 times).

— शालीनवृत्तयो यजन्तो न याजयन्तः

— यायावरा यजन्तो याजयन्तः

Gîtâ. 4. 12. यजन्त इह देवताः

9. 15. यजन्तो मामुपासते

20. यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते

23. यजन्ते श्रद्धयान्विताः 17.1.

— यजन्त्यविधिपूर्वकम्

Gîtâ. 16. 15. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये

17. यजन्ते नामयज्ञैस्ते

17. 4. यजन्ते सात्त्विका देवान्

— यजन्ते तामसा जनाः

11. यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते

— यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय

12. इज्यते भरतश्रेष्ठ

18. 70. ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्याम्

यजत्र

Nṛip. 1. 1. भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः 2. 4; Nṛisut. 1.

यजुर्गायत्री

Nṛip. 4. 2. एषा ह वै महालक्ष्मीर्यजुर्गायत्री

यजुर्मय

Kaush. 2. 6. तस्मिन् यजुर्मयं प्रवयति यजुर्मय ऋङ्मयम्

Nṛip. 5. 2. ऋङ्मयं यजुर्मयं साममयम्

यजुर्लक्ष्मी

Nṛip. 1. 3. सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति

4. 1. प्रणवं सावित्रीं यजुर्लक्ष्मीं . . अङ्गानि जानीयात्

यजुर्वेद

Chhâ. 1. 3. 7. यजुर्वेदो गीः

3. 2. 1. यजुर्वेद एव पुष्पम्

2. एतानि यजूंष्येतं यजुर्वेदमभ्यतपन्

3. 15. 7. यजुर्वेदं प्रपद्ये

7. 1. 2. अध्येमि यजुर्वेदम्

4. नाम वै . . यजुर्वेदः

7. 2. 1. वाग्वै . . विज्ञापयति यजुर्वेदम्

ā. 7. 7. 1. विज्ञानेन..विजानाति यजुर्वेदम्
. 1. 5. 5. मनो यजुर्वेदः
2. 4. 10. ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदः 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32; Mund. 1. 1. 5.
. 2. 1. स यजुर्भिर्यजुर्वेदः Nrisut. 3; Sikhâ. 1.
ımav. 6. यजुर्वेदो ऽन्तरिक्षं च
â. 3. त्रैष्टुभं छन्दो यजुर्वेदः
g. 2. द्वितीया रेखा सा..यजुर्वेदः

यजुर्वेदवाच्य

. 1. 6. यो यजुर्वेदवाच्यस्तं साम जानीयात्

यजुस्

ıh. 1. 5. यजूंषि तिरश्चीनानि
2. 6. तद्यजुरित्युपासीत
ā.1. 4. 3. तानु तत्र मृत्युः..पर्यपश्यदृचि साम्नि यजुषि। ते नु विदित्वोर्ध्वा ऋचः साम्नो यजुषः
4. एवं सामैवं यजुः
1. 7. 5. अक्षिणि पुरुषो दृश्यते.. तद्यजुः
3. 2. 1. यजूंष्येव मधुकृतः
2. एतानि यजूंष्येतं यजुर्वेदमभ्यतपन्
4. 17. 2. वायोर्यजूंषि
3. भुव इति यजुर्भ्यः
5. यदि यजुष्टो रिष्येत्.. यजुषामेव तद्रसेन यजुषां वीर्येण यजुषां यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति
6. 7. 2. ऋचः सोम्य यजूंषि सामानीति
1. 2. 5. ऋचो यजूंषि सामानि 5. 14. 2; Praśna. 2. 6.

Brih. 5. 13. 2. प्राणो वै यजुः..यजुषः सायुज्यं सलोकतां जयति य एवं वेद
6. 5. 3. आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि
Tait. 1. 5. 2. सुवरिति यजूंषि
2. 3. 1. तस्य यजुरेव शिरः
Maitri. 6. 5. ऋग्यजुः सामेति विज्ञानवत्येषा
33. ऋग्यजुःसामाथर्वाङ्गिरसः Mahâ. 2; Siras. 4 (सं)
35. एतद्यदादित्यस्य मध्ये यजुर्दीप्यति
Mund. 2. 1. 6. तस्मादृचः साम यजूंषि
Mahânâr. 12. 2. तानि यजूंषि स यजुषां मण्डलं स यजुषां लोकः
14. 1. यजूंष्यापः
22. 1. अन्वाहार्यपचनो यजुरन्तरिक्षं वामदेव्यम्
Praśna. 5. 4. अन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते
7. यजुर्भिरन्तरिक्षं (अन्वेति)
Nrip. 1. 2. ऋग्यजुःसामाथर्वाणः
3. चतुर्विंशत्यक्षरा महालक्ष्मीर्यजुः
— सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि जानीयात् स्त्रीशूद्रः
2. 1. स यजुर्भिर्यजुर्वेदः Nrisut. 3; Sikhâ. 1.
4. 2. अथ सावित्री गायत्री या यजुषा प्रोक्ता
— एतस्य..न यजुषा..अर्थो ऽस्ति यः सावित्रीं वेद
5. 9. स यजूंष्यधीते
Śiras. 1. ऋगहं यजुरहम्
Mukti. 1. 12. नवाधिकशतं शाखा यजुषः
Gîtâ. 9. 17. ऋक् साम यजुरेव च

यजूदर

Kaush. 1. 7. यजूदरः सामशिरा असौ

यज्ञ

Chhâ. 1. 10. 7. तान् खादित्वामुं यज्ञं वितनमेयाय

2. 23. 1. त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञो ऽध्ययनं दानमिति प्रथमः

2. 24. 16. एष ह वै यज्ञस्य मात्रां वेद य एवं वेद

3. 16. 1. पुरुषो वाव यज्ञः

2. माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय (similarly in 4, 6.)

4. 16. 1. एष ह वै यज्ञो यो ऽयं पवते — यदेष यन्निदं सर्वं पुनाति तस्मादेष एव यज्ञः

3. एवमस्य यज्ञो रिष्यति यज्ञं रिष्यन्तं यजमानो ऽनुरिष्यति

5. एवमस्य यज्ञः प्रतितिष्ठति यज्ञं प्रतितिष्ठन्तं यजमानो ऽनुप्रतितिष्ठति

4. 17. 4. यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति 5, 6, 8.

8. भेषजकृतो ह वा एष यज्ञः

9. एष ह वा उदक्प्रवणो यज्ञः

10. एवंविद्ध वै ब्रह्मा यज्ञं..अभिरक्षति

8. 5. 1. यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव

Brih. 1. 2. 5. यज्ञान् प्रजाः पशून्

6. भूयसा यज्ञेन भूयो यजेय

1. 3. 1. असुरान्यज्ञ उद्गीथेनात्ययाम

25. यज्ञे स्वरवन्तं दिदृक्षन्ते

1. 4. 17. स एष पांक्तो यज्ञः

Brih. 1. 5. 17. त्वं ब्रह्म त्वं यज्ञस्त्वं ल

— अहं ब्रह्माहं यज्ञोऽहं ल

— ये वै के च यज्ञास्तेषां

षां यज्ञ इत्येकता

3. 1. 1. बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे

3. वाग्वै यज्ञस्य होता

4. चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः

5. प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता

6. मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा

7. कतिभिः..ऋग्भिः..स्मिन्यज्ञे करिष्यति

8. कति..अस्मिन्यज्ञे तीर्होष्यति

9. ब्रह्मा यज्ञं..गोपायति

10. कति..अस्मिन्यज्ञे स्याः स्तोष्यति

3. 7. 1. यज्ञमधीयानाः

3. 9. 6. यज्ञः प्रजापतिरिति

— कतमो यज्ञ इति पशव

21. यमः कस्मिन्प्रतिष्ठित यज्ञ इति कस्मिन्नु प्रतिष्ठितः

4. 4. 22. यज्ञेन दानेन तपसा 16.

Tait. 2. 5. 1. विज्ञानं यज्ञं तनुते

Swet. 4. 9. छन्दांसि यज्ञाः क्रतवो तानि

Maitri. 1. 1. अविकलः संपद्यते यज्ञः

6. 16. यज्ञो विष्णुः प्रजापतिः

34. आविष्कृतमेतेनास्य

Mund. 2. 1. 6. दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे

Mahânâr. 7. 4. यज्ञं पाहि विभावसो

8. 1. दानं तपो यज्ञस्तपः

9. 13. अस्मिन्यज्ञे धारयामोभिः

15. 6. त्वं यज्ञस्त्वं विष्णुः

ânâr. 20. 12. शरीरं यज्ञः शमलं कुसीदम्
21. 2. यज्ञ इति यज्ञो हि देवानां यज्ञेन हि देवा दिवं गतास्तस्माद्यज्ञे रमन्ते
22. 1. यज्ञानां वरूथं दक्षिणा
— यज्ञक्रतूनां प्रायणम्
23. 1. यज्ञ इति यज्ञो हि देवानां यज्ञेन हि देवा दिवं गता यज्ञेनासुरानपानुदन्त यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद्यज्ञं परमं वदन्ति
25. 1. तस्यैवंविदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः
śna. 2. 6. यज्ञः क्षत्रं ब्रह्म च
ḍa. 2. 22. यज्ञा इति च तद्विदः
bma. 2. तत्र..यज्ञा न यज्ञाः
3. स यज्ञः स च यज्ञवित्
ṇâg. 1. त्वं यज्ञस्त्वं ब्रह्मा त्वं रुद्रः
2. स्वे शरीरे यज्ञं परिवर्त्तयामि
sa. 1. यज्ञयज्ञं गच्छ
hasru. 1. त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं सर्वम्
2. त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारः
— अहं ब्रह्माहं यज्ञः
3. इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः
i. 4. सर्वैर्यज्ञैर्याजी भवति
3. 14. यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः
15. नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्
4. 23. यज्ञायाचरतः कर्म
25. दैवमेवापरे यज्ञम्
— ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति

Gîtâ. 4. 32. एवं बहुविधा यज्ञाः
33. श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञात्
5. 29. भोक्तारं यज्ञतपसाम्
8. 28. वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव
9. 16. अहं क्रतुरहं यज्ञः
20. यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते
10. 25. यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि
11. 48. न वेदयज्ञाध्ययनैः
16. 1. दानं दमश्च यज्ञश्च
17. 7. यज्ञस्तपस्तथा दानम्
11. यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते
12. तं यज्ञं विद्धि तामसम्
13. श्रद्धाविरहितं यज्ञम्
23. यज्ञाश्च विहिताः पुरा
24. यज्ञदानतपःक्रियाः
25. यज्ञतपःक्रियाः
27. यज्ञे तपसि दाने च
18. 3. यज्ञदानतपःकर्म 5.
5. यज्ञो दानं तपश्चैव

यज्ञक्षयितकल्मष

Gîtâ. 4. 30. यज्ञक्षयितकल्मषाः

यज्ञपरिवृताहुति

Prâṇâg. 2. अथ यज्ञपरिवृताहुतीर्होमयति

यज्ञपात्र

Garbha. 5. बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि Prâṇâg. 4.
Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..कानि यज्ञपात्राणि

यज्ञभावित

Gîtâ. 3. 12. दास्यन्ते यज्ञभाविताः

यज्ञरूप

Muṇḍ.1 2. 7. प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपाः

यज्ञवचस्

Brih. 6. 5. 4. कुभिर्यज्ञवचसो राजस्तंबायनात्

— यज्ञवचा राजस्तंबायनस्तुरात्कावषेयात्

यज्ञविद्

Brahma. 3. स यज्ञः स च यज्ञवित्

Gitâ. 4. 30. सर्वे ऽप्येते यज्ञविदः

यज्ञशिष्टामृतभुज्

Gîtâ. 4. 31. यज्ञशिष्टामृतभुजः

यज्ञशिष्टाशिन्

Gîtâ. 3. 13. यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः

यज्ञस्तोम

Mahâ. 1. तस्य ध्यानान्तःस्थस्य यज्ञस्तोमम् (so Śaṁkarânanda; but Nârâyaṇa explains यज्ञःस्तोमम्

यज्ञायज्ञीय

Kaush. 1. 5. भद्रयज्ञायज्ञीये शीर्षण्ये

Chhâ.2. 19. 1. एतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम्

यज्ञार्थ

Gitâ. 3. 9. यज्ञार्थात्कर्मणो ऽन्यत्र

यज्ञोपवीत

Kaush. 2. 7. यज्ञोपवीतं कृत्वा

Brahma. 2. यज्ञोपवीतं परमं पवित्रम्

— शुभ्रं यज्ञोपवीतम्

3. इदं यज्ञोपवीतं तु परमम्

Kathaśru. 1. विसृज्य यज्ञोपवीतम् 2, 3.

— किमस्य यज्ञोपवीतम्

— इदमेवास्य तद्यज्ञोपवीतं यदात्मध्यानम्

4. यज्ञोपवीतं वेदांश्च सर्वं तद्वर्जयेद्यतिः

Parama. 1. शिखायज्ञोपवीतं च

2. न शिखां न यज्ञोपवीत

— तदेव शिखा च तदेव य

पवीतं च

Aruṇeya. 1. शिखां यज्ञोपवीतं च..

सृजेत्

5. अजिनं मेखलां यज्ञोप

च त्यक्त्वा

Aśrama. 4. *vide* धारिन्

— त्रिदण्डकमण्डलुशिक्य

क्षजलपवित्रपात्रपादुक

नाशिखायज्ञोपवीतानां

गिनः

Jâbâla. 5. इदमेवास्य तद्यज्ञोपवी

आत्मा

6. शिखां यज्ञोपवीतं च

यज्ञोपवीतधारिन्

Aśrama. 4. शिखावर्जिता यज्ञोपवीत

रिणः

यज्ञोपवीतिन्

Brahma. 3. ते च यज्ञोपवीतिनः

— स विद्वान् यज्ञोपवीती स्य

यत्

Muṇḍ.3. 2. 4. एतैरुपायैर्यतते यस्तु

द्वान्

Gîtâ. 2. 60. यततो ह्यपि कौन्तेय

6. 36. वश्यात्मना तु यतता

43. यतते च ततो भूयः

45. प्रयत्नाद्यतमानस्तु

7. 3. कश्चिद्यतति सिद्धये

— यततामपि सिद्धानाम्

29. मामाश्रित्य यतन्ति ये

9. 14. यतन्तश्च दृढव्रताः

15. 11. यतन्तो योगिनश्च

— यतन्तो ऽप

यतचित्त

6. 19. योगिनो यतचित्तस्य

यतचित्तात्मन्

4. 21. निराशीर्यतचित्तात्मा
6. 10. एकाकी यतचित्तात्मा

यतचित्तेन्द्रियक्रिय

6. 12. यतचित्तेन्द्रियक्रियः

यतचेतस्

5. 26. यतीनां यतचेतसाम्

यतर

i. 8. 8. 4. यतर एतदुपनिषदो भविष्यन्ति देवा वासुरा वा

यतवाक्कायमानस

18. 52. यतवाक्कायमानसः

यतवाच्

ri. 6. 9. अवशिष्टं यतवागभाति

यतात्मन्

5. 25. छिन्नद्वैधा यतात्मानः
12. 14. यतात्मा दृढनिश्चयः

यतात्मवन्त्

12. 11. सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्

यति

h. 3. 1. यतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छम्
1.3. 1. 5. यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः
3. 2. 6. यतयः शुद्धसत्त्वाः Mahânâr.10. 6; Kaivalya. 3.
nâr.10. 5. यद्यतयो विशन्ति Kaivalya. 3.
Gauḍa.2. यतिर्यादृच्छिको भवेत्
Nṛip. 5. 10. वानप्रस्थशतमेकमेकेन यतिना तत्समम्
— यतीनां तु शतं पूर्णं रुद्रजापकेन तत्समम्
Nyasa. 3. सर्वं तद्वर्जयेद्यतिः Kaṭha-śru. 4.
Parama. 3. स यतिः कथ्यते (MSS.)
Aruṇeya. 3. अष्टौ मासानेकाकी यतिश्चरेत्
5. यतयो हि भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशन्ति
Kâlâg. 2. ब्रह्मचारी गृहस्थो वानप्रस्थो यतिर्वा
Vâsu. 2. यतिस्तर्जन्या.. धारयेत्
3. यतिरूर्ध्वचतुष्कवान्
Gopî. 4. य एवंविद्वान् यतिहस्ते दद्यात्
Gîtâ. 4. 28. यतयः संशितव्रताः
5. 26. यतीनां यतचेतसाम्
8. 11. विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः

यतिथ

Bṛih. 6. 2. 2. यतिथ्यामाहुत्यां हुतायाम्

यतेन्द्रियमनोबुद्धि

Gîtâ. 5. 28. यतेन्द्रियमनोबुद्धिः

यत्काम

Chhâ. 1. 3. 12. यत्कामः स्तुवीत
Nṛip. 1. 1. उपैनं तदुपनमति यत्कामो भवति

यत्क्रतु

Bṛih. 4. 4. 5. स यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते

यत्न

Mahânâr. 19. 2. नान्यो भागो यत्नान्मे
Aruṇeya. 4. यत्नेन हे रक्षतो
Mukti. 2. 5. प्राक्तनस्तदसौ यत्नाज्जेतव्यः

यत्नतस्

Râmap. 69. तेषु पत्रेषु यत्नतः

यत्परायण

Brahma. 3. इदं यज्ञोपवीतं..यत्परायणम्

यत्प्रभाव

Gîtâ. 13. 3. स च यो यत्प्रभावश्च

यत्रकामम्

Brih. 4. 3. 12. स ईयते ऽमृतो यत्रकामम्

यथाकर्म

Kaush. 1. 2. प्रत्याजायते यथाकर्म

Brih. 1. 5. 21. एवमन्यानि कर्माणि यथाकर्म

Katha. 5. 7. यथाकर्म यथाश्रुतम्

यथाकाम

Brih. 4. 4. 5. स यथाकामो भवति

यथाकामम्

Brih. 2. 1. 18. स्वे जनपदे यथाकामं परिवर्त्तेत

— स्वे शरीरे यथाकामं परिवर्त्तेते

Prasna. 1. 2. यथाकामं प्रश्नान् पृच्छथ

यथाकामचार

Chhâ. 7. 1. 5. तत्रास्य यथाकामचारो भवति (so each section down to 14)

यथाकारिन्

Brih. 4. 4. 5. यथाकारी यथाचारी तथा भवति

यथाकालम्

Mund. 1. 2. 5. यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन्

यथाक्रतु

Chhâ. 3. 14. 1. यथाक्रतुरस्मिँल्लोके पुरुषो भवति

यथाक्रम

Brih. 4. 3. 9. यथाक्रमो ऽयं परलोकस्थाने भवति

Maitri. 6. 26. प्राणादयः.. तस्माद्भ्युच्चरन्तीह यथाक्रमेण 31.

यथाचारिन्

Brih. 4. 4. 5. यथाकारी यथाचारी तथा भवति

यथाजातरूपधर

Jâbâla. 6. यथाजातरूपधरो निर्द्वन्द्वः

यथादेवतम्

Brih. 1. 5. 22. अन्या देवता यथादेवतम्

यथानिकायम्

Śwet. 3. 7. यथानिकायं सर्वभूतेषु गूढम्

यथानुशासनम्

Chhâ. 8. 1. 5. यथा ह्येवेह प्रजा अन्वाविशन्ति यथानुशासनम्

यथापूर्वम्

Mahânâr. 5. 7. सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्

यथाबलम्

Gauda. 4. 100. नमस्कुर्मो यथाबलम्

यथाभागम्

Gîtâ. 1. 11. यथाभागमवस्थिताः

यथायतनम्

Ait. 2. 3. यथायतनं प्रविशतेति

Kaush. 3. 3. प्राणा यथायतनं विप्रतिष्ठन्ते 4. 20.

यथालाभम्

asrû. 1. यथालाभमश्नीयात्

यथावत्

ri. 4. 5. यथावदुक्तम्
6. 30. यथावदुपचारी
ti. 2. 2. यथावन्नैव जायते
50. यथावदुपदिश्यते
18. 19. यथावच्छृणु तान्यपि

यथाविद्य

la. 2. 16. यथाविद्यस्तथास्मृतिः

यथाविद्यम्

sh. 1. 2. प्रत्याजायते यथाकर्म यथाविद्यम्

यथाविधानम्

i. 8. 15. 1. वेदमधीत्य यथाविधानम्

यथाश्रुतम्

ia. 5. 7. यथाकर्म यथाश्रुतम्

यथासङ्कल्पित

ua. 3. 10. यथासङ्कल्पितं लोकं नयति (2 MSS. read यथाकल्पितम्)

यथासुखम्

ânâr. 15. 5. गच्छ देवि यथासुखम्

यथास्थानम्

. 6. 4. 5. धिष्ण्या यथास्थानं कल्पन्ताम्

यथेतम्

i. 5. 10. 5. यथेतमाकाशमाकाशाद्वायुम्
. 6. 3. 6. यथेतमेत्य

यथोक्त

ia. 1. 15. तत्सत्यवद्यथोक्तम्

Gîtâ. 12. 20. यथोक्तं पर्युपासते

यथोक्तकाल

Jâbâla. 6. यथोक्तकाले . . भैक्षमाचरन्नुदरपात्रेण

यथोपपन्न

Asrama. 4. यथोपपन्नचातुर्वर्ण्यभैक्षाचर्यं चरन्तः

यदहस्

Bṛih. 1. 5. 2. यदहरेव जुहोति तदहः पुनर्मृत्युमुपजयति
Jâbâla. 4. यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्

यदृच्छा

Śwet. 1. 2. यदृच्छा भूतानि योनिः
Gîtâ. 2. 32. यदृच्छया चोपपन्नम्

यदृच्छालाभसन्तुष्ट

Gîtâ. 4. 22. यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः

यद्गोत्र

Chhâ. 4. 4. 2. नाहमेतद्वेद तात यद्गोत्रस्त्वमसि
— एतन्न वेद यद्गोत्रस्त्वमसि 4.
4. नाहमेतद्वेद भो यद्गोत्रो ऽहमस्मि

यद्विकारिन्

Gîtâ. 13. 3. यद्विकारि यतश्च यत्

यन्त्र

Garbha. 4. यन्त्रेणापीड्यमानो महता दुःखेन
Râmap. 13. विग्रहो यन्त्रकल्पना
— विना यन्त्रेण चेत्पूजा
82. इदं सर्वात्मकं यन्त्रम
84. एवं यन्त्रं समाख्यातम

यन्त्रारूढ

Gîtâ. 18. 61. भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया

1. यम्

Kaush. 4. 15. सर्वं हास्मा इदं श्रैष्ठ्याय यम्यते

Chhâ. 8. 3. 5. यद्यं तेनोभे यच्छति यदनेनोभे यच्छति तस्माद्यम्

Brih. 3. 7. 1. यो ऽन्तरो यमयति
3. यः पृथिवीमन्तरो यमयति (similarly in 4–23).

Katha. 3. 13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि
— तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि

Kshur. 11. तां नाडीं पूरयन्यतः (instead of यतः 2 MSS. have यतिः 2 others दिवि, and a fifth शनैः)

2. यम्

Chhâ. 8. 3. 5. यद्यं तेनोभे यच्छति यदनेनोभे यच्छति तस्माद्यम्

Brih. 5. 3. 1. यमित्येकमक्षरम् 5. 5. 1.

यम

Kaush. 4. 2. स्वप्ने यमः
15. यमो राजेति वा अहमेतमुपासे

Brih. 1. 4. 11. पर्जन्यो यमो मृत्युरीशानः
3. 9. 21. स यमः कस्मिन्प्रतिष्ठितः
5. 15. 1. पूषन्नेकर्षे यम सूर्य Isâ. 16.

Katha. 1. 5. किं स्विद्यमस्य कर्त्तव्यम्

Maitri. 5. 1. त्वमग्निस्त्वं यमस्त्वं पृथिवी

Nrip. 4. 3. यो वै नृसिंहः..यश्च यमस्तस्मै वै नमो नमः (25)

Śiras. 2. यो वै रुद्रः..यश्च यमः

Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..यश्च (13)

Gîtâ. 10. 29. यमः संयमतामहम्
11. 39. वायुर्यमो ऽग्निर्वरुणः शशांकः

यमदेवत

Brih. 3. 9. 21. किंदेवतोऽस्यां दक्षिणा दिश्यसीति यमदेवत

यमराज्य

Maitri. 6. 36. यमराज्यमग्निष्टोमेनाभियति

यमविषयस्थ

Maitri. 4. 2. यमविषयस्थस्येव बहुयावस्थम्

यमुना

Mahânâr. 4. इमं मे गंगे यमुने..सचता

ययाति

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

यव

Chhâ. 3. 14. 3. अणीयान् व्रीहेर्वा यवाद्वा
5. 10. 6. त इह व्रीहियवाः..इति जायन्ते

Brih. 5. 6. 1. यथा व्रीहिर्वा यवो वा
6. 3. 13. व्रीहियवास्तिलमाषाः

Mund. 2. 1. 7. प्राणापानौ व्रीहियवौ तप

यवमात्र

Nyâsa. 5. यवमात्रे विनिर्गताम्

यशस्

Kaush. 1. 3. तं ब्रह्माहाभिधावत मम शसा
2. 6. तद्यश इत्युपासीत
15. यशो ब्रह्मवर्चसं कीर्तिं जुषतामिति

h. 4. 8. पूर्यते प्रजया पशुभिर्यशसा
16. प्रजायते प्रजया पशुभिर्यशसा
. 3. 1. 3. तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसो ऽजायत 3. 2. 2; 3. 3. 2; 3. 4. 2; 3. 5. 2.
3. 13. 2. एतच्छ्रीश्च यशश्चेत्युपासीत
3. 18. 3. भाति च तपति च कीर्त्या यशसा..य एवं वेद 4, 5, 6 .
8. 14. 1. यशो ऽहं भवामि ब्राह्मणानां यशो राज्ञां यशो विशां यशो ऽहमनुप्रापत्सि स हाहं यशसां यशः
1. 2. 6. श्रान्तस्य तप्तस्य यशो वीर्यमुदक्रामत्
— प्राणा वै यशो वीर्य्यम्
1. 4. 11. क्षत्र एव तद्यशो दधाति
2. 2. 3. तस्मिन्यशो निहितं विश्वरूपम् (bis).
— प्राणा वै यशो निहितम्
5. 14. 3. श्रिया यशसा तपति
6. 4. 6. मयि तेज इन्द्रियं यशः
7. इन्द्रियेण ते यशसा यश आददे
8. इन्द्रियेण ते यशसा यश आदधामि
28. श्रिया यशसा ब्रह्मवर्चसेन
1. 3. 1. सह नौ यशः
1. 4. 3. यशो जने ऽसानि
3. 10. 3. यश इति पशुषु
6. 35. ते ऽर्चिषो वै यशस आश्रयवशात्
âr.12. 3. आदित्यो वै..बलं यशः
1. 3. *vide* ऐश्वर्यवन्त्
10. 5. तपो दानं यशो ऽयशः
7

Gîtâ. 11. 33. तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व

यशस्वितम

Kaush. 2. 6. यथैतत्..यशस्वितमं..भवत्येवं..हैव स यशस्वितमः..भवति

यशस्विन्

Chhâ. 3. 13. 2. श्रीमान् यशस्वी भवति
Bṛih. 6. 4. 6. मलोद्वाससं यशस्विनीमभिक्रम्योपमन्त्रयेत
8. इति यशस्विनावेव भवतः

यशोदा

Kṛish. 5. यशोदा मुक्तिगेहिनी

यष्टि

Kaush. 4. 19. तत उ हैनं यष्ट्या विचिक्षेप
Bṛih. 6. 4. 7. काममेनां यष्ट्या वा पाणिना वोपहत्य
Brahma. 1. यष्ट्यादिना ताड्यमानः (all the MSS. omit ना)

यष्टिका

Kṛish. 9. यष्टिका कमलासनः

यष्टिरूप

Kṛish. 12. यष्टिरूपो ऽभवद्विधिः

1. या

Chhâ. 7. 15. 1. प्राणः प्राणेन याति
Bṛih. 4. 3. 35. उत्सर्जद्यायात्..उत्सर्जन्याति
Kaṭha. 2. 21. शयानो याति सर्वतः
Śwet. 6. 4. कर्मक्षये याति स तत्त्वतो ऽन्यः
Maitri. 6. 30. तेन यान्ति परां गतिम्
34. यदा यात्यमनीभावम्
Mahânâr. 2. 7. सनिं मेधामयासिषम् (or °शिषं)

Kaivalya. 1. परात्परं पुरुषं याति
10. ब्रह्म परमं याति नान्येन हेतुना
15. यस्मिँल्लयं याति पुरत्रयं च
19. मयि सर्वं लयं याति
Gauḍa. 3. 32. अमनस्तां तदा याति
Chûl. 17. तस्मिन्नेव लयं यान्ति
18. लीनास्या व्यक्ततां ययुः
21. ते लयं यान्ति तत्रैव
Śiras. 5. उत्तरेण येन देवा यान्ति
Brahma. 1. यदा याति संसृष्टमाकृष्य
— यथा खं श्येनमाश्रित्य याति स्वमालयम्
— यष्ट्यादिना ताड्यमानो न यति (छान्दसो ह्रस्वः Nâr.)
Brahmab. 4. यदा यात्युन्मनीभावम्
Amṛita. 38. मारुतो याति मूर्धनि
Haṁsa. 2. तृतीये खेदनं याति
Parama. 3. स याति नरकान् घोरान्
Gopî. 5. न्यूनं सम्पूर्णतां याति
Râmap. 2. राक्षसा येन मरणं यान्ति
94. तथा पदं परमं यान्ति ते च
— अमला यान्ति मोक्षम्
Mukti. 1. 27. मामकं धाम यास्यसि
44. वैदेहीं मामकीं मुक्तिं यान्ति
2. 7. अशुभाद्यालितं याति
8. द्रागभ्यासवशाद्याति
Gîtâ. 2. 35. यास्यसि लाघवम्
3. 33. प्रकृतिं यान्ति भूतानि
4. 31. यान्ति ब्रह्म सनातनम्
35. न पुनर्मोहमेवं यास्यसि
6. 45. ततो याति परां गतिम्
13. 28; 16. 22.
7. 23. देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि
27. सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप

Gîtâ. 8. 5. स मद्भावं याति
8. परमं पुरुषं..याति
13. स याति परमां गतिम्
23. प्रयाता यान्ति
26. एकया यात्यनावृत्तिम्
9. 7. प्रकृतिं यान्ति मामि[illegible]
25. यान्ति देवव्रता देवा[illegible]
तृन्यान्ति पितृव्रताः
— भूतानि यान्ति भूते[illegible]
यान्ति मद्याजिनोऽपि
32. तेऽपि यान्ति परां ग[illegible]
13. 34. ये विदुर्यान्ति ते परम[illegible]
14. 14. प्रलयं याति देहभृत्
16. 20. ततो यान्त्यधमां गति[illegible]

2. या

Chhâ. 1. 13. 2. अन्नं या

याग

Parama. 1. यागस्वाध्यायं च (MSS.)
Aruṇeya. 1. यागं च सूत्रं च स्वा[illegible] च..विसृजेत्

याच्

Kaush. 2. 1. तस्योपनिषन्न याचेदि[illegible]
Mahânâr. 4. 11. तीर्थं मे देहि याचितः
Mukti. 1. 47. याचतः कामपूरणम्

याजिन्

Vâsu. 4. सर्वैर्यज्ञैर्याजी भवति
Gîtâ. 9. 25. यान्ति मद्याजिनोऽपि
34. मद्याजी मां नमस्कुरु

याजुष

Nṛip. 4. 2. य एतां महालक्ष्मीं या[illegible] वेद

याज्ञवल्क्य

Bṛih. 1. 4. 3. इति ह स्माह याज्ञवल[illegible]

ih. 2. 4. 2. मैत्रेयीति होवाच याज्ञवल्क्यः 4. 5. 2.
— नेति होवाच याज्ञवल्क्यः 3. 2. 11; 4. 5. 3.
4. स होवाच याज्ञवल्क्यः 13; 4. 1. 2—7; 4. 5. 5.
12. इत्यरे ब्रवीमीति होवाच याज्ञवल्क्यः 4. 5. 13.
3. 1. 2. याज्ञवल्क्यः स्वमेव ब्रह्मचारिणमुवाच
— याज्ञवल्क्य ब्रह्मिष्ठो ऽसी३
3. याज्ञवल्क्येति होवाच 4–10; 3. 2. 1, 10–13; 3. 4. 1; 3. 5. 1; 3. 6. 1; 3. 7. 1.
3. 3. 1. स त्वा पृच्छामि याज्ञवल्क्य
3. 4. 1. कतमो याज्ञवल्क्य सर्वान्तरः (bis); 3. 5. 1.
3. 7. 1. तच्चेत्त्वं याज्ञवल्क्य सूत्रमविद्वान्
2. एवमेवैतद्याज्ञवल्क्य 3. 9. 20—23; 4. 3. 2–5, 15; Jâbâla. 1; Râmot., 1.
3. 8. 2. अहं वै त्वा याज्ञवल्क्य.. उपोदस्थाम्
3. यदूर्ध्वं याज्ञवल्क्य दिवः 6
5. नमस्ते ऽस्तु याज्ञवल्क्य 4. 2. 1.
3. 9. 1. कति देवा याज्ञवल्क्य (7 times).
10. याज्ञवल्क्य वेद वा अहं तं पुरुषम् 11–17.
18. शाकल्येति होवाच याज्ञवल्क्यः
19. याज्ञवल्क्येति होवाच शाकल्यः
25. अहल्लिकेति होवाच याज्ञवल्क्यः
4. 1. 1. याज्ञवल्क्य आवव्राज

Brih. 4. 1. 1. याज्ञवल्क्य किमर्थमचारीः
2. स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य 3—7.
— का प्रज्ञता याज्ञवल्क्य
4. 2. 4. अभयं..प्राप्तो ऽसीति होवाच याज्ञवल्क्यः
— अभयं त्वा गच्छताद्याज्ञवल्क्य
4. 3. 1. जनकं.. याज्ञवल्क्यो जगाम
—जनकश्च वैदेहो याज्ञवल्क्यश्च
— तस्मै ह याज्ञवल्क्यो वरं ददौ
2. याज्ञवल्क्य किंज्योतिरयं पुरुषः
3. अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य 4–6.
32. इति हैनमनुशशास याज्ञवल्क्यः
33. एष ब्रह्मलोकः.. इति होवाच याज्ञवल्क्यः 4. 4. 23.
— अत्र ह याज्ञवल्क्यो बिभयाञ्चकार
4. 5. 1. याज्ञवल्क्यस्य ह्वे भार्ये बभूवतुः
— याज्ञवल्क्यो ऽन्यद्वृत्तमुपाकरिष्यन्
15. इति होक्त्वा याज्ञवल्क्यो विजहार
6. 3. 7. वाजसनेयाय याज्ञवल्क्याय
8. वाजसनेयो याज्ञवल्क्यः
6. 5. 3. आसुरिर्याज्ञवल्क्यात्
— याज्ञवल्क्य उद्दालकात्
Jâbâla. 1. बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यम् Râmot. 1.
2. अत्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यम् 5; Râmot. 4.

Jâbâla. 2. स होवाच याज्ञवल्क्यः 3, 4, 5 ; Râmot. 2, 4, 5.
4. जनको वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्य
— एवमेवैतद्भगवन्निति वै याज्ञवल्क्यः (or °ल्क्य) 5.
5. पृच्छामि त्वा याज्ञवल्क्य

Râmot. 2. भरद्वाजः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यम्
4. तं प्रत्युवाच स्वयमेव याज्ञवल्क्यः
5. भरद्वाजो याज्ञवल्क्यमुवाच

Mukti. 1. 39. याज्ञवल्क्यं वराहकम्
1. *vide* मुक्तिका

याज्ञिक

Brih. 3. 7. 1. सो ऽब्रवीत्पतञ्चलं काप्यं याज्ञिकांश्च (ter).

याज्या

Brih. 3. 1. 7. पुरोनुवाक्या च याज्या च 10.
10. अपानो याज्या
— अन्तरिक्षलोकं याज्यया (जयति)

यातयाम

Gitâ. 17. 10. यातयामं गतरसम्

यातुधान

Nîla. 20. या इषवो यातुधानानाम्

याथातथ्यतस्

Iśâ. 8. याथातथ्यतो ऽर्थान् व्यदधात्

यादव

Gitâ. 11. 41. हे कृष्ण हे यादव हे सखेति

यादस्

Gitâ. 10. 29. वरुणो यादसामहम्

यादृच्छिक

Gauḍa. 2. 37. यतिर्यादृच्छिको भवेत्
Parama. 3. यादृच्छिको भवेद्भिक्षुः (most MSS. omit first word).

यादृश्

Gitâ. 13. 3. तत्क्षेत्रं यच्च यादृक् च

यान

Chhâ. 8. 12. 3. रममाणः स्त्रीभिर्वा या

याम्य

Haṁsa. 2. याम्ये क्रूरे मतिः
Râmap. 49. मुद्रां ज्ञानमयीं याम्ये

यायावर

Aśrama. 2. यायावरा घोरसन्न्यासि श्च
— यायावरा यजन्तो याजय

यावज्जीवम्

Gâruda. 3. यावज्जीवं न तं दश सर्पाः

यावत्सम्पातम्

Chhâ. 5. 10. 5. तस्मिन्यावत्सम्पातमुषि

यावदायुषम्

Chhâ. 5. 9. 2. स जातो यावदायुषं जीव
8. 15. 1. एवं वर्त्तयन्यावदायुषम्

यावद्ग्रहणान्तम्

Aśrama. 1. यावद्ग्रहणान्तं वा वेदस्य

यास्क

Brih. 2. 6. 3. जातूकर्ण्य आसुरायण यास्काच्च 4. 6. 3.

1. यु (मिश्रणे)

Gauḍa. 3. 5. रजोधूमादिभिर्युते
Gopî. 5. कृष्णगोपीजलक्रीडाकुङ्कुमचन्दनैर्युतम्

pap. 9. हस्ताः शंखादिभिर्युताः
72. कूटरेफानुग्रहेन्दुनादशक्त्यादिभिर्युतः
73. अन्त्यार्घीशयुतः
75. अक्रूरयुता
80. अम्भो विद्यया युतम्

2. यु (अमिश्रणे)

h. 5. 15. 1. युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः Iśâ. 18.

युक्तग्रावन्

p. 2. 4. यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा

युक्तचेतस्

ı. 7. 30. मां ते विदुर्युक्तचेतसः

युक्तचेष्ट

ı. 6. 17. युक्तचेष्टस्य कर्मसु

युक्ततम

â. 6. 47. स मे युक्ततमो मतः
12. 2. ते मे युक्ततमा मताः

युक्तस्वप्नावबोध

ı. 6. 17. युक्तस्वप्नावबोधस्य

युक्तात्मन्

hd.3. 2. 5. युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति
7. 18. आस्थितः स हि युक्तात्मा

युक्ताहारविहार

6. 17. युक्ताहारविहारस्य

युक्ति

a. 4. 25. इष्यते युक्तिदर्शनात्
i. 2. 43. विना युक्तिमनिन्दिताम्
45. एतास्ता युक्तयः पुष्टाः
46. सतीषु युक्तिष्वेतासु

युक्तियुक्त

Gauḍa. 3. 23. निश्चितं युक्तियुक्तं च

युग

Gîtâ. 4. 8. सम्भवामि युगे युगे

युगपद्

Gauḍa. 4. 16. युगपत्संभवे यस्मात्
Gîtâ. 11. 12. भवेद्युगपदुत्थिता

युगसहस्रान्त

Gîtâ. 8. 17. रात्रिं युगसहस्रान्ताम्

युग्म

Garbha. 3. द्विधा तनुः स्याद्युग्मा प्रजायन्ते

युज्

Kaush. 2. 6. सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्याय युज्यन्ते
Kena. 1. केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः
— चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति
Chhâ. 8. 12. 3. यथा प्रयोग्य आचरणे युक्त एवमेवायमस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः
Bṛih. 2. 5. 19. युक्ता ह्यस्य हरयः
5. 13. 2. प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते युज्यन्ते हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय
Tait. 1. 11. 4. ये तत्र ब्राह्मणाः .. युक्ता आयुक्ताः (bis)
Kaṭha. 3. 4. आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्
6. युक्तेन मनसा सदा
Śwet. 1. 9. भोक्तृभोगार्थयुक्ता
2. 1. युञ्जानः प्रथमं मनः
2. युक्तेन मनसा वयम्
3. युक्त्वाय मनसा देवान्
4. युञ्जते मन उत युञ्जते धियः

Śwet. 2. 5. युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः
15. दीपोपमेनेह युक्तः
4. 15. यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयः
5. 10. यद्यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स युज्यते (so MSS.)
Maitri. 6. 3. आत्मानं युञ्जीतेति
21. तया प्राणोङ्कारमनोयुक्त-योर्ध्वमुत्क्रमेत्
— अपरेण पश्चाद्युञ्जीत मू-र्द्धनि
25. यस्मात् सर्वमनेकधा युनक्ति युञ्जते वा
28. षड्भिर्मासैस्तु युक्तस्य
Mahânâr. 24. 1. ओमित्यात्मानं युञ्जीत
Praśna. 3. 10. प्राणस्तेजसा युक्तः
Gauḍa. 1. 25. युञ्जीत प्रणवे चेतः
2. 10. युक्तं वैतथ्यमेतयोः (MSS. read सदसतोर्वैतथ्यं दृष्टं)
36. अद्वैते योजयेत् स्मृतिम्
3. 14. मुख्यत्वं हि न युज्यते
27. सतो हि मायया जन्म यु-ज्यते न तु तत्त्वतः
28. असतो मायया जन्म तत्त्व-तो नैव युज्यते
4. 20. न हि साध्यसमो हेतुः सि-द्धौ साध्यस्य युज्यते
34. न युक्तं दर्शनम्
Nṛip. 2. 2. प्रथमं प्रथमेन युज्यते
Nṛisut. 6. सिंहं भृङ्गेषु योजयेत्
7. भृङ्गेणानेन योजयेत्
— तमनेनापि योजयेत्
Brahmav. 13. ओंकारस्तु तथा योज्यः
Amṛita. 3. शून्यभावेन युञ्जीयात्
Râmap. 46. घटश्रोत्रसहस्राक्षजिह्वां यु-क्तम्
54. जाम्बवन्तं च तैर्युक्तः (MSS. युक्तं)
76. मेधया युक्ता दीर्घा

Râmap. 80. लान्तो योन्या युक्तः
Mukti. 2. 4. त्वां योजयति संकटः
6. योजनीया शुभे पथि
16. तस्माद्वासनया युक्तम्
34. मैत्र्यादिभिर्गुणैर्युक्तम्
Gîtâ. 1. 14. ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते
2. 38. ततो युद्धाय युज्यस्व
39. बुद्ध्या युक्तो यया पा
50. तस्माद्योगाय युज्यस्व
61. युक्त आसीत मत्पर
14.
3. 26. युक्तः समाचरन्
4. 18. स युक्तः कृत्स्नकर्मकृ
23. गतसंगस्य युक्तस्य
5. 8. युक्तो मन्येत तत्त्ववि
12. युक्तः कर्मफलं त्यक्त्व
23. स युक्तः स सुखी नर
6. 8. युक्त इत्युच्यते योगी
10. योगी युञ्जीत सततमा-नम्
12. युञ्ज्याद्योगमात्मविशु
14. युक्त आसीत मत्परः
15. युञ्जन्नेवं सदात्मानम्
18. युक्त इत्युच्यते तदा
19. युञ्जतो योगमात्मनः
23. स निश्चयेन योक्तव्यो योगः
7. 1. योगं युञ्जन्मदाश्रयः
22. स तया श्रद्धया युक्तः
8. 8. अभ्यासयोगयुक्तेन
10. भक्त्या युक्तो योग चैव
9. 34. युक्त्वैवमात्मानं मत्पराः
10. 7. सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते
17. 17. अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः
26. सच्छब्दः पार्थ युज्यते
18. 51. बुद्ध्या विशुद्धया यु

युद्ध

ush. 3. 1. युद्धेन च पौरुषेण च
nap. 46. युद्धमकारयत्
ā. 1. 23. युद्धे प्रियचिकीर्षवः
33. त इमे ऽवस्थिता युद्धे
2. 31. धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयः
32. लभन्ते युद्धमीदृशम्
37. युद्धाय कृतनिश्चयः
38. ततो युद्धाय युज्यस्व
18. 43. युद्धे चाप्यपलायनम्

युद्धविशारद

tā. 1. 9. सर्वे युद्धविशारदाः

1. युध्

tā. 1. 22. कैर्मया सह योद्धव्यम्
24. योत्स्यमानानवेक्षे ऽहम्
2. 9. न योत्स्य इति गोविन्दम्
18. तस्माद्युध्यस्व भारत
3. 30. युध्यस्व विगतज्वरः
8. 7. मामनुस्मर युध्य च
11. 34. युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्
18. 59. न योत्स्य इति मन्यसे

2. युध्

1. 4. भीमार्जुनसमा युधि

युधामन्यु

1. 6. युधामन्युश्च विक्रान्तः

युधिष्ठिर

1. 16. कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः

युयुत्सु

1. 1. समवेता युयुत्सवः
28. युयुत्सुं समुपस्थितम्

युयुधान

1. 4. युयुधानो विराटश्च

युवन्

Tait. 2. 8. 1. युवा स्यात् साधुयुवा
Nṛip. 2. 4. स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं युवानम्
5. 2. एतन्महाचक्रं बालो वा युवा वा वेद

यूप

Mahânâr. 25. 1. हृदयं यूपः
Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य . . को यूपः
4. ओङ्कारो यूपः

यूपरशनाशोभित

Prâṇâg. 3. अस्य शारीरयज्ञस्य यूपरशनाशोभितस्य 4.

येष्टिह

Kaush. 1. 3. मुहूर्त्ता येष्टिहाः
4. स आगच्छति मुहूर्त्तान् येष्टिहान्

योग

Tait. 2. 4. 1. योग आत्मा महः पुच्छम्
Kaṭha. 6. 11. तां योगमिति मन्यन्ते
— योगो हि प्रभवाप्ययौ
Śwet. 2. 11. ब्रह्मण्यभिव्यक्तिकराणि योगे
6. 3. तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम्
13. सांख्ययोगाधिगम्यम्
Maitri. 6. 18. षडङ्गा इत्युच्यते योगः
22. श्रवणाङ्गुष्ठयोगेन
25. तस्माद्योग इति स्मृतः
— सर्वभावपरित्यागो योग इत्यभिधीयते
27. स्वं योगश्च ततो ऽस्माकम्
28. सम्यग्योगः प्रवर्त्तते
36. वर्त्त्याधारस्नेहयोगात्
7. 11. स्वजाभियोगात्
Mahânâr. 11. 14. अथातो योग

Gauḍa. 4. 50. द्रव्यत्वाभावयोगतः 52.
Kaivalya. 2. श्रद्धाभक्तिध्यानयोगात्
14. जन्मान्तरकर्मयोगात्
Kshur. 12. योगमाश्रित्य नित्यशः
Śikhâ. 2. सर्वज्ञानयोगध्यानानाम्
Garbha. 4. तत् सांख्यं योगमभ्यसेत्
Brahma. 2. योगमुत्तममास्थितः
Brahmab. 7. स्वरेण सन्धयेद्योगम्
Amṛita. 6. षडङ्गो योग उच्यते
22. तदा योगं समभ्यसेत्
23. तालमात्रा तथा योगः
— द्वादशमात्रो योगस्तु
Yogaśi. 10. तदा पश्यन्ति योगेन
Râmap. 20. योग एतयोः फलदः
Mukti. 1. न कर्मसांख्ययोगोपासना-
दिभिः
2. 14. चिराभ्यासयोगेन विना
Gîtâ. 2. 39. योगे त्विमां शृणु
48. समत्वं योग उच्यते
50. तस्माद्योगाय युज्यस्व यो-
गः कर्मसु कौशलम्
53. तदा योगमवाप्स्यसि
4. 1. इमं विवस्वते योगं प्रोक्त-
वान्
2. योगो नष्टः परन्तप
3. योगः प्रोक्तः पुरातनः
42. योगमातिष्ठ
5. 1. पुनर्योगं च शंससि
4. सांख्ययोगौ पृथक्
5. तद्योगैरपि गम्यते
— एकं सांख्यं च योगं च
6. 2. योगं तं विद्धि पाण्डव
3. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगम्
12. युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये
16. नात्यश्नतस्तु योगो ऽस्ति
17. योगो भवति दुःखहा
19. युञ्जतो योगमात्मनः

Gîtâ. 6. 23. स निश्चयेन योक्तव्यो यो
33. यो ऽयं योगस्त्वया प्रोक्त
36. असंयतात्मना योगो दुष्प्रा
पः
37. योगाच्चलितमानसः
44. जिज्ञासुरपि योगस्य
7. 1. योगं युञ्जन्मदाश्रयः
9. 5. पश्य मे योगमैश्वरम्
11. 8.
10. 7. एतां विभूतिं योगं च
— सो ऽविकम्पेन योगेन
18. विस्तरेणात्मनो योगम्
12. 6. अनन्येनैव योगेन
11. मद्योगमाश्रितः
13. 24. अन्ये सांख्येन योगेन
16. 1. ज्ञानयोगव्यवस्थितिः
18. 33. योगेनाव्यभिचारिण्या
75. योगं योगेश्वरात्कृष्णात्

योगकुण्डलिनी

Mukti. 1. *vide* सरस्वतीरहस्य

योगक्षेम

Tait. 3. 10. 2. योगक्षेम इति प्राणापानयोः
Kaṭha. 2. 2. प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणी-
ते
Gîtâ. 9. 22. योगक्षेमं वहाम्यहम्

योगगुण

Śwet. 2. 12. पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते

योगचार

Nâda. 19. सुस्थितो योगचारेण

योगचूडामणि

Mukti. 1. *vide* जाबालि

योगतत्त्व

Dhyâna. 1. योगतत्त्वं प्रवक्ष्यामि (om
MS. omits); Yogat. 1.

|kti. 1. 33. योगतत्त्वात्मबोधकम्
1. *vide* सरस्वतीरहस्य

योगधारणा

ā. 8. 12. आस्थितो योगधारणाम्

योगनिर्मलधार

hur. 18. योगनिर्मलधारेण क्षुरेण

योगपद

yâna. 21. योगी योगपदे स्थितः

योगप्रवृत्ति

'et. 2. 13. योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति

योगबल

â. 8. 10. भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव

योगभ्रष्ट

â. 6. 41. योगभ्रष्टो ऽभिजायते

योगमाया

â. 7. 25. योगमायासमावृतः

योगयज्ञ

4. 28. योगयज्ञास्तथापरे

योगयुक्त

ur. 1. यां प्राप्य न पुनर्जन्म योगयुक्तस्य जायते (योगयुक्तः स is a variant).
a. 18. योगयुक्तं तदादिशेत्
at. 11. लभते योगयुक्तात्मा
. 5. 6. योगयुक्तो मुनिः
7. योगयुक्तो विशुद्धात्मा
8. 27. योगयुक्तो भवार्जुन

योगयुक्तात्मन्

. 6. 29. ईक्षते योगयुक्तात्मा

योगवित्तम

. 12. 1. तेषां के योगवित्तमाः

योगविद्

Kshur. 24. मात्राधारेण योगवित्
Brahma. 2. योगवित्तत्त्वदर्शिवान्

योगविधि

Katha. 6. 18. योगविधिं च कृत्स्नम्

योगशिखा

Yogaśi. 1. योगशिखां प्रवक्ष्यामि
Mukti. 1. *vide* सरस्वतीरहस्य

योगसंसिद्ध

Gîtâ. 4. 38. तत्स्वयं योगसंसिद्धः

योगसंसिद्धि

Gîtâ. 6. 37. अप्राप्य योगसंसिद्धिम्

योगसञ्ज्ञित

Gîtâ. 6. 23. दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्

योगसन्न्यस्तकर्मन्

Gîtâ. 4. 41. योगसन्न्यस्तकर्माणम्

योगसिद्धि

Kshur. 1. धारणां योगसिद्धये

योगसेवा

Yogat. 15. निश्चितं चात्मभूतानामरिष्टं योगसेवया
Gîtâ. 6. 20. निरुद्धं योगसेवया

योगस्थ

Gîtâ. 2. 48. योगस्थः कुरु कर्माणि

योगाग्निमय

Śwet. 2. 12. योगाग्निमयं शरीरम्

योगाभ्यास

Maitri. 6. 29. शान्तत्वं योगाभ्यासादवाप्नोति
Yogaśi. 6. भिन्दन्ति . . सूर्यं योगाभ्यासेन वै पुनः

योगारूढ

Nṛisut. 4. एवं योगारूढो ब्रह्मण्येवानुष्टुभं सन्दध्यात्

Gîtâ. 6. 3. योगारूढस्य तस्यैव
4. योगारूढस्तदोच्यते

योगासन

Amṛita. 18 बध्वा योगासनं सम्यक्

योगिध्येय

Nṛip. 1. 5. नृकेसरिं योगिध्येयम्
5. 10. ब्रह्मादिवन्दितं योगिध्येयम्

योगिन्

Maitri. 6. 10. सन्न्यासी योगी चात्मयाजी च (bis).

Gauḍa. 3. 39. योगिनो बिभ्यति ह्यस्मात्

Nṛip. 5. 1. सार्वकामिकं मोक्षद्वारं यद्योगिन उपदिशन्ति
10. यत्र गत्वा न निवर्त्तन्ते योगिनः

Kshur. 5. प्राणान् सञ्चारयेद्योगी
15. ततः कण्ठान्तरे योगी
23. कर्माणि योगी दग्ध्वा

Brahma. 2. तत्सूत्रं धारयेद्योगी

Amṛita. 27. नित्यं योगी विवर्जयेत्

Dhyâna. 1. योगिनां हितकाम्यया (one MS. omits); Yogat. 1.
5. स योगी छिन्नसंशयः
21. योगी योगपदे स्थितः

Yogaśi. 6. भिन्दन्ति योगिनः सूर्यं

Parama. 1. योगिनां परमहंसानाम्
3. स एव योगी च स एव ज्ञानी च

Nâr. 5. यमुक्त्वा मुच्यते योगी

Atmapra. 1. यमिष्ट्वा मुच्यते योगी

Vâsu. 2. योगी मत्सायुज्यमाप्नोति

Râmap. 6. रमन्ते योगिनो ऽनन्ते

Mukti. 2. 51. योगिभिर्यानुभूयते
54. समाधियोगिनां प्रियः

Gîtâ. 3. 3. कर्मयोगेन योगिनाम्
4. 25. योगिनः पर्युपासते
5. 11. योगिनः कर्म कुर्वन्ति
24. स योगी ब्रह्मनिर्वाणम्
6. 1. स सन्न्यासी च योगी च
2. योगी भवति कश्चन
8. युक्त इत्युच्यते योगी
10. योगी युञ्जीत सततमात्मानम्
15. योगी नियतमानसः
19. योगिनो यतचित्तस्य
27. प्रशान्तमनसं..योगिनम्
28. योगी विगतकल्मषः
31. स योगी मयि वर्त्तते
32. स योगी परमो मतः
42. अथवा योगिनामेव
45. योगी संशुद्धकिल्बिषः
46. तपस्विभ्यो ऽधिको योगी
— कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन
47. योगिनामपि सर्वेषाम्
8. 14. नित्ययुक्तस्य योगिनः
23. आवृत्तिं चैव योगिनः
25. योगी प्राप्य निवर्त्तते
27. योगी मुह्यति कश्चन
28. योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्
10. 17. कथं विद्यामहं योगिन्
12. 14. सन्तुष्टः सततं योगी
15. 11. यतन्तो योगिनश्च

योगिनीकोश

Haṁsa. 1. योगिनीकोशसन्निभम् (so all the MSS. but one which has

योगीश्वर

tri. 7. 1. योगीश्वरः सर्वज्ञः

योगेश्वर

11. 4. योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शय
18. 75. योगेश्वरात्कृष्णात्
78. यत्र योगेश्वरः कृष्णः

योगैश्वर्य

s. 4. आत्मज्ञानेन योगैश्वर्येण

योजन, योजना

t. 1. 10. तस्याभिध्यानाद्योजनात्
da. 4. 59. तद्वद्धर्मेषु योजना
ita. 23. धारणा योजनं तथा
âna. 3. विस्तीर्णं योजनान् बहून्

योद्धुकाम

1. 22. योद्धुकामानवस्थितान्

योध

11. 32. ये ऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः

योधमुख्य

11. 26. सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः

योधवीर

â. 11. 34. कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्

योनि

ush. 1. 6. आकाशाद्योनेः संभूतः
hâ. 5. 8. 1. योनिरर्चिः Brih. 6. 2. 13.
5. 10. 7. रमणीयचरणाः. . रमणीयां योनिमापद्येरन्
— कपूयचरणाः. . कपूयां योनिमापद्येरन्
1. 1. 2. तस्य पूर्वे समुद्रे योनिः
— तस्यापरे समुद्रे योनिः
— समुद्रो योनिः

Brih. 1. 4. 6. स मुखाच्च योनेर्हस्ताभ्यां च
— अलोमका हि योनिरन्तरतः
11. सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद्ब्रह्म
— उपनिश्रयति स्वां योनिम्
— स्वां स योनिमृच्छति
6. 4. 21. विष्णुर्योनिं कल्पयतु
Katha. 5. 7. योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय
Śwet. 1. 2. यदृच्छा भूतानि योनिः
13. इन्धनयोनिगृह्यः
2. 7. तत्र योनिं कृणवसे
4. 11. यो योनिं योनिमधितिष्ठति 5. 2; Siras. 5.
5. 2. विश्वानि रूपाणि योनीश्च सर्वाः
Maitri. 6. 14. अन्नं वा अस्य सर्वस्य योनिः
— सूर्यो योनिः कालस्य
18. यदा पश्यन् पश्यति. . योनिम्
7. 8. मोहजालस्यैष वै योनिः
Mahânâr. 9. 11. घृतमस्य योनिः
20. 8. एष ते योनिः
Kaivalya. 6. शिवं प्रशान्तं. . ब्रह्मयोनिम्
Mâṇḍû. 6. एष योनिः सर्वस्य Nṛip. 4. 1; Nṛisut 1; Râmot. 3.
Garbha. 4. यदि योन्याः प्रमुच्येहम् (ter).
Jâbâla. 4. अयं ते योनिर्ऋत्वियः
— एष वा अग्नेर्योनिर्यः प्राणः
Râmap. 80. शान्तो योन्या युक्तः
Gîtâ. 14. 3. मम योनिर्महद्ब्रह्म
4. तासां ब्रह्म महद्योनिः
16. 19. आसुरीष्वेव योनिषु
20. आसुरीं योनिमापन्नाः

योनिगत

Śwet. 1. 13. वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्तिः

योनित्व

Nrisut. 9. आत्मन एव . . योनित्वमपि

योनिद्वार

Garbha. 4. अथ योनिद्वारं सम्प्राप्तः

योनिमुक्त

Swet. 1. 7. लीना ब्रह्मणि तत्परा योनि-
मुक्ताः

योनिस्वभाव

Swet. 5. 4. योनिस्वभावानधितिष्ठत्ये-
कः

योषा

Chhâ. 5. 8. 1. योषा वाव गौतमाग्निः
Brih. 6. 2. 13. योषा वा अग्निर्गौतम

योषाग्नि

Brih. 6. 2. 16. ततो योषाग्नौ जायन्ते

योषिता

Mund. 2. 1. 5. पुमान् रेतः सिञ्चति योषि-
तायाम्

यौवन

Chhâ. 4. 4. 2. यौवने त्वामलभे 4.
Maitri. 6. 10. कौमारं यौवनं जरा Gîtâ.
2. 13.

यौवनाश्व

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

र

Maitri. 6. 7. र इति रञ्जयतीमानि भूता-
नि

रक्तगौराङ्ग

Dhyâna. 12. ब्रह्माणं रक्तगौराङ्गम्

रक्तवर्णमणिप्रख्य

Amrita. 36. रक्तवर्णमणिप्रख्यः प्रा
वायुः प्रकीर्तितः

रक्तोत्पलाभास

Kshur. 10. ततो रक्तोत्पलाभासम्

रक्ष्

Ait. 4. 5. शतं मा पुर आयसीररक्ष
Brih. 4. 3. 12. प्राणेन रक्षन्नवरं कुलाय
Mahânâr. 4. 4. रक्षस्व मां पदे पदे
14. 3. मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो र
न्ताम् 4.
Praśna. 2. 13. मातेव पुत्रान् रक्षस्व
Nrip. 3. 1. माया . . सर्वमिदं रक्षति
Kshur. 16. इडा रक्षतु वामेन
Aruṇeya. 4. हे रक्षतो हे रक्षतो हे रक्ष
Râmap. 33. अस्माकं रक्ष देहि श्रियं
(3 MSS. read रक्षाम्)

रक्षण

Krish. 21. रक्षणाय च संस्थितः

रक्षस्

Maitri. 7. 6. *vide* आदि
Prâṇâg. 1. अप रक्षांसि चातया (!
Krish. 16. गर्वो रक्षः खगो बकः
Râmap. 56. *vide* अनिल
Gîtâ. 10. 23. वित्तेशो यक्षरक्षसाम्
11. 36. रक्षांसि भीतानि
17. 4. यक्षरक्षांसि राजसाः

रक्षा

Amrita. 17. कृत्वा मनोमयीं रक्षाम्

रक्षोघ्न

Nrip. 5. 2. एतद्रक्षोघ्नं मृत्युतारकं गु
णा लब्धम्
Râmap. 32. रक्षोघ्नाय शुभांगिने

रक्षोदेवजन

ḥânâr.19. 2. रक्षोदेवजनेभ्यः स्वाहा

रघु

map. 1. रघोः कुले ऽखिलं राति

रघुनन्दन

ap. 48. द्विभुजो रघुनन्दनः

रघुवीर

ap. 32. भद्राय रघुवीराय
33. रघुवीर नृपोत्तम

रघुश्रेष्ठ

ti. 1. 5. इदानीं त्वां रघुश्रेष्ठ प्रणमामि
8. वेदान्ताः के रघुश्रेष्ठ

रङ्गावतारिन्

ri. 7. 8. चाटजटनटभटप्रव्रजितरङ्गावतारिणः

रजत

., 3. 19. 1. ते आण्डकपाले रजतं च सुवर्णं चाभवताम्
2. तद्यद्रजतं सेयं पृथिवी
4. 17. 7. सुवर्णेन रजतं रजतेन त्रपु

रजस्

, 5. 14. 3. एष रजः उपर्युपरि तपति
6. 3. 6. मधुमत्पार्थिवं रजः Mahânâr. 9. 9; 17. 7.
ri. 5. 2. एतद्रूपं वै रजस्तद्रजः खल्वीरितम्
6. 28. रजस्तमोभ्यां विद्धस्य
ânâr. 5. 8. यत्पृथिव्यां रजः स्वम्
12. रजोभूमिस्त्वमाँरोदयस्व
. 2. पादौ रजस्तमस्तस्य
g. 2. प्रथमा रेखा सा.. रजः
la. 4. सत्त्वं रजस्तम इति Gitâ. 14. 5.
Gauḍa. 3. 5. रजोधूमादिभिर्युते
Râmap. 15. रजःसत्त्वतमोगुणैः
88. रजः सत्त्वं तमः
Gîtâ. 14. 7. रजो रागात्मकं विद्धि
9. रजः कर्मणि भारत
10. रजस्तमश्चाभिभूय
— रजः सत्त्वं तमश्चैव
तमः सत्त्वं रजस्तथा
12. रजस्येतानि जायन्ते
15. रजसि प्रलयं गत्वा
16. रजसस्तु फलं दुःखम्
17. रजसो लोभ एव च
17. 1. सत्त्वमाहो रजस्तमः

रजोगुणसमुद्भव

Gîtâ. 3. 37. काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः

रज्जु

Gauḍa. 2. 17. अनिश्चिता यथा रज्जुः
18. निश्चितायां यथा रज्ज्वाम्
— रज्जुरेवेति चाद्वैतम्
Dhyâna. 22. अर्द्धमात्रां रज्जुं कृत्वा
Kṛish. 20. रज्जुर्मातादितिस्तथा

रञ्ज्

Maitri. 6. 7. र इति रञ्जयतीमानि भूतानि
Kshur. 8. अणुरक्ताश्च पीताश्च (see अणु)
Śiras. 5. ब्रह्मदेवत्या रक्ता वर्णेन
Sikhâ. 1. प्रथमा रक्ता ब्राह्मी ब्रह्मदेवत्या
Garbha. 2. शुक्लो रक्तः कृष्णो धूम्रः

रण

Gîtâ. 1. 22. अस्मिन् रणसमुद्यमे
46. धार्तराष्ट्रा रणे हन्युः
2. 34. भयाद्रणादुपरतम्
11. 34. युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्

रति

Kaush. 1. 7. केनानन्दं रतिं प्रजातिमिति
2. 15. आनन्दं रतिं प्रजातिं मे त्वयि दधानीति पितानन्दं रतिं प्रजातिं ते मयि दध इति पुत्रः
3. 5. तस्यानन्दो रतिः प्रजातिः परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा
6. प्रज्ञयोपस्थं समारुह्योपस्थेनानन्दं रतिं प्रजातिमाप्नोति
7. न हि प्रज्ञापेत उपस्थ आनन्दं न रतिं न प्रजातिं काचन प्रज्ञापयेत्
— नाहमेतमानन्दं न रतिं न प्रजातिं प्राज्ञासिषम्
8. न रतिं..विजिज्ञासीत..रतेः..विज्ञातारं विद्यात्

Katha. 1. 28. वर्णरतिप्रमोदान्

Maitri. 3. 5. हिंसा रतिर्द्विष्टिः
5. 1. विश्वक्रीडारतिप्रभुः

Prasna. 1. 13. ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते
— यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते

Râmap. 80. पीता रतिस्तथा लान्तः

रतिप्रीति

Hamsa. 2. सौम्ये रतिप्रीतिः

रतिमात्र

Maitri. 7. 9. रतिमात्रं फलमस्याः

रत्नधा

Brih. 6. 4. 27. यो मयोभूर्यो रत्नधाः

रत्नमण्डप

Mukti. 1. 1. रत्नमण्डपमध्यगे

रत्नमालिन्

Râmap. 25. द्विभुजः कुण्डली रत्नमाली

रत्नासन

Râmap. 86. रत्नासने देशिकं चार्चयि

रथ

Kaush. 1. 4. यथा रथेन धावयन्
3. 8. यथा रथस्यारेषु नेमिरर्

Chhâ. 4. 16. 3. रथो वैकेन चक्रेण वर्तमा
5. रथो वोभाभ्यां चक्रा वर्त्तमानः

Brih. 4. 2. 1. रथं वा नावं वा समाद
4. 3. 9. न तत्र रथाः..रथान्

Katha. 3. 3. शरीरं रथमेव तु

Maitri. 2. 6. रथः शरीरं मनो नियन

Prasna. 6. 1. स तूष्णीं रथमारुह्य प्राज

Gauda. 2. 3. अभावश्च रथादीनाम्

Prânâg. 3. शारीरयज्ञस्य..को र
4. मनो रथः

Amrita. 2. ओङ्कारं रथमारुह्य
3. तावद्रथेन गन्तव्यम्
— रथमुत्सृज्य गच्छति

Gitâ. 1. 21. रथं स्थापय मे ऽच्युत

रथक्रान्त

Mahânâr. 4. 4. अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते

रथचक्र

Kaush. 1. 4. रथचक्रे पर्यवेक्षेत

Brih. 5. 10. 1. यथा रथचक्रस्य खम्

रथनाभि

Brih. 2. 5. 15. यथा रथनाभौ च रथ
चाराः सर्वे समर्पिताः

Mund. 2. 2. 6. अरा इव रथनाभौ
Prasna. 2. 6; 6. 6.

रथनेमि

Brih. 2. 5. 15. यथा रथनाभौ च रथ
चाराः सर्वे समर्पिताः

रथन्तर

ısh. 1. 5. बृहद्रथन्तरे (bis).

ıâ. 2. 12. 1. एतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतम्
2. स य एवमेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतं वेद

hânâr. 22. 1. गार्हपत्यमृक् पृथिवी रथन्तरम्

tri. 7. 1. गायत्रं त्रिवृद्रथन्तरं..पुरस्ताद्रुयन्ति

ll. 9. रथन्तरे बृहत्साम्नि

रथपथस्थान

rita. 3. स्थित्वा रथपथस्थानम्

रथपथिस्थित

rita. 3. यावद्रथपथिस्थितः

रथयोग

h. 4. 3. 10. न तत्र..रथयोगाः..रथयोगान्सृजते

रथश्रेणि

ıâ. 5. 14. 1. पृथग्रथश्रेणयो ऽनुयन्ति

रथित

tri. 4. 4. यैः परिपूर्णो ऽभिभूतो ऽयं रथितश्च

रथिन्

ıa. 3. 3. आत्मानं रथिनं विद्धि

रथोत्तम

1. 24. स्थापयित्वा रथोत्तमम्

रथोपस्थ

1. 47. रथोपस्थ उपाविशत्

1. रम्

ı. 3. 17. 1. यन्न रमते ता अस्य दीक्षा
2. यद्रमते तदुपसदैरेति

5. 10. 7. रमणीयां योनिमापद्येरन्

Chhâ. 7. 12. 1. आकाशे रमत आकाशे न रमते

8. 12. 3. जक्षन् क्रीडन् रममाणः
5. कामान् पश्यन् रमते

Brih. 1. 4. 3. स वै नैव रेमे तस्मादेकाकी न रमते

4. 3. 5. एतस्मिन्सम्प्रसादे रत्वा
16. एतस्मिन्स्वप्ने रत्वा
17. एतस्मिन् बुद्धान्ते रत्वा
34. एतस्मिन् स्वप्नान्ते रत्वा

4. 4. 10. य उ विद्यायां रताः Isâ 9.

5. 12. 1. रमिति प्राणो वै रं प्राणे हीमानि..भूतानि रमन्ते

Isâ. 12. य उ संभूत्यां रताः

Katha. 1. 28. अतिदीर्घे जीविते को रमेत

Maitri. 2. 6. स नारमतैकः
— स नारमत

Mahânâr. 21. 2. तस्मात्सत्ये रमन्ते
— तस्मात्तपसि रमन्ते
— तस्माद्दमे रमन्ते
— तस्माच्छमे रमन्ते
— तस्माद्दाने रमन्ते
— तस्माद्धर्मे रमन्ते
— तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजनने रमन्ते
— तस्मादग्निहोत्रे रमन्ते
— तस्माद्यज्ञे रमन्ते
— तस्माद्विद्वांस एव मानसे रमन्ते

25. 1. यद्रमते तदुपसदः

Amrita. 17. भूमिभागे समे रम्ये

Yogat. 3. तस्मिन्नेव भगे रमेत्

Nyâsa. 2. गुरुशुश्रूषणे रतः

Gopî. 5. कृष्णगोपीरतोद्भूतम्

Râmap. 6. रमन्ते योगिनो ऽनन्ते

Mukti. 1. 1. अयोध्यानगरे रम्ये
18. दुराचाररतो वापि

Mukti. 1. 22. सदाचाररतो भूत्वा
48. दुराचाररताय वै
1. सर्वभूतहिते रतम्

Gîtâ. 5. 22. न तेषु रमते बुधः
25. सर्वभूतहिते रताः 12. 4.
10. 9. तुष्यन्ति च रमन्ति च
18. 36. अभ्यासाद्रमते यत्र

2. रम्

Brih. 5. 12. 1. रमिति प्राणो वै रम्

रमणीयचरण

Chhâ. 5. 10. 7. रमणीयचरणाः..रमणीयां योनिमापद्येरन्

रमा

Râmap. 60. लिखेद्बीजान्तरे रमाम्
61. कोणपार्श्वे रमामाये
64. लिखेत्तत्केसरे रमाम्

रमाधर

Râmap. 31. रमाधराय रामाय

रमासहित

Râmap. 93. रमासहितः सावृतश्च

रयि

Chhâ. 5. 16. 1. एष वै रयिरात्मा
5. 18. 2. वस्तिरेव रयिः

Praśna. 1. 4. स मिथुनमुत्पादयते रयिं च प्राणं च
5. रयिरेव चन्द्रमा रयिर्वा एतत् सर्वं..तस्मान्मूर्त्तिरेव रयिः
9. एष ह वै रयिर्यः पितृयाणः
12. कृष्णपक्ष एव रयिः
13. रात्रिरेव रयिः
2. 5. वायुरेष पृथिवी रयिर्देवः

Jâbâla. 4. अथा नो वर्द्धया रयिम्

रयिमन्त्

Chhâ. 5. 16. 1. तस्मात्त्वं रयिमान्

रवि

Maitri. 6. 38. रविमध्ये स्थितः सोमः
Gîtâ. 10. 21. ज्योतिषां रविरंशुमान्
13. 33. यथा प्रकाशयत्येकः.. रविः

रवितुल्यरूप

Swet. 5. 8. अङ्गुष्ठमात्रो रवितुल्यरू

रशना

Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..का र ना
4. आशा रशना

रश्मि

Chhâ. 1. 5. 2. रश्मींस्त्वं पर्यावर्त्तयात्
3. 1. 2. तस्य ये प्राञ्चो रश्मयः
3. 2. 1. ये ऽस्य दक्षिणा रश्मयः
3. 3. 1. ये ऽस्य प्रत्यञ्चो रश्मय
3. 4. 1. ये ऽस्योदञ्चो रश्मयः
3. 5. 1. ये ऽस्योर्द्ध्वा रश्मयः
5. 4. 1. रश्मयो धूमः Brih. 6. 2
8. 6. 2. आदित्यस्य रश्मय उ लोकौ गच्छन्ति
5. रश्मिभिरूर्ध्व आक्रमते

Brih. 5. 5. 2. रश्मिभिरेषो ऽस्मिन्प्रति त:
— नैनमेते रश्मयः प्रत्या
5. 15. 1. व्यूह रश्मीन् समूह तेजः Îśâ. 16.

Maitri. 2. 6. पञ्चभी रश्मिभिर्विषया 6. 31.
— बुद्धीन्द्रियाणि..अस्य रश्मयः
6. 9. सवितुश्च रश्मयः पुन न्नम्
12. सूर्यो रश्मिभिराददात्य
30. अनन्ता रश्मयस्तस्य
— ये नैकरूपास्त्वधस्ता .....यः

i. 6. 30. यदस्यान्यद्रश्मिशतम्
37. तत्सूर्यो रश्मिभिर्वर्षति
1.1. 2. 5. तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयः
6. सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति
nâr. 23. 1. यांभिरादित्यस्तपति रश्मिभिः
nâ. 1. 6. प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते
— सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते
19. ये च सूर्यस्य रश्मिषु
ta. 5. चिन्तयेदात्मनो रश्मीन्

रश्मिज्वाला

ś.i. 5. रश्मिज्वालासमाकुलम्

रस्

4. 3. 23. यद्वै तन्न रसयते रसयन्वै तन्न रसयते
— न तु..ततोऽन्यद्विभक्तं यद्रसयेत्
31. तत्रान्यो ऽन्यद्रसयेत्
4. 4. 2. एकी भवति न रसयते
4. 5. 15. इतर इतरं रसयते..तत्केन कं रसयेत्
i. 6. 7. यत्र द्वैतीभूतं विज्ञानं तत्र..रसयति
ta. 4. 2. न जिघ्रति न रसयते
8. रसश्च रसयितव्यं च

रस

1. 1. 2. एषां भूतानां पृथिवी रसः Bṛih. 6. 4. 1.
— पृथिव्या आपो रसः (similarly 5 times more).
3. स एष रसानां रसतमः

Chhâ. 1. 1. 9. एतस्यैवाक्षरस्य..महिम्ना रसेन
1. 2. 10. एतमु एवांगिरसं मन्यन्ते अंगानां यद्रसः
3. 1. 3. तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसो ऽजायत 3. 2. 2; 3. 3. 2; 3. 4. 2; 3. 5. 2.
3. 5. 4. एते रसानां रसा वेदा हि रसास्तेषामेते रसाः
4. 17. 1. रसान् प्रावृहत् 2, 3.
4. ऋचामेव तद्रसेन
5. यजुषामेव तद्रसेन
6. साम्नामेव तद्रसेन
6. 9. 1. नानात्ययानां वृक्षाणां रसान् समवहारमेकतां रसं गमयन्ति
— अमुष्याहं वृक्षस्य रसो ऽस्मि (bis).
7. 7. 1. अन्नं च रसं च
Bṛih. 1. 3. 8. आङ्गिरसो ऽङ्गानां हि रसः 19.
19. प्राणो वा अङ्गानां रसः
— एष हि वा अङ्गानां रसः
2. 3. 2. सत एष रसो य एष तपति सतो ह्येष रसः
3. त्यस्यैष रसः..त्यस्य ह्येष रसः 5.
4. सत एष रसो यच्चक्षुः सतो ह्येष रसः
2. 4. 11. सर्वेषां रसानां जिह्वैकायनम् 4. 5. 12.
3. 2. 4. स रसेनातिग्राहेण गृहीतो जिह्वया हि रसान्विजानाति
3. 9. 28. तस्मात्तदा तृणात्प्रैति रसः
Tait. 2. 6. 1. यद्वैतत्सुकृतं रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति

Katha. 4. 3. येन रूपं रसं..एतेनैव वि-
जानाति
Maitri. 5. 2. तत्सत्त्वमेवेरितं रसः स-
म्प्रास्रवत्
6. 13. प्राणो वा अन्नस्य रसः
31. अपां यः शिवतमो रसः
35. आपो ज्योती रसः Siras 6; Prâṇâg. 1; Mahânâr. 13. 1; 15. 2, 3.
37. अतो यो रसो ऽस्रवत्
Muṇḍ.2. 1. 9. अतश्च सर्वा ओषधयो
रसश्च Mahânâr. 8. 5.
(विश्वा)
Prasna. 4. 8. रसश्च रसयितव्यं च
Garbha. 1. मधुराम्ललवणतिक्तकटुक-
षायरसान् विन्दति
2. षड्विधो रसो रसाच्छोणितम्
Sarvop. 2. शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः
Parama. 2. न रूपं न रसम्
3. हिरण्यं रसेन दृष्टम्
— हिरण्यं रसेन स्पृष्टम्
— हिरण्यं रसेन ग्राह्यम्
— पूर्णानन्दैकरूपरसबोधः
Râmot. 3. परं ज्योती रसो ऽहम्
Gitâ. 2. 59. रसवर्जं रसो ऽप्यस्य
7. 8. रसो ऽहमप्सु कौन्तेय

रसघन

Bṛih. 4. 5. 13. कृत्स्नो रसघन एव

रसतम

Chhâ. 1. 1. 3. स एष रसानां रसतमः

रसन

Garbha. 1. जिह्वा रसने
Gitâ. 15. 9. रसनं घ्राणमेव च

रसनाग्र

Maitri. 6. 20. तालुरसनाग्रनिपीडनात्

रसयति

Bṛih. 4. 3. 25. न हि रसयितू रसयते
रिलोपः

रसयितृ

Bṛih. 4. 3. 25. न हि रसयितू रसयते
रिलोपः
Maitri. 6. 7. वक्ता रसयिता घ्राता
11. वक्ता भवति रसयिता
ति
Prasna. 4. 9. एष हि..घ्राता रसयि

रसातल

Aruṇeya. 1. *vide* तलातल

रसात्मक

Gitâ. 15. 13. सोमो भूत्वा रसात्मकः

रसादि

Gauḍa. 3. 11. रसादयो हि ये कोशाः

रस्य

Gitâ. 17. 8. रस्याः स्निग्धाः स्थिरा

रहस्

Gitâ. 6. 10. रहसि स्थितः

रहस्य

Maitri. 6. 20. मोक्षलक्षणमित्येतत्सरं
स्यम्
Nṛisut. 8. अभयं हि वै ब्रह्म भवति
एवं वेदेति रहस्यं
(4 times).
Brahmav. 2. रहस्यं ब्रह्मविद्यायाम्
Gopî. 4. य एतद्रहस्यं सायं प्राता
येत्
5. सरहस्योपनिषत्कम्
Râmap. 84. इदं रहस्यं परमम्
Mukti. 1. 33. रहस्यं वज्रसूचिकम्
35. रहस्यं रामतपनम्
40. *vide* मुक्तिका
Gitâ. 4. 3. रहस्यं ह्येतदुत्तमम्

रहित

6. 34. लयविक्षेपरहितम्
7. उपाधिरहितं स्थानम्
p. 3. उत्पत्तिविनाशरहितं चैत-
न्यम्
a. 2. षडूर्मिरहितम्
3. देहादिरहितं सूक्ष्मम्
i. 1. 20. पुनरावृत्तिरहितां मुक्तिम्

रा

p. 1. रघोः कुले ऽखिलं राति
5. तथा रात्यस्य रामाख्या

1. राक्षस *adj.*

9. 12. राक्षसीमासुरीं चैव

2. राक्षस

i. 1. 4. *vide* आदि
7. 8. ditto.
p. 2. राक्षसा येन मरणं यान्ति
3. राक्षसान्मर्त्यरूपेण

राग

i. 3. 5. अन्तस्तृष्णा स्नेहो रागः
l. 2. 9. यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति
रागात्
a. 3. त्यागो रागे
2. 64. रागद्वेषवियुक्तैस्तु
3. 34. रागद्वेषौ व्यवस्थितौ
7. 11. कामरागविवर्जितम्
17. 5. कामरागबलान्विताः
18. 51. रागद्वेषौ व्युदस्य च

रागात्मक

14. 7. रजो रागात्मकं विद्धि

रागान्ध

i. 4. 2. महान्धकारमिव रागान्धम्

रागिन्

18. 27. रागी कर्मफलप्रेप्सुः

राघव

Râmap. 40. मोदते राघवस्तदा
42. निहत्य राघवः
91. आराधयेद्राघवं चन्दनाद्यैः
93. विश्वव्यापी राघवः
Mukti. 1. 10. तेषां शाखाश्च राघव

राज्

Râmap. 1. राजते यो महीस्थितः

राजकर्मन्

Maitri. 7. 8. राजकर्मणि पतितादयः

राजगुह्य

Gîtâ. 9. 2. राजविद्या राजगुह्यम्

राजन्

Kaush. 2. 9. सोमो राजासि
— तेन मुखेन राज्ञो ऽत्सि
— राजा त एकं मुखं तेन मु-
खेन विशो ऽत्सि
4. 15. यमो राजेति वा अहमेतमु-
पासे
19. सोम राजन्निति Bṛih. 2.
1. 15.
Chhâ. 1. 10. 6. राजासौ यक्ष्यते
5. 2. 6. स हि ज्येष्ठः श्रेष्ठो राजाधि-
पतिः
5. 3. 6. गौतमो राज्ञो ऽर्द्धमेयाय
— तत्रैव राजन्मानुषं वित्तम्
5. 4. 2. तस्या आहुतेः सोमो राजा
संभवति
5. 5. 2. सोमं राजानं जुह्वति Bṛih.
6. 2. 10.
5. 10. 4. एष सोमो राजा
5. 12. 1. दिवमेव भगवो राजन्
(similarly in Sections
13—17).
8. 14. 1. यशो राज्ञां यशो विशाम्

Brih. 1. 3. 24. राजानं भक्षयसुवाचार्यं त्यस्य राजा मूर्द्धानं विपातयतात्
1. 4. 11. यद्यपि राजा परमतां गच्छति
14. बलीयांसमाशंसते धर्मेण यथा राज्ञा
2. 1. 2. सर्वेषां भूतानां मूर्द्धा राजा (bis).
3. बृहन्पाण्डरवासाः सोमो राजा
2. 5. 15. आत्मा..सर्वेषां..राजा
4. 3. 20. यत्र देव इव राजेव
33. मेधावी राजा
37. यथा राजानमायान्तम्
38. यथा राजानं प्रयियासन्तम्
6. 2. 9. तस्या आहुत्यै सोमो राजा संभवति
16. यथा सोमं राजानं..भक्षयन्ति
6. 3. 5. स हि राजेशानो ऽधिपतिः स मां राजेशानो ऽधिपतिं करोतु
Maitri. 1. 2. बृहद्रथो वै नाम राजा
— वरं वृणीष्वेति राजानमब्रवीत्
— राजेमां गाथां जगाद
4. मरुत्तभरतप्रभृतयो राजानः
2. 1. सुप्रीतस्त्वब्रवीद्राजानम्
3. राजन्..अहं ते कथयिष्यामि
6. 29. अनया ब्रह्मविद्यया राजन्
7. 8. इदानीं ज्ञानोपसर्गा राजन्
Mahânar. 5. 2. तन्मे वरुणो राजा पाणिना ह्यवमर्शतु
6. 1. जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा
Nîla. 2. उभयो राज्ञोर्ज्याम्
Nâda. 12. स राजा भारते वर्षे

Gopî. 5. राजभिः सत्कृतो भवेत्
Gîtâ. 1. 2. राजा वचनमब्रवीत्
16. अनन्तविजयं राजा
11. 9. एवमुक्त्वा ततो राजन्
18. 76. राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिमम्
77. विस्मयो मे महान् राज

राजन

Chhâ. 2. 20. 1. एतद्राजनं देवतासु प्रोतम्

राजन्यबन्धु

Chhâ. 5. 3. 5. पञ्च मा राजन्यबन्धुः प्राक्षीत्
Brih. 6. 2. 3. पञ्च मा प्रश्नान् राजन्यबन्धुरप्राक्षीत्

राजपुत्र

Praśna. 6. 1. हिरण्यनाभः कौसल्यो राजपुत्रः

राजर्षि

Gîtâ. 4. 2. इमं राजर्षयो विदुः
9. 33. भक्ता राजर्षयस्तथा

राजविद्या

Gîtâ. 9. 2. राजविद्या राजगुह्यम्

राजस

Maitri. 3. 5. अन्तस्तृष्णा .. अन्यत स्त्विति राजसानि
5. 2. अस्य राजसो ऽंशो ऽसौ ..यो ऽयं ब्रह्मा
Krish. 5. सत्त्वराजसतामसी
6. भक्ते ब्रह्मणि राजसी
Gîtâ, 7. 12. राजसास्तामसाश्च ये
14. 18. मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः
17. 2. सात्त्विकी राजसी चैव
4. यक्षरक्षांसि राजसाः
9. आहारा राजसस्येष्टाः
12. तं यज्ञं विद्धि राजसम्

17. 18. राजसं चलमध्रुवम्
21. तज्ज्ञानं राजसं स्मृतम्
18. 8. स कृत्वा राजसं त्यागम्
21. तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्
24. तद्राजसमुदाहृतम्
27. राजसः परिकीर्तितः
31. बुद्धिः सा पार्थ राजसी
34. धृतिः सा पार्थ राजसी
38. तत्सुखं राजसं स्मृतम्

राजसूय

. 1. 4. 11. ब्राह्मणः क्षत्रियमधस्तादुपास्ते राजसूये

राजस्तंबायन

. 6. 5. 4. कुश्रियेंज्ञवचसो राजस्तंबायनात्
— यज्ञवचा राजस्तंबायनस्तुरात्कात्रेयात्

राजि

. 2. 2. 2. इमा अक्षन् लोहिन्यो राजयः

राज्ञी

ā. 3. 15. 2. राज्ञी नाम प्रतीची

राज्य

ā. 2. 24. 4. पश्येम त्वा वयं राज्यायेति
5. 2. 6. स मा.. राज्यं.. गमयतु
ap. 42. राज्ये सुग्रीवं स्थापयेत्
ti. 1. 47. राज्यं देयं धनं देयम्
1. 32. न च राज्यं सुखानि च
— किं नो राज्येन गोविन्द
33. राज्यं भोगाः सुखानि च
35. त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः
45. यद्राज्यसुखलोभेन
2. 8. राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्
11. 33. भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्

राज्याभिषिक्त

Râmap. 81. राज्याभिषिक्तस्य तस्य रामस्य

राज्यार्ह

Râmap. 4. राज्यार्हाणां महीभृताम्

राति

Bṛih. 3. 9. 28. रातेर्दातुः परायणम्

रात्रि, रात्री

Chhâ. 5. 2. 4. पौर्णमास्यां रात्रौ
5. 6. 1. रात्रिरर्चिः Bṛih. 6. 2. 11.
5. 10. 3. धूमाद्रात्रिं रात्रेरपरपक्षम्
7. 9. 1. यद्यपि दशरात्रीर्नाश्नीयात्
Bṛih. 1. 1. 2. रात्रिरेनं पश्चान्महिमा
1. 5. 14. तस्य रात्रय एव पञ्चदश कलाः
— स रात्रिभिरेवा च पूर्यते
— अमावास्यां रात्रिम्
— तस्मादेतां रात्रिं.. प्राणं न विच्छिन्द्यात्
6. 2. 16. धूमाद्रात्रिं रात्रेरपक्षीयमाणपक्षम्
Kaṭha. 1. 9. तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मे ऽनश्नन्
11. सुखं रात्रीः शयिता
Śwet. 4. 18. यदातमस्तन्न दिवा न रात्रिः
Mahânâr. 5. 5. ततो रात्र्यजायत
14. 4. यद्रात्र्या पापमकार्षं.. रात्रिस्तदवलुम्पतु
Praśna. 1. 13. अहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः
— ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते
Kaṭhaśru. 1. यथाहनि तथा रात्रौ
Vâsu. 4. रात्रावग्निहोत्रभस्मना
Gîtâ. 8. 17. रात्रिं युगसहस्रान्ताम्
25. धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः

रात्रिकृत

Nâr. 5. रात्रिकृतं पापं नाशयति

रात्र्यागम

Gîtâ. 8, 18. रात्र्यागमे प्रलीयन्ते
19. रात्र्यागमे ऽवशः पार्थ

राथीतर

Tait. 1, 9, 1. सत्यवचा राथीतरः

राथीतरीपुत्र

Bṛih. 6, 5, 2. शाण्डिलीपुत्रो राथीतरीपुत्रात्
— राथीतरीपुत्रो भालुकीपुत्रात्

राध्

Bṛih. 4, 3, 33. स यो मनुष्याणां राद्धः
Tait. 3, 10, 1. अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते
— एतद्वै मुखतो ऽन्नं राद्धं मुखतो ऽस्मा अन्नं राध्यते
— एतद्वै मध्यतो ऽन्नं राद्धं मध्यतो ऽस्मा अन्नं राध्यते
— एतद्वा अन्ततो ऽन्नं राद्धमन्ततो ऽस्मा अन्नं राध्यते

राम

Kṛish. 8. वेदार्थः कृष्णरामयोः
14. शेषनागो ऽभवद्रामः
Râmap. 2. स राम इति लोकेषु
3. रामनाम भुवि ख्यातम्
5. तथा रात्यस्य रामाख्या
17. सीतारामौ तन्मयौ
— ततो रामो मानवः
19. चात्मा रामेति गीयते
20. रामो वाच्यः स्यात्
23. अत्र रामो ऽनन्तरूपः
30. कामरूपाय रामाय
31. रमाधराय रामाय
Râmap. 36. रामो लक्ष्मण एव च
38. रामलक्ष्मणौ
39. स तु रामे शंकितः सन्
— यो रामस्तमग्निक्षिपत्
44. आगत्य रामेण सह (N...
explains रामाय स्वयं...
45. तदा रामः क्रोधरूपी
74. हुंकारं चात्र रामस्य
81. राज्याभिषिक्तस्य तस्य रामस्य
92. रामं वन्दे सच्चिदानन्दरूपम्
Râmot. 3. अर्द्धमात्रात्मको रामः
— सदा रामो ऽहम्
— राम एव न संशयः
Mukti. 1. 4. रामं स्तुवन्नपृच्छ
— राम त्वं परमात्मासि
5. त्वद्रूपं ज्ञातुमिच्छामि. राम
6. कृपया वद मे राम
10. राम वेदाः कतिविधाः
15. राम केचिन्मुनिश्रेष्ठाः
Gîtâ. 10, 31. रामः शस्त्रभृतामहम्

रामचन्द्र

Râmot. 3. यत्परं ब्रह्म रामचन्द्रश्चिदात्मकः सो ऽहम्

रामतपन, °तापनी

Mukti. 1. 35. रहस्यं रामतपनम्
1. *vide* गारुड

रामपत्नी

Râmap. 35. रामपत्नीं वनस्थाम्

रामपद

Râmap. 6. इति रामपदेनासौ

रामबीजस्थ

Râmap. 16. तथैव रामबीजस्थम्

रामभद्र

map. 33. रामभद्र महेष्वास
mot. 3. ओं तद्रामभद्रः परं ज्योतिः

रामरहस्य

ıkti. 1. *vide* गारुड

रामा

ıtha. 1. 25. इमा रामाः सरथाः सतूर्याः

रामाख्या

ımap. 5. तथा रात्यस्य रामाख्या

रायस्पोष

ir. 4. विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं गौष्पत्यम्
ɔpi. 4. ततः प्राजापत्यं रायस्पोषं गौष्पत्यं च

राव

ımap. 36. यद्वा रावाच्च रावणः

रावण

ımap. 35. तदा रावण आसुरः
36. स रावण इति ख्यातो यद्वा रावाच्च रावणः

राशि

hâ.7. 1. 2. अध्येमि..राशिम्
4. नाम वै..राशिः
7. 2. 1. वाग्वै..विज्ञापयति..राशिम्
7. 7. 1. विज्ञानेन वै .. विजानाति ..राशिम्
map. 71. राश्यादिभूषितम्

राष्ट्रवर्द्धन

map. 55. राष्ट्रवर्द्धन एव च

राहु

.8. 13. 1. चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य
ri. 7. 6. *vide* आदि

Râmap. 3. राहुर्मनसिजं यथा

रिच्

Amṛita. 20. ओमित्येकेन रेचयेत्

रिपु

Gîtâ. 6. 5. आत्मैव रिपुरात्मनः

रिष्

Chhâ. 4. 16. 3. रथो वैकेन चक्रेण वर्त्तमानो रिष्यत्येवमस्य यज्ञो रिष्यति यज्ञं रिष्यन्तं यजमानो ऽनुरिष्यति
4. 17. 4. तद्यृक्तो रिष्येत्
5. यदि यजुष्टो रिष्येत्
6. यदि सामतो रिष्येत्
Bṛih. 1. 5. 20. न व्यथते ऽथो न रिष्यति 21.
3. 9. 26. असितो न व्यथते न रिष्यति 4.2.4; 4.4.22; 4.5.15.
Śwet. 4. 22. मा नो अश्वेषु रीरिषः

रु

Mahânâr.10. 1. त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति

रुक्मवर्ण

Maitri. 6. 18. यदा पश्यन् पश्यति रुक्मवर्णम्
Muṇḍ.3. 1. 3. यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णम्

रुच्

Mahânâr.22. 1. सत्येनादित्यो रोचते दिवि
Nṛip. 2. 4. रोचनो रोचमानः (bis).
Yogaśi. 2. यच्चान्यत्रापि रोचते
Jâbâla. 4. यतो जातो अरोचथाः

रुचिर

Śikhâ. 1. रुचिरा भास्वती स्वभा (4 MSS. omit रुचिरा
Amṛita. 8. रुचिरं चैव चिन्तयेत्
9. रुचिरे रेचकं चैव

रुद्

Kaush. 2. 8. मार्हं पुत्र्यमघं रुदमिति
Chhâ. 3. 15. 2. न पुत्ररोदं रोदिति
— मा पुत्ररोदं रुदम्
3. 16. 3. प्राणा वाव रुद्रा एते हीदं सर्वं रोदयन्ति
8. 10. 2. अपि रोदितीव 4.
Bṛih. 3. 9. 4. शरीरान्मर्त्यादुत्क्रामन्त्यथ रोदयन्ति तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्राः

रुद्र

Chhâ. 2. 24. 1. रुद्राणां माध्यन्दिनं सवनम्
10. तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनं सवनं संप्रयच्छन्ति
3. 7. 1. यद् द्वितीयममृतं तद्रुद्रा उपजीवन्ति
3. रुद्राणामेवैको भूत्वा
4. रुद्राणामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता
3. 16. 3. तदस्य रुद्रा अन्वायत्ताः प्राणा वाव रुद्राः
4. स ब्रूयात्प्राणा रुद्राः
— माहं प्राणानां रुद्राणां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय
Bṛih. 1. 4. 11. इन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः
12. वसवो रुद्रा आदित्याः
2. 2. 2. ताभिरेनं रुद्रोऽन्वायत्तः
3. 9. 2. एकादश रुद्राः
4. कतमे रुद्रा इति..तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्रा इति
Śwet. 3. 2. एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः
4. विश्वाधिको रुद्रो महर्षिः 4. 12; Mahânâr. 10. 3.
5. या ते रुद्र शिवा तनूः Nîla. 1.
4. 21. रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखम्
Śwet. 4. 22. वीरान्मा नो रुद्र भामि वधीः
Maitri. 4. 5. ब्रह्मा रुद्रो विष्णुः
5. 1. त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः
2. अस्य तामसो ऽंशो ऽसौ .. यो ऽयं रुद्रः
6. 5. ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्य पतिवत्येषा
7. भर्जयतीति वैष भर्गो रुद्रः
8. शम्भुर्भवो रुद्रः 7. 7.
26. एतद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्
7. 2. सोमो रुद्रा दक्षिणत उर्ध्
Mahânâr. 3. 1. तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् 2; 17. 4.
13. 2. सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्र नमः
— पुरुषो वै रुद्रस्तन्महः
15. 6. त्वं रुद्रस्त्वं ब्रह्मा त्वं प्रज पतिः
16. 2. रुद्रोमाविशान्तकः
17. 3. नमस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ
Praśna. 2. 9. रुद्रो ऽसि परिरक्षिता
Nṛip. 1. 2. वसुरुद्रादित्यैः
2. 1. विष्णुरुद्राः Nṛisut. 3.
4. 3. यो वै नृसिंहः..ये च रु स्तस्मै वै नमो नमः (1
5. 2. रुद्रा दक्षिणतः (आसते
Nṛisut. 3. मकारं रुद्रं भ्रूमध्ये
— रुद्रमेव..सम्पूज्य
Chûl. 12. शर्वो भवश्च रुद्रश्च
Śiras. 1. ते रुद्रमपृच्छन् को भव निति
— ते देवा रुद्रमपृच्छन्
— ते देवा रुद्रमपश्यन्
— ते देवा रुद्रमध्यायन्
— ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रु स्तुवन्ति

2. यो वै रुद्रः स भगवान्.. तस्मै वै नमो नमः (31 times).
3. य एकः स रुद्रो यो रुद्रः स ईशानः
4. कस्मादुच्यते रुद्रः..तस्मादुच्यते रुद्रः
5. एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्थौ
— बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः (bis).
— रुद्रो हि..इषं..नियन्ता
6. यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तः
— तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये
— यो रुद्रो अग्नौ यो रुद्रो अप्स्वन्तर्यो रुद्र ओषधीर्वीरुध आविवेश
— यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः
— यो रुद्रो अप्सु यो रुद्र ओषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु
— येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं..तस्मै रुद्राय वै नमो नमः
— व्यापको हि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शयते रुद्रः
7. रुद्राणां शतसहस्राणि जप्तानि भवन्ति Mahâ. 4.
1. रुद्रो रुद्रास्त्रिष्टुब्दक्षिणाग्निः (one MS. has विष्णुरुद्रो रुद्राः)
2. ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्राः सम्प्रसूयन्ते
— ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च
2. भ्रुवोर्मध्ये रुद्रः

Prâṇâg. 1. रुद्रैः प्रजग्धं यदि वा पिशाचैः
— त्वं यज्ञस्त्वं ब्रह्मा त्वं रुद्रः
Nîla. 1. अपश्यमस्यन्तं रुद्रम्
3. एष एत्यवीरहा रुद्रः
9. ये चेमे अभितो रुद्राः
Nâda. 15. अष्टम्यां व्रजते रुद्रम्
Nâr. 1. नारायणाद्रुद्रो जायते
— नारायणादेकादश रुद्राः
3. रुद्रं स सारथिं कृत्वा
Haṁsa. 2. मुखे रुद्रः
Jâbâla. 1. रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे Râmot. 1.
Kṛish. 3. रुद्रादीनां वचः श्रुत्वा
6. प्रोक्ता सात्त्वीच रुद्रस्य (2 MSS. have रुद्रे सा)
10. वंशस्तु भगवान् रुद्रः
13. रुद्रो येन कृतो वंशः
Râmap. 69. एकादशरुद्रांश्च तत्र वै
75. रुद्रेण संयुता
Râmot. 5. ये चैकादश रुद्राः (33).
Gîtâ. 10. 23. रुद्राणां शंकरश्चास्मि
11. 6. रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा
22. रुद्रादित्या वसवो ये च साध्याः

रुद्रचरित

Śiras. 4. तदेतद्रुद्रचरितम्

रुद्रजापक

Nṛip. 5. 10. यतीनां तु शतं पूर्णं रुद्रजापकेन तत्समम्
— रुद्रजापकशतमेकम्

रुद्रजापिन्

Kâlâg. 2. स सततं रुद्रजापी भवति

रुद्रत्व

Maitri. 6. 26. एतद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्

रुद्रदेवत्य

Sikhâ. 1. द्वितीया शुभशुक्ला रौद्री रुद्रदेवत्या

रुद्रपूत

Nrip. 5. 3. स रुद्रपूतो भवति

रुद्रयुक्त

Râmap. 79. कामिका रुद्रयुक्ता

रुद्राक्ष

Mukti. 1. 38. रुद्राक्षगणदर्शनम्
1. *vide* जाबालि

रुद्राणी

Haṁsa. 2. रुद्राणी चरणी

रुद्राराधनतत्पर

Amrita. 2. ब्रह्मलोकपदान्वेषी रुद्राराधनतत्परः

रुध्

Brih. 1. 4. 8. प्रियं रोत्स्यतीति
Gîtâ. 4. 29. प्राणापानगती रुद्ध्वा

रुधिर

Brih. 3. 9. 28. त्वच एवास्य रुधिरं प्रस्यन्दि
Gîtâ. 2. 5. रुधिरप्रदिग्धान्

रुह्

Brih. 3. 9. 28. वृक्षो वृक्णो रोहति मूलात्

रूक्ष

Gîtâ. 17. 9. *vide* विदाहिन्

रूप

Ait. 5. 1. येन वा रूपं पश्यति
Kaush. 1. 7. केन रूपाणीति चक्षुषेति
3. 2. चक्षुषा रूपं (प्रज्ञापयितुं)
3. चक्षुः सर्वैः रूपैः सहाप्येति (bis); 4. 20.

Kaush. 3. 4. चक्षुरवोस्मिन् सर्वाणि पाण्यभिविसृज्यन्ते चक्षु सर्वाणि रूपाण्याप्नोति
5. तस्य रूपं परस्तात्प्रति हिता भूतमात्रा
6. प्रज्ञया चक्षुः समारुह्य च षा सर्वाणि रूपाण्याप्नो
7. न हि प्रज्ञापेतं चक्षूरूपं चन प्रज्ञापयेत्
— नाहमेतद्रूपं प्राज्ञासिषम्
8. न रूपं विजिज्ञासीत द्र विद्यात्
— न ह्यन्यतरतो रूपं किं सिध्येत्

Kena. 9. दभ्रमेवापि नूनं त्वं ब्रह्मणो रूपम्

Chhâ. 1. 7. 5. तस्यैतस्य तदेव रूपं मुष्य रूपम्
3. 1. 4. एतदादित्यस्य रोहितं
3. 2. 3. एतदादित्यस्य शुक्लं रू
3. 3. 3. एतदादित्यस्य कृष्णं रू
3. 4. 3. एतदादित्यस्य परःकृष्ण पम्
3. 6. 2. त एतदेव रूपमभिसं न्त्येतस्माद्रूपादुद्यन्ति 3. 7. 2; 3. 8. 2; 2; 3. 10. 2.
3. स एतदेव रूपमभिसं त्येतस्माद्रूपादुदेति 3. 3. 8. 3; 3. 9. 3; 3.
6. 4. 1. रोहितं रूपं तेजस 2, 3, 4.
— त्रीणि रूपाणीत्येव 2, 3, 4.
6. यदु रोहितमिवाभूदि जसस्तद्रूपं.. यदु शु वाभूदित्यपां रूपं.. कृष्णमिवाभूदित्यन्न पम्

8. 3. 4. स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते 8. 12. 2, 3; Maitri 2. 2.
1. 4. 11. तच्छ्रेयोरूपमत्यसृजत क्षत्रम्
14. तच्छ्रेयोरूपमत्यसृजत धर्मम्
15. एताभ्यां हि रूपाभ्यां ब्रह्माभवत्.
1. 5. 8. यत्किञ्च विज्ञातं वाचस्तद्रूपम्
9. यत्किञ्च विजिज्ञास्यं मनसस्तद्रूपम्
10. यत्किञ्चाविज्ञातं प्राणस्य तद्रूपम्
21. अस्यैव सर्वे रूपमसाम
— एतस्यैव सर्वे रूपमभवन्
1. 6. 1. त्रयं वा इदं नाम रूपं कर्म
2. रूपाणां चक्षुरित्येतदेषामुक्थमतो हि सर्वाणि रूपाण्युत्तिष्ठन्ति
— एतद्धि सर्वै रूपैः समम्
— एतदेषां ब्रह्मैतद्धि सर्वाणि रूपाणि बिभर्ति
2. 3. 1. द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे Maitri. 6. 3, 15.
6. तस्य हैतस्य पुरुषस्य रूपम्
2. 4. 11. सर्वेषां रूपाणां चक्षुरेकायनम् 4. 5. 12.
2. 5. 19. रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव Katha. 5. 9, 10.
— तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय
3. 2. 5. स रूपेणातिग्राहेण गृहीतश्चक्षुषा हि रूपाणि पश्यति
3. 9. 12. रूपाण्येव यस्यायतनम् 15.
20. कस्मिन्नु चक्षुः प्रतिष्ठितमिति रूपेष्विति चक्षुषा हि रूपाणि पश्यति कस्मिन्नु रूपाणि &c.

Bṛih. 4. 3. 7. अतिक्रामति मृत्यो रूपाणि
13. रूपाणि देवः कुरुते बहूनि
21. अपहतपाप्माभयं रूपम्
— अकामं रूपं शोकान्तरम्
4. 4. 4. नवतरं कल्याणतरं रूपम् (bis).
5. 15. 1. यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि Iśâ. 16.
6. 4. 21. त्वष्टा रूपाणि पिंशतु
Kaṭha. 4. 3. येन रूपं रसं . . एतेनैव विजानाति
5. 9. रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च 10.
12. एकं रूपं बहुधा यः करोति
6. 9. न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य Śwet. 4. 20; Mahânâr. 1. 11.
Śwet. 2. 11. एतानि रूपाणि पुरःसराणि
5. 2. विश्वानि रूपाणि योनीश्च सर्वाः
11. स्थानेषु रूपाण्यभिसंप्रपद्यते
12. स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि चैव रूपाणि
Maitri. 2. 6. उत्तरं व्यानस्य रूपं च
3. 3. एतद्वै नानात्वस्य रूपम्
5. 2. एतद्रूपं वै रजः
— एतद्वै सत्त्वस्य रूपम्
6. 11. परं वा एतदात्मनो रूपं यदन्नम्
14. तस्यैतद्रूपं यन्निमेषादिकालात् संभृतम्
15. सकलस्य वा एतद्रूपं यत् संवत्सरः
17. अस्यैतद्भास्वरं रूपम्
26. यदुज्ज्वलत्येतद्ब्रह्मणो रूपम्
Mahânâr. 17. 3. नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः
Gauḍa. 3. 6. रूपकार्यसमाख्याश्च

Nrip. 2. 4. जगद्धितं वा एतद्रूपमक्षरं भवति
— यस्य रूपं दृष्ट्वा सर्वे लोकाः..भीत्या पलायन्ते

Nrisut. 3. ओतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपा (twice with रूपम्)
9. इदं रूपमस्य

Kshur. 12. तद्रूपं नाम कृन्तयेत्

Śiras. 4. द्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते

Garbha. 1. चक्षुषी रूपे
5. दर्शनाम्नी रूपाणां दर्शनं करोति

Amrita. 14. अन्धवत् पश्य रूपाणि

Sarvop. 2. शब्दस्पर्शरूपरसगंधाः

Parama. 2. न रूपं न रसम्
3. पूर्णानन्दैकरूपरसबोधः (MSS.)

Gopî. 2. एष ब्रह्मानन्दरूपः
— ब्रह्मानन्दैकरूपम्
5. चिद्घनानन्दैकरूपम्
— पुरुषोत्तमरूपेण
— परब्रह्मानन्दैकरूपम्

Mukti. 1. 5. त्वद्रूपं ज्ञातुमिच्छामि
24. ध्यायन्मद्रूपमव्ययम्
2. क्लेशरूपत्वात्
2. 72. अनामगोत्रं मम रूपमीदृशम्

Gîtâ. 11. 3. द्रष्टुमिच्छामि ते रूपम्
5. पश्य मे पार्थ रूपाणि
9. परमं रूपमैश्वरम्
20. दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदम्
23. रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम्
45. तदेव मे दर्शय देव रूपम्
46. तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
47. रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्
49. दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्
— तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य
50. स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः

Gîtâ. 11. 51. दृष्ट्वेदं मानुषं रूपम्
52. सुदुर्दर्शमिदं रूपम्
— देवा अप्यस्य रूपस्य
15. 3. न रूपमस्येह तथोपल॰
18. 77. रूपमत्यद्भुतं हरेः

रूपक

Maitri. 6. 36. द्वे वाव खल्वेते ब्रह्मज्योतिषो रूपके

रूपकल्पना

Râmap. 7. ब्रह्मणो रूपकल्पना

रूपधृक्

Krish. 22. तच्चक्रं ब्रह्म रूपधृक्

रूपवर्जित

Tejo. 6. त्रिधातुं रूपवर्जितम्

रूपस्थ

Râmap. 8. रूपस्थानां देवतानाम्

रूपिन्

Nrisut. 9. ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी

Râmap. 32. दशास्यान्तकरूपिणे

Mukti. 1. 18. पारमार्थिकरूपिणी

रेखा

Kâlâg. 1. का रेखाः किं दैवतं के॰
— तिर्यक् तिस्रो रेखाः॰ वीत
2. यास्य प्रथमा रेखा
— यास्य द्वितीया रेखा
— यास्य तृतीया रेखा

रेखात्रय

Râmap. 70. रेखात्रयसमन्वितम्

रेचक

Amrita. 9. रुचिरं रेचकं चैव
— रेचकपूरककुम्भकाः
11. रेचकस्येति लक्षणम्

18. 13. रेचकेन तु विद्यात्मा

रेतस्

1. 4. शिश्नाद्रेतो रेतस आपः
2. 4. आपो रेतो भूत्वा शिश्नं प्राविशन्
4. 1. एतद्रेतस्तदेतत्सर्वेभ्यो ऽङ्गेभ्यस्तेजः
h. 1. 2. विचक्षणादृतवो रेत आभृतम्
6. रेतः संवत्सरस्य
.3. 17. 7. आदित् प्रत्नस्य रेतसः
5. 7. 2. तस्या आहुते रेतः संभवति
5. 8. 2. एतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति Brih. 6. 2. 13.
5. 10. 6. यो रेतः सिञ्चति तद्भूय एव भवति
1. 2. 4. तद्यद्रेत आसीत् संवत्सरो ऽभवत्
1. 4. 6. आर्द्रं तद्रेतसो ऽसृजत
3. 2. 13. अप्सु लोहितं च रेतश्च निधीयते
3. 7. 23. यो रेतसि तिष्ठन् रेतसो ऽन्तरो यं रेतो न वेद यस्य रेतः शरीरं यो रेतो ऽन्तरो यमयति
3. 9. 17. रेत एव यस्यायतनम्
22. कस्मिन्न्वापः प्रतिष्ठिता इति रेतसीति कस्मिन्नु रेतः
— हृदये ह्येव रेतः प्रतिष्ठितम्
28. रेतस इति मा वोचत
6. 1. 8. प्रजायमाना रेतसा 9–11.
12. रेतो होच्चक्राम
— यथा क्लीबा अप्रजायमाना रेतसा
— प्रविवेश ह रेतः
14. यद्वा अहं प्रजातिरस्मि त्वं तत्प्रजातिरसीति रेतः

Brih. 6. 2. 12. तस्या आहुत्यै रेतः संभवति
6. 3. 2. रेतसे स्वाहा
6. 4. 1. पुरुषस्य रेतः [रसः]
4. सुप्तस्य वा जाग्रतो वा रेतः स्कन्दति
5. यन्मे ऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीत्
— इदमहं तद्रेत आददे
10. इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आददे
11. इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आदधामि
20. रेतो दधावहै
Mund. 2. 1. 5. पुमान् रेतः सिञ्चति योषितायाम्
Prasna. 1. 14. ततो ह वै तद्रेतः
Nrip. 1. 1. रेतः प्रथमं यदासीत्

रेतोतिरेक

Garbha. 3. पितू रेतोतिरेकात्पुरुषः
— मातू रेतोतिरेकात् स्त्री

रेफ

Râmap. 72. *vide* आदि

रेफारूढ

Râmap. 16. रेफारूढा मूर्तयः स्युः

रेभ्

Mahânâr. 9. 1. सोमः पवित्रमत्येति रेभन् 17. 8.

रेरिवन्

Tait. 1. 10. 1. अहं वृक्षस्य रेरिवा

रेवन्त्

Chhâ. 2. 18. 1. एता रेवत्यः पशुषु प्रोताः 2.

रै

Brih. 5. 15. 1. अग्ने नय सुपथा राये Îśâ. 18.

रैक

Chhâ. 4. 1. 3. कम्वर एनमेतत्सन्तं सयुग्वानमिव रैक्कमात्थ
— यो नु कथं सयुग्वा रैक्कः 5.
5. अङ्गारे ह सयुग्वानमिव रैक्कमात्थ
8. त्वं नु भगवः सयुग्वा रैक्कः
4. 2. 2. रैक्केमानि षट् शतानि गवाम्
4. रैक्केदं सहस्रं गवाम्

रैक्कपर्ण

Chhâ. 4. 2. 5. ते हैते रैक्कपर्णा नाम महावृषेषु

रैतस

Bṛih. 2. 5. 2. अयमध्यात्मं रैतसः..पुरुषः

रैवत

Kaush. 1. 5. शाक्वररैवते Maitri. 7. 5.

रैवतक

Jâbâla. 6. *vide* प्रभृति

रोग

Chhâ. 7. 26. 2. न पश्यो मृत्युं पश्यति न रोगम्
Śwet. 2. 12. न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः
Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
7. 11. न पश्यन्मृत्युं पश्यति न रोगम्

रोचन

Mahânâr. 20. 7. विश्वमाभासि रोचनम्
Nṛip. 2. 4. रोचनो रोचमानः (bis).
Nîla. 19. ये चामी रोचने दिवि (so 5 MSS.)

रोचिष्णु

Bṛih. 2. 1. 9. रोचिष्णुरिति..एतमुपासे
Bṛih. 2. 1. 9. एवमुपास्ते रोचिष्णुर्ह ति रोचिष्णुर्हास्य प्रजावति

रोमन्

Chhâ. 8. 13. 1. अश्व इव रोमाणि विपापम्
Garbha. 5. अर्द्धचतस्रो रोमाणि टयः

रोमन्थ

Mukti. 2. 63. बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन वृथैव किम्

रोमहर्ष

Gîtâ. 1. 29. रोमहर्षश्च जायते

रोमहर्षण

Gîtâ. 18. 74. अद्भुतं रोमहर्षणम्

रोष

Parama. 2. *vide* आदि

रोहिणी

Kṛish. 16. दया सा रोहिणी माता

रोहित

Chhâ. 3. 1. 4. एतदादित्यस्य रोहितं रू
6. 4. 1. यदग्ने रोहितं रूपम्
2. यदादित्यस्य रोहितं रू
3. यच्चन्द्रमसो रोहितं रूपम्
4. यद्विद्युतो रोहितं रूपम्
6. यदु रोहितमिवाभूत्

रोहितोच्छिष्ट

Chûl. 11. अनड्वान् रोहितोच्छिष्टः

रौद्र

Chhâ. 2. 24. 7. स रौद्रं सामाभिगायति
Śikhâ. 1. द्वितीया..रौद्री ह्रस्वा

लक्ष्

tri. 6. 24. ध्यानं..लक्ष्येषु च विधीयते
34. व्योम्नि व्योम न लक्षयेत्

d.2. 2. 3. लक्ष्यं तदेवाक्षरं..विद्धि
4. ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते
Dhyâna. 19.

da. 2. 6. अवितथा इव लक्षिताः
4. 31.
30. पृथगेवेति लक्षितः

लक्ष

rita. 33. लक्षश्चैको ऽपि विश्वासः

ama. 3. न लक्षं नालक्षम् (so MSS.)

लक्षण

itri. 6. 31. शान्तादिलक्षणोक्तः

bha. 3. सर्वलक्षणज्ञानसम्पूर्णः

rita. 11. रेचकस्येति लक्षणम्
12. पूरकस्येति लक्षणम्
13. कुम्भकस्येति लक्षणम्
14. प्रशान्तस्येति लक्षणम्

vop. 4. यस्य लक्षणं .. अव्यभिचारि

kti. 2. कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिलक्षणश्चित्तधर्मः

लक्षणशून्य, लक्षणा°

da. 4. 67. लक्षणाशून्यमुभयम्

vop. 4. लक्षणशून्या सा माया

लक्ष्मण

nap. 28. दक्षिणे लक्ष्मणेनाथ
36. रामो लक्ष्मण एव च
38. रामलक्ष्मणौ
51. पश्चिमे लक्ष्मणं धृत्वा
54. विभीषणं लक्ष्मणं च

लक्ष्मी

1. 3. सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि जानीयात् स्त्रीशूद्रः

Nrip. 3. 1. पाहि..श्रियं लक्ष्मीम्

Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..या लक्ष्मीः (23).

लक्ष्मीरूप

Krish. 18. लक्ष्मीरूपो व्यवस्थितः

लघुमुण्ड

Kathasru. 4. लघुमुण्डीऽसूत्रोदरपात्रः कस्मात्

लघुत्व

Śwet. 2. 13. लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वम्

लघ्वाशिन्

Gîtâ. 18. 52. विविक्तसेवी लघ्वाशी

लङ्का

Râmap. 43. लंकां समाययौ
45. पुरीं लंकां समाययौ

लब्धकाम

Râmap. 94. लब्धकामांश्च भुक्त्वा

लब्धयोग

Yogaśi. 9. लब्धयोगेन बोद्धव्यम्

लब्धृ

Katha. 2. 7. कुशलोऽस्य लब्धा

लभ्

Kaush. 2. 3. लभते हैव

Chhâ. 1. 10. 6. यद्वतान्नस्य लभेमहि लभेमहि धनमात्राम्
3. 12. 9. अप्रवर्तिनीं श्रियं लभते य एवं वेद
4. 4. 2. यौवने त्वामलभे 4.
6. 9. 2. ते यथा तत्र न विवेकं लभन्ते
7. 22. 1. यदा वै सुखं लभते ऽथ करोति नासुखं लब्ध्वा करोति

Chhâ. 8. 3. 1. न तमिह दर्शनाय लभते
2. यश्चान्यदिच्छन्न लभते
Tait. 2. 7. 1. रस ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति
Katha. 1. 22. वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यः
25. न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः
27. लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा
2. 7. श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः
13. स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा
23. नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः Mund. 3. 2. 3.
— यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः Mund. 3. 2. 3.
6. 18. अथ लब्ध्वा विद्यामेताम्
Maitri. 6. 21. केवलत्वं लभते
22. तन्तुनोर्ध्वमुत्क्रान्तो ऽवकाशं लभति
— ओमित्यनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः स्वातन्त्र्यं लभते
Mund. 3. 1. 5. सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
3. 2. 4. नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः
Gauda. 4. 76. यदा न लभते हेतून्
Nrip. 5. 2. एतद्ब्रह्मोग्रं मृत्युतारकं गुरुणा लब्धम्
Nrisut. 9. अनुज्ञामद्वयं लब्ध्वा
Amrita. 16. यं लब्ध्वाप्यवमन्येत
Yogat. 7. लब्धं तत् परमं पदम्
10. मकारे लभते नादम्
11. लभते योगयुक्तात्मा
Nâr. 5. सर्ववेदपारायणं पुण्यं लभते
Vâsu. 4. सम्यग् ज्ञानं लब्ध्वा

Gopî. 5. इति ब्रह्मवरं लब्ध्वा
Râmot. 4. ये लभन्ते षडक्षरम्
Mukti. 1. 27. ज्ञानं लब्ध्वाचिरादेव
1. तेन सह कैवल्यं लभन्ते
Gîtâ. 2. 32. लभन्ते युद्धमीदृशम्
4. 39. श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्
— ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्ति
5. 25. लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम्
6. 22. यं लब्ध्वा चापरं लाभम्
43. लभते पौर्वदैहिकम्
7. 22. लभते च ततः कामान्
8. 22. भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया
9. 21. गतागतं कामकामा लभ
11. 25. दिशो न जाने न लभे शर्म
33. उत्तिष्ठ यशो लभस्व
16. 13. इदमद्य मया लब्धम्
18. 8. नैव त्यागफलं लभेत्
45. संसिद्धिं लभते नरः
54. मद्भक्तिं लभते पराम्
73. नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा

लम्ब्

Brahma. 1. तमेव स्तन इव लंबते

लम्बर

Brih. 5. 10. 1. यथा लम्बरस्य खम्

लम्भुक

Chhâ. 5. 2. 2. लम्भुको ह वासो भवति

लय

Maitri. 6. 34. लयविक्षेपरहितम्
Kaivalya. 15. यस्मिँल्लयं याति पुरत्रयं च
19. मयि सर्वं लयं याति
Gauda. 2. 28. लय इति च तद्विदः
3. 42. सुप्रसन्नं लये चैव न कामो लयस्तथा
44. लये संबोधयेच्चित्तम्

nav. 1. यत्रोत्पत्तिं लयं चैव
3. स्थानं कालं लयं तथा
r. 23. दग्ध्वा लयं व्रजेत् (bis).
17. तस्मिन्नेव लयं यान्ति
21. ते लयं यान्ति तत्रैव
ia. 22. भ्रुवोर्मध्ये नयेल्लयम्
). 14. सृष्टिस्थितिलयस्य च

लयसामान्य

. 1. 21. लयसामान्यमेव च

लल्

. 2. 7. लालयेच्चित्तबालकम्

ललाट

2. तस्य ध्यानान्तःस्थस्य ललाटात् 3.
4. भ्रुवोर्ललाटमध्ये तु
23. भ्रुवोर्मध्ये ललाटस्तु
1. शिरोललाटवक्षःस्कंधेषु
— त्रिधा चाललाटात्
2. ललाटादिद्वादशस्थलेषु
— ललाटकण्ठहृदयबाहुमूलेषु
— शिरोललाटहृदयेषु
— परमहंसो ललाटे..धारयेत्
5. ललाटं यस्तु लेपयेत्

ललाटमध्यस्थ

14. भ्रुवोर्ललाटमध्यस्थम्

ललाटस्थ

13. ललाटस्थं त्रिलोचनम्

लव

ru. 4. भिक्षाशी न दद्याल्लवैकं धारयेत्

1. लवण

17. 9. *vide* विदाहिन्
01

2. लवण

Chhâ. 4. 17. 7. यथा लवणेन सुवर्णं सन्दध्यात्
6. 13. 1. लवणमेतदुदके ऽवधाय
— यद्दोषा लवणमुदके ऽवाधाः
2. अस्यान्तादाचामेति कथमिति लवणमिति (similarly twice more).
Brih. 2. 4. 12. यतो यतस्त्वाददीत लवणमेव
Maitri. 7. 11. अप्सु प्रक्षेपको लवणस्येव
Garbha. 1. *vide* रस

लाघव

Gîtâ. 2. 35. यास्यसि लाघवम्

लान्त (=व)

Râmap. 78. कामिकापञ्चमो लान्तः
80. लान्तो योन्या युक्तः

लाभ

Sarvop. 3. स्वरूपलाभहेतुर्भूत्वा
Jâbâla. 6. लाभालाभौ समौ भूत्वा
Mukti. 2. जीवन्मुक्त्यादिलाभः
— सर्ववासनाक्षयात्तल्लाभः
Gîtâ. 2. 38. लाभालाभौ जयाजयौ
6. 22. यं लब्ध्वा चापरं लाभम्

लालेल

Mahânâr. 3. 7. लालेलाय धीमहि (one MS. has लालीलाय)

लाह्यानि

Brih. 3. 3. 1. भुज्युर्लाह्यानिः 2.

लिख्

Râmap. 58. मध्ये तारद्वयं लिखेत्
60. लिखेद्बीजान्तरे रमाम्
61. लिखेद्बीजं हृदादिभिः
62. क्रोधं कोणामान्तरेषु लिख्य

Râmap. 64. पुनरष्टदलं लिखेत्
— लिखेत्तत्केसरे रमाम्
68. लिखेत्सम्यक्ततो बहिः
72. लिखेन्मन्त्रद्वयं तथा
81. उत्क्रमाल्लिखेत्

लिङ्ग

Bṛih. 4. 4. 6. सह कर्मणैति लिङ्गं मनो यत्र निषक्तमस्य
Śwet. 6. 9. न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम्
Maitri. 2. 5. संकल्पाध्यवसायाभिमानलिङ्गः 5. 2.
6. 10. महदाद्यं विशेषान्तं लिङ्गम्
19. तच्च लिङ्गं निराश्रयम्
30. अध्यवसायसङ्कल्पाभिमानलिङ्गः (bis).
31. स्वकैर्लिङ्गैरुपगृह्यः
— तस्यैतल्लिङ्गमलिङ्गस्य
Nṛisut. 3. अथ लिङ्गान् संहृत्य
Haṁsa. 2. लिङ्गे सुषुप्तिः
Gîtâ. 14. 21. कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतः

लिङ्गनाश

Śwet. 1. 13. नैव च लिङ्गनाशः

लिङ्गरूप

Nṛisut. 3. लिङ्गरूपानेव च सम्पूज्य

लिङ्गवन्त्

Maitri. 6. 5. स्त्रीपुन्नपुंसकेति लिङ्गवती

लिङ्गशरीर

Sarvop. 2. तल्लिङ्गशरीरं हृद्ग्रन्थिरित्युच्यते

लिङ्गिन्

Brahmab. 19. लिङ्गिनस्तु गवां यथा

लिन्दु

Chhâ. 8. 14. 1. श्वेतमदत्कमदत्कं श्वेतं लिन्दु माभिगाम्

लिप्

Chhâ. 5. 10. 10. न सह तैराचरन् प[...] लिप्यते
Bṛih. 4. 4. 23. तं विदित्वा न लिप्य[...] र्मणा पापकेन
Iśâ. 2. न कर्म लिप्यते नरे
Katha. 5. 11. सूर्यो यथा . . न लिप्य[...] तथा सर्वभूतान्तरात्[...] लिप्यते
Gauḍa. 1. 5. स भुञ्जानो न लिप्य[...]
Brahma. 1. एवमिष्टापूर्तैः शुभा[...] लिप्यते
Gopî. 5. ललाटं यस्तु लेपयेत्
Gîtâ. 4. 14. न मां कर्माणि लिम्प[...]
5. 7. कुर्वन्नपि न लिप्यते
10. लिप्यते न स पापेन
13. 31. न करोति न लिप्यते
18. 17. बुद्धिर्यस्य न लिप्यते

लिह्

Garbha. 5. अशितपीतलेह्यचोष्यं[...] तीति
Prâṇâg. 2. अशितपीतलीढखादित[...]
Gîtâ. 11. 30. लेलिह्यसे ग्रसमानः

ली

Śwet. 1. 7. लीना ब्रह्मणि तत्परा[...] निर्मुक्ताः
Gauḍa. 3. 35. लीयते हि सुषुप्ते त[...] तस्य न लीयते
46. यदा न लीयते चित्त[...]
Brahmav. 13. यथा लीयति शान्तं[...]
Kshur. 17. सुषुम्णा तु परे लीन[...]
Nâda. 18. मनो लीनं यदा भवे[...]
Brahmab. 13. लीयमाने घटे यथा[...]
— घटो लीयेत नाकाश[...]
Haṁsa. 2. यदा हंसो नादे लीने[...]

लीनास्य

18. लीनास्या व्यक्ततां ययुः
21. लीनास्या ब्रह्मशायिने

लुप्

i. 2. 4. न त्वा कामा बहवो ऽलोलुपन्त Maitri. 7. 9. (लोलुपन्ते)
i. 3. 2. लुप्यमानः सस्पृहो व्यग्रः 6. 30.
1. सा लुप्तमकारः (one MS. has सा महो लोको मकारः)
1. 42. लुप्तपिण्डोदकक्रियाः

लुभ्

18. 26. लुब्धो हिंसात्मको ऽशुचिः

लूता

a. 2. लूतानां प्रलूतानाम्

लेलाय्

4. 3. 7. ध्यायतीव लेलायतीव
3. 18. हंसो लेलायते बहिः
1. 2. 2. यदा लेलायते ह्यर्चिः
4. लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः

लेश

2. 22. 5. सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्याः
a. 1. तव कारुण्यलेशतः

लैङ्ग

2. 27. स्त्रीपुंनपुंसकं लैङ्गाः (MSS. read लिङ्गाः)

लोक

1. 1. स ईक्षत लोकान्नु सृजै
2. स इमाँल्लोकानसृजत
3. स ईक्षतेमे नु लोकाः 3. 1.

Ait. 4. 3. तद्भावयत्येषां लोकानां सन्तत्या एवं सन्तता हीमे लोकाः
6. स्वर्गे लोके सर्वान् कामानाप्त्वा 5. 4; Atmapra. 1.
5. 3. प्रज्ञानेत्रो लोकः Atmapra. 1.
4. अस्माल्लोकादुत्क्रम्य Atmapra. 1.

Kaush. 1. 1. अस्ति संवृतं लोके
— मा लोके धास्यसि
2. ये वै केचास्माल्लोकात् प्रयन्ति
— एतद्वै स्वर्गस्य लोकस्य द्वारं यच्चन्द्रमाः
7. लोको ऽयं ते ऽसावितिर
2. 9. तेन मुखेनेमं लोकमत्सि
15. स्वर्गाँल्लोकान् कामानाप्नुहि
3. 1. न ह वै तस्य केनचन कर्मणा लोको मीयते
2. प्राणेनास्मिँल्लोके ऽमृतत्वमाप्नोति
— सर्वमायुरस्मिँल्लोक एत्याप्नोत्यमृतत्वमक्षितिं स्वर्गे लोके
3. प्राणेभ्यो देवा देवेभ्यो लोकाः 4. 20.
8. यमेभ्यो लोकेभ्य उन्निनीषते
4. 8. पूर्यते . . स्वर्गेण लोकेन
16. प्रजायते . . स्वर्गेण लोकेन

Kena. 2. प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति 13.
34. अनन्ते स्वर्गे लोके . . प्रतितिष्ठति

Chha. 1. 6. 8. स एष ये चामुष्मात्पराञ्चो लोकास्तेषां चेष्टे

Chhā. 1. 7. 6. स एष ये चैतस्मादर्वाञ्चो लोकास्तेषां चेष्टे
7. स एष ये चामुष्मात्पराञ्चो लोकास्तांश्चाप्नोति
1. 8. 5. अपां का गतिरित्यसौ लोकः
— अमुष्य लोकस्य का गतिः
— न स्वर्गं लोकमति नयेदिति होवाच
— स्वर्गं वयं लोकं सामाभिसंस्थापयामः
7. अमुष्य लोकस्य का गतिरित्ययं लोक इति
— अस्य लोकस्य का गतिः 1. 9. 1.
— न प्रतिष्ठां लोकमति नयेत्
— प्रतिष्ठां वयं लोकं सामाभिसंस्थापयामः
1. 9. 2. परोवरीयसो ह लोकान् जयति
3. परोवरीयो ह.. अस्मिँल्लोके जीवनं भविष्यति
4. तथामुष्मिँल्लोके लोकः (bis).
— परोवरीय एव हास्यास्मिँल्लोके जीवनं भवति
1. 13. 1. अयं वाव लोको हाउकारः
2. 2. 1. लोकेषु पंचविधं सामोपासीत
3. कल्पन्ते हास्मै लोका ऊर्ध्वाश्चावृत्ताश्च
2. 7. 2. परोवरीयसो ह लोकाञ्जयति
2. 17. 1. एताः शक्वर्यो लोकेषु प्रोताः
2. लोकान्न निन्देत्तद्व्रतम्
2. 21. 1. अथ इमे लोकाः स प्रस्तावः
2. 22. 2. स्वर्गं लोकं यजमानाय
2. 23. 3. प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत् 4. 17. 1.

Chhā. 2. 24. 2. क तर्हि यजमानस्य
5. लोकं मे यजमानाय
वै यजमानस्य लो
9, 14, 15.
3. 13. 6. स्वर्गस्य लोकस्य
— स्वर्गस्य लोकस्य
(bis).
— प्रतिपद्यते स्वर्गं लोक
7. अनुत्तमेषूत्तमेषु लो
3. 14. 1. यथाक्रतुरस्मिँल्लोके
भवति
3. ज्यायानेभ्यो लोकेभ्
4. 5. 3. प्रकाशवानस्मिँल्लोके
प्रकाशवतो ह लोका
(similarly, 4. 6
7. 4; 4. 8. 4).
4. 11. 2. अस्मिंश्च लोके ऽमुष्
4. 12. 2; 4. 13.
1. 3.
4. 14. 3. लोकान्वाव किल सं
ऽवोचन्
4. 15. 4. एष हि सर्वेषु लोके
4. 17. 8. एषां लोकानां .. वी
5. 3. 3. वेत्थ यथासौ लोको
ऽपूर्यते
7. सर्वेषु लोकेषु क्षत्रस्
शासनमभूत्
5. 4. 1. असौ वाव लोको
भिः
5. 10. 8. तेनासौ लोको न स
5. 18. 1. सर्वेषु लोकेषु .. आ
5. 24. 2. सर्वेषु लोकेषु . हुतं
7. 3. 1. इमं च लोकममुं चे
— मनो हि लोकः
7. 4. 2. कर्मणां संकॢप्त्यै लो
कॢप्तते लोकस्य
सर्वं सङ्कॢप्तते
3. संकॢप्तान् वै स लोक
अभिसिध्यति

Brih. 2. 5. 15. आत्मनि . . सर्वे लोकाः
3. 1. 6. केनाक्रमेण . . स्वर्गं लोकमाक्रमते
9. अनन्तमेव . स तेन लोकं जयति 3. 2. 12.
3. 3. 1. यदा लोकानामन्तानपृच्छाम
2. द्वात्रिंशतं वै देवरथाह्न्यान्ययं लोकः
3. 7. 1. अयं च लोकः परश्च लोकः 2; 4. 1. 2; 4. 5. 11.
— इमं च लोकं परं च लोकम्
2. वायुना वै सूत्रेणायं च लोकः परश्च लोकः . . सन्दृब्धानि
3. 8. 10. यो वा एतदक्षरं . . अविदित्वास्मिँल्लोके जुहोति
— यो वा एतदक्षरं . . अविदित्वास्माल्लोकात्प्रैति
— य एतदक्षरं . . विदित्वास्माल्लोकात्प्रैति
3. 9. 8. इम एव त्रयो लोकाः
10. अग्निर्लोकः
11. हृदयं लोकः 14, 16, 17.
12. चक्षुर्लोकः 15.
13. श्रोत्रं लोकः
26. अष्टौ लोका अष्टौ देवाः
4. 3. 7. उभौ लोकावनुसञ्चरति
— इमं लोकमतिक्रामति
9. अस्य लोकस्य सर्वावतः
20. सो ऽस्य परमो लोकः
22. लोका अलोकाः
32. एषो ऽस्य परमो लोकः
4. 4. 6. तस्माल्लोकात्पुनरैत्यस्मै लोकाय
8. तेन धीरा अपियन्ति . . स्वर्गं लोकम्
11. अनन्दा नाम ते लोकाः Katha. 1. 3.

Brih. 4. 4. 13. तस्य लोकः स उ लोक ए[…]
22. एतमेव प्रव्राजिनो लोकमिच्छन्तः प्रव्रजन्ति
— येषां नो ऽयमात्मायं लोक[…]
5. 3. 1. एति स्वर्गं लोकं य एवं वे[…]
5. 4. 1. जयतीमाँल्लोकान्
5. 10. 1. यदा वै पुरुषोऽस्माल्लोका[…] प्रैति
— स लोकमागच्छत्यशोकम[…] हिमम्
5. 11. 1. परमं हैव लोकं जयति [य] एवं वेद (ter).
5. 14. 1. स यावदेषु त्रिषु लोकेषु ता[…] वद्ध जयति
6. य इमांस्त्रीँल्लोकान् पूर्णा[…] प्रतिगृह्णीयात्
6. 2. 2. वेत्थो यथेमं लोकं पुनरापद्यन्ता३ इति
— वेत्थो यथासौ लोकः . . [न] सम्पूर्यता३ इति
9. असौ वै लोको ऽग्निर्गौतम
11. अयं वै लोको ऽग्निर्गौतम
16. ये यज्ञेन दानेन तपसा लोकाञ्जयन्ति
— लोकान् प्रत्युत्थायिनः
6. 4. 3. यावान् ह वै वाजपेयेन यजमानस्य लोको भवति तावानस्य लोको भवति
4. निरिन्द्रिया विसुकृतो ऽस्माल्लोकात्प्रयन्ति
12. निरिन्द्रियो विसुकृदस्माल्लोकात्प्रैति
Isâ. 3. असूर्या नाम ते लोकाः
Tait. 1. 3. 4. सन्धीयते . . सुवर्गेण [लो]केन
1. 5. 1. भूरिति वा अयं लोकः सुवरित्यसौ लोकः

1. 5. 2. आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते
2. 6. 1. उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चन गच्छती३ आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य समश्नुता३ उ
2. 8. 1. अस्माल्लोकात्प्रेत्यैतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामति 3. 10. 5 (उपसंक्रम्य)
3. 10. 5. इमाँल्लोकान् कामान्नी कामरूप्यनुसञ्चरन्
1. 12. स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति
2. 6. अयं लोको नास्ति परः
3. 1. ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके
5. 8. तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे 6. 1.
6. 4. ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते
3. 1. सर्वाँल्लोकानीशत ईशिनीभिः
2. इमाँल्लोकानीशत ईशिनीभिः
16. सर्वतः श्रुतिमल्लोके Gîtâ. 13. 13.
18. वशी सर्वस्य लोकस्य
4. 13. यस्मिँल्लोका अधिश्रिताः
6. 1. देवस्यैष महिमा तु लोके
9. न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके
1. 4. अस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः
4. 6. तस्यैव लोके प्रतिमोदतीह — उपर्युपरि लोकेषु चरति
6. 7. भ इति भासयतीमाँल्लोकान्

Maitri. 6. 16. यत्किञ्चिच्छुभाशुभं दृश्यतेह लोके
24. सा गतिर्लोक एव सः
26. पूरयतीमाँल्लोकान्
32. तस्माद्वा . . सर्वे लोकाः . . उच्चरन्ति
35. लोकमस्मै यजमानाय धेहि (ter).
7. 8. लोको न जानाति वेदविद्यान्तरं तु यत्
Mund. 1. 1. 8. अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः
1. 2. 1. एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके
3. आसप्तमांस्तस्य लोकान् हिनस्ति
10. इमं लोकं हीनतरं चाविशन्ति
12. परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान्
2. 1. 6. लोकाः सोमो यत्र पवते
8. सप्त इमे लोकाः Mahânâr. 8. 4.
2. 2. 2. यस्मिँल्लोका निहिताः
3. 1. 10. यं यं लोकं मनसा संविभाति तं तं लोकं जयते
Mahânâr. 2. 6. परि लोकान् परि दिशः
7. परीत्य लोकान्परीत्य भूतानि
5. 9. एष पुण्यकृतां लोकान्
12. 2. स ऋचां लोकः . . स साम्नां लोकः . . स यजुषां लोकः
20. 9. इमाँल्लोकान् . . अभ्यजयन्
21. 2. सत्येन न सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्ते
22. 1. लोके दातारं सर्वभूतान्युपजीवन्ति

Mahânâr. 22. 1. लोके साधुप्रजावांस्तन्तुं तन्वानः
— लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति
— सुवर्गो लोको बृहत्
— सुवर्गस्य लोकस्य ज्योतिः

Praśna. 1. 9. चान्द्रमसमेव लोकमभिजयन्ते
3. 7. पुण्येन पुण्यं लोकं नयति
10. यथासङ्कल्पितं लोकं नयति
5. 1. कतमं वाव स तेन लोकं जयति
6. 4. मन्त्राः कर्म लोका लोकेषु च नाम च

Gauḍa. 2. 21. लोका इति लोकविदः
27. लोकाँल्लोकविदः प्राहुः
36. जडवल्लोकमाचरेत्
4. 95. ते हि लोके महाज्ञानास्तच्च लोको न गाहते

Nṛip. 1. 3. स त्रीँल्लोकान् जयति
2. 2. व्यतिषक्ता वा इमे लोकाः
4. सर्वाँल्लोकान्..उद्गृह्णाति
— सर्वाँल्लोकान्..विरमति
— यः सर्वाँल्लोकान् व्याप्नोति
— सर्वाँल्लोकान्..स्वतेजसा ज्वलति
— सर्वे लोकाः..भीत्या पलायन्ते

Brahmav. 4. लोका वेदास्त्रयो ऽग्नयः

Śiras. 1. देवा ह वै स्वर्गं लोकमायन्
5. य इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः
6. गायत्र्या लोका भवन्ति

Brahma. 2. तत्र लोका न लोकाः
3. ते वै सूत्रविदो लोके

Yogat. 5. भुक्त्वा लोकान् समश्नुते
6. त्रयो लोकास्त्रयो वेदाः

Nyâsa. 1. अभ्युदय दिवं च लोकम्
2. लोकाज्ञार्थया सहितः

Parama. 1. लोकेषु दुर्लभतरः
— लोकस्योपचाराय

Aruṇeya. 1. आरुणिः प्रजापतेर्लोकं जगाम
2. दण्डाँल्लोकांश्च विसृजेत्

Nâr. 3. सर्वांश्च लोकानाप्नोति

Atmapra. 1. यस्मिँल्लोके स्वार्हितम्
— अमृते लोके अक्षिते (bis)

Gopî. 1. लोकस्य नरकात्..संरक्षणी
4. लोकानुग्रहार्थम्
5. न तत्तुल्यं भवेल्लोके

Râmap. 2. स राम इति लोकेषु

Gîtâ. 3. 3. लोके ऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा
9. लोको ऽयं कर्मबन्धनः
21. लोकस्तदनुवर्तते
22. त्रिषु लोकेषु किञ्चन
24. उत्सीदेयुरिमे लोकाः
4. 12. क्षिप्रं हि मानुषे लोके
31. नायं लोको ऽस्त्ययज्ञस्य
40. नायं लोको ऽस्ति न परः
5. 14. लोकस्य सृजति प्रभुः
6. 41. प्राप्य पुण्यकृताँल्लोकान्
42. लोके जन्म यदीदृशम्
7. 25. मूढो ऽयं नाभिजानाति लोकः
8. 16. आब्रह्मभुवनाल्लोकाः
9. 33. अनित्यमसुखं लोकम्
10. 3. वेत्ति लोकमहेश्वरम्
6. येषां लोक इमाः प्रजाः
16. लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि
11. 23. दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्
29. तथैव नाशाय लोकाः

11. 30. ग्रसमानः .. लोकान्समग्रान्
32. लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः
43. पितासि लोकस्य चराचरस्य
12. 15. यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः
13. 33. यथा प्रकाशयति .. कृत्स्नं लोकम्
14. 14. तदोत्तमविदां लोकान्
15. 16. द्वाविमौ पुरुषौ लोके
18. अतो ऽस्मि लोके वेदे च
16. 6. द्वौ भूतसर्गौ लोके ऽस्मिन्
18. 17. हत्वापि स इमाँल्लोकान्
71. लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्

लोकक्षयकृत्

11. 32. कालो ऽस्मि लोकक्षयकृत्

लोकक्षित्

2. 24. 5. नमो ऽग्नये .. लोकक्षिते
9. नमो वायवे .. लोकक्षिते
14. नम आदित्येभ्यश्च .. लोकक्षिद्भ्यः

लोकजित्

1. 3. 28. तद्धैतल्लोकजिदेव

लोकत्रय

11. 20. लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्
43. लोकत्रये ऽप्यप्रतिमप्रभाव
15. 17. यो लोकत्रयमाविश्य

लोकदुःख

5. 11. न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः

लोकद्वार

2. 24. 4. लोकद्वारमपावार्णु 8, 12, 13.

Chhâ. 8. 6. 5. एतद्वै खलु लोकद्वारम्

लोकधारिन्

Mahânâr. 4. 5. धरणी लोकधारिणी

लोकपाल, °पालक

Ait. 1. 3. लोकपालान्नु सृजै
3. 1. इमे नु लोकाश्च लोकपालाश्च
Kaush. 3. 8. एष लोकपाल एष लोकाधिपतिरेष लोकेशः
Mahânâr. 12. 3. आदित्यो वै .. लोकपालकः
Nrip. 4. 3. यो वै नृसिंहः .. ये चाष्टौ लोकपालास्तस्मै वै नमो नमः (16).
Râmap. 90. धृष्टयादिकैर्लोकपालैः
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः .. ये चाष्टौ लोकपालाः (32).

लोकपूत

Nrip. 5. 3. स लोकपूतो भवति

लोकवन्त्

Maitri. 6. 5. भूर्भुवःस्वरिति लोकवत्येषा
6. एषैवास्य .. स्थविष्ठा तनूर्या लोकवती

लोकवासना

Mukti. 2. 2. लोकवासनया जन्तोः

लोकविद्

Brih. 3. 7. 1. स ब्रह्मवित्स लोकवित्
Gauḍa. 2. 21. लोका इति लोकविदः
27. लोकाँल्लोकविदः प्राहुः

लोकसंग्रह

Gîtâ. 3. 20. लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्
25. चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्

लोकस्मृत्

Maitri. 6. 35. नमो ऽग्नये .. लोकस्मृते
— नमो वायवे .. लोकस्मृते
— नम आदित्याय .. लोकस्मृते

लोकादि

Katha. 1. 15. लोकादिमग्निं तमुवाच तस्मै

लोकाधिपति

Kaush. 3. 8. एष लोकपाल एष लोकाधिपतिरेष लोकेशः

लोकान्तर

Mukti. 1. 19. न तु लोकान्तरादिकम्

लोकिन्

Chhâ. 2. 17. 2. एताः शक्वर्यो लोकेषु प्रोता वेद लोकी भवति
4. 11. 2. लोकी भवति सर्वमायुरेति 4. 12. 2; 4. 13. 2.
Muṇḍ. 2. 2. 2. यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च

लोकेश

Kaush. 3. 8. एष लोकपाल एष लोकाधिपतिरेष लोकेशः

लोकैषणा

Bṛih. 3. 5. 1. लोकैषणायाश्च व्युत्थाय 4. 4. 22.
— या वित्तैषणा सा लोकैषणा 4. 4. 22.
Nṛisut. 6. लोकैषणायाश्च ससाधनेभ्यो व्युत्थाय

लोकोत्तर

Gauḍa. 4. 88. लोकोत्तरमिति स्मृतम्

लोक्य

Bṛih. 1. 5. 17. पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुः

लोभ

Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
3. 5. स्नेहो रागो लोभः
Garbha. 5. लोभादयः पशवः
Tejo. 12. लोभं मोहं भयं दर्पम्
Parama. 2. *vide* आदि
Aruṇeya. 3. *vide* आदि
Krish. 11. लोभक्रोधादयो दैत्याः
Gîtâ. 1. 38. लोभोपहतचेतसः
45. यद्राज्यसुखलोभेन
14. 12. लोभः प्रवृत्तिरारम्भः क... णाम्
17. रजसो लोभ एव च
16. 21. कामः क्रोधस्तथा लोभ...

लोभजाल

Maitri. 6. 38. लोभजालं भिनत्ति

लोमन्

Ait. 1. 4. त्वचो लोमानि लोम... ओषधिवनस्पतयः
2. 4. ओषधिवनस्पतयो लोमा... भूत्वा त्वचं प्राविशन्
Kaush. 3. 1. तस्य मे तत्र न लोम च... मीयत
4. 20. अनुप्रविष्ट आलोमभ्य आ... नखेभ्यः
Chhâ. 2. 19. 1. लोम हिंकारः
5. 18. 2. लोमानि बर्हिः Bṛih. ... 4. 3; Mahânâr. 25. ...
8. 8. 1. आलोमभ्य आनखेभ्यः ... तिरूपमिति
Bṛih. 1. 1. 1. ओषधयश्च वनस्पतयश्च लो... मानि
3. 2. 13. ओषधीर्लोमानि (अपि... न्ति)
3. 9. 28. तस्य लोमानि पर्णानि
6. 2. 13. लोमानि धूमः
Muṇḍ. 1. 1. 7. यथा सतः पुरुषात्केशलो... मानि
Kaṭhaśru. 3. केशश्मश्रुलोमनखानि

लोमश

Tait. 1. 4. 2. ततो मे श्रियमावह लो... शाम्

लोष्ट

ı. 1. 3. 7. यथाश्मानमृत्वा लोष्टो विध्वंसेत

ıma. 4. समलोष्टाश्मकाञ्चनाः

लोह

ā. 4. 17. 7. सीसेन लोहं लोहेन दारु

6. 1. 5. लोहमित्येव सत्यम्

ıla. 3. 15. मृल्लोहविस्फुलिङ्गाद्यैः

लोहमणि

ā. 6. 1. 5. एकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञातम्

लोहमय

ā. 6. 1. 5. सर्वं लोहमयं विज्ञातम्

लोहित

sh. 4. 19. शुक्लस्य कृष्णस्य पीतस्य लोहितस्य च

ā. 6. 5. 2. यो मध्यमस्तल्लोहितम्

8. 6. 1. शुक्लस्य नीलस्य पीतस्य लोहितस्य

— एष शुक्ल एष नील एष पीत एष लोहितः

. 2. 2. 2. इमा अक्षन् लोहिन्यो राजयः

3. 2. 13. अप्सु लोहितं च रेतश्च निधीयते

4. 3. 20. पिङ्गलस्य हरितस्य लोहितस्य

4. 4. 9. पिङ्गलं हरितं लोहितं च

t. 4. 5. लोहितशुक्लकृष्णाम्

Mahânâr. 9. 2.

ri. 7. 11. लोहितस्यात्र पिण्डः

लोहितपिण्ड

. 4. 2. 3. य एषो ऽन्तर्हृदये लोहितपिण्डः

लोहिताक्ष

Bṛih. 6. 4. 16. पुत्रो मे श्यामो लोहिताक्षो जायेत

Śwet. 4. 4. हरितो लोहिताक्षः

Mahânâr. 20. 24. उत्तिष्ठ पुरुषाहरितपिंगल लोहिताक्ष

लौकिक

Gauḍa. 4. 87. द्वयं लौकिकमिष्यते

— शुद्धं लौकिकमिष्यते

लौकिकाग्नि

Aruṇeya. 2. लौकिकाग्नीनुदराग्नौ समारोपयेत् (6 MSS. read लोकाग्नीन्)

वंश

Bṛih. 2. 6. 1. अथ वंशः 4. 6. 1; 6. 5. 1.

6. 3. 6. जघनेनाग्निमासीनो वंशं जपति

Kṛish. 10. वंशस्तु भगवान् रुद्रः

13. रुद्रो येन कृतो वंशः

वंशध्वज

Maitri. 2. 1. इक्ष्वाकुवंशध्वज

वक

Chhâ. 1. 2. 13. तेन तं ह वको दाल्भ्यो विदांचकार

1. 12. 1. वको दाल्भ्यो ग्लावो वा मैत्रेयः 3.

वक्ति

Bṛih. 4. 3. 26. न हि वक्तुर्वक्तेर्विपरिलोपः

वक्तृ

Kaush. 3. 8. न वाचं विजिज्ञासीत वक्तारं विद्यात्

Bṛih. 4. 3. 26. न हि वक्तुर्वक्तेर्विपरिलोपः

Tait. 1. 1. 1. तद्वक्तारमवतु..अवतु वक्तारम्

Tait. 1. 12. 1. तद्वक्तारमावीत्..आवीद्वक्तारम्

Katha. 1. 22. वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यः

2. 7. आश्चर्यो वक्ता

Maitri. 6. 7. वक्ता रसयिता घ्राता

11. वक्ता भवति रसयिता भवति

वक्त्र

Amrita. 13. वक्त्रेणोत्पलनालेन

Gîtâ. 11. 27. वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति

28. विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति

29. विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि

वक्र

Swet. 1. 5. पञ्चयोन्युग्रवक्रां (Saṁkarânanda gives °वक्त्रां as a variant).

Gauda. 4. 47. ऋजुवक्रादिकाभासम्

वक्रतुण्ड

Mahânâr. 3. 4. वक्रतुण्डाय धीमहि

वक्रपाद

Mahânâr. 3. 11. वक्रपादाय धीमहि

वक्षस्

Kâlâg. 1. शिरोललाटवक्षःस्कंधेषु

वच्

Ait. 4. 4. तदुक्तमृषिणा

5. वामदेव एवमुवाच

Kaush. 1. 1. स होवाच नाहमेतद्वेद

3. 1. तं हेन्द्र उवाच..स उवाच प्रतर्दनः

2. स होवाच प्राणोस्मि

— एवमु हैतादिति हेन्द्र उवाच

Kena. 25. तां होवाच किमेतद्यक्ष

26. सा ब्रह्मेति होवाच

32. उक्ता त उपनिषत्

Chhâ. 1. 5. 2. मम त्वमेकोसीति ह कौ तकिः पुत्रमुवाच 4.

1. 8. 1. ते होचुरुद्गीथे वै कुश स्मः

1. 9. 3. उदरशाण्डिल्यायोक्त्वो

1. 10. 2. तं होवाच नेतो ऽन्ये वि

6. प्रातः सञ्जिहान उवाच 5. 11. 5.

7. तं जायोवाच

8. प्रस्तोतारमुवाच

10. एवमेवोद्गातारमुवाच

11. एवमेव प्रतिहर्त्तारमुवा

1. 11. 1. एनं यजमान उवाच

3. तथेति ह यजमान उ

4. मूर्द्धा ते विपतिष्यतीति भगवानवोचत् 6, 8.

5. मूर्द्धा ते व्यपतिष्यत्तथो स्य मयेति 7, 9.

1. 12. 2. अन्ये श्वान उपसमेत्यो

3. तान् होवाचेहैव मा प्रात पसमीयात

2. 22. 5. सर्वे स्वरा घोषवन्तो ब वन्तो वक्तव्याः

— सर्व ऊष्माणो ऽग्रस्ता निरस्ता विवृत्ता वक्तव्

— सर्वे स्पर्शा लेशेनानभि हिता वक्तव्याः

2. 24. 6. इत्युक्त्वोत्तिष्ठति 10, 15.

3. 11. 4. एतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवा 8. 15. 1.

3. 15. 4. यदवोचं प्राणं प्रपद्य (similarly in 5, 6, 7).

3. 17. 6. तद्धैतत्..कृष्णाय देवकी पुत्रायोक्त्वोवाच

4. 1. 4. यस्तद्वेद यत्स वेद स म तदुक्तः 6.

1. 4. 1. 5. क्षत्तारमुवाच
4. 2. 5. तस्या ह मुखमुपोद्गृह्णन्नुवाच
4. 2. सा हैनमुवाच नाहमेतद्वेद
3. गौतममेत्योवाच
4. तं होवाच किंगोत्रो नु सोम्यासि
5. गा निराकृत्योवाच
— ता अभिप्रस्थापयन्नुवाच
4. 6. 1. अग्निष्टे पादं वक्ता
4. 7. 1. हंसस्ते पादं वक्ता
4. 8. 1. मद्गुष्टे पादं वक्ता
4. 9. 3. तस्मै हैतदेवोवाचात्र ह न किञ्चन वीयाय
4. 10. 2. तं जायोवाच तप्तो ब्रह्मचारी
3. तमाचार्यजायोवाच
4. हन्तास्मै प्रब्रवामेति तस्मै होचुः
5. ते होचुर्यद्वाव कं तदेव खम्
— प्राणं च हास्मै तदाकाशं चोचुः
4. 14. 1. आचार्यस्तु ते गतिं वक्ता
2. किन्नु सोम्य किल ते ऽवोचन्निति
3. लोकान्वाव किल सोम्य ते ऽवोचन्नहं तु ते तद्वक्ष्यामि
— ब्रवीतु मे भगवानिति तस्मै होवाच
5. 1. 7. पितरमेत्योचुः
8. संवत्सरं प्रोष्य पर्य्येत्योवाच 9, 10, 11.
12. तं हाभिसमेत्योचुः
13. अथ हैनं वागुवाच (similarly 3 times more).
5. 2. 1. स होवाच किं मे ऽन्नं .. आ शकुनिभ्य इति होचुः
2. स होवाच किं मे वासो भविष्यतीत्याप इति होचुः

Chhâ. 5. 2. 3. वैयाघ्रपद्यायोक्त्वोवाच
5. 3. 4. किमनुशिष्टो ऽवोचथाः
5. यथाहमिमानवेदिष्यं कथं ते नावक्ष्यमिति
6. स होवाच तवैव राजन् मानुषं वित्तम्
5. 11. 7. तान् हानुपनीयैवैतदुवाच
6. 1 1. तं ह पितोवाच 3.
7. यद्धैतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्यन्
— तथा सोम्येति होवाच 6. 5. 4; 6. 6. 5; 6. 8. 7, &c.
6. 8. 1. श्वेतकेतुं पुत्रमुवाच
6. तदुक्तं पुरस्तादेव
7. 1. 1. ततस्त ऊर्ध्वं वक्ष्यामि
8. 3. 4. एष आत्मेति होवाच 8. 10. 1; 8. 11. 1; Maitri. 2. 2.
8. 7. 1. इति ह प्रजापतिरुवाच 8. 12. 6.
3. तौ ह प्रजापतिरुवाच 4; 8. 8. 1, 2.
4. तेषु परिख्यायत इति होवाच
8. 8. 4. तौ हान्वीक्ष्य .. उवाच
8. 9. 3. एवमेवैष मघवन्निति होवाच 8. 10. 4; 8. 11. 3.
Brih. 1. 3. 1. ते ह देवा ऊचुः
2. ते ह वाचमूचुः (similarly 5 times more).
8. ते होचुः क नु सो ऽभूत्
24. राजानं भक्षयन्नुवाच
1. 4. 1. अहमयमित्येवाग्र उक्त्वा
2. 1. 15. ब्रह्म मे वक्ष्यतीति
2. 4. 2. नेति होवाच याज्ञवल्क्य 3. 2. 11; 4. 5. 3.
2. 5. 16. तन्मधु दध्यङ्ङाथर्वणो ऽश्विभ्यामुवाच 17, 18, 19.

Brih. 2. 5. 16. ऋषिः पश्यन्नवोचत् 17, 18, 19.
3. 1. 2. तान्होवाच ब्राह्मणा भगवन्तः
— ब्रह्मचारिणमुवाच
— स होवाच नमो वयं . . कुर्मः
3. याज्ञवल्क्येति होवाच (passim).
3. 2. 13. तौ ह यदूचतुः कर्म हैव तदूचतुः
3. 3. 1. स होवाचोवाच वै सः
3. 4. 2. स होवाचोषस्तश्चाक्रायणः
3. 6. 1. स होवाच गार्गि मातिप्राक्षीः
3. 8. 1. वाचक्नव्युवाच ब्राह्मणाः
— तौ चेन्मे वक्ष्यति
3. 9. 1. यावन्तो वैश्वदेवस्य निविद्युच्यन्ते
— ओमिति होवाच (7 times); 5. 2. 1—3; 6. 2. 1.
10. तस्य का देवतेत्यमृतमिति होवाच (similarly in 11—17).
25. अहल्लिकेति होवाच
28. रेतस इति मा वोचत
4. 1. 1. तं होवाच किमर्थमचारीः
— उभयमेव सम्राडिति होवाच
4. 2. 1. कूर्चादुपावसर्पन्नुवाच
— वक्ष्यामि यत्र गमिष्यसि
4. 3. 2. आदित्यज्योतिः सम्राडिति होवाच
33. एष ब्रह्मलोकः सम्राडिति होवाच. 4. 4. 23.
4. 4. 7. सोऽहं भगवते सहस्रं ददामीति होवाच जनकः
4. 5. 15. एतावदरे खल्वमृतत्वमिति होक्त्वा . . विजहार
5. 2. 1. देवा ऊचुर्ब्रवीतु नो भवान्
— तेभ्यो हैतदक्षरमुवाच द इति 2, 3.

Brih. 5. 2. 1. व्यज्ञासिष्मेति होचुः
मिति होवाच 2, 3
2. मनुष्या ऊचुर्ब्रवीतु नो
3. असुरा ऊचुर्ब्रवीतु नो
5. 12. 1. तस्मा उ हैतदुवाच
6. 1. 7. तद्धोचुः को नो वसि
8. संवत्सरं प्रोष्यागः 9–12.
13. तेहोचुर्मा भगव
6. 2. 2. नेति होवाच (4 tim
3. नो भवान् पुरानुशिचत्
4. यदहं किञ्चन वेद तत्तुभ्यमवोचम्
8. तां त्वहं तुभ्यं वक्ष्या
6. 3. 7. एतं . . अन्तेवासिन वाच 8–12.
Tait. 1. 2. 1. इत्युक्तः शीक्षाध्याय
1. 7. 1. ऋषिरवोचत्पांक्तं व सर्वम्
2. 2. 1. तस्मात्सर्वौषधमुच्यते
— तस्मादन्नं तदुच्यते 6. 12.
2. 3. 1. तस्मात्सर्वायुषमुच्यते (bis).
2. 7. 1. तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते
Katha. 1. 4. स होवाच पितरं ता
— द्वितीयं तृतीयं तं हो
15. लोकादिमग्निं तमुवा
3. 16. उक्त्वा श्रुत्वा च मे
5. 8. तदेवामृतमुच्यते 6.
Maitri. 1. 2. स तस्मै नमस्कृत्वो
2. 6. उच्यते यः प्राणोऽपा
— अन्यत्राप्युक्तम् 3. 4. 2; 6. 4, 5, 12, 1 19—28.
3. 2. भूतशब्देनोच्यन्ते (b

ं. 3. 2. तच्छरीरमित्युक्तं यो ह.. शरीर इत्युक्तं स भूतात्मेत्युक्तम्
4. 1. ते.. अभिसमेत्योचुः
2. अथोक्तं शब्दस्पर्शादयः
3. आश्रमेष्वेवानवस्थस्तपस्वी वेत्युच्यते
5. ते होचुर्भगवन्नभिवाद्यसि
— निहितमस्माभिरेतद्यथावदुक्तं मनसि
6. 5. इत्यत ओमित्युक्तेनैताः प्रस्तुता अर्चिताः
18. षडङ्गा इत्युच्यते योगः
29. एवमुक्त्वान्तर्हृदयः शाकायन्यः 30.
31. शान्तादिलक्षणोक्तः
7. 8. वाटचे पुरस्तादुक्ते ऽपि
10. तस्मै नमस्कृत्वोचुः
— अतो ऽन्यतममेतेषामुक्तम्
— यद्वेदेपूक्तं तद्विद्वांस उपजीवन्ति
11. कस्मादुच्यते वैद्युतः
.l. 1. 2. तां पुरोवाचाङ्गिरे
1. 2. 7. उक्तमवरं येषु कर्म
2. 2. 4. ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते Dhyâna. 19.
3. 2. 11. एतत्सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच
âr.13. 3. वोचेम शन्तमं हृदे
1. 1. एष ह वै तत्सर्वं वक्ष्यतीति
2. तान् ह स ऋषिरुवाच
— यदि विज्ञास्यामः सर्वं ह वो वक्ष्यामः
2. 3. तान् वरिष्ठः प्राण उवाच
4. 8. वाक् च वक्तव्यं च
6. 1. यद्यहमिममवेदिषं कथं ते नावक्ष्यम्

Praśna. 6. 1. तस्मान्नार्हाम्यहमनृतं वक्तुम्
Kaivalya. 1. भगवन्तं परमेष्ठिनं परिसमेत्योवाच
2. तस्मै स होवाच पितामहश्च
Gauḍa. 3. 2. अतो वक्ष्याम्यकार्पण्यम्
18. द्वैतं तद्भेद उच्यते
4. 44. मायाहस्ती यथोच्यते
— अस्ति वस्तु तथोच्यते
60. विवेकस्तत्र नोच्यते
67. किं तदस्तीति चोच्यते
86. शमः प्राकृत उच्यते
Nṛip. 1. 3. स होवाच स यो ह वै तत् ..वेद
4. स होवाच प्रजापतिः 3. 1; 4. 1; 5. 1, 3.
2. 4. कस्मादुच्यते उग्रमिति
— तस्मादुच्यते उग्रमिति
— कस्मादुच्यते वीरमिति
— तस्मादुच्यते वीरमिति
— कस्मादुच्यते महाविष्णुमिति
— तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति
— कस्मादुच्यते ज्वलन्तमिति
— तस्मादुच्यते ज्वलन्तमिति
— कस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति
— तस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति
— कस्मादुच्यते नृसिंहमिति
— तस्मादुच्यते नृसिंहमिति
— कस्मादुच्यते भीषणमिति
— तस्मादुच्यते भीषणमिति
— कस्मादुच्यते भद्रमिति
— तस्मादुच्यते भद्रमिति
— कस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति
— तस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति
— कस्मादुच्यते नमामीति

Nrip. 2. 4. तस्मादुच्यते नमामीति
— कस्मादुच्यते अहमिति
3. 1. तदेतदृषिणोक्तं निदर्शनम् (bis).

Nrisut. 7. कस्त्वमित्यहमिति होवाच
— अवचनेनैवानुभवन्नुवाच (bis).
9. ब्रूह्येव भगवन्निति ते देवा ऊचुः
— नेति होचुर्हन्तासङ्गा वयमिति होचुः
— कथं पश्यन्तीति होवाच न वयं विद्म इति होचुः
— ततो यूयमेव स्वप्रकाशा इति होवाच
— विदिताविदितात्पर इति होचुः (bis).
— क्वैषा कथामिति होचुः
— किं तेन न किञ्चनेति होचुः
— ज्ञातो ऽज्ञातश्चेति होचुः
— न चैवमिति होचुः
— ब्रूतैवैनमात्मसिद्धमिति होवाच
— नैव वयं वक्तुं शक्नुमः
— नमस्ते भगवन् प्रसीदेति होचुः
— न भेतव्यं पृच्छतेति होवाच
— एष एवात्मेति होवाच
— ते होचुर्नमस्तुभ्यं वयं ते

Brahmav. 3. यदुक्तं ब्रह्मवादिभिः
— शरीरं तस्य वक्ष्यामि

Kshur. 1. 15. यथोक्तं हि स्वयम्भुवा

Siras. 4. कस्मादुच्यते ओङ्कारः
— तस्मादुच्यते ओङ्कारः
— कस्मादुच्यते प्रणवः (this is repeated with तस्मात् and so with the others).
— कस्मादुच्यते सर्वव्यापी

Siras. 4. कस्मादुच्यते ऽनन्तः
— कस्मादुच्यते तारम्
— कस्मादुच्यते शुक्लम्
— कस्मादुच्यते सूक्ष्मम्
— कस्मादुच्यते वैद्युतम्
— कस्मादुच्यते परं ब्रह्म
— कस्मादुच्यते एकः
— कस्मादुच्यते रुद्रः
— कस्मादुच्यते ईशानः
— कस्मादुच्यते भगवानीश्वरः
6. कालाद्यापक उच्यते

Sikhâ. 1. ओमोमोमिति त्रिरु

Mahâ. 1. तस्य ध्यानान्तःस्थस्य स्तोममुच्यते

Brahma. 1. तस्मै स होवाच ब्रह्मविद्यां वरिष्ठाम्
3. स शिखीत्युच्यते वि

Nâda. 2. शरीरं सत्त्वमुच्यते

Amrita. 5. प्रत्याहारः स उच्यते
6. षडङ्गो योग उच्यते
10. प्राणायामः स उच्यते
16. आगमस्याविरोधेन तर्क उच्यते

Tejo. 4. त्रिधामा हंस उच्यते

Nyâsa. 2. उच्यते.. आश्रमी
— कथं सन्न्यस्त उच्
— यस्मिन् सन्न्यस्त उ

Kaṭhaśru. 1. को ऽयं सन्न्यास उ
— तदप्येतदृषिणोक्तम्
4. स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इ

Sarvop. 2. तत्तुरीयं चैतन्यमित
— अन्नमयः कोश इत्यु
— प्राणमयः कोश इत्यु
— मनोमयः कोश इत्यु
— विज्ञानमयः कोश इत्यु
— आनन्दमयः कोश इत्युच्यते

rvop. 2. उपाहितत्वाज्जीव इत्युच्यते
— हृग्रन्थिरित्युच्यते
— स क्षेत्रज्ञ इत्युच्यते
3. स साक्षीत्युच्यते
— तदा कूटस्थ इत्युच्यते
— तदान्तर्यामीत्युच्यते
— तदा त्वंपदार्थः प्रत्यगात्मेत्युच्यते
4. अनन्तमित्युच्यते
— आनन्द इत्युच्यते
— परं ब्रह्मेत्युच्यते
— आत्मेत्युच्यते
— सा मायेत्युच्यते
1. स वै ब्रह्म परमात्मेत्युच्यते
1. नारदो भगवन्तमुपगम्योवाच
3. एकदण्डी स उच्यते
a. 1. आरुणिः..तं गत्वोवाच
2. लोकांश्च विसृजेदिति होवाच
5. यमुक्त्वा मुच्यते योगी (यं दृष्ट्वा is a variant).
1. तं होवाच भगवान्
— वेदवादिभिरुक्तम्
1. बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यम् Râmot. 1.
3. अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः
4. अथ ह जनको वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्योवाच
1. तं होवाच भगवान्वासुदेवः
3. गोपीत्यम उच्यताम्
5. बहुनात्र किमुक्तेन
— गोपीचन्दनमित्युक्तम्
1. 1. ते होचुस्तं सुराः सर्वे
ap. 20. रामो वाच्यः
ot. 2. तस्मादुच्यते तारकम्
4. अथ स होवाच श्रीरामः
— श्रीरामचन्द्रेणोक्तम्

Râmot. 5. भरद्वाजो याज्ञवल्क्यमुवाच
Mukti. 1. 8. हनूमञ्छृणु वक्ष्यामि
29. शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः
1. ज्ञानमात्रेणोक्ता
Gîtâ. 1. 24. एवमुक्तो हृषीकेशः
25. उवाच पार्थ पश्यैतान्
47. एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये
2. 1. उवाच मधुसूदनः
9. एवमुक्त्वा हृषीकेशम्
— न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा
10. तमुवाच हृषीकेशः
18. अन्तवन्त इमे देहाः..उक्ताः
25. अविकार्योऽयमुच्यते
48. समत्वं योग उच्यते
55. स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते
56. स्थितधीर्मुनिरुच्यते
3. 6. मिथ्याचारः स उच्यते
40. अस्याधिष्ठानमुच्यते
6. 3. कर्म कारणमुच्यते
— शमः कारणमुच्यते
4. योगारूढस्तदोच्यते
8. युक्त इत्युच्यते योगी
18. युक्त इत्युच्यते तदा
7. 2. इदं वक्ष्याम्यशेषतः
8. 1. अधिदैवं किमुच्यते
3. स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते
21. अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तः
23. तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ
10. 1. वक्ष्यामि हितकाम्यया
16. वक्तुमर्हस्यशेषेण
11. 1. यत्त्वयोक्तं वचः
9. एवमुक्त्वा ततो राजन्
21. स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः
41. सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तम्

Gîtâ. 11. 50. इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
13. 12. न सत्तन्नासदुच्यते
17. तमसः परमुच्यते
18. ज्ञेयं चोक्तं समासतः
20. हेतुः प्रकृतिरुच्यते
— भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते
22. परमात्मेति चाप्युक्तः
14. 25. गुणातीतः स उच्यते
15. 16. कूटस्थो ऽक्षर उच्यते
20. इदमुक्तं मयानघ
16. 24. ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तम्
17. 14. शारीरं तप उच्यते
15. वाङ्मयं तप उच्यते
16. तपो मानसमुच्यते
27. सदिति चोच्यते
28. असदित्युच्यते पार्थ
18. 23. तत्सात्त्विकमुच्यते
26. कर्त्ता सात्त्विक उच्यते
28. कर्त्ता तामस उच्यते
65. ततो वक्ष्यामि ते हितम्
67. न चाशुश्रूषवे वाच्यम्

वचन

Maitri. 6. 10. इति वचनात्
Gîtâ. 1. 2. राजा वचनमब्रवीत्
11. 35. एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
18. 73. करिष्ये वचनं तव

वचस्

Chhâ. 8. 7. 3. इति भगवतो वचो वेदयन्ते
Bṛih. 6. 2. 2. अपि हि न ऋषेर्वचः श्रुतम्
Nîla. 6. शिवेन वचसा..अच्छाव-
दामसि
Kṛish. 3. रुद्रादीनां वचः श्रुत्वा
Gîtâ. 2. 10. तमुवाच..इदं वचः
10. 1. शृणु मे परमं वचः 18. 64.
11. 1. यत्त्वयोक्तं वचः

वज्र

Kaṭha. 6. 2. महद्भयं वज्रमुद्यतम्
Aruṇeya. 4. इन्द्रस्य वज्रो ऽसि
Gâruḍa. 2. हतमिन्द्रस्य वज्रेण
Gîtâ. 10. 28. आयुधानामहं वज्रम्

वज्रनख

Mahânâr. 3. 17. वज्रनखाय धीमहि N[illegible]
4. 2.

वज्रबाहु

Mahânâr. 20. 11. महाँ इन्द्रो वज्रबाहुः

वज्रशूलाढ्य

Râmap. 70. भुजैर्दं वज्रशूलाढ्यम्

वज्रसूचिक

Mukti. 1. 33. रहस्यं वज्रसूचिकम्
1. *vide* जाबालि

वञ्च्

Śwet. 4. 3. त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्च[illegible]
(so all the MSS.)

वट

Nṛisut. 9. वटान् स्वबीजानुसार[illegible]

वटकणिका

Sarvop. 2. वटकणिकायामिव वृ[illegible]

वटबीज

Nṛisut. 9. सैषा वटबीजसामान्य[illegible]
— यथा वटबीजसामान्यम[illegible]
म्

वटबीजस्थ

Râmap. 15. यथैव वटबीजस्थः

वटभाण्डीर

Kṛish. 26. गरुडो वटभाण्डीरः (?
MSS. have भाण्डीर[illegible]

वत्स

hâ. 3. 15. 2. तासां वायुर्वत्सः
— वायुं दिशां वत्सं वेद (bis).
h 1. 5. 2. वत्सं जातमाहुरतृणाद इति
5. 8. 1. तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः

वत्सनपात्

h. 2. 6. 3. विदर्भीकौण्डिन्यो वत्सनपातो बाभ्रवात् 4. 6. 3.
— वत्सनपाद्बाभ्रवः पथः सौभरात्

वत्सर

itri. 6. 14. द्वादशात्मकं वत्सरम्

वद्

. 3. 13. किमिहान्यं वावदिषादिति
ash. 2. 13. एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्वाचा वदत्यथैतन्म्रियते यन्न वदति
14. तद्वाचा वदच्छिष्ये
— तद्वाचा वदच्चक्षुषा पश्यत् (ter).
3. 2. वाचं वदन्तीं सर्वे प्राणा अनुवदन्ति
3. न वाचा वदति न ध्यायति
na. 1. केनेषितां वाचमिमां वदन्ति
â. 1. 2. 3. तस्मात्तयोभयं वदति सत्यं चानृतं च
1. 8. 1. हन्तोद्गीथे कथां वदामः
2. भगवन्तावग्रे वदतां ब्राह्मणयोर्वदतोर्वाचं श्रोष्यामि
2. 24. 1. ब्रह्मवादिनो वदन्ति Śwet. 1. 1; Kathaśru. 1.
5. 1. 9. वदन्तो वाचा 10, 11; Bṛih. 6. 1. 9–12.

Chhâ. 5. 3. 5. यथा मा त्वं तदेतानवदः
7. यथा मा त्वं गौतमावदः
5. 11. 6. येन हैवार्थेन पुरुषश्चरेत्तं हैव वदेत्
7. 17. 1. यदा वै विजानात्यथ सत्यं वदति नाविजानन् सत्यं वदति
Bṛih. 1. 3. 2. यत्कल्याणं वदति तदात्मने
— यदेवेदमप्रतिरूपं वदति
1. 4. 7. वदन्वाक्
14. सत्यं वदन्तमाहुर्धर्मं वदतीति धर्मं वा वदन्तं सत्यं वदतीति
1. 5. 18. यया यद्यदेव वदति तत्तद्भवति
21. वदिष्याम्येवाहमिति वाग्दध्रे
2. 4. 9. यथा वीणायै वाद्यमानायै 4. 5. 10.
3. 9. 10. वदैव शाकल्य तस्य का देवता 11–17.
23. दीक्षितमाहुः सत्यं वदेति
4. 3. 1. स मेने न वदिष्ये
26. यद्वै तन्न वदति वदन्वै तन्न वदति
— न तु . . ततोऽन्यद्विभक्तं यद्वदेत्
31. अन्यो ऽन्यद्वदेत्
4. 4. 2. एकीभवति न वदति
6. 2. 2. आपः पुरुषवाचो भूत्वा समुत्थाय वदन्ति
Tait. 1. 1. 1. त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि
— ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि
1. 11. 1. सत्यं वद धर्मं चर
1. 12. 1. त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्

Tait. 1. 12. 1. ऋतमवादिषं सत्यमवादिषम्
Katha. 2. 14. यत्तत्पश्यसि तद्वद
15. तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति
3. 1. छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति
14. दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति
Śwet. 2. 13. योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति
4. 9. भूतं भव्यं यच्च वेदा वदन्ति
6. 1. स्वभावमेके कवयो वदन्ति
Maitri. 6. 22. निवाते वदति
7. 9. वेदादिशास्त्रहिंसकधर्माभिध्यानमस्त्विति वदन्ति
Muṇḍ. 1. 1. 4. यद्ब्रह्मविदो वदन्ति
3. 2. 10. तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत
Mahânâr. 1. 3. यदन्तः समुद्रे कवयो वदन्ति
16. 4. बृहद्वदेम विदथे सुवीराः
22. 1. किं भगवन्तः परमं वदन्ति
— सत्यं परमं वदन्ति
— तपः परमं वदन्ति
— दमः परमं वदन्ति
— शमः परमं वदन्ति
— दानं परमं वदन्ति
— धर्मं परमं वदन्ति
— प्रजननं परमं वदन्ति
— अग्नीन्परमं वदन्ति
— अग्निहोत्रं परमं वदन्ति
23. 1. यज्ञं परमं वदन्ति
— मानसं परमं वदन्ति
Nṛip. 1. 1. तद्वात्मा वदति
Śiras. 5. मुनयो ऽवाग्वदन्ति न तस्य ग्रहणम्
Garbha. 1. वाचा वदति
Nîla. 23. वाचं वदिष्यतः
Kaṭhaśru. 2. मे तद्वदतो शास्यथेति
— न वदन्तो न वदन्तः
— अथ पुत्रो वदति

Kṛish. 23. वदन्ति विबुधा जनाः
Râmap. 12. अर्थं मन्त्रो वदत्ययम्
Râmot. 3. इति वदन्ति ब्रह्मवादि
Mukti. 1. 6. कृपया वद मे राम
7. वदामि शृणु तत्त्वतः
8. वर्तन्ते कुत्र ते वद
10. कृपया वद तत्त्वतः
Gîtâ. 2. 29. आश्चर्यवद्वदति तथैव च
36. वदिष्यन्ति तवाहिताः
3. 2. तदेकं वद निश्चित्य
8. 11. यदक्षरं वेदविदो वद
10. 14. यन्मां वदसि केशव

वदन

Gîtâ. 11. 30. लेलिह्यसे.. वदनैर्ज्वल

वध्

Śwet. 4. 22. वीरान् मा नो रुद्र भामि वधीः

वध

Chhâ. 8. 1. 5. न वधेनास्य हन्यते 8. 2, 4.

वधाशङ्का

Bṛih. 4. 1. 3. वधाशङ्का भवति यां मेति (one MS. has ...ङ्कम्)

वध्र्यश्व

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

वन्

Mahânâr. 9. 5. वसोः कुविद्वनाति नः

वन

Mahânâr. 9. 1. स्वधितिर्वनानाम् 17. 8
Nyâsa. 2. वनं गच्छति संयतः
Jâbâla. 4. ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेद्गृ वनाद्वा
Kṛish. 9. वने वृन्दावने क्रीडन्

वनमार्ग

ása. 2. चरेत् वनमार्गेण (4 MSS. read चरेत्सुवर्णवर्णेन)

वनस्थ

ıp. 35. रामपत्नीं वनस्थाम्

वनस्पति

. 7. 2. 1. तृणवनस्पतीन् 7. 7. 1.
7. 8. 1. तृणवनस्पतयः 7. 10. 1; Maitri. 1. 4.
. 1. 1. 1. ओषधयश्च वनस्पतयश्च लोमानि
3. 2. 13. वनस्पतीन् केशाः
3. 9. 28. यथा वृक्षो वनस्पतिः
6. 3. 6. मधुमान्नो वनस्पतिः Mahânâr. 9. 10; 17. 7.
. 1. 7. 1. आप ओषधयो वनस्पतयः
ıt. 2. 17. य ओषधीषु यो वनस्पतीषु
ıs. 6. यो रुद्रो वनस्पतिषु
. 20. ये वा वनस्पतीनाम्

वनिन्

. 4. गृही भूत्वा वनी भवेद्वनी भूत्वा प्रव्रजेत्

वन्द्

. 1. 22. वन्द्यश्चैष महामुनिः
4. 1. तं वन्दे द्विपदां वरम्
p. 92. रामं वन्दे सच्चिदानन्दरूपम्

वन्ध्या

i. 7. 9. अन्यथैषा वन्ध्येवैषा

वन्ध्यापुत्र

a. 3. 28. वन्ध्यापुत्रो न तत्त्वेन मायया वापि जायते

वप्

ásru. 3. यद्वसन्ते केशश्मश्रुलोमनखानि वापयेत्

वपन

Brahma. 2. सशिखं वपनं कृत्वा

वपुस्

Parama. 2. एतद्वपुरपध्वस्तम्
Râmap. 3. अभिरामेण वपुषा (so Weber, but MSS. वा पुनः for last word).

वम्

Mahânâr. 9. 13. चतुःशृंगो ऽवमीद्गौर एतत्

वयस्

Chhâ. 2. 9. 4. तदस्य वयांस्यन्वायत्तानि
2. 21. 1. नक्षत्राणि वयांसि मरीचयः स प्रतिहारः
3. 16. 2. तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत् 4, 6.
7. 2. 1. पशूंश्च वयांसि च 7. 7. 1.
7. 8. 1. पशवश्च वयांसि च 7.10.1.
Brih. 1. 4. 16. श्वापदा वयांसि
3. 9. 25. वयांसि वैनद्विमथ्नीरन्
Muṇḍ.2. 1. 7. साध्या मनुष्याः पशवो वयांसि
Praśna. 4. 7. यथा..वयांसि वासोवृक्षं सम्प्रतिष्ठन्ते

वयुन

Brih. 5. 15. 1. विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् Iśâ. 18.

वयुनाविद्

Śwet. 2. 4. वि होत्रा दधे वयुनावित्

वयोगत

Ait. 4. 4. अस्यायमितर आत्मा .. वयोगतः प्रैति

1. वर *adj.*

Kaush. 3. 1. न वै वरो ऽवरस्मै वृणीते
Mahânâr.10. 7. वरं वेश्मभूतम्

Gauda. 4. 1. तं वन्दे द्विपदां वरम्
Kshur. 15. तासां मध्ये वराः स्मृताः
16. तयोर्मध्ये वरं स्थानम्
Gîtâ. 8. 4. देहे देहभृतां वर

2. वर

Kaush. 3. 1. प्रतर्दन वरं वृणीष्व
Chhâ. 5. 3. 6. मानुषस्य..वित्तस्य वरं वृणीथाः
Brih. 1. 3. 28. तेषु वरं वृणीत यं कामं कामयेत
4. 3. 1. तस्मै ह याज्ञवल्क्यो वरं ददौ
6. 2. 4. वरं भगवते गौतमाय दद्मः
5. प्रतिज्ञातो म एष वरः
6. दैवेषु वै गौतम तद्वरेषु
Katha. 1. 9. त्रीन् वरान् वृणीष्व
10. त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे
13. एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण
16. वरं तवेहाद्य ददामि भूयः
19. यमवृणीथा द्वितीयेन वरेण
— तृतीयं वरं नचिकेतो वृणीष्व
20. वराणामेष वरस्तृतीयः
21. अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व
22. नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित्
24. एततुल्यं यदि मन्यसे वरम्
27. वरस्तु मे वरणीयः स एव
29. यो ऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टः
3. 14. प्राप्य वरान्निबोधत
Maitri. 1. 2. उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरं वृणीष्व

वरणा

Jâbâla. 2. वरणायां नास्यां च मध्ये (वरणाया नास्याश्च is a variant); Râmot. 4.
— का वै वरणा (केन वरणा भवति is a variant); Râmot. 4.
Jâbâla. 2. सर्वानिन्द्रियकृतान्दो[षान्] न्वारयतीति तेन वर[णा] भवति Râmot. 4.

वरद

Śwet. 4. 11. ईशानं वरदं देवमी[ड्यम्]
Siras. 5.
Mahânâr. 15. 1. आयातु वरदा देवी
Brahmav. 12. वरदः सर्वभूतानाम्

वरसद्

Katha. 5. 2. नृषद्वरसदृतसद् Mah[ânâr.] 9. 3; 17. 8; Nrip.

वरान्तर

Râmot. 4. नातो वरान्तरम्

वराह, °हक

Kaush. 1. 2. सिंहो वा वराहो वा
Chhâ. 6. 9. 2. वृको वा वराहो वा 6.1[0.2]
Mahânâr. 4. 5. उद्धृतासि वराहेण
Mukti. 1. 39. याज्ञवल्क्यं वराहकम्
1. *vide* सरस्वतीरहस्य

वरिष्ठ

Mund. 1. 2. 10. इष्टापूर्तं मन्यमाना व[रिष्ठम्]
2. 2. 1. परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं [प्रजा]नाम्
11. ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं व[रिष्ठम्]
3. 1. 4. एष ब्रह्मविदां वरिष्ठः
Prasna. 2. 1. कः पुनरेषां वरिष्ठः
3. तान् वरिष्ठः प्राण उवा[च]
Kaivalya. 1. अधीहि भगवन् ब्रह्म[विद्यां] वरिष्ठाम्
Siras. 1. ज्येष्ठोहं श्रेष्ठोहं वरिष्ठो[हम्]
Brahma. 1. तस्मै स होवाच ब्रह्म[विद्यां] वरिष्ठाम्

वरुण

Chhâ. 1. 12. 5. देवो वरुणः प्रजापतिः
2. 22. 1. अपध्वान्तं वरुणस्य

8. 1. यत्तृतीयममृतं तदादित्या उपजीवन्ति वरुणेन मुखेन
3. आदित्यानामेवैको भूत्वा वरुणेनैव मुखेन
4. 11. इन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः
9. 16. तस्य का देवतेति वरुण इति
22. स वरुणः कस्मिन्प्रतिष्ठितः
1. 1. शं नो मित्रः शं वरुणः 1.12.1.
1. 1. वरुणं पितरमुपससार 3. 2. 1; 3. 3. 1; 3. 4. 1; 3. 5. 1.
5. 1. त्वमग्निर्वरुणो वायुः
7. 4. वरुणः साध्या उत्तरत उद्यन्ति
.r. 4. 11. हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये
12. तन्मे इन्द्रो वरुणः . . पुनन्तु
5. 1. नमो वरुणाय नमो वारुण्यै
2. तन्मे वरुणो राजा पाणिना ह्यवमर्शतु
8. इमास्तदापो वरुणः पुनातु
11. वरुणो ऽपामघमर्षणः
12. पुनातु वरुणः पुनात्वघमर्षणः
20. 13. वरुणस्य स्कम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनमसि उन्मुक्तो वरुणस्य पाशः
2. 4. इन्द्रो वरुणो मित्रो ऽर्यमा
56. *vide* अनिल
10. 29. वरुणो यादसामहम्
11. 39. वायुर्यमो ऽग्निर्वरुणः शशांकः

वरुणदेवत

. 9. 22. किंदेवतो ऽस्यां प्रतीच्यां दिश्यसीति वरुणदेवत इति

वरुणलोक

. 1. 3. स वरुणलोकं (आगच्छति)

वरूथ

.ar. 22. 1. यज्ञानां वरूथं दक्षिणा

वरेण्य

Brih. 6. 3. 6. अथैनमाचामति तत्सवितुर्वरेण्यम्
Śwet. 4. 18. तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यम्
5. 4. एवं स देवो भगवान्वरेण्यः
Maitri. 6. 7. तत्सवितुर्वरेण्यम्
34. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गः Mahânâr. 15. 2.
Muṇḍ 2. 2. 1. एतज्जानथ सदसद्वरेण्यम्
Śiras. 5. विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यम्

वर्ग

Kaush. 2. 7. वर्गोऽसि पाप्मानं मे वृङ्धि
Sarvop. 2. एते पञ्च वर्गा इति
— एतेषां पञ्चवर्गाणाम्

वर्गाष्टक

Râmap. 63. वर्गाष्टकमथालिखेत्

वर्चोदा

Mahânâr. 24. 1. वर्चोदास्त्वमसि सूर्यस्य

वर्जन

Mukti. 2. 28. भवभावनवर्जनात्

वर्जम्

Kaṭhaśru. 4. वर्षावर्जम्
Gîtâ. 2. 59. रसवर्जम्

वर्ण्

Maitri. 6. 34. न शक्यते वर्णयितुं गिरा

वर्ण

Brih. 1. 4. 13. स शौद्रं वर्णमसृजत
Tait. 1. 2. 1. वर्णः स्वरः | मात्रा बलम्
Kaṭha. 1. 28. वर्णरतिप्रमोदान्
Śwet. 4. 1. य एको ऽवर्णः . . वर्णाननेकान् . . दधाति
Gauḍa. 4. ~~57.~~ 60 यत्र वर्णा न वर्तन्ते
Śiras. 5. ब्रह्मदेवत्या रक्ता वर्णेन
— विष्णुदेवत्या कृष्णा वर्णेन

Śiras. 5. ईशानदेवत्या कपिला वर्णेन
— शुद्धस्फटिकसन्निभा वर्णेन
Amṛita. 35. अथ वर्णास्तु पञ्चानाम्
Kaṭhaśru. 1. चतुर्षु वर्णेषु भैक्षचर्यं चरेत्
Râmap. 9. वर्णवाहनकल्पना
63. तेषु मालामनोर्वर्णान्

वर्णप्रसाद

Śwet. 2. 13. वर्णप्रसादं स्वरसौष्ठवं च

वर्णभेद

Gopî. 4. पृथिव्याश्च वैभवाद्वर्णभेदाः

वर्णसङ्कर

Gîtâ. 1. 41. जायते वर्णसंकरः
43. वर्णसंकरकारकैः

वर्त्तनि, °नी

Chhâ. 4. 16. 1. तस्य वाक् च मनश्च वर्त्तनी
3. अन्यतरामेव वर्त्तनीं संस्कुर्वन्ति
4. उभे एव वर्त्तनी संस्कुर्वन्ति
Bṛih. 2. 2. 2. अधरयैनं वर्त्तन्या पृथिव्यन्वायत्ता

वार्त्ति

Maitri. 6. 36. वर्त्याधारस्नेहयोगात्

वर्त्मन्

Chhâ. 4. 15. 1. वर्त्मनी एव गच्छति
Gîtâ. 3. 23. मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते 4. 11.
9. 3. मृत्युसंसारवर्त्मनि

वर्द्धन

Râmap. 82. आयुरारोग्यवर्द्धनम्

वर्मन्

Râmap. 67. वर्मास्त्रनतिसंयुक्तम्

वर्ष

Chhâ. 3. 16. 1. चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रा[illegible] सवनम्
3. चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्मा[illegible]ध्यन्दिनं सवनम्
5. अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि [illegible] तृतीयसवनम्
4. 10. 1. द्वादशवर्षाण्यग्नीन् प[illegible]चार
5. 5. 2. तस्या आहुतेर्वर्षं सं[illegible]
5. 6. 2. देवा वर्षं जुह्वति
7. 4. 2. तेषां संक्लृप्त्यै वर्षं स[illegible] ते वर्षस्य संक्लृप्त्या [illegible] सङ्कल्पते
8. 7. 3. तौ ह द्वात्रिंशतं वर्षाणि [illegible]ह्मचर्यमूषतुः
8. 9. 3. अपराणि द्वात्रिंशतं व[illegible]णि (bis); 8. 10. 4 (bi[illegible]
8. 11. 3. अपराणि पञ्च वर्षाणि (bi[illegible]
— एकशतं ह वै वर्षाणि ब्र[illegible]चर्यमुवास
Nâda. 12. स राजा भारते वर्षे
Aśrama. 1. अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि [illegible] ब्रह्मचर्यं चरेत्
— चतुर्विंशतिवर्षाणि गु[illegible]लवासी
— अष्टाचत्वारिंशद्वर्षवासी
Gîtâ. 9. 19. वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि [illegible]

वर्षगण

Chhâ. 4. 4. 5. स ह वर्षगणं प्रोवास

वर्षशत

Chhâ. 3. 16. 7. स ह षोडशं वर्षशतम[illegible] वत्स ह षोडशं वर्षशतं [illegible] वति य एवं वेद

वर्षसहस्र

Bṛih. 3. 8. 10. तपस्तप्यते बहूनि वर्ष[illegible]स्राणि

वर्षा

ha. 2. 5. 1. वर्षा उद्गीथः 2. 16. 1.
itri. 6. 33. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः शरद्धेमन्तः
7. 3. वैरूप्यं वर्षाः..पश्चादुद्यन्ति
hasru. 4. वर्षावर्जम्
meya. 3. वर्षासु ध्रुवशीलः

वल्कल

hasru. 1. विशीर्णं वस्त्रं वल्कलं वा
ına. 3. चीरचर्मवल्कलपरिवृताः

वल्मीक

h. 4. 4. 7. यथा हि निर्ल्वयनी वल्मीके मृता
âla. 6. *vide* स्थण्डिल

वश्

ha. 1. 1. उशन् ह वै वाजश्रवसः
itri. 2. 7. स वा एष आत्मेहोशन्ति कवयः

वश

5. 2. क्रतुरस्तुः कामो वश इति
ha. 2. 6. पुनः पुनर्वशमापद्यते मे
ina. 2. 13. प्राणस्येदं वशे सर्वम्
2. 26. वासनावशतः प्राणस्पन्दः
2. 61. वशे हि यस्येन्द्रियाणि
3. 34. तयोर्न वशमागच्छेत्
6. 26. आत्मन्येव वशं नयेत्

वशात्

6. 30. प्रकृतिभेदवशात्
35. यशस आश्रयवशात्
2. एवं सर्वं हंसवशात् (bis).
4. मायासहितब्रह्मसंभोगवशात्
3. श्रीरामसान्निध्यवशात्
1. 43. ततः कालवशादेव

Mukti. 2. 8. प्रागभ्यासवशाद्याति
60. मदवशादिव
Gîtâ. 9. 8. प्रकृतेर्वशात्

वशानुग

Mahânâr. 19. 1. तिलाः सौम्या वशानुगाः
Chûl. 6. स्वच्छन्देन वशानुगः
Nâda. 6. वायव्यैषा वशानुगा

वशिन्

Bṛih. 4. 4. 22. सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः
Kaṭha. 5. 12. एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
Swet. 3. 18. वशी सर्वस्य लोकस्य
6. 12. एको वशी निष्क्रियाणां बहूनाम्
Mahânâr. 5. 6. विश्वस्य मिषतो वशी
20. 5. वृत्रहा विमृधो वशी
Gîtâ. 5. 13. आस्ते सुखं वशी

वश्य

Kaṭha. 3. 6. तस्येन्द्रियाणि वश्यानि
Nṛisut. 4. वश्यां स्फुरन्तीमततीं निपीड्य (Nârâyaṇa explains this and वत्स्यां; other MSS.vary considerably).

वश्यात्मन्

Gîtâ. 6. 36. वश्यात्मना तु यतता

वषट्

Nṛip. 2. 2. ओं शिखायै वषट्

वषट्कार

Bṛih. 5. 8. 1. स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारः
— द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च
Mahânâr. 15. 6. त्वं यज्ञस्त्वं विष्णुस्त्वं वषट्कारः

Prânâg. 1. त्वं रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं वषट्कारः
Kathaśru. 2. त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारः
— अहं ब्रह्माहं यज्ञोऽहं वषट्कारः
Râmap. 70. वषट्कारं च तद्बहिः

1. वस् (निवासे)

Kaush. 2. 15. पुत्रस्यैश्वर्ये पिता वसेत्
3. 2. यावदस्मिंच्छरीरे प्राणो वसति तावदायुः
4. सह ह्येतावस्मिंच्छरीरे वसतः
4. 1. सोऽवसदुशीनरेषु
Chhâ.1. 10. 1. इभ्यग्रामे प्रद्राणक उवास
3. 16. 1. एते हीदं सर्वं वासयन्ति
4. 2. 5. महावृषेषु यत्रास्मा उवास (?)
4. 3. 6. तं..नाभिपश्यन्ति..बहुधा वसन्तम्
4. 4. 3. ब्रह्मचर्यं भगवति वत्स्यामि
4. 10. 1. सत्यकामे जाबाले ब्रह्मचर्यमुवास
5. 3. 7. चिरं वसेत्याज्ञापयाञ्चकार
5. 10. 5. तस्मिन्यावत्सम्पातमुषित्वा
5. 11. 5. वसन्तु भगवन्त इति
6. 1. 1. श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्
8. 7. 3. तौ ह..ब्रह्मचर्यमूषतुः
— किमिच्छन्ताववास्तमिति
— तमिच्छन्तावावास्तमिति
8. 9. 3. वसापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाणीति स..उवास 8. 10. 4.
8. 11. 3. वसापराणि पञ्चवर्षाणीति स..उवास
— मघवान् प्रजापतौ ब्रह्मचर्यमुवास

Brih. 1. 4. 16. यन्मनुष्यान् वासयते
3. 7. 1. मद्रेष्ववसाम
5. 2. 1. त्रयाः प्राजापत्याः..ब्रह्मचर्यमूषुः..उषित्वा ब्रह्मचर्यं देवा ऊचुः
5. 10. 1. तस्मिन्वसति शाश्वतीः समाः
6. 2. 4. तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्यावः
7. स होपायनकीर्त्या उवास
8. इयं विद्येतः पूर्वं न कस्मिंश्चन ब्राह्मण उवास
15. पराः परावतो वसन्ति
Katha. 1. 8. यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे
9. तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन्
Nrip. 2. 4. सृजति विसृजति वासयति (bis).
Garbha. 3. एकरात्रोषितं कललं भवति सप्तरात्रोषितं बुद्बुदम्
4. नानायोनिसहस्राणि मयोषितानि यानि वै
Brahmab. 20. भूते भूते च वसति विज्ञानम्
Kathaśru. 1. ग्रामे वा नगरे वापि वसेत्
Pinda. 3. अहं वसति तोयेषु अहं वसति चाग्निषु
Aśrama. 3. यत्र यत्र वसन्तो ऽग्निपरिचरणं कृत्वा
4. नगरे तीर्थेषु पञ्चरात्रं वसन्तः
Vâsu. 3. अनुस्यूतो वसामि
Skanda. 13. वसेदेकान्तिको भूत्वा
Gitâ. 6. 41. उषित्वा शाश्वतीः समाः

2. वस् (आच्छादने)

Iśâ. 1. ईशा वास्यमिदं सर्वम्

वसति

ı. 6. 2. 3. एनं वसत्योपमन्त्रयाञ्च-क्रे ऽनावृत्य वसतिं कुमारः प्रदुद्राव

, 3. 10. 1. न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत

वसन

å.8. 8. 5. प्रेतस्य शरीरं भिक्षया वसनेनालङ्कारेणेति संस्कुर्वन्ति

वसनान्त

sh. 2. 15. वसनान्तेन वा प्रच्छाद्य

वसन्त

å. 2. 5. 1. वसन्तो हिंकारः 2. 16. 1.

ri. 6. 33. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः शरद्धेमन्तः

7. 1. वसन्तः प्राणः..पुरस्तादुयन्ति

ıaśru. 3. यद्वसन्ते केशश्मश्रुलोमनखानि वापयेत्

वसा

ri. 3. 4. विण्मूत्रपित्तकफमज्जामेदोवसाभिः

1. वसिष्ठ *adj.*

.5. 1. 2. यो ह वै वसिष्ठं वेद वसिष्ठो ह स्वानां भवति वाग्वाव वसिष्ठः

13. यदहं वसिष्ठास्मि त्वं तद्वसिष्ठो ऽसि Bṛih.6.1.14.

5. 2. 5. वसिष्ठाय स्वाहा

6. 1. 2. यो ह वै वसिष्ठां वेद वसिष्ठः स्वानां भवति वाग्वै वसिष्ठा वसिष्ठः स्वानां भवति..य एवं वेद

Bṛih. 6. 1. 7. को नो वसिष्ठ इति..यस्मिन्व उत्क्रान्त इदं शरीरं पापीयो मन्यते स वो वसिष्ठ इति

6. 3. 2. प्राणाय स्वाहा वसिष्ठायै स्वाहा

2. वासिष्ठ

Bṛih. 2. 2. 4. इमावेव वसिष्ठकश्यपावयमेव वसिष्ठः

Mahânâr. 13. 7. या सा सत्येत्यमृतेति वसिष्ठः

Râmap. 57. वसिष्ठवामदेवादिमुनिभिः

91. वसिष्ठाद्यैर्मुनिभिर्नीलमुख्यैः

Mukti. 1. 2. वसिष्ठाद्यैः शुकादिभिः

वसु

Chhâ. 2. 24. 1. यद्वसूनां प्रातःसवनम्

6. तस्मै वसवः प्रातःसवनं संप्रयच्छन्ति

3. 6. 1. यत्प्रथमममृतं तद्वसव उपजीवन्ति

3. वसूनामेवैको भूत्वा

4. वसूनामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता

3. 16. 1. तदस्य वसवो ऽन्वायत्ताः प्राणा वाव वसवः

2. प्राणा वसवः

— माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय

Bṛih. 1. 4. 12. वसवो रुद्रा आदित्याः

3. 9. 2. अष्टौ वसवः

3. कतमे वसवः..एते वसव एतेषु हीदं वसु सर्वं हितमिति तस्माद्वसव इति

4. 4. 24. विन्दते वसु य एवं वेद

Kaṭha. 5. 2. हंसः शुचिषद्वसुः Mahânâr. 9. 3; 17. 8; Nṛip. 3. 1.

Maitri. 3. 4. आमयैर्बहुभिः परिपूर्णं कोश इव वसुना
6. 9. वसोः पवित्रमसि सवितुश्च रश्मयः पुनन्त्वन्नम्
7. 1. वसवः पुरस्तादुद्यान्ति
Mahânâr. 5. 12. पुनन्तु वसवः
9. 5. वसोः कुविद्वनाति नः
16. 4. त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु
24. 1. वसुरण्यो विभूरसि
Nrip. 1. 2. वसुरुद्रादित्यैः
2. 1. ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः Nrisut. 3; Sikhâ.1.
4. 3. यो वै नृसिंहः ..ये चाष्टौ वसवस्तस्मै वै नमो नमः(17)
5. 2. तस्य पुरस्ताद्वसव आसते
Nâr. 1. नारायणादष्टौ वसवः
2. वसवो ऽश्विनौ च नारायणः
Râmap. 69. ध्यायेदष्टवसून्
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..ये चाष्टौ वसवः (31).
Gîtâ. 10. 23. वसूनां पावकश्चास्मि
11. 6. पश्यादित्यान्वसून्
22. रुद्रादित्या वसवो ये च साध्याः

वसुदान

Brih. 4. 4. 24. आत्मान्नादो वसुदानः

वसुदेव

Gopî. 5. वसुदेवसद्मनि
Krish. 8. निगमो वसुदेवः

वसुधान

Chhâ. 3. 15. 1. स एष कोशो वसुधानः

वसुन्धरा

Mahânâr. 4. 4. अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे
Nrip. 1. 2. ससागरां सपर्वतां..वसुन्धराम्

वसुविद्

Brih. 6. 4. 27. यो रत्नधा वसुवित्

वस्त

Brih. 1. 4. 4. अजेतराभवद्वस्त इतरः

वस्ति

Chhâ. 5. 16. 2. वस्तिस्त्वेष आत्मन इति होवाच वस्तिस्ते व्यभेत्स्यद्यन्मां नागमिष्यः
5. 18. 2. वस्तिरेव रयिः

वस्तु

Gauda. 4. 22. स्वतो वा परतो वापि न किञ्चिद्वस्तु जायते — सदसत्सदसद्वापि न किञ्चिद्वस्तु जायते
44. अस्ति वस्तु तथोच्यते
Nrisut. 8. न हि वस्तुतः सत्
Sarvop. 3. नामदेशकालवस्तुनिमित्ते

वस्तुचतुष्टय

Sarvop. 4. एतद्वस्तुचतुष्टयम्

वस्तुत्ववादिन्

Gauda. 4. 42. अस्ति वस्तुत्ववादिनाम्

वस्त्र

Kathasru. 1. विशीर्णं वस्त्रं वल्कलं वा

वस्त्वभाव

Gauda. 4. 79. वस्त्वभावं स बुद्ध्वैव

वस्त्वाभास

Gauda. 4. 45. वस्त्वाभासं तथैव च

वस्यस्

Tait. 1. 4. 3. श्रेयान् वस्यसो ऽसानि

वह्

Brih. 1. 1. 2. हयो भूत्वा देवानवहत्
5. 14. 8. कथं हस्ती भूतो वहसि

3. 2. गुणैर्वैरुह्यमानः 6. 30.
1. 2. 6. सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति
âr. 9. 11. स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्
a. 16. वोढुं चन्द्राग्निसूर्ययोः
i. 2. 5. वहन्ती वासनासरित्
9. 22. योगक्षेमं वहाम्यहम्

वह्नि

1. 13. वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्त्तिः
2. 10. शर्करावह्निवालुकाविवर्जिते
i. 6. 26. वह्नेश्च यद्वत् खलु विष्फुलिंगाः 31.
34. यथा निरिन्धनो वह्निः
alya. 23. न भूमिरापो न च वह्निरस्ति
mab. 21. चरेद्वह्निमतः परम्
na. 15. तत्रार्कचन्द्रवह्नीनाम्
si. 5. तस्य मध्यगतो वह्निः
3. तैलं तिलेषु काष्ठेषु वह्निः
p. 23. तेजसा वह्निना समः
56. *vide* अनिल
57. वह्निस्तदायुधैः पूज्यः (3 MSS. and Weber read बहिस्)
75. वह्निमेधामरविभूषिता
3. 38. धूमेनाव्रियते वह्निः

वह्नितम

a. 2. 8. देवानामसि वह्नितमः

वह्निशिखा

âr. 11. 11. तस्य मध्ये वह्निशिखा Mahâ. 3; Vâsu. 3.

वा

r. 8. 2. दूराद्गन्धो वाति (bis).
5. 10. यत्र वायुर्न वाति

वाकोवाक्य

Chhâ. 7. 1. 2. अध्येमि..वाकोवाक्यम्
4. नाम वै..वाकोवाक्यम्
7. 2. 1. वाग्वै..विज्ञापयति..वाकोवाक्यम्
7. 7. 1. विज्ञानेन वै .. विजानाति ..वाकोवाक्यम्

वाक्पति

Tait. 1. 6. 2. वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः

वाक्य

Krish. 4. भवद्वाक्यं करोम्यहम्
Mukti. 1. 17. वेदान्तवाक्यार्थविचारात्
Gîtâ. 1. 21. हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह
2. 1. इदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः
3. 2. व्यामिश्रेणेव वाक्येन
17. 15. अनुद्वेगकरं वाक्यम्

वागपेत

Kaush. 3. 3. जीवति वागपेतः

वाघत्

Mahânâr. 20. 6. यदङ्गिभिर्वाघद्भिर्विधेमहे

वाङ्मनोतीतगोचर

Tejo. 7. उपाधिरहितं स्थानं वाङ्मनोतीतगोचरम्

वाङ्मय

Bṛih. 1. 5. 3. वाङ्मयो मनोमयः प्राणमयः
2. 5. 3. अयमध्यात्मं वाङ्मयः . पुरुषः
Gîtâ. 17. 15. वाङ्मयं तप उच्यते

वाच्

Ait. 1. 4. मुखाद्वाग्वाचो ऽग्निः
2. 4. अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्

Ait. 3. 3. तद्वाचाजिघृक्षत्तन्नाशक्नोद्वाचा ग्रहीतुं स यद्धैनद्वाचाग्रहैष्यत्
11. यदि वाचाभिव्याहृतं..को ऽहम्
5. 1. येन वाचं व्याकरोति
Kaush. 1. 6. तदेतया वाचाभिव्याह्रियते सत्यम्
7. केन स्त्रीनामानीति वाचेति
2. 1. वाक् परिवेष्ट्री
— यो वाचं परिवेष्ट्रीं परिवेष्ट्रीमान् भवति
2. वाक्परस्ताच्चक्षुरारुंधते
3. वाङ्नाम देवतावरोधिनी
4. वाचं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा
5. प्राणं तदा वाचि जुहोति
— वाचं तदा प्राणे जुहोति
13. एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्वाचा वदति
14. अथैनद्वाक् प्रविवेश तद्वाचा वदच्छिष्ये
— तद्वाचा वदच्चक्षुषा पश्यत् (ter).
15. वाचं मे त्वयि दधानीति पिता वाचं ते मयि दध इति पुत्रः
3. 2. न हि कश्चन शक्नुयात् सकृद्वाचा नाम प्रज्ञापयितुम्
— वाचं वदन्तीं सर्वे प्राणा अनुवदन्ति
3. वदेनं वाक् सर्वैर्नामभिः सहाप्येति (bis); 4. 20.
— न वाचा वदति न ध्यायति
4. वागेवास्मिन् सर्वाणि नामान्यभिविसृज्यन्ते वाचा सर्वाणि नामान्याप्नोति
5. वागेवास्या एकमंगमुदूढम्

Kaush. 3. 6. प्रज्ञया वाचं समारुह्य सर्वाणि नामान्याप्नोति
7. न हि प्रज्ञापेता वाङ्नाम चन प्रज्ञापयेत्
8. न वाचं विजिज्ञासीत वक्तारं विद्यात्
4. 1. सहस्रं दद्म इत्येतस्यां वाचि
2. दक्षिणे ऽक्षिणि वाचः
17. वाच आत्मा..इति वा अहमेतमुपासे
Kena. 1. केनेषितां वाचमिमां वदन्ति
2. यद्वाचो ह वाचम्
3. न वाग्गच्छति नो मनः
4. यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते
Chhâ. 1. 1. 2. पुरुषस्य वाग्रसो वाच ऋग्रसः
5. वागेवर्क् प्राणः साम
— तद्वा एतन्मिथुनं यद्वाक् च प्राणश्च
1. 2. 3. अथ ह वाचमुद्गीथमुपासांचक्रिरे
11. एतमु एव बृहस्पतिं मन्यन्ते वाग्घि बृहती तस्या एष पतिः
1. 3. 3. यो व्यानः सा वाक्
— अप्राणन्ननपानन्वाचमभिव्याहरति
4. या वाक् सर्क्
6. वाग्गीर्वाचो ह गिर इत्याचक्षते
7. दुग्धे ऽस्मै वाग्दोहं यो वाचो दोहः 1. 13. 4; 2. ...
1. 7. 1 वागेवर्क्..वागेव सा
1. 8. 2. ब्राह्मणयोर्वदतोर्वाचं श्रोष्यामि
1. 13. 2. वाग्विराट्
2. 7. 1. वाक् प्रस्तावः 11. 1.

2. 8. 1. वाचि सप्तविधं सामोपासीत यत्किंच वाचो हुमिति स हिंकारः
3. वाचि सप्तविधं सामोपास्ते
2. 23. 4. ओंकारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा
3. 12. 1. वाग्वै गायत्री वाग्वा इदं सर्वं भूतं गायति च त्रायते च
3. 13. 3. सा वाक् सो ऽग्निः
3. 18. 2. वाक् पादः
3. वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः
4. 3. 3. प्राणमेव वागप्येति
4. 16. 1. तस्य वाक् च मनश्च वर्त्तनी
2. वाचा होताध्वर्युरुद्गाता
5. 1. 2. वाग्वाव वसिष्ठः
8. सा ह वागुच्चक्राम
— प्रतिवेश ह वाक् Bṛih. 6. 1. 8.
9. वदन्तो वाचा 10. 11; Bṛih. 6. 1. 9–12.
13. अथ हैनं वागुवाच
15. न वै वाचो न चक्षूंषि
5. 3. 6. यामेव कुमारस्यान्ते वाचमभाषथाः Bṛih. 6. 2. 5.
5. 7. 1. वागेव समित्
5. 21. 2. वाक्तृप्यति वाचि तृप्यत्याग्निस्तृप्यति
6. 5. 3. यो ऽणिष्ठः सा वाक्
4. तेजोमयी वाक् 6. 6. 5; 6. 7. 6.
6. 6. 4. सा वाग् भवति
6. 8. 6. पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि सम्पद्यते
6. 15. 1. यावन्न वाङ्मनसि सम्पद्यते
2. यदा वाङ्मनसि सम्पद्यते
7. 2. 1. वाग्वाव नाम्नो भूयसी वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति

Chh. 7. 2. 1. यद्वै वाङ्नाभविष्यत्
— वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति वाचमुपास्वेति
2. यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतम् &c.
— अस्ति भगवो वाचो भूय इति वाचो वाव भूयो ऽस्ति
7. 3. 1. मनो वाव वाचो भूयः
— वाचं च नाम च मनो ऽनुभवति
7. 4. 1. वाचमीरयति 7. 5. 1.
7. 26. 1. आत्मतो वाक्
8. 12. 4. अभिव्याहाराय वाक्
Bṛih. 1. 1. 1. वागेवास्य वाक्
1. 2. 4. मनसा वाचं मिथुनं समभवत्
— सैव वागभवत्
5. स तया वाचा . . इदं सर्वमसृजत
1. 3. 2. ते ह वाचमूचुस्त्वं न उद्गाय
— तेभ्यो वागुदगायत्
— यो वाचि भोगस्तं देवेभ्य आगायत्
12. वाचमेव प्रथमामत्यवहत्
20. वाग्वै बृहती तस्या एष पतिः
21. वाग्वै ब्रह्म तस्य एष पतिः
22. वाग्वै साम
23. वागेव गीथा
24. वाचा च ह्येव . . उदगायत्
25. वाचि स्वरमिच्छेत तया वाचा स्वरसंपन्नया
27. तस्य वै वागेव प्रतिष्ठा वाचि हि . . प्राणः प्रतिष्ठितः
1. 4. 7. वदन् वाक्
17. वाग्जाया
1. 5. 3. मनो वाचं प्राणं तान्यात्मने ऽकुरुत

Bṛih. 1. 5. 3. यः कश्च शब्दो वागेव
4. वागेवायं लोकः
5. वागेवर्ग्वेदः
6. वागेव देवाः
7. वाङ्माता
8. यत्किञ्च विज्ञातं वाचस्त-
द्रूपं वाग्घि विज्ञाता वागेनं
तद्भूत्वावति
11. तस्यै वाचः पृथिवी शरीरम्
— यावत्येव वाक्तावती पृ-
थिवी
18. दैवी वागाविशति सा वै
दैवी वाक्
21. वदिष्याम्येवाहमिति वा-
ग्दध्रे
— श्राम्यत्येव वाक्
1. 6. 1. तेषां नाम्नां वागित्येतदेषा-
मुक्थम्
2. 1. 1. सहस्रमेतस्यां वाचि दद्मः
17. गृहीता वाक्
2. 2. 3. वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना
(bis).
— वाग्घ्यष्टमी ब्रह्मणा संवित्ते
4. वागेवात्रिर्वाचा ह्यन्नमद्यते
2. 4. 11. सर्वेषां वेदानां वागेकायनम्
4. 5. 12.
3. 1. 3. होत्रर्त्विजाग्निना वाचा वा-
ग्वै यज्ञस्य होता तद्येयं
वाक्
3. 2. 3. वाग्वै ग्रहः .. वाचा हि
नामान्यभिवदति
13. अग्निं वागप्येति
3. 7. 17. यो वाचि तिष्ठन्वाचोऽन्तरो
यं वाङ्न वेद यस्य वाक्
शरीरं यो वाचमन्तरो
यमयति
3. 9. 24. सो ऽग्निः कस्मिन्प्रतिष्ठित इ-
ति वाचीति कस्मिन्नु वाक्

Bṛih. 4. 1. 2. वाग्वै ब्रह्मेति
— वागेवायतनमाकाशः
ष्ठा
— का प्रज्ञता .. वागेव ..
चा वै .. बन्धुः प्रज्ञा
— सर्वाणि च भूतानि वा
.. प्रज्ञायन्ते वाग्वै ..
मं ब्रह्म
— नैनं वाग्जहाति
4. 3. 5. वागेवास्य ज्योतिर्भव
वाचैवायं ज्योतिषास्ते
— यत्र वागुच्चरत्युपैव
न्येति
6. शान्तायां वाचि किं
तिरेवायम्
4. 4. 21. वाचो विग्लापनं हि तत्
5. 2. 3. दैवी वागनुवदति स्तन
लुर्ददद इति
5. 8. 1. वाचं धेनुमुपासीत
5. 14. 5. वागनुष्टुबेतद्वाचमनुब्रूमः
6. 1. 2. वाग्वै वसिष्ठा
8. वाग्घोच्चक्राम
— यथा कला अवदन्तो
14. सा ह वागुवाच यद्वा
वसिष्ठास्मि
6. 2. 7. वाचा ह स्म वै पूर्व उपय
12. वागर्चिः
6. 3. 2. वाचे स्वाहा प्रतिष्ठायै स्वा
6. 4. 18. शुश्रूषितां वाच भाषित
25. वाग्वागिति त्रिः
6. 5. 3. कश्यपो नैध्रुविर्वाचः
— वागंभिण्याः
Tait. 1. 3. 4. वाक् सन्धिः
1. 7. 1. चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्
2. 4. 1. यतो वाचो निवर्तन्ते
9. 1; Brahma. 3.
3. 1. 1. अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं
वाचमिति

3. 10. 2. क्षेम इति वाचि
a. 3. 13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञः
6. 12. नैव वाचा न मनसा
ri. 6. 20. वाङ्मनःप्राणनिरोधनात्
31. वाक् श्रोत्रं चक्षुर्मनः प्राणः
d.I. 2. 6. प्रियां वाचमभिवदन्त्यः
2. 1. 4. वाग्विवृताश्च वेदाः
2. 2. 2. स प्राणस्तदु वाङ्मनः
5. अन्या वाचो विमुञ्चथ
3. 1. 8. न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा
ânâr. 4. 7. वाचा कृतं कर्मकृतम्
12. मनसा वाचा कर्मणा वा दुष्कृतं कृतम् 19. 1.
14. 3. पापमकार्षं . . वाचा 4.
22. 1. सत्यं वाचः प्रतिष्ठा
25. 1. दक्षिणा वाग्घोता
2. 2. वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च 4.
12. या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता
4. 8. वाक् च वक्तव्यं च
1. 1. तद्वाचा वदति
— वाग्वा अनुष्टुब् वाचैव प्रयन्ति वाचैवोद्यन्ति
2. वाचो द्रष्टा . . वाचः साक्षी
8. वाग्वा ओङ्कारो वागेवेदं सर्वम्
— वाग्वा ओङ्कारो वागेवेदं सर्वमनुजानाति
— वाग्वा ओङ्कारो वागेव ह्यनुजानाति
4. वाचं संसृजति विसृजति च
1. वाचा वदति
3. वाक्कायक्लेशवर्जिता
23. वाचं वदिष्यतः
7. वाचं पुष्यति वीर्यवान्
5 मनसा वाचा वा सन्न्यसेत्
1. वाङ्मे मनसीति शान्तिः
2. 42. यामिमां पुष्पितां वाचम्

Gîtâ. 10. 34. कीर्तिःश्रीर्वाक् च नारीणाम्
18. 15. शरीरवाङ्मनोभिः

वाचक

Râmap. 11. ब्रह्मादीनां वाचको ऽयम्
12. सर्ववाच्यस्य वाचकः
20. मन्त्रो ऽयं वाचकः
21. वाचकेन नाम्ना

वाचक्नवी

Brih. 3. 6. 1. गार्गी वाचक्नवी (bis.)
3. 8. 1. वाचक्नव्युवाच
12. वाचक्नव्युपरराम

वाचंयम

Kaush. 2. 3. वाचंयमो ऽभिप्रव्रज्य 4.
Chhâ. 5. 2. 8. वाचंयमो ऽप्रसाहः

वाचा

Haṁsa. 2. परा वाचा तथाष्टमे

वाचारम्भण

Chhâ. 6. 1. 4. वाचारम्भणं विकारो नामधेयम् 5, 6; 6. 4. 1—4.

वाज

Kaush. 2. 8. सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः
Mahânâr. 20. 6. ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता

वाजपेय

Brih. 6. 4. 3. यावान् ह वै वाजपेयेन यजमानस्य लोको भवति
Nrip. 5. 8. स वाजपेयेन यजते
Gopî. 5. वाजपेयशतानि च

वाजश्रवस्

Brih. 6. 5. 3. कुश्रिर्वाजश्रवसः
— वाजश्रवा जिह्वावतो बाध्योगात्

वाजश्रवस

Katha. 1. 1. उशन् ह वै वाजश्रवसः

वाजसनेय

Bṛih. 6. 3. 7. वाजसनेयाय याज्ञवल्क्याय
8. वाजसनेयो याज्ञवल्क्यः
6. 5. 3. वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येन

वाजिन्

Bṛih. 1. 1. 2. वाजी गन्धर्वान् (अवहत्)
Tait. 1. 10. 1. ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि
Nila. 11. सहस्राक्षाय वाजिने

वाञ्छा

Râmap. 22. स्ववाञ्छाविनियोगवान्

वाट्य

Maitri. 7. 8. वाट्ये पुरस्तादुक्ते ऽपि

वाणिज्य

Aśrama. 2. कृषिगोरक्षवाणिज्यम्
Mukti. 2. यथा..वाणिज्यादिना वित्तम्
Gîtâ. 18. 44. कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यम्

वाणी

Râmap. 87. विघ्नं दुर्गां क्षेत्रपालं च वाणीम्

वात

Kaush. 2. 4. अपि वाताद्वा तिष्ठेत् सम्भाषमाणः
Bṛih. 1. 1. 1. वातः प्राणः
3. 2. 13. वातं प्राणः (अप्येति)
6. 3. 6. मधु वाता ऋतायते..क्षरन्ति Mahânâr. 9. 8; 17. 7.
Tait. 2. 8. 1. भीषास्माद्वातः पवते Nṛip. 2. 4.
Maitri. 6. 35. अणुवातेरितः

वातरज्जु

Maitri. 1. 4. प्रथनं वातरज्जूनाम्

वातीकार

Nîla. 3. वातीकारो ऽप्येतु ते

वात्सीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. पाराशरीपुत्रो वात्सीपु[त्रात्]
— वात्सीपुत्रः पाराशरीपु[त्रात्]

वात्स्य

Bṛih. 2. 6. 3. गौतमो वात्स्यात् 4. 6.
— वात्स्यः शाण्डिल्यात् 4. 6. 3.
6. 5. 4. शाण्डिल्यो वात्स्यात्
— वात्स्यः कुश्रेः

वाद

Gauḍa. 1. 18. उपदेशादयं वादः
2. 24. वादा इति वादविदः
Gîtâ. 10. 32. वादः प्रवदतामहम्

वादविद्

Gauḍa. 2. 24. वादा इति वादविदः

वादिन्

Gauḍa. 3. 20. अजातस्य..जातिमि[च्छ]न्ति वादिनः 4. 6.
4. 3. भूतस्य जातिमिच्छन्ति [वा]दिनः
Gîtâ. 2. 42. नान्यदस्तीति वादिनः

वाध्योग

Bṛih. 6. 5. 3. वाजश्रवा जिह्वावतो [वा]ध्योगात्
— जिह्वावान् वाध्योगो [ऽसि]ताद्वार्षगणात्

वानप्रस्थ

Nṛip. 5. 10. गृहस्थशतमेकमेकेन [वान]प्रस्थेन तत्समम्
— वानप्रस्थशतमेकम्
Nyâsa. 2. वानप्रस्थं प्रपद्यते

...eya. 2. गृहस्थो ब्रह्मचारी वानप्रस्थो वा

...g. 2. ब्रह्मचारी गृहस्थो वानप्रस्थो यतिर्वा

...ma. 3. वानप्रस्था अपि चतुर्विधाः

2. ब्रह्मचारी वानप्रस्थो वा

वानर

...p. 45. तानाहूयाथ वानरान्

1. वाम *adj.*

4. 2. 3. वामे ऽक्षिणि पुरुषरूपम्

...r. 16. इडा रक्षतु वामेन

...p. 22. दक्षवामयोः स्तनयोः

49. वामे तेजः प्रकाशनम्

2. वाम

.4. 15. 2. सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति

3. सर्वाणि वामानि नयति

वामकक्षायण

6. 5. 4. माहित्थिर्वामकक्षायणात्

— वामकक्षायणः शाण्डिल्यात्

वामदेव

4. 5. वामदेव एवमुवाच

1. 4. 10. ऋषिर्वामदेवः प्रतिपेदे

...nâr.17. 2. वामदेवाय नमः

...p. 57. वसिष्ठवामदेवादिमुनिभिः

वामदेव्य

.2. 13. 1. एतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम्

...nâr.22. 1. अन्वाहार्यपचनो यजुरन्तरिक्षं वामदेव्यम्

वामन

... 5. 3. मध्ये वामनमासीनं . . उपासते

वामनक

...a. 3. अन्धाः खञ्जाः कुब्जा वामनका भवन्ति (so MSS.)

वामनी

Chhâ. 4. 15. 3. एष उ एव वामनीः

वायव्य

Śiras. 3. वायव्यं वायव्येन ग्रसति

Nâda. 6. वायव्यैषा वशानुगा

Haṁsa. 2. वायव्ये गमनादौ बुद्धिः

वायु

Ait. 1. 4. नासिकाभ्यां प्राणः प्राणाद्वायुः

2. 4. वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्

3. 10. स एषो ऽस्नस्य ग्रहो यद्वायुरन्नायुर्वा एष यद्वायुः

5. 3. पृथिवी वायुराकाश आपः

Kaush. 2. 12. आदित्यमेव तेजो गच्छति वायुं प्राणः (similarly 3 times more).

— एताः सर्वा देवता वायुमेव प्रविश्य वायौ मृत्वा न मृच्छन्ते

4. 2. वायाविन्द्रो वैकुण्ठः

7. वायौ पुरुषस्तमेवाहमुपासे

Kena. 20. वायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहि

21. वायुर्वा अहमस्मि

27. यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्शुः

Chhâ. 1. 3. 7. वायुर्गीः

1. 6. 2. वायुः साम . . वायुरमः

1. 13. 1. वायुर्हाइकारः

2. 20. 1. वायुः प्रस्तावः

2. 21. 1. अग्निर्वायुरादित्यःस उद्गीथः

2. 22. 1. मृदु श्लक्ष्णं वायोः

2. 24. 9. नमो वायवे ऽन्तरिक्षक्षिते Maitri. 6. 35.

3. 13. 5. स वायुः स आकाशः

3. 15. 2. तासां वायुर्वत्सः स य एतमेव वायुं दिशां वत्सं वेद

Chhâ. 3. 15. 2. अहमेतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद
6. वायुं प्रपद्ये
3. 18. 2. वायुः पादः
4. स वायुना ज्योतिषा भाति
4. 3. 1. वायुर्वाव संवर्गः
— वायुमेवाप्येति (ter).
2. वायुमेवापियन्ति
— वायुर्ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्ते
4. तौ वा एतौ द्वौ संवर्गौ वायुरेव देवेषु प्राणः प्राणेषु
4. 17. 1. वायुमन्तरिक्षात्
2. वायोर्यजूंषि
5. 5. 1. वायुरेव समित्
5. 10. 5. आकाशाद्वायुं वायुर्भूत्वा धूमो भवति
5. 14. 1. वायुमेव भगवो राजन्
5. 23. 2. वायुस्तृप्यति वायौ तृप्यत्याकाशस्तृप्यति
— यत्किञ्च वायुश्चाकाशश्चाधितिष्ठत:
7. 2. 1. वायुं चाकाशं च 7. 7. 1.
7. 4. 2. समकल्पेतां वायुश्चाकाशश्च
7. 11. 1. एतद्वायुमागृह्य
8. 1. 3. उभावग्निश्च वायुश्च
8. 12. 2. अशरीरो वायुः
Brih. 1. 2. 3. वायुं तृतीयम्
1. 3. 13. स वायुरभवत्सोऽयं वायुः परेण मृत्युमतिक्रान्तः पवते
1. 5. 22. एवमेतासां देवतानां वायुः
— म्लोचन्ति ह्यन्या देवता न वायुः सैषानस्तमिता देवता यद्वायुः
2. 1. 6. वायौ पुरुष एतं..ब्रह्मोपासे
2. 3. 2. एतन्मूर्त्तं यदन्यद्वायोश्चान्तरिक्षाच्च

Brih. 2. 3. 3. अथामूर्त्तं वायुश्चान्त
2. 5. 4. वायुः सर्वेषां..मधु
सर्वाणि..मधु
— वायौ..अमृतमयः
3. 1. 5. उद्गात्रर्त्विजा वायुना
— यो ऽयं प्राणः स वा
3. 3. 2. तानिन्द्रः..वायवे प्र
त्तान्वायुरात्मनि धि
— स वायुमेव प्रशशंस
द्वायुरेव व्यष्टिर्वायुः
3. 6. 1. वायौ गार्गीति कस्मि
लु वायुरोतश्च प्रोतश्चे
3. 7. 2. वायुर्वै .. तत्सूत्रं वा
..सर्वाणि..सन्दृब्धा
7. यो वायौ तिष्ठन्वायोर
यं वायुर्न वेद यस्य
शरीरं यो वायुमन्तर
मयति
3. 9. 3. अग्निश्च पृथिवी च वायु
5. 10. 1. स वायुमागच्छति
5. 15. 1. वायुरनिलममृतम् Isâ
6. 2. 16. आकाशाद्वायुं वायोर्वृ
6. 4. 22. वायुर्दिशां यथा गर्भः
23. यथा वायुः पुष्करिणीं
मिङ्गयति सर्वतः
Tait. 1. 1. 1. नमस्ते वायो 1. 12. 1
1. 3. 2. वायुः सन्धानम्
1. 5. 2. भुव इति वायुः
1. 6. 1. भुव इति वायौ
1. 7. 1. अग्निर्वायुरादित्यः
Maitri. 4. 5.
2. 1. 1. आकाशाद्वायुर्वायोरग्निः
Katha. 5. 10. वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो
6. 3. भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृ
धावति
Swet. 2. 6. वायुर्यत्राधिरुध्यते
4. 2. तद्वायुस्तदु चन्द्रमा

i. 2. 6. स वायुरिवात्मानं कृत्वा
5. 1. त्वमग्निर्वरुणो वायुः
6. 4. शाखा आकाशवाय्वग्न्युद-
कभूम्यादयः
5. अग्निर्वायुरादित्या इति भा-
स्वत्येषा
33. अन्तरिक्षमुत्क्षिप्वा वायवे
प्रायच्छत् प्राणो वै वायुः
.2. 1. 3. खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी
Praśna. 6. 4; Kaivalya.
15; Nâr. 1.
4. वायुः प्राणः
âr. 1. 7. तदेवाग्निस्तद्वायुस्तत्सूर्यः
12. 3. सत्यो मित्रो वायुराकाशः
22. 1. सत्येन वायुरावाति
ı. 2. 2. वायुरग्निरापः पृथिवी
5. वायुरेष पृथिवी रयिर्देवः
3. 8. वायुर्व्यानः
4. 8. वायुश्च वायुमात्रा च
5. 5. स वायुं स्तंभयति
10. यत्र वायुर्न वाति
7. वायोरायतनं चात्र
2. यो वै रुद्रः. . यश्च वायुः
5. वायुरिति भस्म
6. ब्रह्मणो वायुर्वायोरोङ्कारः
1. पृथिव्यापस्तेजोवायुराका-
शम्
— को वायुः किमाकाशम्
— यत्सञ्चरति स वायुः
— वायुर्व्यूहने
2. पित्तस्थाने वायुर्वायुतो हृ-
दयम्
3. *vide* ह्रैय
4. वैष्णवेन वायुना संस्पृष्टः
9. वायोराकर्षणं तथा
11. उत्क्षिप्य वायुम्
12. एवं वायुर्महीतव्यः
13. वायुं कृत्वा निराश्रयम्

Amrita. 36. प्राणो वायुः प्रकीर्तितः
Dhyâna. 21. तथैवोत्कर्षयेद्वायुम्
Yogat. 12. वायुः पूरत पूरत
Nyâsa. 4. आकाशाद्वायुर्वायोर्ज्योतिः
5. अथ तैः संभूतैर्वायुः
Haṁsa. 1. आधाराद्वायुमुत्थाप्य
Gopî. 5. प्रजापतिर्वायुर्भूत्वा
Krish. 22. वैजयन्ती च वायुश्च
(so 3 MSS; 4 others
read जयन्तीसंभवो वायुः)
Râmap. 78. दीर्घयुतो वायुः
Gîtâ. 2. 67. वायुर्नावमिवाम्भसि
6. 34. वायोरिव सुदुष्करम्
7. 4. भूमिरापो ऽनलो वायुः
9. 6. वायुः सर्वत्रगो महान्
11. 39. वायुर्यमो ऽग्निर्वरुणः शशां-
कः
15. 8. वायुर्गन्धानिवाशयात्

वायुग

Piṇḍa. 3. दिनमेकं तु वायुगः

वायुद्वार

Amrita. 26. हृद्वारं वायुद्वारं च

वायुपूत

Nrip. 5. 3. स वायुपूतो भवति Śiras.
7; Mahâ. 4.

वायुप्रविष्ट

Kaush. 2. 14. ते वायुप्रविष्टाः. . स्वरीयुः
— स वायुप्रविष्टः. . स्वरेति

वायुभक्ष

Nyâsa. 2. वायुभक्षो ऽम्बुभक्षो वा

वायुमय

Bṛih. 4. 4. 5. वायुमय आकाशमयः

वायुमात्रा

Praśna. 4. 8. वायुश्च वायुमात्रा च

वायुर

Bṛih. 5. 1. 1. खं पुराणं वायुरं खमिति

वायुलोक

Kaush. 1. 3. स वायुलोकं [आगच्छति]

वायुवेगिनी

Nâda. 9. चतुर्थी वायुवेगिनी

वायुसूनु

Râmap. 53. तृतीयं वायुसूनुं च

वाराणसी

Prâṇâg. 4. वाराणस्यां मृतो वापि

वाराह

Râmap. 72. नारसिंहं च वाराहम्

वारि

Vâsu. 3. गोपीचन्दनवारिभ्याम्

वारुण

Chhâ. 2. 22. 1. वारुणं त्वेव वर्जयेत्
Tait. 3. 6. 1. सैषा भार्गवी वारुणी विद्या
Mahânâr. 5. 1. नमो वारुण्यै
Maitri. 6. 14. एतस्याग्नेयमर्द्धमर्द्धं वारुणम्
Nâda. 7. वारुणीं तां विदुर्बुधाः
Amṛita. 30. चतुर्मात्राणि वारुणः
Haṁsa. 2. वारुण्यां क्रीडा

वारुणि

Tait. 3. 1. 1. भृगुर्वै वारुणिः

वार्कारुणीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. पाराशरीपुत्रो वार्कारुणीपुत्रात्
— वार्कारुणीपुत्रो वार्कारुणीपुत्रात्
— वार्कारुणीपुत्र आर्त्तभागीपुत्रात्

वार्त्ताकवृत्ति

Aśrama. 2. वार्त्ताकवृत्तयः (bis; th MSS. have वार्त्तक° both places).

वार्य

Bṛih. 6. 4. 27. येन विश्वा पुष्यसि वार्या

वार्षगण

Bṛih. 6. 5. 3. जिह्वावान् वाध्योगो [illegible] तार्द्वार्षगणात्
— असितो वार्षगणो हरि त्कश्यपात्

वार्षिक

Kaṭhaśru. 1. चतुरो मासान् वार्षिका . . वसेत्

वार्ष्ण

Bṛih. 4. 1. 4. बर्कुर्वार्ष्णः
— तथा तद्वार्ष्णो ऽब्रवीत्

वार्ष्णेय

Gitâ. 1. 41. स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय
3. 36. अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय

वालखिल्य

Maitri. 2. 3. ऊर्ध्वरेतसो वालखिल्या इति श्रूयन्ते

वालिन्

Râmap. 41. वालिनो वेगतो गृहात्
— वाली तदा निर्जगाम
वालिनमथाहवे (निहत्य

वालुका

Śwet. 2. 10. शर्करावह्निवालुकाविवर्जिते

वास्

Kshur. 19. यथावास्यन्ति तैतिलम्

वास

1\. 44. नरके नियतं वासो भवति

वासना

ti. 2. 8. याति यदा ते वासनोदयम्
14\. मिथ्या संसारवासना
16\. तस्माद्वासनया युक्तम्
— सम्यग्वासनया त्यक्तम्
17\. वासना प्रविलीयते
18\. वासनाविलये
— वासनां सम्परित्यज्य 68.
22\. वासनामात्रकारणम्
24\. चित्तस्योत्पत्तिपरमां वासनाम्
26\. वासनावशतः प्राणस्पन्दस्तेन च वासना
27\. प्राणस्पन्दनवासने
28\. वासना न प्रवर्त्तते
29\. वासनासम्परित्यागात्
40\. बलन्ति हृदि वासनाः
41\. क्षीयन्ते भोगवासनाः
45\. वासनासम्परित्यागः
57\. वासना सा प्रकीर्त्तिता
59\. वासनाविवशीकृतः
60\. वासनावेगवैचित्र्यात्
61\. वासना द्विविधा प्रोक्ता
62\. पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता मलिना वासना
69\. मानसीर्वासनाः पूर्वं त्यक्त्वा विषयवासनाः
— मैत्र्यादिवासनानाम्नीर्गृहाणामलवासनाः
70\. भव चिन्मात्रवासनः

वासनाक्षय

i. 2. सर्ववासनाक्षयात्तल्लाभः
2\. 10. वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशाः

Mukti. 2. 68. मोक्षः स्याद्वासनाक्षयः

वासनात्रयनाशन

Mukti. 1. 41. ज्ञानवैराग्यदं पुंसां वासनात्रयनाशनम्

वासनाबन्ध

Mukti. 2. 68. बन्धो हि वासनाबन्धः

वासनामय

Sarvop. 1. वासनामयान् शब्दादीन् यदोपलभते

वासनारहित

Sarvop. 1. तद्वासनारहितः (one MS. has सहितः)

वासनावृद्धि

Mukti. 2. 9. शुभायां वासनावृद्धौ

वासनाव्यूह

Mukti. 2. 3. द्विविधो वासनाव्यूहः

वासनासरित्

Mukti. 2. 5. वहन्ती वासनासरित्

वासनाहीन

Mukti. 2. 22. वासनाहीनमप्येतत्

वासनौघ

Mukti 2. 3. वासनौघेन शुद्धेन
32\. त्याज्यो वासनौघः

1. वासव *adj.*

Chhâ. 2. 24. 3. स वासवं सामाभिगायति

2. वासव

Gîtâ. 10. 22. देवानामस्मि वासवः

वासस्

Kaush. 2. 15. अहतेन वाससा संप्रच्छन्नः
Chhâ. 5. 2. 2. किं मे वासो भविष्यति
— लम्भुको वासो भवति
Bṛih. 2. 3. 6. यथा माहारजनं वासः

Brih. 6. 1. 14. किं मे वास इति..आपो वास इति
Tait. 1. 4. 2. वासांसि मम गावश्च
Asrama. 4. कन्थाकौपीनवाससः
Gitâ. 2. 22. वासांसि जीर्णानि यथा वि- हाय

वासिन्

Chhâ. 2. 23. 2. आचार्यकुलवासी
Asrama. 1. गुरुकुलवासी
— अष्टाचत्वारिंशद्वर्षवासी
4. ग्रामैकरात्रवासिनः
— शून्यागारदेवगृहवासिनः

वासुकि

Gâruda. 2. यदि वासुकिदूतस्त्वं यदि वा वासुकिः स्वयम्
Gitâ. 10. 28. सर्पाणामस्मि वासुकिः

1. वासुदेव *adj.*

Nrip. 5. 2. द्वादशासु पत्रेषु द्वादशाक्षरं वासुदेवं भवति

2. वासुदेव

Mahânâr. 3. 16. वासुदेवाय धीमहि
Brahmab. 22. तदस्म्यहं वासुदेवः (so 2 MSS.; 3 have °देवम्)
Vâsu. 1. सर्वेश्वरं वासुदेवं पप्रच्छ
— तं होवाच भगवान्वासुदेवः
Râmap. 53. द्वितीयं वासुदेवाद्यैः
65. तथों नमो भगवते वासुदे- वाय
Râmot. 5. य ओं नमो भगवते वासुदे- वाय महाविष्णुः (44).
Mukti. 1. 35. वासुदेवं च मुद्गलम्
1. *vide* जाबालि
Gitâ. 7. 19. वासुदेवः सर्वमिति
10. 37. वृष्णीनां वासुदेवो ऽस्मि
11. 50. इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
Gitâ. 18. 74. इत्यहं वासुदेवस्य पा- र्थ

वासोवृक्ष

Prasna. 4. 7. यथा..वयांसि वासो- वृक्षं सम्प्रतिष्ठन्ते

वासोहस्त

Kaush. 1. 4. शतं वासोहस्ताः

वास्तेय

Chhâ. 3. 19. 2. यद्वास्तेयमुदकं स समु- द्रः

वाह

Katha. 1. 26. तवैव वाहास्तव नृत्यगी- ते
Swet. 2. 9. दुष्टाश्वयुक्तमिव वाहम्

वाहन

Râmap. 9. वर्णवाहनकल्पना

वि

Brih. 5. 12. 1. तस्मा उ हैतदुवाच वी- त्यन्नं वै वि

विंशति

Chhâ. 7. 26. 2. सहस्राणि च विंशतिः
Swet. 1. 4. विंशतिप्रत्यराभिः

विःकुन्धिका

Maitri. 6. 22. भेकाविःकुन्धिका

विकम्प्

Gitâ. 2. 31. न विकम्पितुमर्हसि

विकर्ण

Gitâ. 1. 8. अश्वत्थामा विकर्णश्च

विकर्मन्

Gitâ. 4. 17. बोद्धव्यं च विकर्मणः

विकल्प

Gauda. 1. 18. विकल्पो विनिवर्तेत 18 (°वर्त्तते)

hsa. 2. मनसि सङ्कल्पविकल्पे

विकल्पक

da. 2. 11. को वै तेषां विकल्पकः
o. 13. सङ्कल्पं च विकल्पकम्

विकार

. 6. 1. 4. वाचारम्भणं विकारो नामधेयम् 5, 6; 6. 4. 1, 2, 3, 4.

tri. 6. 10. उत्तरो विकारो ऽस्यात्मयज्ञस्य

da. 3. 7. विकारावयवी (bis).

bha. 3. अष्टौ प्रकृतयः षोडश विकाराः

„ 13. 19. विकारांश्च गुणांश्चैव

विकारजननी

l. 3. विकारजननीं मायाम्

विकारहेतु

op. 4. विकारहेतौ निरूप्यमाणे ऽसती

विकित्

a. 1. 21. देवैरत्रापि विचिकित्सितम् 22.

29. यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति

ut. 9. अत्र ह्येव न विचिकित्स्यम् (bis).

विकृ

. 2. 3. स त्रेधात्मानं व्यकुरुत Maitri. 6. 3.

5. 3. एकैकं जालं बहुधा विकुर्वन्

2. 13. विकरोत्यपरान् भावान्

विकृति

2. 50. विलाप्य विकृतिं कृत्स्नाम्

विकॄ

. 1. 10. सो ऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सोम्य

विकॢप्

Gauḍa. 1. 7. स्वप्नमायास्वरूपेति सृष्टिरन्यैर्विकल्पिता

2. 17. रज्जुरन्धकारे विकल्पिता . . तद्वदात्मा विकल्पितः

19. भावैरेतैर्विकल्पितः

विक्रम्

Mahânâr. 20. 14. त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः

Gîtâ. 1. 6. युधामन्युश्च विक्रान्तः

विक्रमण

Nṛip. 2. 4. यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि

विक्रिया

Mukti. 1. 3. धीविक्रियासहस्राणां साक्षिणं (MSS. read विधिक्रिया°)

विक्षर्

Chhâ. 3. 1. 4. तद् व्यक्षरत् 3. 2. 3; 3. 3. 3; 3. 4. 3; 3. 5. 3.

विक्षिप्

Gauḍa. 3. 42. विक्षिप्तं कामभोगयोः

44. विक्षिप्तं शमयेत्पुनः

46. न च विक्षिप्यते पुनः

Brahma. 1. एकेन तन्तुना जालं विक्षिपति

विक्षेप

Maitri. 6. 34. लयविक्षेपरहितम्

विगतकल्मष

Gîtâ. 6. 28. योगी विगतकल्मषः

विगतज्वर

Gîtâ. 3. 30. युध्यस्व विगतज्वरः

विगतनिद्र

Maitri. 6. 4. भारूपं विगतनिद्रम् 25; 7. 5.
25. भारूपो विगतनिद्रः

विगतभय

Maitri. 6. 30. परेष्वात्मवद्विगतभयः

विगतभी

Gîtâ. 6. 14. प्रशान्तात्मा विगतभीः

विगतस्पृह

Gîtâ 2. 56. सुखेषु विगतस्पृहः
18. 49. जितात्मा विगतस्पृहः

विगतेच्छाभयक्रोध

Gîtâ. 5. 28. विगतेच्छाभयक्रोधः

विगतेतरवासन

Mukti. 2. 58. भवत्याशु .. विगतेतरवासनः

विगम्

Gîtâ. 11. 1. मोहो ऽयं विगतो मम

विगुण

Gîtâ. 3. 35. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः 18. 47.

विगुप्

Brih. 4. 4. 15. न ततो विजुगुप्सते Katha. 4. 5, 12.
Isâ. 6. ततो न विजुगुप्सते

विग्रह

Maitri. 6. 7. विभुर्विग्रहे सन्निविष्टः
Krish. 2. अन्यो न विग्रहं धत्ते (one MS. has अन्यम्)
Râmap. 13. विग्रहो यन्त्रकल्पना
39. विग्रहं दर्शयामास
Râmot. 3. ब्रह्मानन्दैकविग्रहः
Mukti. 2. 18. मयि चिन्मात्रविग्रहे

विग्रहवन्त्

Maitri. 6. 16. विग्रहवानेष कालः

विग्लापन

Brih. 4. 4. 21. वाचो विग्लापनं हि तत्

विघ्न

Râmap. 87. विघ्नं दुर्गां क्षेत्रपालं च ... णीम्

विचक्ष्

Isâ. 10. ये नस्तद्विचचक्षिरे 13.

विचक्षण

Kaush. 1. 2. विचक्षणादृतवो रेत आ... तम्
2. 9. विचक्षणः पञ्चमुखो ऽ...
Praśna. 1. 11. उपरे विचक्षणं .. आहु... र्पितम्
Gauda. 2. 31. वेदान्तेषु विचक्षणैः
Nâda. 5. हंसयोगविचक्षणः
Gîtâ. 18. 2. प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः

विचक्षणा

Kaush. 1. 3. विचक्षणासन्दी
5. विचक्षणामासन्दीम्

विचर्

Maitri. 6. 2. अर्वाग्विचरत एतौ प्रा... दित्यौ
Gauda. 4. 94. भेदे विचरतां सदा
Śiras. 5. येनेदं सं च विचरति सर्व...
— अव्यक्तीभूता खं विचर...
Brahma. 2. तस्मिन्निदं सं च विचर...
Hamsa. 1. विचार्य सर्ववेदेषु
2. तस्मान्मनो हंसो विचर...
Râmap. 37. विचेरतुस्तदा भूमौ

विचर्षण

Taitt. 1. 4. 1. शरीरं मे विचर्षणम्

विचल्

3. 29. कृत्स्नविन्न विचालयेत्
6. 22. न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते
14. 23. गुणैर्यो न विचाल्यते

विचार

iti. 1. 17. वेदान्तवाक्यार्थविचारात्

विचारण, °णा

l. 5. नात्र कार्या विचारणा
iti. 2. 57. त्यक्तपूर्वापरविचारणम्

विचि

tri. 6. 34. मन्त्रार्थं विचिनोति
ti. 2. 46. विचिन्वन्ति तमोऽञ्जनैः

विचिकित्सा

. 3. 14. 4. यस्य स्यादद्धा न विचिकित्सास्ति
. 1. 5. 3. कामः सङ्कल्पो विचिकित्सा Maitri. 6. 30.
a. 1. 20. येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये
. 1. 11. 3. यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्

विचिटि (?)

nâr. 20. 22. विचिटि स्वाहा (so Nârâyaṇa and one other MS.; other readings are विविटि and चिविटि)

विचित्र

ya. 12. स्त्रियन्नपानादिविचित्रभोगैः
14. ततस्तु जातं सकलं विचित्रम्
20. विश्वमहं विचित्रम्

विचिन्त्

13. भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः

Kaivalya. 5. हृत्पुण्डरीकं विरजं विशोकं विचिन्त्य
Dhyâna. 11. महावीरं पूरकेण विचिन्तयेत्
Mukti. 2. 51. चिदानन्दं विचिन्तय

विचूर्ण्

Mukti. 2. 42. दन्तैर्दन्तान्विचूर्ण्य च

विचेतस्

Gîtâ. 9. 12. मोघज्ञाना विचेतसः

विचेष्ट्

Katha. 6 10. बुद्धिश्च न विचेष्टते Maitri. 6. 30.

विच्छद्

Chhâ. 8. 10. 2. घ्नन्ति त्वेवैनं विच्छादयन्तीव (so all MSS. but M. M. proposes to read विच्छाययन्तीव)

विच्छिद्

Chhâ. 6. 7 1. आपोमयः प्राणो न पिबतो विच्छेत्स्यते
Bṛih. 1. 5. 14. एतां रात्रिं . . प्राणं न विच्छिन्द्यात्

विछ्

Bṛih. 4. 3. 20. हस्तीव विच्छाययति

विजन्

Katha. 4. 7. या भूतेभिर्व्यजायत
Mahânâr. 2. 1. स विजायमानः स जनिष्यमाणः

1. विजय

Kena. 14. ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त त ऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयः
26. ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वम्

Gîtâ. 1. 32. न कांक्षे विजयं कृष्ण
18. 78. तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवाणि

2. विजय

Râmap. 55. विजयश्च सुराष्ट्रश्च

विजर

Kaush. 1. 3. विजरा नदी
— विजरां त्रा अयं नदीं प्रापत्
4. स आगच्छति विजरां नदीम्
Chhâ. 8. 1. 5. विजरो विमृत्युर्विशोकः 8. 7. 1, 3; Maitri. 6. 25; 7. 7.
Bṛih. 4. 4. 20. विजरः पर आकाशात्
Maitri. 6. 4. विजरं विमृत्युं त्रिपदम्
25. विजरं विमृत्युं विशोकम् 7. 5.

विजरन्न

Maitri. 6. 13. अन्नमेव विजरन्नम्

विजि

Kaush. 4. 20. अथ हत्वासुरान् विजित्य
Kena. 14. ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये
Chhâ. 4. 1. 4. यथा कृताय विजिताय 6.
Mukti. 2. 40. यावन्न विजितं मनः

विजिगीत

Bṛih. 6. 4. 18. पुत्रो मे पण्डितो विजिगीतः ..जायेत

विजिघत्स

Chhâ. 8. 1. 5. विजिघत्सो ऽपिपासः 8. 7. 1, 3.

विजिज्ञासा

Bṛih. 3. 1. 1. जनकस्य विजिज्ञासा बभूव

विजितात्मन्

Gîtâ. 5. 7. विजितात्मा जितेन्द्रियः

विजिति

Maitri. 6. 36. पुण्यलोकविजित्यर्थाय

विजितेन्द्रिय

Gîtâ. 6. 8. कूटस्थो विजितेन्द्रिय

विजृंभ्

Bṛih. 1. 1. 1. यद्विजृंभते तद्विद्योतते

विज्ञा

Ait. 5. 1. येन वा स्वादु चास्वादु विजानाति
Kaush. 1. 1. एहि व्येव त्वा ज्ञपयिष्य 4. 19.
7. स ब्रह्मेति विज्ञेयः
— केन धियो विज्ञातव्यं मानिति
3. 1. मामेव विजानीह्येतदे मनुष्याय हिततमं
, यन्मां विजानीयात्
8. न वाचं विजिज्ञासीत क्तारं विद्यात् (simil 8 times more).
4. 19. तत उ ह बालाकिर्न वि
20. यावद्ध वा इन्द्र एतमात न विजज्ञे ..स यदावि
Kena. 3. न विद्मो न विजानीमः
11. अविज्ञातं विजानतां वि तमविजानताम्
15. तद्धैषां विजज्ञौ तेभ्यो प्रादुर्बभूव तन्न व्यजान
16. एतद्विजानीहि किमेतद मिति 20, 24.
19. नैतदशकं विज्ञातुं यदेत क्षमिति 23.
Chhâ. 1. 2. 9. नैवैतेन सुरभि न दु विजानाति
3. 13. 7. उष्णिमानं संस्पर्शेन वि नाति
4. 10. 5. विजानाम्यहं यत्प्राणो कं च तु खं च न विजा मीति

1. 3. येन..अविज्ञातं विज्ञात-
मिति
4. सर्वं मृन्मयं विज्ञातम्
5. सर्वं लोहमयं विज्ञातम्
6. सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञातम्
3. 4. तन्मे विजानीहि 6. 4. 7.
5. 4. भूय एव मा भगवान् वि-
ज्ञापयतु 6. 6. 5; 6. 8. 7;
6. 9. 4; 6. 10. 3; 6. 11.
3; 6. 12. 3; 6. 13. 3; 6.
14. 3; 6. 15. 3; Nṛisut.
7 (नो)
7. 4. अशानाथ मे विज्ञास्यसि
6. तद्धास्य विजज्ञौ 6. 16. 3.
8. 1. स्वप्नान्तं मे..विजानीहि
3. अशनापिपासे..विजानीहि
— शुङ्गमुत्पतितं..विजानी-
हि 5.
7. 2. 1. वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति
— न धर्मो नाधर्मो व्यज्ञापयि-
ष्यत्
— वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति
7. 7. 1. विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजा-
नाति
— विज्ञानेनैव विजानाति
7. 13. 1. न मन्वीरन्न विजानीरन्..
अथ मन्वीरन्नथ विजानी-
रन् स्मरेण वै पुत्रान् वि-
जानाति
5. 4. एवं मन्वान एवं विजानन्
7. 25. 2.
16. 1. सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्य-
मिति सत्यं भगवो विजि-
ज्ञासे (similarly in each
section down to 23).
17. 1. यदा वै विजानात्यथ सत्यं
वदति नाविजानन् सत्यं
वदति विजानन्नेव सत्यं
वदति

Chhâ. 7. 18. 1. यदा वै मनुते ऽथ विजाना-
ति नामत्वा विजानाति म-
त्वैव विजानाति
7. 24. 1. यत्र..नान्यद्विजानाति स
भूमा यत्र..अन्यद्विजाना-
ति तदल्पम्
7. 26. 1. एवं विजानत आत्मतः प्रा-
णः
8. 1. 1. तद्वाव विजिज्ञासितव्यम्
2. किं तद्..यद्वाव विजिज्ञा-
सितव्यम्
8. 6. 3. स्वप्नं न विजानाति
8. 11. 1.
8. 7. 1. सो ऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञा-
सितव्यः
— यस्तमात्मानमनुविद्य वि-
जानाति 3.
8. 8. 1. यदात्मनो न विजानीथः
Bṛih. 1. 5. 3. पृष्ठत उपस्पृष्टो मनसा वि-
जानाति
8. विज्ञातं विजिज्ञास्यमवि-
ज्ञातमेत एव यत्किञ्च वि-
ज्ञातं वाचस्तद्रूपं वाग्घि
विज्ञाता
9. यत्किञ्च विजिज्ञास्यं मन-
सस्तद्रूपं मनो हि विजि-
ज्ञास्यम्
2. 1. 15. व्येव त्वा ज्ञपयिष्यामीति
2. 4. 14. इतर इतरं विजानाति..
केन कं विजानीयात्
4. 5. 15.
— येनेदं सर्वं विजानाति तं
केन विजानीयात् 4. 5. 15
— विज्ञातारमरे केन विजा-
नीयात् 4. 5. 15.
3. 2. 4. जिह्वया हि रसान्विजा-
नाति

Brih. 3. 4. 2. न विज्ञातेर्विज्ञातारं विजानीयाः
4. 3. 30. यद्वै तन्न विजानाति विजानन्वै तन्न विजानाति.. न तु तद्द्वितीयमस्ति..यद्विजानीयात्
31. अन्यो ऽन्यद्विजानीयात्
4. 4. 2. एकीभवति न विजानाति
13. आत्मानं चेद्विजानीयात्
21. तमेव धीरो विज्ञाय
4. 5. 6. आत्मनि खल्वरे..विज्ञात इदं सर्वं विदितम्
14. न वा अहमिमं विजानामीति
5. 2. 1. व्यज्ञासिष्टा३ इति व्यज्ञासिष्मेति..ओमिति होवाच व्यज्ञासिष्टेति 2, 3.
6. 2. 7. विज्ञायते हास्ति हिरण्यस्यापात्तम्
Isâ. 7. यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः
Tait. 3. 1. 1. तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति
3. 2. 1. अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्
— तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार..तं होवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व 3. 3. 1; 3. 4. 1; 3. 5. 1.
3. 3. 1. प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 4. 1. मनो ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 5. 1. विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्
3. 6. 1. आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्
Katha. 2. 19. उभौ तौ न विजानीतः Gitâ. 2. 19.
4. 2. येन रूपं..एतेनैव विजानाति
15. एवं मुनेर्विजानत आत्मा भवति
5. 14. कथं नु तद्विजानीयाम्

Swet. 5. 9. जीवः स विज्ञेयः
Mund. 1. 1. 3. कस्मिन्..विज्ञाते [illegible] विज्ञातं भवति
3. 1. 4. विजानन्विद्वान् भवते [illegible] वादी
Mahânar. 11. 8. हृदयं तद्विजानीयात् Brahma. 3.
Prasna. 1. 2. यदि विज्ञास्यामः स[illegible] वक्ष्यामः
3. 12. अध्यात्मं चैव प्राण[illegible] ज्ञाय
Kaivalya. 21 अहं विजानामि वि[illegible] रूपः
Mândû. 7. स आत्मा स विज्ञेयः 4. 1 (most MSS. second स)
Gauda. 3. 34. प्रचारः स तु विज्ञेयः
44. सकषायं विजानीया[illegible]
4. 9. प्रकृतिः सेति विज्ञेया
46. एवमेव विजानन्तः
88. ज्ञानं ज्ञेयं च विज्ञेय[illegible]
90. विज्ञेयान्यग्रयाणतः
— तेषामन्यत्र विज्ञेयात्
Nrisut. 1. स एवात्मा स एव वि[illegible]
9. जानन्नेव ह्यत्र न विजा[illegible]
— ज्ञातो वैष विज्ञातः
Dhyâna. 23. अमृतस्थानं विजानी[illegible]
Jâbâla. 2. तं कथमहं विजानीया[illegible] Râmot. 4.
Gopî. 5. तं तं पूतं विजानीयात्
Skanda. 14. वेदात्मकं ब्रह्म निजं [illegible] नते
Râmot. 8. स आत्मा विज्ञेयः
Gitâ. 2. 46. ब्राह्मणस्य विजानतः
4. 4. कथमेतद्विजानीयाम्
11. 31. विज्ञातुमिच्छामि भ[illegible]
13. 18. मद्भक्त एतद्विज्ञाय

विज्ञातवस्तु

2. 31. ततः पङ्कक्षायेन नूनं विज्ञातवस्तुना

विज्ञाति

3. 4. 2. न विज्ञातेर्विज्ञातारं विजानीयाः

4. 3. 30. न हि विज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपः

विज्ञातृ

3. 8. नान्नरसं विजिज्ञासीतान्नरसस्य विज्ञातारं विद्यात्
— न सुखदुःखे विजिज्ञासीत सुखदुःखयोर्विज्ञातारं विद्यात्
— आनन्दस्य रतेः प्रजातेर्विज्ञातारं विद्यात्

7. 8. 1. उपसीदन्..विज्ञाता भवति

7. 9. 1. अन्नस्यायै..विज्ञाता भवति

2. 4. 14. विज्ञातारमरे केन विजानीयात् 4. 5. 15.

4. 2. न विज्ञातेर्विज्ञातारं विजानीयाः

3. 7. 23. अविज्ञातो विज्ञाता
— नान्यो ऽतो ऽस्ति विज्ञाता

3. 8. 11. अविज्ञातं विज्ञातृ
— नान्यदतो ऽस्ति विज्ञातृ

3. 30. न हि विज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपः

विज्ञान

5. 2. संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानम्

3. 3. तस्यैषैव दृष्टिरेतद्विज्ञानम्
— तस्यैषैव सिद्धिरेतद्विज्ञानम्

7. 1. विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयो विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति

Chhâ. 7. 7. 1. विज्ञानेनैव विजानाति विज्ञानमुपास्स्वेति
2. यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते
— यावद्विज्ञानस्य गतम्
— अस्ति भगवो विज्ञानाद्भूय इति विज्ञानाद्भूयो ऽस्तीति

7. 8. 1. बलं वाव विज्ञानाद्भूयः

7. 17. 1. विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति विज्ञानं..विजिज्ञासे

7. 26. 1. आत्मतो विज्ञानम्

Brih. 2. 1. 17. प्राणानां विज्ञानेन विज्ञानमादाय

2. 4. 5. आत्मनो वा अरे..विज्ञानेन
13. अलं वा अर इदं विज्ञानाय

3. 7. 22. यो विज्ञाने तिष्ठन्विज्ञानादन्तरो यं विज्ञानं न वेद यस्य विज्ञानं शरीरम्

3. 9. 28. विज्ञानमानन्दं ब्रह्म

Tait. 2. 5. 1. विज्ञानं यज्ञं तनुते
— विज्ञानं देवाः सर्वे ब्रह्मज्येष्ठमुपासते
— विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद

2. 6. 1. विज्ञानं चाविज्ञानं च

3. 5. 1. विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानाद्विज्ञानाद्धि..भूतानि जायन्ते विज्ञानेन..जीवन्ति विज्ञानं प्रयन्ति

Katha. 3. 9. विज्ञानसारथिर्यस्तु

Maitri. 6. 7. यत्र द्वैतीभूतं विज्ञानम्
— यत्राद्वैतीभूतं विज्ञानम्
13. विज्ञानं मनस आनन्दं विज्ञानस्य
24. अविशेषविज्ञानं विशेषमुपगच्छति

Mund. 1. 2. 12. तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्

Mund. 2. 2. 1. परं विज्ञानाद्वरिष्ठं प्रजानाम्
7. तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति
3. 2. 6. वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः Mahanar. 10. 6; Kaivalya. 3.
Mahânâr. 23. 1. स्मरेण विज्ञानं विज्ञानेनात्मानं वेदयति
— मनसश्च विज्ञानं विज्ञानादानन्दो ब्रह्मयोनिः
25. 1. यदस्य विज्ञानं तज्जुहोति
Gauda. 1. 20. तैजसस्योत्वविज्ञाने
4. 45. विज्ञानं शान्तमद्वयम्
47. विज्ञानस्पन्दितं तथा
48. अस्पन्दमानं विज्ञानम्
50. विज्ञाने ऽपि तथैव स्युः
51. न विज्ञानं प्रविशन्ति ते
— विज्ञाने स्पन्दमाने वै
52. न निर्गता विज्ञानात्ते
Brahma. 2. हृद्याकाशं तद्विज्ञानमाकाशम्
Brahmab. 18. ज्ञानविज्ञानतत्त्वतः
20. भूते भूते च वसति विज्ञानम्
Sarvop. 1. विषयविशेषविज्ञानाभावात्
2. स्वकारणविज्ञानेन
3. विज्ञानचिन्मात्रस्वभावः
Râmot. 5. पूर्णानन्दैकविज्ञानम्
Mukti. 1. 28. दृढता नोचेद्विज्ञानस्य
2. 10. वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशाः
Gîtâ. 3. 41. ज्ञानविज्ञाननाशनम्
6. 8. ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा
9. 1. ज्ञानं विज्ञानसहितम्
18. 42. ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यम्

विज्ञानघन

Brih. 2. 4. 12. अनन्तमपारं विज्ञानघनएव
Parama. 2. विज्ञानघन एवास्मि Skanda. 1.
Nâr. 5. तदिदं पुरं पुण्डरीकं [...]नघनम्
Atmapra. 1. कारणरूपं बोधस्व[...] ज्ञानघनम्

विज्ञानपति

Tait. 1. 6. 2. श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः

विज्ञानमय

Brih. 2. 1. 16. य एष विज्ञानमयः पुरु[...]
4. 3. 7. यो ऽयं विज्ञानमयः..
4. 4. 5. विज्ञानमयो मनोमय[...]
22. यो ऽयं विज्ञानमयः
Tait. 2. 4. 1. अन्यो ऽन्तर आत्मा [...]नमयः
2. 5. 1. एतस्माद्विज्ञानमयाद[...] ऽन्तर आत्मानन्दम[...]
2. 8. 1. एतं विज्ञानमयमात्म[...] पसंक्रामति 3. 1[...] (उपसंक्रम्य)
Mund. 3. 2. 7. कर्माणि विज्ञानमयश्च[...]त्मा
Sarvop. 1. अयं.. विज्ञानमय [...]न्दमयः कथम्
2. तदा विज्ञानमयः को[...]त्युच्यते

विज्ञानवन्त्

Chhâ. 7. 7. 2. विज्ञानवतो वै स लो[...] ज्ञानवतो ऽभिसिध्यति
7. 8. 1. शतं विज्ञानवतामेको[...] लवानाकम्पयते
Katha. 3. 6. यस्तु विज्ञानवान् भ[...]
Maitri. 6. 5. ऋग्यजुः सामेति विज्ञा[...]त्येषा
13. विज्ञानवान्.. भवति[...] हैवं वेद

विज्ञानात्मन्

pa. 4. 9. एष हि..विज्ञानात्मा पुरुषः
11. विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वैः

विज्य

15. विज्यं धनुः शिखण्डिनः

विण्मूत्र

i. 1. 3. *vide* संघात
3. 4. *vide* वसा

वितथ

. 2. 6. वितथैः सदृशाः सन्तः 4. 31.

वितन्

1. 10. 7. यज्ञं वितत मेयाय
4. 4. 8. अणुः पन्था विततः पुराणः
1. 4. 1. आवहन्ती वितन्वाना
. 4. 2. ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्
3. 1. 6. सत्येन पन्था विततो देवयानः
âr. 2. 6. ऋतस्य तन्तुं विततं विवृत्य
Sru. 3.ताननुरूपाभिर्वृत्तिभिर्विततय
4. 32. वितता ब्रह्मणो मुखे

वितप्

2. 4. तपन् वितपन् सन्तपन्

वितल

ya. 1. *vide* तलातल

वितस्ता

âr. 5. 4. मरुद्वृधे वितस्तया..शृणुधा

वितस्ति

âr. 11. 07 8. अधो निष्ट्या वितस्त्यां तु

वितुद

Mahânâr. 20. 1. भूताः..वितुदस्य प्रेष्ठाः

वितृद्

Katha. 4. 1. पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूः

वित्त

Chhâ. 5. 3. 6. मानुषस्य..वित्तस्य वरं वृणीथाः
— तवैव राजन् मानुषं वित्तम्
Brih. 1. 4. 8. प्रेयो वित्तात्
17. अथ वित्तं मे स्यात् (bis).
— चक्षुर्मानुषं वित्तम्
1. 5. 15. तस्य वित्तमेव पञ्चदश कलाः
— वित्तेनैवा च पूर्यते ऽप च क्षीयते
— प्रधिर्वित्तम्
2. 4. 2. सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा 4. 5. 3.
— अमृतत्वस्य तु वित्तेन नाशास्ति 4. 5. 3.
5. न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति 4. 5. 6.
Tait. 2. 8. 1. तस्येयं पृथिवी वित्तस्य पूर्णा
Katha. 1. 24. वृणीष्व वित्तं चिरजीविकां च
27. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा
Mukti. 2. यथा..वाणिज्यादिना वित्तम्

वित्तमय

Katha. 2. 3. नैतां सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तः

वित्तमोह

Katha. 2. 6. प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्

वित्तेश

Gitâ. 10. 23. वित्तेशो यक्षरक्षसाम्

वित्तैषणा

Brih. 3. 5. 1. वित्तैषणायाश्च . . व्युत्थाय 4. 4. 22; Nrisut. 6.
— या ह्येव पुत्रैषणा सा वित्तैषणा या वित्तैषणा सा लोकैषणा 4. 4. 22.

1. विद् (ज्ञाने)

Kaush. 1. 1. नाहमेतद्वेद
— अहमप्येतन्न वेद
7. तां व्यष्टिं व्यश्नुते य एवं वेद
2. 1. ब्रह्मणो मनो दूतं वेद
— य एवं वेद तस्योपनिषन्न याचेदिति 2. 2.
5. एतत् पूर्वे विद्वांसो ऽग्निहोत्रं न जुहवांचक्रुः
6. तेजस्वितमो भवति य एवं वेद
— इन्द्रस्यात्मा भवति य एवं वेद
14. प्राणे निःश्रेयसं विदित्वा (bis).
— तदमृतो भवति य एवं वेद
3. 1. यो मां वेद न ह वै तस्य केन चन कर्मणा लोको मीयते
8. न वाचं विजिज्ञासीत वक्तारं विद्यात् (similarly 8 times more).
— स म आत्मेति विद्यात्
4. 19. यस्य वै तत्कर्म स वै वेदितव्यः
20. आधिपत्यं पर्येति य एवं वेद

Kena. 3. न विद्मो न विजानीमः
3. अन्यदेव तद्विदि[ता]
अविदितादधि
4. तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि 7, 8.
9. यदि मन्यसे सुवेदे[ति] ...मेवापि नूनं त्वं वेत्थ [ब्रह्मणो] रूपम्
— मन्ये विदितम्
10. नाहं मन्ये सुवेदेति ... वेदेति वेद च। यो[नस्] तद्वेद नो न वेदेति वे[द]
11. मतं यस्य न वेद स[ः]
12. प्रतिबोधविदितं मतम्
13. इह चेदवेदीदथ सत्[यम्] न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः (2 MSS. have ...दीः in second inst[ance])
26. ततो हैव विदांचकार
27. एनत्प्रथमो विदांचकार ... ह्येति 28.
31. स य एतदेवं वेद ... सर्वाणि भूतानि सं[वाञ्छ]न्ति
34. या वा एतामेवं वेद ... पाप्मानम्

Chhâ. 1. 1. 7. य एतदेवं विद्वानक्षरमुपास्ते 8.
10. यश्चैतदेवं वेद यश्च न
1. 2. 13. बको दाल्भ्यो विदां[चकार]
14. य एतदेवं विद्वानक्षरमुपास्ते
1. 3. 1. अपहन्ता ह वै भयस्[य तम]सो भवति य एवं वे[द]
7. य एतान्येवं विद्वानु[द्गीथा]क्षराण्युपास्ते
1. 4. 3. ते नु विदित्वोर्ध्वा ऋचः ... यजुषः

4. 5. स य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौति
6. 7. उदेति ह वै सर्वेभ्यः पाप्मभ्यो य एवं वेद
1. 7. 7. य एतदेवं विद्वान् साम गायति 9.
1. 8. 7. हन्ताहमेतद्भगवत्तो वेदानीति विद्धीति होवाच 8.
1. 9. 2. य एतदेवं विद्वान् परोवरीयांसमुद्गीथमुपास्ते
3. यावत्त एनं प्रजायामुद्गीथं वेदिष्यन्ते
4. य एतमेवं विद्वानुपास्ते
1. 11. 1. भगवन्तं वा अहं विविदिषाणि
. 13. 4. अन्नादो भवति य एतामेवं साम्नामुपनिषदं वेद
. 1. 4. स य एतदेवं विद्वान् साधु सामेत्युपास्ते
. 2. 3. य एतदेवं विद्वाँल्लोकेषु पंचविधं सामोपास्ते (similarly 6 times more).
. 9. 2. तस्मिन्निमानि सर्वाणि भूतान्यन्वायत्तानीति विद्यात्
10. 6. य एतदेवं विद्वानात्मसम्मितमातिमृत्यु सप्तविधं सामोपास्ते
. 11. 2. स य एवमेतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतं वेद (similarly 12. 2; 13. 2; 14. 2; 15. 2: 16. 2; 17. 2; 18. 2; 19. 2; 20. 2; 21. 2.)
21. 4. यस्तद्वेद स वेद सर्वम्
24. 2. स यस्तं न विद्यात्कथं कुर्यादथ विद्वान् कुर्यात्
16. एष ह वै यज्ञस्य मात्रां वेद य एवं वेद

Chhâ. 3. 6. 3. स य एतदेवममृतं वेद 3. 7. 3; 3. 8. 3; 3. 9. 3; 3. 10. 3.
3. 11. 3. य एतामेवं ब्रह्मोपनिषदं वेद
3. 12. 9. पूर्णामप्रवर्त्तिनीं श्रियं लभते य एवं वेद
3. 13. 1. तेजस्व्यन्नादो भवति य एवं वेद
2. यशस्वी भवति य एवं वेद
3. ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति य एवं वेद
4. कीर्त्तिमान् व्युष्टिमान् भवति य एवं वेद
5. ओजस्वी महस्वान् भवति य एवं वेद
6. स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपान् वेद
8. चक्षुष्यः श्रुतो भवति य एवं वेद
3. 15. 2. स य एतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद
— अहमेतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद
3. 16. 7. प्र ह षोडशं वर्षशतं जीवति य एवं वेद
3. 18. 3. भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद 4, 5, 6.
3. 19. 4. स य एतमेवं विद्वानादित्यं ब्रह्मेत्युपास्ते
4. 1. 4. यस्तद्वेद यत् स वेद 6.
4. 3. 8. अन्नादो भवति य एवं वेद
4. 4. 2. नाहमेतद्वेद तात यद्गोत्रस्त्वमसि (similarly three times more).
4. 5. 3. स य एतमेवं विद्वांश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणः.. उपास्ते 4. 6. 4; 4. 7. 4; 4. 8. 4.

Chhâ. 4. 9. 3. आचार्याद्धैव विद्या विदिता साधिष्ठं प्रापयति
4. 11. 2. य एतमेवं विद्वानुपास्ते 4. 12. 2; 4. 13. 2.
4. 15. 2. सर्वाण्येनं वामान्यभिसंयन्ति य एवं वेद
3. सर्वाणि वामानि नयति य एवं वेद
4. सर्वेषु लोकेषु भाति य एवं वेद
5. 1. 1. यो ह वै ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद Brih. 6. 1. 1.
2. यो ह वै वसिष्ठं वेद
3. यो ह वै प्रतिष्ठां वेद Brih. 6. 1. 3.
4. यो ह वै संपदं वेद Brih. 6. 1. 4.
5. यो ह वा आयतनं वेद Brih. 6. 1. 5.
5. 2. 8. समृद्धं कर्मेति विद्यात्
5. 3. 2. वेत्थ यदितो ऽधि प्रजाः प्रयन्तीति
— वेत्थ यथा पुनरावर्त्तन्ता३ इति
— वेत्थ पथोर्देवयानस्य पितृयाणस्य च व्यावर्त्तना३ इति
3. वेत्थ यथासौ लोको न संपूर्यता३ इति
— वेत्थ यथा पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्तीति
4. यो हीमानि न विद्यात्
5. अहमेषां नैकञ्चन वेद यद्यहमिमानवेदिष्यम्
5. 10. 1. तद्य इत्थं विदुः
10. य एतानेवं पञ्चाग्नीन् वेद
— पुण्यलोको भवति य एवं वेद

Chhâ. 5. 18. 1. आत्मानं वैश्वानरं वि...
5. 24. 2. य एतदेवं विद्वान्... जुहोति 3.
6. 1. 7. न..त एतदवेदिषुर्... वेदिष्यन् कथं मे ना...
6. 4. 5. इति ह्येभ्यो विदाञ्च...
6. तेजसस्तद्रूपमिति ... ञ्चक्रुः (similarly t... more).
7. देवतानां समास इति ... दाञ्चक्रुः
6. 9. 2. न विदुः सति सम्पद्य...
6. 10. 1. न विदुरियमहमस्मि...
2. न विदुः सत आगत...
6. 11. 2. एवमेव खलु सौम्य...
6. 14. 2. आचार्यवान् पुरुषो वे...
7. 1. 1. यद्वेत्थ तेन मोपसीद...
7. 5. 2. नायमस्तीत्येवैनमाहुर्... वेद यद्वायं विद्वान्... चित्तः स्यात्
7. 25. 2. ये ऽन्यथातो विदुरन्य... नस्ते
8. 6. 5. विदुषां प्रपदनं निरोधो... दुषाम्
8. 7. 3. भगवतो वचो वेदयन्ते...
8. 12. 4. यो वेदेदं जिघ्राणी... आत्मा (similarly 3... more.)

Brih. 1. 2. 1. य एवमेतदर्कस्यार्कत्...
5. य एवमेतददितेरदि... वेद
7. अश्वमेधं वेद य एवमे...
1. 3. 2. ते ऽविदुरनेन वै न उ... त्येष्यन्तीति 3—7.
7. परास्य द्विषन् भ्रातृव्यो... भवति य एवं वेद
9. दूरं ह वा अस्मान्मृ... भवति य एवं वेद

1. 3. 16. एनमेषा देवता मृत्युमतिव॰ हति य एवं वेद
18. अन्नादो ऽधिपतिर्य एवं वेद
22. अश्नुते सायुज्यं सलोकतां य एवमेतत्साम वेद
25. एतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्य स्वम्
26. साम्नो यः सुवर्णं वेद भवति हास्य सुवर्णम्
27. साम्नो यः प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठति
28. न हैवालोक्यताया आशास्ति य एवमेतत्साम वेद
1. 4. 1. ओषति ह वै स तं..य एवं वेद
5. सो ऽवेदहं वाव सृष्टिरस्मि
— सृष्ट्यां..एतस्यां भवति य एवं वेद
6. अतिसृष्ट्यां .. भवति य एवं वेद
7. यो ऽत एकैकमुपास्ते न स वेद
— अनेन ह्येतत्सर्वं वेद
— कीर्त्तिं श्लोकं विन्दते य एवं वेद
9. किमु तद्ब्रह्मावेत्
— तदात्मानमेवावेदहं ब्रह्मास्मीति
10. य एवं वेदाहं ब्रह्मास्मीति
— अन्यो ऽसावन्यो ऽहमस्मीति न स वेद
— एषां तन्न प्रियं यदेतन्मनुष्या विद्युः
16. एतद्विदितं मीमांसितम्
17. इदं सर्वमाप्नोति य एवं वेद
1. 5. 1. यो वै तामक्षितिं वेद 2.
2. न तथा विद्यात्

Brih. 1. 5. 12. नास्य सपत्नो भवति य एवं वेद
21. तेन ह वाव तत्कुलमाचक्षते ..य एवं वेद
2. 1. 14. एतावन्नू३ इत्येतावद्धीति नैतावता विदितं भवतीति
19. यदा न कस्यचन वेद
2. 2. 1. यो ह वै शिशुं..वेद
2. नास्यान्नं क्षीयते य एवं वेद
4. सर्वमस्यान्नं भवति य एवं वेद
2. 3. 6. सकृद्विद्युत्तेव ह वा अस्य श्रीर्भवति य एवं वेद
2. 4. 3. यदेव भगवान्वेद तदेव मे ब्रूहीति
5. आत्मनो वा अरे..विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्
6. ब्रह्म तं परादाद्यो ऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद (similarly 5 times more); 4. 5. 7 (similarly six times more).
3. 2. 9. त्वचा हि स्पर्शान् वेदयते
13. आवामेवैतस्य वेदिष्यावः
3. 3. 2. अप पुनर्मृत्युं जयति य एवं वेद
3. 5. 1. एतं वै तमात्मानं विदित्वा
3. 7. 1. वेत्थ नु त्वं काप्य तत्सूत्रम्
— नाहं तद्भगवन्वेदेति
— वेत्थ नु त्वं..तमन्तर्यामिणम्
— नाहं तं भगवन्वेदेति
— यो वै तत्काप्य सूत्रं विद्यात्तं चान्तर्यामिणम्
— तदहं वेद
— वेद वा अहं गौतम तत्सूत्रम्
— यो वा इदं कश्चिद्ब्रूयाद्वेद वेदेति यथा वेत्थ तथा ब्रूहीति

Brih. 3. 7. 3. यं पृथिवी न वेद (similarly, in 4-23).
3. 9. 10. यो वै तं पुरुषं विद्यात्..वेद वा अहं तं पुरुषम् 11-17.
19. किं ब्रह्म विद्वानिति
— दिशो वेद..यद्दिशो वेत्थ
4. 2. 1. नाहं..वेद यत्र गमिष्यामि
4. यो नो भगवन्नभयं वेदयसे
4. 3. 21. न बाह्यं किञ्चन वेद नान्तरम् (bis).
4. 4. 14. इहैव सन्तो ऽथ विद्मस्तद्वयम्
— य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति Katha. 6. 2, 9; Swet. 3. 1, 10, 13; 4. 17, 20.
17. विद्वान्ब्रह्मामृतो ऽमृतम्
18. मनसो ये मनो विदुः
22. तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति
— एतमेव विदित्वा मुनिर्भवति
— पूर्वे विद्वांसः प्रजां न कामयन्ते
23. तं विदित्वा न लिप्यते कर्मणा पापकेन
24. विन्दते वसु य एवं वेद
25. अभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेद Nrisut. 8 (4 times).
4. 5. 4. यदेव भगवान्वेत्थ तदेव मे विब्रूहि
6. आत्मनि खल्वरे..विज्ञात इदं सर्वं विदितम्
5. 1. 1. वेदो ऽयं ब्राह्मणा विदुर्वेदैनेन यद्वेदितव्यम्
5. 3. 1. अभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद
— ददत्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद
— एति स्वर्गं लोकं य एवं वेद

Brih. 5. 4. 1. महद्यक्षं प्रथमजं वेद
5. 5. 1. नैनं विद्वांसमनृतं हि
3. हन्ति पाप्मानं जहाति य एवं वेद 4.
5. 7. 1. विद्यत्येनं पाप्मनो य वेद विद्युद्ब्रह्मेति
5. 11. 1. परमं हैव लोकं जयति एवं वेद (ter).
5. 12. 1. सर्वाणि ह वा अस्मिन् तानि विशन्ति सर्व भूतानि रमन्ते य एवं
5. 13. 1. सायुज्यं सलोकतां ज य एवं वेद 2, 3, 4.
5. 14. 1. स यावदेषु त्रिषु लो तावद्ध जयति यो ऽ एतदेवं पदं वेद
2. यावतीयं त्रयी विद्या वद्ध जयति यो ऽस्या ए देवं पदं वेद
3. यावदिदं प्राणि तावद यति यो ऽस्या एतदेवं वेद
— एवं हैव श्रिया यशसा त ति यो ऽस्या एतदेवं पदं
8. मुखं ह्यस्याः सम्राण्वि ञ्चकारेति
5. 15. 1. विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् Isâ. 18.
6. 1. 1. ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भ त्यपि च येषां बुभूषति एवं वेद
2. यो ह वै वसिष्ठां वेद वसिष्ठः स्वानां भवति य एवं वेद
3. प्रतितिष्ठति समे प्रतितिष्ठ दुर्गे य एवं वेद
4. सं हास्मै पद्यते यं काम कामयते य एवं वेद

6. 1. 5. आयतनं स्वानां भवत्याय-तनं जनानां य एवं वेद
6. यो ह वै प्रजातिं वेद.. प्रजायते ह प्रजया..य एवं वेद
8. विद्वांसो मनसा 9, 10, 12.
14. य एवमेतदनस्यान्नं वेद
6. 2. 2. वेत्थ यथेमाः प्रजाः प्रयत्यो विप्रतिपद्यन्ता ३ इति
— वेत्थो यथेमं लोकं पुनराप-द्यन्ता ३ इति
— वेत्थो यथासौ लोक एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिर्न सम्पूर्यता ३ इति
— वेत्थो यतिथ्यामाहुत्यां हु-तायामापः पुरुषवाचो भू-त्वा समुत्थाय वदन्ती ३ इति
— वेत्थो देवयानस्य वा पथः प्रतिपदम्
— नाहमत एकञ्चन वेद
3. ततो नैकञ्चन वेद
4. यदहं किञ्चन वेद
15. ते य एवमेतद्विदुः
16. य एतौ पन्थानौ न विदुः
4. 24. अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्
11. यस्तद्वेदोभयं सह 14; Maitri. 7. 9.
3. 4. य एवमेता महासंहिता व्याख्याता वेद
5. 3. ता यो वेद स वेद ब्रह्म
1. 1. ब्रह्म यो वेद निहितं गुहा-याम्
4. 1. आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् 2. 9. 1.
5. 1. विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद
6. 1. असद्ब्रह्मेति वेद चेत्

Tait. 2. 6. 1. अस्ति ब्रह्मेति चेद्वेद सन्त-मेनं ततो विदुः
— आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चित्समश्नुता ३ उ
2. 7. 1. तत्त्वेव भयं विदुषो मन्वा-नस्य
2. 9. 1. य एवं विद्वानेते आत्मानं स्पृणुते । उभे ह्येवैष एते आत्मानं स्पृणुते य एवं वेद
3. 6. 1. स य एवं वेद प्रतितिष्ठति
3. 7. 1. स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद 3. 8. 1; 3. 9. 1.
3. 10. 2. य एवं वेद क्षेम इति वाचि
6. य एवं वेदेत्युपनिषत् Mahânâr. 21. 2; Nrip. 2. 4; 3. 1; Gopî. 2.
Katha. 1. 14. अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि
17. देवमीड्यं विदित्वा
18. त्रयमेतद्विदित्वा य एवं वि-द्वांश्चिनुते नाचिकेतम्
20 एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वया
2. 7. शृण्वन्तो ऽपि बहवो यं न विद्युः
25 क इत्था वेद यत्र सः
3. 3. आत्मानं रथिनं विद्धि
— बुद्धिं तु सारथिं विद्धि
4. 2. अथ धीरा अमृतत्वं विदि-त्वा
5. य इमं मध्वदं वेद आत्मा-नम्
6. 17. तं विद्याच्छुक्रममृतम्
Śwet. 1. 7. अत्रान्तरं वेदविदो विदि-त्वा
12. नातः परं वेदितव्यं हि कि-ञ्चित्
2. 8. प्रतरेत विद्वान् स्रोतांसि
9. एनं विद्वान् मनो धारयेत

Śwet. 3. 8. वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्
— तमेव विदित्वातिमृत्युमेति 6. 15.
19. स वेत्ति वेद्यम्
21. वेदाहमेतमजरं पुराणम्
4. 8. यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुः Nrip. 4. 2; 5. 2.
10. मायां तु प्रकृतिं विद्यात्
5. 6. तद्ब्रह्मा वेदते ब्रह्मयोनिम् (Nârâyaṇa reads तद्ब्रह्म विन्दते)
— ये पूर्वं देवा ऋषयश्च तद्विदुः
14. कलासर्गकरं देवं ये विदुः
6. 7. विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्
21. ब्रह्म ह श्वेताश्वतरो ऽथ विद्वान्

Maitri. 2. 3. यद्भगवन् वेत्सि तदस्माकं ब्रूहि
6. 1. यः कश्चिद्विद्वानपहतपाप्मा
9. ध्यानं प्रयोगस्थं मनो विद्वद्भिष्टुतम्
10. अथापरं वेदितव्यम्
— यो हैवं वेद सन्न्यासी योगी चात्मयाजी च
13. अन्नवान्..आनन्दवांश्च भवति यो हैवं वेद
— तावत्स्वन्तःस्थो ऽन्नमत्ति यो हैवं वेद
15. यस्तं वेद स वेदवित् Kshur. 16; Dhyâna. 17, 18; Gîtâ. 15. 1.
17. एकस्य हैकत्वमेति य एवं वेद
18. विद्वान् पुण्यपापे विहाय
19. यदा वै..विद्वान् मनो नियम्य
22. द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये

Maitri. 7. 10. यद्वेदेषूक्तं तद्विद्वांस वान्ति
11. जिह्वाग्रदेशे ऽण्वणुकं
Mund. 1. 1. 4. द्वे विद्ये वेदितव्ये Brahmab. 17.
1. 2. 10. नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते
11. शान्ता विद्वांसो भै चरन्तः
13. तस्मै स विद्वानुपसन्ना
— येनाक्षरं पुरुषं वेद
2. 1. 10. एतद्यो वेद निहितं
2. 2. 9. तद्यदात्मविदो विदुः
3. 1. 3. तदा विद्वान् पुण्यपापे
4. विजानन् विद्वान् नातिवादी
9. एषो ऽणुरात्मा चेत दितव्यः
3. 2. 1. स वेदैतत्परमं ब्रह्मधा
4. एतैरुपायैर्यतते यस्तु
8. तथा विद्वान्नामरूपाद्वि
9. ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति

Mahânâr. 1. 11. य एनं विदुरमृतास्ते भ
2. 3. विश्वा भुवनानि विद्वा
4. प्र तद्वोचे अमृतं नु वि
— यस्तद्वेद स पितुः पि
5. धामानि वेद भुवनानि
3. 1. तत्पुरुषस्य विद्महे
2. तत्पुरुषाय विद्महे 15; 17. 4.
5. षण्मुखाय विद्महे
6. पावकाय विद्महे
7. वैश्वानराय विद्महे
8. भास्कराय विद्महे
9. दिवाकराय विद्महे
10. आदित्याय विद्महे
11. तीक्ष्णशृङ्गाय विद्महे
12. कात्यायन्यै विद्महे
13. महाशूलिन्यै विद्महे

r. 3. 14. सुभगायै विद्महे
16. नारायणाय विद्महे
17. नृसिंहाय विद्महे Nṛip. 4. 2.
18. चतुर्मुखाय विद्महे
12. 3. देवतानां सायुज्यं..आप्नोति य एवं वेद
18. 1. विद्वांसश्चाविद्वांसश्चैनश्चक्रम (bis).
20. 2. वृत्रहञ्छूर विद्वान्
21. 2. मानसमिति विद्वांसस्तस्माद्विद्वांस एव मानसे रमन्ते
23. 1. विज्ञानेनात्मानं वेदयति
24. 1. भूयो न मृत्युमुपयाहि विद्वान्
— य एवं वेद ब्रह्मणो माहिमानमाप्नोति
25. 1. य एवं विद्वानुदगयने प्रमीयते
— ब्राह्मणो विद्वानभिजयाति
3. 11. य एवं विद्वान्प्राणं वेद
4. 10. अक्षरं वेदयते यस्तु 11.
5. 2. विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति
7. स सामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्ते
— तमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्
6. 1. षोडशकलं..पुरुषं वेत्थ
— नाहमिमं वेद यद्यहमिमम वेदिषम्
6. तं वेद्यं पुरुषं वेद
7. एतावदेवाहमेतत्परं ब्रह्म वेद
1. परात्परं पुरुषं याति विद्वान्
22. वेदैरनेकैरहमेव वेद्यः
23. एवं विदित्वा परमात्मरूपम्
24. एवं विदित्वैनं कैवल्यं फलमश्नुते

Mâṇḍû. 9. आदिश्च भवति य एवं वेद Nṛisut. 2.
10. नास्याब्रह्मवित्कुले भवति य एवं वेद
11. अपीतिश्च भवति य एवं वेद Nṛisut. 2.
12. संविशत्यात्मनात्मानं य एवं वेद Nṛisut. 2.

Gauḍa. 1. 5. वेदैतदुभयं यस्तु
22. सामान्यं वेत्ति निश्चितः
24. ओङ्कारं पादशो विद्यात्
28. प्रणवं हीश्वरं विद्यात्
29. ओङ्कारो विदितो येन
2. 30. एवं यो वेद तत्त्वेन
34. इति तत्त्वविदो विदुः
36. तस्मादेवं विदित्वैनम्
4. 89. क्रमेण विदिते स्वयम्

Nṛip. 1. 3. तत्साम्नोऽङ्गं वेद (ter).
6. तमेवं विद्वानमृत इह भवति
7. यो ऽसौ सो ऽवेदयादिदं किञ्च
— य एवं वेदेति महोपनिषत् 4. 3; 5. 10.
— य एतां महोपनिषदं वेद
3. 1. मायामेतां शक्तिं विद्यात्
— य एतां मायां शक्तिं वेद
— तस्मादाकाशं बीजं विद्यात्
4. 2. य एवं वेद श्रिया हैवाभिषिच्यते
— न साम्नार्थो ऽस्ति यः सावित्रीं वेद
— य एतां महालक्ष्मीं याजुषीं वेद
— य एवं वेद स निदानवान् भवति
5. 2. एतन्महाचक्रं बालो वा युवा वा वेद

Nṛisut. 2. समानश्च भवति य एवं वेद

Nṛisut. 2. मन्त्रराजेन तुरीयं विद्यात्
5. ब्रह्म भवति य एवं वेद (bis).
— परमेव ब्रह्म भवति य एवं वेद
7. स स्वराड् भवति य एवं वेद (ter).
9. न वयं विद्म इति होचुः
— विदिताविदितात्परः (bis).

Cihûl. 14. अथर्वाणः शिरो विदुः
21. ये विदुर्ब्राह्मणादयः

Śiras. 1. यो मां वेद स देवान् वेद

Brahma. 1. देवता वेदयति
— य एवं वेद स परं ब्रह्मधाम क्षेत्रज्ञमुपैति
2. तद्वेद्यं हृद्याकाशं (4 MSS. have वेद्यां and one वैद्यां; my reading is conjectural).
— तत्सूत्रं विदितं येन
— बहिः सूत्रं त्यजेद्विद्वान् Aruṇeya. 3.
3. स शिखीत्युच्यते विद्वान्
— इति ब्रह्मविदो विदुः
— स विद्वान् यज्ञोपवीती स्यात्
— नेत्रस्थं जाग्रतं विद्यात्

Nâda. 7. वारुणीं तां विदुर्बुधाः

Amṛita. 26. सुषिरं मण्डलं विदुः

Dhyâna. 10. वृक्षं तु सकलं विद्यात्

Tejo. 12. न देवा न परं विदुः

Yogat. 13. निर्वाणं कुंभकं विदुः

Kaṭhaśru. 2. न विद्यामो न विद्मः
— सायुज्यतां गच्छति य एवं वेद

Haṁsa. 1. तं विदित्वा न मृत्युमेति

Parama. 1. स एव वेदपुरुष इति विदुषो मन्यन्ते

Aruṇeya. 3. ब्रह्म सूत्रमहमेव
4. खलु वेदार्थं यो
5. एतदुपनिषदं विद्वा वेद
— यज्ञोपवीतं च त्य य एवं वेद

Nâr. 2. य एवं वेद स भवति

Kâlâg. 2. यो विद्वान् ब्रह्म

Jâbâla. 2. सो ऽविमुक्तं ज्ञान यो वै तदेवं वेद
4. मोक्षमंत्रत्र्येवं (वदेत् and विन्दे variants).

Râmap. 2. विद्वद्भिः प्रकटीकृत

Râmot. 2. तदेव तारकं ब्रह्म
3. य एवं वेद स मुक्त्ये

Mukti. 1. 52. यमेवैष विद्याः श्रु त्तम्
2. 8. साफल्यं विद्धि त्व र्देन
16. मनोबद्धं विदुर्बुधाः
24. मुनयो विदुः
52. बहिष्ठं कुम्भकं विदु

Gîtâ. 2. 6. न चैतद्विद्मः कतर रीयः
17. अविनाशि तु तद्वि
19. य एनं वेत्ति हन्तार
21. वेदाविनाशिनं नित्य
25. तस्मादेवं विदित्वैन
29. श्रुत्वाप्येनं वेद न कश्चित्
3. 15. कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि
25. कुर्याद्विद्वांस्तथासक्त
26. विद्वान्युक्तः समाच
32. विद्धि नष्टानचेतसः
37. विद्ध्येनमिह वैरिण

4. 2. इमं राजर्षयो विदुः
5. तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप
9. एवं यो वेत्ति तत्त्वतः
13. विद्ध्यकर्तारमव्ययम्
32. कर्मजान्विद्धि तान्सर्वान्
34. तद्विद्धि प्रणिपातेन
6. 2. योगं तं विद्धि पाण्डव
21. वेत्ति यत्र न चैवायम्
23. तं विद्यादुःखसंयोगवियोगं
7. 3. कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः
5. अन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्
10. विद्धि पार्थ सनातनम्
12. मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि
26. वेदाहं समतीतानि
— मां तु वेद न कश्चन
29. ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नम्
30. साधियज्ञं च ये विदुः
— ते विदुर्युक्तचेतसः
8. 17. अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः
28. अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
9. 17. वेद्यं पवित्रमोंकारः
10. 2. न मे विदुः सुरगणाः
3. वेत्ति लोकमहेश्वरम्
7. योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः
14. नहि ते भगवन्व्यक्तिं विदुः
15. वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम
17. कथं विद्यामहं योगिन्
24. मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्
27. उच्चैःश्रवसं..विद्धि मां
11. 18. त्वमक्षरं परमं वेदितव्यम्
38. वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम

Gîtâ. 13. 1. एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञम्
2. क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि
19. प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धि
— विद्धि प्रकृतिसम्भवान्
23. य एवं वेत्ति पुरुषम्
26. तद्विद्धि भरतर्षभ
34. भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुः
14. 7. रजो रागात्मकं विद्धि
8. तमस्त्वज्ञानजं विद्धि
11. ज्ञानं यदा तदा विद्यात्
19. गुणेभ्यश्च परं वेत्ति
15. 12. तत्तेजो विद्धि मामकम्
15. वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः
16. 7. जना न विदुरासुराः
17. 6. तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्
12. तं यज्ञं विद्धि राजसम्
18. 1. तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्
2. सन्न्यासं कवयो विदुः
20. तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्
21. वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्
30. बन्धं मोक्षं च या वेत्ति

2. विद् (सत्तायां)

Chhâ. 1. 10. 2. नेतोऽन्ये विद्यन्ते
8. 1. 2. किं तदत्र विद्यते यदन्वेष्टव्यम्
Brih. 4. 3. 23. न हि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यते (similarly in 24–30).
Swet. 3. 8. नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय 6. 15.
6. 8. न तस्य कार्यं करणं च विद्यते
17. नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय
Maitri. 4. 1. अस्माकं गतिरन्या न विद्यते

Gauda. 1. 13. सा च तुर्ये न विद्येत
17. प्रपञ्चो यदि विद्यते
18. ज्ञाते द्वैतं न विद्यते
23. नामात्रे विद्यते गतिः
25. न भयं विद्यते क्वचित्
2. 2. तस्मिन्देशे न विद्यते 4. 34.
3. 10. नोपपत्तिर्हि विद्यते
38. चिन्ता यत्र न विद्यते
48. संभवो ऽस्य न विद्यते 4.71.
4. 23. आदिर्न विद्यते यस्य तस्य ह्यादिर्न विद्यते
58. सा च माया न विद्यते
64. न विद्यन्ते ततः पृथक् 66.
75. द्वयं तत्र न विद्यते
91. विद्यते नहि नानात्वं तेषां क्वचन किञ्चन
Brahmab. 11. पुनर्जन्म न विद्यते Gîtâ. 8. 16.
Mukti. 2. 34. चित्तनाशाभिधानं हि यदा ते विद्यते
35. जीवन्मुक्तस्य विद्यते
Gîtâ. 2. 16. नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः
31. श्रेयो ऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते
40. प्रत्यवायो न विद्यते
3. 17. तस्य कार्यं न विद्यते
4. 38. पवित्रमिह विद्यते
6. 40. विनाशस्तस्य विद्यते
16. 7. न सत्यं तेषु विद्यते

3. विद् (लाभे)

Kaush. 4. 12. स यो हैतमेवमुपास्ते विन्दते द्वितीयात्
Kena. 12. अमृतत्वं हि विन्दते
— आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दते ऽमृतम्

Chhâ. 1. 2. 9. एतमु एवान्ततो ऽवि... क्रामति
2. 24. 5. लोकं मे यजमानाय [illegible] 9.
14. लोकं मे यजमानाय ... न्दत
4. 1. 7. नाविदमिति प्रत्येयाय
8. अविदमिति प्रत्येयाय
6. 13. 1. तद्भावमृदय न विवेद
8. 3. 2. सर्वं तदत्र गत्वा विन्...
— उपर्युपरि सञ्चरन्तो ... विन्देयुः
— एवं ब्रह्मलोकं न विन्...
8. 5. 1. ज्ञाता तं विन्दते
2. सत आत्मनस्त्राणं वि...
Brih. 1. 4. 7. कीर्त्तिं श्लोकं विन्दते ... एवं वेद
16. पशुभ्यस्तृणोदकं विन्...
17. नेच्छंश्चनातो भूयो वि...
— चक्षुषा हि तद्विन्दते
4. 4. 24. विन्दते वसु य एवं वे...
6. 4. 13. यस्य जायामार्त्तवं वि...
20. रेतो दधावहै पुंसे पु... वित्तये
Tait. 2. 7. 1. यदा .. एतस्मिन्नदृश्ये... अभयं प्रतिष्ठां विन्दते
Śwet. 1. 9. त्रयं यदा विन्दते ब्रह्म...
Mahânâr. 16. 4. चित्रं विन्दते वसु
Siras. 3. अगन्म ज्योतिरविदा... वान्
Garbha. 1. मधुराम्लवणतिक्तक... षायरसान् विन्दति...
3. शुभाशुभं च कर्म वि...
4. नत्र कर्म शुभाशुभं वि...
Dhyâna. 5. तत्परं विन्दयेत्सु (... MSS.; one has वि...
Tejo. 4. मुखानि त्रीणि विन्दति...
Nâr. 4. विन्दते प्राजापत्यं रात्र... श्रीस्पत्यम्

a. 4. यद्यग्निं न विन्देदप्सु जुहु-
यात्
4. 38. कालेनात्मनि विन्दति
5. 4. उभयोर्विन्दते फलम्
21. विन्दत्यात्मनि यः सुखम्
11. 24. धृतिं न विन्दामि शमं च
विष्णो
18. 45. सिद्धिं यथा विन्दति
46. सिद्धिं विन्दति मानवः

विदग्ध

3. 9. 1. विदग्धः शाकल्यः 4. 1. 7.

विदथ

ar. 16. 4. बृहद्वदेम विदथे सुवीराः

विदर्भीकौण्डिन्य

2. 6. 3. गालवो विदर्भीकौण्डिन्या-
त् 4. 6. 3.
— विदर्भीकौण्डिन्यो वत्सन-
पातो बाभ्रवात् 4. 6. 3.

विदान

5. 7. 1. विदानाग्निशुत्

विदाहिन्

17. 9. कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरू-
क्षविदाहिनः

विदितचित्त

21. ततो विदितचित्तस्तु

विदितात्मन्

5. 26. वर्त्तते विदितात्मनाम्

विदिश्

p. 71. तस्य दिक्षु विदिक्षु च

विदुष्कृत

h. 1. 4. स एष विसुकृतो विदुष्कृतः

विदृति

3. 12. सैषा विदृतिर्नाम द्वाः

विदृश्

Kaush. 1. 5. सा प्रज्ञा प्रज्ञया हि विप-
श्यति
Katha. 4. 6. गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो
भूतेभिर्व्यपश्यत

विदृ

Ait. 3. 12. स एतमेव सीमानं विदार्य
Gîtâ. 1. 19. हृदयानि व्यदारयत्

विदेह

Brih. 4 2. 4. इमे विदेहा अयमहमस्मीति
4. 4. 23. सो ऽहं भगवते विदेहान् द-
दामि

विदेहमुक्ति

Mukti. 1. 29. विदेहमुक्ताविच्छा चेत्
1. विदेहमुक्तिः सैव कैवल्य-
मुक्तिः
2. केयं विदेहमुक्तिः
— प्रारब्धक्षयाद्विदेहमुक्तिः
— जीवन्मुक्तिविदेहमुक्त्योः

विद्

Brih. 5. 7. 1. विद्यत्येनं पाप्मनो य एवं
वेद विद्युद्ब्रह्मेति

विद्या

Kena. 12. विद्यया विन्दते ऽमृतम्
Chhâ. 1. 1. 10. नाना तु विद्या चाविद्या च
यदेव विद्यया करोति..
तदेव वीर्यवत्तरम्
4. 9. 3. आचार्याद्धैव विद्या विदिता
साधिष्ठं प्रापयति
4. 14. 1. उपकोसलैषा सोम्य ते ऽस्म-
द्विद्या
5. 3. 7. इयं न प्राक् त्वत्तः पुरा वि-
द्या ब्राह्मणान् गच्छति
Brih. 1. 5. 16. विद्यया देवलोकः
— तस्माद्विद्यां प्रशंसन्ति

Bṛih. 2. 4. 10. विद्या उपनिषदः श्लोकाः 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32.
11. सर्वासां विद्यानां हृदयमेकायनं 4. 5. 12.
4. 4. 2. तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते
10. य उ विद्यायां रताः Isâ. 9.
6. 2. 8. इयं विद्येतः पूर्वं न कस्मिंश्चन ब्राह्मण उवास
Isâ. 10. अन्यदेवाहुर्विद्यया
11. विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह..विद्ययामृतमश्नुते Maitri. 7. 9.
Tait. 1. 3. 3. विद्या सन्धिः
3. 6. 1. सैषा भार्गवी वारुणी विद्या
Katha. 2. 4. अविद्या या च विद्येति ज्ञाता Maitri. 7. 9.
6. 18. मृत्युप्रोक्तां..विद्यामेताम्
Śwet. 5. 1. क्षरं त्वविद्या ह्यमृतं तु विद्या
Maitri. 4. 4. विद्यया तपसा चिन्तया चोपलभ्यते ब्रह्म
Muṇḍ. 1. 1. 4. द्वे विद्ये वेदितव्ये Brahmab. 17.
Praśna. 1. 10. श्रद्धया विद्ययात्मानमन्विष्य
Nṛip. 3. 1. यामिन्द्रसेनेत्युत आहूस्तां विद्यां (पाहि)
4. 3. यो वै नृसिंहः..या विद्या तस्मै वै नमो नमः (10).
Nyâsa. 4. विद्याया मनसि संयोगः
Kathaśru. 1. विद्या सा शिखा
2. प्रजां विद्यां छिन्द्यात् (for विद्यां 2 MSS. have विद्यात् and 2 विन्द्यात्)
Sarvop. 1. का अविद्या का विद्येति — सो ऽभिमानो ययाभिनिवर्तते सा विद्या

Râmap. 89. मायाविद्ये ये कलप[...] स्वे (Weber prop[...] अविद्या for विद्या)
Râmott. 5. यो वै श्रीरामः..या [...] (Weber reads अवि[...]
Mukti. 1. 33. तेजोनाशो ध्यानं विद्या[...]
51. विद्या ह वै ब्राह्मणम[...] गाम
Gîtâ. 10. 32. अध्यात्मविद्या विद्यान[...]

विद्यात्मन्

Dhyâna. 13. रेचकेन तु विद्यात्मा

विद्याधर

Nâda. 13. विद्याधरस्तृतीयायाम्

विद्यान्तर

Maitri. 7. 8. न जानाति वेदविद्या[...] तु यत्

विद्याभीप्सित

Maitri. 7. 9. विद्याभीप्सितं नचिके[...] मन्ये

विद्याभीप्सिन्

Katha. 2. 4. विद्याभीप्सिनं नचिके[...] मन्ये

विद्याविद्य

Śwet. 5. 1. विद्याविद्ये निहिते यत्र[...] — विद्याविद्ये ईशते यस्तु ऽन्यः

विद्याविनयसम्पन्न

Gîtâ. 5. 18. विद्याविनयसम्पन्ने ब्रा[...]

1. विद्युत्

Kaush. 2. 12. एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्विद्यु[...] द्योतते ऽथैतन्म्रियते [...] विद्योतते
Kena. 29. एतद्विद्युतो व्यद्युतदा[...]

.2. 3. 1. विद्योतते स्तनयति स प्रतिहारः 2. 15. 1.
. 7. 11. 1. विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा इति
. 1. 1. 1. यद्विजृंभते तद्विद्योतते
ri. 7. 11. उच्चारितमात्र एव सर्वं शरीरं विद्योतयति
ia. 4. 8. तेजश्च विद्योतयितव्यं च

2. विद्युत् *adj.*

iâr. 1. 8. सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि

3. विद्युत्

h. 1. 12. तस्य विद्युतमेव तेजो गच्छति वायुं प्राण एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्विद्युद्विद्योतते
4. 2. विद्युति सत्यम्
5. य एवैष विद्युति पुरुषस्तमेवाहमुपासे
18. विद्युत आत्मा..अहमेतमुपासे
29. एतद्विद्युतो व्यद्युतदा
4. 7. 3. चन्द्रः कला विद्युत्कला
4. 13. 1. प्राण आकाशो द्यौर्विद्युदिति य एष विद्युति पुरुषो दृश्यते
4. 15. 5. चन्द्रमसो विद्युतम् 5. 10. 2.
5. 5. 1. विद्युदर्चिः Brih. 6. 2. 10.
5. 22. 2. विद्युत्तृप्यति विद्युति तृप्यन्त्यां यत्किञ्च विद्युच्च पर्जन्यश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति
6. 4. 4. यद्विद्युतो रोहितं रूपम्
— अपागाद्विद्युतो विद्युत्त्वम्
7. 11. 1. ऊर्ध्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च विद्युद्भिः
7. 12. 1. आकाशो वै..विद्युत्

Chhâ. 8. 1. 3. विद्युन्नक्षत्राणि
8. 12. 2. अभ्रं विद्युत्स्तनयित्नुः
Brih. 2. 1. 4. विद्युति पुरुष एतं..ब्रह्मोपासे
2. 5. 8. विद्युत्सर्वेषां..मध्वस्यै विद्युतः सर्वाणि..मधु
— विद्युति..अमृतमयः पुरुषः
5. 7. 1. विद्युद्ब्रह्मेत्याहुर्विदानाद्विद्युत्..विद्युद्ब्रह्मेति विद्युद्ध्येव ब्रह्म
Tait. 3. 10. 2. बलमिति विद्युति
Katha. 5. 15. नेमा विद्युतो भान्ति Śwet. 6. 14; Muṇḍ. 2. 2. 10.
Śwet. 2. 11. खद्योतविद्युत्स्फटिकशशीनाम्
Maitri. 6. 24. यत्..अग्नौ विद्युति विभाति
35. विद्युदिवार्चिषः परमे व्योमन्

विद्युतोपम

Brahmav. 9. विधूमो विद्युतोपमः

विद्युत्त्व

Chhâ. 6. 4. 4. अपागाद्विद्युतो विद्युत्त्वम्

विद्युन्मन्त्

Śikhâ. 1. चतुर्थी विद्युन्मती सर्ववर्णा

विद्युन्माली

Nâda. 9. विद्युन्माली तथापरा

विद्युल्लेखा

Mahânâr. 11. 12. विद्युल्लेखेव भास्वरा Vâsu. 3.

विद्योत

Nṛisut. 6. ओङ्कारामविद्योतम् (ter).

1. विद्विष्

Tait. 2. 1. 1. मा विद्विषावहै 3. 1. 1; Kaṭha. 6. 19.

2. विद्विष्

Mahânâr. 20. 4. विद्विषो विमृधो जहि

विधरण

Bṛih. 4. 4. 22. एष सेतुर्विधरणः Maitri. 7. 7.

6. 3. 1. या तिरश्ची निपद्यते ऽहं विधरणी इति

Maitri. 7. 6. यः प्राणो विधरणः

विधर्तृ

Mahânâr. 9. 5. विधर्त्तारं हवामहे (Nârâyaṇa gives विभक्तारम् as variant).

विधर्मन्

Mahânâr. 6. 1. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन्

1. विधा

Chhâ. 6. 5. 1. अन्नमशितं त्रेधा विधीयते

2. आपः पीतास्त्रेधा विधीयन्ते

3. तेजो ऽशितं त्रेधा विधीयते

8. 15. 1. धार्मिकान् विदधत्

Bṛih. 1. 2. 3. स एष प्राणस्त्रेधा विहितः

5. 15. 1. भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम Iśâ. 18.

Iśâ. 8. अर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः

Kaṭha. 5. 13. एको बहूनां यो विदधाति कामान् Śwet. 6. 13.

Śwet. 2. 4. वि होत्रा दधे वयुनावित्

4. 13. कस्मै देवाय हविषा विधेम Nṛip. 2. 4.

6. 18. यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्

Mahanâr. 5. 6. अहोरात्राणि विदधत्

Praśna. 2. 13. श्रीश्च प्रज्ञां विधेहि नः

Śiras. 5. अयं पन्था विहितः

Nâda. 1. षष्ठी चैन्द्री विधीयते

Vâsu. 3. ऊर्ध्वपुण्ड्रं विधीयते

Mukti. 1. 41. पूर्वोक्तरेषु विहितः (!

2. 67. कस्य शौचं विधीयते

Gîtâ. 2. 44. समाधौ न विधीयते

7. 21. तामेव विदधाम्यहम्

22. मयैव विहितान्हितान्

17. 23. यज्ञाश्च विहिताः पुरा

2. विधा

Tait. 3. 10. 1. यया कया च विधया ब्र प्राप्नुयात्

विधातृ

Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा वि

Mahânâr. 2. 5. स नो बन्धुर्जनिता स धाता

Kaṭhaśru. 2. त्वं धाता त्वं विधाता — अहं धाताहं विधाता

विधान

Gopî. 5. विधानेन विशेषतः

विधानोक्त

Gîtâ. 17. 24. प्रवर्त्तन्ते विधानोक्ताः

विधाव्

Kaṭha. 4. 14. यथोदकं दुर्गे वृष्टं पर्व विधावति

1. विधि

Maitri. 4. 1. अस्य को विधिर्भूतात्म

6. 9. एवं विधिना खल्वनेना

Muṇḍ. 2. 1. 7. श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च

Prâṇâg. 1. स्वेन विधिनान्नं भूमौ क्षिप्य

Amṛita. 28. अनेन विधिना सम्यङ् त्यमभ्यस्यतः

Kâlâg. 1. अधीहि भगवंस्त्रिपुण्ड्रवि सतत्त्वम् (so Nârâyaṇ all other MSS. °विधि

5. अयं विधिः परिव्राजिनाम्
4. एवं विधिना गोपीचन्दनं यो धारयेत्

2. विधि

12. यष्टिरूपो ऽभवद्विधिः

विधिदृष्ट

17. 11. यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते

विधिवत्

1. 1. 3. अङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः
3. 2. 10. शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम्
1. सद्गुरुं विधिवदुपसंगम्य
— अष्टोत्तरशतोपनिषदं विधिवदधीत्य

विधिहीन

17. 13. विधिहीनमसृष्टान्नम्

विधु

p. 88. अर्कविध्वग्नितेजांसि

विधू

8. 13. 1. अश्व इव रोमाणि विधूय पापम्
1. 1. 1. यद्विधूनुते तत्स्तनयति
3. 1. 3. तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय

विधूम

nav. 9. विधूमो विद्युतोपमः

विधृ

8. 9 सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः
— द्यावापृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः
— संवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्ति
2. 1. कत्येव देवाः प्रजां विधारयन्ते

Praśna. 2. 2. एतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामः 3 (°यामि)
4. 8. प्राणश्च विधारयितव्यं च

विधृति

Chhâ. 8. 4. 1. आत्मा स सेतुर्विधृतिः

विधेयात्मन्

Gîtâ. 2. 64. आत्मवश्यैर्विधेयात्मा

विध्वंस्

Chhâ. 1. 2. 7. तं हासुरा ऋत्वा विदध्वंसुर्यथाश्मानमाखणमृत्वा विध्वंसेत
8. एवं यथाश्मानमाखणमृत्वा विध्वंसत एवं हैव स विध्वंसते

Brih. 1. 3. 7. यथाश्मानमृत्वा लोष्टो विध्वंसेतैवं हैव विध्वंसमानाः

विनद्

Gîtâ. 1. 12. सिंहनादं विनद्योच्चैः

विनय

Gauḍa. 4. 86. विप्राणां विनयो ह्येषः

विनर्दिन्

Chhâ. 2. 22. 1. विनर्दि साम्नो वृणे (one MS. and Sâyaṇa read विनदि)

विनश्

Brih. 1. 3. 7. विष्वञ्चो विनेशुः
Nila. 3. वि ते ऽक्षेममनीनशत्
Sarvop. 2. भूतात्मज्ञानादृते न विनश्यति
3. नामदेशकालवस्तुनिमित्तेषु विनश्यत्सु यन्न विनश्यति
Skanda. 3. स्वप्नवच्च विनश्यति
Gîtâ. 4. 40. संशयात्मा विनश्यति

Gîtâ. 8. 20. यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति
13. 27. विनश्यत्स्वविनश्यन्तम्
18. 58. अथ चेत्..न श्रोष्यसि विनंक्ष्यसि

विनष्टि

Kena. 13. न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः
Bṛih. 4. 4. 14. न चेदवेदिर्महती विनष्टिः

विना

Prâṇâg. 1. विनाप्यग्निहोत्रेण विनापि सांख्ययोगेन
Râmap. 11. नैवं विना देवः प्रसीदति
13. विना यन्त्रेण चेत्पूजा
Mukti. 2. 14. चिराभ्यासयोगेन विना
43. विना युक्तिमनिन्दिताम्
44. अंकुशेन विना
53. अहंकृतिं विना
Gîtâ. 10. 39. न तदस्ति विना यत्स्यान्मया

विनाश

Chhâ. 8. 11. 1. विनाशमेवापीतो भवति 2.
Iśâ. 14. संभूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा
Sarvop. 3. उत्पत्तिविनाशरहितम्
Gîtâ. 2. 17. विनाशमव्ययस्यास्य
4. 8. विनाशाय च दुष्कृताम्
6. 40. विनाशस्तस्य विद्यते

विनिधा

Bṛih. 1. 3. 10. तदासां पाप्मनो विन्यदधात्

विनिधृ

Amṛita. 22. तिर्यगूर्ध्वमधो दृष्टिं विनिधार्य

विनियम्

Gîtâ. 6. 18. यदा विनियतं चि
24. विनियम्य समन्त

विनियुज्

Śwet. 5. 5. गुणांश्च सर्वान् वि
येद्यः
6. 4. भावांश्च सर्वान् वि
येद्यः
Praśna. 3. 4. यथा सम्राडेवाधि
विनियुंक्ते

विनियोग

Râmap. 22. स्ववाञ्छाविनियो

विनिर्गम्

Maitri. 6. 30. सौरं द्वारं भित्त्वो
निर्गतः
7. 11. विनिर्गतं मातृकमे
Nyâsa. 5. यवमात्रे विनिर्गता

विनिर्ज्ञा

Bṛih. 4. 3. 5. यत्र स्वः पाणिर्न
यते

विनिर्दिश्

Brahma. 3. कण्ठे स्वप्नं विनि

विनिर्मुच्

Praśna. 5. 5. यथा पादोदरस्त्व
निर्मुच्यत एवं ह
प्मना विनिर्मुक्तः
Brahmab. 6. पक्षपातविनिर्मुक्त
Tejo. 8. चित्तवृत्तिविनिर्मुक्त
14. एतद्भावविनिर्मुक्त
Sarvop. 3. सर्वोपाधिविनिर्मुक्त
2 MSS.; 3 hav
Atmapra. 1. शोकमोहविनिर्मुक्त
ष्णुम्

1. उपाधिविनिर्मुक्तघटाकाश-वत् 2.
2. 35. भूयोजन्मविनिर्मुक्तम्
2. 51. जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः

विनिवृत्

6. 3. तत्कर्म कृत्वा विनिवृत्य भूयः (so MSS. and Śaṁkarânanda, Nârâyaṇa, and Vijnânabhagavat).
1. 18. विकल्पो विनिवर्त्तेत
2. 18. विकल्पो विनिवर्त्तेत
4. 79. निःसङ्गं विनिवर्त्तते
2. 59. विषया विनिवर्त्तन्ते

विनिश्चय

1. 6. प्रभवः सर्वभावानां सतामिति विनिश्चयः

विनिश्चर्

2. 4. 10. पृथग्धूमा विनिश्चरन्ति 4. 5. 11.

विनिश्चि

1. 8. इति सृष्टौ विनिश्चिताः
13. 4. हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः

विनिष्कम्प

ita. 22. स्थिरस्थायी विनिष्कम्पः

विनुद्

6. 27. तदेकाग्रेणैवमन्तर्हृदयाकाशं विनुदन्ति

विन्यस्

5. ओं हि ओं हि ओं हीत्येतदुपनिषदं विन्यसेत्

विपट्

4. 19. तद्यथा सहस्रधा केशो विपाटितः

विपत्

Chhâ. 1. 8. 6. यस्त्वेतर्हि ब्रूयान्मूर्द्धा ते विपतिष्यतीति मूर्द्धा ते विपतेत् 8.
1. 10. 9. मूर्द्धा ते विपतिष्यति 10,11; 1. 11. 4, 6, 8; Bṛih. 3. 7. 1; 3. 9. 26.
1. 11. 5. मूर्द्धा ते व्यपतिष्यत् 7,9; 5. 12. 2.

Bṛih. 1. 3. 24. अयं त्यस्य राजा मूर्द्धानं विपातयतात्
3. 6. 1. मा ते मूर्द्धा व्यपप्तत्
3. 9. 26. तस्य ह मूर्द्धा विपपात

विपन्यु

Nṛip. 5. 10. तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते Aruṇeya. 5; Vâsu 4; Skanda. 15; Mukti. 2. 78.

विपरिपत्

Bṛih. 4. 3. 19. आकाशे श्येनो वा सुपर्णो वा विपरिपत्य

विपरिलोप

Bṛih. 4. 3. 23. न हि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपः
24. न हि घ्रातुर्घ्रातेर्विपरिलोपः
25. न हि रसयितू रसयतेर्विपरिलोपः
26. न हि वक्तुर्वक्तेर्विपरिलोपः
27. न हि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपः
28. न हि मन्तुर्मतेर्विपरिलोपः
29. न हि स्प्रष्टुः स्पृष्टेर्विपरिलोपः
30. न हि विज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपः

विपरिवृत्

Gitâ. 9. 10. जगद्विपरिवर्त्तते

विपरी

Katha. 2. 4. दूरमेते विपरीते विषूची Maitri. 7. 9.
Maitri. 6. 30. अतस्तद्विपरीतो मुक्तः (bis).
Parama. 2. संशयविपरीतमिथ्याज्ञानानां यो हेतुः
Gîtâ. 1. 31. निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि
18. 15. न्याय्यं वा विपरीतं वा
32. सर्वार्थान्विपरीतांश्च

विपर्यय

Gauda. 4. 46. न पतन्ति विपर्यये

विपर्यास

Gauḍa. 1. 15. विपर्यासे तयोः क्षीणे
4. 27. अनिमित्तो विपर्यासः
41. विपर्यासाद्यथा जाग्रत्
— तथा स्वप्ने विपर्यासात्

विपल्यय्

Bṛih. 4. 3. 2. कर्म कुरुते विपल्येति 3-6.

विपश्चित्

Sait. 2. 1. 1. सो ऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता
Kaṭha. 2. 18. न जायते म्रियते वा विपश्चित्
Śwet. 2. 4. विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः
Gîtâ. 2. 60. पुरुषस्य विपश्चितः

विपाप

Bṛih. 4. 4. 23. विपापो विरजः.. भवति

विपाप्मन्

Mahânâr. 10. 7. दह्रं विपाप्मं वरं वेश्मभूतम् (so MSS.)
20. 15. विपाप्मा भूयासम् 16-21, 24, 25.

विप्र

Śwet. 2. 4. विप्रा विप्रस्य बृह श्चितः
Mahânâr. 9. 1. ऋषिर्विप्राणाम् 17
Gauḍa. 4. 86. विप्राणां विनयो ह
Nṛip. 5. 10. तद्विप्रासो विपन्यः ṇeya 5; Vâsu. 4 da 15; Mukti. 2.
Brahma. 2. स विप्रो वेदपारगः

विप्रकीर्णाब्जकर्णिक

Dhyâna. 15. शताब्जं शतपत्राढ कीर्णाब्जकर्णिकम्

विप्रचित्ति

Bṛih. 2. 6. 3. एकऋषिर्विप्रचित्तेः
— विप्रचित्तिर्व्यष्टेः

विप्रतिपद्

Bṛih. 6. 2. 2. वेत्थ यथेमाः प्रजाः विप्रतिपद्यन्ता३ इ
Gauḍa. 2. 7. स्वप्ने विप्रतिपद्यन्ते
Gîtâ. 2. 53. श्रुतिविप्रतिपन्ना ते

विप्रमोक्ष

Chhâ. 7. 26. 2. सर्वग्रन्थीनां विप्रमो

विप्रस्था

Kaush. 3. 3. यथाग्नेर्ज्वलतो वि विप्रतिष्ठेरन्नेवमेवैत त्मनः प्राणा यथायत प्रतिष्ठन्ते 4. 20.

विबुध्

Gauḍa. 3. 33. अजेनाजं विबुध्यते

विबुध

Krish. 23. वदन्ति विबुधा जन

विबोध

Maitri. 2. 5. ब्रह्मस्येवाबुद्धिपूर्व

विब्रू

Brih. 3. 4. 2. यथा विब्रूयादसौ गौः
4. 5. 4. यदेव भगवान्वेत्थ तदेव मे विब्रूहि

विभज्

Brih. 4. 3. 23. न तु तद्द्वितीयमस्ति ततोऽन्यद्विभक्तं 24–30.

Maitri. 2. 6. पञ्चधात्मानं विभज्य (bis).
6. 26. अपरिमितधा चात्मानं विभज्य

Mahânâr. 11. 10. सोऽग्रभुग्विभजंस्तिष्ठन्नाहारम्

Nrisut. 3. विभक्तांस्त्रीनेव . . संपूज्य

Vila. 24. येनेदं विभजामहे

Gîtâ. 13. 16. विभक्तमिव च स्थितम्
18. 20. अविभक्तं विभक्तेषु

विभञ्ज्

Parama. 2. तयोर्भेद एक एव विभमः

विभा

Katha. 5. 14. किमु भाति विभाति वा
15. तस्य भासा सर्वमिदं विभाति Swet. 6. 14; Mund. 2. 2. 10.

Maitri. 6. 24. यदमुष्मिन्नादित्येऽथ सोमेऽग्नौ विद्युति विभाति

Mund. 2. 2. 7. आनन्दरूपममृतं यद्विभाति
3. 1. 4. प्राणो ह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति
7. सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति

Brahma. 1. दिव्ये ब्रह्मपुरे . . यद्ब्रह्म विभाति
2. चतुष्पादं ब्रह्म विभाति
— तेषां मध्ये यत्परं ब्रह्म विभाति
— एकमेव परं ब्रह्म विभाति

विभाग

Mukti. 1. 10. ऋग्वेदादिविभागेन
17. सालोक्यादिविभागेन

विभावसु

Mahânâr. 7. 4. यज्ञं पाहि विभावसो

Gîtâ. 7. 9. तेजश्चास्मि विभावसौ

विभिद्

Chhâ. 5. 16. 2. वस्तिस्ते व्यभेत्स्यद्यन्मां नागमिष्यः

Râmap. 40. सप्ततालान् विभिद्याशु

विभीषण

Râmap. 47. विभीषणं तत्र स्थाप्य
51. शत्रुघ्नाधो विभीषणम्
54. विभीषणं लक्ष्मणं च

विभु

Katha. 2. 22. महान्तं विभुमात्मानं मत्वा 4. 4.

Maitri. 6. 7. विभुर्विमहे सन्निविष्टः

Mund. 1. 1. 6. नित्यं विभुं सर्वगतम्

Mahânâr. 2. 3. स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु

Kaivalya. 6. विभुं चिदानन्दमरूपम्

Gauda. 1. 1. बहिःप्रज्ञो विभुर्विश्वः
10. देवस्तुर्यो विभुः स्मृतः

Nrisut. 9. विभुरद्वय आत्मानन्दः

Chûl. 5. सर्वकामदुघा विभोः
13. स्तूयते मन्त्रसंयुक्तैरथर्वविहितैर्विभुः
16. पश्यन्ति परिशुद्धं विभुम्

Brahma. 2. सं विभोः प्रजा विज्ञायेरन्

Krish. 27. आभिर्भिन्नो न वै विभुः

Gîtâ. 5. 15. न चैव सुकृतं विभुः
10. 12. आदिदेवमजं विभुम्

विभुत्व

Swet. 3. 21. सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात्

Śwet. 4. 4. अनादिमत्त्वं विभुत्वेन वर्त्तसे
Praśna. 3. 12. विभुत्वं चैव पञ्चधा

विभुप्रमित

Kaush. 1. 3. विभुप्रमितम्
5. स आगच्छति विभुप्रमितम्

1. विभू

Bṛih. 1. 4. 11. तदेकं सन्न व्यभवत्
12. स नैव व्यभवत् 13, 14.
Muṇḍ. 3. 1. 9. विभवत्येष आत्मा
Kshur. 20. सा नाडी तां विभावयेत्

2. विभू

Bṛih. 6. 3. 4. विभूरसि प्रभूरसि
Mahânâr. 2. 24. वसुरण्यो विभूरसि

विभूति

Praśna. 5. 4. सोमलोके विभूतिमनुभूय
Gauḍa. 1. 7. विभूतिं प्रसवं त्वन्ये मन्यन्ते
Gîtâ. 10. 7. एतां विभूतिं योगं च
16. याभिर्विभूतिभिः .. तिष्ठसि
18. विभूतिं च जनार्दन
40. नान्तो ऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनाम्
— विभूतेर्विस्तरो मया

विभूतिमन्त्

Gîtâ. 10. 41. यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वम्

विभूष्

Râmap. 26. धृष्टचष्टकविभूषितः
75. मेधामरविभूषिता

विभ्रम्

Gîtâ. 16. 16. अनेकचित्तविभ्रान्ताः

विभ्राज्

Mahânâr. 10. 5. परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते Kaivalya. 3.

विमत्सर

Gîtâ. 4. 22. द्वन्द्वातीतो विमत्सरः

विमथ्

Bṛih. 3. 9. 25. वयांसि वैनद्विमथीरन्

विमल

Nâda. 20. विमलः केवलः प्रभुः

विमलादि

Râmap. 90. विमलादींश्च शक्तीरभ्यर्चयेत्

विमुक्तमार्ग

Nyâsa. 3. विमुक्तमार्गो भवति
Kathaśru. 4. विमुक्तमार्गो भवेत्

विमुक्ति

Tait. 3. 10. 2. विमुक्तिरिति पायौ
Kaivalya. 9. नान्यः पन्था विमुक्तये
Mukti. 1. 26. मुमुक्षूणां विमुक्तये

विमुख

Mukti. 1. 48. मद्भक्तिविमुखाय

विमुच्

Chhâ. 6. 14. 2. तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्ये
Bṛih. 4. 2. 1. इतो विमुच्यमानः क्व गमिष्यसीति
4. 4. 8. इत ऊर्ध्वा विमुक्ताः
Kaṭha. 5. 1. विमुक्तश्च विमुच्यते
4. देहाद्विमुच्यमानस्य किमत्र परिशिष्यते
Muṇḍ. 2. 2. 5. अन्या वाचो विमुञ्चथ
3. 2. 8. नामरूपाद्विमुक्तः
9. गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तः
Nâr. 3. सर्वेभ्यो अघेभ्यो विमुक्तो भवति .. घोरेभ्यो विमुक्तो भवति

Jâbâla. 1. अविमुक्तं न विमुञ्चेत्
Râmot. 1.
6. यथोक्तकाले विमुक्तो भैक्षमाचरन्नुदरपात्रेण
(one MS. has अविमुक्तः Saṁkara explains both).
Mukti. 2. 73. तदेव चाहं सकलं विमुक्त ओम्
Gîtâ. 4. 32. एवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे
9. 28. विमुक्तो मामुपैष्यसि
14. 20. विमुक्तो ऽमृतमश्नुते
15. 5. द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः
16. 22. एतैर्विमुक्तः कौन्तेय
18. 35. न विमुञ्चति दुर्मेधाः
53. कामं क्रोधं परिग्रहं । विमुच्य

विमुह्

Maitri. 6. 34. इन्द्रियार्थविमूढस्य
Mukti. 2. 47. विमूढाः कर्तुमुद्युक्ताः
59. सङ्गस्त्विति विमुह्यति
Gîtâ. 2. 72. नैनां प्राप्य विमुह्यति
3. 32. सर्वज्ञानविमूढांस्तान्
40. एतैर्विमोहयत्येषः
6. 38. विमूढो ब्रह्मणः पथि
15. 10. विमूढा नानुपश्यन्ति

विमूढभाव

Gîtâ. 11. 49. मा ते व्यथा मा च विमूढभावः

विमूढात्मन्

Gîtâ. 3. 6. इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा
27. अहंकारविमूढात्मा

विमृत्यु

Chhâ. 8. 1. 5. विजरो विमृत्युर्विशोकः
8. 7. 1, 3; Maitri. 6. 25; 7. 7.
Katha. 6. 18. विरजो ऽभूद्विमृत्युः
Maitri. 6. 4. विजरं विमृत्युं त्रिपदम्
25. विजरं विमृत्युं विशोकम्
7. 5.

विमृध्

Mahânâr. 20. 4. विद्विषो विमृधो जहि
5. वृत्रहा विमृधो वशी

विमृश्

Chhâ. 1. 1. 4. इति विमृष्टं भवति
Gîtâ. 18. 63. विमृश्यैतदशेषेण

विमोक्ष

Brih. 4. 3. 14. अत ऊर्ध्वं विमोक्षाय ब्रूहि
15, 16, 33.
Gîtâ. 16. 5. दैवी सम्पद्विमोक्षाय

विमोक्षण

Śiras. 5. पशुपाशविमोक्षणम्
— पशुपाशविमोक्षणाय
Yogat. 14. ऊर्ध्ववायुविमोक्षणे
Gîtâ. 5. 23. प्राक् शरीरं विमोक्षणात्

विम्रु

Chhâ. 5. 17. 2. पादौ ते व्यम्लास्येतां यन्मां नागमिष्यः

वियुज्

Nâda. 12. यदि प्राणैर्वियुज्यते 14.
Gîtâ. 2. 64. रागद्वेषवियुक्तैस्तु

वियोग

Sarvop. 2. प्राप्तशरीरसंबन्धवियोगम्
(4 MSS. have सन्धियोगम्)
Gîtâ. 6. 23. दुःखसंयोगवियोगम्

विरज, विरजस्

Brih. 4. 4. 23. विपापो विरजः . . भवति
Katha. 6. 18. ब्रह्मप्राप्तो विरजो ऽभूत्

Muṇḍ 1. 2. 11. सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
2. 2. 9. विरजं ब्रह्म निष्कलम्
Mahânâr. 5. 3. सो ऽहमपापो विरजः
20. 15. ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासम् 16-20, 21, 24, 25.
Praśna. 1. 16. तेषामसौ विरजो ब्रह्मलोकः
Kaivalya. 5. हृत्पुण्डरीकं विरजं विशुद्धम्
Kshur. 17. विरजा ब्रह्मरूपिणी
Brahma. 1. विरजं निष्कलं..ब्रह्म

विरञ्ज्

Jâbâla. 4. यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्
Mukti. 2. 66. न विरज्येत यः पुमान्

विरम्

Nṛip. 2. 4. सर्वाणि भूतानि विरमति विरामयति

विरम

Mukti. 1. 3. समाधिविरमे

विराग

Mukti. 2. 66. विरागकारणं तस्य

1. विराज्

Chhâ. 2. 16. 2. य एवमेतद्वैराजमृतुषु प्रोतं वेद विराजति प्रजया

2. विराज्

Chhâ. 1. 13. 2. वाग्विराट्
4. 3. 8. सैषा विराडन्नादी
Bṛih. 4. 2. 3. एषास्य पत्नी विराट्
Mahânâr. 14. 1. विराडापः
Nṛip. 1. 4. सम्राट् स्वराड् विराट्
2. 1. विराडेकऋषिः Nṛisut. 3.
4. 3. यो वै नृसिंहः..यश्च विराट् तस्मै वै नमो नमः (31).
Nṛisut. 9. विराजं देवताः कोश सृष्ट्वा
Chûl. 13. प्रजापतिर्विराट् चैव
Śikhâ. 1. विराडेकऋषिरङ्गिराः (so 2 MSS.)
Râmot. 5. यो ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्योमोति विराट् (36).

विराज्य

Maitri. 1. 2. विराज्ये पुत्रं निधापयित्व

विराट

Gîtâ. 1. 4. युयुधानो विराटश्च
17. धृष्टद्युम्नो विराटश्च

विराध्

Chhâ. 3. 11. 2. मा विराधिषि ब्रह्मणा
Prâṇâg. 1. यदन्नमग्नि बहुधा विराद्ध (so one MS.; Nârâyaṇ says विराद्धं सिद्धिविरो विराद्धमेवाह. Four MSS read विराजम्)

विरिञ्चि

Skanda. 14. विरिञ्चिनारायणशंकरात्मक

विरिष्ट

Chhâ. 4. 17. 4. यज्ञस्य विरिष्टं सन्
5, 6, 8.

विरुध्

Maitri. 6. 34. ब्रह्मणः पदव्योमानु विरुद्धम्
Gauḍa. 3. 17. परस्परं विरुध्यन्ते तै विरुध्यते
18. तेनायं न विरुध्यते

विरूप

Chhâ. 2. 15. 2. विरूपांश्च सुरूपांश्च वहन्धे

विरूपाक्ष

ânâr. 13. 1. ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षम् Nrip. 1. 6.
23. विरूपाक्षेण बभ्रुणा

विरोचन

â. 8. 7. 2. विरोचनो ऽसुराणाम्
8. 8. 4. विरोचनो ऽसुरान् जगाम
8. 9. 2. प्राव्राजीः सार्द्धं विरोचनेन

विरोदस्

hânâr. 5. 8. यत् पृथिव्यां रजः स्वमान्तरिक्षे विरोदसी

विलक्षण

dvaiya. 18. तेभ्यो विलक्षणः साक्षी
hât. 2. सर्वस्मादस्मादन्यो विलक्षणः
opt. 4. त्वंपदार्थादौपाधिकात्तत्पदार्थादौपाधिकाद्विलक्षणः

विलग्

i. 11. 27. केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु

विलय

kti. 2. 18. वासनाविलये

विलिख्

map. 62. विलिखेत्स्वरान्
63. विलिखेद्भूमिसंख्यया
65. विलिखेद्द्वादशाक्षरम्
66. विलिखेत्केसरे ह्रियम्
69. विलिखेन्मन्त्रराजार्णान्

विली

6. 13. 1. यथा विलीनमेवाङ्ग
ri. 6. 24. मानसे च विलीने तु
35. सैन्धव इव व्लीयन्ते
alya. 110 13. सुषुमिकाले सकले विलीने

Hamsa. 2. तस्मिन्मनो विलीयते
Mukti. 2. 50. विलाप्य विकृतिं कृत्स्नाम्

विलीनपाश

Nâda. 20. ततो विलीनपाशो ऽसौ

विलुप्

Chhâ. 3. 16. 2. माहं..यज्ञो विलोप्सीय 4, 6.

विलोहित

Kshur. 8. कृष्णास्ताम्रविलोहिताः
Nîla. 2. नीलग्रीवं विलोहितम् 10.
9. उत बभ्रुर्विलोहितः

विवक्षा

Gauda. 1. 19. विश्वस्यात्वविवक्षायाम्

विवच्

Chhâ. 4. 4. 5. नैतदब्राह्मणो विवक्तुमर्हति
5. 3. 5. नैकं चनाशकं विवक्तुमिति
Brih. 3. 8. 5. नमस्ते ऽस्तु..यो म एतं व्यवोचः
3. 9. 26. तं त्वेन्मे न विवक्ष्यसि

विवद्

Kansh. 2. 14. देवता अहंश्रेयसे विवदमानाः
Chhâ. 5. 1. 6. प्राणा अहंश्रेयसि व्यूदिरे
Brih. 5. 14. 4. यदिदानीं द्वौ विवदमानावेयाताम्
6. 1. 7. ते हेमे प्राणा अहंश्रेयसे विवदमानाः
Gauda. 4. 3. विवदन्तः परस्परम्
4. विवदन्तो ऽद्वया हि
5. विवदामो न तैः सार्द्धम्

विवर

Maitri. 7. 1. विवरेणेक्षन्ति 2—6.

विवर्णवासस्

Jâbâla. 5. अथ परिव्राड्विवर्णवासाः

विवर्द्धन

Gopî. 5. बलारोग्यविवर्द्धनम्
Gîtâ. 17. 8. आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनाः

विवशीकृत

Mukti. 2. 59. वासनाविवशीकृतः

विवस्

Chhâ. 4. 4. 1. ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्यामि

विवस्वत्

Gîtâ. 4. 1. इमं विवस्वते योगम्
— विवस्वान्मनवे प्राह
4. परं जन्म विवस्वतः

विविक्तदेश

Kaivalya. 4. विविक्तदेशे च सुखासनस्थः
Gîtâ. 13. 10 विविक्तदेशसेवित्वम्

विविक्तरूप

Kaivalya. 21. अहं विजानामि विविक्तरूपः

विविक्तसेविन्

Gîtâ. 18. 52. विविक्तसेवी लघ्वाशी

विविच्

Katha. 2. 2. तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः

विविध

Śwet. 6. 8. परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
Muṇḍ. 2. 1. 1. तथाक्षराद्विविधाः सोम्य भावाः
Garbha. 4. आहारा विविधा भुक्ताः
— मातरो विविधा दृष्टाः
Râmap. 91. मुख्योपहारैर्विविधैश्च पूज्य
Gîtâ. 13. 4. छन्दोभिर्विविधैः पृथक्
17. 25. दानक्रियाश्च विविधाः

विविधाकार

Brahmab. 14. घटवद्विविधाकारम्

विविश्

Maitri. 2. 6. एतासां प्रतिबोधना- न्तरं विविशामि

विवृ

Katha. 2. 13. विवृतं सद्म नचि- मन्ये
23. तस्यैष आत्मा विवृणु- स्वाम् Muṇḍ. 3. 2
Muṇḍ. 2. 1. 4. वाग्विवृताश्च वेदाः
Mahânâr. 2. 6. ऋतस्य तन्तुं विततं वि-
Gauḍa. 4. 82. दुःखं विव्रियते सदा

विवृज्

Śwet. 2. 10. शर्करावह्निवालुकावि- र्जिते
3. 17. सर्वेन्द्रियविवर्जितम्
Gîtâ. 13. 14.
Gauḍa. 3. 10. आत्ममायाविवर्जिताः
Amṛita. 27. नित्यं योगी विवर्जये-
Vâsu. 3. मध्याद्यन्तविवर्जितम्
Kshur. 20. पुनर्जन्मविवर्जिताः
Gîtâ. 7. 10. कामरागविवर्जितम्
12. 18. संगविवर्जितः

विवृत्

Chhâ. 2. 22. 5. ऊष्माणो..विवृता
-ठ्याः
Tait. 1. 6. 1. यत्रासौ केशान्तो वि-
Śwet. 6. 2. तेनेशितं कर्म विवर्तते

विवृध्

Maitri. 6. 15. संवत्सरेणेह वै जाता
र्धन्ते
Mahânâr. 4. 2. शतमायुर्विवर्द्धति (
MSS.; 2 others re-
र्द्धिनी)

14. 11. विवृद्धं सत्त्वमित्युत
12. रजसि..विवृद्धे भरतर्षभ
13. तमसि..विवृद्धे कुरुनन्दन

विवेक

â. 6. 9. 2. ते यथा तत्र न विवेकं लभन्ते

da. 4. 60. विवेकस्तत्र नोच्यते

विवेकिन्

ti. 2. 15. पौरुषेण विवेकिना

1. विश्

. 5. 12. 1. अन्नं वै वि अन्ने हीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि — सर्वाणि ह वा अस्मिन् भूतानि विशन्ति..य एवं वेद

i. 6. 9. विशन्तु त्वामाहुतयश्च सर्वाः
28. एवं ब्रह्मशालां विशेत्
7. 1. पुनर्विशन्त्यन्तर् 2–6

13. 2. 4. तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम

nâr. 1. 4. विवेश भूतानि चराचराणि
10. 5. यद्यतयो विशन्ति Kaivalya. 3.

i. 2. 76. विशल्यदेहमुक्तत्वम्
8. 11. विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः
9. 21. क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति
11. 21. अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति
27. वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति
28. विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति
29. विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः

Gitâ. 11. 29. तथैव नाशाय विशन्ति लोकाः
18. 55. विशते तदनन्तरम्

2. विश्

Kaush. 2. 9. तेन मुखेन विशो ऽत्सि

Chhâ. 8. 14. 1. यशो राज्ञां यशो विशाम्

Brih. 1. 4. 12. स विशमसृजत
15. तदेतद्ब्रह्म क्षत्रं विट् शूद्रः

Gitâ. 18. 41. ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्

विशद

Kaivalya. 5. विचिन्त्य मध्ये विशदं विशोकम्

विशल्य

Nila. 15. विशल्यो बाणवाँ उत

विशांपति

Mahânâr. 20. 5. स्वस्तिदा विशांपतिः

विशारद

Gauḍa. 4. 93. अजं साम्यं विशारदम् 100.

विशाल

Gitâ. 9. 21. ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालम्

विशिष्

Gitâ. 1. 7. अस्माकं तु विशिष्टा ये
3. 7. असक्तः स विशिष्यते
5. 2. कर्मयोगो विशिष्यते
6. 9. समबुद्धिर्विशिष्यते
7. 17. एकभक्तिर्विशिष्यते
12. 12. ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते

विशुद्धसत्त्व

Muṇḍ. 3. 1. 8. ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वः
10. विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान्

विशुद्धात्मन्

Gitâ. 5. 7. योगयुक्तो विशुद्धात्मा

विशुद्धि

Hamsa. 1. विशुद्धौ प्राणान्निरुध्य
Gîtâ. 6. 12. आत्मविशुद्धये

विशुध्

Swet. 2. 15. सर्वतत्त्वैर्विशुद्धम्
Mund. 3. 1. 9. यस्मिन्विशुद्धे विभवत्येष आत्मा
Kaivalya. 5. हृत्पुण्डरीकं विरजं विशुद्धम्
Gîtâ. 18. 51. बुद्ध्या विशुद्धया युक्तः

विशॄ

Chhâ. 5. 15. 2. सन्देहस्ते व्यशीर्यद्यन्मां नागमिष्यः
Kathasru. 1. विशीर्णं वस्त्रं वल्कलं वा

विशेष

Maitri. 6. 24. अविशेषविज्ञानं विशेषमुपगच्छति
Gauda. 2. 14. विशेषो नान्यहेतुकः
15. विशेषस्त्विन्द्रियान्तरे
Sarvop. 1. विषयविशेषविज्ञानाभावात्
2. तद्गतविशेषाविशेषज्ञः

विशेषतस्

Gopî. 5. विधानेन विशेषतः

विशेषान्त

Maitri. 6. 10. महदाद्यं विशेषान्तम्

विशोक

Chhâ. 2. 10. 5. तन्नाकं तद्विशोकम्
8. 1. 5. विजरो विमृत्युर्विशोकः 8. 7. 1, 3; Maitri. 6. 25; 7. 7.
Maitri. 6. 25. विजरं विमृत्युं विशोकम् 7. 5.
Mahânâr. 10. 7. तत्रापि दहं गगनं विशोकः
Kaivalya. 5. विचिन्त्य मध्ये विशोकम्

विश्रु

Tait. 1. 4. 1. कर्णाभ्यां भूरि विश्रु
Maitri. 2. 1. मरुन्नामेति विश्रुतो

1. विश्व

Ait. 4. 5. अन्वेषामवेदमहं देव जनिमानि विश्वा
Chhâ. 3. 15. 1. तस्मिन्विश्वमिदं श्रित
Brih. 5. 15. 1. विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् Isâ. 18.
6. 2. 2. ताभ्यामिदं विश्वमेजत
6. 3. 3. विश्वाय स्वाहा
6. 4. 27. येन विश्वा पुष्यसि वा
Tait. 3. 10. 6. अहं विश्वं भुवनमभ्यभवाम् Nrip. 2. 4.
Swet. 1. 8. व्यक्ताव्यक्तं भरते मीशः
10. विश्वमायानिवृत्तिः
2. 5. शृण्वन्तु विश्वे अमृत पुत्राः
17. यो विश्वं भुवनमाविवे
3. 2. संसृज्य विश्वा भुवना Siras. 5.
7. विश्वस्यैकं परिवेष्टिता 4. 14, 16; 5. 13.
4. 1. वि चैति चान्ते विश्व
4. यतो जातानि भुवन विश्वा
8. यस्मिन्देवा अधि विश्वे सेदुः Mahânâr. 1. 2;
4. 2; 5. 2.
9. अस्मान्मायी सृजते मेतत्
14. विश्वस्य स्रष्टारमनेक 5. 13.

ret. 5. 2. विश्वानि रूपाणि योनीश्च सर्वाः
5. सर्वमेतद्विश्वमधितिष्ठत्येकः
tri. 5. 1. त्वं विश्वं त्वमथाच्युतः
— विश्वभुग्विश्वमायुस्त्वं विश्वक्रीडारतिप्रभुः
2. प्रजापतिर्विश्वेत्यस्य प्रागुक्ता एतास्तनवः
6. 9. प्राणो ऽग्निर्विश्वो ऽसि
— स प्रीतः प्रीणातु विश्वम्
— विश्वो ऽसि . . विश्वं त्वया धार्यते जायमानम् Prâṇâg. 2.
32. अस्यैवैतानि विश्वा भूतानि
und. 1. 1. 1. विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता
7. तथाक्षरात् सम्भवतीह विश्वम्
2. 1. 3. पृथिवी विश्वस्य धारिणी Kaivalya. 15 ; Nâr. 1.
4. हृदयं विश्वम्
10. पुरुष एवेदं विश्वम्
2. 2. 11. ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम्
3. 2. 1. यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम्
hânâr. 1. 5. विश्वं पुराणं तमसः परस्तात्
6. विश्वं बिभर्त्ति भुवनस्य नाभिः
2. 3. विश्वा भुवनानि विद्वान्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्
5. धामानि वेद भुवनानि विश्वा
5. 6. विश्वस्य मिषतो वशी
6. 2. स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा
4. अग्ने त्वं पारया . . अति दुर्गाणि विश्वा
5. विश्वानि . . दुरिता
8. 5. अतश्च विश्वा ओषधयः
9. 4. य आविवेश भुवनानि विश्वा Nrip. 2. 4.

Mahânâr. 9. 7. विश्वानि . . दुरितानि परा सुव 17. 7.
11. 1. विश्वं नारायणं देवम्
2. विश्वं नारायणं हरिम् Mahâ. 3.
— विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति Mahâ. 3 (most MSS. read पुरुषम्)
3. पतिं विश्वस्यात्मेश्वरम्
8. विश्वस्यायतनं महत् Kaivalya. 16 ; Brahma. 3 ; Dhyâna. 23.
12. 3. अमृतो जीवो विश्वः
13. 2. विश्वं भूतं भव्यं भुवनम्
7. पृथ्वी बहुला विश्वा
14. 1. विश्वा भूतान्यापः
15. 1. विश्वमसि विश्वायुः
6. विश्वमूर्तिषु
20. 7. विश्वमाभासि रोचनम्
22. 1. धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा
23. 1. ब्रह्मा विश्वः कतमः
Praśna. 2. 11. अत्ता विश्वस्य सत्पतिः
Kaivalya. 20. विश्वमहं विचित्रम्
Gauḍa. 1. 1. बहिःप्रज्ञो विभुर्विश्वः
2. दक्षिणाक्षिमुखे विश्वः
3. विश्वो हि स्थूलभुङ् नित्यम्
4. स्थूलं तर्पयते विश्वम्
11. इष्येते विश्वतैजसौ
19. विश्वस्यात्वविवक्षायाम्
23. अकारो नयते विश्वम्
2. 31. तथा विश्वमिदं दृष्टम्
Nṛip. 1. 4. इदं सर्वं विश्वानि भूतानि
7. विश्वसृज एतेन वै विश्वमिदमसृजन्त यद्विश्वमसृजन्त तस्माद्विश्वसृजः
— विश्वमेतानुप्रजायते
2. 4. क्षियन्ति भुवनानि विश्वा

Nrip. 2. 4. विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः
Nrisut. 1. विश्वो वैश्वानरः 2.
Śiras. 2. यो वै रुद्रः..यच्च विश्वम्
3. सर्वमसर्वं विश्वमविश्वम्
5. विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यम्
6. इमा विश्वा भुवनानि चाक्रूपे (bis).
Prâṇâg. 2. विश्वं तु त्वाहुतयः सर्वाः
Nîla. 10. उत त्वा विश्वा भूतानि
Râmap. 24. स त्वनुष्णगुविश्वश्चेत्
76. अमोघा च विश्वमपि
Gîtâ. 11. 18. त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् 38.
19. स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्
38. त्वया ततं विश्वमनन्तरूप
47. तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यम्

2. विश्व

Gîtâ. 11. 22. विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च

विश्वकर्मकृत्

Maitri. 5. 1. विश्वात्मा विश्वकर्मकृत्

विश्वकर्मन्

Śwet. 4. 17. एष देवो विश्वकर्मा महात्मा

विश्वकृत्

Bṛih. 4. 4. 13. स विश्वकृत्स हि सर्वस्य कर्त्ता
Śwet. 6. 16. स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिः

विश्वचक्षुस्

Maitri. 6. 6. प्रजापतिर्विश्वात्मा विश्वचक्षुरिवोपासितः

विश्वतश्चक्षुस्

Śwet. 3. 3. विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो Mahânâr. 2. 2.

विश्वतस्

Chhâ. 3. 13. 7. विश्वतः पृष्ठेषु
Śwet. 3. 14. स भूमिं विश्वतो वृत्वा
Mahânâr. 11. 2. विश्वतः परमं नित्यम् M 3.
20. 2. अभयं कृणुहि विश्वतो
Nîla. 16. परि..अस्मान् वृण विश्वतः
17. तया त्वं विश्वतः..परि

विश्वतस्पाद्

Śwet. 3. 3. विश्वतोबाहुरुत विश्वत Mahânâr. 2. 2.

विश्वतोबाहु

Śwet. 3. 3. विश्वतोबाहुरुत विश्वत Mahânâr. 2. 2.

विश्वतोमुख

Śwet. 3. 3. विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो Mahânâr. 2. 2.
4. 3. त्वं जातो भवसि वि मुखः
Mahânâr. 11. 10. विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः Mahâ. 3 (॰मुखं)
Prâṇâg. 1. गुहायां विश्वतोमुखः
Gîtâ. 9. 15. बहुधा विश्वतोमुखम्
10. 33. धाताहं विश्वतोमुखः
11. 11. अनन्तं विश्वतोमुखम्

विश्वदर्शत

Mahânâr. 20. 7. तरणिर्विश्वदर्शतः

विश्वधामन्

Śwet. 6. 6. ज्ञात्वात्मस्थममृतं धाम

विश्वंधर

...t. 5. विश्वंधरं महाविष्णुम् (विश्वाधारम् Weber).

विश्वभावन

...ot. 3. सौमित्रिर्विश्वभावनः

विश्वभुज्

...ri. 5. 1. विश्वभुग्विश्वमायुस्त्वम्
6. 9. स प्रीतः प्रीणातु विश्वं विश्वभुक्

...ânâr. 16. 3. प्रभुः प्रीणाति विश्वभुक्

विश्वभृत्

...tri. 6. 6. एषा वै प्रजापतेर्विश्वभृत्तनुः
13. विश्वभृद्वै नामैषा तनूर्भगवतो विष्णोः

विश्वमूर्त्ति

...i. 11. 46. सहस्रबाहो..विश्वमूर्त्ते

विश्वंभर

...ush. 4. 20. विश्वंभरो वा विश्वंभरकुलाये Bṛih. 1. 4. 7.

विश्वयोनि

5. 5. यश्च स्वभावं पचति विश्वयोनिः

विश्वरुची

...11. 2. 4. विश्वरुची च देवी (so MSS; printed text has विश्वरूपी)

1. विश्वरूप

...1. 5. 13. 1. एष वै विश्वरूप आत्मा
— तस्मात्तव बहु विश्वरूपं कुले दृश्यते
5. 18. 2. चक्षुर्विश्वरूपः
...1. 2. 2. 3. यशो निहितं विश्वरूपम् (text).

Tait. 1. 4. 1. यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः Mahânâr. 7. 5.

Śwet. 1. 4. विश्वरूपैकपाशम्
9. अनन्तश्चात्मा विश्वरूपः
5. 7. विश्वरूपस्त्रिगुणस्त्रिवर्त्मा
6. 5. तं विश्वरूपं भवभूतमीड्यम्

Maitri. 6. 8. विश्वरूपं हरिणं जातवेदसम् Praśna. 1. 8.
7. 7. इद्धो ऽग्निरिव विश्वरूपः
— तस्मै ते विश्वरूपाय..नमः

Mahânâr. 12. 1. विश्वरूपाय वै नमः
16. 7. मेधा सुरभिर्विश्वरूपा

Praśna. 1. 7. स एष वैश्वानरो विश्वरूपः

Siras. 3. विश्वरूपो ऽसि ब्रह्मैकस्त्वम्

Prâṇâg. 2. विश्वोऽसि वैश्वानरो विश्वरूपः

Gîtâ. 11. 16. विश्वेश्वर विश्वरूप

2. विश्वरूप

Bṛih. 2. 6. 3. आभूतिस्त्वाष्ट्रो विश्वरूपात्त्वाष्ट्रात् 4. 6. 3.
— विश्वरूपस्त्वाष्ट्रो ऽश्विभ्याम् 4. 6. 3.

विश्वरूपिन्

Mahâ. 3. समुद्रेतं विश्वरूपिणम्

विश्वलोक

Kaivalya. 13. स्वमायया कल्पितविश्वलोके..विलीने

विश्वविद्

Śwet. 6. 16. स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिः

विश्ववेदस्

Mahânâr. 7. 4. पाहि नो विश्ववेदसे

Nṛip. 1. 1. स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
Mahânâr. 1...

विश्वव्यापिन्

Râmap. 93. विश्वव्यापी राघवः

विश्वशंभू

Mahânâr. 11. 1. विश्वाख्यं विश्वशंभुवम्
7. समुद्रेतं विश्वशंभुवम्
Mahâ. 3. सहस्राक्षं विश्वशंभुवम् (2 MSS. have °भ्वं)

विश्वसृज्

Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा . . विश्वसृक् 7. 7.
Mahânâr. 24. 2. ब्रह्मन् त्वमसि विश्वसृक्
Nṛip. 1. 7. विश्वसृज एतेन वै विश्वमिदमसृजन्त यद्विश्वमसृजन्त तस्माद्विश्वसृजः

विश्वाख्य

Maitri. 2. 5. प्रजापतिर्विश्वाख्यः
Mahânâr. 11. 1. विश्वाख्यं विश्वशम्भुवम्

विश्वाच्

Mahânâr. 16. 4. विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना

विश्वातीत

Tejo. 1. विश्वातीतं हृदि स्थितम्

विश्वात्मन्

Maitri. 5. 1. विश्वात्मा विश्वकर्मकृत्
6. 6. प्रजापतिर्विश्वात्मा विश्वचक्षुरिव
Mahânâr. 11. 3. विश्वात्मानं परायणम्

विश्वाधिक

Śwet. 3. 4. विश्वाधिको रुद्रो महर्षिः 4. 12; Mahânâr. 10. 3.

विश्वाधिप

Śwet. 4. 15. विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः

विश्वामित्र

Bṛih. 2. 2. 4. इमावेव विश्वामित्र... ग्नी अयमेव विश्वा...

विश्वामृत

Maitri. 6. 9. प्रजास्तत्र यत्र विश्व...ऽसि
Prâṇâg. 2. विश्वामृतो ऽसि

विश्वायुस्

Mahânâr. 15. 1. विश्वमसि विश्वायु...

विश्वार्चिस्

Mahânâr. 11. 10. त्रिश्वार्चिर्विश्वतोमुखः Mahâ. 3 (has °खम्

विश्वावसु

Bṛih. 6. 4. 19. उत्तिष्ठातो विश्वावसो

विश्वेदेवास्

Chhâ. 1. 13. 2. विश्वेदेवा औहोइकारः
2. 24. 1. विश्वेषां च देवानां तृ... सवनम्
14. नम आदित्येभ्यश्च ...भ्यश्च देवेभ्यः
16. तस्मा आदित्याश्च ... देवास्तृतीयसवनं संप्र...न्ति
Bṛih. 1. 4. 12. विश्वेदेवा मरुत इति
3. 1. 9. अनन्ता विश्वेदेवाः ... 12.
Katha. 5. 3. विश्वेदेवा उपासते
Maitri. 7. 4. विश्वेदेवाः . . उत्तरन्ति
Nṛip. 2. 4. विश्वे उपासते प्रशिषं देवाः
5. 2. विश्वेदेवा उत्तरतः

विश्वेश्वर

itri. 5. 1. विश्वेश्वर नमस्तुभ्यम्
bâ. 3. ऋषिं विश्वेश्वरं देवम् (4 MSS. have कविं after ऋषिं and omit देवं)
tâ. 11. 16. विश्वेश्वर विश्वरूप

विश्वैश्वर्य

ret. 1. 11. देहभेदे विश्वैश्वर्यम्

विष

ip. 5. 5. स विषं स्तंभयति
ruda. 2. हतं विषं नष्टं विषं प्रनष्टं विषम्
map. 78. सूक्ष्मयुतो विषः
â. 18. 37. यत्तदग्रे विषमिव
38. परिणामे विषमिव

विषद्

â. 1. 28. विषीदन्निदमब्रवीत्
2. 1. विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच
10. विषीदन्तमिदं वचः

विषदन्त

vide नवकुल

विषदूषिन्

uda. 2. विषहारिणीं विषदूषिणीम्

विषनाशिन्

uda. 2. विषसर्पिणीं विषनाशिनीम् (most MSS. omit this).

विषम

2. 2. विषमे समुपस्थितम्

विषमत्व

ri. 5. 2. तत्परेणेरितं विषमत्वं प्रयाति
— तद्रजः खल्वीरितं विषमत्वं प्रयाति

विषय

a. 3. 4. विषयांस्तेषु गोचरान्
111

Maitri. 2. 6. पञ्चभी रश्मिभिर्विषयानत्ति 6. 31.
Gauda. 2. 21. विषया इति तद्विदः
4. 80. विषयः स हि बुद्धानाम्
Garbha. 2. द्रव्यादिविषया जायन्ते
Chûl. 6. पिबन्ते नामविषयम्
Amrita. 5. शब्दादिविषयाः पञ्च
Sarvop. 1. शब्दादीन् विषयान्
— विषयविशेषविज्ञानाभावात्
2. शब्दादिविषयान्
Mukti. 2. 74. न मे ऽस्ति कश्चिद्विषयः स्वभावतः
Gîtâ. 2. 59. विषया विनिवर्त्तन्ते
62. ध्यायतो विषयान्पुंसः
64. विषयानिन्द्रियैश्चरन्
4. 26. शब्दादीन्विषयान्
15. 9. विषयानुपसेवते
18. 38. विषयेन्द्रियसंयोगात्
51. शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा

विषयगोचर

Maitri. 6. 34. समासक्तं यथा चित्तं जन्तोर्विषयगोचरे

विषयदष्ट

Maitri. 4. 2. महोरगदष्ट इव विषयदष्टम्

विषयप्रवाल

Gîtâ. 15. 2. गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः

विषयासक्त

Brahmab. 2. बन्धाय विषयासक्तम्

विषयासङ्ग

Brahmab. 4. निरस्तविषयासङ्गम्

विषयासङ्गिन्

Maitri. 6. 34. बन्धाय विषयासङ्गि

विषसर्पिन्

Gâruda. 2. विषसर्पिणीं विषनाशिनीम्

विषहारिन्

Gâruḍa. 2. विषहारिणीं विषदूषिणीम्

विषाणवत्

Gauḍa. 4. 16. असंबन्धो विषाणवत्

विषाद

Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
3. 5. विषादो निद्रा . . इति तामसानि

Gîtâ. 18. 35. विषादं मदमेव च

विषादिन्

Gîtâ. 18. 28. विषादी दीर्घसूत्री च

विषासहि

Kaush. 4. 2. अग्नौ विषासहिः
9. विषासहिरिति वा अहमेतमुपासे Brih. 2. 1. 7.
— एतमेवमुपास्ते विषासहिर्ह वा अन्येषु भवति

Brih. 2. 1. 7. एतमेवमुपास्ते विषासहिर्ह भवति विषासहिर्हास्य प्रजा भवति

विष्टम्भ्

Gîtâ. 10. 42. विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नम्

विष्णु

Brih. 6. 4. 21. विष्णुर्योनिं कल्पयतु

Tait. 1. 1. 1. शं नो विष्णुरुरुक्रमः 1. 12. 1.

Katha. 3. 9. तद्विष्णोः परमं पदम् Maitri. 6. 26.

Maitri. 4. 5. ब्रह्मा रुद्रो विष्णुः
5. 1. त्वं ब्रह्मा त्वं च वै विष्णुः
2. अस्य सात्त्विको ऽंशः . . विष्णुः
6. 5. ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्यधिपतिवत्येषा

Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा . . वि 7. 7.
13. विश्वभृद्वै नामैषा तनूर्भ वतो विष्णोः
16. यज्ञो विष्णुः प्रजापतिः
35. सत्यधर्माय विष्णवे

Mahânâr 3. 16. तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्
15. 6. त्वं यज्ञस्त्वं विष्णुः
20. 14. त्रीणि पदा विचक्रमे वि

Kaivalya. 7. स एव विष्णुः स प्राणः

Nṛip. 2. 1. विष्णुरुद्राः Nrisut. 3.
4. प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्ये
4. 3. यो वै नृसिंहः . . यश्च वि ष्णुस्तस्मै वै नमो नमः (
5. 2. ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा नाभ्य
10. तद्विष्णोः परमं पदं स पश्यन्ति सूरयः Arune 5; Vâsu. 4; Skanda. Mukti. 2. 77.
— विष्णोर्यत्परमं पदम् Aruṇeya. 5; Vâsu Skanda. 15; Mukti. 78.

Nṛisut. 3. उकारं विष्णुं हृदये
— विष्णुमेव . . सम्पूज्य
4. एष एव विष्णुः
5. एष एव विष्णुरेष हि ध्य तमः
— एष एव विष्णुरेष ह्येवो ष्टः
— एतदेव विष्णुरेतद्धि म विभूति
6. विष्णुमाविष्णुं . . बुबुधि
9. ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी
— विष्णुरीशानो ब्रह्मा

Brahmav. 1. ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्
2. विष्णोरद्भुतकर्मणः
6. विष्णुश्च भगवान्देवः

2. यो वै रुद्रः..यश्च विष्णुः
1. विष्णुरादित्या जगत्याहवनीयः
2. विष्णुः सर्वान् जयति
— विष्णुर्मनसि नादान्ते
— ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्राः सम्प्रसूयन्ते
— ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च
...a. 2. स्वप्ने विष्णुः
— स आदित्यश्च विष्णुश्चेश्वरश्च
ṇâg. 1. त्वं विष्णुस्त्वं वषट्कारः
ṛita. 2. विष्णुं कृत्वा तु सारथिम्
yâna. 2. विष्णुर्नाम महायोगी (one MS. omits); Yogat. 2.
o. 5. विष्णोस्तत्परमं पदम्
2. य एवं वेद स विष्णुरेव भवति
napra. 1. शोकमोहविनिर्मुक्तं विष्णुं ध्यायन्न सीदति
u. 2. विष्णोर्नु कमिति मर्दयेत्
3. एको विष्णुरनेकेषु
4. इदं विष्णुः..इति मन्त्रैः
2. कश्च विष्णुः परं ब्रह्मैव विष्णुः
5. विष्णुपूजितभूतित्वात्
h. 18. यः शंखः स स्वयं विष्णुः
ida. 8. शिवरूपाय विष्णवे
— शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः
9. यथा शिवमयो विष्णुः
ot. 5. यो ब्रह्मा विष्णुरीश्वरः
ti. 1. 9. निश्वासभूता मे विष्णोः
10. 21. आदित्यानामहं विष्णुः
11. 24. धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो
30. भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो

विष्णुक्रान्त

Mahânâr. 4. 4. विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे

विष्णुगायत्री

Vâsu. 2. विष्णुगायत्र्या च त्रिवारमभिमन्त्र्य
— विष्णुगायत्र्या केशवादिपञ्चनामभिर्वा
— विष्णुगायत्र्या कृष्णादिपञ्चनामभिर्वा
4. विष्णुगायत्र्या प्रणवेन

विष्णुचन्दन

Vâsu. 1. विष्णुचन्दनं वैकुण्ठस्थानादाहृत्य
— चन्दनं कुंकुमादिसहितं विष्णुचन्दनम्

विष्णुत्व

Nṛisut. 7. महत्त्वाद्विष्णुत्वात्

विष्णुदेवत्य

Siras. 5. या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या (one MS. has दै°)
Sikhâ. 1. तृतीया कृष्णा विष्णुमती विष्णुदेवत्या

विष्णुदेहसमुद्भव

Vâsu. 2. गोपीचन्दन पापघ्न विष्णुदेहसमुद्भव

विष्णुपत्नी

Gopî. 2. गोप्यो नाम विष्णुपत्न्यः स्युः
— काश्च विष्णुपत्न्यो गोप्यो नाम

विष्णुपूत

Nṛip. 5. 3. स विष्णुपूतो भवति

विष्णुमन्त्

Śikhâ. 1. तृतीया..विष्णुमती वि-ष्णुदेवत्या

विष्णुमय

Gopî. 5. साक्षाद्विष्णुमयो भवेत्

Skanda. 9. एवं विष्णुमयः शिवः

विष्णुमुख

Mahânâr. 20. 9. विष्णुमुखा वै देवाः

विष्णुरूप

Gopî. 5. विष्णुरूपमिदं पुण्यम्

Skanda. 8. शिवाय विष्णुरूपाय

विष्णुलोक

Gopî. 5. विष्णुलोके महीयते

विष्णुसंज्ञित

Maitri. 6. 23. ध्रुवं विष्णुसंज्ञितम् 38; 7. 3.

विष्णुसायुज्य

Vâsu. 4. विष्णुसायुज्यमाप्नोति

विष्ण्वाख्य

Nâr. 3. विष्ण्वाख्यं पदमव्ययम्

विष्फु[स्फु]लिङ्ग

Kaush. 3. 3. यथाग्नेर्ज्वलतः सर्वा दिशो विष्फुलिङ्गा विप्रतिष्ठेरन् 4. 20.

Chhâ. 5. 4. 1. नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः Brih. 6. 2. 11.

5. 5. 1. ह्रादुनयो विस्फुलिङ्गाः Brih. 6. 2. 10.

5. 6. 1. अवान्तरदिशो विस्फुलि-ङ्गाः Brih. 6. 2. 9.

5. 7. 1. श्रोत्रं विस्फुलिङ्गाः Brih. 6. 2. 12.

5. 8. 1. अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः Brih. 6. 2. 13.

Brih. 2. 1. 20. यथाग्नेः क्षुद्रा विस्फु

6. 2. 14. विस्फुलिङ्गा विस्फु

Maitri. 6. 26. वह्नेश्च यद्वत् खलु वि लिङ्गाः 31.

31. धूमार्चिर्विस्फुलिङ्गा इ

Mund. 2. 1. 1. यथा सुदीप्तात्पावकाद्वि लिङ्गाः

Gauda. 3. 15. मृल्लोहविस्फुलिङ्गाद्यैः

विष्वञ्च्

Chhâ. 8. 6. 6. विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे वन्ति Katha. 6. 16.

Brih. 1. 3. 7. विष्वञ्चो विनेशुः

Katha. 2. 4. दूरमेते विपरीते विषू Maitri. 7. 9.

विसर्ग

Brih. 2. 4. 11. सर्वेषां विसर्गाणां पा कायनम् 4. 5. 12.

Gîtâ. 8. 3. विसर्गः कर्मसंज्ञितः

विसर्जन

Parama. 3. नावाहनं न विसर्ज

विसुकृत्, विसुकृत

Kaush. 1. 4. स एष विसुकृतो वि

Brih. 6. 4. 4. निरिन्द्रिया विसुकृ

12. निरिन्द्रियो विसुकृ

विसृज्

Ait. 3. 9. विसृज्य हैवान्नमत्य

11. यदि शिश्नेन विसृष्ट ऽहम्

Chhâ. 6. 14. 1. तं ततो ऽतिजने विसृ — अभिनद्धाक्षो विसृष्टः

Mahânâr. 1. 4. तोयेन जीवान्विससर्ज भूम्याम्

Praśna. 4. 2. न विसृजते नेयायते

8. पायुश्च विसर्जयितव्य

p. 2. 4. सृजति विसृजति वासयति (bis).
as. 4. संसृजति विसृजति च
— वाचं संसृजति विसृजति च
isa. 2. ग्राम्यकामान् विसृज्य च
hasru. 1. विसृज्य यज्ञोपवीतम् 2, 3.
meya. 1. केन..कर्माण्यशेषतो विसृजामि (one MS. has विसृजानि)
— ब्रह्माण्डं च विसृजेत् (3 MSS. read विवर्जयेत्)
— शेषं विसृजेत्
2. उपवीतं शिखां भूमावप्सु वा विसृजेत्
— कुटुंबं विसृजेत्पात्रं विसृजेत्पवित्रं विसृजेद्दण्डाँल्लोकांश्च विसृजेत्
— ऊर्ध्वगमनं विसृजेत्
1. 47. विसृज्य सशरं चापम्
5. 9. प्रलपन्विसृजन् गृह्णन्
9. 7. कल्पादौ विसृजाम्यहम्
8. विसृजामि पुनः पुनः

विसृप्

gasi. 7. परिशुद्धं विसर्पति

विसृष्टि

ih. 1. 4. 6. एतस्यैव सा विसृष्टिः

विस्तर

tâ. 10. 18. विस्तरेणात्मनो योगम्
19. नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे
40. प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया

विस्तरशस्

tâ. 11. 2. श्रुतो विस्तरशो मया
16. 6. दैवो विस्तरशः प्रोक्तः

विस्तार

â. 13. 30. तत एव च विस्तारम्

विस्तृ, ॰स्तॄ

Dhyâna. 3. विस्तीर्णं योजनान् बहून्
Gopî. 5. धूममार्गविस्तृतं हि वेदार्थम्
— अर्चिर्मार्गविस्तृतं वेदार्थम् (MSS. vary considerably in both places; other readings are विसृतं आविष्कृतं, विस्तरम्)

विस्तृति

Maitri. 7. 11. अभिध्यातुर्विस्तृतिरिवैतत्

विस्मय

Gîtâ. 18. 77. विस्मयो मे महान् राजन्

विस्मयाविष्ट

Gîtâ. 11. 14. ततः स विस्मयाविष्टः

विस्मि

Gîtâ. 11. 22. वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे

विस्रंस्

Bṛih. 3. 7. 2. व्यस्रंसिषतास्याङ्गानि
Katha. 5. 4. अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः

विस्रस्

Katha. 6. 4. प्राक् शरीरस्य विस्रसः

विहग

Maitri. 7. 6. *vide* आदि

विहन्

Bṛih. 4. 3. 9. स्वयं विहत्य स्वयं निर्माय

1. विहा (गतौ)

Bṛih. 5. 10. 1. तस्मै स तत्र विजिहीते (ter).
6. 4. 21. अथास्या ऊरू विहापयति विजिहीथां द्यावापृथिवी इति

2. विहा (त्यागे)

Brih. 4. 3. 8. पाप्मनो विजहाति
Maitri. 6. 18. विद्वान् पुण्यपापे विहाय
Mund. 3. 2. 8. नामरूपे विहाय
Mukti. 1. 48. गुरुभक्तिविहीनाय
Gîtâ. 2. 22. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
— तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि
71. विहाय कामान्यः सर्वान्

विहार

Gîtâ. 11. 42. विहारशय्यासनभोजनेषु

विहितानोत्तर

Nyâsa. 2. विहितानोत्तरः फलैः (so Nâr. and one MS; 4 MSS. have °त्तरफलैः)

विहूर्छ्

Chhâ. 2. 19. 2. नाङ्गेन विहूर्छति

विहृ

Brih. 4. 5. 15. इति होक्त्वा याज्ञवल्क्यो विजहार

विह्वल्

Mahânâr. 8. 2. यद्युवेह वेह वा विह्वलिष्यामि कर्त्तं पतिष्यामि

विह्वे

Mahânâr. 20. 6. यदग्निभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे

1. वी (गतौ)

Kaush. 3. 1. नास्य पापं चक्रुषो मुखान्नीलं वेतीति

2. वी (√इ)

Chhâ. 4. 9. 3. तस्मै हैतदेवोवाचात्र ह न किञ्चन वीयाय

Brih. 1. 4. 2. तत एवास्य भयं वीया
Tait. 1. 4. 2. वि मा यन्तु ब्रह्मचारि
Śwet. 2. 5. वि श्लोक एतु पथ्येव सू
4. 1. वि चैति चान्ते विश्वमा
11. यस्मिन्निदं सं च वि सर्वम् Mahânâr. 1. 2

Gauḍa. 4. 43. उपलम्भाद्वियन्ति ये

वीक्ष्

Nṛisut. 5. असङ्गो ऽन्यं न वीक्षते आत्मा
Gîtâ. 11. 22. वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे

वीक्षण

Nṛisut. 9. बाह्यान्तरवीक्षणात्

वीणा

Chhâ. 1. 7. 6. तद्य इमे वीणायां गायन्ति
Brih. 2. 4. 9. यथा वीणायै वाद्यमानस्य ..वीणायै तु ग्रहणेन 4. 5. 10.

वीणावाद

Brih. 2. 4. 9. वीणायै तु ग्रहणेन वीणावादस्य वा

वीतमन्यु

Katha. 1. 10. वीतमन्युर्गौतमो माभि
11. सुखं रात्रीः शयिता वीतमन्युः

वीतराग

Mund. 3. 2. 5. कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः
Gîtâ. 8. 11. विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः

वीतरागभयक्रोध

Gauḍa. 2. 35. वीतरागभयक्रोधैर्मुनिभिर्वेदपारगैः

2. 56. वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते

4. 10. वीतरागभयक्रोधा मन्मयाः

वीतशोक

2. 20. तमक्रतुः पश्यति वीतशोकः

2. 14. कृतार्थो भवते वीतशोकः

3. 20. तमक्रतुं पश्यति वीतशोकः Mahânâr. 8. 3.

4. 7. यदा पश्यति . . इति वीतशोकः Mund. 3. 1. 2.

4. 78. वीतशोकं . . पदमश्नुते

वीर

3. 13. 6. अस्य कुले वीरो जायते

6. 4. 28. वीरे वीरमजीजनत्सा त्वम्

4. 22. वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीः

1. 5. वीरं प्रथमस्यार्द्धान्त्यम्

2. 3. वीरं द्वितीयं स्थानम्

4. कस्मादुच्यते वीरमिति

— यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षः . . तस्मादुच्यते वीरमिति

2. एष वीरः . एष वीरो नृसिंह एव

4. एष एव वीरः

— स एष वीरः

5. एष एव वीर एष हि व्याप्ततमः

— एष एव वीर एष ह्येवोत्कृष्टः

— एतदेव वीरमेतद्धि महाविभूति

6. वीरमवीरं . . बुबुधिरे

23. सर्व नीलशिखण्ड वीर

वीरत्व

7. उग्रत्वाद्वीरत्वान्महत्त्वात् (bis).

वीरवन्त्

Brih. 6. 4. 28. वीरवती भव यास्मान्वीरवतो ऽकरत्

वीरहत्या

Mahânâr. 17. 8. वीरहत्यां वा एते घ्नन्ति

Nrip. 5. 4. स वीरहत्यां तरति Râmot. 2.

वीराध्वन्

Kathaśru. 3. वीराध्वानं महाप्रस्थानं वृद्धाश्रमं वा गच्छेत्

वीराध्वान

Jâbâla. 5. वीराध्वाने वा अनाशके वा (so Nârâyaṇa and Śaṁkarânanda; but one MS. of latter has वीराध्वनि)

वीरुध्

Śiras. 6. ओषधीर्वीरुध आविवेश (bis).

वीर्य्य

Kena. 12. आत्मना विन्दते वीर्य्यम्

18. तस्मिंस्त्वयि किं वीर्य्यं 22.

Chhâ. 3. 1. 3. वीर्यमन्नाद्यं रसो ऽजायत 3. 2. 2; 3. 3. 2; 3. 4. 2; 3. 5. 2.

4. 17. 4. ऋचां वीर्य्येण

5. यजुषां वीर्य्येण

6. साम्नां वीर्य्येण

8. त्रय्या विद्याया वीर्य्येण

Brih. 1. 2. 6. यशो वीर्यमुदक्रामत्

— प्राणा वै यशो वीर्य्यम्

Tait. 2. 1. 1. सह वीर्यं करवावहै 3. 1. 1; Katha. 6. 19.

Praśna. 6. 4. अन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः

Nrip. 2. 4. प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण

वीर्यतम

Nrip. 2. 4. ना वीर्यतमः श्रेष्ठतमश्च
— सिंहो वीर्यतमः श्रेष्ठतमश्च

वीर्यवत्तर

Chhâ. 1. 1. 10. यदेव विद्यया करोति..
तदेव वीर्यवत्तरं भवति

वीर्यवन्त्

Chhâ. 1. 3. 5. यान्यन्यानि वीर्यवन्ति कर्माणि
Pinda. 7. वाचं पुष्यति वीर्यवान्
Mukti. 1. 51. वीर्यवती तथा स्याम्
Gîtâ. 1. 5. काशिराजश्च वीर्यवान्
6. उत्तमौजाश्च वीर्यवान्

वृ

Kaush. 1. 1. आरुणिं वव्रे
3. 1. प्रतर्दन वरं वृणीष्वेति
— त्वमेव मे वृणीष्व
— न वै वरो ऽवरस्मै वृणीते त्वमेव वृणीष्व
Chhâ. 1. 10. 6. स मा सर्वैरार्त्विज्यैर्वृणीतेति
1. 11. 2. भगवतो वा अहमविन्त्यान्यानवृषि
2. 22. 1. विनर्दि साम्नो वृणे
5. 2. 7. तत्सवितुर्वृणीमह इत्याचामति
5. 3. 6. वित्तस्य वरं वृणीथाः
Brih. 1. 3. 28. तेषु वरं वृणीत यं कामं कामयेत
4. 3. 1. स ह कामप्रश्नमेव वव्रे
Katha. 1. 9. त्रीन् वरान् वृणीष्व
10. त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे
13. एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण
19. यमवृणीथा द्वितीयेन वरेण
— तृतीयं वरं नचिकेतो वृणीष्व
Katha 1. 21. अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व
23. पुत्रपौत्रान् वृणीष्व
— भूमेर्महदायतनं वृणीष्व
24. वृणीष्व वित्तं चिरजीविकां च
27. वरस्तु मे वरणीयः स
29. नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते
2. 1. हीयते ऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते
2. प्रेयो मन्दः..वृणीते
23. यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः Mund. 3. 2. 3.
Śwet. 3. 14. स भूमिं विश्वतो वृत्वा
5. 12. रूपाणि देही स्वगुणैर्वृणोति
Maitri. 1. 2. उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरं वृणीष्व
— अन्यान् कामान् वृणीष्व
Gauda. 4. 84. यैर्ह्यासां सदा वृतः
Kshur. 8. नाडीभिर्बहुभिर्वृता
Kathaśru. 1. सर्वांश्च पूर्ववद्वृणीत्वा
Jâbâla. 2. सर्वानिन्द्रियकृतान्दोषान् वारयति (or इन्द्रियपुषान्); Râmot. 4.
Râmot. 4. वृणीष्व यदभीष्टम्

वृक

Chhâ. 6. 9. 3. वृको वा वराहो वा
6. 10. 2.

वृकोदर

Gîtâ. 1. 15. भीमकर्मा वृकोदरः

वृक्ष

Kaush. 1. 3. इल्यो वृक्षः
5. स आगच्छतील्यं वृक्षम्
Chhâ. 6. 9. 1. नानात्ययानां वृक्षाणां रसान्
— अमुष्याहं वृक्षस्य रसोऽस्मि (bis).

11. 1. महतो वृक्षस्य यो मूले ऽभ्याहन्यात्
9. 27. यथा वृक्षो वनस्पतिस्तथैव पुरुषः
28. वृक्षादिवाहतात्
— यद्वृक्षो वृक्णो रोहति मूलात्
— वृक्षो ऽञ्जसा प्रेत्यसंभवः
— यत्समूलमावृहेयुर्वृक्षम्
10. 1. अहं वृक्षस्य रेरिवा
3. 9. वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः Mahânâr. 10. 4.
4. 6. समानं वृक्षं परिषस्वजाते Muṇḍ. 3. 1. 1.
7. समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नः Muṇḍ. 3. 1. 2.
6. 6. वृक्षकालाकृतिभिः परः
r. 8. 2. यथा वृक्षस्य सम्पुष्पितस्य
10. वृक्षं तु सकलं विद्यात्
2. वटकणिकायामिव वृक्षः
2. 27. द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य 48.
37. अस्य संसारवृक्षस्य

वृक्षमूल

6. *vide* स्थण्डिल

वृज्

2. 7. वर्गो ऽसि पाप्मानं मे वृङ्धि
2. 22. 1. वारुणं त्वेव वर्जयेत्
5. 4. 3. आसां स [illegible]णां सुकृतं वृंक्ते
1. 8. एतद्वृंक्ते पुरुषस्याल्पमेधसः
3. वाक्कायक्लेशवर्जिता
b. 9. हेतुदृष्टान्तवर्जितम्
3. कक्षोपस्थलोमानि वर्जयेत् Kaṭhaśru. 4 (लोमान्).
— सर्वं तद्वर्जयेद्यतिः Kaṭhaśru. 4.
4. 19. कामसंकल्पवर्जिताः

वृजिन

Gîtâ. 4. 36. वृजिनं सन्तरिष्यसि

वृत्

Kaush. 2. 8. मासि मास्यमावास्यायां वृत्तायाम्
Chhâ. 1. 1. 9. तेनेयं त्रयी विद्या वर्त्तते
4. 16. 3. रथो वैकेन चक्रेण वर्त्तमानः
5. रथो वोभाभ्यां चक्राभ्यां वर्त्तमानः
8. 15. 1. एवं वर्त्तयन्यावदायुषम्
Bṛih. 4. 5. 1. याज्ञवल्क्यो ऽन्यद्वृत्तमुपाकरिष्यन्
Tait. 1. 11. 3. वृत्तविचिकित्सा वा
4. यथा ते तत्र वर्त्तेरंस्तथा तत्र वर्त्तेथाः (again, with तेषु for तत्र).
Kaṭha. 2. 5. अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः Muṇḍ. 1. 2. 8.
Śwet. 1. 1. सुखेतरेषु वर्त्तामहे
4. 4. अनादिमत्त्वं विभुत्वेन वर्त्तसे
Maitri. 1. 2. एतद्वृत्तं पुरस्तात्
6. 8. सहस्ररश्मिः शतधा वर्त्तमानः Praśna. 1. 8.
Muṇḍ. 1. 2. 9. अविद्यायां बहुधा वर्त्तमानाः
Gauḍa. 2. 6. वर्त्तमाने ऽपि तत्तथा 4. 31.
3. 1. जाते ब्रह्मणि वर्त्तते
4. 60. यत्र वर्णा न वर्त्तन्ते
Nṛisut. 5. नृसिंहे ब्रह्मणि वर्त्तते (bis).
— नृसिंहे देवे परे ब्रह्मणि वर्त्तते
Brahmav. 10. शिखा च दीपसङ्काशा यस्मिन्नुपरि वर्त्तते
Śiras. 1. वर्त्तामि च भविष्यामि च
Garbha. 1. पञ्चात्मकं पञ्चसु वर्त्तमानम्

Sarvop. 2. अन्नमये कोशे यदा वर्त्तन्ते — वटकणिकायामिव वृक्षो यदा वर्त्तते
Hamsa. 1. सर्वेषु देहेषु व्याप्तो वर्त्तते
Mukti. 1. 8. वर्त्तन्ते कुत्र ते वद
Gîtâ. 3. 22. वर्त्त एव च कर्मणि
23. यदि ह्यहं न वर्त्तेयम्
28. गुणा गुणेषु वर्त्तन्ते
5. 9. इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्त्तन्ते
26. वर्त्तते विदितात्मनाम्
6. 6. वर्त्तेतात्मैव शत्रुवत्
31. सर्वथा वर्त्तमानो ऽपि स योगी मयि वर्त्तते
7. 26. वर्त्तमानानि चार्जुन
13. 23. सर्वथा वर्त्तमानो ऽपि न स भूयो ऽभिजायते
14. 23. गुणा वर्त्तन्त इत्येव
16. 23. वर्त्तते कामकारतः

वृत्तच्युत

Maitri. 7. 9. रतिमात्रं फलमस्या वृत्तच्युतस्येव

वृत्तत्रय

Râmâp. 62. वृत्तत्रयं साष्टपत्रं सरोजम्
88. वृत्तत्रयं बीजाद्यम्

वृत्ताकार

Râmap. 66. वृत्ताकारेण संलिखेत्

वृत्ति

Nyasa. 4. एतां वृत्तिमुपासीनाः
Kathasru 3.ताननुरूपाभिर्वृत्तिभिर्वितस्य
4. एतां वृत्तिमुपासन्तः
Hamsa. 2. तस्याष्टधा वृत्तिर्भवति

वृत्तिक्षय

Maitri. 6. 34. तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तम्

वृत्त्युपार्जन

Asrama. 3. वृत्त्युपार्जनं कृत्वा

वृत्रहन्

Mahânâr. 20. 2. सोमं पिब वृत्रहन्
5. वृत्रहा विमृधो वशी

वृथा

Maitri. 7. 8. वृथा कषायकुण्डलि — वृथातर्कदृष्टान्तकुहकजालैः
Mukti. 2. 63. बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन वृथैव किम्

वृद्धश्रवस्

Nrip. 1. 1. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध Nrisut. 1.

वृद्धाश्रम

Kathasru. 3. वृद्धाश्रमं वा गच्छेत्

वृद्धि

Maitri. 6. 14. कालाद्वृद्धिं प्रयान्ति च

वृध्

Brih. 4. 4. 23. न वर्द्धते कर्मणा नो कनीयान्
4. 5. 5. प्रियमवृद्धत्
Tait. 2. 2. 1. जातान्यन्नेन वर्द्धन्ते Maitri. 6. 12.
Mahânâr. 6. 1. बृहत्सोमो वावृधे सु इन्दुः
Jâbâla. 4. अथा नो वर्द्धया रयिम्
Vâsu. 4. मय्यचला भक्तिश्चास्य वर्द्धते

वृन्दा

Krish. 26. वृन्दा भक्तिः प्रिया बु

वृन्दारक

Brih. 4. 2. 1. वृन्दारक आढ्यः सन्

वृन्दावन

9. वने वृन्दावने क्रीडन्

वृम्

68. ह्रं स्रं भ्रं वृं ल्रं शृं जृं च

वृश्चिक

2. नागानां सर्पाणां वृश्चिकानाम्

वृष्

1. 2. तमिह वृष्टिर्भूत्वा वर्षति

2. 3. 1. वर्षति स उद्गीथः 2. 15. 1.

2. वर्षति हास्मै वर्षयति ह य एतदेवं विद्वान् वृष्टौ पंचविधं सामोपास्ते

2. 4. 1. यद्वर्षति स प्रस्तावः

2. 15. 2. वर्षन्तं न निन्देत्तद्व्रतम्

5. 2. 4. यत्र क्व च वर्षति तदेव भूयिष्ठमन्नं भवति

11. 1. तदाहुर्निशोचति नितपति वर्षिष्यति वा इति

— तस्मादाहुर्विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा इति

1. 1. यन्मेहति तद्वर्षति

4. 14. यथोदकं दुर्गे वृष्टम्

6. 37. स उद्गीथं वर्षति

— तत् सूर्यो रश्मिभिर्वर्षति

7. 1. तपन्ति वर्षन्ति स्तुवन्ति 2–6.

23. 1. ताभिः पर्जन्यो वर्षति

वृषण

5. वृषणापानयोर्मध्ये

वृषन्

6. 1. वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये

20. 5. वृषेन्द्रः पुर एतु नः

वृषभ

Mahânâr. 3. 3. तन्नो वृषभः प्रचोदयात् 11.

9. 11. स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्

10. 1. त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति

वृषभध्वज

Râmot. 4. जजाप वृषभध्वजः

वृषल, वृषली

Bṛih. 6. 4. 13. नैनां वृषलो न वृषल्युपहन्यात्

वृषलीभोजन

Mâhânâr. 19. 1. भुक्त्वा वृषलीभोजनम्

वृष्टि

Kaush. 1. 2. तमिह वृष्टिर्भूत्वा वर्षति

Chhâ. 2. 3. 1. वृष्टौ पंचविधं सामोपासीत

2. वृष्टौ पंचविधं सामोपास्ते

Bṛih. 2. 5. 16. तन्यतुर्न वृष्टिम्

6. 2. 10. तस्या आहुत्यै वृष्टिः संभवति

11. एतस्मिन्नग्नौ देवा वृष्टिं जुह्वति

16. वायोर्वृष्टिं वृष्टेः पृथिवीं

Tait. 3. 10. 2. तृप्तिरिति वृष्टौ

Maitri. 6. 22. भेकत्रिःकुन्धिका वृष्टिः

37. आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नम्

वृष्णि

Gîtâ. 10. 37. वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि

वेग

Śwet. 1. 5. पञ्चदुःखौघवेगाम्

Mukti. 2. 60. वासनावेगवैचित्र्यात्

Gîtâ. 5. 23. कामक्रोधोद्भवं वेगम्

वेगतस्

Râmap. 41. वालिनो वेगतो गृहात्

वेणुनाद

Hamsa. 2. सप्तमो वेणुनादः

वेताल

Mukti. 2. 40. तावन्निशीव वेतालाः

वेत्तृ

Śwet. 3. 19. न च तस्यास्ति वेत्ता
Kaivalya. 21. न चास्ति वेत्ता मम
Gîtâ. 11. 38. वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम

1. वेद

Kena. 33. वेदाः सर्वाङ्गानि
Chhâ. 3. 5. 4. वेदा हि रसाः
— वेदा ह्यमृताः
6. 1. 2. सर्वान् वेदानधीत्य
6. 7. 3. तर्यैतर्हि वेदान्नानुभवसि
6. तर्यैतर्हि वेदाननुभवसि
7. 1. 2. अध्येमि..वेदानां वेदम्
4. नाम वै..वेदानां वेदः
7. 2. 1. वाग्वै..विज्ञापयति..वेदानां वेदम्
7. 7. 1. विज्ञानेन वै..विजानाति..वेदानां वेदम्
8. 15. 1. आचार्यकुलाद्वेदमधीत्य
Brih. 1. 4. 15. यथा वेदो वाननूक्तः
1. 5. 5. त्रयो वेदा एत एव
2. 4. 11. सर्वेषां वेदानां वागेकायनम् 4. 5. 12.
4. 3. 22. वेदा अवेदाः
4. 5. 6. न वा अरे वेदानां कामाय वेदाः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय वेदाः प्रिया भवन्ति
4. 5. 7. वेदास्तं परादुर्यो ऽन्यत्रात्मनो वेदान्वेद
5. 1. 1. वेदो ऽयं ब्राह्मणा विदुः
6. 1. 4. श्रोत्रे हीमे सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः
Brih. 6. 4. 14. वेदमनुब्रुवीत
15. द्वौ वेदावनुब्रुवीत
16. त्रीन् वेदाननुब्रुवीत
18. सर्वान् वेदाननुब्रुवीत
26. अस्य नाम करोति वेदे
Tait. 1. 5. 3. सर्वे वेदा महीयन्ते
1. 11. 1. वेदमनूच्याचार्यो ऽ-सिनमनुशास्ति
Katha. 2. 15. सर्वे वेदा यत्पदमाम
Śwet. 4. 9. भूतं भव्यं यच्च वेदा व
6. 18. यो वै वेदांश्च प्रहिणोति
Maitri. 4. 3. एष स्वधर्मो ऽभिहितो वेदेषु
6. 32. तस्मात्..सर्वे वेदाः क्षरन्ति
7. 8. न जानाति वेदविद्या
9. वेदादिशास्त्रहिंसकधर्म ध्यानम्
10. यद्वेदेष्वभिहितं तत्सत
— यद्वेदेषूक्तं तद्विद्वांस जीवन्ति
Mund. 2. 1. 4. वाग्विवृताश्च वेदाः
Kaivalya. 22. वेदैरनेकैरहमेव वेद्यः
Gauda. 2. 22. वेदा इति च वेदविदः
Nrip. 2. चत्वारो वेदाः साङ्गाः शाखाः
3. सर्वे वेदाः प्रणवादिका
4. अग्निर्वै वेदाः
4. 2. देवानां वेदानां निदान
3. यो वै नृसिंहः .. ये साङ्गाः सशाखास्त नमो नमः (13).
5. 1. वेदा वा एते अराः
Brahmav. 4. लोका वेदास्त्रयो ऽग्न
Siras. 1. सर्वान् वेदान् साङ्ग
7. स सर्वैर्वेदैरनुध्यातो ति Mahâ. 4.

:hâ. 1. देवाश्चत्वारो वेदाश्चत्वारः
ahma. 1. वेद एव परं ज्योतिः
2. तत्र..वेदा न वेदाः
inâg. 4. वेदा महर्त्विजः
gat. 6. त्रयो लोकास्त्रयो वेदाः
âsa. 2. वेदानधीत्यानुज्ञातः..गुरुणा
thasru. 2. वेदमधीत्य वेदौ वेदान् वा
4. यज्ञोपवीतं वेदांश्च सर्वं तद्वर्जयेद्यतिः
aneya. 2. सर्वेषु वेदेष्वारण्यकमावर्त्तयेत्
rama. 1. यावद्ब्रह्मणग्रन्तं वा वेदस्य
su. 2. त्रयो वेदास्त्रयः स्वराः
pî. 5. गायत्र्या वेदाः
— सर्वान् वेदान्..ब्रह्मलोके स्थापयामास
mot. 5. ये सर्वे वेदाः सांगाः (6)
ikti. 1. 9. वेदा जाताः सुविस्तराः
— तिलेषु तैलवद्वेदे वेदान्तः
10. राम वेदाः कतिविधाः
11. वेदाश्चत्वार ईरिताः
2. 65. अधीत्य चतुरो वेदान्
â. 2. 45. त्रैगुण्यविषया वेदाः
46. तावान्सर्वेषु वेदेषु
8. 28. वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव
10. 22. वेदानां सामवेदो ऽस्मि
11. 48. न वेदयज्ञाध्ययनैः
53. नाहं वेदैर्न तपसा
15. 15. वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः
18. अतो ऽस्मि लोके वेदे च
17. 23. ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च

2. वेद (= दर्भमुष्टि)

hânAr.25. 1. वेदः शिखा

वेदगुह्य

st. 5. 6. वेदगुह्योपनिषत्सु

वेदतत्त्वार्थविहित

Kshur. 2. वेदतत्त्वार्थविहितं यथोक्तं हि स्वयंभुवा

वेददेवयोनि

Śikhâ. 1. प्रणवश्चतुर्धावस्थित इति वेददेवयोनिः

Brahma. 1. तमेव स्तन इव लम्बते वेददेवयोनिः (4 MSS. read एष for वेद)

वेदपारग

Gauḍa. 2. 35. मुनिभिर्वेदपारगैः

Brahma. 2. स विप्रो वेदपारगः

वेदपुरुष

Parama. 1. स एव वेदपुरुष इति विदुषो मन्यन्ते

वेदपूत

Nṛip. 5. 3. स वेदपूतो भवति (2 MSS. read देवपूतः)

वेदप्रवचन

Haṁsa. 2. ओं वेदप्रवचनम्

वेदब्रह्मचर्य

Aśrama. 1. अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि वेदब्रह्मचर्यं चरेत्

वेदवादरत

Gîtâ. 2. 42. वेदवादरताः पार्थ

वेदवादिन्

Kâlâg. 1. सर्ववेदेषु वेदवादिभिरुक्तम्

वेदविद्

Bṛih. 3. 7. 1. स देववित्स वेदवित्

Śwet. 1. 7. अत्रान्तरं वेदविदो विदित्वा

Maitri. 6. 15. यस्तं वेद स वेदवित् Kshur. 16; Dhyâna. 17, 18; Gîtâ. 15. 1.

Kaivalya. 22. वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् Gîtâ. 15. 15.

Gauḍa. 2. 22. वेदा इति वेदविदः

Gîtâ. 8. 11. यदक्षरं वेदविदो वदन्ति

वेदविद्या

Chhâ. 7. 1. 2. अध्येमि..वेदविद्याम्

4. नाम वै..वेदविद्या

7. 2. 1. वाग्वै..विज्ञापयति..वेदविद्याम्

7. 7. 1. विज्ञानेन वै..विजानाति ..वेदविद्याम्

Maitri. 4. 3. वेदविद्याधिगमः

वेदविद्याव्रतस्नात

Mukti. 1. 42. वेदविद्याव्रतस्नातदेशिकस्य मुखात्

वेदस्

Mahânâr. 6. 2. अरातीयतो निदहाति वेदः

वेदात्मक

Skanda. 14. वेदात्मकं ब्रह्म निजं विजानते

वेदादि

Mahânâr. 10. 8. यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः

वेदादिरूप

Râmap. 31. नमो वेदादिरूपाय

वेदानुवचन

Bṛih. 4. 4. 22. तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति

Tait. 1. 10. 1. इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम्

वेदानुशासन

Aruṇeya. 5. एवं निर्वाणानुशासनं वेदानुशासनम् Skanda 16.

वेदान्त

Śwet. 6. 22. वेदान्ते परमं गुह्यम्

Muṇḍ. 3. 2. 6. वेदान्तविज्ञानसुनिश्चिता Mahânâr. 10. 6; [Kai]valya. 3.

Mahânâr. 10. 8. यो वेदादौ स्वरः प्रो[क्तो] वेदान्ते च प्रतिष्ठितः

Gauḍa. 2. 12. इति वेदान्तनिश्चयः

31. वेदान्तेषु विचक्षणैः

Kshur. 10. वेदान्तेषु निगद्यते

Mukti. 1. 7. वेदान्ते सुप्रतिष्ठो ऽहं वे[दा]न्तं समुपाश्रय

8. वेदान्ताः के रघुश्रेष्ठ

— वक्ष्यामि वेदान्तस्थिति[म]ञ्जसा

9. वेदे वेदान्तः सुप्रतिष्ठित[ः]

17. वेदान्तवाक्यार्थविचारा[त्]

1. वेदान्तश्रवणादि कृत्वा

2. *vide* समाधि

वेदान्तकृत्

Kaivalya. 22. वेदान्तकृद्वेदविदेव चाह[म्] Gîtâ. 15. 15.

वेदार्थ

Aruṇeya. 4. खलु वेदार्थं यो विद्वान्

Gopî. 5. धूममार्गविस्तृतं हि वेदार्थ

— अर्चिर्मार्गविस्तृतं वेदार्थ[म्]

Kṛish. 8. यो वेदार्थः कृष्णरामयोः

वेदि

Chhâ. 5. 18. 2. उर एव वेदिः

Bṛih. 6. 4. 3. तस्या वेदिरुपस्थः

Mahânâr. 25. 1. उरो वेदिः

Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..का वेदि[ः]

4. शरीरं वेदिः

वेदितृ

Bṛih. 3. 9. 10. यो वै तं पुरुषं विद्यात्.. स वै वेदिता स्यात् 11-17

वेदिषद्

5. 2. वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् Mahânâr. 9. 3; 17. 8; Nrip. 3. 1.

वेदोपनिषद्

1. 11. 4. एषा वेदोपनिषत्

वेन

nâr. 2. 3. वेनस्तत्पश्यन्
10. 2. वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः

वेप्

11. 35. कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी

वेपथु

1. 29. वेपथुश्च शरीरे मे

वेशान्त

4. 3. 10. न तत्र वेशान्ताः..भवन्त्यथ वेशान्तान्..सृजते

वेश्मन्

8. 1. 1. दहरं पुण्डरीकं वेश्म 2.
8. 14. 1. प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये
pra. 1. यदिदं पुरं ब्रह्मपुरमिदं पुण्डरीकं वेश्म

वेश्मभूत

nâr. 10. 7. दहं विपाप्मं वरं वेश्मभूतम्

वेष्ट्

6. 20. यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः
i. 7. 9. अविद्यायामन्तरे वेष्ट्यमानाः
5. 1. मायया वा एतत्सर्वं वेष्टितं भवति
— बहिर्मायया वेष्टितं भवति (ter).
p. 60. वेष्टयेद्बुद्धिवृद्धिमान्

वैकङ्कत

Mahânâr. 13. 5. यस्य वैकङ्कत्यग्निहोत्रहवणी

वैकुण्ठ

Kaush. 4. 2. वायाविन्द्रो वैकुंठः
7. इन्द्रो वैकुंठः..अहमेतमुपासे Brih. 2. 1. 6.
Atmapra. 1. वैकुंठं भगवल्लोकं गमिष्यति
Krish. 10. गोकुलवनं वैकुण्ठम्
27. वैकुण्ठं स्वर्गवासिनम्

वैकुण्ठभुवन

Nâr. 5. वैकुण्ठभुवनं गमिष्यति (most MSS. have °भवनम्)

वैकुण्ठस्थान

Vâsu. 1. वैकुण्ठस्थानोद्भवम्
— विष्णुचन्दनं वैकुण्ठस्थानादाहृत्य

वैखानस

Âśrama. 3. वैखानसा उदुंबरा बालखिल्याः फेनपाश्च
— वैखानसा अकृष्टपच्यौषधिवनस्पतिभिर्ग्रामबहिष्कृताभिरग्निपरिचरणं कृत्वा

वैचित्र्य

Mukti. 2. 60. वासनावेगवैचित्र्यात्

वैजयन्ती

Krish. 22. वैजयन्ती च वायुश्च (so 2 MSS. and Nâr: with जयन्तीसंभवो वायुः as variant).

वैजवापायन

Brih. 2. 6. 2. पाराशर्यो वैजवापायनात्
— वैजवापायनः कौशिकायनेः

वैणव

Aruṇeya. 4. वैणवं दण्डं...परिग्रहेत्

वैतथ्य

Gauḍa. 2. 1. वैतथ्यं सर्वभावानाम्
3. वैतथ्यं तेन वै प्राप्तम्
9. दृष्टं वैतथ्यमेतयोः (MSS. read सदसतोर्वैतथ्यं युक्तम्)
10. युक्तं वैतथ्यमेतयोः (MSS. read सदसतोर्वैतथ्यं दृष्टम्)
11. उभयोरपि वैतथ्यं भेदानाम्

वैदर्भि

Praśna. 1. 1. भार्गवो वैदर्भिः 2. 1.

वैदल

Nyâsa. 4. भिक्षादिर्वैदलं पात्रम्

वैदिक

Maitri. 7. 8. वैदिकेषु परिस्थातुमिच्छन्ति
Brahma. 3. कर्मण्यधिकृता ये तु वैदिके
Vâsu. 3. ब्राह्मणानां तु सर्वेषां वैदिकानाम्

वैदृभतीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. क्रौञ्चिकीपुत्रौ वैदृभतीपुत्रात्
— वैदृभतीपुत्रः कार्शकेयीपुत्रात्

1. वैदेह

Bṛih. 3. 1. 1. जनको वैदेहः 4. 1. 1-7; 4. 2. 1; 4. 4, 7; 5. 14. 8; Jâbâla. 4.
— जनकस्य वैदेहस्य 2.
3. 8. 2. काश्यो वा वैदेहो वा
4. 3. 1. जनकं ह वैदेहम्
— जनकश्च वैदेहः

2. वैदेह

Mukti. 1. 44. वैदेहीं मामकीं मुक्तिं या

वैदेहमुक्तिग (!)

Mukti. 2. 36. अरूपस्तु मनोनाशो वैदे मुक्तिगो भवेत्

वैद्युत

Bṛih. 6. 2. 15. आदित्याद्वैद्युतं तान् तान् पुरुषो मानस ए
Tait. 1. 3. 2. वैद्युतः सन्धानम्
Maitri. 7. 11. कस्मादुच्यते वैद्युतः
Śiras. 3. यत् सूक्ष्मं तद्वैद्युतं य तत्परं ब्रह्म
4. कस्मादुच्यते वैद्युतं. स्मादुच्यते वैद्युतम्

वैधर्म्य

Gauḍa. 4. 97. अणुमात्रे ऽपि वैधर्म्ये

वैनतेय

Gîtâ. 10. 30. वैनतेयश्च पक्षिणाम्

वैभव

Gopî. 4. पृथिव्याश्च वैभवाद्दर्णमे
— चन्दनस्य वैभवम्

वैयाघ्रपदीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 1. कौशिकीपुत्र आलंबी च वैयाघ्रपदीपुत्राच्च
— वैयाघ्रपदीपुत्रः काण्व त्राच्च कापीपुत्राच्च

वैयाघ्रपद्य

Chhâ. 5. 2. 3. गोश्रुतये वैयाघ्रपद्याय
5. 14. 1. वैयाघ्रपद्य कं त्वमात्मानमुपास्से 5. 16. 1.

वैराग्य

Maitri. 1. 2. वैराग्यमुपेतो ऽरण्यं नाम

hâ. 2. बिभ्रत्..तपो वैराग्यम्
ṃsa. 2. मध्ये वैराग्यम्
nap. 5. यथा ध्यानेन वैराग्यम्
. 6. 35. वैराग्येण च गृह्यते
13. 8. इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्
18. 52. वैराग्यं समुपाश्रितः

वैराग्योपलघृष्ट

ıur. 24. वैराग्योपलघृष्टेन छित्त्वा तन्तुम्

वैराज

ısh. 1. 5. वैरूपवैराजे अनूच्ये
ıâ. 2. 16. 1. एतद्वैराजमृतुषु प्रोतम् 2.
ıtri. 7. 4. अनुष्टुबेकविंशो वैराजः.. उत्तरत उद्यन्ति

वैराज्य

ıâ. 2. 24. 8. लोकद्वारमपावार्णू पश्येम त्वा वयं वैराज्यायेति

वैरिन्

3. 37. विद्ध्येनमिह वैरिणम्

वैरूप

sh. 1. 5. वैरूपवैराजे अनूच्ये
â. 2. 15. 1. एतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतम्
2. स य एवमेतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतं वेद
tri. 7. 3. वैरूपं वर्षाः..पश्चादुद्यन्ति

वैरोचन

ânâr. 6. 3. तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीम्

वैवस्वत

ıa. 1. 7. हर वैवस्वतोदकम्
5. वैवस्वते ऽन्तरे

वैशारद्य

la. 4. 94. वैशारद्यं तु वै नास्ति

वैश्य

Bṛih. 1. 4. 15. वैश्येन वैश्यः (अभवत्)
Gîtâ. 9. 32. स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः

वैश्यकर्मन्

Gîtâ. 18. 44. वैश्यकर्म स्वभावजम्

वैश्ययोनि

Chhâ. 5. 10. 7. क्षत्रिययोनिं वा वैश्ययोनिं वा

वैश्वदेव

Chhâ. 2. 24. 11. स वैश्वदेवं सामाभिगायति
Bṛih. 3. 9. 1. यावन्तो वैश्वदेवस्य निविद्युच्यन्ते

वैश्वानर

Chhâ. 5. 11. 2. सम्प्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति 4.
6. आत्मानमेवेमं वैश्वानरं सम्प्रत्यध्येषि
5. 12. 1. वैश्वानरो ऽयं त्वमात्मानमुपास्से 5. 13. 1; 5. 14. 1; 5. 15. 1; 5. 16. 1; 5. 17. 1.
2. य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते 5. 13. 2; 5. 14. 2; 5. 15. 2; 5. 16. 2; 5. 17. 2.
5. 18. 1. आत्मानं वैश्वानरं विद्वांसः — आत्मानं वैश्वानरमुपास्ते
5. 24. 4. आत्मनि हैवास्य तद्वैश्वानरे हुतं स्यात्
Bṛih. 1. 1. 1. व्यात्तमग्निर्वैश्वानरः
5. 9. 1. अयमग्निर्वैश्वानरो यो ऽयमन्तःपुरुषे Maitri. 2. 6.
Katha. 1. 7. वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिः
Maitri. 2. 6. यः पुरुषः सो ऽग्निर्वैश्वानरः
6. 9. विश्वो ऽसि वैश्वानरो ऽसि

Mahânâr. 3. 6. तन्नो वैश्वानरः प्रचोदयात्
7. वैश्वानराय विद्महे
Praśna. 1. 7. स एष वैश्वानरो विश्वरूपः
Mâṇḍû. 3. स्थूलभुग्वैश्वानरः Nṛip. 4. 1; Râmot. 3.
9. जागरितस्थानो वैश्वानरो ऽकारः
Nṛisut. 1. विश्वो वैश्वानरः 2.
Prâṇâg. 2. विश्वो ऽसि वैश्वानरः
Kaṭhaśru. 1. वैश्वानरीमिष्टिं कुर्यात्
3. अग्नये वैश्वानराय प्रजापतये च
Gîtâ. 15. 14. अहं वैश्वानरो भूत्वा

वैष्णव

Śiras. 5. स गच्छेद्वैष्णवं पदम्
Garbha. 4. वैष्णवेन वायुना संस्पृष्टः
Nâda. 10. सप्तमी वैष्णवी नाम
15. सप्तम्यां वैष्णवं पदम्
Kaṭhaśru. 3. वैष्णवं त्रिकपालम्
Kṛish. 7. अजय्या वैष्णवी माया
Mukti. 1. 52. वैष्णवीमात्मनिष्ठाम्

वौषट्

Hamsa. 2. अग्नीषोमाभ्यां वौषट्

व्यक्तचैतन्य

Nṛisut. 9. ईश्वरवद्व्यक्तचैतन्यः

व्यक्तता

Maitri. 6. 10. एवं प्रधानस्य व्यक्ततां गतस्य
Chûl. 18. व्यक्ततां ययुः
— व्यक्ततां भूयो जायन्ते

व्यक्तदर्शन

Chûl. 15. अव्यक्तं व्यक्तदर्शनम्

व्यक्तमध्य

Gîtâ. 2. 28. व्यक्तमध्यानि भारत

व्यक्ति

Gîtâ. 7. 24. अव्यक्तं व्यक्तिमापन्न
8. 18. अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्व
10. 14. न हि ते भगवन्व्यक्तिं

व्यग्र

Maitri. 3. 2. लुप्यमानः सस्पृहो
6. 30.

व्यग्रत्व

Maitri. 3. 5. चलत्वं व्यग्रत्वम्

व्यञ्ज्

Śwet. 1. 8. व्यक्ताव्यक्तं भरते
मीशः
Maitri. 6. 10. एवं व्यक्तमन्नमव्यक्त
Chûl. 19. कारणैर्व्यज्यते बुधः
Śiras. 1. नित्यानित्यो व्यक्ताव्य
Gîtâ. 8. 20. अव्यक्तो व्यक्तात्सना

व्यञ्जक

Nṛisut. 9. अस्य व्यञ्जिका नि
वृत्तापि मूढैरात्मैव

व्यतिवृत्

Gîtâ. 2. 52. बुद्धिर्व्यतितरिष्यति

व्यतिरिच्

Śiras. 1. नान्यः कश्चिन्मत्तो व्य
रिक्तः
Skanda. 3. व्यतिरिक्तं जडं सर्वम

व्यतिषञ्ज्

Nṛip. 2. 2. व्यतिषक्ता वा इमे लो
स्तस्माद्व्यतिषक्तान्यङ्ग
भवन्ति
4. स्नेहो यथा पललपिण्ड
प्रोतमनुप्राप्तं व्यतिषक्त
Śiras. 4. ओतप्रोतमनुप्राप्तो व्य
क्तश्च (one MS. has
विसृष्टश्च)

व्यतिसन्दह्

.7. 15. 3. यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणाञ्छूलेन समासं व्यतिसन्दहेत्

व्यती

hma. 11. स्थानत्रयाद्व्यतीतस्य

4. 5. बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि

व्यत्यय

kti. 2. 50. संभवव्यत्ययक्रमात्

व्यथ्

sh. 2. 11. मा छेत्था मा व्यथिष्ठाः

1. 5. 20. न व्यथते ऽथो न रिष्यति 21.

3. 9. 26. असितो न व्यथते न रिष्यति 4. 2. 4; 4. 4. 22; 4. 5. 15.

2. 15. यं हि न व्यथयन्त्येते

11. 34. मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठाः

14. 2. प्रलये न व्यथन्ति च

व्यथा

11. 49. मा ते व्यथा मा च विमूढभावः

व्यध्

1. 2. 2. तं हासुराः पाप्मना विविधुः (similarly, 3—6).

— पाप्मना ह्येष विद्धः

3. पाप्मना ह्येषा विद्धा

4. पाप्मना ह्येतद्विद्धम् 5, 6.

8. 4. 2. विद्धः सन्नविद्धो भवति

1. 3. 2. तमभिद्रुत्य पाप्मनाविध्यन् 3-6.

6. एवमेनाः पाप्मनाविध्यन्

7. तमभिद्रुत्य पाप्मनाविव्यत्सन्

Maitri. 6. 28. रजस्तमोभ्यां विद्धस्य

Mund.2. 2. 2. तद्वेद्धव्यं सोम्य विद्धि

3. लक्ष्यं तदेवाक्षरं . . विद्धि

4. अप्रमत्तेन वेद्धव्यम् Dhyâna. 19.

व्यन्

Brih. 3. 4. 1. यो व्यानेन व्यानिति स त आत्मा सर्वान्तरः (व्यानितीति छान्दसं दैर्घ्यं Saṁkara).

व्यनुनद्

Gîtâ. 1. 19. नभश्च पृथिवीं चैव . . व्यनुनादयन्

व्यपदिश्

Brih. 3. 4. 2. एवमेवैतद् व्यपदिष्टं भवति

व्यपाश्रि

Gîtâ. 9. 32. मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य

व्यपेतभी

Gîtâ. 11. 49. व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वम्

व्यपोह्

Tait. 1. 6. 1. व्यपोह्य शीर्षकपाले

Kaivalya. 1. अचिरात् सर्वपापं व्यपोह्य

व्यय्

Maitri. 2. 2. व्ययमानो ऽव्ययमानः

व्यय

Gîtâ. 11. 2. भवव्ययौ हि भूतानाम्

व्यवच्छिद्

Tait. 1. 11. 1. प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः

व्यववद्

Chhâ. 4. 16. 2. ब्रह्मा व्यववदति 4 (व्यपवदति MSS.)

व्यवसाय

Gîtâ. 10. 36. जयो ऽस्मि व्यवसायो ऽस्मि
18. 59. मिथ्यैष व्यवसायस्ते

व्यवसायात्मक

Gîtâ. 2. 41. व्यवसायात्मिका बुद्धिः 44.

व्यवसो

Gîtâ. 1. 45. महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्
9. 30. सम्यग्व्यवसितो हि सः

1. व्यवस्था

Maitri. 6. 30. ऊर्ध्वमेव व्यवस्थितम्
Mahânâr.11. 11. अणीयोर्ध्वा व्यवस्थिता Mahâ. 3; Vâsu. 3.
13. परमात्मा व्यवस्थितः Maha. 3; Vasu. 3.
Gauḍa. 1. 2. त्रिधा देहे व्यवस्थितः
2. 13. अन्तश्चित्ते व्यवस्थितान्
Brahmav. 8. तस्य मध्ये व्यवस्थितः
Nâda. 4. सत्यलोको व्यवस्थितः
Brahmab. 12. भूते भूते व्यवस्थितः
Dhyâna. 10. सर्वत्रात्मा व्यवस्थितः
Piṇḍa. 2. कस्मिन् स्थाने व्यवस्थितः
Kṛish. 18. लक्ष्मीरूपो व्यवस्थितः
Gîtâ. 1. 20. अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा
3. 34. रागद्वेषौ व्यवस्थितौ

2. व्यवस्था

Śwet. 1. 1. सुखेतरेषु वर्तामहे..व्यवस्थाम्
Gauḍa. 3. 17. स्वसिद्धान्तव्यवस्थासु
4. 13. न व्यवस्था प्रसज्यते

व्यवस्थिति

Gîtâ. 16. 1. ज्ञानयोगव्यवस्थितिः
24. कार्याकार्यव्यवस्थितौ

व्यवहार

Mukti. 2. 28. असंगव्यवहारत्वात्

व्यवह्

Nṛisut. 9. अमूढो मूढ इव व्य
त्नास्ते माययैव
Mukti. 2. 70. ताभिर्व्यवहरन्नपि

व्यश्

Kaush. 1. 7. तां व्यष्टिं व्यश्नुते
Gauḍa. 1. 27. व्यश्नुते तदनन्तरम्
Nṛip. 1. 1. व्यशेम देवहितं यदा 2. 4; Nṛisut 1.

1. व्यष्टि

Kaush. 1. 7. सा या ब्रह्मणो जि
व्यष्टिस्तां जितिं जय
व्यष्टिं व्यश्नुते
Bṛih. 3. 3. 2. तस्माद्वायुरेव व्यष्टिः

2. व्यष्टि

Bṛih. 2. 6. 3. विप्रचित्तिर्व्यष्टेः 4. 6.
— व्यष्टिः सनारोः 4. 6.

व्याकरण

Muṇḍ.1. 1. 5. शिक्षा कल्पो व्याक

व्याकुलितमनस्

Garbha. 3. व्याकुलितमनसो ऽन्ध
ञ्जाः कुब्जा वामनक
वन्ति

व्याकृ

Ait. 5. 1. येन वाचं व्याकरोति
Chhâ. 6. 3. 2. नामरूपे व्याकरवाणि
3. नामरूपे व्याकरोत्
Bṛih. 1. 4. 7. नामरूपाभ्यामेव व्या
(again with व्ये)

1. व्याख्या

Kaush. 3. 4. यथास्यै प्रज्ञायै सर्वा
तान्येकं भवन्ति तद्
व्याख्यास्यामः

.. 2. 4. 4. एतास्त्व व्याख्यास्यामि ते
4. 5. 5. भवत्येतद् व्याख्यास्यामि ते
. 1. 2. 1. शीक्षां व्याख्यास्यामः
1. 3. 1. संहिताया उपनिषदं व्याख्यास्यामः
4. य एवमेता महासंहिता व्याख्याता वेद
ri. 6. 10. अनेनैव प्रधानस्य भोज्यत्वं व्याख्यातम्
da. 3. 11. रसादयो हि ये कोशा व्याख्यातास्तैत्तिरीयके
26. स एष नेति नेतीति व्याख्यातम्
mav. 5. व्याख्यातं ब्रह्मवादिभिः
ag. 1. शारीरयज्ञं व्याख्यास्यामः
sa. 1. हंसपरमहंसनिर्णयं व्याख्यास्यामः

2. व्याख्या

ri. 6. 10. अनेनैव चतुर्दशविधस्य मार्गस्य व्याख्या कृता

व्याख्यान

. 2. 4. 10. अनुव्याख्यानि व्याख्यानानि 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32.
ap. 49. व्याख्याननिरतः

व्याघ्र

..6. 9. 2. व्याघ्रो वा सिंहो वा 6.10.2.

व्याचक्ष्

.. 3. इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे
2. 4. 4. व्याचक्षाणस्य मे निदिध्यासस्व 4. 5. 5.
3. 4. 1. य आत्मा सर्वान्तरस्तं मे व्याचक्ष्व 2; 3. 5. 1.
1. 7. देहान्ते देवः परं ब्रह्मतारकं व्याचष्टे

Nrisut. 1. इममात्मानमोङ्कारं नो व्याचक्ष्व
Jâbâla. 1. रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे Râmot. 1.

व्याज

Râmap. 36. तद्व्याजेनेक्षितुं सीताम्

व्यात्तानन

Gîtâ. 11. 24. व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्

व्यादा

Chhâ. 1. 2. 9. व्याददात्येवान्तत इति
Brih. 1. 1. 1. व्यात्तमग्निर्वैश्वानरः
6. 2. 12. तस्य व्यात्तमेव समित्

व्याधा

Chhâ. 7. 10. 1. व्याधीयन्ते प्राणाः
Brih. 5. 11. 1. एतद्वै परमं तपो यद्व्याहितस्तप्यते

व्याधि

Chhâ. 4. 10. 3. स ह व्याधिनानशितुं दध्रे
— व्याधिभिः प्रतिपूर्णोऽस्मि
Śiras. 4. *vide* महाभय
Gîtâ. 13. 8. जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्

व्यान

Chhâ. 1. 3. 3. अथ खलु व्यानमेवोद्गीथमुपासीत 5.
— प्राणापानयोः संधिः स व्यानो यो व्यानः सा वाक्
3. 13. 2. दक्षिणः सुषिः स व्यानः
5. 20. 1. तां जुहुयाद्व्यानाय स्वाहेति व्यानस्तृप्यति
2. व्याने तृप्यति श्रोत्रं तृप्यति
Brih. 1. 5. 3. प्राणोऽपानो व्यान उदानः समानः Tait. 1. 7. 1.
3. 1. 10. व्यानः शस्या

Bṛih. 3. 4. 1. यो व्यानेन व्यानिति स त आत्मा सर्वान्तरः
3. 9. 26. कस्मिन्नपानः . . व्यान इति कस्मिन्नु व्यानः
5. 14. 3. प्राणो ऽपानो व्यान इत्यष्टाक्षराणि
Tait. 1. 5. 3. सुवरिति व्यानः
2. 2. 1. व्यानो दक्षिणः पक्षः
Maitri. 2. 6. प्राणो ऽपानः समान उदानो व्यानः
— येन वा एता अनुगृहीता इत्येष वाव स व्यानः
— उत्तरं व्यानस्य रूपं च
6. 5. प्राणो ऽपानो व्याना इति प्राणवत्येषा
9. प्राणाय स्वाहा . . व्यानाय स्वाहा
33. प्राणो ऽपानो व्यानः समान उदानः
7. 2. भीष्मो व्यानः सोमो रुद्रा दक्षिणत उद्यान्ति
Mahânâr. 15. 8. व्याने निविष्टो ऽमृतं जुहोमि 9.
16. 1. व्याने निविश्यामृतं हुतं व्यानमन्नेनाप्यायस्व
Praśna. 3. 6. आसु व्यानश्चरति
8. वायुर्व्यानः
4. 3. व्यानो ऽन्वाहार्यपचनः
Prâṇâg. 1. मध्यमिकया व्याने
4. व्यानः प्रस्तोता
Amṛita. 35. व्यानः सर्वेषु चाङ्गेषु
37. व्यानो ऽर्चिसमप्रभः
Kathaśru. 1. प्राणापानव्यानोदानसमानान्

व्याप्

Śwet. 4. 10. तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्
Mahânâr. 11. 6. तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः Vâsu. 3.
Nṛip. 2. 4. यः सर्वांल्लोकान् व्या व्यापयति
— स्नेहो यथा पललपिण् व्याप्यते व्यापयते
4. 2. तया सर्वमिदं व्याप्तम्
Nṛisut. 2. व्याप्तः सदोज्ज्वलः
Brahmav. 12. सर्वं व्याप्यैव तिष्ठति
Siras. 6. सहस्रपादेकमूर्धा व्या
Haṁsa. 1. सर्वेषु देहेषु व्याप्तो
2. येनेदं व्याप्तम्
Râmot. 5. यो ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहि मोति विराट् (36).
Gîtâ. 10. 16. लोकानिमांस्त्वं व्याप्य ष्ठसि
11. 20. व्याप्तं त्वयैकेन दि सर्वाः

व्यापक

Katha. 6. 8. व्यापको ऽलिङ्ग एव च
Siras. 6. कालाद्व्यापक उच्यते
— व्यापको हि भगवान्
Nâda. 17. व्यापकं निष्कलं शिवम्
Sarvop. 4. पूर्वं व्यापकं चैतन्यम्

व्याप्ततम

Nṛisut. 5. न हीदं सर्वमेष हि व्याप्त
— एष एवोग्र एष हि व्याप्त (so with the other words of the Mantra
— व्याप्ततम उत्कृष्टतमः

व्यामिश्र

Gîtâ. 3. 2. व्यामिश्रेणैव वाक्येन

व्यावर्त्तन

Chhâ. 5. 3 2. वेत्थ पथोर्देवयानस्य पितृ णस्य च व्यावर्त्तना३ ।

व्यावृ

Amṛita. 35. सदा व्यावृत्य तिष्ठति

व्यावृत्

[…]. 1. 5. 2. न स पाप्मनो व्यावर्त्तते
[…]ri. 6. 1. अहोरात्रे एते व्यावर्त्तेते
[…]ma. 3. सर्वे कामा मनोगता व्यावर्त्तन्ते (सर्वान् कामानात्मनो गतान् व्यावर्त्तेरन् MSS.)

व्यावृतत्व

[…]ri. 3. 5. व्यावृतत्वमीर्ष्या

व्याशा

[…]ap. 88. आशाव्याशास्वपि

व्यास

10. 13. असितो देवलो व्यासः
37. मुनीनामप्यहं व्यासः
18. 75. व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्

व्याहृ

[…]. 1. 4. 1. सो ऽहमस्मीत्यग्रे व्याहरत्
4. ओमित्येतदग्रे व्याहरेत्
8. 13. ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्

व्याहृति

[…] 1. 5. 1. भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः
3. चतस्रश्चतस्रो व्याहृतयः
[…]ri. 6. 2. व्याहृतिभिः सावित्र्या च
[…] 4. 3. यो वै नृसिंहः..याः सप्त व्याहृतयस्तस्मै वै नमो नमः (15).
[…]. 2. सप्रणवा व्याहृतयः
3. भूरिति व्याहृतिः
— भुव इति व्याहृतिः
— स्वरिति व्याहृतिः
— ओं जनदिति व्याहृत्या
2. तिस्रो व्याहृतयस्त्रीणि छन्दांसि

Gopî. 5. ततो व्याहृतीस्ततो गायत्रीम्
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..याः सप्त व्याहृतयः (20).

व्युच्चर्

Bṛih. 2. 1. 20. यथाग्नेः क्षुद्रा विस्फुलिङ्गा व्युच्चरन्त्येवमेवास्मादात्मनः सर्वे प्राणाः .. व्युच्चरन्ति

व्युत्था

Bṛih. 3. 5. 1. पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थाय 4. 4. 22; Nṛisut. 6 (adds ससाधनेभ्यः before last word).
Kaṭhaśru. 1. यो वा व्युत्तिष्ठति किमस्य यज्ञोपवीतम्

व्युदस्

Gîtâ. 18. 51. रागद्वेषौ व्युदस्य च

व्युष्टि

Chhâ. 3. 13. 4. एतत्कीर्त्तिश्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत

व्युष्टिमन्त्

Chhâ. 3. 13. 4. स कीर्त्तिमान् व्युष्टिमान् भवति

व्यूह्

Bṛih. 5. 15. 1. व्यूह रश्मीन् समूह तेजः Iśâ. 16.
Gîtâ. 1. 2. दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढम्
3. व्यूढां द्रुपदपुत्रेण

व्यूह

Râmap. 90. अंगव्यूहानिलजाद्यैः

व्यूहन

Garbha. 1. वायुर्व्यूहने

व्योम, व्योमन्

Tait. 2. 1. 1. निहितं गुहायां परमे व्योमन्
3. 6. 1. एषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता
Śwet. 4. 8. ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् Nrip. 4. 2; 5. 2.
Maitri. 6. 34. व्योम्नि व्योम न लक्षयेत् — पदव्योमानुस्मरणम्
35. विद्युदिवाभ्रार्चिषः परमे व्योमन्
Mund. 2. 2. 7. व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः
Mahânâr. 1. 2. तदक्षरे परमे व्योमन्
Śiras. 1. अहमेव सर्वं व्योममेव सः (व्योमशब्दो ऽकारान्तः Nâr.)
5. व्योममिति भस्म (not in the MSS.)
Tejo. 9. तद्व्योम परमं स्थितम्

व्योमरूप

Tejo. 5. व्योमरूपं कलासूक्ष्मम्

व्योमसद्

Katha. 5. 2. वसद्‌तसद्व्योमसत् Mahânâr. 9. 3; 17. 8; Nrip. 3. 1.

व्रज्

Chhâ. 4. 16. 3. यथैकपाद्व्रजन्
5. यथोभयपाद्व्रजन्
6. 14. 2. एतां दिशं व्रज
8. 1. 6. आत्मानमननुविद्य व्रजन्ति ..आत्मानमनुविद्य व्रजन्ति !
8. 8. 4. आत्मानमननुविद्य व्रजतः
Katha. 2. 21. आसीनो दूरं व्रजति
Gauda. 3. 19. मर्त्यताममृतं व्रजेत्
4. 86. एवं विद्वाञ्छमं व्रजेत्
Kshur. 23. दग्ध्वा लयं व्रजेत् (bis).

Śiras. 4. तीर्थमेके व्रजन्ति
Nâda. 15. अष्टम्यां व्रजते रुद्रम्
16. दशम्यां च ध्रुवं व्रजे
Gîtâ. 2. 54. किमासीत व्रजेत कि
18. 66. मामेकं शरणं व्रज

व्रज

Brih. 6. 4. 23. इन्द्रस्यायं व्रजः कृत

व्रत

Chhâ. 2. 11. 2. महामनाः स्यात्तद्व्रत
2. 12. 2. न प्रत्यङ्ङग्निमाचामेन्न ष्ठीवेत्तद्व्रतम्
2. 13. 2. न कांचन परिहरेत्तद्व्र
2. 14. 2. तपन्तं न निन्देत्तद्व्रत
2. 15. 2. वर्षन्तं न निन्देत्तद्व्रत
2. 16. 2. ऋतून्न निन्देत्तद्व्रतम्
2. 17. 2. लोकान्न निन्देत्तद्व्रतम्
2. 18. 2. पशून्न निन्देत्तद्व्रतम्
2. 19. 2. संवत्सरं मज्जो नाश्नीयात्तद्व्रतं मज्जो नाश्नीयाद्वा
2. 20. 2. ब्राह्मणान्न निन्देत्तद्व्रत
2. 21. 4. सर्वमस्मीत्युपासीत त
Brih. 1. 5. 21. अथातो व्रतमीमांसा
23. तस्मादेकमेव व्रतं चरे
Tait. 3. 7. 1. अन्नं न निन्द्यात्तद्व्रतम्
3. 8. 1. अन्नं न परिचक्षीत त
3. 9. 1. अन्नं बहु कुर्वीत तद्व्र
3. 10. 1. न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत तद्व्रतम्
Śwet. 4. 9. छन्दांसि यज्ञाः क्रतवो व्रतानि
Maitri. 4. 3. स्वधर्मस्य वा एतद्व्रत
Nrisut. 6. देवानां व्रतमाचरन्
Śiras. 5. यस्माद्व्रतमिदं पाशुपत
Kâlâg. 1. व्रतमेतच्छांभवम्
Gopî. 5. व्रतं यस्तु समाचरेत्
Mukti. 2. 48. त्रिशूलिव्रतधारिणः

व्रतवन्त्

a. 1. व्रतवान् स्यादतन्द्रितः

व्रतिन्

a. 4. पुनरव्रती वा व्रती वा

व्रश्च्

.3. 9. 28. वृक्षो वृक्णो रोहति मू-
लात्
— मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृक्णः

व्रश्चन

ri. 1. 4. व्रश्चनं वातरज्जूनाम्

व्रात्य

na. 2. 11. व्रात्यस्त्वं प्राणैकऋषिः
11. ब्रह्मचारी च व्रात्यश्च

व्रीहि

.3. 14. 3. अणीयान् व्रीहेर्वा यवाद्वा
5. 10. 6. त इह व्रीहियवाः..इति
जायन्ते
5. 6. 1. अन्तर्हृदये यथा व्रीहिर्वा
6. 3. 13. व्रीहियवाः
6. 4. 13. व्रीहीनवघातयेत्
1.2. 1. 7. प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च
a. 6. तुषेण बद्धो व्रीहिः स्यात्

शंयु

nâr. 6. 4. भवा तोकाय तनयाय शं-
योः

शंयोर्वाक

3. शारीरयज्ञस्य..कः शंयो-
र्वाकः
4. तालुः शंयोर्वाकः

शंस्

.1 14 1. 9. ओमिति शंसति

Tait. 1. 8. 1. ओं शोमिति शस्त्राणि शं-
सन्ति
Mahânâr. 9. 13. उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमा-
नम्
Chûl. 9. शंसन्तमनुशंसन्ति
Râmap. 38. आहूय शंसतां सर्वम्
Gîtâ. 5. 1. पुनर्योगं च शंससि

शक्

Aib. 3. 3. तन्नाशक्नोद्वाचा ग्रहीतुम्
(similarly in 4-9).
Kaush. 2. 5. न तावत्प्राणितुं शक्नोति
— न तावद्भाषितुं शक्नोति
3. 2. न हि कश्चन शक्नुयात् स-
कृद्वाचा नाम प्रज्ञापयितुम्
Kena. 19. तन्न शशाक दग्धुम्
— नैतदशकं विज्ञातुम् 23.
23. तन्न शशाकादातुम्
Chhâ. 5. 1. 8. कथमशकतर्ते मज्जीवितु-
मिति 9, 10, 11.
5. 3. 5. नैकं चनाशकं विवक्तुमिति
Bṛih. 2. 4. 7. न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद्ग्र-
हणाय 8, 9; 4. 5. 8, 9,
10.
5. 2. 3. एतत्त्रयं शिक्षेद्दमं दानं द-
याम्
6. 1. 8. कथमशकत मदृते जी-
वितुमिति 9-12.
13. न वै शक्ष्यामस्त्वदृते जी-
वितुम्
Katha. 3. 2. नाचिकेतं शकेमहि
6. 4. इह चेदशकद्बोद्धुम्
12. न मनसा प्राप्तुं शक्यः
Maitri. 2. 6. स एको नाशकत्
6. 34. न शक्यते वर्णयितुं गिरा
Mahânâr. 7. 5. सतां शक्यः प्रोवाचोपनि-
षदिन्द्रः
20. 4. मघवञ्छग्धि तव तन्नः

Nṛisut. 9. नैष वयं वक्तुं शक्नुमः
Râmot. 5. श्रीरामेणैवं शिक्षितः
Mukti. 2. 43. न शक्यते मनो जेतुम्
Gîtâ. 1. 30. न च शक्नोम्यवस्थातुम्
5. 23. शक्नोतीहैव यः सोढुम्
6. 36. शक्यो ऽवाप्तुमुपायतः
11. 4. मन्यसे यदि तच्छक्यम्
8. न तु मां शक्यसे द्रष्टुम्
48. एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुम्
53. शक्य एवंविधो द्रष्टुम्
54. भक्त्या त्वनन्यया शक्यः
12. 9. अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि
18. 11. न हि देहभृता शक्यम्

शकट

Chhâ. 4. 1. 8. अधस्ताच्छकटस्य
Maitri. 2. 3. शकटमिवाचेतनमिदं शरीरम्

शकर

Bṛih. 3. 9. 28. मांसान्यस्य शकराणि

शकुन

Maitri. 6. 34. हिरण्यवर्णः शकुनः

शकुनि

Kaush. 1. 2. मत्स्यो वा शकुनिर्वा
Chhâ. 5. 2. 1. यत्किञ्चिदिदमा श्वभ्य आ शकुनिभ्यः
6. 8. 2. यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धः

शक्वर्यस्

Chhâ. 2. 17. 1. एताः शक्वर्यो लोकेषु प्रोताः 2.

शक्ति

Śwet. 2. 2. सुवर्गेयाय शक्त्या (so 3 MSS. agreeing with VS. xi. 2; the reading of TS. is शक्त्यै)
Śwet. 6. 8. परास्य शक्तिर्विवि यते
Nṛip. 3. 1. मन्त्रराजस्य.. शा ब्रूहि
— मायामेतां शक्तिं वि
— य एतां मायां शक्ति
Śiras. 4. ईशानीभिर्जननीभिश्च भिः
Nyâsa. 2. अग्निमाधाय शक्ति
Kaṭhaśru. 3. इष्ट्वा च शक्तितो य
Haṁsa. 2. हमिति बीजं स इति
Kâlâg. 1. के मंत्राः काः शक्त
Râmap. 10. शक्तिसेनाकल्पना
16. शक्तयस्तिस्र एव च
22. बीजशक्ती न्यसेत्
72. *vide* आदि
86. शक्तिं चाधाराख्यक
90. विमलादीश्च शक्तीर येत्

शक्तियोग

Śwet. 4. 1. बहुधा शक्तियोगाद्व कान्..दधाति

शक्त्यात्मन्

Haṁsa. 2. सदाशिवः शक्त्यात्म

शक्र

Mahânâr. 20. 3. ह्वयामि शक्रं पुरुहू न्द्रम्
Nâr. 2. शक्रश्च नारायणः

शङ्क्

Râmap. 39. स तु रामे शंकितः

शङ्कर

Nṛip. 1. 6. शङ्करं नीललोहितम
Skanda. 14. विरिञ्चिनारायणश त्मक

10t. 4. श्रीरामः प्राह शङ्करम्
10. 23. रुद्राणां शंकरश्चास्मि

शङ्कु

ब्ह्.2. 23. 4. यथा शङ्कुना सर्वाणि पर्णानि सन्तृण्णानि
1. 12. यथा सुहयः पड्वीशशङ्कून् संखिदेत्
1. 13. यथा महासुहयः पड्वीशशङ्कून् संवृहेत्*

शंख

2. 4. 8. यथा शंखस्य ध्मायमानस्य 4. 5. 9.
— शंखस्य तु ग्रहणेन 4. 5. 9.
18. यः शंखः स स्वयं विष्णुः
9. हस्ताः शंखादिभिर्युताः
92. गदारिशंखाब्जधरम्
93. शंखचक्रे गदाब्जे
1. 12. शंखं दध्मौ प्रतापवान्
13. ततः शंखाश्च भेर्यश्च
14. दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः
18. शंखान्दध्मुः पृथक्पृथक्

शंखचक्रगदाधर

pra. 1. ओं नमो नारायणाय शंखचक्रगदाधराय

शंखचक्रगदापाणि

2. शंखचक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत

शंखध्म

2. 4. 8. शंखस्य तु ग्रहणेन शंखध्मस्य वा 4. 5. 9.

शंखनाद

2. शंखनादश्चतुर्थः

शंखपुलिक

Gâruḍa. 2. यदि शंखपुलिकदूतस्त्वं यदि वा शंखपुलिकः स्वयम्

शंखमध्यग

Brahmav. 8. अकारः शंखमध्यगः

शठ

Mukti. 1. 51. असूयकायानृजवे शठाय
Gîtâ. 18. 28. शठो नैष्कृतिको ऽलसः

शत

Ait. 4. 5. शतं मा पुर आयसीररक्षन
Kaush. 1. 4. शतं फलहस्ताः &c.
2. 11. स जीव शरदः शतमिति (bis).
— शतं शरद आयुषो जीवस्व
Chhâ. 3. 16. 7. स ह षोडशवर्षशतमजीवत्प्र ह षोडशवर्षशतं जीवति य एवं वेद
4. 2. 1. षट् शतानि गवाम् 2.
7. 8. 1. शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते
7. 26. 2. शतं च दश चैकं च
8. 6. 6. शतं चैका च हृदयस्य नाड्यः Katha. 6. 16.
Brih. 2. 5. 19. अस्य हरयः शता दश
3. 9. 1. त्रयश्च त्री च शता (bis).
4. 3. 33. ये शतं मनुष्याणामानन्दाः स एकः पितॄणां जितलोकानामानन्दः (similarly 5 times more).
Isâ. 2. जिजीविषेच्छतं समाः
Tait. 2. 8. 1. ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः (similarly 9 times more).
Mahânâr. 4. 2. शतं मे घ्नन्ति पापानि शतमायुर्विवर्द्धति

Mahânâr. 3. एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च
6. जीवामि शरदः शतम्
Praśna. 3. 6. तासां शतं शतमेकैकस्याम्
Nṛip. 5. 10. अनुपनीतशतमेकम्
— उपनीतशतमेकम्
— गृहस्थशतमेकम्
— वानप्रस्थशतमेकम्
— यतीनां तु शतं पूर्णम्
— रुद्रजापकशतमेकम्
— अथर्वशिरःशिखाध्यायिकशतमेकम्
Garbha. 5. सप्तोत्तरं मर्मशतम्
— साशीतिकं सन्धिशतम्
— सनवकं स्नायुशतम्
— सप्त शिराशतानि
— पञ्च मज्जाशतानि
— अस्थीनि च ह वै त्रीणि शतानि षष्टिश्च
Gâruḍa. 3. शतं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा
Gopî. 5. वाजपेयशतानि च
Mukti. 1. 44. सारमष्टोत्तरं शतम्
46. गुह्यमष्टोत्तरं शतम्
50. एवमष्टोत्तरं शतम्
2. 11. समाशतैः
14. जन्मान्तरशताभ्यस्ता

शतक्रतु

Mahânâr. 7. 4. सर्वं पाहि शतक्रतो

शतधा

Śwet. 5. 9. शतधा कल्पितस्य च भागः
Maitri. 6. 8. सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः Praśna. 1. 8.
Nṛisut. 8. शतधा सहस्रधा भिन्नः

शतपत्राढ्य

Dhyâna. 15. शताब्जं शतपत्राढ्यम्

शतबाहु

Mahânâr. 4. 5. कृष्णेन शतबाहुना

शतभाग

Śwet. 5. 9. बालाग्रशतभागस्य

शतमूल

Mahânâr. 4. 1. सहस्रपरमा देवी श[illegible] शताङ्कुरा
2. दूर्वा अमृतसम्भूताः [illegible]मूलाः शताङ्कुराः (si[illegible] in 4 MSS.)

शतरुद्रिय

Kaivalya. 24. यः शतरुद्रियमधीते
Jâbâla. 3. शतरुद्रियेणेत्येतान्ये[illegible] अमृतस्य नामानि

शतविचक्षण

Prâṇâg. 1. बह्वीः शतविचक्षणाः

शतशस्

Gîtâ. 11. 5. शतशो ऽथ सहस्रश[illegible]

शतसंवत्सर

Aśrama. 2. शतसंवत्सराभिः क्रि[illegible] र्यजन्तः (4 times).

शतसहस्र

Śiras. 7. रुद्राणां शतसहस्राणि [illegible]प्राणि भवन्ति Ma[illegible]

शतसाहस्रार्द्ध

Dhyâna. 6. बालाग्रशतसाहस्रार्द्ध (so MSS).

शताङ्कुर

Mahânâr. 4. 1. शतमूला शताङ्कुरा
2. शतमूलाः शताङ्कुराः (singular in 4 MS[illegible]

शताधिक

ish. 14.. शताधिकाः स्त्रियस्तथा

शताब्ज

yâna. 15. शताब्जं शतपत्राढ्यम्

शतायुस्

ha. 1. 23. शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व

शतार्द्धार

et. 1. 4. शतार्द्धारं विंशतिप्रत्यराभिः

शतेषुधि

a. 16. सहस्राक्ष शतेषुधे

शत्रु

hânâr. 20. 2. जहि शत्रूंरप मृधो नुदस्व

a. 24. नमः कुमाराय शत्रवे

ish. 21. संहारार्थं च शत्रूणाम्

â. 3. 43. जहि शत्रुं महाबाहो

6. 6. वर्त्तेतात्मैव शत्रुवत्

11. 33. जित्वा शत्रून् भुंक्ष्व राज्यम्

12. 18. समः शत्रौ च मित्रे च

16. 14. असौ मया हतः शत्रुः

शत्रुघ्न

nap. 50. शत्रुघ्नभरतौ

51. शत्रुघ्नाधो विभीषणम्

not. 3. शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः

ukti. 1. 1. सीताभरतसौमित्रिशत्रुघ्ना-द्यैः

शत्रुत्व

i. 6. 6. अनात्मनस्तु शत्रुत्वे

शनकैस्

itri. 6. 28. शनकैरवटैवाक्वटकृद्धातु-कामः संविशति

शनि

tri. 7. 6. *vide* आदि

शनैस्

Kshur. 3. प्रणवेन शनैः शनैः

5. शनैरथ समुत्सृजेत्

21. निरपेक्षः शनैः शनैः

Nâda. 19. शनैर्मुञ्चेत् कलेवरम्

Gîtâ. 6. 25. शनैः शनैरुपरमेत्

शन्तम

Śwet. 3. 5. तया नस्तनुवा शन्तमया
Nîla. 8 (तन्वा)

Mahânâr. 13. 3. वोचेम शन्तमं हृदे

शप्

Brih. 6. 4. 12. यमेवंविद्वान् ब्राह्मणः शपति

Nyâsa. 4. निन्दितो न शपेत् परान्
Kaṭhaśru. 4.

शबरी

Râmap. 37. शबरीं गत्वा

शबल

Chhâ. 8. 13. 1. श्यामाच्छबलं प्रपद्ये शब-लाच्छ्यामम्

शब्द

Ait. 5. 1. येन वा शब्दं शृणोति

Kaush. 1. 7. केन शब्दानिति श्रोत्रेणेति

3. 2. श्रोत्रेण शब्दम्

3. श्रोत्रं सर्वैः शब्दैः सहाप्येति (bis); 4. 20.

4. श्रोत्रमेवास्मिन् सर्वे शब्दा अभिविसृज्यन्ते श्रोत्रेण सर्वाञ्छब्दानाप्नोति

5. तस्य शब्दः परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा

6. प्रज्ञया श्रोत्रं समारुह्य श्रोत्रेण सर्वाञ्छब्दानाप्नोति

7. न हि प्रज्ञापेतं श्रोत्रं शब्दं कंचन प्रज्ञापयेत्

Kaush. 3. 7. नाहमेतं शब्दं प्राज्ञासिषम्
8. न शब्दं विजिज्ञासीत श्रोतारं विद्यात्
4. 2. स्तनयित्नौ शब्दः
— शब्दे मृत्युः
6. शब्दस्यात्मेति वा अहमेतमुपासे . . एतमेवमुपास्ते शब्दस्यात्मा भवति
4. 14. शब्दे पुरुषस्तमेवाहमुपासे
Bṛih. 1. 5. 3. यः कश्च शब्दो वागेव
2. 1. 10. यन्तं पश्चाच्छब्दो ऽनूदेति
2. 4. 7. न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद्ग्रहणाय 8, 9; 4. 5. 8—10.
— शब्दो गृहीतः 8, 9; 4. 5. 8—10.
11. सर्वेषां शब्दानां श्रोत्रमेकायनम् 4. 5. 12.
3. 2. 6. स शब्देनातिग्राहेण गृहीतः श्रोत्रेण हि शब्दाञ्छृणोति
4. 4. 21. नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्
Kaṭha. 4. 3. शब्दान् . . एतेनैव विजानाति
Śwet. 2. 10. शब्दजलाश्रयादिभिः
Maitri. 6. 22. शब्दश्चाशब्दश्च
— शब्देनैवाशब्दमाविष्क्रियते
— तत्रा ओमिति शब्दः
— अन्तर्हृदयाकाशशब्दम्
23. यः शब्दस्तदोमित्येतदक्षरम्
Brahmav. 14. यस्मिन् संलीयते शब्दः
Amṛita. 14. शृणु शब्दमकर्णवत्
19. शब्दमेवाभिचिन्तयेत्
Dhyâna. 5. अनाहतं च यच्छब्दं तस्य शब्दस्य यत्परम्
Sarvop. 2. शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः
Parama. 2. न शब्दं न स्पर्शम्
Gîtâ. 1. 13. स शब्दस्तुमुलो ऽभवत्
7. 8. शब्दः खे पौरुषं नृषु
17. 26. सच्छब्दः पार्थ युज्यते

शब्दब्रह्मन्

Maitri. 6. 22. शब्दब्रह्म परं च यत् Brahmab. 17.
— शब्दब्रह्मणि निष्णात Brahmab. 17.
Gîtâ. 6. 44. शब्दब्रह्मातिवर्त्तते

शब्दमायावृत

Brahmab. 15. शब्दमायावृतो यावत

शब्दवादिन्

Maitri. 6. 22. अन्यथा परे शब्दवा

शब्दव्यञ्जनवर्जित

Amṛita. 4. मात्रालिङ्गपदं त्यक्त्वा शब्दव्यञ्जनवर्जितम्

शब्दसंज्ञाप्रणिधान

Garbha. 1. इष्टानिष्टानि शब्दसंज्ञाप्रणिधानाद्दशविधा

शब्दस्पर्शादि

Maitri. 4. 2. शब्दस्पर्शादयो ह्यर्थाः

शब्दाक्षर

Brahmab. 16. शब्दाक्षरं परं ब्रह्म

शब्दादि

Amṛita. 5. शब्दादिविषयाः पञ्च
Sarvop. 1. शब्दादीन् विषयान् स्थूलान्
— शब्दाद्यभावे ऽपि
— वासनामयाञ्छब्दादीन्
2. शब्दादिविषयान्
Gîtâ. 4. 26. शब्दादीन्विषयानन्ये
18. 51. शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा

शब्दोपलब्धि

Garbha. 1. श्रोत्रे शब्दोपलब्धौ

1. शम्

Chhâ. 3. 14. 1. शान्त उपासीत

ḫ. 4. 3. 5. शान्ते ऽग्नौ किंज्योतिरेवा- यम्

6. शान्ते ऽग्नौ शान्तायां वाचि

4. 4. 23. शान्तो दान्त उपरतः

ṭha. 3. 13. तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि

ret. 6. 19. निष्कलं निष्क्रियं शान्तम्

itri. 2. 4. शुद्धः पूतः शून्यः शान्तः 6. 28.

6. 23. यदस्यायं तच्छान्तमशब्दम्

31. शान्तादिलक्षणोक्तः

36. शान्तमेकं समृद्धं चैकम्

— यच्छान्तं तस्याधारं खम्

7. 3. शान्तमशब्दमभयम्

4. अन्तःशुद्धः पूतः शून्यः शान्तः

6. भान्तः क्षान्तः शान्तः

8. शमयाम इत्येवं ब्रुवाणाः

ṇḍ.1. 2. 11. शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः

hânâr. 8. 1. श्रुतं तपः शान्तं तपः

19. 1. भ्रूणहत्यां तिलाः शमयन्तु

22. 1. शमेन शान्ताः शिवमाच- रन्ति

śna. 5. 7. शान्तमजरममृतमभयम्

ṇḍû. 7. शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थम्

Nṛisut. 1 (शिवं first).

ḍa. 3. 44. विक्षिप्तं शमयेत् पुनः

47. स्वस्थं शान्तं सनिर्वाणम्

4. 45. विज्ञानं शान्तमद्वयम्

). 5. 10. शाश्वतं शान्तं सदाशिवम्

ut. 6. शान्ता दान्ता उपरताः

amab. 21. निष्कलं निर्मलं शान्तम्

nsa. 1. शान्ताय दान्ताय गुरुभक्ता- य

2. निरञ्जनः शान्तः प्रकाशितः

ma. 2. तं शान्तमचलमद्वयानन्दम्

Gîtâ. 18. 53. निर्ममः शान्तः

2. शम्

Tait. 1. 1. 1. शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः । 1. 12. 1.

शम

Tait. 1. 9. 1. शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च

Mahânâr. 21. 2. शम इत्यरण्ये मुनयस्त- स्माच्छमे रमन्ते

22. 1. शमेन शान्ताः शिवमाच- रन्ति शमेन नाकं मुनयो ऽन्वविन्दञ्छमो भूतानां दुराधर्षं शमे सर्वं प्रति- ष्ठितं तस्माच्छमः परमं व- दन्ति

Gauḍa. 4. 86. शमः प्राकृत उच्यते

— एवं विद्वाञ्छमं व्रजेत्

Krish. 17. शमो मित्रं सुदामा यः

Mukti. 2. 18. शममायाति दीपवत्

Gîtâ. 6. 3. शमः कारणमुच्यते

10. 4. क्षमा सत्यं दमः शमः

11. 24. धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो

18. 42. शमो दमस्तपः शौचम्

शमप्राप्त

Gauḍa. 3. 44. शमप्राप्तं न चालयेत्

शमयितृ

Mahânâr.25. 1. दमः शमयिता

शमल

Mahânâr.20. 12. शमलं कुसीदम्

शमान्वित

Muṇḍ.1. 2. 13. प्रशान्तचित्ताय शमान्वि-ताय

शमाय्

Tait. 1. 4. 2. शमायन्तु ब्रह्मचारिणः

शम्भु

Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा..शम्भुः 7. 7.

Nîlâ. 14. शिवो नः शम्भुराभव

शयन

Aruṇeya. 5. आसनशयनादिकं भूमौ (2 MSS. read आसनशयनाभ्याम्)

शय्या

Gîtâ. 11. 42. विहारशय्यासनभोजनेषु

शर

Bṛih. 1. 2. 2. तद्यदपां शर आसीत्

Maitri. 6. 24. धनुः शरीरमोमित्येतच्छरः

Muṇḍ.2. 2. 3. शरं ह्युपासानिशितं सन्धीयत

4. प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा Dhyâna. 19.

— शरवत्तन्मयो भवेत् Dhyâna. 19.

Kṛish. 25. शरः कालो ऽस्तुभोजनः

शरण

Chhâ. 2. 22. 3. इन्द्रं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्

4. प्रजापतिं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्

— मृत्युं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम्

Śwet. 3. 17. सर्वस्य शरणं सुहृत्

6. 18. मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये

Mahânâr. 6. 3. दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये

Nṛip. 8. 1. तामिहायुषे शरणं प्र

Gîtâ. 2. 49. बुद्धौ शरणमन्विच्छ

9. 18. निवासः शरणं सुहृ

18. 62. तमेव शरणं गच्छ

66. मामेकं शरणं व्रज

शरणागत

Vâsu. 2. मां पाहि शरणागतम्

शरद्

Kaush. 2. 11. स जीव शरदः श (bis).

— शतं शरद आयुषो ज

Chhâ. 2. 5. 1. शरत्प्रतिहारः 2. 16.

Kaṭha. 1. 23. स्वयं च जीव शरदो दिच्छसि

Maitri. 6. 33. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः हेमन्तः

7. 4. शरत् समानो वरु उत्तरत उद्यन्ति

Mahânâr. 4. 6. जीवामि शरदः शत

शरबर्हि

Bṛih. 6. 4. 12. प्रतिलोमं शरबर्हि स

शरभ

Maitri. 7. 6. *vide* आदि

Mukti. 1. 34. दक्षिणाशरभं स्कन्द

1. *vide* गारुड

शरभृष्टि

Bṛih. 6. 4. 12. तस्मिन्नेताः शरभृष्टीः लोमाः सर्पिषाक्ता जु

शरव्या

Nîla. 7. शिवा शरव्या या त

शरीर

Kaush. 1. 7. केन सुखदुःखे इति शरीरेणेति

2. 14. अस्माच्छरीरादुच्चक्रमुः (bis).
— अस्माच्छरीरादुत्क्रामति
3. 2. यावदस्मिञ्छरीरे प्राणो वसति तावदायुः
3. प्राण एव.. शरीरं परिगृह्योत्थापयति (bis).
— स यदास्माच्छरीरादुत्क्रामति
4. सह ह्येतावस्मिञ्छरीरे वसतः
5. शरीरमेवास्या एकमङ्गमुदूल्हम्
6. प्रज्ञया शरीरं समारुह्य शरीरेण सुखदुःखे आप्नोति
7. न हि प्रज्ञापेतं शरीरं सुखं न दुःखं किंचन प्रज्ञापयेत्
4. 2. शरीरे प्रजापतिः
16. शरीरे पुरुषस्तमेवाहमुपासे
20. इदं शरीरमात्मानमनुप्रविष्टः (bis).
3. 12. 3. इयं वाव सा यदिदमस्मिन्पुरुषे शरीरम्
4. यद्वैतत्पुरुषे शरीरमिदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नन्तः पुरुषे हृदयम्
3. 13. 7. यत्रैतदस्मिञ्छरीरे संस्पर्शेनोष्णिमानं विजानाति
5. 1. 7. शरीरं पापिष्ठतरमिव दृश्येत
8. 3. 4. अस्माच्छरीरात्समुत्थाय 8. 12. 3; Maitri. 2. 2.
8. 6. 4. यावदस्माच्छरीरादनुत्क्रान्तः
5. यत्रैतदस्माच्छरीरादुत्क्रामति
8. 8. 5. प्रेतस्य शरीरं.. संस्कुर्वन्ति

Chhâ. 8. 9. 1. शरीरे साध्वलङ्कृते 2.
— शरीरस्य नाशमन्वेष नश्यति 2.
8. 10. 1. यद्यपीदं शरीरमन्धं भवति 3.
8. 12. 1. मर्त्यं वा इदं शरीरम्
3. नोपजनं स्मरन्निदं शरीरम्
— अस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः
8. 13. 1. धूत्वा शरीरं.. ब्रह्मलोकमभिसम्भवामि
Bṛih. 1. 2. 6. शरीरं श्वयितुमध्रियत
— तस्य शरीर एव मन आसीत्
1. 5. 11. तस्यै वाचः पृथिवी शरीरम्
12. तस्य मनसो द्यौः शरीरम्
13. एतस्य प्राणस्यापः शरीरम्
2. 1. 18. स्वे शरीरे यथाकामं परिवर्त्तते
3. 2. 13. पृथिवीं शरीरं (अप्येति)
3. 7. 3. यस्य पृथिवी शरीरम् (similarly in 4—23.)
3. 9. 4. ते यदास्माच्छरीरान्मर्त्यादुत्क्रामन्ति
4. 3. 8. शरीरमभिसम्पद्यमानः
4. 4. 3. शरीरं निहत्याविद्यां गमयित्वा 4.
7. एवमेवेदं शरीरं शेते
12. शरीरमनुसञ्ज्वरेत्
5. 15. 1. अथेदं भस्मान्तं शरीरम् Isâ. 17.
6. 1. 7. इदं शरीरं पापीयो मन्यते
Tait. 1. 4. 1. शरीरं मे विचर्षणम्
2. 5. 1. शरीरे पाप्मनो हित्वा
3. 7. 1. शरीरमन्नादं प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितं शरीरे प्राणः
Katha. 2. 18. न हन्यते हन्यमाने शरीरे Gîtâ. 2. 20.

Katha. 2. 22. अशरीरं शरीरेषु
3. 3. शरीरं रथमेव तु
6. 4. प्राक् शरीरस्य विस्रसः
17. तं स्वाच्छरीरात्प्रवृहेत्
Swet. 2. 8. त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरम्
12. योगाग्निमयं शरीरम्
5. 10. यद्यच्छरीरमादत्ते
Maitri. 1. 2. अशाश्वतं मन्यमानः शरीरम्
3. अस्मिञ्छरीरे किं कामोपभोगैः (bis).
2. 3. शकटमिवाचेतनमिदं शरीरम्
4. अनेनेदं शरीरं चेतनवत् प्रतिष्ठापितम् 6.
5. चेतनेनेदं शरीरं चेतनवत् प्रतिष्ठापितम्
6. रथः शरीरं मनो नियन्ता
— अनेन खल्वीरितः परिभ्रमतीदं शरीरम्
7. प्रति शरीरेषु चरति
3. 2. तेषां यत्समुदयं तच्छरीरं ..यः..शरीरे..स भूतात्मा
4. शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतम्
6. 8. स्वाञ्शरीरादुपलभेतैनम्
24. धनुः शरीरमोमित्येतच्छरः
27. ब्रह्मणो वावैतत्तेजः .. यच्छरीरस्यौष्ण्यम्
38. शरीरप्रादेशाङ्गुष्ठमात्रम्
— अङ्गुष्ठप्रादेशशरीरमात्रम्
7. 11. उच्चारितमात्र एव सर्वं शरीरं विद्योतयति
Mund. 3. 1. 5. अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयः
Mahânâr. 20. 12. शरीरं यज्ञः
25. 1. शरीरमिध्मः

Praśna. 3. 1. कथमायात्यस्मिञ्छ[...]
3. मनोकृतेनायात्यस्मि[...]
4. 6. तदैतस्मिञ्छरीरे ए[...] भवति
6. 2. इहैवान्तः शरीरे..[...] रुषः
Kaivalya. 4. समग्रीवशिरःशरीरः
12. शरीरमास्थाय करो[...] र्वम्
Nrip. 1. 5. तेनैव शरीरेण देवत[...] करोति
Brahmav. 3. शरीरं तस्य वक्ष्या[...]
5. अकारस्य शरीरं तु
Śiras. 4. सूक्ष्मो भूत्वा शरीर[...] धितिष्ठति
Garbha. 1. चतुर्विधाहारमयं श[...]
— अस्मिन् पञ्चात्मके[...]
5. शरीरं कस्मात्
Prâṇâg. 2. स्वे शरीरे यज्ञं प[...] यामि
4. शरीरं वेदिः
— देवताः शरीरे ऽधिस[...] ताः
Nâda. 2. शरीरं सत्त्वमुच्यते
Dhyâna. 9. पुरुषस्य शरीरे तु
Yogaśi. 4. ईदृशे तु शरीरे वा
Nyâsa. 4. नात्यर्थं..शरीरमुप[...] Kaṭhaśru. 4.
Piṇḍa. 9. पिण्डे पिण्डे शरीरस्[...] ण्डदानेन संभवः
Sarvop. 2. प्राप्तशरीरसंबन्धवि[...] प्राप्तशरीरसंयोगमि[...]
Râmap. 10. कल्पितस्य शरीरस्य
Mukti. 2. 28. शरीरनाशदर्शित्वात्
Gîtâ. 1. 29. वेपथुश्च शरीरे मे
2. 22. तथा शरीराणि विहा[...] र्णानि

â. 5. 23. प्राक् शरीरविमोक्षणात्
11. 13. अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे
13. 1. इदं शरीरं कौन्तेय
15. 8. शरीरं यदवाप्नोति
18. 15. शरीरवाङ्मनोभिः

शरीरत्रय

isut. 3. तेजसा शरीरत्रयं संव्याप्य

शरीरत्व

tha. 5. 7. योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय
6. 4. ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते

शरीरदेश

h. 4. 4. 2. अन्येभ्यो वा शरीरदेशेभ्यः

शरीरभेद

4. 6. स एवंविद्वानस्माच्छरीरभेदादूर्ध्व उत्क्रम्य

शरीरयात्रा

â. 3. 8. शरीरयात्रापि च ते

शरीरस्थ

ha. 5. 4. शरीरस्थस्य देहिनः
â. 13. 31. शरीरस्थोऽपि कौन्तेय
17. 6. कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्रामम्

शरीरिन्

â. 2. 18. नित्यस्य . . शरीरिणः

शर्करा

t. 2. 10. शर्करावह्निवालुकाविवर्जिते

शर्मन्

Anâr. 20. 11. शर्म यच्छतु
11. 25. न लभे च शर्म

शर्याति

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

शर्व

Chûl. 12. शर्वो भवश्च रुद्रश्च

शल्य

Nîla. 14. निशीर्य शल्यानां मुखा

शठ्य

Chhâ. 4. 15. 5. यदु चैवास्मिञ्छव्यं कुर्वन्ति यदि च न

शशबिन्दु

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

शशय

Bṛih. 6. 4. 27. यस्ते स्तनः शशयः

शशाङ्क

Gîtâ 11. 39. वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः
15. 6. न शशांको न पावकः

शशिन्

Swet. 2. 11. खद्योतविद्युत्स्फटिकशशीनाम् (all the MSS. have शी. Nârâyaṇa says शशिनामिति युक्तः पाठः। छान्दसो वा मध्यदीर्घः)
Gîtâ 7. 8. प्रभास्मि शशिसूर्ययोः
10. 21. नक्षत्राणामहं शशी

शशिसूर्यनेत्र

Gîtâ. 11. 19. अनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्

शश्वच्छान्ति

Gîtâ. 9. 31. शश्वच्छान्तिं निगच्छति

शश्वत्

Chhâ. 6. 13. 2. तच्छश्वत्संवर्त्तते
Maitri. 6. 7. शश्वत्सूयमानात् सूर्यः
Krish. 3. शश्वत्स्पर्शार्पिते ऽस्माकम्

1. शस्त्र (शंस्)

Tait. 1. 8. 1. ओंशोमिति शस्त्राणि शंसन्ति

2. शस्त्र (शस्)

Kaush. 2, 6. तेजस्वितममिति शस्त्रेषु भवति

Gîtâ. 2. 23. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि

शस्त्रपाणि

Gîtâ. 1. 46. अशस्त्रं शस्त्रपाणयः

शस्त्रभृत्

Gîta. 10. 31. रामः शस्त्रभृतामहम्

शस्त्रसम्पात

Gîtâ. 1. 20. प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते

शस्या

Bṛih. 3. 1. 7. शस्यैव तृतीया 10.
10. व्यानः शस्या
— द्युलोकं शस्यया (जयति)

शाकल्य

Bṛih. 3. 9. 1. विदग्धः शाकल्यः 4. 1. 7.
10. वदैव शाकल्य तस्य का देवता 11–17.
26. तं ह न मेने शाकल्यः
4. 1. 7. तच्छाकल्यो ऽब्रवीत्

शाकायन्य

Maitri. 1. 2. आत्मविद्भगवाञ्छाकायन्यः
— अन्यान् कामान् वृणीष्वेति शाकायन्यः
2. 1. भगवाञ्छाकायन्यः सुप्रीतः
6. 29. अन्तर्हृदयः शाकायन्यः 30

शाकुनिक

Maitri. 6. 26. अप्सुचारिणः शाकुनिकः सूत्रयन्त्रेणोद्धृत्य

शाक्त

Tejo. 1. आणवं शांभवं शाक्त

शाक्कर

Kaush. 1. 5. शाक्करवैवते तिरश्ची
Maitri. 7. 5. शाक्करवैवते . . ऊर्ध्वान्ति

शाखा

Chhâ. 5. 2. 3. जायेरञ्चेवास्मिञ्छाख
6. 11. 2. यदेकां शाखां जीवो ज
Bṛih. 6. 3. 7. जायेरञ्छाखाः प्ररोहे लाशानि 8–12.
Maitri. 6, 4. शाखा आकाशवाय्वुदकभूम्यादयः
Nṛip. 5. 9. स शाखा अधीते
Mukti. 1. 10. तेषां शाखाश्च राघव
11. तेषां शाखा ह्यनेकाः
12. ऋग्वेदस्य तु शाखाः
— नवाधिकशतं शाखाः
13. शाखाः साम्नः परन्तप
— आथर्वणस्य शाखाः
14. एकैकस्यास्तु शाखाय
2. 36. *vide* शालिन्
Gîtâ. 15. 2. अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखाः

शांकर

Nâda. 10. शाङ्करी च तथाष्टमी

शाट्यायनी

Mukti. 1. 39. शाट्यायनी हयग्रीवम्
1. *vide* मुक्तिका

शाण्डिलीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. माण्डूकीपुत्रः शाण्डि
ल्यात्
— शाण्डिलीपुत्रो राथीत
रात्

शाण्डिल्य

bâ. 3. 14. 4. इति ह स्माह शाण्डिल्यः
ih. 2. 6. 1. कौण्डिन्यः शाण्डिल्यात् 4. 6. 1.
— शाण्डिल्यः कौशिकाच्च गौतमाच्च 4. 6. 1.
2. आग्निवेश्यः शाण्डिल्याच्चानभिम्लातात्
3. वात्स्यः शाण्डिल्यात् 4. 6. 3.
— शाण्डिल्यः कैशोर्यात् काप्यात् 4. 6. 3.
6. 5. 4. वामकक्षायणः शाण्डिल्यात्
— शाण्डिल्यो वात्स्यात्
kti. 1. 35. शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षुम्
1. *vide* गारुड

शान्तत्व

tri. 6. 29. शान्तत्वं योगाभ्यासादवाप्नोति

शान्तरजस्

6. 27. उपैति शान्तरजसम्

शान्तरूप

s. 4. शान्तरूपमोतप्रोतम्

शान्तसंकल्प

ia. 1. 10. शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्यात्

शान्तहृदय

â. 8. 8. 3. तौ ह शान्तहृदयौ प्रवव्रजतुः
4. शान्तहृदय एव विरोचनः
8. 9. 2. शान्तहृदयः प्राव्राजीः 8. 10. 3; 8. 11. 2.
8. 10. 1. स ह शान्तहृदयः प्रवव्राज 8. 11. 1.

शान्तात्मन्

Maitri. 5. 1. नमः शान्तात्मने तुभ्यम्
Sikhâ. 1. चतुर्थः शान्तात्मा प्लुतप्रयोगे

शान्ति

Tait. 1. 1. 1. शान्तिः शान्तिः शान्तिः 2. 1. 1; 3. 1. 1; Katha. 6. 19.
Katha. 1. 7. तस्यैतां शान्तिं कुर्वन्ति
17. इमां शान्तिमत्यन्तमेति Śwet. 4. 11; Śiras. 5.
5. 13. तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् Brahma. 3.
Śwet. 3. 12. सुनिर्मलामिमां शान्तिम्
4. 14. ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति
Mahânâr. 19. 1. तिलाः शान्तिं कुर्वन्तु (3 times).
23. 1. मनसा शान्तिः शान्त्या चित्तम्
Gauda. 3. 40. अक्षया शान्तिरेव च
Nṛip. 1. 1. ओं शान्तिः (3 times); Nṛisut. 1; Mukti. 1.
Brahmav. 13. यथा लीयति शान्तये
— तथा योज्यः शान्तये
Śiras. 3. शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वम्
5. आत्मन्. . शान्तिं संसृजति
— तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम्
Brahmab. 16. यदीच्छेच्छान्तिमाप्नुयात्
Mukti. 1. 41. तत्तच्छान्तिपुरःसरम्
1. पृथक् शान्तिमनुब्रूहि
— वाङ्मे मनसीति शान्तिः
— पूर्णमद इति शान्तिः
— सह नाववत्विति शान्तिः
— आप्यायन्त्विति शान्तिः
— भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः
2. 34. शान्तिमेति न संशयः

Gîtâ. 2. 66. न चाभावयतः शान्तिः
70. स शान्तिमाप्नोति न कामकामी
71. स शान्तिमधिगच्छति
4. 39. ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्
5. 12. शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्
29. ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति
6. 15. शान्तिं निर्वाणपरमाम्
12. 12. त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्
16. 2. त्यागः शान्तिरपैशुनम्
18. 62. तत्प्रसादात्परां शान्तिम्

शान्तिसमृद्ध

Tait. 1. 6. 2. शान्तिसमृद्धममृतम्

शाब्द

Bṛih. 2. 5. 9. अयमध्यात्मं शाब्दः सौवरः ..पुरुषः

शांभव

Tejo. 1. आणवं शांभवं शाक्तम्
Kâlâg. 1. व्रतमेतच्छांभवम्

शारीर

Bṛih. 2. 5. 1. शारीरस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषः
3. 9. 10. य एवायं शारीरः पुरुषः
4. 2. 3. अस्माच्छारीरादात्मनः
4. 3. 11. स्वप्नेन शारीरमभिप्रहत्य
35. शारीर आत्मा..उत्सर्जन्याति
Tait. 2. 3. 1. तस्यैष एव शारीर आत्मा 2. 4. 1; 2. 5. 1; 2. 6. 1.
Prâṇâg. 2. शारीरो अग्निर्नाम जराप्रणुदा
Gîtâ. 4. 21. शारीरं केवलं कर्म
17. 14. शारीरं तप उच्यते

शारीरक

Mukti. 1. 35. महच्छारीरकं शिखा
1. vide सरस्वतीरहस्य

शारीरयज्ञ

Prâṇâg. 1. शारीरयज्ञं व्याख्य
3. अस्य शारीरयज्ञस यजमानः
4. अस्य शारीरयज्ञस्य त्मा यजमानः

शार्कराक्ष्य

Chhâ. 5. 11. 1. जनः शार्कराक्ष्यः
5. 15. 1. शार्कराक्ष्य कं त्वम मुपास्से

शार्ङ्ग

Kṛish. 25. धनुः शार्ङ्गं स्वमाया

शार्दूल

Kaush. 1. 2. परश्वा वा शार्दूलो

शालावत्य

Chhâ. 1. 8. 1. शिलकः शालावत्यः
8. अन्तवद्वै किल ते शा त्यसाम

शालिन्

Mukti. 2. 36. सहस्राङ्कुरशाखाग्रफ लवशालिनः
62. घनाहंकारशालिनी

शालीनवृत्ति

Âśrama. 2. वार्त्ताकवृत्तयः शाली त्तयः
— शालीनवृत्तयो यजन याजयन्तः

शाश्वत

Bṛih. 5. 10. 1. तस्मिन्वसति शाश्वतीः
Îśâ. 8. अर्थान् व्यदधाच्छाश्वत समाभ्यः
Kaṭha. 2. 18. अजो नित्यः शाश्वतो पुराणः Gîtâ 2. 20.

ma. 5. 12. तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् Swet. 6. 12.
13. तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् Brahma. 3.
tri. 2. 4. स्थिरः शाश्वतः 6. 28.
ânâr. 11. 3. शाश्वतं शिवमच्युतम्
da. 4. 57. शाश्वतं तेन नास्ति वै
60. शाश्वताशाश्वताभिधा
p. 5. 10. शाश्वतं शान्तं सदाशिवम्
s. 5. शाश्वतं वै पुराणमिषम्
— शाश्वतेन वै पुराणेन . . ऊर्जेन
a. 16. हृदय्यां ब्रह्म शाश्वतम्
8. शाश्वतं ध्रुवमच्युतम्
h. 14. कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम्
1. 43. कुलधर्माश्च शाश्वताः
6. 41. उषित्वा शाश्वतीः समाः
8. 26. जगतः शाश्वते मते
10. 12. पुरुषं शाश्वतं दिव्यम्
14. 27. शाश्वतस्य च धर्मस्य
18. 56. शाश्वतं पदमव्ययम्
62. स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्

शाश्वतधर्मगोप्तृ

11. 18. त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता

शास्

2. 7. शाधि मां त्वां प्रपन्नम्

शासन

hmab. 10. न बन्धो न च शासनम्

शास्तृ

tri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा . . शास्ता 7. 7.

शास्त्र

tri. 7. 9. वेदादिशास्त्रहिंसकधर्माभिध्यानमस्तु
ita. 1. शास्त्राण्यधीत्य मेधावी

Mukti. 1. 46. इदं शास्त्रं मयादिष्टम्
48. शास्त्रगर्तेषु मुह्यते
2. 31. गुरुशास्त्रप्रमाणैस्तु
63. बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन
Gîtâ. 15. 20. इति गुह्यतमं शास्त्रम्
16. 24. तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते

शास्त्रकोविद

Chûl. 9. बह्वृचाः शास्त्रकोविदाः

शास्त्रवात्सल्य

Mukti. 1. श्रोत्रियं शास्त्रवात्सल्यम्

शास्त्रवासना

Mukti. 2. 2. शास्त्रवासनयापि च

शास्त्रविद्वंस्

Maitri. 7. 8. शूद्राश्च शास्त्रविद्वांसः

शास्त्रविधान

Gîtâ. 16. 24. ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तम्

शास्त्रविधि

Gîtâ. 16. 23. यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य
17. 1. ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य

शास्त्रित

Mukti. 2. 1. उच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति
— परमार्थाय शास्त्रितम्

शिक्य

Nyâsa. 4. कुण्डिकां चमसं शिक्यम् Kaṭhaśru. 4.
Aśrama. 4. *vide* धारिन्
— शिक्यकमण्डलुहस्ताः
— *vide* यज्ञोपवीत
Jâbâla. 6. त्रिदण्डं कमण्डलुं शिक्यम्

शिक्षा

Tait. 1. 2. 1. शीक्षां व्याख्यास्यामः
Muṇḍ. 1. 1. 5. शिक्षा कल्पो व्याकरणम्

शिक्षाध्याय

Tait. 1. 2. 1. इत्युक्तः शीक्षाध्यायः

शिखण्डिन्

Nîla. 1. नीलग्रीवं शिखण्डिनम्
15. विज्यं धनुः शिखण्डिनः

Gîtâ. 1. 17. शिखण्डी च महारथः

शिखर

Mahânâr. 15. 5. उत्तमे शिखरे देवी

शिखरिन्

Maitri. 1. 4. शिखरिणां प्रपतनम्

Gitâ. 10. 23. मेरुः शिखरिणामहम्

शिखा

Maitri. 6. 24. शिखास्य मनः

Mahânâr. 11. 13. तस्याः शिखाया मध्ये
Vâsu. 3.
25. 1. वेदः शिखा

Nṛip. 2. 2. ओं शिखायै वषट्
5. 2. कण्ठे बाहौ वा शिखायां वा बध्नीयात्

Brahmav. 10. शिखा च दीपसङ्काशा

Mahâ. 3. तस्यै शिखायै मध्ये

Brahma. 3. अग्नेरिव शिखा नान्या यस्य ज्ञानमयी शिखा
— शिखा ज्ञानमयी यस्य

Kaṭhaśru. 1. का वास्य शिखा
— विद्या सा शिखा

Parama. 1. शिखायज्ञोपवीतं च (two MSS. read शिखां)
2. न शिखां न यज्ञोपवीतम् (so 6 MSS. of text, but Nârâyaṇa reads शिखं)
— तदेव शिखा च तदेवोपवीतं च

Aruṇeya. 1. शिखां यज्ञोपवीतं च . . विसृजेत्
2. उपवीतं शिखां . . विसृजेत्

Âśrama. 4. vide धारिन्
— vide यज्ञोपवीत

Jâbâla. 6. शिखां यज्ञोपवीतं

Mukti. 1. 31. बिन्दुर्नादः शिरः
35. महच्छारीरकं शिर

शिखाभ

Brahmav. 11. शिखाभा दृश्यते प

शिखावर्जित

Âśrama. 4. शिखावर्जिता यज्ञो धारिणः

शिखिन्

Brahma. 3. स शिखीत्युच्यते

शिरस्

Bṛih. 1. 1. 1. अश्वस्य मेध्यस्य शि
1. 2. 3. तस्य प्राची दिक् शि
2. 2. 3. इदं तच्छिरः
2. 5. 17. अश्व्यं शिरः प्रत्यैरय
5. 5. 3. भूरिति शिर एकं शिर

Tait. 2. 1. 1. तस्येदमेव शिरः
2. 2. 1. तस्य प्राण एव शिरः
2. 3. 1. तस्य यजुरेव शिरः
2. 4. 1. तस्य श्रद्धैव शिरः
2. 5. 1. तस्य प्रियमेव शिरः

Maitri. 1. 2. शिरसास्य चरणावभिमानः
6. 6. स्वरित्यस्याः शिरः
33. शिरःपक्षसीपुच्छपृष्ठ (ter).

Mahânâr. 4. 4. शिरसा धारिता देवि

Nṛip. 2. 2. ओं शिरसे स्वाहा

Chûl. 14. अथर्वाणः शिरो विदुः

Siras. 3. तस्योत्तरतः शिरः
6. तद्वा अथर्वणः शिरः
— तस्माणो अभिरक्षति

Garbha. 3. मासद्वयेन शिरः

5. शिरः कपालं केशा दर्भाः
— चतुष्कपालं शिरः
1. अर्द्धमात्रा शिरस्तथा
10. गायत्रीं शिरसा सह
12. शिरस्यात्मनि धारयेत्
6. हस्ताङ्गुल्यः शिरो मुखम्
2. ओङ्कारः शिरः
— चतुर्थे कम्पते शिरः
1. शिरोललाटवक्षःस्कंधेषु
a. 4. समग्रीवशिरः शरीरः
2. शिरोललाटहृदयेषु
1. 31. बिन्दुर्नादः शिरः शिखा
6. 13. समं कायशिरोग्रीवम्
11. 14. प्रणम्य शिरसा देवम्

शिरा

ar. 11. 9. सततं तु शिराभिस्तु
a. 5. सप्त शिराशतानि

शिरोव्रत

3. 2. 10. शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम्

शिलक

1. 8. 1. शिलकः शालावत्यः 3, 6.

शिल्प

6. 5. 3. हरितः कश्यपः शिल्पात् कश्यपात्
— शिल्पः कश्यपः कश्यपान्नैध्रुवेः

शिल्पोपजीविन्

7. 8. नित्यं शिल्पोपजीविनः

1. शिव *adj.*

3. 5. या ते रुद्र शिवा तनूः Nîla. 8.
6. शिवां गिरित्र तां कुरु Nîla. 5.

Śwet. 3. 11. तस्मात् सर्वगतः शिवः
4. 14. ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति
16. ज्ञात्वा शिवं सर्वभूतेषु गूढम्
18. शिव एव केवलः
5. 14. भावाभावकरं शिवम्

Maitri. 7. 9. तया शिवमशिवमित्युद्दिशान्त्यशिवं शिवमिति

Mahânâr. 11. 3. शाश्वतं शिवमच्युतम्
17. 5. ब्रह्मा शिवो मे अस्तु
22. 1. शमेन शान्ताः शिवमाचरन्ति

Praśna. 2. 12. शिवां तां कुरु मोत्क्रमीः

Kaivalya. 6. शिवं प्रशान्तममृतम्

Mâṇḍû. 7. शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थम् Nrisut. 1 (शिवं शान्तं)
12. प्रपञ्चोपशमः शिवः Nrisut. 2.

Gauḍa. 1. 29. द्वैतस्योपशमः शिवः
2. 33. तस्मादद्वयता शिवा

Nrip. 4. 1. शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते Râmot. 3.

Sikhâ. 2. शिवमाकाशं मध्ये ध्रुवस्थम्

Prâṇâg. 1. अभयं कृणोतु शिवम्

Nîla. 6. शिवेन वचसा त्वा..अच्छावदामसि
7. शिवं बभूव ते धनुः
— शिवा शरव्या या तव
14. शिवो न शंभुराभव
15. शिवो अस्य निषङ्गतिः

Nâda. 17. व्यापकं निष्कलं शिवम्

Brahmab. 9. ज्ञात्वा च परमं शिवम्

Skanda. 1. शिवो ऽस्मि किमतः परम्

Mukti. 1. 25. ब्रह्मानन्दकरी शिवा

2. शिव *n.*

Mahânâr. 11. 12. स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः Kaivalya. 8.
15. 9. शिवोमाविशाप्रदाहाय (5 times).
Nṛip. 1. 4. स ब्रह्मा स शिवः स हरिः
Nṛisut. 9. ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी
Brahmav. 4. त्र्यक्षरस्य शिवस्य च
Śikhâ. 2. ईश्वरः शिव एव च
— शिव एको ध्येयः शिवङ्करः
Nîla. 22 नीलगलमालः शिवः
Nâr. 2. शिवश्च नारायणः
Kâlâg. 2. तृतीया रेखा सा..शिवो देवता
Skanda. 6. जीवः शिवः शिवो जीवः स जीवः केवलः शिवः
8. शिवाय विष्णुरूपाय
— शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः
9. एवं विष्णुमयः शिवः
10. शिवकेशवयोस्तथा
— स जीवः केवलः शिवः
Râmot. 4. क्षेत्रे ऽस्मिन्यो ऽर्चयेत्.. शिव
— स मुक्तो भविता शिव

शिवंकर

Śikhâ. 2. शिव एको ध्येयः शिवङ्करः

शिवतम

Maitri. 6. 31. अपां यः शिवतमो रसः
Nîla. 7. या त इषुः शिवतमा

शिवमय

Skanda. 9. यथा शिवमयो विष्णुः

शिवरूप

Kaivalya. 20. शिवरूपमस्मि
Skanda. 8. शिवरूपाय विष्णवे

शिवसायुज्य

Kâlâg. 2. देहं त्यक्त्वा शिव मेति

शिवात्मक

Mukti. 2. 56. मध्यपूर्णं शिवात

शिशिर

Maitri. 7. 5. हेमन्तशिशिरा ऊर्ध्वा उद्यन्ति
Śiras. 6. शिशिरे शिशिरम

शिशु

Bṛih. 2. 2. 1. यो ह वै शिशुं वे
— अयं वाव शिशुर्यो ध्यमः प्राणः

शिश्न

Ait. 1. 4. शिश्नं निरभिद्यत शि
2. 4. आपो रेतो भूत्वा शि विशन्
3. 9. तच्छिश्नेनाजिघृक्षत् नाशक्नोच्छिश्नेन ग्रहीतुं नच्छिश्नेनाग्रहैष्यत्
11. यदि शिश्नेन वि को ऽहमिति
Mahânâr. 14. 3. पापमकार्षं..शिश्
Kshur. 7. गुदे शिश्ने त्रयत्र

शिष्

Haṁsa. 2. पश्यत्यनागारश्च शि पार्श्वे भवतः

शिष्य

Nṛip. 1. 4. पुत्राय शुश्रूषवे न्यस्मै शिष्याय
Prâṇâg. 1. अमा शिष्यान्तो
Gâruḍa. 1. भारद्वाजः...शिष्ये यच्छत्

:ti. 1. 45. मयोपदिष्टं शिष्याय तुभ्यम्
49. सेवापराय शिष्याय
1. 3. तव शिष्येण धीमता
2. 7. शिष्यस्ते ऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्

शी

4. 5. गर्भे एव शयानो वामदेवः
sh. 2. 14. तद्वाप्राणच्चक्षुष्कं दारुभूतं शिष्ये
— तद्वाचा वदच्छिष्य एव (similarly 3 times more).
15. अहतेन वाससा सम्प्रच्छन्नः पिता शेते
4. 19. स उ ह शिश्य एव
— क्वैष एतद्बालाके पुरुषो ऽशयिष्ट
— यत्रैष एतद्बालाके पुरुषो ऽशयिष्ट
A.2. 13. 1. स्त्रिया सह शेते स उद्गीथः प्रतिस्त्री सह शेते स प्रतिहारः
3. 19. 1. तत्संवत्सरस्य मात्रामशयत
5. 9. 1. दश वा मासानन्तः शयित्वा
. 2. 1. 17. अन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिञ्छेते
19. पुरीतति शेते
— अतिघ्नीमानन्दस्य गत्वा शयीतैवमेवैष एतच्छेते
3. 2. 11. आध्मातो मृतः शेते
4. 4. 7. वल्मीके मृता प्रत्यस्ता शयीतैवमेवेदं शरीरं शेते
22. तस्मिञ्छेते सर्वस्य वशी
a. 1. 11. सुखं रात्रीः शयिता
2. 21. शयानो याति सर्वतः
6. भोगायमानो यदा शयते रुद्रः
20. ये वावटेषु शेरते

शीकर

Mahâ. 3. सन्तते शीकराभिश्च (so Nârâyaṇa; but Saṁkarânanda सन्तत्यै शीत्कराभिश्च)

शीघ्र

Maitri. 2. 1. शीघ्रमात्मज्ञः कृतकृत्यः

शीत

Parama. 2. न शीतं न चोष्णम्

शीतोपघातिन्

Nyâsa. 3. शीतोपघातिनीं कन्थाम् Kathaśru. 4.

शीतोष्ण

Tejo. 13. शीतोष्णं क्षुत्पिपासं च
Nyâsa. 2. गर्भवासभयाद्भीतः शीतोष्णाभ्यां तथैव च
Gîtâ. 2. 14. शीतोष्णसुखदुःखदाः
6. 7. शीतोष्णसुखदुःखेषु 12. 18.

शीर्ष, शीर्षन्

Bṛih. 2. 5. 16. वामश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच
Tait. 1. 6. 1. व्यपोह्य शीर्षकपाले
Mahânâr. 10. 1. द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य
Śiras. 3. स्वस्ते शीर्षम्
6. प्रैरयत्पवमानो ऽधि शीर्षतः

शीर्षण्य

Kaush. 1. 5. भद्रयज्ञायज्ञीये शीर्षण्ये

शुक

Mukti. 1. 2. वसिष्ठाद्यैः शुकादिभिः

शुकरहस्य

Mukti. 1. *vide* सरस्वतीरहस्य

शुक्तस्वर

Maitri. 3. 5. शुक्तस्वरो ऽन्नतमः

शुक्र

Bṛih. 4. 3. 11. शुक्रमादाय पुनरेति स्थानम्

Iśâ. 8. शुक्रमकायमव्रणम्

Kaṭha. 5, 8. तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतम् 6. 1.

6. 17. तं विद्याच्छुक्रममृतम्

Śwet. 4. 2. तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदापः

Maitri. 1. 3. *vide* संघात

6. 24. तद्ब्रह्म त्वामृतं शुक्रम्

35. एतच्छुक्रमेतदमृतमेतद्ब्रह्मविषयम्

7. 9. बृहस्पतिर्वै शुक्रो भूत्वा

Muṇḍ. 3. 2. 1. शुक्रमेतदतिवर्त्तन्ति धीराः

Mahânâr. 1. 1. शुक्रेण ज्योतींषि समनुप्रविष्टः

7. तदेव शुक्रममृतं तद्ब्रह्म

20. 25. शुक्रशोणित ओजांसि मे शुध्यन्तां (so MSS).

Garbha. 2. अस्थिभ्यो मज्जा मज्जातः शुक्रम्

— शुक्रशोणितसंयोगादावर्त्तते गर्भः

3. *vide* ध्य

5. शुक्रकुडवम्

शुक्ल

Kaush. 4. 19. शुक्लस्य कृष्णस्य पीतस्य

Chhâ. 1. 6. 5. यदेतदादित्यस्य शुक्लं भाः 6.

1. 7. 4. यदेतदक्ष्णः शुक्लं भाः (bis).

3. 2. 3. एतदादित्यस्य शुक्लं रूपम्

6. 4. 1. यच्छुक्लं तदपाम् 2—4.

6. यदु शुक्लमिवाभूदित्यपां रूपम्

8. 6. 1. शुक्लस्य नीलस्य पीतस्य

— एष शुक्ल एष नील एष पीतः

Bṛih. 2. 2. 2. यच्छुक्लं तेनेन्द्रः

Bṛih. 4. 3. 20. शुक्लस्य नीलस्य पिङ्ग

4. 4. 9. तस्मिञ्छुक्लमुत नीलम

6. 4. 14. पुत्रो मे शुक्लो जायेत

6. 5. 3. आदित्यानीमानि शु यजूंषि

Śwet. 4. 5. लोहितशुक्लकृष्णां M nâr. 9. 2.

Maitri. 6. 35. तच्छुक्लं पुरुषमलिङ्गम

Praśna. 1. 12. कृष्णपक्ष एव रयिः प्राणस्तस्मादेते ऋषय क्ल इष्टिं कुर्वन्ति

Kshur. 9. शुक्लां नाडीं समाश्रये

Siras. 2. यो वै रुद्रः..यच्च शु

3. यत्तारं तच्छुक्लं यच्छुक्लं सूक्ष्मम्

4. कस्मादुच्यते शुक्लं..त दुच्यते शुक्लम्

Garbha. 2. शुक्लो रक्तः कृष्णो धू

Gîtâ. 8. 24. अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः

26. शुक्लकृष्णे गती ह्येते

शुक्लध्यानपरायण

Jâbâla. 6. शुक्लध्यानपरायणो आ त्मनिष्ठः

शुक्लयजुर्वेद

Mukti. 1. शुक्लयजुर्वेदगतानां..। निषदाम्

शुङ्ग

Chhâ. 6. 8. 3. तत्रैतच्छुङ्गमुत्पतितं सो विजानीहि 5.

4. अन्नेन शुङ्गेनापो मूल न्विच्छ

— अद्भिः शुङ्गेन तेजो मूल न्विच्छ तेजसा शुङ्गेन न्मूलमन्विच्छ 6.

1. शुच् (शोके)

Chhâ. 7. 1. 3. सो ऽहं भगवः शोचामि

h. 1. 5. 19. आनन्द्येव भवत्यथो न शोचति
20. यदु किञ्चेमाः प्रजाः शोचन्ति
ha. 2. 22. आत्मानं मत्वा धीरो न शोचति 4. 4.
5. 1. पुरं..अनुष्ठाय न शोचति
6. 6. इन्द्रियाणां पृथग्भावं .. मत्वा धीरो न शोचति
t. 4. 7. अनीशया शोचति मुह्यमानः Mund. 3. 1, 2.
da. 1. 28. ओङ्कारं मत्वा धीरो न शोचति
ot. 4. मोक्षयिष्यामि मा शुचः Gîtâ. 18. 66.
. 2. 26. नैनं शोचितुमर्हसि
27. न त्वं शोचितुमर्हसि 30.
12. 17. न शोचति न कांक्षति 18. 54.
. 16. 5. मा शुचः..पाण्डव

2. **शुच्** (क्लेदे &c.)

. 6. 2. 3. यत्र क्व च शोचति स्वेदते वा पुरुषः
at. 10. अकारे शोचितं पद्मम्

शुचि *adj.*

. 8. 15. 1. शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानः
a. 3. 8. समनस्कः सदा शुचिः
. 2. 10. समे शुचौ शर्करा..विवर्जिते
ri. 6. 30. शुचौ देशे शुचिः सत्त्वस्थः
34. तत एव पवमानपावकशुचयः
— पवमानपावकशुचिसंघातो हि जाठरः
35. अष्टपादं शुचिं हंसं..पश्यन् (*vide* शुचिस्)
36. इमौ स्थितावात्मशुची

Kaivalya. 4. शुचिः समग्रीवशिरःशरीरः
Śiras. 7. शुचिः पूतः कर्मण्यो भवति
Nyâsa. 2. शुचौ देशे परिभ्रमन्
Jâbâla. 5. शुचिरद्रोही भैक्षाणः
Gîtâ. 6. 11. शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य
41. शुचीनां श्रीमतां गेहे
12. 16. अनपेक्षः शुचिर्दक्षः

शुचिषद्

Katha. 5. 2. हंसः शुचिषद्वसुः Mahânâr. 9. 3; 17. 8; Nrip. 3. 1.

शुचिस्

Chûl. 1. अष्टपादं शुचिं हंसं (शुचिरुज्ज्वलं शुचिःशब्दः सकारान्तो नपुंसकम् Nârâyana.)

शुतुद्री

Mahânâr. 5. 4. इमं मे..सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता

शुद्धपक्ष

Kaush. 2. 3. शुद्धपक्षे वा पुण्ये नक्षत्रे

शुद्धमानस

Jâbâla. 6. तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः शुद्धमानसः

शुद्धसत्त्व

Mund. 3. 2. 6. यतयः शुद्धसत्त्वाः Mahânâr. 10. 6. Kaivalya. 3.

शुद्धस्फटिक

Śiras. 5. शुद्धस्फटिकसन्निभा वर्णेन
Dhyâna. 13. शुद्धस्फटिकसङ्काशम् Yogat. 11; Hamsa. 1

शुद्धि

Gopî. 5. न शुद्धिर्गोपीचन्दनात

शुद्धितम

Maitri. 6. 25. शुद्धितमया धिया

शुध्

Chhâ. 5. 10. 10. शुद्धः पूतः पुण्यलोको भवति

Brih. 5. 5. 2. शुद्धमेवैतन्मण्डलं पश्यति

5. 14. 8. शुद्धः पूतो ऽजरो ऽमृतः

Isâ. 8. शुद्धमपापविद्धम्

Katha. 4. 15. यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्तम्

Maitri. 2. 4. शुद्धः पूतः शून्यः शान्तः 6. 28.

7. शुद्धः स्थिरो ऽचलश्चालेप्यः

6. 31. शुद्धः पूतः शून्यः शान्तादिलक्षणोक्तः

34. तत् प्रयत्नेन शोधयेत्

— शुद्धं चाशुद्धमेव च Brahmab. 1.

— शुद्धं कामविवर्जितम् Brahmab. 1.

38. ततः शुद्धः.. चैतन्यं.. पश्यति

7. 1. निर्गुणः शुद्धो भास्वरः

6. शुद्धः पूतो भान्तः क्षान्तः

Mahânâr. 20. 15. प्राणापानव्यानोदानसमाना मे शुध्यन्ताम्

16. वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्ध्याकूतिसङ्कल्पा मे शुध्यन्ताम्

17. शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरजंघाशिश्नोपस्थपायवो मे शुध्यन्ताम्

18. त्वक्चर्ममांसरुधिरस्नायुमेदोस्थिमज्जा मे शुध्यन्ताम्

19. शब्दस्पर्शरसरूपगन्धा मे शुध्यन्ताम्

Mahânâr. 20. 20. पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशा शुध्यन्ताम्

21. अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयानन्दमया मे शुध्यन्ताम्

24. देहि देहि ददापयिता शुध्यन्ताम्

25. शुक्रशोणितओजांसि शुध्यन्ताम्

Kaivalya. 24. प्रयाति शुद्धं परमात्मरूप

Gauda. 4. 87. शुद्धं लौकिकमिष्यते

Nrisut. 3. शुद्धः संविष्टो निर्विघ्नः

9. नित्यः शुद्धो बुद्धः सत्य

— अत एव शुद्धो ऽयात्म रूपः

— नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तम्

Nâda. 17. ततः परतरं शुद्धम्

Hamsa. 2. शुद्धो बुद्धो नित्यः

Nâr. 2. शुद्धो देव एको नाराय

Gopî. 2. शुद्धान्तःकरणानाम्

Râmap. 85. भूतादिकं शोधयेत्

Mukti. 2. 3. वासनौघेन शुद्धेन

61. शुद्धा च मलिना तथा

— शुद्धा जन्मविनाशिनी

73. दृशिस्तु शुद्धो ऽहम्

शुभ्

Kena. 25. स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमाना

Nrip. 2. 4. शोभनः शोभमानः कल्याणः (bis).

शुभ

Śwet. 2. 13. गन्धः शुभो मूत्रपुरीषमल्पम्

3. 4. स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु 4. 1, 12.

Mahânâr. 10. 3. स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु

ti. 2. 3. शुभश्चैवाशुभश्च तौ
6. योजनीया शुभे पथि
— शुभेष्वेवावतारयेत्
7. शुभं तस्मादपीतरत्
9. शुभामेव समाचर
— शुभायां वासनावृद्धौ
32. शुभो ऽप्यसौ त्वया त्याज्यः

शुभशुक्ल

nd. 1. द्वितीया शुभशुक्ला रौद्री (so 4 MSS.; another has शुक्ला)

शुभाकल्प

l. 5. सदाचारः शुभाकल्पः

शुभाङ्गिन्

nap. 32. रक्षोघ्नाय शुभांगिने

शुभाशुभ

tri. 6. 16. यत्किञ्चिच्छुभाशुभं दृश्यतेह लोके
20. हन्ति कर्म शुभाशुभम् 34.
ur. 20. एवं शुभाशुभैर्भावैः
dha. 3. शुभाशुभं च कर्म विन्दति 5.
4. यन्मया..कृतं कर्म शुभाशुभम्
— न च कर्म शुभाशुभं विन्दति
ma. 1. एवमिष्टापूर्तैः शुभाशुभैर्न लिप्यते
— यत्र जायति शुभाशुभमनिरुक्तमस्य देवस्य
ma. 3. सर्वत्र शुभाशुभयोरनभिस्नेहः
ti. 2. 5. शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्याम्
2. 57. तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्

शुभाशुभपरित्यागिन्

12. 17. शुभाशुभपरित्यागी

शुभाशुभफल

Gîtâ. 9. 28. शुभाशुभफलैः..कर्मबन्धनैः

शुभ्र

Mund.2. 1. 2. अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रः
2. 2. 9. तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिः
3. 1. 5. ज्योतिर्मयो हि शुभ्रः
3. 2. 1. यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम्
Praśna. 4. 10. शुभ्रमक्षरं वेदयते यः
Brahma. 1. शुभ्रमक्षरं यद्ब्रह्म
2. शुभ्रं यज्ञोपवीतम्

शुश्रूषा

Mukti. 1. 4. भक्त्या शुश्रूषया..स्तुवन्

शुश्रूषु

Nrip. 1. 4. पुत्राय शुश्रूषवे दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय च

शुष्

Chhâ. 6. 11. 2. एकां शाखां जीवो जहात्यथ सा शुष्यति
— द्वितीयां जहात्यथ सा शुष्यति तृतीयां जहात्यथ सा शुष्यति
— सर्वं जहाति सर्वः शुष्यति
Brih. 1. 3. 19. प्राण उत्क्रामति तदेव तच्छुष्यति
5. 12. 1. शुष्यति वै प्राण ऋते ऽन्नात्
Mukti. 2. 38. शोषयाशु यथा शोषमेति
Gîtâ. 2. 23. न शोषयति मारुतः

शुष्क

Kaush. 2. 14. तद्धाप्राणच्छुष्कं दारुभूतं शिश्ये

Chhâ. 5. 2. 3. यद्यप्येनच्छुष्काय स्थाणवे ब्रूयात्

Brih. 6. 3. 7. य एनं शुष्के स्थाणौ निषिञ्चेत् 8—12.

शुष्कभृंगार

Kaush. 2. 6. उक्थं ब्रह्मेति ह स्माह शुष्कभृंगारः

शुष्मिन्

Prâṇâg. 1. अनमीवस्य शुष्मिणः

शूद्र

Chhâ. 4. 2. 3. हारेत्वा शूद्र तवैव
5. आजहारेमाः शूद्र

Bṛih. 1. 4. 15. तदेतद्ब्रह्म क्षत्रं विट् शूद्रः
— शूद्रेण शूद्रः (अभवत्)

Maitri. 7. 8. शूद्राश्च शास्त्रविद्वांसः

Gîtâ. 9. 32. स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः
18. 41. शूद्राणां च परन्तप
44. शूद्रस्यापि स्वभावजम्

शूद्रशिष्य

Maitri. 7. 8. अयाज्ययाजकाः शूद्रशिष्याः

शून्य

Maitri. 2. 4. शुद्धः पूतः शून्यः शान्तः 6. 28.
6. 31. शुद्धः पूतः शून्यः शान्तादिलक्षणोक्तः
7. 4. अन्तःशुद्धः पूतः शून्यः

Nṛisut. 6. आनन्दघनं शून्यमभवत्
— आत्मप्रकाशं शून्यं जानन्तः

Amṛita. 11 शून्यं कृत्वा निरात्मकम्

Tejo. 2. सर्वं च परमं शून्यम्

Aśrama. 4. शून्यागारदेवगृहवासिनः

शून्यभाव

Amṛita. 11. शून्यभावेन युञ्जीयात्

Tejo. 10. अशून्यं शून्यभावं च

शून्यभूत

Maitri. 6. 23. निःशब्दः शून्यभूतम्

शून्यागार

Maitri. 6. 10. यद्वन्न कश्चिच्छून्यागारे व
मिन्यः प्रविष्टाः स्पृ

Aśrama. 4. शून्यागारदेवगृहवासिनः

Jâbâla. 6. *vide* स्थण्डिल

शून्यातीत

Tejo. 10. शून्यातीतमवस्थितम्

शूर

Mahânâr. 20. 2. सोमं पिब वृत्रहञ्छूर
3. सुहवं शूरमिन्द्रम्

Śiras. 4. अभि त्वा शूर नोनुमः

Aruṇeya. 5. शूरो य एवं वेद

Gîtâ. 1. 4. अत्र शूरा महेष्वासाः
9. अन्ये तु बहवः शूराः

शूल

Chhâ. 7. 15. 3. यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणा
लेन समासं व्यतिसन्द

शूलपाणि

Mahâ. 2. त्र्यक्षः शूलपाणिः पु
(Saṁkarânanda read
त्र्यक्षशूलपाणिपुरुषः)

शृंखला

Mukti. 2. 39. मनो ज्ञस्य हि शृंखला

शृङ्ग

Bṛih. 3. 1. 1. दश दश पादा एकैकस्य
शृङ्गयोः

Mahânâr. 10. 1. चत्वारि शृङ्गा त्रयो अ
पादाः

Nṛisut. 4. संयोज्य शृङ्गैर्ऋषभस्य
6. शृङ्गेषु शृङ्गं संयोज्य
शृङ्गेषु योजयेत्

b. 6. भृङ्गाभ्यां भृङ्गमाबध्य
7. भृङ्गं भृङ्गार्द्धमाकृष्य भृङ्गेणानेन योजयेत्
— भृङ्गमेनं परे भृङ्गे तमनेनापि योजयेत्
10. भृङ्गमिन्द्रः सखा सुराः

भृङ्गप्रोत

it. 4. भृङ्गप्रोतान् पदान् स्पृष्ट्वा

भृङ्गार्द्ध

it. 7. भृङ्गं भृङ्गार्द्धमाकृष्य

शृम्

ip. 68. हं सं भृं वृं लं शृं जृं च

शॄ

. 3. 9. 26. अशीर्यो न हि शीर्यते 4. 2. 4; 4. 4. 22; 4. 5. 15.
ma. 3. शीर्णपर्णफलभोजिनः

शेवधि

ia. 2. 10. जानाम्यहं शेवधिरित्यनित्यम्
ri. 6. 30. परमं वै शेवधेरिव परस्योद्धरणम्
ti. 1. 51. शेवधिष्टे ऽहमस्मि

शेष

tri. 6. 34. शेषान्ये ग्रन्थविस्तराः
meya. 1. शेषं विसृजेत्
ama. 3. शेषानष्टौ मासान्

शेषनाग

h. 14. शेषनागो ऽभवद्रामः

शेषस्थिरसमाधान

ti. 2. 71. शेषस्थिरसमाधानो मयि त्वं भव

शैलसम

dna. 3. यदि शैलसमं पापम्

117

शैलिनि, शैलिन

Brih. 4. 1. 2. जित्वा शैलिनिः
— तथा तच्छैलिनो ऽब्रवीत्

शैव

Nyâsa. 5. अथ शैवं पदं यत्र

शैब्य

Praśna. 1. 1. शैब्यश्च सत्यकामः 5. 1.
Gitâ. 1. 5. शैब्यश्च नरपुंगवः

शोक

Chhâ. 7. 1. 3. तरति शोकमात्मवित्
— शोकस्य पारं तारयतु
8. 4. 1. न जरा न मृत्युर्न शोकः
Brih. 3. 5. 1. शोकं मोहं जरां मृत्युमत्येति
4. 3. 22. तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान्
Iśâ. 7. तत्र को मोहः कः शोकः
Katha. 2. 12. हर्षशोकौ जहाति
Maitri. 1. 3. *vide* आद्य
3. 5. जरा शोकः..इति तामसानि
Mund. 3. 2. 9. तरति शोकं तरति पाप्मानम्
Atmapra. 1. शोकमोहविनिर्मुक्तं विष्णुम्
Gitâ. 1. 47. शोकसंविग्नमानसः
2. 8. ममापनुद्याच्छोकम्
17. 9. दुःखशोकामयप्रदाः
18. 27. हर्षशोकान्वितः कर्ता
35. यया स्वप्नं भयं शोकम्

शोकातिग

Katha. 1. 12. शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके 18.

शोकान्तर

Brih. 4. 3. 21. अकामं रूपं शोकान्तरम्

शोणित

Maitri. 1. 3. *vide* संघात
Mahânâr. 20. 25. शुक्रशोणितओजांसि मे शुध्यन्ताम्
Garbha. 2. रसाच्छोणितं शोणितान्मांसम्
— शुक्रशोणितसंयोगात्
Piṇḍa. 4. मांसत्वक्शोणितोद्भवः

शोभन

Nṛip. 2. 4. शोभनः शोभमानः (bis).

शोम्

Tait. 1. 8. 1. ओं शोमिति शस्त्राणि शंसन्ति

शोष

Mukti. 2. 38. यथा शोषमेति संसारपादपः

शोषण

Maitri. 1. 4. अन्यानां शोषणं महार्णवानाम्

शौङ्गीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. आर्त्तभागीपुत्रः शौङ्गीपुत्रात्
— शौङ्गीपुत्रः साङ्कृतीपुत्रात्

शौच

Nyâsa. 4. स्नानं दानं तथा शौचम्
Kaṭhaśru 4.
Skanda. 12. शौचमिन्द्रियनिग्रहः
Mukti. 2. 67. कस्य शौचं विधीयते
Gîtâ. 13. 7. आचार्योपासनं शौचम्
16. 3. तेजः क्षमा धृतिः शौचम्
7. न शौचं नापि चाचारः
17. 14. शौचमार्जवम्
18. 42. शमो दमस्तपः शौचम्

शौद्र

Bṛih. 1. 4. 13. स शौद्रं वर्णमसृजत

शौनक

Chhâ. 1. 9. 3. अतिधन्वा शौनकः
4. 3. 4. शौनकं च कापेयम्
7. शौनकः कापेयः
Muṇḍ. 1. 1. 3. शौनको ह वै महाशा
Brahma. 1.

शौर्य

Gîtâ. 18. 43. शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं

शौल्वायन

Bṛih. 4. 1. 3. उदङ्कः शौल्वायनः
— तथा तच्छौल्वायनो ऽब्र

शौव

Chhâ. 1. 12. 1. अथातः शौव उद्गीथः

श्मश्रु

Kaṭhaśru. 3. केशश्मश्रुलोमनखानि

श्याम

Chhâ. 8. 13. 1. श्यामाच्छबलं प्रपद्ये श लाच्छ्यामम्
Bṛih. 6. 4. 16. पुत्रो मे श्यामो लोहिता जायेत
Râmap. 25. प्रकृत्या सहितः श्यामः

श्यामाक

Chhâ. 3. 14. 3. श्यामाकाद्वा श्यामाक ण्डुलाद्वा
Aśrama. 3. तदाहृतोदुंबरबदरनीवा श्यामाकैः

श्यामाकतण्डुल

Chhâ. 3. 14. 3. श्यामाकाद्वा श्यामाक ण्डुलाद्वा

श्याल

Gîtâ. 1. 34. श्यालाः सम्बन्धिनस्त

श्याव

12. श्यावश्च पुरुषस्तथा (This is the reading of one MS. and of Nârâyaṇa who says श्यावा विकृता अश्वा इन्द्रियाणि नेत्रादीनि यस्य. Three MSS. read श्यावाश्च. The Calc. text has ईश्वरः)

श्येन

4. 5. अधः श्येनो जवसा निरदीयम्
h. 2. 9. श्येनस्त एकं मुखम्
4. 3. 19. श्येनो वा सुपर्णो वा
nâr. 9. 1. श्येनो गृध्राणाम् 17. 8.
má. 1. श्येनाकाशवत्
— यथा खं श्येनमाश्रित्य याति (one MS. has श्येनः)

श्यैत

h. 1. 5. श्यैतनौधसे चापरौ पार्श्वौ

1. श्रद्धा

6. 12. 3. श्रद्धत्स्व सोम्य
7. 19. 1. यदा वै श्रद्दधात्यथ मनुते ..श्रद्दधदेव मनुते
7. 20. 1. यदा वै निस्तिष्ठत्यथ श्रद्दधाति..निस्तिष्ठन्नेव श्रद्दधाति
3. 9. 21. यदा ह्येव श्रद्धत्ते ऽथ दक्षिणां ददाति
5. 14. 4. य एव ब्रूयादहमदर्शमिति तस्मा एव श्रद्दध्याम
1. 1. 13. प्रब्रूहि तं श्रद्दधानाय मह्यम्
1. 3. 2. 10. स्वयं जुह्वते एकर्षिं श्रद्धयन्तः
12. 20. श्रद्दधाना मत्परमाः

2. श्रद्धा

Chhâ. 1. 1. 10. यदेव..करोति श्रद्धयोपनिषदा
5. 4. 2. एतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति Bṛih. 6. 2. 9.
7. 19. 1. श्रद्धा त्वेव विजिज्ञासितव्येति श्रद्धां भगवो विजिज्ञासे
Bṛih. 1. 5. 3. श्रद्धाश्रद्धा धृतिरधृतिः Maitri. 6. 30.
3. 9. 21. कस्मिन्नु दक्षिणा प्रतिष्ठितेति श्रद्धायामिति
— कस्मिन्नु श्रद्धा प्रतिष्ठितेति ..हृदयेन हि श्रद्धां जानाति हृदये ह्येव श्रद्धा प्रतिष्ठिता
6. 2. 15. ये चामी अरण्ये श्रद्धां सत्यमुपासते
Tait. 1. 11. 3. श्रद्धया देयमश्रद्धयादेयम्
2. 4. 1. तस्य श्रद्धैव शिरः
Katha. 1. 1. तं ह कुमारं सन्तं..श्रद्धा विवेश
Muṇḍ. 1. 2. 2. श्रद्धया हुतम्
11. तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये
2. 1. 7. श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च
Mahânâr. 16. 1. श्रद्धायां प्राणे निविश्यामृतं हुतम्
19. 1. श्रद्धा प्रज्ञा च मेधा च (bis).
23. 1. तपसा श्रद्धा श्रद्धया मेधा
25. 1. आत्मा यजमानः श्रद्धा पत्नी
Praśna. 1. 2. तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया 10; 5. 3.
6. 4. स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धाम्
Kaivalya. 2. श्रद्धाभक्तिध्यानयोगात्
Nṛip. 5. 2. श्रद्धया यां काञ्चिद्यात्
Gîtâ. 6. 37. अयतिः श्रद्धयोपेतः
7. 21. श्रद्धयार्चितुमिच्छति

Gîtâ. 7. 21. तस्य तस्याचलां श्रद्धाम्
22. स तया श्रद्धया युक्तः
9. 23. यजन्ते श्रद्धयान्विताः
17. 1.
12. 2. श्रद्धया परयोपेताः
17. 2. त्रिविधा भवति श्रद्धा
3. सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा
17. श्रद्धया परया तप्तं तपः

श्रद्धातपस्

Chhâ. 5. 10. 1. ये चेमे ऽरण्ये श्रद्धातप इत्युपासते

श्रद्धादेय

Chhâ. 4. 1. 1. श्रद्धादेयो बहुदायी

श्रद्धामय

Gîtâ. 17. 3. श्रद्धामयो ऽयं पुरुषः

श्रद्धावन्त्

Mukti. 1. श्रद्धावन्तं सत्कुलभवम्
Gîtâ. 3. 31. श्रद्धावन्तो ऽनसूयन्तः
4. 39. श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्
6. 47. श्रद्धावान्भजते यो माम्
18. 71. श्रद्धावाननसूयश्च

श्रद्धाविरहित

Gîtâ. 17. 13. श्रद्धाविरहितं यज्ञम्

श्रद्धासत्य

Mahânâr. 24. 1. श्रद्धासत्यो महस्वान्

श्रम्

Bṛih. 1. 2. 2. तस्याश्रमभ्याम्यत्तस्य श्रान्तस्य
6. सो ऽश्राम्यत्..तस्य श्रान्तस्य
1. 5. 21. श्राम्यत्येव वाक् श्राम्यति चक्षुः श्राम्यति श्रोत्रम्
4. 3. 19. सुपर्णो वा विपरिपत्य श्रान्तः
Gopî. 5. प्रजापतिर्वायुर्भूत्वाश्राम्यत

श्रम

Bṛih. 1. 5. 21. मृत्युः श्रमो भूत्वोपयेमे

श्रमण

Bṛih. 4. 3. 22. श्रमणो ऽश्रमणः
Brâhma. 2. तत्र..श्रमणो न श्रमणः

श्रवण

Chhâ. 8. 12. 4. श्रवणाय श्रोत्रम्
Bṛih. 2. 4. 5. आत्मनो वा अरे..श्रवणेन
Katha. 2. 7. श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः
Maitri. 6. 22. श्रवणाङ्गुष्ठयोगेन
Nyâsa. 5. श्रवणे नासिके न गन्धः
Mukti. 1. श्रवणमनननिदिध्यासन
— वेदान्तश्रवणादि कृत्वा
2. *vide* समाधि

श्रविष्ठार्द्ध

Maitri. 6. 14. मघाद्यं श्रविष्ठार्द्धमाग्नेय

श्रविष्ठार्द्धान्त

Maitri. 6. 14. सार्पाद्यं श्रविष्ठार्द्धान्तं सौम्यम्

श्रा

Prâṇâg. 2. अशितपीतलीढखादितानि सम्यक् श्रपयित्वा

श्राद्ध

Chûl. 20. य एवं श्रावयेच्छ्राद्धे

श्राद्धकाल

Katha. 3. 17. प्रयतः श्राद्धकाले वा

श्राद्धतर्पण

Nyâsa. 1. पितृभ्यः श्राद्धतर्पणं कृत्वा

श्रि

Kaush. 2. 8. यन्मे सुसीमं हृदयं श्रितम्
अन्तर्मासि श्रितम्

h. 2. 10. यत्ते सुसीमे हृदये श्रितम्
3. 1. 4. तदादित्यमभितो ऽश्रयत् 3. 2. 3; 3. 3. 3; 3. 4. 3; 3. 5. 3.
3. 15. 1. तस्मिन्विश्वमिदं श्रितम्
4. 4. 7. कामा ये ऽस्य हृदि श्रिताः Katha. 6. 14.
2. 2. 1. याः काश्च पृथिवीं श्रिताः
5. 8. तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे 6. 1.
6. 2. स एषो ऽग्निर्दिवि श्रितः सौरः
nâr. 9. 11. घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम
ha. 5. अग्नयो ह्यत्र श्रियन्ते
9. रुद्रा दिक्षु श्रिताः सहस्रशः
9. 12. प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः

श्री

h. 1. 5. श्रीश्चेरा चापरौ (पादौ)
— श्रीरुपबर्हणम्
2. 6. तच्छ्रीरित्युपासीत
3. 12. 9. अप्रवर्तिनीं श्रियं लभते य एवं वेद
3. 13. 2. एतच्छ्रीश्च यशश्चेत्युपासीत
2. 3. 6. सकृद्विद्युत्तेव ह वा अस्य श्रीर्भवति य एवं वेद
5. 14. 3. श्रिया यशसा तपति
6. 4. 6. श्रीर्ह वा एषा स्त्रीणाम्
28. श्रिया यशसा ब्रह्मवर्चसेन
1. 4. 2. ततो मे श्रियमावह
1. 11. 3. श्रिया देयं ह्रिया देयम्
ri. 1. 4. महतीं श्रियं त्यक्त्वा
nâr. 2. 9. श्रिया मा परिपातय
4. 8. तामिहोपह्वये श्रियम्
19. 1. श्रीश्च पुष्टिश्चानृण्यम्
20. 10. श्री मे भजत
a. 2. 13. श्रीश्च प्रज्ञां [illegible] नः
1. 3. सावित्र्स्याष्टाक्षरं पदं श्रियाभिषिक्तम् 4. 2.

Nrip. 1. 3. श्रिया हैवाभिषिच्यते 4. 2.
3. 1. महतीं श्रियमश्नुते 4. 2.
— महतीं श्रियमाप्नुयात्
— पाहि.. श्रियं लक्ष्मीम्
4. 3. यो वै नृसिंहः.. या श्रीस्तस्मै वै नमो नमः (7)
Mahâ. 2. बिभ्रच्छ्रियं सत्यं ब्रह्मचर्यं (instead of श्रियं Śaṁkarânanda explains श्रीं =श्रीत्कारम्)
Râmap. 33. देहि श्रियं च ते
Gîtâ. 10. 34. कीर्तिः श्रीर्वाक् च नारीणाम्
18. 78. तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवाणि

श्रीकृष्णाख्य

Gopî. 5. श्रीकृष्णाख्यं परं ब्रह्म

श्रीमत्तम

Kaush. 2. 6. यथैतच्छ्रीमत्तमं.. भवत्येवं स.. श्रीमत्तमः.. भवति

श्रीमन्त्

Chhâ. 3. 13. 2. श्रीमान् यशस्वी भवति
Maitri. 7. 1. श्रीमानजो धीमान्
Gîtâ. 6. 41. शुचीनां श्रीमतां गेहे
10. 41. श्रीमदूर्जितमेव वा

श्रीराम

Râmap. 31. श्रीरामायात्ममूर्तये
Râmot. 3. श्रीरामसान्निध्यवशात्
4. श्रीरामः प्राह शंकरम्
— अथ स होवाच श्रीरामः
5. कैर्मन्त्रैः स्तुतः श्रीरामः प्रीतो भवति
— श्रीरामेणैवं शिक्षितः
— यो वै श्रीरामः स भगवान् (47 times).

श्रीरामचन्द्र

Râmot. 4. श्रीरामचन्द्रस्य मनुं जजाप

Râmot. 4. श्रीरामचन्द्रेणोक्तम्
Mukti. 1. श्रीरामचन्द्रं मारुतिः पप्रच्छ

श्रु

Ait. 3. 6. श्रुत्व हैवान्नमत्रप्स्यत्
11. यदि श्रोत्रेण श्रुतं .. को ऽहम्
5. 1. येन वा शब्दं शृणोति
Kaush. 2. 13. एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्छ्रोत्रेण शृणोत्यथैतन्म्रियते यन्न शृणोति
14. श्रोत्रेण शृण्वच्छिष्ये (bis)
3. 2. श्रोत्रं शृण्वत् सर्वे प्राणा अनुशृण्वन्ति
3. न शृणोति न पश्यति न वाचा वदति
Kena. 3. इति शुश्रुम पूर्वेषाम्
7. यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्
Chhâ. 1. 2. 5. तस्मात्तेनोभयं शृणोति श्रवणीयं चाश्रवणीयं च
1. 8. 2. ब्राह्मणयोर्वदतोर्वाचं श्रोष्यामि
3. 13. 8. एतद् दृष्टं च श्रुतं चेत्युपासीत
— चक्षुष्यः श्रुतो भवति य एवं वेद
4. 9. 3. श्रुतं ह्येव मे भगवद्दृशेभ्यः 7. 1. 3.
5. 1. 8. शृण्वन्तः श्रोत्रेण 9, 11. Brih. 6. 1. 8, 9, 11, 12.
6. 1. 3. येनाश्रुतं श्रुतं भवति
7. 5. 2. तस्मा एवोत शुश्रूषन्ते
7. 12. 1. आकाशेन शृणोति
7. 13. 1. न स्मरन्तो नैव ते कञ्चन शृणुयुः..यदा वाव ते स्मरेयुरथ शृणुयुः

Chhâ. 7. 24. 1. यत्र नान्यत्पश्यति ना... च्छृणोति..स भूमा ... नान्यत्पश्यत्यन्यच्छृ... ..तदल्पम्
8. 12. 4. यो वेदेदं शृण्वानी... आत्मा
Brih. 1. 3. 5. यत्कल्याणं शृणोति ... त्मने
— यदेवेदमप्रतिरूपं शृणो...
1. 4. 7. शृण्वन् श्रोत्रम्
17. श्रोत्रेण हि तच्छृणोति
1. 5. 3. अन्यत्रमना अभूवं ना... षम्
— मनसा शृणोति Maitr... 6. 30.
21. श्रोष्याम्यहमिति श्रोत्र...
— श्राम्यति श्रोत्रम्
2. 4. 5. आत्मा वा अरे..श्रोत... 4. 5. 6.
14. इतर इतरं शृणोति 4. 5. 15.
— केन कं शृणुयात् 4. 5. ...
3. 2. 6. श्रोत्रेण हि शब्दाञ्छृणो...
3. 4. 2. न श्रुतेः श्रोतारं शृणुया...
4. 1. 2. यत्ते कश्चिदब्रवीत्तच्छृण... 3—7.
4. 3. 27. यद्वै तन्न शृणोति शृण्व... तन्न शृणोति..न तु त... तीयमस्ति..यच्छृणुया...
31. अन्यो ऽन्यच्छृणुयात्
4. 4. 2. एकीभवति न शृणोति
4. 5. 6. आत्मनि खल्वरे दृष्टे ... मते
5. 9. 1. तस्यैष घोषो भवति यमे... त्कर्णावपिधाय शृणोति... Maitri. 2. 6.
— स यदोत्क्रमिष्यन् भवति... घोषं शृणोति Maitri. 2...

5. 14. 4. अहमदर्शमहमश्रौषमिति
6. 2. 2. अपि हि न ऋषेर्वचः श्रुतं द्वे सृती अशृणवम्
5. 3. 4. श्रावितमसि प्रत्याश्रावितमसि
6. 4. 18. शुश्रूषितां वाचं भाषिता
10. इति शुश्रुम धीराणाम् 13.
1. 4. 1. श्रुतं मे गोपाय
2. 7. शृण्वन्तोपि बहवो यं न विद्युः
13. एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य
23. न मेधया न बहुना श्रुतेन Mund. 3. 2. 3.
3. 16. उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी
17. य इमं परमं गुह्यं श्रावयेत्
2. 5. शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः
3. 19. स शृणोत्यकर्णः
6. 8. परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
i. 1. 2. त्वं तत्त्वविच्छुश्रुमो वयम्
2. 3. ऊर्ध्वरेतसो वालखिल्या इति श्रूयन्ते
4. यो ह खलु वावोपरिस्थः श्रूयते
6. 7. यत्र द्वैतीभूतं विज्ञानं तत्र हि शृणोति
mar. 5. 4. आर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया
7. 6. कर्णयोः श्रुतं मा च्योढ्वम्
8. 1. श्रुतं तपः शान्तं तपः
11. 6. दृश्यते श्रूयते ऽपि वा Vâsu. 3.
a. 4. 2. न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति
5. श्रुतं तमेवार्थमनुशृणोति
— श्रुतं चाश्रुतं च .. पश्यति
8. श्रोत्रं च श्रोतव्यं च

Kaivalya. 21. स शृणोम्यकर्णः
Gauḍa. 2. 3. श्रूयते न्यायपूर्वकम्
Nṛip. 1. 1. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः 2. 4; Nṛisut. 1.
2. 4. स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं युवानम्
— सर्वतः शृणोति
Chûl. 20. य एवं श्रावयेच्छ्राद्धे
Amṛita. 14. शृणु शब्दमकर्णवत्
Dhyâna. 1. तच्छ्रुत्वा च पठित्वा च (one MS. omits); Yogat. 1.
Yogat. 5. श्रुत्वा लोकान् समश्नुते
Haṁsa. 1. शृणु गौतम तन्मम
Gâruḍa. 3. य इमां महाविद्याममावास्यायां शृणुयात्
Kṛish. 3. रुद्रादीनां वचः श्रुत्वा
Mukti. 1. 7. वदामि शृणु तत्त्वतः
8. हनुमञ्छृणु वक्ष्यामि
29. तासां क्रमं .. शृणु
50. यः पठेच्छृणुयाद्वापि
52. यमेवैष विद्याः श्रुतमप्रमत्तम्
2. 33. पावने शृणु सादरम्
Gîtâ. 2. 29. आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्
39. योगे त्विमां शृणु
52. श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च
5. 8. पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन्
7. 1. यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु
10. 1. शृणु मे परमं वचः 13. 64.
18. तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्
11. 2. श्रुतौ विस्तरशो मया
35. एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
13. 3. समासेन मे शृणु
25. श्रुत्वान्येभ्य उपासते
16. 6. आसुरं पार्थ मे शृणु

Gîtâ. 17. 2. तां शृणु
7. तेषां भेदमिमं शृणु
18. 4. निश्चयं शृणु मे तत्र
19. यथावच्छृणु तान्यपि
29. गुणतस्त्रिविधं शृणु
36. शृणु मे भरतर्षभ
45. सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु
58. अथ चेत्..न श्रोष्यसि
71. शृणुयादपि यो नरः
72. कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ
74. संवादमिममश्रौषम्

श्रुति

Chhâ. 3. 13. 8. तस्यैषा श्रुतिः
Bṛih. 3. 4. 2. न श्रुतेः श्रोतारं शृणुयाः
4. 3. 27. न हि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपः
Gauḍa. 3. 23. समा श्रुतिः
Gopî. 5. तत उपनिषदः श्रुतय आविर्बभूवुः
— श्रुतयो ब्रह्मलोकगाः
— गोपिकाः श्रुतयो ऽभवन्
Gîtâ. 2. 53. श्रुतिविप्रतिपन्ना ते

श्रुतिपरायण

Gîtâ. 13. 25. ते ऽपि चातितरन्ति..श्रुतिपरायणाः

श्रेयस्

Chhâ. 4. 16. 5. स इष्ट्वा श्रेयान् भवति
5. 1. 6. अहं श्रेयानस्म्यहं श्रेयानस्मीति
Bṛih. 1. 4. 6. श्रेयसो देवानसृजत
11. तच्छ्रेयोरूपमत्यसृजत क्षत्रम्
— यथा श्रेयांसं हिंसित्वा
14. तच्छ्रेयोरूपमत्यसृजत धर्मम्
Tait. I. 4. 3. श्रेयान् वस्यसो ऽसा[ni]
1. 11. 3. ये के चास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणाः
Kaṭha. 2. 1. अन्यच्छ्रेयो ऽन्यदुतैव
— श्रेय आददानस्य सा[धु भ]वति
2. श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमे[तः]
— श्रेयो हि धीरो ऽभि[प्रेयसो वृ]णीते
Maitri. 4. 5. श्रेयः कतमो यः सो ऽ[त्र] कं ब्रूहि
Muṇḍ.1. 2. 7. एतच्छ्रेयो ये ऽभिनन्द[न्ति] मूढाः
10. नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते मूढाः
Gîtâ. 1. 31. न च श्रेयो ऽनुपश्यामि
2. 5. श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यम्
7. यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रू[हि] तन्मे
31. धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयः
3. 2. येन श्रेयो ऽहमाप्नुयाम्
11. श्रेयः परमवाप्स्यथ
35. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः 18. 47
— स्वधर्मे निधनं श्रेयः
4. 33. श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञात्
5. 1. यच्छ्रेय एतयोरेकम्
12. 12. श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात्
16. 22. आचरत्यात्मनः श्रेयः

श्रेष्ठ

Kaush. 2. 11. इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धे[हि]
Chhâ. 5. 1. 1. ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद..ज्ये[ष्ठ]श्च श्रेष्ठश्च भवति प्रा[णो] वाव..श्रेष्ठः Bṛih. 6. 1 (वै for वाव)
7. भगवन् को नः श्रेष्ठः
— स वः श्रेष्ठः

.5. 1. 12. त्वन्नः श्रेष्ठो ऽसि
5. 2. 4. ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय स्वाहा
6. ज्येष्ठः श्रेष्ठो राजाधिपतिः
7. श्रेष्ठं सर्वधातममित्याचामति
1. 3. 18. श्रेष्ठः पुर एता भवति
1. 5. 16. देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठः
21. अयं वै नः श्रेष्ठः
6. 1. 1. ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भवति..य एवं वेद
6. 3. 2. ज्येष्ठाय स्वाहा श्रेष्ठाय स्वाहा
. 2. 17. एतदालंबनं श्रेष्ठम्
Ar. 17. 2. ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमः
1. ज्येष्ठोहं श्रेष्ठोहं वरिष्ठोहम्
3. 21. यद्यदाचरति श्रेष्ठः

श्रेष्ठतम

2. 4. ना वीर्यतमः श्रेष्ठतमश्च
— सिंहो वीरतमः श्रेष्ठतमश्च

श्रेष्ठिन्

ush. 4. 20. एतमात्मानमेत आत्मानो ऽन्ववस्यन्ति यथा श्रेष्ठिनं स्वास्तद्यथा श्रेष्ठी स्वैर्भुंक्ते यथा वा स्वाः श्रेष्ठिनं भुंजन्ति

श्रैष्ठ्य

ish. 2. 6. श्रैष्ठ्यायाभ्यर्चन्ते..युज्यन्ते..सन्नमन्ते
4. 15. सर्वं हास्मा इदं श्रैष्ठ्याय यम्यते
20. सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं .. पर्यैत्
— सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं .. पर्येति
I. 5. 2. ...मा ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यं .. गमयतु

Brih. 5. 13. 2. युज्यन्ते हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय
3. सैम्यञ्चि हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय कल्पन्ते

श्रोतृ

Kaush. 3. 8. न शब्दं विजिज्ञासीत श्रोतारं विद्यात्
Chhâ. 7. 8. 1. उपसीदन्..श्रोता भवति
7. 9. 1. अन्नस्यायै..श्रोता भवति
Brih. 3. 4. 2. न श्रुतेः श्रोतारं शृणुयाः
3. 7. 23. अश्रुतः श्रोता
— नान्यो ऽतो ऽस्ति श्रोता
3. 8. 11. अश्रुतं श्रोतृ
— नान्यदतो ऽस्ति श्रोतृ
4. 3. 27. न हि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपः
Maitri. 6. 7. घ्राता द्रष्टा श्रोता स्पृशति च
11. यदि खल्वभाति..श्रोता भवति
Praśna. 4. 9. एष हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता
Râmap. 50. हनुमन्तं च श्रोतारम्

श्रोत्र

Ait. 1. 4. कर्णाभ्यां श्रोत्रं श्रोत्राद्दिशः
2. 4. दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्
3. 6. तच्छ्रोत्रेणाजिघृक्षत्तन्नाशक्नोच्छ्रोत्रेण ग्रहीतुं स यद्धैनच्छ्रोत्रेणाग्रहैष्यत्
11. यदि श्रोत्रेण श्रुतं..कोऽहमिति
Kaush. 1. 7. केन शब्दानिति श्रोत्रेणेति
2. 1. श्रोत्रं संश्रावयितृ
— यः श्रोत्रं संश्रावयितृ (वेद)
2. चक्षुः परस्ताच्छ्रोत्रमारुंधते श्रोत्रं परस्तान्मन आरुंधते
3. श्रोत्रं नाम देवतावरोधिनी
4. श्रोत्रं ते मयि जुहोमि

Kaush. 2. 13. तस्य श्रोत्रमेव तेजो गच्छति — एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्छ्रोत्रेण शृणोति
11. अथैनच्छ्रोत्रं प्रविवेश तद्वाचा वदच्चक्षुषा पश्यच्छ्रोत्रेण शृण्वच्छिश्ये
15. श्रोत्रं मे त्वयि दधानीति पिता श्रोत्रं ते मयि दध इति पुत्रः
3. 2. श्रोत्रेण शब्दं (प्रज्ञापयितुं) — श्रोत्रं शृण्वत् सर्वे प्राणा अनुशृण्वन्ति
3. श्रोत्रं सर्वैः शब्दैः सहाप्येति (bis); 4. 20.
4. श्रोत्रमेवास्मि सर्वे शब्दा अभिविसृज्यन्ते श्रोत्रेण सर्वाञ्छब्दानाप्नोति
5. श्रोत्रमेवास्या एकमङ्गमुदूल्हम्
6. प्रज्ञया श्रोत्रं समारुह्य श्रोत्रेण सर्वाञ्छब्दानाप्नोति
7. नहि प्रज्ञापेतं श्रोत्रं शब्दं कंचन प्रज्ञापयेत्

Kena. 1. चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति
2. श्रोत्रस्य श्रोत्रम्
7. यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्

Chhâ. 1. 2. 5. अथ ह श्रोत्रमुद्गीथमुपासांचक्रिरे
1. 7. 3. श्रोत्रमेवर्क्..श्रोत्रमेव सा
2. 7. 1. श्रोत्रं प्रतिहारः 2. 11. 1.
3. 13. 2. स व्यानस्तच्छ्रोत्रम्
3. 18. 2. श्रोत्रं पादः
6. श्रोत्रमेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः
4. 3. 3. यदा स्वपिति प्राणमेव वागप्येति..प्राणं श्रोत्रम्

Chhâ. 4. 8. 3. श्रोत्रं कला मनः कला
5. 1. 4. श्रोत्रं वाव सम्पत्
8. शृण्वन्तः श्रोत्रेण 9, Brih. 6. 1. 8, 9, 11,
10. श्रोत्रं होच्चक्राम..प्रवि श श्रोत्रम् Brih. 6. 1.
14. श्रोत्रमुवाच यदहं स्म स्मि त्वं तत्सम्पदसीति
15. न श्रोत्राणि न मनांसि
5. 7. 1. श्रोत्रं विस्फुलिंगाः Brih 2. 12.
5. 20. 2. श्रोत्रं तृप्यति श्रोत्रे तृप चन्द्रमास्तृप्यति
8. 12. 4. श्रवणाय श्रोत्रम्

Brih. 1. 3. 5. श्रोत्रमूचुस्त्वन्न उद्गाय ..श्रोत्रमुदगायद्यः भोगस्तं देवेभ्य आगा
14. अथ श्रोत्रमत्यवहत्
1. 4. 7. शृण्वञ्छ्रोत्रम्
17. श्रोत्रं दैवं श्रोत्रेण हि त णोति
1. 5. 21. श्रोष्याम्यहमिति श्रोत्रम् — श्राम्यति श्रोत्रम्
2. 1. 17. गृहीतं श्रोत्रम्
2. 4. 11. सर्वेषां शब्दानां श्रोत्र कायनम् 4. 5. 12.
3. 2. 6. श्रोत्रं वै ग्रहः..श्रोत्रेण शब्दाञ्छृणोति
13. दिशः श्रोत्रं (अप्येति)
3. 7. 19. यः श्रोत्रे तिष्ठञ्छ्रोत्राद रो यं श्रोत्रं न वेद य श्रोत्रं शरीरं यः श्रोत्रम रो यमयति
3. 9. 13. श्रोत्रं लोकः
4. 1. 5. श्रोत्रं वै ब्रह्म (bis).
— श्रोत्रमेवायतनम्
— दिशो वै..श्रोत्रं श्रोत्रं
परमं ब्रह्म नैनं श्रोत्रं जा

4. 18. उत श्रोत्रस्य श्रोत्रं (ये वि-
दुः)
1. 4. श्रोत्रं वै सम्पच्छ्रोत्रे ह्रीमे
सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः
10. यथा बधिरा अशृण्वन्तः
श्रोत्रेण
14. त्वं तत्सम्पदसीति श्रोत्रम्
3. 2. श्रोत्राय स्वाहायतनाय स्वा-
हा
7. 1. चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्कक्
1. 1. अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं म-
नो वाचमिति
6. 31. वाक् श्रोत्रं चक्षुर्मनः प्राणः
1. 4. दिशः श्रोत्रे
Ar.12. 3. आदित्यो वै.. चक्षुः श्रो-
त्रम्
25. 1. श्रोत्रमग्रीत्
2. 2. वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च 4.
12. या श्रोत्रे या च चक्षुषि
4. 8. श्रोत्रं च श्रोतव्यं च
2. श्रोत्रस्य द्रष्टा.. श्रोत्रस्य
साक्षी
1. श्रोत्रे शब्दोपलब्धौ
3. षष्ठे मुखनासिकाक्षिश्रोत्राणि
4. श्रोत्रे आधारौ
5. श्रोत्रे स्थाप्य तथा भुवि
15. 9. श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च

श्रोत्रपति

1. 6. 2. श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः

श्रोत्रमय

4. 4. 5. चक्षुर्मयः श्रोत्रमयः

श्रोत्रादि

4. 26. श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि

श्रोत्रापेत

3. 3. जीवाति श्रोत्रापेतो बधिरान्
हि पश्यामः

श्रोत्रिय

Bṛih. 4. 3. 33. श्रोत्रियो ऽवृजिनो ऽकाम-
हतः (ter).
6. 1. 14. श्रोत्रिया अशिष्यन्त आ-
चामन्ति
6. 4. 12. तस्मादेवंविच्छ्रोत्रियस्य दा-
रेण नोपहासमिच्छेत्
Tait. 2. 8. 1. श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य
(10 times).
Muṇḍ. 1. 2. 12. श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्
3. 2. 10. क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्म-
निष्ठाः
Śiras. 7. अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति
Mahâ. 4.
Mukti. 1. श्रोत्रियं शास्त्रवात्सल्यम्

श्रौत्र

Bṛih. 2. 5. 6. अयमध्यात्मं श्रौत्रः प्राति-
श्रुत्कः.. पुरुषः
3. 9. 13. य एवायं श्रौत्रः प्रातिश्रु-
त्कः पुरुषः स एषः

श्लक्ष्ण

Chhâ. 2. 22. 1. मृदु श्लक्ष्णं वायोः श्लक्ष्णं
बलवदिन्द्रस्य
Râmap. 86. मृदुश्लक्ष्णसतूलिकायाम्

श्लिष्

Chhâ. 4. 14. 3. यथा पुष्करपलाश आपो न
श्लिष्यन्त एवमेवंविदि पापं
कर्म न श्लिष्यते
Râmap. 27. श्लिष्टः कमलधारिण्या

श्लेष्मन्

Maitri. 1. 3. *vide* संघात

श्लोक

Kaush. 1. 6. तदेतच्छ्लोकेनाभ्युक्तम्
(MSS. insert ऋक् before श्लोकेन)

Chhâ. 2. 21. 3. तदेष श्लोकः 3. 11. 1; 5. 2. 9; 5. 10. 8; 5. 24. 4; 7. 26. 2; 8. 6. 6; Praśna 1. 10; 3. 11; 4. 10; 6. 5; Nrisut. 6, 7, 9.

Bṛih. 1. 4. 7. कीर्त्तिं श्लोकं विन्दते य एवं वेद

1. 5. 1. इति श्लोकाः

23. अथैष श्लोको भवति

2. 2. 3. तदेष श्लोको भवति 4. 4. 6, 7.

2. 4. 10. उपनिषदः श्लोकाः सूत्राणि 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32.

3. 9. 28. तान्हैतैः श्लोकैः पप्रच्छ

4. 3. 11. तदेते श्लोका भवन्ति 4. 4. 8; Râmot. 3 (अथ)

Tait. 2. 1. 1. तदप्येष श्लोको भवति 2. 2. 1; 2. 3. 1; 2. 4. 1; 2. 5. 1; 2. 6. 1; 2. 7. 1; 2. 8. 1.

Śwet. 2. 5. वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः

Maitri. 6. 34. अत्रेमे श्लोका भवन्ति

Praśna. 5. 5. तदेतौ श्लोकौ भवतः Nrisut. 4.

Gopî. 5. तत्र श्लोकौ

Mukti. 2. अत्र श्लोका भवन्ति

श्लोककृत्

Tait. 3. 10. 6. अहं श्लोककृदहं श्लोककृदहं श्लोककृत्

श्वन्

Chhâ. 1. 12. 2. तस्मै श्वा श्वेतः प्रादुर्बभूव तमन्ये श्वान उपसमेत्योचुः

5. 2. 1. यत्किञ्चिदिदमा श्वभ्य आ शकुनिभ्यः

Bṛih. 3. 9. 25. श्वानो वैनद्दयुः

6. 1. 14. यदिदं किञ्चाश्वभ्य आकृमिभ्यः

Gîtâ. 5. 18. शुनि चैव श्वपाके च

श्वपाक

Gîtâ. 5. 18. शुनि चैव श्वपाके च

श्वभ्र

Chhâ. 2. 9. 7. ते पुरुषं दृष्ट्वा कक्षं श्वभ्रं त्युपद्रवन्ति

श्वयोनि

Chhâ. 5. 10. 7. श्वयोनिं वा सूकरयोनिं

श्वशुर

Gîtâ. 1. 27. श्वशुरान् सुहृदश्चैव

34. मातुलाः श्वशुराः पौत्राः

1. श्वस्

Gîtâ. 5. 8. अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन्

2. श्वस्

Bṛih. 1. 5. 23. स एवाद्य स उ श्वः Katha. 4. 13.

श्वापद

Chhâ. 7. 2. 1. श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकम् 7. 7. 1; 7. 8. 1; 10. 1.

Bṛih. 1. 4. 16. श्वापदा वयांस्यापिपीलिकाभ्यः

श्वि

Bṛih. 1. 2. 6. शरीरं श्वयितुमध्रियत

7. ततोऽश्वः समभवद्यदश्वत्

श्वेत

Chhâ. 1. 12. 2. तस्मै श्वा श्वेतः प्रादुर्बभूव

8. 14. 1. श्वेतमदत्कमदत्कं श्वे (one MS. has श्ये both places).

Bṛih. 3. 8. 9. नद्यः स्यन्दन्ते श्वेतेभ्यः पर्वतेभ्यः

Mahânâr. 19. 1. तिलाः कृष्णास्तिलाः श्वेता

Gîtâ. 1. 14. ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते

श्वेतकेतु

h. 1. 1. पुत्रं श्वेतकेतुं प्रजिघाय
5. 3. 1. श्वेतकेतुर्हारुणेयः 6. 1. 1; Brih. 6. 2. 1.
6. 1. 1. श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्
3. श्वेतकेतो यन्नु सोम्य &c.
6. 8. 1. श्वेतकेतुं पुत्रम्
7. तत्त्वमसि श्वेतकेतो 6. 9. 4; 6. 10. 3; 6. 11. 3; 6. 12. 3; 6. 13. 3; 6. 14. 3; 6. 15. 3; 6. 16. 3.
6. *vide* प्रभृति

श्वेता (=स)

p. 77. श्वेतानुस्वारसंयुता

श्वेताश्व

i. 1. 31. ब्रह्मकैवल्यजाबालश्वेताश्वः

श्वेताश्वतर

6. 21. ब्रह्म ह श्वेताश्वतरो ऽथ विद्वान्
1. *vide* सरस्वतीरहस्य

श्वोभाव

1. 26. श्वोभावा मर्त्यस्य..सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः

श्वोभूते

4. 6. 1. स ह श्वोभूते गा अभिप्रस्थापयाञ्चकार 4. 7. 1; 4. 8. 1.

षट्कोण

p. 52. एवं षट्कोणम्

षट्पत्र

5. 1. षडरं भवति षट्पत्रं भवति

षट्शत

Haṁsa. 2. एकविंशतिसहस्राणि षट्शतान्यधिकानि

षट्संख्या

Haṁsa. 2. अथ हंस ऋषिरव्यक्तगायत्री छन्दः .. षट्संख्या (so MSS.).

षड्

Chhâ. 4. 2. 1. षट् शतानि गवाम् 2.
4. 15. 5. षडुदङ्ङेति मासान् 5. 10. 1.
5. 10. 3. षड् दक्षिणैति मासान्
Brih. 3. 9. 1. कत्येव देवाः..षडिति
7. कतमे षडिति..एते षडेते हीदं सर्वं षडिति
6. 2. 15. यान् षण्मासानुदङ्ङादित्य एति
Śwet. 1. 4. अष्टकैः षड्भिः
Maitri. 6. 28. षड्भिर्मासैस्तु युक्तस्य
Nṛip. 5. 1. षड् वा ऋतवः
2. षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवति
Sarvop. 2. अन्नकार्याणां षण्णां कोशानां समूहः
Râmap. 8. द्विचत्वारि षडष्टासाम्
Gîtâ. 8. 24. षण्मासा उत्तरायणम्
25. षण्मासा दक्षिणायनम्

षडक्षर

Nṛip. 5. 2. षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवति
Râmot. 4. ये लभन्ते षडक्षरम्

षडङ्ग

Maitri. 6. 18. षडङ्गा इत्युच्यते योगः
Amṛita. 6. षडङ्गो योग उच्यते

षडर

Praśna. 1. 11. सप्तचक्रे षडरे

Nrip. 5. 1. षडरं वा एतत्सुदर्शनं महाचक्रं तस्मात् षडरं भवति

षडस्र

Râmap. 61. दीर्घभाजि षडस्रेषु

षडाश्रय

Garbha. 1. षडाश्रयं षड्गुणयोगयुक्तम्
— षडाश्रयं कस्मात्

षडूर्मि

Parama. 2. षडूर्मिरहितम्

षड्गुणयोगयुक्त

Garbha. 1. षडाश्रयं षड्गुणयोगयुक्तम्

षड्ज

Garbha. 1. *vide* निषाद

षड्विंश

Gauḍa. 2. 26. षड्विंश इति चापरे

षड्विंशक

Chûl. 14. तं षड्विंशकमित्येके

षड्विध

Chhâ. 3. 12. 5. सैषा चतुष्पदा षड्विधा गायत्री

Garbha. 2. परस्परं सौम्यगुणत्वात् षड्विधो रसः

षण्मुख

Mahânâr. 3. 5. षण्मुखाय विद्महे

षष्टि

Garbha. 5. अस्थीनि च ह वै त्रीणि शतानि षष्टिश्च

षष्टिसहस्र

Śiras. 7. गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि अप्राणि भवन्ति Mahâ. 4.

षष्ठ

Mahânâr. 3. 5. तन्नः षष्ठः प्रचोदयात्

Nrip. 2. 3. नृसिंहं षष्ठं (स्थानं यात्)

Garbha. 3. षष्ठे मुखनासिकाक्षिणि

Nâda. 10. षष्ठी चैन्द्री विधीयते
15. षष्ठ्यामिन्द्रस्य सा[...]

Amrita. 29. षष्ठे मासि न संशयः

Piṇḍa. 6. षष्ठेन कृतपिण्डेन

Haṁsa. 2. षष्ठस्तालनादः
— षष्ठे ऽमृतनिषेवणम्

Râmot. 2. नादः षष्ठाक्षरो भवति

षष्ठी

Nrip. 3. 1. पाहि..षष्ठीं च

षष्ठ्यन्त

Râmap. 59. षष्ठ्यन्तं साधकं तथा

षोडश

Chhâ. 3. 16. 7. स ह षोडशं वर्षशतम[...] वत्स्य ह षोडशं वर्[...] जीवति य एवं वेद

Bṛih. 1. 5. 14. ध्रुवैवास्य षोडशी कल[...]
— एतया षोडश्या कलय[...]
15. आत्मैवास्य षोडशी क[...]

षोडशकल

Chhâ. 6. 7. 1. षोडशकलः सोम्य पुरु[...]

Bṛih. 1. 5. 14. संवत्सरः प्रजापतिः षोड[...] कलः 15.

Praśna. 6. 1. षोडशकलं भारद्वाज पु[...] वेत्थ

Nrip. 5. 1. षोडशकलो वै पुरुषः

षोडश कलाः

Chhâ. 6. 7. 3. षोडशानां कलानामेका[...] ..लातिशिष्टा 6.

a. 6. 2. यस्मिन्नेताः षोडश कलाः प्रभवन्ति

5. एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाः षोडश कलाः

5. 2. मातृकाद्याः सबिन्दुकाः षोडश कलाः

षोडशदल

p. 66. तद्बहिः षोडशदलम्

षोडशन्

5. 2. षोडशसु पत्रेषु..षोडश कला भवन्ति

t. 3. आनन्दामृतरूपं प्रणवं षोडशान्ते

a. 3. अष्टौ प्रकृतयः षोडश विकाराः

5. षोडश पार्श्वदन्तौष्ठपटलानि

p. 8. दश द्वादश षोडश

षोडशपत्र

5. 1. षोडशारं षोडशपत्रं चक्रम्

षोडशभेद

a. 1. चत्वार आश्रमाः षोडशभेदा भवन्ति

षोडशसंख्याक

1. षोडशसंख्याकानामुपनिषदाम्

षोडशान्त

1. 4. तमेकनेमिं त्रिवृतं षोडशान्तम्

षोडशार

5. 1. षोडशारं षोडशपत्रं चक्रम्

1. षोडशिन्

âr. 9. 4. त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी Nrip. 2. 4.

Mahânâr. 20. 11. महाँ इन्द्रो वज्रबाहुः षोडशी

2. षोडशिन्

Maitri. 6. 36. सूर्यराज्यं षोडशिना

Nrip. 5. 8. स षोडशिना यजते

स

Brih. 5. 5. 1. स इत्येकमक्षरम्

संयत्

Chhâ. 1. 2. 1. देवासुरा ह वै यत्र संयेतिरे

संयतेन्द्रिय

Gitâ. 4. 39. तत्परः संयतेन्द्रियः

संयद्वाम

Chhâ. 4. 15. 2. एतं संयद्वाम इत्याचक्षते

संयम्

Yogaśi. 3. मनः सर्वत्र संयम्य

Nyâsa. 2. वनं गच्छति संयतः (5 MSS. have °युतः)

4. तदभ्यासेन प्राणापानौ संयम्य

Gitâ. 2. 61. तानि सर्वाणि संयम्य

3. 6. कर्मेन्द्रियाणि संयम्य

6. 14. मनः संयम्य मच्चित्तः

8. 12. सर्वद्वाराणि संयम्य

10. 29. यमः संयमतामहम्

संयमन

Kaush. 2. 5. अथातः संयमनं प्रातर्दनम्

संयमाग्नि

Gitâ. 4. 26. संयमाग्निषु जुह्वति

संयमिन्

Gitâ. 2. 69. तस्यां जागर्ति संयमी

संया

Gîtâ. 2. 22. अन्यानि संयाति नवानि देही
15. 8. गृहीत्वैतानि संयाति

संयु

Yogaśi. 2. हस्तौ पादौ च संयुतौ (Nârayâṇa reads संयतौ)
Râmap. 52. स्वदीर्घाङ्गैरेष संयुतः
53. आग्नेयादिषु संयुतः
71. फणिसंयुतम्
75. रुद्रेण संयुता (so Nâr. and Weber; but 7 MSS. have संयुतः)
77. अनुस्वारसंयुता

संयुक्तचेष्ट

Śwet. 2. 9. प्राणान् प्रपीड्येह संयुक्तचेष्टः

संयुज्

Śwet. 1. 8. संयुक्तमेतत् क्षरमक्षरं च
3. 4. स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु 4. 1, 12.
Maitri. 6. 21. इन्द्रियाणि संयोज्य महिमानं निरीक्षेत (so MS.)
38. सत्यकामसर्वज्ञत्वसंयुक्तम्
Mahânâr. 10. 3. स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्ति
Praśna. 1. 13. ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते — यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते
Nṛisut. 4. स्वसुतान् गुणर्द्धान् संयोज्य शृङ्गैर्ऋषभस्य
6. शृङ्गेषु शृङ्गं संयोज्य
Garbha. 3. सप्तमे जीवेन संयुक्तः
Sarvop. 2. एतत्कोशद्वयसंयुक्तः — एतत्कोशत्रयसंयुक्तः
Râmap. 67. वर्मास्त्रनतिसंयुक्तम्
77. अग्निसंयुक्ता

Gîtâ. 17. 5. दम्भाहंकारसंयुक्ताः

संयोग

Swet. 1. 2. संयोग एषां न त्वात्म
5. 12. संयोगहेतुः
6. 5. संयोगनिमित्तहेतुः
Garbha. 2. शुक्रशोणितसंयोगात्
Nyâsa. 4. विद्याया मनसि संयो
Sarvop. 2. अप्राप्तशरीरसंयोगमि
Gîtâ. 6. 23. दुःखसंयोगवियोगम्
13. 26. क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्
18. 38. विषयेन्द्रियसंयोगात्

1. संरक्षण *adj.*

Gopî. 1. गोपी का नाम। संर कुतः संरक्षणी। लो नरकात्..संरक्षणी। MS. reads संरक्षिणी

2. संरक्षण

Nyâsa. 3. जन्तुसंरक्षणार्थम् Ka śru. 4.

संरभ्

Chhâ. 1. 12. 4. यथैवेह बहिष्पवमानेन ष्यमाणाः संरब्धाः सर्प
Bṛih. 6. 4. 20. तावेहि संरभावहै सह

संराधनी

Bṛih. 6. 3. 1. तां त्वा घृतस्य धारया संराधनीमहम्

संलय

Bṛih. 4. 3. 19. संहत्य पक्षौ संलयायैव यते

संलिख्

Râmap. 66. वृत्ताकारेण संलिखेत्

संली

Brahmav. 14. यस्मिन् संलीयते शब्द

संवत्सर

sh. 1. 6. रेतः संवत्सरस्य
ā. 2. 19. 2. संवत्सरं मज्जो नाभीयात्तद्व्रतम्
3. 19. 1. तत्संवत्सरस्य मात्रामशयत
4. 15. 5. मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादादित्यम् 5. 10. 2.
5. 1. 8. संवत्सरं प्रोष्य 9, 10, 11; Brih. 6. 1. 8—12.
5. 6. 1. संवत्सर एव समित् Brih. 6. 2. 10.
5. 10. 3. नैते संवत्सरमभिप्राप्नुवन्ति
1. 1. 1. संवत्सर आत्माश्वस्य
1. 2. 4. स संवत्सरोऽभवन्न ह पुरा ततः संवत्सर आस
— यावान्संवत्सरस्तमेतावतः कालस्य परस्तादसृजत
7. संवत्सरस्य परस्तात्
— तस्य संवत्सर आत्मा
1. 5. 2. संवत्सरं पयसा जुह्वत्
14. संवत्सरः प्रजापतिः 15.
3. 8. 9. मासा ऋतवः संवत्सराः
3. 9. 5. द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य
4. 4. 16. संवत्सरो ऽहोभिः परिवर्त्तते
tri. 6. 15. सकलस्य वा एतद्रूपं यत्संवत्सरः
— संवत्सरात्..इमाः प्रजाः प्रजायन्ते
— संवत्सरेणेह वै जाता विवर्धन्ते संवत्सरे प्रत्यस्तं यन्ति
— तस्मात्संवत्सरो वै प्रजापतिः
16. *vide* आदि
33. पञ्चेष्टको वा एषो ऽग्निः संवत्सरः

Mund. 2. 1. 6. संवत्सरश्च यजमानश्च
Mahânâr. 1. 9. संवत्सरश्च कल्पताम्
5. 6. समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत
Mahânâr. 12. 3. कतमः स्वयम्भूः प्रजापतिः संवत्सर इति संवत्सरो ऽसावादित्यः 23. 1.
25. 1. ये संवत्सराश्च परिवत्सराश्च
Praśna. 1. 2. संवत्सरं संवत्स्यथ
9. संवत्सरो वै प्रजापतिः
Mahâ. 1. संवत्सरादधिजायन्ते

संवद्

Kaush. 4. 3. मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठाः (17 times).
19. मृषा वै खलु मा संवादयिष्ठा ब्रह्म ते ब्रवाणीति
Chhâ. 4. 10. 4. अथ हाग्नयः समूदिरे
Brih. 2. 1. 2. मा मैतस्मिन्संवदिष्ठाः (12 times).
4. 3. 1. अग्निहोत्रे समूदाते

संवनन

Maitri. 6. 13. अन्नं संवननं स्मृतम्

संवर्ग

Kaush. 2. 7. संवर्गो ऽसि पाप्मानं मे संवृङ्धि
Chhâ. 4. 3. 1. वायुर्वाव संवर्गः
3. प्राणो वाव संवर्गः
4. तौ वा एतौ द्वौ संवर्गौ
Brih. 6. 3. 4. निधनमसि संवर्गो ऽसि

संवर्त्तक

Nrip. 2. 1. संवर्त्तको ऽग्निर्मरुतो विराट् Nrisut. 3; Sikhâ. 1.
Jâbâla. 6. *vide* प्रभृति

संवस्

Maitri. 7. 8. तैः सह न संवसेत्
Praśna. 1. 2. संवत्सरं संवत्स्यथ

संवाद

Gîtâ. 18. 70. धर्म्यं संवादमावयोः
74. संवादमिममश्रौषम्
76. संस्मृत्य संस्मृत्य संवादम्

संविज्

Gîtâ. 1. 47. शोकसंविग्नमानसः

संविज्ञा

Brahma. 2. सं विभोः प्रजा विज्ञायेरन्

1. संविद्

Brih. 2. 2. 3. वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना (bis).
— वाग्घ्यष्टमी ब्रह्मणा संवित्ते
Mahânâr. 9. 4. प्रजापतिः प्रजया संविदानः Nrip. 2. 4.
Prasna. 5. 3. तेनैव संवेदितस्तूर्णमेव जगत्यामभिसम्पद्यते
Gauda. 1. 12. न सत्यं नापि चानृतं प्राज्ञः किञ्चन संवेत्ति
Tejo. 11. न च सत्यं न संविदुः
Krish. 23. छत्त्रं च खं च संविद्धि

2. संविद्

Tait. 1. 11. 3. भिया देयं संविदा देयम्
Mukti. 2. 24. भावसंवित्प्रकटिताम्
49. सा हि सर्वगता संवित्

संविन्मात्रस्थित

Skanda. 2. संविन्मात्रस्थितो हरिः
3. संविन्मात्रस्थितश्चाहम्

संविभज्

Nyâsa. 2. संविभज्य सुतानर्थान्

संविभा

Mund. 3. 1. 10. यं यं लोकं मनसा संविभाति

संविश्

Kaush. 2. 10. अथ संवेशयन् जायायै हृदयमभिमृशेत्
Chhâ. 5. 2. 8. पश्चादग्नेः संविशति
Brih. 6. 3. 6. जघनेनाग्निं . . संविश
Maitri. 6. 28. शनकैरवटैवावटकृ . कामः संविशति
Mund. 3. 1. 9. यस्मिन् प्राणः पञ्च विवेश
Mândû. 12. संविशत्यात्मनात्मानं एवं वेद Nrisut. 2.
Nrisut. 3. शुद्धः संविष्टो निर्विघ्न

संवृ

Kaush. 1. 1. अस्ति संवृतं लोके य मा धास्यसि
Gauda. 4. 33. संवृते ऽस्मिन् प्रदेशे

संवृज्

Kaush. 2. 7. संवर्गो ऽसि पाप्मानं मे वृङ्धि
— यदहोरात्राभ्यां पापमक सं तद्वृङ्क्ते
— यदहोरात्राभ्यां पापं क ति सं तद् वृङ्क्ते
Chhâ. 4. 3. 2. वायुर्ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्ते
3. प्राणो ह्येवैतान्सर्वान्संवृ

संवृत्

Chhâ. 6. 13. 2. तच्छश्वत्संवर्त्तते
Nrip. 1. 1. तस्यान्तर्मनसि कामः समवर्त्तत
— कामस्तदग्रे समवर्त्तत
Gîtâ. 11. 51. इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः

संवृतत्व

Gauda. 2. 1. संवृतत्वेन हेतुना
4. संवृतत्वेन भिद्यते

संवृति

Gauda. 4. 57. संवृत्या जायते सर्वम्
74. संवृत्या जायते तु सः

संवृत्या ते न नश्यते

संवृद्धयुपेत

ri. 3. 4. संवृद्ध्युपेतं निरये .

संवृह्

6. 1. 13. यथा महासुहयः सैन्धवः पड्वीशशङ्कून् संवृहेदेवं हैवेमान्प्राणान् संववर्ह

संवेग

ti. 2. 58. भावितं तीव्रसंवेगात्

संव्याप्

t. 3. तेजसा शरीरत्रयं संव्याप्य

संशम्

. 2. 12. 1. संशाम्यति तन्निधनम्

संशय

a. 1. 17. निवर्त्तेत न संशयः
24. पादा मात्रा न संशयः
3. 30. द्वयाभासं मनः स्वप्ने न संशयः..तथा जाग्रन्न संशयः 4. 62 (has चित्तं for मनः though MSS. read मनः)

a. 28. त्रिभिर्मासैर्न संशयः
29. षष्ठे मासि न संशयः

ıa. 2. संशयविपरीतमिथ्याज्ञानानां यो हेतुः
3. स मुक्तो नात्र संशयः

24. एवमादि न संशयः

la. 5. तद्ब्रह्माहं न संशयः

p. 20. फलदश्चैव..न संशयः

t. 3. राम एव न संशयः

1. 44. नास्त्यत्र संशयः
50. स मामेति न संशयः
2. 34. शान्तिमेति न संशयः
4. 42. छित्त्वैनं संशयम्
6. 39. एतं मे संशयं कृष्ण छेत्तुम्

Gîtâ. 6. 39. त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता
8. 5. नास्त्यत्र संशयः
10. 7. नात्र संशयः
12. 8. अत ऊर्ध्वं न संशयः

संशयात्मन्

Gitâ. 4. 40. संशयात्मा विनश्यति — न सुखं संशयात्मनः

संशास्

Mahânâr. 5. 9. स नः स्रुवः संशिशाधि

संशितव्रत

Gîtâ. 4. 28. यतयः संशितव्रताः

संशुद्धकिल्बिष

Gîtâ. 6. 45. योगी संशुद्धकिल्बिषः

संश्रा

Mahânâr. 5. 9. द्यावापृथिव्योर्हिरण्मयं संश्रृतं स्रुवः

संश्रावयितृ

Kaush. 2. 1. श्रोत्रं संश्रावयितृ (bis)

संश्रावयितृमन्त्

Kaush. 2. 1. यः श्रोत्रं संश्रावयितृ संश्रावयितृमान्भवति

संश्रि

Nyâsa. 5. पाणी आस्थाय संश्रयेत्
Gîtâ. 16. 18. कामं क्रोधं च संश्रिताः

संसक्त

Gopî. 2. गोपीचन्दनसंसक्तमानुषाणाम्

संसार

Katha. 3. 7. संसारं चाधिगच्छति
Śwet. 6. 16. संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः
Maitri. 1. 4. एतद्विधे अस्मिन्संसारे — अन्धोदपानस्थो भेक इवाहमस्मिन्संसारे

Maitri. 6. 34. चित्तमेव हि संसारम्
Gauḍa. 4. 30. अनादेरन्तवत्त्वं च संसारस्य
56. संसारस्तावदायतः
— संसारं न प्रपद्यते
Nṛip. 1. 5. तेनैव संसारान्मुच्यते
2. 1. देवा ह वै..संसाराद्बिभ्युः
— तेन..संसारं चातरन्
— यः..संसाराच्च बिभीयात्
— स संसारं तरति 5. 4; Râmot. 2.
Kshur. 22. संसारं तरते तदा
Śiras. 4. *vide* महाभय
Nâr. 5. जन्मसंसारबंधनात् Atmapra. 1.
Râmot. 2. *vide* महद्भय
Mukti. 2. 14. मिथ्यासंसारवासना
Gîtâ. 9. 3. मृत्युसंसारवर्त्मनि
12. 7. मृत्युसंसारसागरात्
16. 19. संसारेषु नराधमान् । क्षिपामि

संसारचक्र

Maitri. 6. 28. आवृत्तचक्रमिव संसारचक्रमालोकयति
Yogat. 5. एवं संसारचक्रेण कूपचक्रघटा इव

संसारच्छेदन

Yogaśi. 10. तदा पश्यन्ति योगेन संसारच्छेदनं परम्

संसारज्ञान

Prâṇâg. 1. संसारज्ञानं..शारीरयज्ञम्

संसारपादप

Mukti. 2. 38. यथा शोषमेति संसारपादपः

संसारविमुक्ति

Prâṇâg. 1. संसारविमुक्तिर्भवति

संसारवृक्ष

Mukti. 2. 37. अस्य संसारवृक्षस्य मूलम्

संसारार्णवनाशन

Kaivalya. 24. अनेन ज्ञानमाप्नोति [संसा]रार्णवनाशनम्

संसारिन्

Râmot. 3. न ते संसारिणो नून[म्]

संसिद्धि

Gîtâ. 3. 20. कर्मणैव हि संसि[द्धिम् आ]स्थिताः
6. 43. संसिद्धौ कुरुनन्दन
8. 15. संसिद्धिं परमां गताः
18. 45. संसिद्धिं लभते नरः

संसिध्

Gîtâ. 6. 45. अनेकजन्मसंसिद्धः

संसिव्

Śiras. 6. मूर्द्धानमस्य संसीव्य

संसृ

Maitri. 6. 30. इह कर्मोपभोगाय तैः [संस]रति

संसृज्

Chhâ. 1. 1. 6. एतदस्मिन्नक्षरे संसृज्य[ते]
Bṛih. 4. 3. 8. पाप्मभिः संसृज्यते
Śwet. 3. 2. संसृज्य विश्वा भुवना[नि] Siras. 5.
Śiras. 4. संसृजति विसृजति च
— वाचं संसृजति विसृजा[ति]
5. तदेतेनात्ममन्त्रेणार्द्धचतु[र्थ]मात्रेण शान्तिं संसृजा[त्] पशुपाशविमोक्षणम्
Brahma. 1. यदा याति संसृष्टमाक्[...]

संस्कार

Nyâsa. 1. प्रेतस्य मन्त्रैः संस्कारो [भव]ति

संस्कृ

ush. 2. 6. आत्मानमध्वर्युः संस्करोति
â. 4. 16. 2. तयोरन्यतरां मनसा संस्करोति ब्रह्मा
3. अन्यतरामेव वर्त्तनीं संस्कुर्वन्ति
4. उभे एव वर्त्तनी संस्कुर्वन्ति
8. 8. 5. प्रेतस्य शरीरं . . संस्कुर्वन्ति
h. 6. 3. 1. आवृताज्यं संस्कृत्य

संस्तम्भ्

sut. 4. संस्तभ्य सिंहम्
â. 3. 43. संस्तभ्यात्मानमात्मना

संस्ताव

h. 4. 2. 3. तयोरेष संस्तावः

संस्तृ

ush. 2. 15. नवैस्तृणैरगारं संस्तीर्य

संस्थ

tri. 6. 27. मृद्वत्संस्थमयस्पिण्डम्

संस्था

sut. 9. तत्र तत्र च सम्पूर्णं सन्तिष्ठति
ur. 14. ऊरोर्मध्ये तु संस्थाप्य
hma. 3. तुरीयं मूर्ध्नि संस्थितम्
sa. 5. संस्थाप्य हृदयं तपः
h. 21. रक्षणाय च संस्थितः

संस्थान

sh. 1. 3. सालज्यं संस्थानम् 5.

संस्थापन

. 4. 8. धर्मसंस्थापनार्थाय

संस्थिति

tri. 5. 1. बहुधा संस्थितिस्त्वयि
6. 36. यथा दीपस्य संस्थितिः

संस्पर्श

Kaush. 2. 4. संस्पर्शं जिगमिषेत्
Chhâ. 3. 13. 7. शरीरे संस्पर्शेनोष्णिमानं विजानाति
Maitri. 6. 26. तृणकाष्ठसंस्पर्शेन . . प्राणसंस्पर्शेन

संस्पर्शज

Gîtâ. 5. 22. ये हि संस्पर्शजा भोगाः

संस्पष्ट

Kaush. 4. 1. गार्ग्यो बालाकिरनूचानः संस्पष्ट आस

संस्पृश्

Kaush. 2. 15. इन्द्रियैरिन्द्रियाणि संस्पृश्य
Gauḍa. 4. 26. चित्तं न संस्पृशत्यर्थम्
27. निमित्तं न सदा चित्तं संस्पृशति
Śiras. 5. व्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्
Garbha. 4. वैष्णवेन वायुना संस्पृष्टः

संस्फुर्

Maitri. 6. 35. संस्फुरत्यसावन्तर्गः सुराणाम्

संस्मृ

Râmot. 5. मनसा संस्मरन् ब्रह्मा
Gîtâ. 18. 76. संस्मृत्य संस्मृत्य संवादम्
77. तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपम्

संस्रव

Bṛih. 6. 3. 2. अग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रवमवनयति (20 times).

संहन्

Bṛih. 1. 2. 2. तद्यदपां शर आसीत्तत् समहन्यत

Brih. 4. 3. 19. संहत्य पक्षौ संलयायैव ध्रियते

Mund. 2. 2. 6. अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः

संहा

Chhâ. 1. 10. 6. स ह प्रातः सञ्जिहान उवाच 5. 11. 5.

4. 1. 5. स ह सञ्जिहान एव क्षत्तारमुवाच

संहार

Krish. 21. संहारार्थं च शत्रूणाम्

Râmot. 3. उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी

संहिता

Tait. 1. 3. 1. संहिताया उपनिषदं व्याख्यास्यामः

संहृ

Śwet. 5. 3. यस्मिन् क्षेत्रे संहरत्येष देवः

Nrip. 3. 1. माया..सर्वमिदं संहरति

Nrisut. 1. संहरेदोमिति

3. अथ लिङ्गान् संहृत्य

— महासूक्ष्मं महाकारणे च संहृत्य

4. ओमिति संहृत्य

— ओमिति संहरन्

Kshur. 3. कूर्मोऽङ्गानीव संहृत्य

Śiras. 6. तदा संहार्यते प्रजाः

Brahma. 3. सृजते संहरत्यपि

Gîtâ. 2. 58. यदा संहरते चायम्

सकल

Maitri. 6. 15. य आदित्याख्यः स कालः सकलः

— सकलस्य वा एतद्रूपं यत् संवत्सरः

Kaivalya. 5. सकलेन्द्रियाणि निरुध्य

13. सुषुप्तिकाले सकले वि[...]

14. ततस्तु जातं सकलं वि[...]त्रम्

19. मय्येव सकलं जातम्

Nrisut. 3. अथ सकलः साधारः

Brahma. 3. ब्राह्मण्यं सकलं तस्य

Dhyâna. 10. वृक्षं तु सकलं विद्यात्

— सकले निष्कले भावे

Mukti. 2. 73. तदेव चाहं सकलं विमु[...] ओम्

सकलभोगभुज्

Kâlâg. 2. स सकलभोगभुक्

सकषाय

Gauda. 3. 44. सकषायं विजानीयात्

सकाशम्

Chhâ. 8. 7. 3. प्रजापतिसकाशमाजग्मतुः

सकृच्छ्रवणमात्र

Mukti. 1. 45. सकृच्छ्रवणमात्रेण सर्वौघनिकृन्तनम्

सकृज्ज्योतिस्

Gauda. 3. 37. सुप्रशान्तः सकृज्ज्योतिः

सकृत्

Kaush. 3. 2. न हि कश्चन शक्नुयात् सकृद्वाचा नाम प्रज्ञापयितुम्

Kaivalya. 24. सर्वदा सकृद्वा जपेत्

Śiras. 7. अथर्वशिरः सकृज्जप्त्वा

Śikhâ. 1. सकृदावर्त्तव्यः

— सकृदुच्चारितमात्रः

सकृद्दिवा

Chhâ. 3. 11. 3. सकृद्दिवा हैवास्मै भवति Kathaśru. 1.

सकृद्विद्युत्त

Brih. 2. 3. 6. यथा पुण्डरीकं यथा सकृद्विद्युत्तम्

h. 2. 3. 6. सकृद्विद्युत्तेव ह वा अस्य-
श्रीर्भवति य एवं वेद

सकृद्विभात

hâ. 8. 4. 2. सकृद्विभातो ह्येवैष ब्रह्म-
लोकः

nda. 3. 36. सकृद्विभातं सर्वज्ञम्
4. 81. सकृद्विभातो ह्येवैष धर्मः

isut. 9. सुविभातं सकृद्विभातम्

ikti. 2. 73. सकृद्विभातं त्वजमेकमक्षरम्

सक्थि

ih. 1. 2. 3. असौ चासौ च सक्थ्यौ

सखि

hâ. 8. 2. 5. सखायः समुत्तिष्ठन्ति

vet. 4. 6. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
Mund. 3. 1. 1.

âsa. 1. ओं चित्सखायमिति

uneya. 4. सखा मा गोपायौजः सखा
योऽसि

ish. 10. शृंगमिन्द्रः सखा सुराः

tâ. 1. 26. पुत्रान्पौत्रान् सखींस्तथा
4. 3. भक्तो ऽसि मे सखा चेति
11. 41. सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति
44. पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः

सखिलोक

hâ. 8. 2. 5. सखिलोकेन सम्पन्नो मही-
यते

सखिलोककाम

hâ. 8. 2. 5. यदि सखिलोककामो भ-
वति

सगण

hânâr. 20. 2. सजोषा इन्द्र सगणः

सगद्गदम्

â. 11. 35. सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य

सगुण

Gopi. 5. सगुणं ब्रह्म चिद्घनानन्दैक-
रूपम्

Râmap. 81. गुणान्तः सगुणः स्वयम्

संकट

Mukti. 2. 4. त्वां योजयति संकटे

संकर

Gîtâ. 1. 42. संकरो नरकायैव
3. 24. संकरस्य च कर्त्ता स्याम्

संकल्प

Ait. 5. 2. मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः

Kaush. 3. 2. आप्नोति प्रज्ञया सत्यं स-
ङ्कल्पम्

Kena. 30. अनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं
सङ्कल्पः

Chhâ. 7. 4. 1. सङ्कल्पो वाव मनसो भूयान्
— एतानि . . सङ्कल्पे प्रतिष्ठि-
तानि
2. स एष सङ्कल्पः सङ्कल्पमु-
पास्स्व
3. यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते
— यावत्सङ्कल्पस्य गतम्
— अस्ति भगवः सङ्कल्पाद्भूय
इति सङ्कल्पाद्वाव भूयो
ऽस्ति

7. 5. 1. चित्तं वाव सङ्कल्पाद्भूयः
7. 26. 1. आत्मतः सङ्कल्पः
8. 2. 1. सङ्कल्पादेवास्य पितरः स-
मुत्तिष्ठन्ति (similarly 8
times more)
10. यं कामं कामयते सो ऽस्य
सङ्कल्पादेव समुत्तिष्ठति

Brih. 1. 5. 3. कामः सङ्कल्पो विचिकि-
त्सा Maitri. 6. 30.
2. 4. 11. सर्वेषां सङ्कल्पानां मन ए-
कायनम् 4. 5. 12.

Śwet. 5. 8. संकल्पाहंकारसमन्वितः
Maitri. 2. 5. *vide* लिङ्ग 5. 2.
6. 10. अध्यवसायसंकल्पाभिमानाः
30. *vide* लिङ्ग
Tejo. 13. सङ्कल्पं च विकल्पकम्
Haṁsa. 2. मनसि सङ्कल्पविकल्पे
Mukti. 2. 37. सङ्कल्प एव तन्मन्ये सङ्कल्पोपशमे न तत्
Gîtâ. 6. 4. सर्वसंकल्पसन्न्यासी

संकल्पक

Amṛita. 15. मनः सङ्कल्पकं ध्यात्वा

संकल्पन

Śwet. 5. 11. सङ्कल्पनस्पर्शनदृष्टिहोमैः

संकल्पप्रभव

Gîtâ. 6. 24. संकल्पप्रभवान् कामान्

संकल्पात्मक

Chhâ. 7. 4. 2. सङ्कल्पैकायनानि सङ्कल्पात्मकानि

संकल्पादिधर्म

Sarvop. 2. सङ्कल्पादिधर्मान् यदा करोति

संकल्पैकायन

Chhâ. 7. 4. 2. एतानि सङ्कल्पैकायनानि

संकाश

Nâda. 7. भानुमण्डलसङ्काशा
Dhyâna. 11. अतसीपुष्पसङ्काशम्
13. शुद्धस्फटिकसङ्काशम् Yogat. 11; Hamsa. 1.
14. कदलीपुष्पसङ्काशम्
Brahmav. 9. उकारश्चन्द्रसङ्काशः

संकील्

Mukti. 2. 12. मन्त्राः संकीलिता इव

संकुच्

Śwet. 3. 2. सञ्चुकोचान्तकाले
Sivas. 5.

संकॢप्

Chhâ. 1. 2. 6. तस्मात्तेनोभयं संकल्पयते कल्पनीयं चासंकल्पनीयं
7. 4. 1. यदा वै सङ्कल्पयते
2. समक्लृपतां द्यावापृथिवी समकल्पेतां वायुश्चाकाशं समकल्पन्तामापश्च तेजः
— तेषां संक्लृप्त्यै वर्षं सङ्कल्पते (similarly six times more).
3. संक्लृप्तान् वै स लोकान् ..अभिसिध्यति
7. 5. 1. यदा वै चेतयतेऽथ सङ्कल्पयते
Bṛih. 1. 3. 6. यत्कल्याणं सङ्कल्पयति तदात्मने
— यदेवेदमप्रतिरूपं सङ्कल्पयति
Gauḍa. 3. 32. न सङ्कल्पयते यदा
Garbha. 1. मनसा सङ्कल्पयति

संकॢप्ति

Chhâ. 7. 4. 2. तेषां संक्लृप्त्यै वर्षं सङ्कल्पते (similarly 6 times more)

संक्रम्

Maitri. 2. 6. यो ऽयमवाङ् संक्रामति

संक्लेश

Gauḍa. 4. 24. संक्लेशस्योपलब्धेश्च

संक्षिप्

Amṛita. 15. संक्षिप्यात्मनि बुद्धिमान्

संक्षेप

Yogaśi. 9. संक्षेपात् कथितं मया

संखिद

Chhâ. 6. 1. 12. यथा सुहयः पड्वीशशङ्कून् संखिदेदेवमितरान्प्राणान्
संखिदत्

संख्य

1. 47. एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये
2. 4. कथं भीष्ममहं संख्ये

संख्या

ap. 63. विलिखेद्भूमिसंख्यया
ti. 1. 12. एकविंशतिसंख्यया
13. सहस्रसंख्यया जाताः

सङ्ग

2. 47. मा ते संगो ऽस्त्वकर्मणि
48. संगं त्यक्त्वा धनंजय
62. संगस्तेषूपजायते
— संगात्सञ्जायते कामः
5. 10. संगं त्यक्त्वा करोति यः
11. संगं त्यक्त्वात्मशुद्धये
18. 6. संगं त्यक्त्वा फलानि च
9. संगं त्यक्त्वा फलं चैव

सङ्गत

a. 1. 8. आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सूनृतां च

सङ्गति

4. सर्वेषामिह सङ्गतिः
2. 44. साधुसङ्गतिरेव च

सङ्गरहित

18. 23. नियतं संगरहितम्

सङ्गवर्जित

11. 55. मद्भक्तः संगवर्जितः

सङ्गविवर्जित

12. 18. समः संगविवर्जितः

सङ्गवेला

2. 9. 4. यत्सङ्गवेलायां स आदिः

संग्रह

2. 15. तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि
8. 11. तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये

120

संग्राम

Gitâ. 2. 33. अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि

संघ

Gitâ. 11. 15. भूतविशेषसंघान्
21. महर्षिसिद्धसंघाः
22. गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः
26. अवनिपालसंघैः
36. सिद्धसंघाः

संघात

Maitri. 1. 3. अस्थिचर्मस्नायुमज्जमांसशुक्रशोणितश्लेष्माश्रुदूषिकाविण्मूत्रपित्तकफसंघाते
6. 34. पवमानपावकशुचिसंघातो हि जाठरः
Ganda. 3. 3. घटादिवच्च संघातैः
10. संघाताः स्वप्नवत्सर्वे
Gitâ. 13. 6. संघातश्चेतना धृतिः

संघातैकपदोज्झित

Tejo. 7. स्वभावभावनाग्राह्यं संघातैकपदोज्झितम्

सच्

Mahânâr. 5. 4. इमं मे . . स्तोमं सचता
9. 4. त्रीणि ज्योतींषि सचते
Nrip. 2. 4.

सचराचर

Ganda. 3. 31. मनोदृश्यमिदं द्वैतं यत्किञ्चित् सचराचरम्
Gitâ. 9. 10. सूयते सचराचरम्
11. 7. पश्याद्य सचराचरम्

सचामर

Râmap. 51. धृतच्छत्रं सचामरम्

सचारकविध

Maitri. 6. 14. तत्रैकैकमात्मनो नवांशकं सचारकविधम्

सचेतस्

Gîtâ. 11. 51. सचेताः प्रकृतिं गतः ..

सच्चित्सुखात्मक

Mukti. 2. 19. सोऽहं सच्चित्सुखात्मकः

सच्चिदानन्द

Vâsu. 3. स्वप्रभं सच्चिदानन्दम्

Râmot. 5. यः सच्चिदानन्दाद्वैतैकरसात्मा (47).

सच्चिदानन्दघन

Nrisut. 6. सच्चिदानन्दघनं ज्योतिः (bis).

सच्चिदानन्दपूर्णात्मन्

Nrisut. 4. सच्चिदानन्दपूर्णात्मसु नवात्मकं सच्चिदानन्दपूर्णात्मानं ..परमं ब्रह्म संभाव्य

सच्चिदानन्दमय

Nrip. 1. 7. तस्मादिदं साम सच्चिदानन्दमयं परं ब्रह्म

सच्चिदानन्दमात्र

Nrisut. 5. सच्चिदानन्दमात्रमेकरसम् (bis).

... 7. अतमाः सच्चिदानन्दमात्रः (ter).

सच्चिदानन्दरूप

Nrisut. 7. ब्रह्मैवेदं सर्वं सच्चिदानन्दरूपम्

— सच्चिदानन्दरूपमिदं सर्वम्

Râmap. 92. रामं वन्दे सच्चिदानन्दरूपम्

सच्चिदानन्दविग्रह

Mukti. 1. 4. त्वं परमात्मासि सच्चिदानन्दविग्रहः

सच्चिदानन्दाख्य

Râmot. 2. ओंनद्वयात्मकाः सच्चिदानन्दाख्याः

सजन

Brih. 3. 2. 13. न नावेतत्सजन इति

सजोषस्

Mahânâr. 20. 2. सजोषा इन्द्र सगणः

सञ्चय

Tejo. 13. न मुक्तिग्रन्थसञ्चयम्

सञ्चर्

Chhâ. 8. 3. 2. उपर्युपरि सञ्चरन्तः

Brih. 1. 5. 20. सञ्चरंश्चासञ्चरंश्च न थते 21.

Swet. 5. 7. प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः

Mahânâr. 25. 1. यत्सञ्चरत्युपविशत्युत्ति ते च स प्रवर्ग्यः

Kshur. 5. प्राणान् सञ्चारयेद्योगी

9. ततः सञ्चारयेत्प्राणान्

Siras. 5. सं च विचरति सर्वम्

Garbha. 1. यत्सञ्चरति स वायुः

Brahma. 2. तस्मिन्निदं स च विच (so MSS.).

Dhyâna. 16. आत्मा सञ्चरते ध्रुवम्

सञ्चर

Chhâ. 1. 13. 3. सञ्चरो हुंकारः

सञ्चरण

Brih. 4. 2. 3. एनयोरेषा सृतिः सञ्च

सञ्चि

Siras. 5. बुद्ध्या सञ्चितं स्थापये तु रुद्रे (bis).

सञ्चिन्त्

Nrisut. 4. तुरीयोङ्काराग्रविद्योतं णवेन सञ्चिन्त्य

सञ्ज्

Brih. 1. 3. 8. क नु सो ऽभूद्यो न इत्थं सक्तः

ा. 3. 9. 26. असक्तो न हि सज्यते 4. 2. 4; 4. 4. 22; 4. 5. 15.
4. 4. 6. तदेव सक्तः सह कर्मणैति
ıtri. 4. 2. येषां सक्तस्तु भूतात्मा
6. 28. पुत्रदारकुटुम्बेषु सक्तस्य
l. 3. 25. सक्ताः कर्मण्यविद्वांसः
28. इति मत्वा न सज्जते
29. सज्जन्ते गुणकर्मसु
5. 12. फले सक्तो निबध्यते
14. 9. सत्त्वं सुखे सञ्जयति
— तमः प्रमादे सञ्जयत्युत
18. 22. एकस्मिन् कार्ये सक्तम्

सञ्जन्

ıt. 2. 6. तत्र सञ्जायते मनः
ıs. 6. अक्षरात् सञ्जायते कालः
ıti. 2. 25. अतिचञ्चलं चित्तं सञ्जायते
. 1. 11. तस्य सञ्जनयन् हर्षम्
2. 62. संगात्सञ्जायते कामः
13. 26. यावत्सञ्जायते किञ्चित्
14. 17. सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानम्

सञ्जय

1. 1. किमकुर्वत सञ्जय

सञ्ज्ञा

. 2. 4. 12. न प्रेत्य संज्ञास्ति 13; 4. 5. 13.
ri. 6. 10. सुखदुःखमोहसंज्ञं.. इदं जगत्
ıi. 1. 7. संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते

सञ्ज्ञान

5. 2. संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानम्

सञ्ज्ञित

ıt. 3. मूलप्रकृतिसंज्ञिता
11. 1. अध्यात्मसंज्ञितम्

सञ्ज्वल्

Nrisut. 3. तदधिष्ठानमात्मानं संज्वाल्य
7. स एतत् सर्वं.. संज्वाल्य

सत्

Kaush. 1. 6. यदन्यद्देवेभ्यश्च प्राणेभ्यश्च तत्सत्
Chhâ. 3. 19. 1. तत्सदासीत्तत्समभवत्
6. 2. 1. सदेव सोम्येदमग्र आसीत्
— तस्मादसतः सज्जायेत
2. कथमसतः सज्जायेतेति
— सत्त्वेव सोम्येदमग्र आसीत्
6. 8. 1. सता सोम्य तदा सम्पन्नो भवति
4. सन्मूलमन्विच्छ 6.
6. 9. 2. इमाः सर्वाः प्रजाः सति सम्पद्य न विदुः सति सम्पद्यामहे
6. 10. 2. इमाः सर्वाः प्रजाः सत आगम्य न विदुः सत आगच्छामहे
6. 13. 2. तत्सोम्य न निभालयसे
8. 3. 5. तद्यत्सत्तदमृतम्
8. 5. 2. सत आत्मनस्त्राणं विन्दते
Brih. 1. 3. 28. असतो मा सद्गमय (bis)
— सदमृतम्
2. 3. 1. द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे.. सच्च त्यं च
2. एतं मर्त्यमेतत्स्थितमेतत्सत् 4.
— एतस्य सत एष रसो य एष तपति सतो ह्येष रसः
4. एतस्य सत एष रसो यच्चक्षुः सतो ह्येष रसः
Tait. 2. 6. 1. तदनुप्रविश्य सच्च त्यच्चाभवत्
2. 7. 1. ततो वै सदजायत

Katha. 1. 1. तं ह कुमारं सन्तं .. श्रद्धाविवेश
Śwet. 4. 18. यदातमस्तन्न .. सन्नचासन्
Maitri. 6. 30. सद्ब्रह्मणि सत्यभिलाषिणि
Mund. 2. 2. 1. एतज्जानथ सदसद्वरेण्यम्
Mahânâr. 7. 5. सतां शक्यः प्रोवाचोपनिषदिन्द्रो ज्येष्ठः
21. 2. सतां हि सत्यं तस्मात्सत्ये रमन्ते
Praśna. 2. 5. सदसच्चामृतं च यत्
4. 5. सच्चासच्च सर्वं पश्यति
Kaivalya. 1. सदा सद्भिः सेव्यमानाम्
Gauḍa. 1. 6. प्रभवः सर्वभावानां सताम्
2. 9. बहिश्चेतोगृहीतं सत् 10.
3. 27. सतो हि मायया जन्म युज्यते न तत्त्वतः
4. 22. सदसत्सदसच्चापि
37. सज्जागरितमिष्यते
40. सदसद्धेतुकं तथा
— सच्च सद्धेतुकं नास्ति
Nṛip. 1. 1. सतो बन्धुमसति निरविन्दन्
Nṛisut. 7. सद्धीदं सर्वं सत्सदिति (Nârâyaṇa explains this and सदिति ; 3 MSS, read तत्सदिति)
— किं सदितीदमिदं नेत्यनुभूतिरिति
8. न हि वस्तुतः सत्
— आत्मा ह्यदं सर्वं सदेव
9. सदेव पुरस्तात्
Sarvop. 4. न सती नासती न सदसती
— विकारहेती .. अनिरूप्यमाणे सती
Râmot. 3. अहमों तत्सद्यत्परं ब्रह्म
Gîtâ. 2. 16. नाभावो विद्यते सतः
9. 19. सदसच्चाहमर्जुन
Gîtâ. 11. 37. त्वमक्षरं सदसत्तत्परं
13. 12. न सत्तन्नासदुच्यते
17. 23. ओं तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणः
26. सदित्येतत्प्रयुज्यते
— सच्छब्दः पार्थ युज्यते
27. सदिति चोच्यते
— सदित्येवाभिधीयते

सततम्

Mahânâr. 11. 9. सततं तु शिराभिस्तु
Nṛisut. 7. सततं ह्येतद्ब्रह्म
Brahmab. 20. सततं मन्थयितव्यम्
Yogaśi. 3. ध्यायेत सततं प्राज्ञः
Kâlâg. 2. स सततं रुद्रजापी भवे
Krish. 8. स्तुवन्ति सततं यन्मे
Mukti. 2. 29. आवासनत्वात्सततम्
Gîtâ. 3. 19. तस्मादसक्तः सततम्
6. 10. योगी युञ्जीत सततमात्मनम्
8. 14. अनन्यचेताः सततम्
9. 14. सततं कीर्त्तयन्तो माम्
12. 14. सन्तुष्टः सततं योगी
17. 24. सततं ब्रह्मवादिनाम्
18. 57. मच्चित्तः सततं भव

सततयुक्त

Gîtâ. 10. 10. तेषां सततयुक्तानाम्
12. 1. एवं सततयुक्ता ये

सतत्त्व

Kâlâg. 1. अधीहि भगवंस्त्रिपुण्ड्रविधिं सतत्त्वं (so Nârâyaṇa; other MSS. ॰विधिम्)

सतूर्य

Katha. 1. 25. इमा रामाः सरथाः सतूर्या

सतूलिका

Râmap. 86. मृदुश्लक्ष्णसतूलिकायाम्

सत्कार

[…]l. 17. 18. सत्कारमानपूजार्थम्

सत्कुलभव

[…]kti. 1. श्रद्धावन्तं सत्कुलभवम्

सत्कृत

[…]ṣi. 5. राजभिः सत्कृतो भवेत्

सत्तम

[…]hâ. 2. 9. 5. तस्मात्ते सत्तमाः प्राजापत्यानाम्

सत्तामात्र

[…]sut. 9. सत्तामात्रं हीदं सर्वम्
[…]vop. 4. केवलः सत्तामात्रः

सत्त्रायण

[…]hâ. 8. 5. 2. यत्सत्त्रायणमित्याचक्षते

सत्त्व

[…]ha. 6. 7. मनसः सत्त्वमुत्तमं सत्त्वादधि महानात्मा
[…]t. 3. 12. सत्त्वस्यैष प्रवर्त्तकः
[…]tri. 4. 3. तपसा प्राप्यते सत्त्वं सत्त्वात्सम्प्राप्यते मनः
5. 2. एतद्वै सत्त्वस्य रूपं तत्सत्त्वमेवेरितम्
6. 38. तेजोमध्ये स्थितं सत्त्वं सत्त्वमध्ये स्थितो ऽच्युतः
[…]ut. 9. अस्य सत्त्वमसत्त्वं च दर्शयति
[…]a. 2. शरीरं सत्त्वमुच्यते
[…]g. 2. द्वितीया रेखा सा..सत्त्वम्
[…]la. 4. सत्त्वं रजस्तम इति Gîtâ. 14. 5.
[…]h. 5. सत्त्वराजसतामसी
[…]ap. 15. रजःसत्त्वतमोगुणैः
88. रजः सत्त्वं तमः

Gîtâ. 10. 36. सत्त्वं सत्त्ववतामहम्
41. यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वम्
13. 26. सत्त्वं स्थावरजंगमम्
14. 6. तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकम्
9. सत्त्वं सुखे सञ्जयति
10. सत्त्वं भवति भारत
— रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा
11. विवृद्धं सत्त्वमित्युत
14. यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु
17. सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानम्
17. 1. सत्त्वमाहो रजस्तमः
8. *vide* विवर्द्धन
18. 40. सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तम्

सत्त्ववन्त्

Gîtâ. 10. 36. सत्त्वं सत्त्ववतामहम्

सत्त्वशुद्धि

Chhâ. 7. 26. 2. आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः

सत्त्वसंशुद्धि

Gîtâ. 16. 1. अभयं सत्त्वसंशुद्धिः

सत्त्वसमाविष्ट

Gîtâ. 18. 10. त्यागी सत्त्वसमाविष्टः

सत्त्वस्थ

Maitri. 6. 30. शुचौ देशे शुचिः सत्त्वस्थः
Chûl. 2. अन्तः पश्यति सत्त्वस्थम्
Gîtâ. 14. 18. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थाः

सत्त्वादि

Sarvop. 2. मनआदिश्च प्राणादिश्च सत्त्वादिश्च

सत्त्वानुरूप

Gîtâ. 17. 3. सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा

सत्त्वान्तरस्थ

Maitri. 6. 38. सत्त्वान्तरस्थमचलममृतम्

सत्पति

Praśna. 2. 11. अत्ता विश्वस्य सत्पतिः

सत्प्रतिष्ठ

Chhâ. 6. 8. 4. सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः 6.

सत्य

Kaush. 1. 2. तेन सत्येन तेन तपसा ऋतुरस्मि
6. सत्यमिति ब्रूयात् किं तद्यत्सत्यम्
— एतया वाचाभिव्याह्रियते सत्यम्
3. 1. इन्द्रः सत्यादेव नेयाय सत्यं हीन्द्रः
2. आप्नोति प्रज्ञया सत्यं संकल्पम्
4. 2. विद्युति सत्यम्
— सव्ये अक्षिणि सत्यस्य
5. सत्यस्यात्मेति वा अहमेतमुपासे
— एतमेवमुपास्ते सत्यस्यात्मा भवति
18. सत्यस्यात्मा .. तेजस आत्मेति वा अहमेतमुपासे
Kena. 13. इह चेदवेदीत् सत्यमस्ति
33. सत्यमायतनम्
Chhâ. 1. 2. 3. तस्मात्तयोभयं वदति सत्यं चानृतं च
3. 11. 2. देवास्तेनाहं सत्येन मा विराधिषि ब्रह्मणा
4. 4. 5. न सत्यादगाः
6. 1. 4. मृत्तिकेत्येव सत्यम्
5. लोहमित्येव सत्यम्
Chhâ. 6. 1. 6. कृष्णायसमित्येव स
6. 4. 1. त्रीणि रूपाणीत्येव सत् 2, 3, 4.
6. 8. 7. तत्सत्यं स आत्मा 6 4; 6. 10. 3; 6. 11 6. 12. 3; 6. 13. 3 14. 3; 6. 15. 3; 6. 3.
6. 16. 2. सत्यमात्मानं कुरुते. त्येनात्मानमन्तर्धाय
7. 2. 1. सत्यं चानृतं च 7. 7.
— न सत्यं नानृतम्
7. 16. 1. एष तु अतिवदति यः त्येनातिवदति सो भगवः सत्येनातिवदानि सत्यं त्वेव विजिज्ञासि व्यमिति सत्यं .. वि ज्ञास इति
7. 17. 1. यदा वै विजानात्यथ स वदति नाविजानन् स वदति विजानन्नेव स वदति
8. 1. 5. एतत्सत्यं ब्रह्मपुरम्
6. व्रजन्त्येतांश्च सत्यान् मान्
8. 3. 1. सत्याः कामा अनृता धानाः 2.
— तेषां सत्यानां सतामनृ मपिधानम्
4. ब्रह्मणो नाम सत्यमिति
Brih. 1. 4. 14. यो वै स धर्मः सत्यं वै त
— सत्यं वदन्तमाहुर्धर्मं व तीति धर्मं वा वदन्तं त्यं वदतीति
1. 6. 3. एतदमृतं सत्येन छन्नम्
— नामरूपे सत्यम्
2. 1. 20. तस्योपनिषत्सत्यस्य सत्य मिति Maitri. 6. 32.

2. 1. 20. प्राणा वै सत्यं तेषामेष स-
त्यम्
2. 3. 6. अथ नामधेयं सत्यस्य स-
त्यमिति प्राणा वै सत्यं
तेषामेष सत्यम्
2. 5. 12. सत्यं सर्वेषां भूतानां मध्वस्य
सत्यस्य सर्वाणि . . मधु
— अयमस्मिन्सत्ये . . पुरुषः
3. 9. 12. तस्य का देवतेति सत्यमिति
23. कस्मिन्नु दीक्षा प्रतिष्ठितेति
सत्य इति तस्मादपि दी-
क्षितमाहुः सत्यं वदेति स-
त्ये ह्येव दीक्षा . . कस्मिन्नु
सत्यम्
— हृदयेन सत्यं जानाति हृद-
ये ह्येव सत्यं प्रतिष्ठितम्
4. 1. 4. सत्यमित्येनदुपासीत
— स आहाद्राक्षमिति तत्सत्यम्
5. 4. 1. तदास सत्यमेव . . सत्यं ब्र-
ह्म . . सत्यं ब्रह्मेति सत्यं
ह्येव ब्रह्म
5. 5. 1. आपः सत्यमसृजन्त सत्यं
ब्रह्म
— ते देवाः सत्यमेवोपासते
— एतत् त्र्यक्षरं सत्यमिति
— प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यम्
— अनृतमुभयतः सत्येन परि-
गृहीतम्
2. यत्तत्सत्यमसौ स आदित्यः
5. 14. 4. तद्वै तत्सत्ये प्रतिष्ठितं चक्षुर्वै
सत्यं चक्षुर्हि वै सत्यम्
— तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितं
. . तस्मादाहुर्बलं सत्यादो-
गीयः
5. 15. 1. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्या-
पिहितं मुखं Iśâ. 15; Mai-
tri. 6. 35.

Brih. 6. 2. 15. ये चामी अरण्ये श्रद्धां स-
त्यमुपासते
Tait. 1. 1. 1. ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदि-
ष्यामि
1. 9. 1. सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च
— सत्यमिति सत्यवचा राथी-
तरः
1. 11. 1. सत्यं वद धर्मं चर
— सत्यान्न प्रमदितव्यम्
1. 12. 1. ऋतमवादिषं सत्यमवादि-
षम्
2. 1. 1. सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
2. 4. 1. सत्यमुत्तरः पक्षः
2. 6. 1. सत्यमभवद्यदिदं किञ्च त-
त्सत्यमित्याचक्षते
Swet. 1. 15. सत्येनैनं तपसा यो ऽनुप-
श्यति Brahma. 3.
Maitri. 6. 3. यदमूर्त्तं तत्सत्यम्
6. स सत्यं प्रजापतिस्तप्त्वा
— सत्यं वै चक्षुः
8. एष हि खल्वात्मा . . स-
त्यम् 7. 7.
7. 7. सत्ये नभसि हिताय नमः
10. सत्यमिवानृतं पश्यन्ति
— यद्वेदेष्वभिहितं तत् सत्यम्
11. सत्यानृतोपभोगार्थः
Mund. 1. 1. 8. अन्नात्प्राणो मनः सत्यम्
1. 2. 1. तदेतत्सत्यम् 2. 1. 1; 2.
2. 2.
13. येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यम्
2. 1. 7. श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च
3. 1. 5. सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष
आत्मा
6. सत्यमेव जयते नानृतम्
— सत्येन पन्था विततो देव-
यानः
— यत्र तत्सत्यस्य परमं नि-
धानम्

Mund. 3. 2. 11. तदेतत्सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच
Mahânâr. 1. 6. तदेवर्तं तदु सत्यमाहुः
5. 5. ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसो ऽध्यजायत
8. 1. ऋतं तपः सत्यं तपः
12. 1. ऋतं सत्यं परं ब्रह्म Nrip. 1. 6.
3. आदित्यो वै..सत्यः
— किं तत्सत्यमन्नमायुः
13. 1. अर्चयन्ति तपः सत्यम् Siras. 6.
7. या सा सत्येत्यमृतेति वसिष्ठः
14. 3. सत्ये ज्योतिषि जुहोमि
15. 3. भूर्भुवः सुवर्महर्जनस्तपः सत्यम्
21. 2. सत्यं परं परं सत्यं सत्येन न सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्ते
— सतां हि सत्यं तस्मात् सत्ये रमन्ते
22. 1. सत्येन वायुरावाति सत्येनादित्यो रोचते दिवि
— सत्यं वाचः प्रतिष्ठा सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मात् सत्यं परमं वदन्ति
Prasna. 1. 15. येषु सत्यं प्रतिष्ठितम्
2. 8. ऋषीणां चरितं सत्यम्
Gauda. 1. 12. न सत्यं नापि चानृतम्
3. 48. एतत्तदुत्तमं सत्यम् 4. 71.
4. 78. बुध्वा निमित्ततां सत्याम्
Nrisut. 9. सत्यो मुक्तो निरञ्जनः
— सत्यं ह्येत्थं पुरस्तात्
— सत्यं सूक्ष्मं परिपूर्णमद्वयम्
— तदेतत्सत्यमात्मा ब्रह्मैव
— अत्र ह्येव न विचिकित्स्यमित्यों सत्यम्

Siras. 1. छन्दोहं सत्योहम्
— सत्येन सत्यं..तर्पयामि
2. यो वै रुद्रः..यश्च सत्यं
7. ओं सत्यमों सत्यम्
Mahâ. 2. बिभ्रच्छ्रियं सत्यं ब्रह्मचर्य
Tejo. 11. न च सत्यं न संविदुः
Sarvop. 3. सत्यं ज्ञानमनन्तमानन्दं ब्रह्म
— सत्यमविनाशि
Aruneya. 4. ब्रह्मचर्यमहिंसां चापरिग्रहं च सत्यं च
Kâlâg. 2. ओं सत्यमित्युपनिषत् Mukti. 2. 78.
Krish. 17. सत्याक्रूरो दमोद्भवः
Mukti. 2. 17. सम्यगालोकनात्सत्यात्
Gîtâ. 10. 4. क्षमा सत्यं दमः शमः
16. 2. अहिंसा सत्यमक्रोधः
7. न सत्यं तेषु विद्यते
17. 15. सत्यं प्रियहितं च यत्
18. 65. सत्यं ते प्रतिजाने

1. सत्यकाम *adj.*

Chhâ. 8. 1. 5. सत्यकामः सत्यसंकल्पः 8. 7. 1, 3.
Maitri. 7. 7. सत्यसंकल्पः सत्यकामः
Mund. 1. 2. 1. तान्याचरथ नियतं सत्यकामाः

2. सत्यकाम

Chhâ. 4. 4. 1. सत्यकामो जाबालः 2, 4 5. 2. 3; Brih. 4. 1. 6 6. 3. 12.
2. सत्यकामो नाम त्वमसि
4. 5. 1. एनं..अभ्युवाद सत्यकाम३ 4. 6. 2; 4. 7. 2 4. 8. 2; 4. 9. 1.
4. 10. 1. सत्यकामे जाबाले
Brih. 6. 3. 11. सत्यकामाय जाबालाय

tri. 6. 5. एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म Praśna. 5. 2.
śna. 1. 1. शैब्यश्च सत्यकामः 5. 1. 3. सत्यकाम
itri. 6. 38. सत्यकामसर्वज्ञत्वसंयुक्तं ..चैतन्यम्

सत्यकामतस्

tri. 6. 34. स्वयोना उपशान्तस्य मनसः सत्यकामतः

सत्यता

h. 4. 1. 4. का सत्यता..चक्षुरेव

सत्यधर्म

h. 5. 15. 1. तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय Īśâ. 15; Maitri. 6. 35.
itri. 6. 35. एष ह वै सत्यधर्मो यदादित्यस्यादित्यत्वम्
— एतत्सत्यधर्मो नभसो ऽन्तर्गतस्य तेजसोंऽशमात्रं (bis).
— एतत् सवित् सत्यधर्मः

सत्यधृति

tha. 2. 9. सत्यधृतिर्वतासि

सत्यपूत

ip. 5. 3. स सत्यपूतो भवति Śiras. 7; Mahâ. 4

सत्यप्रसव

h. 6. 4. 19. देवाय सवित्रे सत्यप्रसवाय स्वाहा

सत्यभामा

h. 16. सत्यभामाहिंसेति वै

सत्यभूय

. 5. 5. 1. एतदनृतमुभयतः सत्येन परिगृहीतं सत्यभूयमेव भवति

सत्ययज्ञ

Chhâ. 5. 11. 1. सत्ययज्ञः पौलुषिः
5. 13. 1. सत्ययज्ञं पौलुषिम्

सत्यलोक

Nrip. 5. 6. स सत्यलोकं जयति
Nâda. 4. सत्यलोको व्यवस्थितः
Aruṇeya. 1. सत्यलोकं च..विसृजेत्

सत्यवचन

Chhâ. 3. 17. 4. अहिंसा सत्यवचनमिति

सत्यवचस्

Tait. 1. 9. 1. सत्यवचा राथीतरः

सत्यवाह

Muṇḍ. 1. 1. 2. भारद्वाजाय सत्यवाहाय

सत्यसङ्कल्प

Chhâ. 3. 14. 2. भारूपः सत्यसङ्कल्पः Maitri. 2. 6.
8. 1. 5. सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः 8. 7. 1, 3.
Maitri. 7. 7. सत्यसङ्कल्पः सत्यकामः

सत्यस्वरूप

Nrisut. 5. तस्मादेष सत्यस्वरूपः

सत्यात्मन्

Tait. 1. 6. 2. सत्यात्म प्राणारामं मनआनन्दम्

सत्याभिसन्ध

Chhâ. 6. 16. 2. स सत्याभिसन्धः सत्येनात्मानमन्तर्धाय

सत्र

Mahânâr. 25. 1. सर्ववेदसं वा एतत्सत्रम्
— एतद्वै जरामर्यमग्निहोत्रं सत्रम्

सत्वन्

Nila. 11. अथो ये अस्य सत्वानः

सत्वन्मत्स्य

Kaush. 4. 1. सो ऽवसत्..सत्वन्मत्स्येषु (so one MS.; another reads सत्वमत्स्येषु)

सत्संविन्मय

Nrisut. 9. ततो यूयमेव स्वप्रकाशा इति होवाच न च सत्संविन्मयाः

सत्संविन्मयत्व*

Nrisut. 9. इदं हि सत्संविन्मयत्वाद्यूयमेव

सद्

Mahânâr. 6. 7. सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि
20. 12. शरीरं यज्ञः शमलं कुसीदं तस्मिन्सीदतु यो ऽस्मान्द्वेष्टि

Atmapra. 1. विष्णुं ध्यायन्न सीदति

Gîtâ. 1. 29. सीदन्ति मम गात्राणि

सदधीयान

Maitri. 6. 30. सदधीयानः सद्वादी

सदम्

Swet. 4. 22. हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे (so all the MSS.)

सदश्व

Katha. 3. 6. सदश्वा इव सारथेः

सदस्

Kaush. 1. 1. सदस्येव वयं स्वाध्यायमधीत्य

Nila. 19. येषामप्सु सदस्कृतम्

सदसत्फलमय

Maitri. 4. 2. सदसत्फलमयैः पाशैः पङ्गुरिव बद्धम्

सदसद्योनि

Maitri. 3. 1. सदसद्योनिमापद्यता इ[illegible] 2 (bis).

Gîtâ. 13. 21. सदसद्योनिजन्मसु

सदसद्विहीन

Kaivalya. 24. समस्तसाक्षि सदसद्विहीन

सदसस्पति

Mahânâr. 2. 7. सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्

सदस्य

Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..के स[illegible]स्याः
4. तन्मात्राणि सदस्याः

सदा

Katha. 3. 5. अयुक्तेन मनसा सदा
6. युक्तेन मनसा सदा
7. अमनस्कः सदा शुचिः
8. समनस्कः सदा शुचिः
6. 17. सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः Swet 3. 13; 4. 17

Kaivalya. 1. सदा सद्भिः सेव्यमानाम्
21. चित् सदाहम्

Gauḍa. 1. 12. तुर्यं तत्सर्वदृक् सदा
3. 7. नैवात्मनः सदा जीवः
4. 20. सदा साध्यसमो हि सः
27. न सदा चित्तं संस्पृशति
42. अजातेस्त्रसतां सदा
52. यतो ऽचिन्त्याः सदैव ते
63. जीवान् पश्यति यान् [illegible]दा 65.
82. दुःखं विव्रियते सदा
84. गृहैर्यासां सदा वृतः
88. सदा बुद्धैः प्रकीर्तितम्.
94. भेदे विचरतां सदा
97. असक्तता सदा नास्ति

). 5. 10. सदा पश्यन्ति सूरयः Aruṇeya. 5; Vâsu 4; Skanda 15; Mukti 2. 77.
ut. 7. स्वे महिम्नि सदा समासते
ita. 35. सदा व्यावृत्य तिष्ठति
sa. 1. सदायं सर्वेषु देहेषु व्याप्तः
ma. 1. तत्सदा मय्येवावतिष्ठते
3. सदात्मा आत्मन्येवावतिष्ठते
ma. 1. सदा परदारवर्जी
ot. 3. सदा रामो ऽहम्
ti. 2. 75. सदैव तृप्तो ऽहमितीह भावय
5. 28. यः सदा मुक्त एव सः
6. 15. युञ्जन्नेवं सदात्मानम् 28.
8. 6. सदा तद्भावभावितः
10. 17. त्वां सदा परिचिन्तयन्
18. 56. सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणः

सदाचार

. 5. सदाचारः शुभाकल्पः
ti. 1. 22. सदाचाररतो भूत्वा

सदानन्द

. 5. 10. सदानन्दं परमानन्दम्
t. 9. सदानन्दचिन्मात्रमात्मैव

सदाम

2. 2. 1. सप्रत्याधानं सस्थूणं सदामम्

सदायतन

6. 8. 4. सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः 6.

सदाशिव

dr. 17. 5. ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्
5. 10. शाश्वतं शान्तं सदाशिवम्
Haṁsa. 2. सदाशिवः शक्त्यात्मा
Kâlâg. 2. द्वितीया मात्रा सा..सदाशिवः
Kaivalya. 18. चिन्मात्रो ऽहं सदाशिवः
Skanda. 7. कर्मनाशे सदाशिवः
— पाशमुक्तः सदाशिवः

सदृश

Gauḍa. 2. 6. वितथैः सदृशाः सन्तः 4. 31.
4. 79. सदृशे तत्प्रवर्तते
Nyâsa. 2. दारमाहृत्य सदृशम्
Gitâ. 3. 33. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः
4. 38. न हि ज्ञानेन सदृशम्
11. 12. सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः
16. 15. को ऽन्यो ऽस्ति सदृशो मया

सदेव

Bṛih. 3. 9. 19. दिशः..सदेवाः सप्रतिष्ठाः (bis).

सदैकरस

Nṛisut. 2. नित्यानन्दं सदैकरसम्

सदोज्ज्वल

Nṛisut. 2. व्याप्तः सदोज्ज्वलः
Râmot. 3. स आत्मा विज्ञेयः सदोज्ज्वलः

सदोदित

Nâda. 17. सदोदितं परं ब्रह्म

सदोष

Gitâ. 18. 48. सदोषमपि न त्यजेत्

सद्गुरु

Mukti. 1. सद्गुरुं विधिवदुपसंगम्य

सद्घन

Nṛisut. 8. सद्घनो ऽयं चिद्घनः

सद्धेतुक

Gauḍa. 4. 40. सद्य सद्धेतुकं नास्ति सद्धेतु-कमसत्कुतः

सद्ध्यायिन्

Maitri. 6. 30. सद्ध्यायी सद्याजी स्यात्

सद्ब्रह्मन्

Maitri. 6. 30. सद्ब्रह्मणि सत्यभिलाषिणि निर्वृत्तो ऽन्यः

सद्भाव

Gauḍa. 4. 57. सद्भावेन ह्यजं सर्वम्
Gîtâ. 17. 26. सद्भावे साधुभावे च

सद्मन्

Kaṭha. 2. 13. विवृतं सद्म नचिकेतसं मन्ये
Gopî. 5. वसुदेवसद्मनि

सद्यस्

Mahânâr. 2. 6. परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः

सद्याजिन्

Maitri. 6. 30. सद्ध्यायी सद्याजी स्यात्

सद्यादि

Kâlâg. 1. सद्यादिपञ्चब्रह्ममंत्रैः परि-गृह्य

सद्योजात

Mahânâr.17. 1. सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यो-जाताय वै नमः

सद्वस्तु

Mukti. 2. 59. सद्वस्त्विति विमुह्यति

सद्वादिन्

Maitri. 6. 30. सदधीयानः सद्वादी

सधनुष्पाणि

Râmap. 28. सधनुष्पाणिना पुनः

सधस्थ

Mahânâr. 6. 6. अग्निमुग्रं हुवेम परमात्स्थात्

सनक

Mukti. 1. 2. सनकाद्यैर्मुनिगणैः

सनग

Bṛih. 2. 6. 3. सनातनः सनगात् सनगः परमेष्ठिनः 4. 6. 3.

सनत्कुमार

Chhâ. 7. 1. 1. उपससाद सनत्कुमारं नारदः
7. 26. 2. तस्मै..तमसः पारं दर्शयति भगवान् सनत्कुमारः
Sikhâ. 1. पिप्पलादो ऽङ्गीराः सनत्कुमारश्च
Kâlâg. 1. कालाग्निरुद्रं..सनत्कुमारः पप्रच्छ
— अथ सनत्कुमार प्रमाणम

सनत्सुजात

Haṁsa. 1. सनत्सुजात उवाच

सनवक

Garbha. 5. सनवकं ह्यायुशतम्

सनात्

Mahânâr. 6. 7. सनाच्च होता नव्यश्च सा

1. सनातन

Kaṭha. 3. 16. मृत्युप्रोक्तं सनातनम्
5. 6. गुह्यं ब्रह्म सनातनम्
6. 1. एषो ऽश्वत्थः सनातनः
Maitri. 6. 34. गुह्यमेतत् सनातनम्
Kaivalya. 8. स एव सर्वं..सनातनः
Krish. 1. भगवन्तं सनातनम्
Gîtâ. 1. 30. कुलधर्माः सनातनाः
2. 24. अचलो ऽयं सनातनः

4. 31. यान्ति ब्रह्म सनातनम्
7. 10. विद्धि पार्थ सनातनम्
8. 20. अव्यक्तो व्यक्तात्सनातनः
11. 18. सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे
15. 7. जीवभूतः सनातनः

2. सनातन

2. 6. 3. सनारुः सनातनात्सनातनः सनगात् 4. 6. 3.

सनामधेय

a. 2. सनामधेयस्तु स किम्

सनारु

2. 6. 3. व्यष्टिः सनारोः सनारुः सनातनात् 4. 6. 3.

सनि

2. 5. 16. तद्वां नरा सनये दंस उग्रम्
ânâr. 2. 7. सनिं मेधामयासिषम्

सनितृ

ânâr. 20. 6. देवो न सनिता..वाजस्य सनिता (so Nârâyaṇa; all other MSS. have सविता)

सनिमित्तत्व

a. 4. 24. प्रश्नप्रेः सनिमित्तत्वम् 25.

सनिर्वाण

a. 3. 47. स्वस्थं शान्तं सनिर्वाणम्

सन्तति

4. 3. आत्मानमेव तद्भावयत्येषां लोकानां सन्तत्यै

सन्तन्

4. 3. एवं सन्तता हीमे लोकाः
h. 2. 5. एते..आहुती..सन्ततं जुहोति
1.1. 2. 1. तानि त्रेतायां..सन्ततानि

Praśna. 2. 12. या च मनसि सन्तता
Mahâ. 3. सन्तते शीकराभिश्च (so Nârâyaṇa; but Saṁkarânanda सन्तत्यै शीत्कराभिश्च)

सन्तप्

Mahânâr. 11. 11. सन्तापयति स्वं देहम्
Nṛip. 2. 4. तपन् वितपन् सन्तपन्

सन्तान

Tait. 1. 2. 1. साम सन्तानः

सन्तुष्

Gîtâ. 3. 17. आत्मन्येव च सन्तुष्टः
12. 14. सन्तुष्टः सततं योगी
19. सन्तुष्टो येन केनचित्

सन्तृद्

Chhâ. 2. 23. 4. यथा शंकुना सर्वाणि पर्णानि सन्तृण्णान्येवमोङ्कारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा

सन्तृ

Śikha. 2. सर्वेभ्यो दुःखभयेभ्यः सन्तारयति
Râmot. 2. गर्भजन्मजरामरणसंसारमहद्भयात्सन्तारयति
Gîtâ. 4. 36. वृजिनं सन्तरिष्यसि

सन्तोष

Maitri. 6. 29. सन्तोषं..योगाभ्यासादवाप्नोति
Garbha. 5. धृतिर्दीक्षा सन्तोषश्च

सन्त्यक्तवासन

Mukti. 2. 21. सन्त्यक्तवासनान्मौनादृते

सन्दंश्

Nyâsa. 5. सन्दश्य दशनैर्जिह्वाम्

सन्दह्

Bṛih. 5. 14. 8. सर्वमेव तत्सन्दहति

सन्दिह्

Mukti. 2. 9. सन्दिग्धायामपि भृशम्

सन्दीप्

Brih. 6. 3. 4. आर्द्रे सन्दीप्रमसि

सन्दृभ्

Brih. 3. 7. 1. तत्सूत्रं . . येन . . सर्वाणि . . सन्दृब्धानि
2. वायुना . . सूत्रेण . . सर्वाणि . . सन्दृब्धानि

सन्दृश्

Kaivalya. 10. सर्वभूतानि चात्मनि सम्पश्यन्
Râmap. 37. देवीं सन्दृश्य
Mukti. 2. 59. सम्पश्यति यदैवैतत्
Gîtâ. 3. 20. लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्
11. 27. सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः

सन्दृश

Katha. 6. 9. न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य Śwet. 4. 20; Mahânâr. 1. 11.

सन्देघ

Brih. 4. 4. 13. अस्मिन्सन्देघे गहने प्रविष्टः (so MS.)

सन्देह

Chhâ. 5. 15. 2. सन्देहस्त्वेष आत्मन इति होवाच सन्देहस्ते व्यशीर्यद्यन्मां नागमिष्यः
5. 18. 2. सन्देहो बहुलः

सन्धर्त्तृ

Śikhâ. 2. सन्धर्त्ता सर्वेभ्यो दुःखभयेभ्यः सन्तारयति

1. सन्धा

Chhâ. 4. 17. 4. यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति 5, 6, 8.
Chhâ. 4. 17. 7. लवणेन सुवर्णं सन्दध्या
Brih. 6. 4. 9. मुखेन मुखं सन्धाय 11, 21.
Tait. 1. 3. 4. सन्धीयते प्रजया पशुभि
Mund. 2. 2. 3. शरं ह्युपासानिशितं सन्धयत
Nrisut. 3. अग्निरूपं प्रणवं सन्दध्या
4. ब्रह्मण्येवानुष्टुभं सन्दध्या
7. आत्मानं . . मकारेण ब्र . णा सन्दध्यात्
Brahma. 1. आत्मानं नयति परं सन्धय (= सन्धाय Nâr.; b 4 MSS. read सन्धयति
3. आत्मानं सन्धत्ते परमात्मनि
Brahmab. 7. स्वरेण सन्धयेद्योगम्
Kathasru. 1. एतेनात्मानं सन्धत्ते

2. सन्धा

Kaush. 3. 1. बह्वीः सन्धा अतिक्र

सन्धातृ

Mahânâr. 24. 1. प्राणे त्वमसि सन्धात

सन्धान

Tait. 1. 3. 2. वायुः सन्धानम्
— वैद्युतः सन्धानम्
3. प्रवचनं सन्धानम्
— प्रजननं सन्धानम्
4. जिह्वा सन्धानम्

सन्धि

Chhâ. 1. 3. 3. प्राणापानयोः सन्धिः
Tait. 1. 3. 1. आकाशः सन्धिः
2. आपः सन्धिः
3. विद्या सन्धिः
— प्रजा सन्धिः
4. वाक् सन्धिः
Katha. 1. 17. त्रिभिरेत्य सन्धिम्

5. साशीतिकं सन्धिशतम्

ha. 2. सन्धिं समाधावात्मन्याचरेत्

eya. 2. भ्रुवोर्घ्राणस्य च यः सन्धिः स एष द्यौर्लोकस्य परस्य च सन्धिर्भवति Râmot. 4.

— एतद्वै सन्धिं सन्ध्यां ब्रह्मविद उपासते Râmot. 4.

67. तत्सन्धिष्वीरजादीनाम्

सन्धिन्

3. सन्धिनी सर्वभूतानां सा सन्ध्या ह्येकदण्डिनाम्

सन्धृ

ı. 3. तैः सन्धार्यमिदं सूत्रम्

सन्ध्मा

3. 3. सं बाहुभ्यां धमति Mahânâr. 2. 2.

सन्ध्य

4. 3. 9. सन्ध्यं तृतीयं स्वप्नस्थानम्

— तस्मिन्सन्ध्ये स्थाने तिष्ठन्

सन्ध्या

ma. 3. तेन सन्ध्या ध्यानमेव तस्मात्सन्ध्याभिवन्दनम्

— सा सन्ध्या ह्येकदण्डिनाम्

ıt. 6. त्रयः सन्ध्यास्त्रयः सुराः

ma. 2. या सा सन्ध्या

सन्नम्

sh. 2. 6. सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्याय सन्नमन्ते

सन्नय

h. 1. 5. 17. एतन्मा सर्वं सन्नयमितोऽभुनजत्

सन्निगम्

h. 2. 1. 9. यैः सन्निगच्छति . . तानतिरोचते

सन्निधा

Mund. 2. 2. 1. आविः सन्निहितं गुहाचरम्

7. हृदयं सन्निधाय

Prasna. 1. 6. प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते

— सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते

3. 4. एवमेवैष प्राण इतरान् प्राणान् पृथक् पृथगेव सन्निधत्ते

Râmot. 4. अहं सन्निहितस्तत्र

सन्निधि

Hamsa. 2. ब्रह्मात्मसन्निधौ

सन्निभ

Mahânâr. 11. 9. लम्बत्या कोशसन्निभम् Mahâ. 3.

Śiras. 5. शुद्धस्फटिकसन्निभा

Hamsa. 1. योगिनीकोशसन्निभम्

Amrita. 36. इन्द्रगोपकसन्निभः

Gîtâ. 11. 25. कालानलसन्निभानि

सन्नियम्

Gîtâ. 12. 4. सन्नियम्येन्द्रियग्रामम्

सन्निरुध्

Swet. 4. 9. अन्यो मायया सन्निरुद्धः

Brahmab. 4. सन्निरुद्धं मनो हृदि

सन्निविश्

Katha. 6. 17. सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः Swet. 3. 13, 4. 17.

Śwet. 2. 8. हृदीन्द्रियाणि मनसा सन्निवेश्य

6. 15. स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः

Maitri. 6. 7. विभुर्विग्रहे सन्निविष्टः

Gîtâ. 15. 15. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः

सन्नी

Bṛih. 6. 3. 1. मन्थं सन्नीय जुहोति
6. 4. 24. कंसे पृषदाज्यं सन्नीय
25. दधि मधु घृतं सन्नीय
Brahma. 1. यथैवैष कपालाष्टकं सन्न-यति

सन्न्यस्

Nyâsa. 2. कथं सन्न्यस्त उच्यते
— यस्मिन् सन्न्यस्त उच्यते
— त्यक्त्वा कामान् सन्न्यस्यति
3. सन्न्यस्याग्निमपुनरावर्त्तनम्
Kaṭhaśru. 1. यो ऽनुक्रमेण सन्न्यसति स सन्न्यस्तो भवति
— कथं सन्न्यस्तो भवति
— यो वा एवं क्रमेण सन्न्य-सति
4. सन्न्यस्याग्नीन्न पुनरावर्त्त-येत्
Parama. 1. सर्वकर्माणि सन्न्यस्य
Aruṇeya. 4. सन्न्यस्तं मया सन्न्यस्तं म-या सन्न्यस्तं मयेति त्रिः कृत्वा
Jâbâla. 5. मनसा वाचा वा सन्न्यसेत्
Gîtâ. 3. 30. मयि सर्वाणि कर्माणि स-न्न्यस्य
5. 13. सर्वकर्माणि मनसा सन्न्य-स्य
12. 6. ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य
18. 57. चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य

सन्न्यसन

Gîtâ. 3. 4. न च सन्न्यसनादेव

सन्न्यास

Nyâsa. 2. सन्न्यासं सहते ऽर्चिमान्
Kaṭhaśru. 1. को ऽयं सन्न्यास उच्य
3. तस्य सन्न्यासो गुरुभि ज्ञातस्य बान्धवैश्च
Jâbâla. 4. भगवन् सन्न्यासमनुब्रूहि
6. सन्न्यासेन देहत्यागं का
Mukti. 1. 36. *vide* अक्षमालिका
1. *vide* जाबालि
Gîtâ. 5. 1. सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण
2. सन्न्यासः कर्मयोगश्च
6. सन्न्यासस्तु महाबाहो
6. 2. यं सन्न्यासमिति प्राहुः
18. 1. सन्न्यासस्य..तत्त्वम्
2. सन्न्यासं कवयो विदुः
7. नियतस्य तु सन्न्यासः
49. सन्न्यासेनाधिगच्छति

सन्न्यासयोग

Muṇḍ.3. 2. 6. सन्न्यासयोगाद्यतयः शु सत्त्वाः Mahânâr. 10. Kaivalya. 3.

सन्न्यासयोगयुक्त

Gîtâ. 9. 28. सन्न्यासयोगयुक्तात्मा

सन्न्यासिन्

Maitri. 6. 10. सन्न्यासी योगी चात्मया च (bis).
Jâbâla. 5. नेनेति सन्न्यासी ब्रह्मवित्
Gîtâ. 6. 1. स सन्न्यासी च योगी
4. सर्वसंकल्पसन्न्यासी
18. 12. न तु सन्न्यासिना क्वचित्

सन्मात्र

Nṛisut. 2. सर्वाधिष्ठानः सन्मात्रः Râmot. 3.
9. सन्मात्रो नित्यः शुद्धो बु
— पश्यतेहापि सन्मात्रमस न्यत्

सन्मार्गगमन

Amṛita. 25. अतः समभ्यसेन्नित्यं सन्मार्गगमनाय वै

सन्मुख (?)

5. देवाः सन्मुखास्तानुपासते (so all the MSS. but one which reads देवास्तन्मुखाः)

सन्मूल

i. 6. 8. 4. सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः 6.

सपत्तन

ap. 93. सपत्तनः सानुजः सर्वलोकी (so 5 MSS. and Weber; but Nâr. has ससपत्नजः)

सपत्न

1. 5. 12. द्वितीयो वै सपत्नो नास्य सपत्नो भवति य एवं वेद

3. 10. 4. पर्येणं म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः

nâr. 22. 1. तपसा सपत्नान् प्रणुदामारातीः

11. 34. युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्

सपत्नातिव्याधिन्

3. 8. 2. द्वौ बाणवन्तौ सपत्नातिव्याधिनौ

सपरिवार

t. 3. अथ महापीठे सपरिवारं तं ..सन्दध्यात्

सपरिश्रय

6. 4. 23. सार्गलः सपरिश्रयः

सपर्वत

1. 2. सपर्वतां ससप्तद्वीपां वसुन्धराम्

सपात्र

Kaush. 2. 15. उदकुंभं सपात्रमुपनिधाय

सपुराण

Râmot. 5. ये सर्वे वेदाः सांगाः सशाखाः सपुराणाः (6).

सप्तचक्र

Praśna. 1. 11. सप्तचक्रे षडरे

सप्तचत्वारिंशत्

Râmot. 5. इत्येतैः सप्तचत्वारिंशन्मन्त्रैः..स्तुवन्

सप्तचत्वारिंशद्वर्ण

Râmap. 81. सप्तचत्वारिंशद्वर्णो गुणान्तः

सप्तजिह्व

Mahânâr. 3. 6. सप्तजिह्वाय धीमहि

सप्तदश

Maitri. 7. 3. मरुतो जगती सप्तदशः.. पश्चादुद्यन्ति

सप्तद्वीपवन्त्

Nrip. 5. 2. सप्तद्वीपवती भूमिः

सप्तधा

Chhâ. 7. 26. 2. सप्तधा नवधा

सप्तधातु, °तुक

Garbha. 1. तत्सप्तधातु त्रिमलं द्वियोनिम्

2. सप्तधातुकं कस्मात्

सप्तन्

Brih. 1. 5. 1. यत्सप्तान्नानि मेधया तपसाजनयत् पिता 2.

2. 2. 1. सप्त ह द्विषतो भ्रातृव्यानवरुणद्धि

2. तमेताः सप्ताक्षितय उपतिष्ठन्ते

Brih. 2. 2. 3. तस्यासत ऋषयः सप्त तीरे (bis).
Mund. 1. 2. 4. लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः
2. 1. 8. सप्त प्राणाः..सप्तार्चिषः.. सप्त होमाः..सप्त इमे लोकाः..सप्त सप्त Mahânâr. 8. 4 (जिह्वाः for होमाः)
Mahânâr. 10. 1. सप्त हस्तासो अस्य
Prasna. 3. 5. तस्मादेताः सप्तार्चिषो भवन्ति
Nrip. 4. 3. यो वै नृसिंहः..याः सप्त व्याहृतयः (15).
Chûl. 9. सप्तैवैते च गीयते
Garbha. 5. सप्त शिराशतानि
Râmap. 40. सप्ततालान् विभिद्याशु
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..याः सप्त व्याहृतयः
Gîtâ. 10. 6. महर्षयः सप्त पूर्वे

सप्तम

Mund. 1. 2. 3. आसप्तमांस्तस्य लोकान् हिनस्ति
Nrip. 2. 3. भीषणं सप्तमं (स्थानं जानीयात्)
Śiras. 7. आसप्तमात्पुरुषयुगात् पुनाति Mahâ. 4.
Garbha. 3. सप्तमे जीवेन संयुक्तः
Nâda. 10. सप्तमी वैष्णवी नाम
15. सप्तम्यां वैष्णवं पदम्
Pinda. 7. सप्तमेन तु पिण्डेन
Hamsa. 2. सप्तमो वेणुनादः
— सप्तमे गूढविज्ञानम्

सप्तरात्र

Garbha. 3. सप्तरात्रोषितं बुद्बुदं (भवति)

सप्तविध

Chhâ. 2. 8. 1. अथ सप्तविधस्य
— सप्तविधं सामोपासीत 2. 9. 1; 2. 10. 1.
Chhâ. 2. 8. 3. सप्तविधं सामोपास्ते 2. 8; 2. 10. 6.
Maitri. 6. 22. सप्तविधेयं तस्योपमा

सप्ताङ्ग

Mândû. 3. सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमु 4; Nrip. 4. 1; Nrisut. Râmot. 3.

सप्तात्मन्

Nrisut. 3. सप्तात्मानं चतुरात्मानम (5 times).

सप्तार्विंश

Chûl. 14. सप्तार्विंशमथापरे

सप्तोत्तर

Garbha. 5. सप्तोत्तरं मर्मशतम्

सप्रणव

Nrip. 2. 2. सप्रणवं सर्वं पञ्चमं भवं
Mahâ. 2. सप्रणवा व्याहृतयः
Amrita. 10. सव्याहृतिं सप्रणवां गायत्रीम्

सप्रतिष्ठ

Brih. 3. 9. 19. दिशः..सदेवाः सप्रतिष्ठाः (bis).
Râmap. 77. सप्रतिष्ठा ह्लादिनी स्व

सप्रत्याधान

Brih. 2. 2. 1. शिशुं साधानं सप्रत्याधानम्

सप्रयोजनता

Gauda. 2. 7. सप्रयोजनता तेषाम् 4.

सबिन्दुक

Nrip. 5. 2. मातृकाद्याः सबिन्दुकाः दश कलाः

सभा

Chhâ. 8. 14. 1. प्रजापतेः सभां वेश्म

93

सभाग

5. 3. 6. स ह प्रातः सभाग उदेयाय

सभाप्रपादिन्

25. नमः सभाप्रपादिने (bis).

सभ्य

aśru. 1. सभ्यावसथ्ययोश्च

सम

.2. 9. 1. सर्वदा समस्तेन साम मां प्रति मां प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम

2. 10. 1. हिंकार इति त्र्यक्षरं प्रस्ताव इति त्र्यक्षरं तत्समम्

2. तत इहैकं तत्समम्

3. त्रिभिस्त्रिभिः समं भवति.. त्र्यक्षरं तत्समम्

4. निधनमिति त्र्यक्षरं तत् सममेव

4. 1. 2. समं दिवा ज्योतिराततम

. 1. 3. 22. यद्वेव समः प्लुषिणा समो मशकेन &c.

1. 5. 13. एते सर्व एव समाः

1. 6. 1. एतद्धि सर्वैर्नामभिः समम्

2. एतद्धि सर्वै रूपैः समम्

3. एतद्धि सर्वैः कर्मभिः समम्

6. 1. 3. प्रतितिष्ठति समे प्रतितिष्ठति दुर्गे (bis).

— समे च दुर्गे च प्रतितिष्ठति

t. 2. 8. त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरम्

10. समे शुचौ शर्करा..विवर्जिते

ina. 3. 5. एष ह्येतद्धुतमश्नं समं नयति

4. 4. एतावाहुती समं नयतीति स समानः

Gauḍa. 3. 23. समा श्रुतिः

4. 77. यानुत्पत्तिः समाह्वया

Nṛip. 5. 10. एकेनोपनीतेन तत्समम्

— एकेन गृहस्थेन तत्समम्

— एकेन वानप्रस्थेन तत्समम्

— एकेन यतिना तत्समम्

— रुद्रजापकेन तत्समम्

— एकेनाथर्वशिरःशिखाध्यायिकेन तत्समम्

— एकेन मन्त्रराजजापकेन तत्समम्

Śiras. 1. व्योममेव स सर्वे समाः

Amṛita. 17. भूमिभागे समे रम्ये

Kaivalya. 4. शुचिः समग्रीवशिरः शरीरः

Aśrama. 4. समलोष्टाश्मकाञ्चनाः

Jâbâla. 6. लाभालाभौ समौ भूत्वा

Gopî. 5 न गङ्गया समं तीर्थम्

— काञ्चनाद्रिसमं फलम्

Râmap. 23. तेजसा वह्निना समः

Mukti. 2. 11. त्रयमेतत्समं यावन्नाभ्यस्तम्

Gîtâ. 1. 4. भीमार्जुनसमा युधि

2. 38. सुखदुःखे समे कृत्वा

48. सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा

4. 22. समः सिद्धावसिद्धौ च

5. 19. निर्दोषं हि समं ब्रह्म

27. प्राणापानौ समौ कृत्वा

6. 13. समं कायशिरोग्रीवम्

32. समं पश्यति यो ऽर्जुन

9. 29. समो ऽहं सर्वभूतेषु

11. 43. न त्वत्समो ऽस्त्यभ्यधिकः कुतो ऽन्यः

12. 18. समः शत्रौ च मित्रे च

— शीतोष्णसुखदुःखेषु समः

13. 27. समं सर्वेषु भूतेषु

28. समं पश्यन् हि सर्वत्र

18. 54. समः सर्वेषु भूतेषु

समकाल

Mukti. 2. 10. समकालं चिराभ्यस्ताः

समक्षम्

Gîtâ. 11. 42. एको ऽथवाप्यच्युत तत्स-
मक्षम्

समग्र

Gîtâ. 4. 23. समग्रं प्रविलीयते
7. 1. असंशयं समग्रं माम्
11. 30. ग्रसमानः..लोकान् सम-
ग्रान्
— तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रम्

समचित्तत्व

Gîtâ. 13. 9. नित्यं च समचित्तत्वम्

समञ्जस

Gauḍa. 3. 13. तदेवं हि समञ्जसम्

समता, समत्व

Gauḍa. 2. 5. भेदानां हि समत्वेन
3. 2. अजाति समतां गतम् 38.
Gîtâ. 2. 48. समत्वं योग उच्यते
10. 5. अहिंसा समता तुष्टिः

समतिसृज्

Chhâ. 1. 11. 8. एत एव समतिसृष्टाः स्तुव-
ताम्

समती

Gîtâ. 7. 26. वेदाहं समतीतानि
14. 26. स गुणान् समतीत्यैतान्

समदर्शन

Gîtâ. 6. 29. सर्वत्र समदर्शनः

समदर्शिन्

Gîtâ. 5. 18. पण्डिताः समदर्शिनः

समदुःखसुख

Gîtâ. 2. 15. समदुःखसुखं धीरम्
12. 13. समदुःखसुखः क्षमी
14. 24. समदुःखसुखः स्वस्थः

समधिगम्

Gîtâ. 3. 4. सिद्धिं समधिगच्छति

समनस्क

Katha. 3. 8. समनस्कः सदा शुचिः

समनुप्रविश्

Mahânâr. 1. 1. शुक्रेण ज्योतींषि समनु
विष्टः

समनुप्राप्

Gauḍa. 2. 36. अद्वैतं समनुप्राप्य

समन्ततस्

Gauḍa. 3. 2. जायमानं समन्ततः
35. ज्ञानालोकं समन्ततः
Gîtâ. 6. 24. विनियम्य समन्ततः

समन्तम्

Bṛih. 1. 3. 18. तं समन्तं परिण्यविशन्त
3. 3. 2. तं समन्तं पृथिवी..पर्ये
तां समन्तं पृथिवीं..स
द्रः पर्येति

समन्तात्

Gîtâ. 11. 17. पश्यामि त्वां दुर्निरी
समन्तात्
30. लेलिह्यसे ग्रसमानः स
न्तात्

समन्वारभ्

Bṛih. 4. 4. 2. तं विद्याकर्मणी सम
भेते पूर्वप्रज्ञा च

समन्वि

Swet. 5. 8. सङ्कल्पाहङ्कारसमन्वि
Chûl. 10. पदक्रमसमन्वितम्
Garbha. 4. जन्तुभिश्च समन्वित
Râmap. 70. रेखात्रयसमन्वितम
Mukti. 1. 1. सीताभरतसौमित्रि
..क्षैः समन्वितम्

kti. 2. 71. मनोबुद्धिसमन्विताम्
â. 10. 8. बुधा भावसमन्विताः
18. 26. धृत्युत्साहसमन्वितः

समबुद्धि

â. 6. 9. समबुद्धिर्विशिष्यते
12. 4. सर्वत्र समबुद्धयः

समभ्यस्

rita. 22. तदा योगं समभ्यसेत्
25. समभ्यसेन्नित्यं सन्मार्गगमनाय वै

kti. 1. 28. द्वात्रिंशाख्योपनिषदं समभ्यस्य

समभ्यादा

. 4. 4. 1. एतास्तेजोमात्राः समभ्याददानः

समर्थ

bha. 3. पञ्चात्मकः समर्थः

समर्द्धयितृ

â. 1. 1. 8. समर्द्धयिता ह वै कामानां भवति

समलोष्टाश्मकाञ्चन

. 6. 8. योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः
14. 24. स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः

समवनी

. 3. 2. 11. अत्रैव समवनीयन्ते Nṛisut. 5 (ter).

समवस्था

. 13. 28. समवस्थितमीश्वरम्

समवह

â. 6. 9. 1. नानात्ययानां वृक्षाणां रसान् समवहारम्

समवे

1. 1. समवेता युयुत्सवः
25. समवेतान् कुरून्

समश्

Bṛih. 4. 4. 7. अत्र ब्रह्म समश्नुते Kaṭha. 6. 14.

Tait. 2. 5. 1. सर्वान् कामान् समश्नुते
2. 6. 1. आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चित्समश्नुता३उ

Mahânâr. 9. 12. उपांशुना सममृतत्वमानट्

Yogat. 5. लोकान् समश्नुते

Gopî. 5. स वै मोक्षं समश्नुते

समष्टि

Bṛih. 3. 3. 2. वायुरेव व्यष्टिर्वायुः समष्टिः

समस्

Chhâ. 2. 1. 1. समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु
7. 15. 3. यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणाञ्छूलेन समासं व्यतिषन्दहेत्
8. 6. 3. यत्रैतत्सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः स्वप्नं न विजानाति 8. 11. 1.

Kâlâg. 2. समस्तमहापातकोपपातकेभ्यः

समस्तसाक्षि

Kaivalya. 7. समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात् [इकारान्तः साक्षिशब्दश्छान्दसः *Nâr. Dîpikâ.*]
24. समस्तसाक्षिं सदसद्विहीनम्

समस्नेह

Mukti. 2. 70. अन्तःशान्तः समस्नेहो भव

समा

Bṛih. 5. 10. 1. तस्मिन्वसति शाश्वतीः समाः

Îśâ. 2. जिजीविषेच्छतं समाः
8. शाश्वतीभ्यः समाभ्यः

Mukti. 2. 11. समाशतैः

Gitâ. 6. 41. उषित्वा शाश्वतीः समाः

समाकुल

Yogaśi. 5. रश्मिज्वालासमाकुलम्

समाक्रम्

Mukti. 2. 42. अङ्गानङ्गैः समाक्रम्य

1. समाख्या

Râmap. 73. यो नृसिंहः समाख्यातः
84. एवं यन्त्रं समाख्यातम्

2. समाख्या

Gauḍa. 3. 6. रूपकार्यसमाख्याश्च

समागम्

Chhâ. 1. 1. 6. यदा वै मिथुनौ समागच्छतः
Gîtâ. 1. 23. य एते ऽत्र समागताः

समागम

Maitri. 7. 11. समागमस्तयोरेव हृदयान्तर्गते सुषी

समाचर्

Kâlâg. 1. तत्समाचरेन्मुमुक्षुर्न पुनर्भवाय
Gopî. 5. व्रतं यस्तु समाचरेत्
Mukti. 2. 9. शुभामेव समाचर
Gîtâ. 3. 9. मुक्तसंगः समाचर
19. कार्यं कर्म समाचर
26. विद्वान्युक्तः समाचरन्

समाचार

Gauḍa. 4. 42. उपलम्भात् समाचारात् 44 (bis).

समाज्ञा

Tait. 3. 10. 2. इति मानुषीः समाज्ञाः

समादा

Brih. 4. 2. 1. रथं वा नावं वा समादधीत
Brahmab. 21. ज्ञाननेत्रं समादाय

समाधा

Chhâ. 8. 1. 3. द्यावापृथिवी अन्तरेव समाहिते..सर्वं तदस्मि समाहितम्
4. अस्मिंश्चेदिदं ब्रह्मपुरे स समाहितम्
5. अस्मिन् कामाः समाहि
Brih. 4. 4. 23. तितिक्षुः समाहितो भूत्वा
Maitri. 6. 30. अत्र हि सर्वे कामाः समाहिताः 35, 38.
Nrisut. 6. तितिक्षवः समाहिताः
Kshur. 6. अङ्गुष्ठे तु समाहितः
Gîtâ. 6. 7. परमात्मा समाहितः
12. 9. अथ चित्तं समाधातुम्
17. 11. यष्टव्यमेवेति मनः समाधा

समाधान

Mukti. 2. 21. न समाधानजाप्याभ्याम्

समाधि

Maitri. 6. 18. प्राणायामः..समाधिः षडङ्गा इत्युच्यते योगः
34. समाधिनिर्धौतमलस्य चेतसो
Gauḍa. 3. 37. समाधिरचलो ऽभयः
Amrita. 6. तर्कश्चैव समाधिश्च
16. समाधिः परिकीर्तितः
Aruṇeya. 2. सन्धिं समाधावात्मन्याचरेत्
Mukti. 1. 3. समाधिविरमे
2. पुरुषप्रयत्नसाध्यवेदान्तश्रवणादिजनितसमाधिना
2. 19. समाधिमथ कर्माणि
53. सम्प्रज्ञातसमाधिः
54. असम्प्रज्ञातनामायं समाधि
55. अतद्व्यावृत्तिरूपो ऽसौ समाधिः
56. समाधिः परमार्थिकः
Gîtâ. 2. 44. समाधौ न विधीयते
53. समाधावचला बुद्धिः

समाधिस्थ

å. 2. 54. स्थितप्रज्ञस्य..समाधिस्थस्य

1. समान *adj.*

hâ. 1. 3. 2. समान उ एवायं चासौ च
rih. 4. 3. 7. समानः सन्नुभौ लोकावनुसञ्चरति
6. 5. 4. समानमा साञ्जीवीपुत्रात्
Swet. 4. 6. समानं वृक्षं परिषस्वजाते Mund. 3. 1. 1.
7. समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नः Mund. 3. 1. 2.
â. 10. समानश्च भवति..य एवं वेद Nrisut. 2.

2. समान

. 3. 13. 4. उदङ्सुषिः स समानः
5. 22. 1. तां जुहुयात् समानाय स्वाहेति समानस्तृप्यति
2. समाने तृप्यति मनस्तृप्यति
h. 1. 5. 3. प्राणो ऽपानो व्यान उदानः समानः Tait. 1. 7. 1.
3. 9. 26. कस्मिन्नूदानः..समान इति
itri. 2. 6. प्राणो ऽपानः समान उदानो व्यानः
6. 9. प्राणाय स्वाहा..समानाय स्वाहा
33. प्राणो ऽपानो व्यानः समान उदानः
7. 4. शरत् समानः..उत्तरत उदक्नित
Mahânâr.15. 8. समाने निविष्टो ऽमृतं जुहोमि 9.
16. 1. समाने निविश्यामृतं हुतं समानमन्नेनाप्यायस्व
śna. 3. 5. मध्ये तु समानः

Praśna. 3. 8. अन्तरा यदाकाशः स समानः
4. 4. एतावाहुती समं नयतीति स समानः
Prâṇâg. 1. प्रादेशिन्या समाने
4. समानो मैत्रावरुणः
Amṛita. 34. समानो नाभिदेशे तु
37. समानस्तस्य मध्ये तु
Kaṭhaśru. 1. प्राणापानव्यानोदानसमानान्

समानद

Râmap. 75. अथो दीर्घा समानदा

समानलोकता

Mahânâr.12. 3. एतासामेव देवतानां..समानलोकतामाप्नोति

समानसंज्ञ

Maitri. 2. 6. अणिष्ठो वाङ्गे ऽङ्गे समानयत्येष वाव स समानसंज्ञः

समानी

Maitri. 2. 6. अणिष्ठो वाङ्गे ऽङ्गे समानयति

समाप्

Kaush. 2. 15. एनं समापयेयुर्यथा समापयितव्यो भवति
Bṛih. 1. 5. 23. यद्यु चरेत्समापिपयिषेत्
Kshur. 25. अमृतत्वं समाप्नोति (no in 5 MSS.).
Jâbâla. 4. ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत्
Gîtâ. 11. 40. सर्वं समाप्नोषि ततो ऽसि सर्वः

समाभिन्न

Gauḍa. 4. 93. सर्वे धर्माः समाभिन्नाः

समाया

Râmap. 29. तं देवा ये समाययुः
43. लंकां समाययौ
45. पुरीं लंकां समाययौ

समायु

Râmap. 68. नादबिन्दुसमायुतम्

समायुज्

Gîtâ. 15. 14. प्राणापानसमायुक्तः

समायोग

Kshur. 19. जातीपुष्पसमायोगैः (five independent MSS. read समो योगी)

समारभ्

Chhâ. 1. 10. 11. ते ह समारतास्तूष्णीमासांचक्रिरे

समारुह्

Kaush. 3. 6. प्रज्ञया वाचं समारुह्य (similarly 9 times more).
Nâda. 5. एवमेनं समारूढः
Nyâsa. 1. मय्यग्ने अग्निमित्यग्नीन् समारोपयेत्
Kathaśru. 1. यजमानस्याङ्गान्.. समारोप्य
— सर्वान् सर्वेषु समारोपयेत्
Aruṇeya. 2. लौकिकाग्नीनुदराग्नौ समारोपयेत्
— गायत्रीं च स्ववाचाग्नौ समारोपयेत्

समारोप

Nyâsa. 2. स्वशरीरे समारोपः

समालिख्

Râmap. 67. मन्त्रान्मन्त्री समालिखेत्

समावस्था

Mukti. 2. 52. तावत्पूर्णां समावस्थाम्

समाविश्

Mukti. 2. 6. अशुभेषु समाविष्टम्
Gîtâ. 18. 10. त्यागी सत्त्वसमाविष्टः

समावृ

Śwet. 6. 10. देव एकः समावृणोति
Gîtâ. 7. 25. योगमायासमावृतः
16. 16. मोहजालसमावृताः

समावृत्

Chhâ. 4. 10. 1. अन्यानन्तेवासिनः समावर्तयंस्तं ह स्मैव न समावर्तयति

समाश्रि

Maitri. 6. 9. परमात्मा वै पञ्चवायुःमाश्रितः
Mahânâr. 16. 3. अङ्गुष्ठं च समाश्रितः
Kshur. 7. नाभिदेशे समाश्रयेत्
9. शुक्लां नाडीं समाश्रयेत्
Mukti. 2. 15. त्रयमेव समाश्रय

समास्

Śwet. 4. 8. य इत्तद्विदुस्त इमे समास
Nṛip. 4. 2; 5. 2.
Nṛisut. 7. स्वे महिम्नि सदा समास

समास

Kaush. 2. 15. समासेनैव ब्रूयात्
Chhâ. 6. 4. 7. एतासामेव देवतानां समासः
Gîtâ. 13. 3. तत्समासेन मे शृणु
6. एतत्क्षेत्रं समासेन
18. 50. समासेनैव कौन्तेय

समासञ्ज्

Maitri. 6. 34. समासक्तं यथा विषम्

समासतस्

Gîtâ. 13. 18. ज्ञेयं चोक्तं समासतः

समासद्

Yogaśi. 9. पुण्यमेतत् समासाद्य

समाहितात्मन्

. 4. 2. 1. एताभिरुपनिषद्भिः समाहितात्मासि

समाहृ

11. 32. लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः

समाहृति

8. सर्वेन्द्रियसमाहृतिः

समि

2. 8. आप्यायस्व समेतु ते — सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः

. 4. 1. 4. यथा कृतायविजितायाधरेयाः संयन्ति 6.

. 1. 5. 12. तौ मिथुनं समैताम्

6. 2. 2. ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति

4. 11. यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वम् Mahânâr. 1. 2.

समिञ्ज्

. 6. 4. 23. यथा वायुः पुष्करिणीं समिञ्जयति

समिति

. 5. 3. 1. पञ्चालानां समितिमेयाय

समितिंगम

6. 4. 18. पुत्रो मे पण्डितो विजिगीतः समितिंगमः . . जायेत

समितिञ्जय

. 1. 8. कृपश्च समितिञ्जयः

समित्पाणि

1. 1. स ह समित्पाणिः . . प्रतिचक्रमे

4. 19. बालाकिः समित्पाणिः प्रतिचक्रमे

Chhâ. 5. 11. 7. समित्पाणयः पूर्वाह्णे प्रतिचक्रमिरे

8. 7. 2. समित्पाणी प्रजापतिसकाशमाजग्मतुः

8. 9. 1. स समित्पाणिः पुनरेयाय 8. 10. 3; 8. 11. 2.

Mund. 1. 2. 12. गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः

Praśna. 1. 1. समित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः

समिध् , समिध

Chhâ. 4. 4. 5. समिधं सोम्याहर

4. 6. 1. समिधमाधाय 4. 7. 1; 4. 8. 1.

5. 4. 1. आदित्य एव समित् Brih. 6. 2. 9.

5. 5. 1. वायुरेव समित्

5. 6. 1. संवत्सर एव समित् Brih. 6. 2. 10.

5. 7. 1. वागेव समित्

5. 8. 1. उपस्थ एव समित् Brih. 6. 2. 13.

Brih. 6. 2. 11. पृथिव्येव समित्

12. व्यात्तमेव समित्

14. समित्समित्

Mund. 2. 1. 5. तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः

8. सप्तार्चिषः समिधः Mahânâr. 8. 4.

Mahânâr. 25. 1. यत्सायं प्रातरत्ति तत्समिधः

समिन्ध्

Brih. 6. 4. 3. चर्माधिषवणे समिद्धो मध्यतस्तौ मुष्कौ

12. मम समिद्धे ऽहौषीः (4 times).

Mund. 1. 2. 2. समिद्धे हव्यवाहने

Nrip. 5. 10. तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते Aruneya. 5; Vâsu. 4; Skanda. 15; Mukti. 2. 78.

Gîtâ. 4. 37. यथैधांसि समिद्धोऽग्निः

समीक्ष्

Gîtâ. 1. 27. तान् समीक्ष्य स कौन्तेयः

समीरण

Maitri. 7. 11. एतत् समीरणे प्रकाशप्रक्षेपकौष्ण्यस्थानीयम्

— समीरणे नभसि प्रशाखयैवोत्क्रम्य

समुत्क्रम्

Nâda. 13. द्वितीयायां समुत्क्रान्तः

समुत्थ

Brahmav. 2. प्रसादान्तःसमुत्थस्य विष्णोः

Gîtâ. 7. 27. इच्छाद्वेषसमुत्थेन

समुत्था

Kaush. 2. 14. तत्तत एव समुत्तस्थौ

4. 19. स तत एव समुत्तस्थौ

Chhâ. 8. 2. 1. सङ्कल्पादेवास्य पितरः समुत्तिष्ठन्ति (similarly 9 times more in this section):

8. 3. 4. अस्माच्छरीरात्समुत्थाय 8. 12. 3; Maitri. 2. 2.

8. 12. 2. अमुष्यादाकाशात्समुत्थाय

Brih. 2. 4. 12. एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय 4. 5. 13.

6. 2. 2. आपः पुरुषवाचो भूत्वा समुत्थाय वदन्ति

Swet. 2. 12. पृथ्व्याप्यतेजोनिलखे समुत्थिते

समुत्पद्

Chhâ. 1. 9. 1. इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यन्ते

Nâr. 1. सर्वाणि च भूतानि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते

Krish. 18. दुग्धसिन्धोः समुत्पन्नः

समुत्पॄ

Brih. 6. 4. 2. एतं प्राञ्चं ग्रावाणमात्मन एव समुदपारयत्

समुत्सृज्

Kshur. 5. शनैरथ समुत्सृजेत्

समुदय

Maitri. 3. 2. तेषां यत् समुदयं तच्छरीरमित्युक्तम्

समुदीष्

Chhâ. 6. 6. 1. यो ऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति 2, 3, 4.

समुद्दिश्

Nyâsa. 2. किं वा दुःखं समुद्दिश्य

समुद्धर्तृ

Gîtâ. 12. 7. तेषामहं समुद्धर्ता

समुद्धृ

Ait. 1. 3. अद्भ्य एव पुरुषं समुद्धृत्य

Kâlâg. 3. मा नस्तोकेति समुद्धृत्य

समुद्यम

Gîtâ. 1. 22. अस्मिन् रणसमुद्यमे

समुद्र

Chhâ. 2. 4. 1. समुद्रो निधनम् 2. 17.

3. 19. 2. यदास्तेयमुदकं स समुद्रः

4. 6. 3. समुद्रः कला

6. 10. 1. समुद्रात्समुद्रमेवापियन्ति समुद्र एव भवन्ति

Brih. 1. 1. 2. तस्य पूर्वे समुद्रे योनिः

— तस्यापरे समुद्रे योनिः

— समुद्र एवास्य बन्धुः समुद्रो योनिः

2. 4. 11. सर्वासामपां समुद्र एकायनम् 4. 5. 12.
3. 3. 2. पृथिवी द्विस्तावत्समुद्रः पर्येति
4. 4. ऋतवः समुद्राः
2. 1. 9. अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वे Mahânâr. 8. 5.
3. 2. 8. समुद्रे ऽस्तङ्गच्छन्ति
nâr. 1. 3. यदन्तः समुद्रे कवयो वदन्ति
5. 5. ततः समुद्रो अर्णवः
6. समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत
6. 1. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन्
9. 12. समुद्रादूर्मिर्मधुमानुदारत्
a. 6. 5. समुद्रं प्राप्यास्तङ्गच्छन्ति — समुद्र इत्येवं प्रोच्यते
p. 4. अपरिमितानन्दसमुद्रः
2. 70. समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्
11. 28. समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति

समुद्रवेला

i. 4. 2. समुद्रवेलेव दुर्निवार्यमस्य मृत्योरागमनम्

समुद्रायण

6. 5. यथेमा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः

समुद्रेत

âr. 11. 7. समुद्रेतं विश्वशंभुवम् (so MSS; समुद्रेतं समुद्रमितं प्राप्तम् Nârâyaṇa).
3. समुद्रेतं विश्वरूपिणम् (so Nârâyaṇa; but Śaṁkarânanda समुद्रे कं, &c.).

समुपदिश्

Mukti. 1. 21. मत्तारं समुपादिशत्

समुपविश्

Chhâ. 1. 8. 2. तथेति ह समुपविविशुः
1. 12. 4. ते ह समुपविश्य हिंचक्रुः

समुपस्था

Gîtâ. 1. 28. युयुत्सुं समुपस्थितम्
2. 2. विषमे समुपस्थितम्

समुपाश्रि

Mukti. 1. 7. वेदान्तं समुपाश्रय
Gîtâ. 18. 52. वैराग्यं समुपाश्रितः

समुपास्

Râmap. 57. वसिष्ठवामदेवादिमुनिभिः समुपासितः

समुपे

Gauḍa. 2. 29. तद्गृहः समुपैति तम्

समुब्ज्

Śiras. 6. देवकोशः समुब्जितः

समूल

Bṛih. 3. 9. 28. यत्समूलमावृहेयुर्वृक्षम्
Praśna. 6. 1. समूलो वा एष परिशुष्यति

समूह्

Bṛih. 5. 15. 1. व्यूह रश्मीन् समूह तेजः Îśâ. 16.
Kshur. 15. समूहन्नाडिसञ्चयम्

समूह

Sarvop. 2. षण्णां कोशानां समूहः

समृ

Chhâ. 7. 15. 1. यथा वा अरा नाभौ समर्पिता एवमस्मिन् प्राणे सर्वं समर्पितम्

Brih. 2. 5. 15. यथा रथनाभौ च रथनेमौ चाराः सर्वे समर्पिताः .. आत्मनि .. सर्व एत आत्मानः समर्पिताः

Mund. 2. 2, 1. अत्रैतत् समर्पितमेजत्प्राणन्निमिषच्च यत्

Râmap. 91. तस्मै जपादींश्च सम्यक् समर्प्य

समृद्धवेग

Gîtâ. 11. 29. विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः

— तथैव .. लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः

समृद्धि

Chhâ. 1. 1. 8. एषो एव समृद्धिर्यदनुज्ञा

1. 3. 8. अथ खल्वाशीःसमृद्धिः

5. 2. 9. समृद्धिं तत्र जानीयात्

Maitri. 6. 36. तेजसः समृद्ध्यै

समृध्

Chhâ. 1. 3. 12. अभ्याशो ह यदस्मै स कामः समृध्येत यत्कामः स्तुवीत

5. 2. 8. समृद्धं कर्मेति विद्यात्

7. 14. 2. अस्य सर्वे कामाः समृध्यन्ति

Brih. 4. 3. 33. स यो मनुष्याणां राद्धः समृद्धः

5. 14. 7. असावस्मै कामो मा समर्द्धि

Maitri. 6 36. शान्तमेकं समृद्धं चैकम्

— यत्समृद्धमिदं तस्यान्नम्

Gîtâ. 11. 33. भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्

समे

Chhâ. 5. 11. 1. महाश्रोत्रियाः समेत्य मीमांसां चक्रुः

Swet. 6. 3. तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य [...]गम्

Kathasru. 2. देवा ह वै समेत्य प्रजा[...]तिमब्रुवन्

सम्पद्

Chhâ. 4. 4. 5. ता यदा सहस्रं सम्पेदुः

5. 1. 4. सम्पदं वेद सं हास्मै का[...] पद्यन्ते

5. 11. 2. ते ह सम्पादयाञ्चक्रुः

3. स ह सम्पादयाञ्चकार

6. 8. 1. सता सोम्य तदा सम्प[...] भवति

6. पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मन[...] सम्पद्यते

6. 9. 2. सति सम्पद्य न विदुः स[...] सम्पद्यामहे (MSS. a[...] Sâyana read स[...] महे)

6. 14. 2. अथ सम्पत्स्ये

6. 15. 1. यावन्न वाङ्मनसि स[...]

2. यदास्य वाङ्मनसि स[...]

8. 2. 1. पितृलोकेन सम्पन्नो[...] ते (similarly 9 [...] more in this sec[...])

8. 6. 3. तेजसा हि तदा सम्प[...]वति

8. 11. 3. तान्येकशतं सम्पेदुः

Brih. 6. 1. 4. सं हास्मै पद्यते यं कामयते (bis).

Maitri. 1. 1. अविकलः संपद्यते [...]

6. 22. यथा सम्पन्ना मधुत्वं [...] रसाः

27. यत्तस्य ज्योतिरिव [...]द्यति

Prasna. 3. 9. इन्द्रियैर्मनसि सम्प[...]

5. 3. तपसा ब्रह्मचर्येण [...] सम्पन्नः

na. 5. 4. यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते
5. स तेजसि सूर्ये सम्पन्नः
2. 2. एवं द्वात्रिंशदक्षराणि संपद्यन्ते
5. 1. क्षेत्रं क्षेत्रं वा मायैषा सम्पद्यते
ut. 3. गुणैरैक्यं सम्पाद्य
â. 2. करणं सर्वमैश्वर्यं सम्पन्नम्
mab. 6. ब्रह्म सम्पद्यते तदा Gîtâ. 13. 30.
8. ब्रह्म सम्पद्यते ध्रुवम्
la. 6. तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक् सम्पन्नः
ti. 1. साधनचतुष्टयसम्पन्नाः

2. सम्पद्

â. 5. 1. 4. यो ह वै सम्पदं वेद..श्रोत्रं ..सम्पत् Brih. 6. 1. 4.
14. यदहं सम्पदस्मि त्वं तत्सम्पदसि Brih. 6. 1. 14.
5. 2. 5. सम्पदे स्वाहा
3. 1. 6. इत्यतिमोक्षा अथ सम्पदः
4. 3. 32. एषास्य परमा सम्पत्
6. 3. 2. चक्षुषे स्वाहा सम्पदे स्वाहा
16. 3. सम्पदं दैवीमभिजातस्य
4. सम्पदमासुरीम्
5. दैवी सम्पद्विमोक्षाय
— मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव

सम्पन्नतम

4. 3. 33. सर्वैर्मानुष्यकैर्भोगैः सम्पन्नतमः

सम्परिग्रह्

a. 2. 13. एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य

सम्परित्यज्

ti. 2. 18. वासनां सम्परित्यज्य 68.

सम्परित्याग

Mukti. 2. 29. वासनासम्परित्यागात्
45. वासनासम्परित्यागः

सम्परिष्वञ्ज्

Brih. 1. 4. 3. यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ
4. 3. 21. यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तः..एवमेवायं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना सम्परिष्वक्तः

सम्परी

Katha. 2. 2. तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः

सम्पात

Chhâ. 5. 2. 4. मन्थे सम्पातमवनयेत् 5.
5. 10. 5. तस्मिन्यावत्संपातमुषित्वा

सम्पीड्

Nrisut. 7. स एतत्सर्वं..सम्पीड्य
Mukti. 2. 42. हस्तं हस्तेन सम्पीड्य

सम्पुष्पित

Mahânâr. 8. 1. यथा वृक्षस्य सम्पुष्पितस्य

सम्पूज्

Gauda. 1. 22. सम्पूज्यः सर्वभूतानाम्
Nrisut. 3. आनन्दामृतेनैनांश्चतुर्धा सम्पूज्य
— सम्पूज्योपहारैश्चतुर्धा
Râmap. 90. (मायाविद्ये..) सम्पूजयेत्

सम्पूर्णता

Gopî. 5. न्यूनं सम्पूर्णतां याति

सम्पृ

Chhâ. 5. 3. 3. वेत्थ यथासौ लोको न सम्पूर्यता ३ इति

Chhâ. 5. 10. 8. तेनासौ लोको न सम्पूर्य्यते
Bṛih. 6. 2. 2. वेत्थो यथासौ लोक एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिर्न सम्पूर्यता ३ इति
Nṛisut. 9. तत्र तत्र च सम्पूर्णं सान्तिष्ठति
Garbha. 3. नवमे मासि सर्वलक्षणज्ञानसम्पूर्णो भवति

सम्प्रकाश्

Gauḍa. 3. 11. खं यथा सम्प्रकाशितः

सम्प्रकृत्

Gîtâ. 18. 4. त्रिविधः सम्प्रकीर्त्तितः

सम्प्रचक्ष्

Brahmav. 2. ध्रुवाग्निः सम्प्रचक्षते

सम्प्रच्छद्

Kaush. 2. 15. अहतेन वाससा सम्प्रच्छन्नः

सम्प्रज्ञा

Mukti. 2. 53. सम्प्रज्ञातसमाधिः

सम्प्रति

Chhâ. 2. 9. 5. यत्सम्प्रति मध्यन्दिने स उद्गीथः
Râmap. 34. सम्प्रत्याश्वरिमारणं कुरु

सम्प्रतिज्ञा

Chhâ. 8. 11. 1. नाह खल्वयमेवं सम्प्रत्यात्मानं जानात्ययमहमस्मीति 2.

सम्प्रतिपत्ति

Gauḍa. 1. 19. मात्रासम्प्रतिपत्तौ 20, 21.

सम्प्रतिविद्

Kaush. 1. 4. तमित्वा सम्प्रतिविदो मज्जन्ति

सम्प्रतिष्ठ

Swet. 1. 1. क्व च सम्प्रतिष्ठाः

सम्प्रतिष्ठा

Chhâ. 8. 15. 1. आत्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्य
Praśna. 4. 1. कस्मिन्नु सर्वे सम्प्रतिष्ठि
Śikhâ. 2. सर्वकरणानि सम्प्रतिष्ठ ध्यानात्
Brahma. 1. दिव्ये ब्रह्मपुरे सम्प्रतिष्ठि

2. सम्प्रतिष्ठा

Gîtâ. 15. 3. नान्तो न चादिर्न च स तिष्ठा

सम्प्राप्ति

Bṛih. 1. 5. 17. अथातः सम्प्रत्तिः

सम्प्रत्यधी

Chhâ. 5. 11. 2. सम्प्रतीममात्मानं वैश्वारमध्येति 4.
6. आत्मानमेवेमं वैश्वानरं सम्प्रत्यध्येषि

सम्प्रदा

Kaush. 2. 15. अथास्मै सम्प्रयच्छति

सम्प्रदान

Kaush. 2. 15. अथातः पितापुत्रीयं सम्प्रदानम्

सम्प्रधा

Kaush. 2. 15. अस्मा आसीनायाभिमुखायैव सम्प्रदध्यात् (so MS.

सम्प्रमुच्

Bṛih. 4. 3. 36. एभ्यो ऽङ्गेभ्यः सम्प्रमुच्य

सम्प्रयम्

Chhâ. 2. 24. 6. तस्मै वसवः प्रातःसवनं संप्रयच्छन्ति
10. तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनं सवनं संप्रयच्छन्ति

â. 2. 24. 16. तस्मा आदित्याश्च विश्वे च देवास्तृतीयसवनं संप्रयच्छन्ति

सम्प्रयुज्

tri. 7. 11. खजाभियोगाद्बुद्धि सम्प्रयुक्तम्

da. 3. 5. न सर्वे सम्प्रयुज्यन्ते

सम्प्रली

da. 3. 4. आकाशे सम्प्रलीयन्ते

सम्प्रवच्

ur. 1. क्षुरिकां सम्प्रवक्ष्यामि

सम्प्रवृत्

. 14. 22. न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि

सम्प्रसद्

â. 8. 6. 3. सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः 8. 11. 1.

सम्प्रसाद

â. 8. 3. 4. य एष सम्प्रसादो ऽस्माच्छरीरात्समुत्थाय Maitri. 2. 2.

8. 12. 3. एवमेवैष सम्प्रसादः

h. 4. 3. 15. एतस्मिन्सम्प्रसादे रत्वा

सम्प्रसार

hma. 1. सम्प्रसारो ऽन्तर्यामी

सम्प्रसू

ṇḍ.2. 1. 5. बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः

7. तस्माच्च देवा बहुधा सम्प्रसूताः

ıà. 2. ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्राः सम्प्रसूयन्ते

सम्प्रस्था

na. 4. 7. यथा..वयांसि वासोवृक्षं सम्प्रतिष्ठन्त एवं..तत्सर्वं पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते

Praśna. 4. 9. स परे ऽक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते

11. प्राणा भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र

सम्प्रस्रु

Chhâ. 2. 23. 3. त्रयी विद्या सम्प्रास्रवत् — एतान्यक्षराणि सम्प्रास्रवन्त

4. ओङ्कारः सम्प्रास्रवत्

Maitri. 5. 2. तत्सत्त्वमेवेरितं रसः सम्प्रास्रवत्

सम्प्राप्

Maitri. 4. 3. सत्त्वात् सम्प्राप्यते मनः

Muṇḍ.3. 2. 5. सम्प्राप्यैनमृषयो ज्ञानतृप्ताः

Garbha. 4. अथ योनिद्वारं सम्प्राप्तः

सम्प्राप्ति

Mukti. 2. 11. तावन्न पदसम्प्राप्तिः

सम्प्रेक्ष्

Gîtâ. 6. 13. सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वम्

सम्प्लु

Chhâ. 2. 4. 1. मेघो यत्सम्प्लवते स हिङ्कारः

2. 15. 1. अभ्राणि सम्प्लवन्ते स हिङ्कारः

सम्प्लुतोदक

Gitâ. 2. 46. सर्वतः सम्प्लुतोदके

सम्प्सा

Bṛih. 5. 14. 8. सर्वमेव तत्सम्प्साय

सम्बन्ध

Sarvop. 2. प्राप्तशरीरसंबन्धवियोगम्

सम्बन्धिन्

Gîtâ. 1. 34. श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा

सम्बुध्

Gauḍa. 3. 44. लये सम्बोधयेच्चित्तम्

4. 1. ज्ञेयाभिन्नेन सम्बुद्धः

सम्बोधयितृ

Maitri. 6. 4. एको ऽस्य सम्बोधयिता

सम्भक्ष्

Nrisut. 4. संभक्ष्य सिंहेन
7. स एतत् सर्वं . . संभक्ष्य
Śiras. 4. सर्वान् प्राणान् संभक्ष्य

सम्भक्षण

Śiras. 4. संभक्षणेनाजः संसृजति

सम्भव

Isâ. 13. अन्यदेवाहुः संभवात्
Swet. 3. 1. य एवैक उद्भवे संभवे च
Gauda. 3. 9. मरणे संभवे चैव
25. संभवः प्रतिषिध्यते
48. संभवो ऽस्य न विद्यते
4. 71.
4. 16. संभवे हेतुफलयोः
— युगपत्संभवे यस्मात
38. न च भूतादभूतस्य संभवो ऽस्ति
Pinda. 4. कलानां तस्य संभवः
9. पिण्डदानेन संभवः
Gopî. 5. केलिकुङ्कुमसंभवम्
Râmot. 3. मकाराक्षरसंभवः
Mukti. 2. 50. संभवव्यत्ययक्रमात्
Gîtâ. 14. 3. सम्भवः सर्वभूतानाम्

सम्भाष्

Kaush. 2. 4. अपि वाताद्वा तिष्ठेत्संभाषमाणः

सम्भू

Ait. 4. 1. रेतस्तदेतत्सर्वेभ्यो ऽङ्गेभ्यस्तेजः संभूतम्
6. सर्वान् कामानाप्त्वामृतः समभवत् 5. 4; Atmapra. 1.
Kaush. 1. 6. आकाशाद्योनेः संभूतः
2. 11. अङ्गादङ्गात्संभवसि B 6. 4. 9.
Chhâ. 3. 19. 1. तत्सदासीत्तत्समभवत्
5. 4. 2. तस्या आहुतेः सोमो र संभवति Brih. 6. 2 (आहुत्यै)
5. 5. 2. . . वर्षं संभवति
5. 6. 2. . . अन्नं संभवति Brih. 2. 11.
5. 7. 2. . . रेतः संभवति Brih. 2. 12.
5. 8. 2. . . गर्भः संभवति
5. 9. 2. यतः संभूतो भवति
Brih. 1. 1. 2. एतौ वा अश्वं महिमा वभितः संबभूवतुः
1. 2. 4. स मनसा वाचं मिथुनं स भवत्
7. अश्वः समभवद्यदश्वत्
1. 4. 3. तां समभवत्ततो मनुष्य अजायन्त
4. कथं नु मात्मन एव जनं त्वा संभवति
— तां समेवाभवत्ततो गावे ऽजायन्त (similarly twi more).
5. 14. 8. शुद्धः पूतो ऽजरो ऽमृतः सं वति
6. 2. 10. तस्या आहुत्यै वृष्टिः सं वति
13. तस्या आहुत्यै पुरुषः सं वति
14. तस्या आहुत्यै पुरुषो भा स्वर्णः संभवति
Tait. 2. 1. 1. आत्मन आकाशः संभूतः
Katha. 4. 7. या प्राणेन संभवत्यदिति
Maitri. 6. 19. अप्राणात् . . सम्भूतः प्राण ज्ञाको जविः

Mund. 1. 1. 1. ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव
7. यथा पृथिव्यामोषधयः संभवन्ति
— तथाक्षरात् संभवतीह विश्वम्
Mahânâr. 1. 12. अद्भ्यः संभूतो हिरण्यगर्भः
Nrip. 1. 1. स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवत्
Nrisut. 4. परमं ब्रह्म संभाव्य
Vyâsa. 5. अथ तैः संभूतैर्वायुः
...r. 5. तानेकधा समभवत्तदोमिति
...su. 2. तदेतदोमित्येकधा समभवत्
...pî. 5. एतत्संभोगसंभूतं चन्दनम्
...mot. 3. अकाराक्षरसंभूतः
— उकाराक्षरसंभूतः
— अहमेवेति सम्भाव्य
...tâ. 2. 34. सम्भावितस्य चाकीर्त्तिः
4. 6. सम्भवाम्यात्ममायया
8. सम्भवामि युगे युगे
14. 4. मूर्त्तयः सम्भवन्ति याः
16. 8. अपरस्परसम्भूतम्

सम्भूति

... 12. य उ संभूत्यां रताः
14. संभूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह .. संभूत्यामृतमश्नुते
...uda. 3. 25. संभूतेरपवादाच्च

सम्भृ

...h. 6. 3. 1. सर्वौषधं फलानीति संभृत्य
...tri. 6. 14. तस्यैतद्रूपं यन्निमेषादिकालात् संभृतम्
...sa. 1. ओषधिसंभारान् संभृत्य (3 MSS. have विधिवत्संभारान् and 2 omit the वत्)

Gopî. 5. कुङ्कुमं .. जलक्रीडासु संभृतम्

सम्भोग

Gopî. 4. मायासहितब्रह्मसंभोगवशात्
5. एतत्संभोगसंभूतं चन्दनम् (one MS. has एतत्संयोग°)

सम्भ्रज्ज्

Mukti. 2. 63. स्थितिः सम्भृष्टबीजवत्

सम्मन्त्र्

Gauḍa. 4. 35. मित्राद्यैः सह सम्मन्त्र्य

सम्मर्शिन्

Tait. 1. 11. 4. ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः (bis).

सम्मा

Chhâ. 2. 10. 1. आत्मसम्मितम् 6.
Mahânâr. 15. 1. अक्षरे ब्रह्म सम्मितम्
Nrip. 5. 1. ऋतुभिः सम्मितं भवति
— गायत्र्या सम्मितं भवति
— जगत्या सम्मितं भवति
— पुरुषेण सम्मितं भवति
— अनुष्टुभा सम्मितं भवति

सम्मिलित

Gopî. 4. महदाद्या ब्रह्मणो महामायासम्मिलितात्

सम्मुह्

Gauḍa. 2. 19. यया सम्मोहितः स्वयम्
Gîtâ. 2. 7. धर्मसम्मूढचेताः

सम्मूढत्व

Maitri. 3. 2. अभिभूतत्वात् सम्मूढत्वं प्रयातः सम्मूढत्वादात्मस्थं .. नापश्यत्

सम्मोह

Kaush. 3. 3. आबल्यमेत्य सम्मोहमेति
4. 13. न पुरा कालात् सम्मोहमेति

Brih. 4. 4. 1. अबल्यं न्येत्य सम्मोहमिव न्येति

Maitri. 3. 5. सम्मोहो भयं . . इति तामसानि
6. 38. अतः सम्मोहं छित्त्वा

Gîtâ. 2. 63. क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः
7. 27. सर्वभूतानि सम्मोहं . . यान्ति

सम्मोहमौलिन्

Maitri. 6. 28. सम्मोहमौली तृष्णेर्ष्याकुण्डली

सम्यग्ज्ञान

Mund.3. 1. 5. सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्

सम्यञ्च्

Brih. 5. 13. 3. प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि सम्यञ्चि हास्मै . . श्रैष्ठ्याय कल्पन्ते

Swet. 6. 21. प्रोवाच सम्यगृषिसंघजुष्टम्

Maitri. 6. 23. सम्यग्योगः प्रवर्त्तते
37. अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यक्

Mund.1. 2. 13. सम्यक् . . प्रोवाच

Prasna. 5. 6. क्रियासु . . सम्यक् प्रयुक्तासु

Prânâg. 2. सम्यक् अपयित्वा

Amrita. 18. बध्वा योगासनं सम्यक्
28. सम्यङ्नित्यमभ्यस्यतः

Jâbâla. 6. तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक् सम्पन्नः

Vâsu. 4. सम्यग् ज्ञानं लब्ध्वा

Râmap. 68. लिखेत्सम्यक्ततो बहिः
83. प्राप्नुवन्ति क्षणात्सम्यव
91. तस्मै जपादींश्च सम्यक् मर्प्य

Mukti. 1. 24. मत्सायुज्यं द्विजः सम्य जेत्
49. सम्यक्परीक्ष्य दातव्यः
52. सम्यक्परीक्ष्य दद्याः
2. 16. सम्यग्वासनया त्यक्तम
17. सम्यगालोकनात्सत्यात्

Gîtâ. 5. 4. एकमप्यास्थितः सम्यव
8. 10. प्राणमावेश्य सम्यक्
9. 30. सम्यग्व्यवसितो हि सः

सम्राज्

Brih. 4. 1. 1. उभयमेव सम्राडिति वाच
2. एकपाद्वा एतत्सम्राडिति 3—7.
— वागेव सम्राडिति होव वाचा वै सम्राड् बन्धुः ज्ञायते (similarly in 3, 5, 6, 7).
— वाग्वै सम्राट् परमं ब्रह्म (similarly in 3-7).
4. 2. 1. यथा वै सम्राण्महान्तमध्व नमेष्यन्
4. 3. 1. तं सम्राडेव पूर्वः पप्रच्छ
2. आदित्यज्योतिः सम्राट्
5. तस्माद्वै सम्राडपि यत्र स्व पाणिर्न विनिर्ज्ञायते
32. एष ब्रह्मलोकः सम्राडि 33; 4. 4. 23.
5. 14. 8. मुखं ह्यस्याः सम्राण्न विद्व न्करोति

Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा . . सम्रा

Mahânâr. 14. 1. सम्राडपः

asna. 3. 4. यथा सम्राडेवाधिकृतान् विनियुंक्ते
Ip. 1. 4. सम्राट् स्वराड्विराट्

सयुग्वन्

hâ. 4. 1. 3. कम्वर एनमेतत्सन्तं सयुग्वानमिव रैक्कमात्थ — यो नु कथं सयुग्वा रैक्क इति 5.
5. अङ्गारे ह सयुग्वानमिव रैक्कमात्थ
8. त्वं नु भगवः सयुग्वा रैक्कः

सयुज्

et. 4. 6. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया Mund. 3. 1. 1.

सरण

hâ. 1. 3. 5. आजेः सरणम्

सरथ

ha. 1. 25. इमा रामाः सरथाः सतूर्याः

सरस्

â. 8. 5. 3. तदैरम्मदीयं सरः
. 10. 24. सरसामस्मि सागरः

सरस्वती

. 6. 4. 27. सरस्वति तमिह धातवे कः
ânâr. 5. 4. इमं मे..सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता
15. 1. सरस्वतीमावाहयामि
16. 5. ददातु मेधां देवी सरस्वती
4. 3. यो वै नृसिंहः..या सरस्वती तस्मै वै नमो नमः(6).
ot. 5. यो वै श्रीरामः..या सरस्वती (22).

सरस्वतीरहस्य

i. 1. कठवल्लीतैत्तिरीयकब्रह्मकैवल्यश्वेताश्वतरगर्भनारायणामृतबिन्द्वमृतनादकालाग्निरुद्रक्षुरिकासर्वसारशुकरहस्यतेजोबिन्दुध्यानबिन्दुब्रह्मविद्यायोगतत्त्वदक्षिणामूर्तिस्कन्दशारीरकयोगशिखैकाक्षराक्ष्यवधूतकठरुद्रहृदययोगकुण्डलिनीपञ्चब्रह्मप्राणाग्निहोत्रवराहकलिसन्तरणसरस्वतीरहस्यानाम्

सराम

Râmap. 40. सरामस्तस्य पत्तनम्

सरूप

Swet. 4. 5. बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः
Mund.2 1. 1. सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः
Mahânâr. 9. 2. बह्वीं प्रजां जनयन्तीं सरूपाम्
Nrip. 3. 1. पाहि..ब्रह्मयोनिं सरूपाम्
Mukti. 2. 32. सरूपो ऽरूप एव च
33. जीवन्मुक्तः सरूपः स्यात्
35. सरूपो ऽसौ मनोनाश·

सरोज

Râmap. 62. वृत्तत्रयं साष्टपत्रं सरोजम्

सर्ग

Katha. 6. 4. ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते
Maitri. 6. 30. *vide* हेतु
Gitâ. 5. 19. इहैव तैर्जितः सर्गः
7. 27. सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप
10. 32. सर्गाणामादिरन्तश्च
14. 2. सर्गे ऽपि नोपजायन्ते

सर्प

Chhâ. 2. 21. 1. सर्पा गन्धर्वाः पितरस्तत्रिधनम्

Mahânâr. 3.	1. *vide* नवकुल	
Nîla.	18. नमो ऽस्तु सर्पेभ्यः	
	— तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः 19, 20.	
Gâruḍa,	2. नागानां सर्पाणां वृश्चिकानाम्	
	3. द्वादशवर्षं न तं दशन्ति सर्पाः	
	— यावज्जीवं न तं दशन्ति सर्पाः	
Gîtâ,	10. 28. सर्पाणामस्मि वासुकिः	

सर्पदेवजनविद्या

Chhâ. 7.	1. 2. अध्येमि . . सर्पदेवजनविद्याम्	
	4. नाम वै . . सर्पदेवजनविद्या	
7.	2. 1. वाग्वै . . विज्ञापयति . . सर्पदेवजनविद्याम्	
7.	7. 1. विज्ञानेन वै . . विजानाति . . सर्पदेवजनविद्याम्	

सर्पधारा

Gauḍa.	2. 17. सर्पधारादिभिर्भावैः

सर्पिष्मन्त्

Bṛih. 6.	4. 14. क्षीरौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम्
	15. दध्योदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम्
	16. उदौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम्
	17. तिलौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम्
	18. मांसौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम्

सर्पिस्

Chhâ. 4. 15.	1. यद्यप्यस्मिन् सर्पिर्वोदकं वा सिञ्चन्ति
Chhâ. 6.	6. 1. तत्सर्पिर्भवति
Bṛih. 6.	4. 12. शरभृष्टीः प्रतिलोमाः सर्पिषाक्ताः
Śwet,	1. 15. दधिनीव सर्पिः Brahma.
	16. क्षीरे सर्पिरिवार्पितम् Brahma. 3.
Maitri,	6. 26. यथा तत्पीर्वि सर्पिः . . ज्ज्वलति
Yogat,	8. पयोमध्ये ऽस्ति सर्पिव (छान्दसो वर्णलोपः Na

सर्व

Ait,	4. 1. सर्वेभ्यो ऽङ्गेभ्यस्तेजः तम्
	6. स्वर्गे लोके सर्वान् कामान् आप्त्वा 5. 4; Atmapra.
	5. 2. सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति
	3. एते सर्वे देवाः
	— सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रम् Atmapra. 1.
Kaush,	1. 2. चंद्रमसमेव ते सर्वे गच्छ
	4. सर्वाणि च द्वंद्वानि
	6. एतावदिदं सर्वमिदं सर्वम
	2. 1. सर्वा देवता अयाचमान बलिं हरन्ति 2. 2.
	— सर्वाणि भूतान्ययाचमा यैव बलिं हरन्ति 2.
	6. सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्यायाभ्यर्च्यन्ते . . यु न्ते . . सन्नमन्ते
	— एवं हैव स सर्वेषु भूतेषु
	9. तेन मुखेन सर्वाणि भूतान्यत्ति
	12. एताः सर्वा देवता वायुं प्रविश्य
	13. एताः सर्वा देवताः प्राणं प्रविश्य

ih. 2. 14. एताः सर्वा देवताः प्राणे निःश्रेयसं विदित्वा
— सैहैवैतैः सर्वैरस्माच्छरीरादुच्चक्रमुः (again with उत्क्रामति)
3. 2. सर्वमायुरस्मिँल्लोक एति
— एकैकमेतानि सर्वाणि प्रज्ञापयन्ति
— सर्वे प्राणा अनुवदन्ति (similarly 4 times more).
3. तदेनं वाक् सर्वैर्नामभिः सहाप्येति (similarly 6 times more); 4. 20.
— यथाग्नेर्ज्वलतः सर्वा दिशो विष्फुलिंगा विप्रतिष्ठेरन् 4. 20.
4. सर्वाणि नामान्यभिविसृज्यन्ते..सर्वाणि नामान्याप्नोति (similarly 4 times more).
— सर्वाणि भूतान्येकं भवन्ति
6. प्रज्ञाया वाचं समारुह्य वाचा सर्वाणि नामान्याप्नोति (similarly nine times more),
4. 3. सर्वेषां भूतानां मूर्द्धा Brih. 2. 1. 2 (bis).
8. सर्वमायुरेति 16; Chhâ. 2. 11. 2; 12. 2; 13. 2; 14. 2; 15. 2; 16. 2; 17. 2; 18. 2; 19. 2; 20. 2; 4. 11. 2; 4. 12. 2; 4. 13. 2; Gopî. 4.
15. सर्वं हास्मा इदं श्रैष्ठ्याय यम्यते
20. सर्वेषां च देवानां सर्वेषां च भूतानां श्रैष्ठ्यं..पर्येत्

Kaush. 4. 20. तथो एवैवं विद्वान् सर्वान् पाप्मनो ऽपहत्य
— सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं पर्येति य एवं वेद

Kena, 18. इदं सर्वं दहेयम्
19. तदुपप्रेयाय सर्वजवेन 23.
22. इदं सर्वमाददीयम्
31. अभि हैनं सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति
33. वेदाः सर्वाङ्गानि

Chhâ. 1. 3. 6. अन्नं ह्यन्ने हीदं सर्वं स्थितम्
1. 6. 6. आप्रणखात्सर्व एव सुवर्णः
7. स एष सर्वेभ्यः पाप्मभ्य उदित उदेति ह वै सर्वेभ्यः पाप्मभ्यो य एवं वेद
1. 9. 1. सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यन्ते
1. 10. 6. स मा सर्वैरार्त्विज्यैर्वृणीतेति
1. 11. 2. भगवन्तं वा अहमेभिः सर्वैरार्त्विज्यैः पर्यैषिषम्
3. भगवांस्त्वेव मे सर्वैरार्त्विज्यैरिति तथेति
5. सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति (*vide also* 7 *and* 9.)
2. 4. 1. सर्वास्वप्सु पंचविधं सामोपासीत
2. 9. 1. मां प्रति मां प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम
2. तस्मिन्निमानि सर्वाणि भूतान्यन्वायत्तानि
2. 21. 1. एतत्साम सर्वस्मिन् प्रोतम्
2. एतत्साम सर्वस्मिन् प्रोतं वेद सर्वं ह भवति

Chhâ. 2. 21. 4. यस्तद्वेद स वेद सर्वं सर्वा दिशो बलिमस्मै हरन्ति
— सर्वमस्मीत्युपासीत तद्व्रतम्
2. 22. 1. तान् सर्वानेवोपसेवेत
3. सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मानः &c.
5. सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्याः
— सर्व ऊष्माणोऽग्रस्ता अनिरस्ता वक्तव्याः
— सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्याः
2. 23. 2. सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति
4. शंकुना सर्वाणि पर्णानि सन्तृण्णान्येवमोंकारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा
— ओंकार एवेदं सर्वम्
3. 12. 1. गायत्री वा इदं सर्वं भूतं ..वाग्वा इदं सर्वं भूतं गायति
2. अस्यां हीदं सर्वं भूतं प्रतिष्ठितम्
6. पादोऽस्य सर्वा भूतानि
3. 14. 1. सर्वं खल्विदं ब्रह्म
2. सर्वमिदमभ्यात्तः 4.
3. 15. 4. प्राणो वा इदं सर्वं भूतम्
3. 16. 1. एते हीदं सर्वं वासयन्ति
3. एते हीदं सर्वं रोदयन्ति
5. एते हीदं सर्वमाददते
3. 19. 3. सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामाः (bis).
4. 1. 4. एनं सर्वं तदभिसमेति 6.
4. 3. 2. वायुरेवैतान्सर्वान्संवृङ्क्ते
3. तस्मात्सर्वासु दिक्ष्वन्नमेव दशकृतम्
— तयेदं सर्वं दृष्टं सर्वमस्येदं दृष्टम्

Chhâ. 4. 15. 2. एतं हि सर्वाणि वा[illegible] भिसंयन्ति
3. सर्वाणि वामानि नय[illegible]
4. सर्वेषु लोकेषु भाति
4. 16. 1. एष ह यन्निदं सर्वं
4. 17. 10. सर्वांश्चर्त्विजो ऽभिर[illegible]
5. 1. 15. प्राणो ह्येवैतानि सर्वा[illegible] वति
5. 2. 6. अमा हि ते सर्वमिद[illegible]
— अहमेवेदं सर्वमसानि
7. इति सर्वं पिबति
5. 3. 7. सर्वेषु लोकेषु क्षत्रस्यै[illegible] शासनमभूत्
5. 11. 3. तेभ्यो न सर्वमिव प्रति[illegible]
5. 18. 1. सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु सर्वेष्वात्मस्वन्नमत्ति
5. 24. 2. तस्य सर्वेषु लोकेषु [illegible] भूतेषु सर्वेष्वात्मसु [illegible] भवति
3. अस्य सर्वे पाप्मानः [illegible]यन्ते
5. एवं सर्वाणि भूतान्य[illegible] मुपासते
6. 1. 2. सर्वान् वेदानधीत्य
4. सर्वं मृन्मयं विज्ञातम्
5. सर्वं लोहमयं विज्ञातम्
6. सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञा[illegible]
6. 7. 4. यत्किञ्च पप्रच्छ सर्वं ह [illegible] तिपेदे
6. 8. 4. सन्मूलाः सोम्येमाः स[illegible] प्रजाः 6.
6. 8. 7. ऐतदात्म्यमिदं सर्वम् 6. 9. 4; 6. 10. 3; 6. [illegible] 3; 6. 12. 3; 6. 13. 3; [illegible] 14. 3; 6. 15. 3; 6. 16[illegible]
6. 9. 2. इमाः सर्वाः प्रजाः ..न [illegible] ..दुः 6. 10. 2.

6. 11. 2. सर्वं जहाति सर्वः शुष्यति
7. 2. 1. वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति
7. 4. 2. लोकस्य संक्लृप्त्यै सर्वं सङ्कल्पते
7. 10. 2. आप्नोति सर्वान् कामान्
7. 14. 2. अस्य सर्वे कामाः समृध्यन्ति
7. 15. 1. एवमस्मिन्प्राणे सर्वं समर्पितम्
4. प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति
7. 25. 1. स एवेदं सर्वं..अहमेवेदं सर्वमिति
2. आत्मैवेदं सर्वमिति
— सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति 8. 1. 6; 8. 4. 3; 8. 5. 4.
— सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवति 8. 1. 6.
7. 26. 1. आत्मत एवेदं सर्वमिति
2. सर्वं ह पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति सर्वशः
— स्मृतिलंभे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः
8. 1. 3. सर्वं तदस्मिन् समाहितम्
4. ब्रह्मपुरे सर्वं समाहितं सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामाः
8. 3. 2. सर्वं तदत्र गत्वा विन्दते
— सर्वाः प्रजा अहरहर्गच्छन्त्यः
8. 4. 1. सर्वे पाप्मानो ऽतो निवर्त्तन्ते
8. 7. 1. सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान्2, 3; 8. 12. 6.
4. एष उ एवैषु सर्वेष्वेतेषु परिख्यायते
8. 8. 1. सर्वमेवेदमावां..पश्यावः

Chhâ. 8. 12. 6. सर्वे च लोका आप्ताः सर्वे च कामाः
8. 15. 1. आत्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्याहिंसन्सर्वभूतानि
Brih. 1. 2. 5. इदं सर्वमसृजत यदिदं किञ्च
— सर्वं वा अत्ति
— सर्वस्यैतस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति
1. 3. 18. इदं सर्वं यदन्नं तदात्मने
22. समो ऽनेन सर्वेण
23. प्राणेन हीदं सर्वमुत्तब्धम्
1. 4. 1. पूर्वो ऽस्मात्सर्वस्मात्सर्वान् पाप्मन औषत्
4. तत्सर्वमसृजत
5. अहं हीदं सर्वमसृक्षि
6. एष उ ह्येव सर्वे देवाः
— एतावद्वा इदं सर्वमन्नं चैवान्नादश्च
7. अत्र ह्येते सर्व एकं भवन्ति
— एतत्पदनीयमस्य सर्वस्य यदयमात्मानेन ह्येतत्सर्वं वेद
8. प्रेयो ऽन्यस्मात्सर्वस्मात्
9. ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तः
— यस्मात्तत्सर्वमभवत्
10. तस्मात्तत्सर्वमभवत्
— स इदं सर्वं भवति
13. इयं हीदं सर्वं पुष्यति
16. आत्मा सर्वेषां भूतानां लोकः
— सर्वाणि भूतान्यरिष्टिमिच्छन्ति
17. पांक्तमिदं सर्वं यदिदं किञ्च
— तदिदं सर्वमाप्नोति य एवं वेद

Brih. 1. 5. 1. तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् 2.
2. पयसि हीदं सर्वं प्रतिष्ठितम्
— सर्वं हि देवेभ्यो ऽन्नाद्यं प्रयच्छति
3. एतत्सर्वं मन एव Maitri. 6. 30.
— एतत्सर्वं प्राण एव
13. एते सर्व एव समाः सर्वे ऽनन्ताः
14. सर्वमिदं प्राणभृदनुप्रविश्य
15. यद्यपि सर्वज्यानिं जीयते
17. तस्य सर्वस्य ब्रह्म
— तेषां सर्वेषां यज्ञः
— तेषां सर्वेषां लोकः
— एतावद्वा इदं सर्वम्
— मा सर्वं सन्नयमितो ऽभुनजत्
— एनं सर्वस्मात्पुत्रो मुञ्चति
20. एवंवित्सर्वेषां भूतानामात्मा
— सर्वाणि भूतान्यवन्ति (bis).
21. अस्यैव सर्वे रूपमसाम
— एतस्यैव सर्वे रूपमभवन्
1. 6. 1. सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति
— सर्वैर्नामभिः समम्
— सर्वाणि नामानि बिभर्त्ति
2. सर्वाणि रूपाण्युत्तिष्ठन्ति
— सर्वै रूपैः समम्
— सर्वाणि रूपाणि बिभर्त्ति
3. सर्वाणि कर्माण्युत्तिष्ठन्ति
— सर्वैः कर्मभिः समम्
— सर्वाणि कर्माणि बिभर्त्ति
2. 1. 9. सर्वांस्तानतिरोचते
10. सर्वं . . आयुरेति 12.
20. आत्मनः सर्वे प्राणाः सर्वे लोकाः सर्वे देवाः . . व्युच्चरन्ति

Brih. 2. 2. 4. सर्वस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति
2. 4. 2. सर्वा पृथिवी वित्तेन पू
4. 5. 3.
5. न वा अरे सर्वस्य काम
सर्वं प्रियं भवत्यात्मना
कामाय सर्वं प्रियं भ
4. 5. 6.
— आत्मनो . . विज्ञानेनेदं
विदितम्
6. सर्वं तं परादाद्यो ऽन्यत्रा
नः सर्वं वेद 4. 5. 7.
— इदं सर्वं यदयमात्मा
5. 7.
10. अस्यैवैतानि सर्वाणि
श्वसितानि 4. 5. 11.
11. सर्वासामपां समुद्र एक
यनम् (similarly
times more); 4. 5.
(12 times more).
14. यत्र वा अस्य सर्वमात्
वाभूत् 4. 5. 15.
— येनेदं सर्वं विजानाति
4. 5. 15.
2. 5. 1. सर्वेषां भूतानां मधु . .
र्वाणि भूतानि मधु (
times).
— इदममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्व
(14 times).
15. सर्वेषां . . अधिपतिः सर्वे
. . राजा
— अराः सर्वे समर्पिताः
— आत्मनि सर्वाणि भूता
सर्वे देवाः सर्वे लोक
सर्वे प्राणाः सर्व एत आ
त्मानः समर्पिताः
18. सर्वासु पूर्षु पुरिशय.

3. 1. 3. सर्वं मृत्युनाप्तं सर्वं मृत्युनाभिपन्नम्
4. सर्वमहोरात्राभ्यामाप्तं सर्वमहोरात्राभ्याममभिपन्नम्
5. सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यामाप्तं सर्वं..अभिपन्नम्
3. 2. 10. इदं सर्वं मृत्योरन्नम्
3. 6. 1. यदिदं सर्वमप्स्वोतं च प्रोतं च
3. 7. 1. सूत्रं येन..सर्वाणि च भूतानि सन्दृब्धानि
— सर्वाणि च भूतानि यो ऽन्तरो यमयति
2. वायुना..सूत्रेण..सर्वाणि च भूतानि सन्दृब्धानि
15. यः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्,&c.
3. 9. 3. एतेषु हीदं वसु सर्वं हितम्
5. इदं सर्वमाददाना यन्ति
7. एते हीदं सर्वं षडिति
8. एषु हीमे सर्वे देवा इति
9. अस्मिन्निदं सर्वमध्यार्धोत्
10. सर्वस्यात्मनः परायणम् (16 times).
27. सर्वे वा मा पृच्छत..सर्वान्वा वः पृच्छामीति
4. 1. 2. सर्वाणि च भूतानि वाचैव ..प्रज्ञायन्ते
— सर्वाण्येनं भूतान्यभिक्षरन्ति 3—7.
7. हृदयं वै सर्वेषां भूतानामायतनं..सर्वेषां.. प्रतिष्ठा ..हृदये ह्येव सर्वाणि.. प्रतिष्ठितानि
4. 2. 4. सर्वा दिशः सर्वे प्राणाः
4. 3. 20. अहमेवेदं सर्वमस्मीति
22. तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान्

Brih. 4. 3. 33. सर्वैर्मानुष्यकैर्भोगैः सम्पन्नतमः
— सर्वेभ्यो मा ऽन्तेभ्य उदरौत्सीत्
37. एवंविदं सर्वाणि भूतानि प्रतिकल्पन्ते
— सर्वे प्राणा अभिसमायन्ति
4. 4. 2. सर्वे प्राणा अनूत्क्रामन्ति
7. यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामाः Katha, 6. 14.
13. स विश्वकृत्स हि सर्वस्य कर्त्ता
22. सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः सर्वस्याधिपतिः
23. सर्वमात्मानं पश्यति
— सर्वं पाप्मानं तरति..सर्वं पाप्मानं तपति
4. 5. 6. आत्मनि खल्वरे..विज्ञात इदं सर्वं विदितम्
5. 3. 1. एतद्ब्रह्मैतत्सर्वम्
5. 6. 1. एष सर्वस्येशानः सर्वस्याधिपतिः सर्वमिदं प्रशास्ति
5. 12. 1. अन्ने हीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि
— प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते
— सर्वाणि..अस्मिन्..विशन्ति सर्वाणि..रमन्ते
5. 13. 1. प्राणो हीदं सर्वमुत्थापयति
2. प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते युज्यन्ते हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय..य एवं वेद
3. प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि सम्यञ्चि हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय

Bṛih. 5. 14. 3. एष परोरजा इति सर्वं.. रजः..तपति
8. सर्वमेव तत् सन्दहति
— सर्वमेव तत् संप्साय
6. 1. 4. श्रोत्रे हीमे सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः
6. 2. 4. सर्वमहं तत्तुभ्यमवोचम्
6. 3. 1. सर्वैः कामैस्तर्पयन्तु
3. सर्वाय स्वाहा
6. सर्वां च सावित्रीमन्वाह स र्वाश्च मधुमतीः
— अहमेवेदं सर्वं भूयासम्
6. 4. 14. सर्वमायुरियादिति 15-18
18. सर्वान् वेदाननुब्रुवीत
25. भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि

Isâ. 1. ईशा वास्यमिदं सर्वम्
5. तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः
6. यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानम्
7. यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूत्

Tait. 1. 5. 2. सर्वे लोका महीयन्ते
— सर्वाणि ज्योतींषि महीयन्ते
3. सर्वे वेदा महीयन्ते
— सर्वे प्राणा महीयन्ते
— सर्वे ऽस्मै देवा बलिमावहन्ति
1. 7. 1. पांक्तं वा इदं सर्वम्
1. 8. 1. ओमितीदं सर्वम्
2. 1. 1. सो ऽश्नुते सर्वान् कामान्
2. 2. 1. सर्वं वै ते ऽन्नमाप्नुवन्ति
2. 3. 1. सर्वमेव त आयुर्यन्ति
2. 5. 1. विज्ञानं देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते

Tait. 2. 5. 1. सर्वान् कामान् समश्नुते
2. 6. 1. तपस्तप्त्वेदं सर्वमसृजत
2. 8. 1. तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा
3. 10. 3. सर्वमित्याकाशे

Katha. 1. 8. पुत्रपशूंश्च सर्वान्
25. सर्वान् कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व
26. सर्वं जीवितमल्पमेव
2. 15. सर्वे वेदाः..तपांसि सर्वाणि
3. 12. एष सर्वेषु भूतेषु गूढः
4. 9. तं देवाः सर्वे ऽर्पिताः
5. 8. तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे 6. 1.
15. तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति Śwet. 6.14; Mu 2. 2. 10.
6. 2. यदिदं किञ्च जगत्सर्वं
15. यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते

Śwet. 1. 12. सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममे
2. 8. स्रोतांसि सर्वाणि भया हानि
16. एषो ऽह देवः प्रदिशो सर्वाः Mahânâr. 2. (एष हि)
3. 1. सर्वाँल्लोकानीशत ईशनीभिः
9. तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम् Mahânâr. 10. 4.
15. पुरुष एवेदं सर्वम् Nṛ 5. 1.
16. सर्वमावृत्य तिष्ठति Gî 13. 13.
17. सर्वस्य प्रभुं..सर्वस्य शरणम्
18. वशी सर्वस्य लोकस्य
4. 10. तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वम्

ıt. 4. 11. यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वम् Mahânâr. 1. 2.
5. 2. योनीश्च सर्वाः
4. सर्वा दिश ऊर्ध्वमधश्च तिर्यक्
5. प्राच्यांश्च सर्वान् परिणामयेद्यः सर्वमेतद्विश्वमाधितिष्ठत्येको गुणांश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः
6. 2. येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वम्
4. भावांश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः
tri. 1. 4. सर्वं चेदं क्षयिष्णु पश्यामः
4. 6. ब्रह्म खल्विदं वाव सर्वम्
6. 3. एताभिः सर्वमिदमोतं प्रोतम्
6. एतस्यामिदं सर्वमन्तर्हितमस्मिंश्च सर्वस्मिन्नेषान्तर्हिता
7. सर्वमात्मा जानीतेति
9. विशन्तु त्वामाहुतयश्च सर्वाः
10. एवं सर्वाणीन्द्रियकर्माणि
12. सर्वाणि . . भूतान्यहरहः प्रपतन्ति
14. अन्नं वा अस्य सर्वस्य योनिः
15. कालः पचति भूतानि सर्वाणि
16. अर्थेभ्यः सर्वमिदम्
— सर्वः कश्चित् प्रभुः साक्षी
18. परे ऽव्यये सर्वमेकीकरोति
25. यस्मात् सर्वमनेकधा युनक्ति
30. अत्र हि सर्वे कामाः समाहिताः 35, 38.
32. तस्माद्वा . . सर्वे प्राणाः सर्वे लोकाः सर्वे वेदाः सर्वे देवाः सर्वाणि च भूतान्युच्चरन्ति
35. सर्वमस्मै यजमानाय धेहि
— सर्वं पश्यन् पश्यति

Maitri. 7. 1. सर्वस्यात्मा . . सर्वस्येशानः सर्वस्यान्तरान्तरः
7. अस्यैवान्नमिदं सर्वम्
11. उच्चारितमात्र एव सर्वं शरीरं विद्योतयति
— सर्वं हि पश्यन् पश्यति सर्वमाप्नोति
Muṇḍ. 1. 1. 3. सर्वमिदं विज्ञातं भवति
2. 1. 6. दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे
9. अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वे Mahânâr. 8. 5.
— अतश्च सर्वा ओषधयः
2. 2. 5. मनः सह प्राणैश्च सर्वैः
3. 1. 9. प्राणैश्चित्तं सर्वमोतम्
3. 2. 2. इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः
5. सर्वमेवाविशन्ति
6. परिमुच्यन्ति सर्वे Mahânâr. 10. 6; Kaivalya. 4.
7. देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु
— परे ऽव्यये सर्व एकीभवन्ति
Mahânâr. 1. 8. सर्वे निमेषा जज्ञिरे
2. 7. परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च
4. 1. सर्वं हरतु मे पापम्
7. त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्
5. 9. एष सर्वस्य भूतस्य . . गोप्ता
7. 4. सर्वं पाहि शतक्रतो
11. 6. अन्तर्बहिश्च तत्सर्वम् Vâsu. 3.
9. तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम्
13. 2. सर्वो वै रुद्रः
— सर्वो ह्येष रुद्रः
14. 1. आपो वा इदं सर्वम्
— सर्वा देवता आपः
2. सर्वं पुनन्तु मामापः Prâṇâg. 1.

Mahânâr. 15. 1. सर्वमसि सर्वायुः
16. 3. ईशः सर्वस्य जगतः
17. 3. सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः
21. 2. दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसन्ति
— धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतम्
22. 1. सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्
— तपसि सर्वं प्रतिष्ठितम्
— दमे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— शमे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— दाने सर्वं प्रतिष्ठितम्
— धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्
23. 1. यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— मानसे सर्वं प्रतिष्ठितम्
— तस्मादन्नं ददन्त्सर्वाण्येतानि ददाति
— येन सर्वमिदं प्रोतं..सर्वैः सर्वमिदं जगत्

Praśna. 1. 1. एष ह वै तत्सर्वं वक्ष्यतीति
2. सर्वं ह वो वक्ष्यामः
5. रयिर्वा एतत्सर्वम्
6. यत्सर्वं प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु संनिधत्ते
2. 4. इतरे सर्व एवोत्क्रामन्ते.. सर्व एव प्रातिष्ठन्ते
— सर्वा एवोत्क्रामन्ते..सर्वा एव प्रातिष्ठन्ते
6. प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्
4. 1. कस्मिन्नु सर्वे सम्प्रतिष्ठिताः
2. सर्वाः एकीभवन्ति
— तत्सर्वं..एकीभवति
5. सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति
7. सर्वं पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते
10. स सर्वज्ञः सर्वो भवति
11. विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वैः
— स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेश

Kaivalya. 9. स एव सर्वं यद्भूतं यच्च भ
19. मयि सर्वं प्रतिष्ठितम्
— मयि सर्वं लयं याति

Mâṇḍû. 1. ओमित्येतदक्षरमिदं स
Nṛip. 2. 2; 4. 1; N
ut. 1; Râmot. 3.
— सर्वमोङ्कार एव Nṛip
1; Nṛisut. 1; Râmot
2. सर्वं ह्येतद्ब्रह्म Nṛip. 4
Nṛisut 1; Râmot. 3.
6. एष योनिः सर्वस्य Nṛip
1; Nṛisut. 1; Râmot
9. आप्नोति ह वै सर्वान्
मान्..य एवं वेद
11. मिनोति ह वा इदं सर्व
Nṛisut. 2.

Gauḍa. 1. 6. सर्वं जनयति प्राणः
27. सर्वस्य प्रणवो ह्यादिः
28. सर्वस्य हृदये स्थितम्
2. 2. प्रतिबुद्धश्च वै सर्वः 4.
14. कल्पिता एव ते सर्वे 1
28. सर्वं चेह तु सर्वदा
3. 1. प्रागुत्पत्तेरजं सर्वम्
5. न सर्वे सम्प्रयुज्यन्ते
10. संघाताः स्वप्नवत्सर्वे
26. निह्नुते यतः सर्वम्
43. दुःखं सर्वमनुस्मृत्य
— अजं सर्वमनुस्मृत्य
4. 10. सर्वे धर्माः स्वभावतः
33. सर्वे धर्मा मृषा स्वप्ने
36. यथा कायस्तथा सर्वम्
38. अजं सर्वमुदाहृतम्
57. संवृत्या जायते सर्वम्
— सद्भावेन ह्यजं सर्वम्
68. तथा जीवा अमी सर्वे
70.
77. अजातस्यैव सर्वस्य

ıda. 4. 91. सर्वे धर्मा अनादयः
92. सर्वे धर्माः सुनिश्चिताः
93. सर्वे धर्माः समाभिन्नाः
98. अलब्धावरणाः सर्वे धर्माः
99. सर्वे धर्मास्तथा ज्ञानम्

ip. 1. 1. तेन वै सर्वमिदमसृजत.. तस्मात् सर्वमिदमानुष्टुभमित्याचक्षते
2. सर्वैः सेवितं दिवम्
3. सर्वे वेदाः प्रणवादिकाः
4. इदं सर्वं विश्वानि भूतानि

2. 1. सर्वे मृत्युमजयन् सर्वे पाप्मानमतरन्
2. अनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टम् 3.
— अनुष्टुभा सर्वमुपसंहृतम् 3.
— सप्रणवं सर्वं पञ्चमं भवति
3. सर्वमिदमानुष्टुभं जानीयात्
4. सर्वाँल्लोकान् सर्वान्देवान् सर्वानात्मनःसर्वाणि भूतानि (ter).
— यस्मात् सर्वेषां भूतानां नावीर्यतमः
— सर्वे लोकाः सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि भीत्या पलायन्ते
— यं सर्वे देवा नमन्ति

3. 1. माया..सर्वमिदं सृजति सर्वमिदं रक्षति सर्वमिदं संहरति
— सर्वं पाप्मानं दहति
— सर्वेषां वा एतद्भूतानामाकाशः परायणम्
— सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव जायन्ते

4. 2. तया सर्वमिदं व्याप्तम्
— गायत्री वा इदं सर्वम्

Nrip. 4. 3. यो वै नृसिंहः ..यच्च सर्वं तस्मै वै नमो नमः (32).

5. 1. मायया वा एतत् सर्वं वेष्टितम्
2. सर्वेषां मन्त्राणामुपदेष्टा भवति
4. स सर्वं तरति Râmot. 2.
5. स सर्वान्देवान् स्तंभयति
— स सर्वान् ग्रहान् स्तंभयति
7. स सर्वानाकर्षयति
8. स सर्वैः क्रतुभिर्यजते
9. स सर्वमधीते

Nrisut. 1. तस्मिन्निदं सर्वं..आरोप्य
2. सर्वस्य द्रष्टा
— सर्वस्मादस्मादन्यो विलक्षणः
— सर्वस्य साक्षी
— अस्मात् सर्वस्मात् प्रियतमः
— अस्मात् सर्वस्मात् पुरतः सुविभातम्
— आप्नोति ह वा इदं सर्वं ..य एवं वेद
— यथेदं सर्वमन्तकाले कालाग्निसूर्यो स्त्रैः
— अस्य सर्वस्य स्वात्मानं ददाति
— यदि सर्वमिदं दर्शयतीदं सर्वं स्वात्मानं करोति
— नामरूपात्मकं हीदं सर्वम्
— अविकल्परूपं हीदं सर्वम्
3. भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा (4 times).
— इहेदं सर्वं दृष्ट्वा (सृष्ट्वा 2 MSS.)
4. असौ हि..सर्वमस्ति
5. नहीदं सर्वमेष हि व्याप्ततमः

Nṛisut. 5. इदं सर्वं यदयमात्मा मायामात्रम्
— पुरतो ऽस्मात् सर्वस्मात् सुविभातम् 9.
6. सर्वस्य पुरतः सुविभातम्
7. एवमेवेदं सर्वम्
— सर्वं ह्ययमात्मा
— न हीदं सर्वं निरात्मकमात्मैवेदं सर्वम्
— ब्रह्मैवेदं सर्वं सच्चिदानन्दरूपम्
— सच्चिदानन्दरूपमिदं सर्वम्
— सद्धीदं सर्वं..चिद्धीदं सर्वम्
— सर्वमन्यदपि
— ब्रह्म ह वा इदं सर्वम्
— स यदैतत्सर्वमुपेक्षते तदैतत्सर्वमस्मिन् प्रविशति
— एतत्सर्वमस्मादेवोत्तिष्ठति
— स एतत् सर्वं निरूह्य
8. अस्मिन्निदं हि सर्वम्
— अयं हि सर्वमेवौतः
— वागेवेदं सर्वम्
— चिन्मयमिदं सर्वम्
— एष ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानमनुजानाति
— नहीदं सर्वं स्वत आत्मवत्
— वागेवेदं सर्वमनुजानाति
— चिद्धीदं सर्वं निरात्मकमात्मसात्करोति
— अयं ह्यस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातः
— आत्मा हीदं सर्वं सदेव
9. एषैव सर्वम्
— तथाहि प्राशैः सैषाविद्या जगत्सर्वम्
— सर्वं सर्वमयं सर्वे जीवाः सर्वमयाः

Nṛisut. 9. सत्तामात्रं हीदं सर्वम्
— अन्यदपि सर्वं सर्वगं स
— न हीदं सर्वं कदाचित्
— एतद्धीदं सर्वं साधयति

Brahmav. 12. सर्वं व्याप्यैव तिष्ठति
13. योज्यः शान्तये सर्वमिच्छ

Kshur. 4. पूरयेत्सर्वमात्मानम्
23. सर्वाणि कर्माणि..दग

Chûl. 1. सर्वः पश्यन्न पश्यति
17. यस्मिन् सर्वमिदं प्रोतम्

Śiras. 1. अहमेव सर्वं व्योममेव सर्वे समाः (so Nârâya and some MSS. of t text).
— सर्वांश्च वेदान् साङ्गान
2. यो वै रुद्रः..यच्च सर्व
3. सर्वमसर्वं विश्वमविश्वम्
— सूक्ष्मः पुरुषः सर्वम्
— हृदिस्था देवताः सर्वाः Brahma. 2.
4. सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृशा
— सर्वान् प्राणान् संभक्ष्य
— तेषां सर्वेषामिह सङ्गतिः
— यः सर्वान्देवानीशते
— सर्वान् भावान् परित्यज्य
5. एको ह देवः प्रदिशो s सर्वाः
— सं च विचरति सर्वम्
— सर्वं ह वा इदं भस्म
6. यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं Brahma. 2.
7. स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति Mahâ. 4; Kâlâg. 2;
— स सर्वैर्वेदैरनुध्यातो भव Mahâ. 4.
— स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति Mahâ. 4; Kâlâg. 2 Vâsu. 4.

s. 7. तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति Mahâ. 4.
hâ. 1. स एष सर्वान् प्राणान्.. उत्क्रामयति
2. प्रणवः सर्वान् प्राणान् प्रणामयति
— सर्वेभ्यो दुःखभयेभ्यः सन्तारयति
— तारणात्तानि सर्वाणीति विष्णुः सर्वान् जयति
— ईशा वा सर्वमिदं प्रयुक्तम्
— सर्वाणि चेन्द्रियाणि सहभूतानि
— करणं सर्वमैश्वर्यं सम्पन्नम्
— सर्वज्ञानयोगध्यानानाम्
— सर्वमन्यत्परित्यज्य
rbha. 3. सर्वलक्षणज्ञानसम्पूर्णः
ahà. 2. सर्वाणि छन्दांसि तान्यङ्गेष्वाश्रितानि
rahma. 1. प्राणदेवतास्ताः सर्वा नाड्यः
2. तेन सर्वमिदं प्रोतम्
rânâg. 1. सर्वं..अभयं कृणोतु
— सर्वाभिरुदाने
2. विश्वं तु त्वाहुतयः सर्वाः
— सर्वेषामेव सूनुर्भवति
4. सर्वा ह्यस्मिन् देवताः
6. यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मम्
ta. 35. व्यानः सर्वेषु चाङ्गेषु
ma. 8. एवं सर्वाणि भूतानि मणिसूत्रमिवात्मनि
11. सर्वं च परमं शून्यम्
t. 6. स्थिताः सर्वे त्रयाक्षरे
7. तेन सर्वमिदं प्राप्तम्
12. एवं सर्वेषु द्वारेषु
a. 1. अभ्युदय..इदममुं च सर्वम्

Nyâsa. 1. सर्वमभिजित्य सर्वाश्रियं दधतु (another reading is सर्वमभिजन्युः)
3. सर्वं तज्जयेद्यतिः Katha-śru. 4.
Kathaśru. 1. सर्वांश्च पूर्ववद्गृणीत्वा
— सर्वैः पात्रैः समारोप्य
— सर्वान् सर्वेषु समारोपयेत्
— त्वं सर्वमित्यनुमन्त्रयेत्
Piṇḍa. 1. देवता ऋषयः सर्वे
Sarvop. 3. सर्वप्राणिबुद्धिषु
— सर्वप्राणिबुद्धिस्थः
— सर्वोपाधिविनिर्मुक्तः
Haṁsa. 1. सर्वेषु देहेषु व्याप्तो वर्त्तते
2. एवं सर्वं हंसवशात् (bis).
Parama. 2. सर्वान् कामान् परित्यज्य
3. सर्वे कामा मनोगता व्यावर्त्तन्ते (सर्वान् कामानात्मनो गतान् व्यावर्त्तेरन् MSS.)
— सर्वेषामिन्द्रियाणां गतिरुपरमते
Aruṇeya. 2. सर्वेषु वेदेष्वारण्यकमावर्त्तयेत्
4. मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते
Nâr. 1. नारायणात्..सर्वा देवताः
— नारायणात्..सर्वे ऋषयः सर्वाणि छंदांसि
— सर्वाणि च भूतानि नारायणादेव
2. नारायण एवेदं सर्वम्
3. सर्वेभ्यो ऽघेभ्यो विमुक्तो भवति स सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वांश्च लोकानाप्नोति
4. सर्वमायुरप्येति
Kâlâg. 2. तेन सर्वे देवा ध्याता भवन्ति

Jâbâla. 1. सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् (ter); Râmot. 1 (ter).
2. सर्वानिन्द्रियकृतान् दोषान् वारयति Râmot. 4.
— सर्वानिन्द्रियकृतान्पापान्ना-शयति Râmot. 4.
4. आपो वै सर्वा देवताः
— सर्वाभ्यो देवताभ्यो जुहोमि
6. एतत् सर्वं भूः स्वाहेत्यप्सु परित्यज्य

Vâsu. 2. एते सर्वे प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्र-त्रयात्मकाः
3. यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वम्
— ब्राह्मणानां तु सर्वेषाम्
4. सर्वमहापातकेभ्यः
— सर्वैर्यज्ञैर्याजी भवति
— सर्वैर्देवैः पूज्यो भवति

Gopî. 5. सर्वान् वेदान्..ब्रह्मलोके स्थापयामास

Krish. 1. ते होचुस्तं सुराः सर्वे
4. मोदितास्ते सुराः सर्वे
12. दुर्जया सा सुरैः सर्वैः
27. भूमावुत्तारितं सर्वम्

Skanda. 3. व्यतिरिक्तं जडं सर्वम्

Râmap. 20. सर्वेषां साधकानाम्
23. सर्वेषामेव मन्त्राणाम्
27. सर्वालंकृतया त्विता
38. आहूय शंसतां सर्वम्
60. तत्सर्वं प्रणवाभ्याम्
92. मोक्षमाप्नोति सर्वः

Râmot. 3. सर्वदेहिनाम्
4. सर्वेषां मुक्तिसिद्धये
5. ये सर्वे वेदाः सांगाः (6).

Mukti. 1. सर्वेषां कैवल्यमुक्तिः
2. सर्ववासनाक्षयात्
2. 60. भ्रान्तं पश्यति..सर्वम्

Gîtâ. 1. 6. सर्व एव महारथाः

Gîtâ. 1. 9. सर्वे युद्धविशारदाः
11. अयनेषु च सर्वेषु
— भवन्तः सर्व एव हि
25. सर्वेषां च महीक्षिताम्
27. सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
2. 12. सर्वे वयमतः परम्
17. येन सर्वमिदं ततम् 8. 22; 18. 46.
30. देहे सर्वस्य भारत
46. तावान्सर्वेषु वेदेषु
54. सर्वान्पार्थ मनोगतान्
61. तानि सर्वाणि संयम्य
70. तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति
71. विहाय कामान्यः सर्वा
3. 5. कार्यते ह्यवशः कर्म स
30. मयि सर्वाणि कर्माणि न्यस्य
4. 5. तान्यहं वेद सर्वाणि
19. यस्य सर्वे समारम्भाः
27. सर्वाणीन्द्रियकर्माणि
30. सर्वे ऽप्येते यज्ञविदः
32. कर्मजान्विद्धि तान्सर्वान्
33. सर्वं कर्माखिलं पार्थ
36. सर्वेभ्यः पापकृत्तमः
— सर्वं ज्ञानप्लवेनैव
6. 4. सर्वसंकल्पसन्न्यासी
24. त्यक्त्वा सर्वानशेषतः
30. सर्वं च मयि पश्यति
47. योगिनामपि सर्वेषाम्
7. 6. एतद्योनीनि भूतानि सर्वा
7. मयि सर्वमिदं प्रोतम्
13. एभिः सर्वमिदं जगत्
18. उदाराः सर्व एवैते
19. वासुदेवः सर्वमिति
7. तस्मात्सर्वेषु कालेषु
9. सर्वस्य धातारम्
18. अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः

8\. 20. सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु
27\. तस्मात्सर्वेषु कालेषु
28\. अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
9\. 4. मयाततमिदं सर्वम्
6\. तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानि
10\. 8. अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते
13\. आहुस्त्वामृषयः सर्वे
14\. सर्वमेतदृतं मन्ये
11\. 15. सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्
— ऋषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्
20\. व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः
22\. वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे
26\. सर्वे सहैवावनिपालसंघैः
32\. ऋते ऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
36\. सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धिसंघाः
40\. नमो ऽस्तु ते सर्वत एव सर्व
— सर्वं समाप्नोषि ततो ऽसि सर्वः
12\. 6. ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य
11\. सर्वकर्मफलत्यागम् 18. 2.
13\. 17. हृदि सर्वस्य धिष्ठितम्
27\. समं सर्वेषु भूतेषु
14\. 1. यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे
15\. 18. पुष्णामि चौषधीः सर्वाः
15\. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः
— वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः

Gîtâ. 15. 16. क्षरः सर्वाणि भूतानि
17\. 3. सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा
7\. आहारस्त्वपि सर्वस्य
18\. 21. वेत्ति सर्वेषु भूतेषु
54\. समः सर्वेषु भूतेषु
64\. सर्वगुह्यतमं भूयः

2. सर्व (=Śiva.)

Nîla. 22. सर्वेण नीलशिखण्डेन
23\. सर्व नीलशिखण्ड वीर
24\. नमो भवाय नमः सर्वाय

सर्वसह

Âśrama. 4. सर्वसहाः सर्वसमाः

सर्वकरण

Śikhâ. 2. सर्वकरणानि सम्प्रतिष्ठाप्य ध्यानात्

1. सर्वकर्मन्

Chhâ. 3. 14. 2. सर्वकर्मा सर्वकामः 4.

2. सर्वकर्मन्

Parama. 1. सर्वकर्माणि सन्न्यस्य
Gîtâ. 3. 26. जोषयेत्सर्वकर्माणि
4\. 37. ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते
5\. 13. सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्य
18\. 13. सिद्धये सर्वकर्मणाम्
56\. सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणः
57\. चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य

1. सर्वकाम

Chhâ. 3. 14. 2. सर्वकर्मा सर्वकामः 4.

2. सर्वकाम

Gîtâ. 6. 18. निःस्पृहः सर्वकामेभ्यः

सर्वकामदुघ

Chûl. 5. सर्वकामदुघा विभोः

सर्वकाममय

Maitri. 6. 30. स हि सर्वकाममयः पुरुषः

सर्वकामार्थद

Râmap. 94. इमा ऋचः सर्वकामार्थदाश्च

सर्वकिल्बिष

Gîtâ. 3. 13. मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः

सर्वक्षित्

Maitri. 6. 35. नमो ब्रह्मणे सर्वक्षिते

सर्वक्षेत्र

Sarvop. 3. मणिगणसूत्रमिव सर्वक्षेत्रेष्वनुस्यूतत्वेन

Gîtâ. 13. 2. सर्वक्षेत्रेषु भारत

सर्वग

Śwet. 6. 17. ज्ञः सर्वगो भुवनस्यास्य गोप्ता

Muṇḍ.3. 2. 5. ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीराः

Nṛip. 2. 4. सर्वगः सर्वतस्तिष्ठति

Nṛisut. 9. सर्वगो ह्येष ईश्वरः

— अन्यदपि सर्वं सर्वगं सर्वम्

सर्वगत

Śwet. 3. 11. तस्मात् सर्वगतः शिवः

21. सर्वात्मानं सर्वगतम्

Muṇḍ.1. 1. 6. नित्यं विभुं सर्वगतम्

Nṛisut. 5. एष हीश्वरो ऽतः सर्वगतः

Mukti. 2. 49. सा हि सर्वगता संवित्

73. अलेपकं सर्वगतं यदद्वयम्

75. स्वयम्प्रभः सर्वगतो ऽहमव्ययः

Gîtâ. 2. 24. नित्यः सर्वगतः स्थाणुः

3. 15. तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म

13. 32. यथा सर्वगतं ..आकाशम्

सर्वगन्ध

Chhâ. 3. 14. 2. सर्वगन्धः सर्वरसः 4.

सर्वगुणसम्पन्न

Maitri. 6. 29. सर्वगुणसम्पन्नाय दद्यात्

सर्वग्रास

Nṛisut. 5. सर्वग्रासं सर्वप्रेमास्पदम्

सर्वचिन्तासमुत्थित

Gauḍa. 3. 37. सर्वाभिलापविगतः सर्वचिन्तासमुत्थितः

सर्वजन्तुप्रकाशिन्

Kṛish. 26. प्रिया बुद्धिः सर्वजन्तुप्रकाशिनी

सर्वजित्

Kaush. 2. 7. सर्वजितः कौषीतकेः

— सर्वजिद्ध स्म कौषीत

सर्वजीव

Kaṭhaśru. 4. स्वस्ति सर्वजीवेभ्यः

सर्वज्ञ

Maitri. 7. 1. योगीश्वरः सर्वज्ञः

Muṇḍ.1. 1. 9. यः सर्वज्ञः सर्ववित् 2. 7.

Praśna. 4. 10. स सर्वज्ञः सर्वो भवति 4. 11. स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेश

Mâṇḍû. 6. एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञः Nṛip. 4. 1; Nṛisut. Râmot. 3.

Gauḍa. 3. 36. सकृद्विभातं सर्वज्ञम्

47. अजमजेन ज्ञेयेन सर्वज्ञं

Nṛisut. 5. एतदेव ब्रह्मापि सर्वज्ञम्

9. सर्वज्ञो ऽनन्तो ऽभिन्नः

Nyâsa. 1. स सर्वज्ञः सर्ववित्

सर्वज्ञता, °त्व

Maitri. 6. 38. सत्यकामसर्वज्ञत्वसंयुक्त

Gauḍa. 4. 85. प्राप्य सर्वज्ञतां कृत्स्नाम्

89. सर्वज्ञता हि सर्वत्र भवतीह

सर्वज्ञान

Brahmav. 1. ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञानम्

;aśi. 1. सर्वज्ञानेषु चोत्तमाम्
i. 3. 32. सर्वज्ञानविमूढांस्तान्

सर्वतःपाणिपाद

et. 3. 16. सर्वतःपाणिपादं तत् Gîtâ. 13. 13.

सर्वतःश्रुतिमन्त्

et. 3. 16. सर्वतःश्रुतिमल्लोके Gîtâ. 13. 13.

सर्वतत्त्व

et. 2. 15. सर्वतत्त्वैर्विशुद्धम्

सर्वतस्

hâ. 3. 13. 7. सर्वतः पृष्ठेषु
4. 1. 1. स ह सर्वत आवसथान् मापयाञ्चक्रे सर्वत एव मे ऽत्स्यन्तीति
ih. 6. 4. 23. यथा वायुः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः
it. 1. 4. 3. ब्रह्मचारिणः. . आयन्तु सर्वतः
tha. 2. 21. शयानो याति सर्वतः
aitri. 6. 17. सर्वतो ऽनन्तः
und. 3. 2. 5. ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य
ahânâr. 17. 3. सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः
rip. 2. 4. सर्वतः पश्यति सर्वतः शृणोति सर्वतो गच्छति सर्वत आदत्ते. . सर्वतस्तिष्ठति
5. 1. पत्रैर्वा एतत् सर्वतः परिक्रामति
ukti. 2. 74. पुरस्तिरश्चोर्ध्वमधश्च सर्वतः
îtâ. 2. 46. सर्वतः सम्प्लुतोदके
11. 16. पश्यामि त्वां सर्वतो ऽनन्तरूपम्
17. तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्
40. नमो ऽस्तु ते सर्वत एव सर्व

सर्वतोक्षिशिरोमुख

Swet. 3. 16. सर्वतःपाणिपादं तत् सर्वतोक्षिशिरोमुखम् Gîtâ. 13. 13.

सर्वतोमुख

Swet. 2. 16. प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः Siras. 5.
Mahânâr. 2. 1. प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठति सर्वतोमुखः (so Nârâyaṇa; other MSS. विश्वतोमुखः)
Nṛip. 1. 5. तं स द्वितीयस्यार्द्धान्त्यम्
6. र्वतो द्वितीयान्तार्द्धस्याद्यम्
7. मुखं द्वितीयस्यान्त्यम्
2. 3. सर्वतोमुखं पञ्चमं (स्थानं जानीयात्)
4. कस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति
— नमामि तमहं सर्वतोमुखम्
— तस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति
Nṛisut. 4. एष एव सर्वतोमुखः
5. एष एव सर्वतोमुख एष हि व्याप्ततमः
— एष एव सर्वतोमुख एष ह्येवोत्कृष्टः
— एतदेव सर्वतोमुखमेतद्धि महाविभूति
6. सर्वतोमुखमसर्वतोमुखं . . बुबुधिरे

सर्वतोमुखत्व

Nṛisut. 7. ज्वलत्वात् सर्वतोमुखत्वात्

सर्वत्र

Gauḍa. 4. 89. सर्वज्ञता हि सर्वत्र
Nṛisut. 4. एष उ एव नू एष हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा

Nrisut. 4. असौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा
9. अविकारो ह्युपलब्धा सर्वत्र
— सर्वत्र ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी
— आत्मन एव..सर्वत्र योनित्वम्
Dhyâna. 10. सर्वत्रात्मा व्यवस्थितः
Yogaśi. 3. मनः सर्वत्र संयम्य
Parama. 3. सर्वत्र शुभाशुभयोरनभिस्नेहः
Gîtâ. 2. 57. यः सर्वत्रानभिस्नेहः
6. 29. सर्वत्र समदर्शनः
30. यो मां पश्यति सर्वत्र
32. आत्मौपम्येन सर्वत्र
12. 4. सर्वत्र समबुद्धयः
13. 28. समं पश्यन् हि सर्वत्र
18. 49. असक्तबुद्धिः सर्वत्र

सर्वत्रग

Gîtâ. 9. 6. वायुः सर्वत्रगो महान्
12. 3. सर्वत्रगमचिन्त्यं च

सर्वत्रावस्थित

Kathaśru. 1. नीरैः सर्वत्रावस्थितैः
Haṁsa. 2. सर्वत्रावस्थितः स्वयंज्योतिः
Gîtâ. 13. 32. सर्वत्रावस्थितो देहे

सर्वथा

Gauḍa. 4. 19. एवं हि सर्वथा बुद्धैः
Gîtâ. 6. 31. सर्वथा वर्तमानो ऽपि
13. 23.

सर्वदा

Chhâ. 2. 9. 1. सर्वदा समस्तेन साम
Bṛih. 1. 5. 1. अद्यमानानि सर्वदा 2.
Tait. 1. 4. 2. अन्नपाने च सर्वदा
Kaivalya. 24. सर्वदा सकृद्वा जपेत्

Gauḍa. 2. 28. सर्वं चेह तु सर्वदा
Nṛip. 1. 3. तस्मात् सर्वदा नाचां
2. 4. सर्वदा भद्रं ददाति
Nṛisut. 2. सर्वदा ह्येतद्रहितः Râ
3.
4. सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा (
Haṁsa. 1. त्रिमात्रोऽहमित्येव सर्वं ध्यायन्
Gopî. 5. सर्वदैव चतुर्वर्गफलप्रद

सर्वदासंवित्ति

Nṛisut. 9. अद्वयः सर्वदासंवित्तिः

सर्वदुःख

Gauḍa. 1. 10. निवृत्तेः सर्वदुःखानाम्
Gîtâ. 2. 65. प्रसादे सर्वदुःखानां हानि

सर्वदुर्ग

Gîtâ. 18. 58. मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि..ता्यसि

सर्वदृश्

Gauḍa. 1. 12. तुर्यं तत्सर्वदृक् सदा
4. 84. येन दृष्टः स सर्वदृक्

सर्वदेवत्य

Bṛih. 1. 2. 7. सर्वदेवत्यं प्रोक्षितं प्राजा त्यमालभन्ते
Śiras. 5. सर्वदेवत्याव्यक्तीभूता (on MS. has दै for दे)

सर्वदेवमयाम्बुज

Dhyâna. 14. कदलीपुष्पसङ्काशं सर्वदेवमयांबुजम् (°यात्मकं, °या त्मजं and °वामुयात् a variants).

सर्वदेहिन्

Gîtâ. 14. 8. मोहनं सर्वदेहिनाम्

सर्वदोषविवर्जित

Amṛita. 17. भूमिभागे .. सर्वदोषविवर्जिते

सर्वद्रष्टृ

sut. 5. सर्वद्रष्टारं सर्वसाक्षिणम्

सर्वद्वार

ıur. 4. सर्वद्वारान् निरुध्य च (one MS. reads सर्वद्वाराणि रुध्य च)

i. 8. 12. सर्वद्वाराणि संयम्य
14. 11. सर्वद्वारेषु देहे ऽस्मिन्

सर्वधर्म

da. 4. 60. नाजेषु सर्वधर्मेषु
i. 18. 66. सर्वधर्मान्परित्यज्य

सर्वधर्मज्ञ

ısa. 1. भगवन् सर्वधर्मज्ञ

सर्वधातम

â. 5. 2. 7. श्रेष्ठं सर्वधातममित्याचामति

सर्वपाप

'alya. 1. अचिरात् सर्वपापं व्यपोह्य
ina. 1. सर्वपापैः प्रमुच्यते (one MS. omits); Yogat. 1; Gîtâ. 10. 3.
18. 66. अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि

सर्वपाश

1. 8. ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः 2. 15; 4. 16; 5. 13; 6. 13.
11. सर्वपाशापहानिः

सर्वपूत

5. 3. स सर्वपूतो भवति Siras. 7; Mahâ. 4.

सर्वप्रायश्चित्तीय

g. 1. एकां सर्वप्रायश्चित्तीये (जुहोति).

सर्वप्रेमास्पद

Nrisut. 5. सर्वग्रासं सर्वप्रेमास्पदम् (Nârâyaṇa reads सर्वप्रियमास्पदम्)

सर्वबन्ध

Kaivalya. 17. सर्वबन्धैः प्रमुच्यते

सर्वभाव

Maitri. 6. 25. सर्वभावपरित्यागः
Gauḍa. 1. 6. प्रभवः सर्वभावानाम्
10. अद्वैतः सर्वभावानाम्
2. 1. वैतथ्यं सर्वभावानाम् (भूतानाम् MSS.).
Gîtâ. 15. 19. स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन
18. 62. तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन

सर्वभुज्

Maitri. 7. 1. सर्वभुक् सर्वस्येशानः

सर्वभूत

Swet. 3. 7. यथानिकायं सर्वभूतेषु गूढम्
4. 15. विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः
16. ज्ञात्वा शिवं सर्वभूतेषु गूढम्
6. 11. एको देवः सर्वभूतेषु गूढः Brahma. 3.
Maitri. 6. 2. सर्वभूतान्यन्नमात्ति
8. सर्वभूतेभ्यो ऽभयं दत्त्वा
Muṇḍ. 3. 1. 4. प्राणो ह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति
Mahânâr. 4. 8. ईश्वरीं सर्वभूतानाम्
13. 7. तेषां सर्वभूतानां माता
17. 5. ईश्वरः सर्वभूतानाम् Nṛip. 1. 6; Gîtâ. 18. 61.
19. 2. सर्वभूतेभ्यः स्वाहा
22. 1. लोके दातारं सर्वभूतान्युपजीवन्ति

Kaivalya. 10. सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि Gîtâ.6.29.

Gauḍa. 1. 22. सम्पूज्यः सर्वभूतानाम्
2. 1. वैतथ्यं सर्वभूतानाम् (the printed text has सर्वभावानाम्)

Brahmav. 12. वरदः सर्वभूतानाम्

Brahma. 3. सन्धिनी सर्वभूतानाम्

Prâṇâg. 2. अभयं सर्वभूतेभ्यः Aruṇeya. 4.

Kṛish. 21. कृपार्थे सर्वभूतानाम्

Gîtâ. 2. 69. या निशा सर्वभूतानाम्
3. 18. न चास्य सर्वभूतेषु
5. 7. सर्वभूतात्मभूतात्मा
29. सुहृदं सर्वभूतानाम्
7. 9. जीवनं सर्वभूतेषु
10. बीजं मां सर्वभूतानाम्
27. सर्वभूतानि सम्मोहं..यान्ति
9. 4. मत्स्थानि सर्वभूतानि
7. सर्वभूतानि कौन्तेय
29. समोऽहं सर्वभूतेषु
10. 39. यच्चापि सर्वभूतानां बीजम्
11. 55. निर्वैरः सर्वभूतेषु
12. 13. अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्
14. 3. सम्भवः सर्वभूतानाम्
18. 20. सर्वभूतेषु येनैकं भावम्
61. भ्रामयन् सर्वभूतानि

सर्वभूतगुहाशय

Śwet. 3. 11. सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः

सर्वभूतदमन

Mahânâr. 17. 2. सर्वभूतदमनाय नमः

सर्वभूतस्थ

Kaivalya. 10. सर्वभूतस्थमात्मानम् Gîtâ. 6. 29.

Nâr. 5. सर्वभूतस्थमेकं नाराय

Atmapra. 1.

सर्वभूतस्थित

Gîtâ. 6. 31. सर्वभूतस्थितं यो माम्

सर्वभूतहित

Mukti. 1. सर्वभूतहिते रतम्

Gîtâ. 5. 25. सर्वभूतहिते रताः 12

सर्वभूताधिवास

Śwet. 6. 11. कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः Brahma. 3.

Brahmab. 22. सर्वभूताधिवासं च यद्भू वसत्यधि

सर्वभूतान्तरात्मन्

Kaṭha. 5. 9. एकस्तथा सर्वभूतान्तरा 10, 11.
12. एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा

Śwet. 6. 11. सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरा Brahma. 3.

Muṇḍ.2. 1. 4. एष सर्वभूतान्तरात्मा

Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..यः भूतान्तरात्मा (8).

सर्वभूताशयस्थित

Gîtâ. 10. 20. अहमात्मा..सर्वभूता स्थितः

सर्वभृत्

Gîtâ. 13. 14. असक्तं सर्वभृच्चैव

सर्वमय

Bṛih. 4. 4. 5. धर्ममयोऽधर्ममयः सर्व

Nṛisut. 3. सर्वमयश्चतुरात्मा
9. सर्वं सर्वमयं सर्वे जीव सर्वमयाः

सर्वमूर्द्धन्

Kṛish. 23. बिन्दुवत्सर्वमूर्द्धनि

सर्वयज्ञ

9. 24. अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता

सर्वयोगिन्

da. 3. 39. दुर्दर्शः सर्वयोगिभिः
40. मनसो निग्रहायत्तमभयं सर्वयोगिनाम्

सर्वयोनि

14. 4. सर्वयोनिषु कौन्तेय

सर्वरस

. 3. 14. 2. सर्वगन्धः सर्वरसः 4.

सर्वरूप

d.2. 1. 9. अस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः Mahânâr. 8. 5.

सर्वलोक

a. 5. 11. सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुः
5. 6. स सर्वलोकं जयति
5. सर्वलोकोत्कृष्टसौन्दर्यक्रीडाभोगाः
5. 29. सर्वलोकमहेश्वरम्

सर्वलोकिन्

ap. 93. सपत्नः सानुजः सर्वलोकी

सर्ववर्ण

. 1. चतुर्थी विद्युन्मती सर्ववर्णा

सर्ववाच्य

ap. 12. सर्ववाच्यस्य वाचकः

सर्वविद्

3. 7. 1. य आत्मवित्स सर्ववित्
6. 2. ज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः 16.
1.1. 1. 9. यः सर्वज्ञः सर्ववित् 2. 2. 7.

Brahma. 2. प्रतिबुद्धः सर्वविदिति
Nyâsa. 1. स सर्वज्ञः सर्ववित्
Gîtâ. 15. 19. स सर्वविद्भजति माम्

सर्वविद्या

Mund. 1. 1. 1. सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्
Mahânâr. 17. 5. ईशानः सर्वविद्यानाम् Nrip. 1. 6.

सर्ववृक्ष

Gîtâ. 10. 26. अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्

सर्ववेद

Hamsa. 1. विचार्य सर्ववेदेषु
Kâlâg. 1. सर्ववेदेषु वेदवादिभिरुक्तम्
Gîtâ. 7. 8. प्रणवः सर्ववेदेषु

सर्ववेदपारायण

Nâr. 5. सर्ववेदपारायणं पुण्यं लभते

सर्ववेदस

Katha. 1. 1. सर्ववेदसं ददौ
Mahânâr. 25. 1. सर्ववेदसं वा एतत्सत्रम्

सर्ववेदात्मन्

Râmot. 5. यः सर्ववेदात्मा (5).

सर्वव्यापिन्

Śwet. 1. 16. सर्वव्यापिनमात्मानम् Brahma. 3.
3. 11. सर्वव्यापी स भगवान्
6. 11. सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा Brahma. 3.
Gauda. 1. 28. सर्वव्यापिनमोङ्कारं मत्वा
Śiras. 3. यः प्रणवः स सर्वव्यापी यः सर्वव्यापी सोऽनन्तः
4. कस्मादुच्यते सर्वव्यापी — तस्मादुच्यते सर्वव्यापी

सर्वशत्रुनिबर्हण

Krish. 24. गदा च कालिका साक्षात्सर्वशत्रुनिबर्हणी

सर्वशरीर

Gauda. 3. 9. सर्वशरीरेषु आकाशेनाविलक्षणः

सर्वशस्

Chhâ. 7. 26. 2. सर्वमाप्नोति सर्वशः Maitri. 7. 11.

Mahânâr. 1. 8. काष्ठाश्चाहोरात्राश्च सर्वशः

Gîtâ. 1. 18. सर्वशः पृथिवीपते
2. 58. कूर्मो ऽङ्गानीव सर्वशः
68. निगृहीतानि सर्वशः
3. 23. मनुष्याःपार्थ सर्वशः 4. 11.
27. गुणैः कर्माणि सर्वशः
10. 2. महर्षीणां च सर्वशः
13. 29. क्रियमाणानि सर्वशः

सर्वशास्त्र

Mukti. 2. 65. अधीत्य . . सर्वशास्त्राण्यनेकशः

सर्वशास्त्रविशारद

Hamsa. 1. भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रविशारद (so all the MSS.).

सर्वश्री

Nyâsa. 1. सर्वमभिजित्य सर्वश्रियं दधतु

सर्वसंशय

Mund. 2. 2. 8. छिद्यन्ते सर्वसंशयाः

सर्वसंस्थ

Swet. 1. 6. सर्वाजीवे सर्वसंस्थे

सर्वसंहारसमर्थ

Nrisut. 2. सर्वसंहारसमर्थः परिभवासहः

सर्वसङ्गविवर्जित

Nâda. 19. सुस्थितो योगचारेण सर्वसङ्गविवर्जितः

सर्वसत्त्वसुख

Gauda. 4. 2. सर्वसत्त्वसुखो हितः

सर्वसम

Asrama. 4. सर्वसहाः सर्वसमाः

सर्वसम्पूर्ण

Garbha. 3. अष्टमे सर्वसम्पूर्णः

सर्वसाक्षिन्

Nrisut. 5. सर्वद्रष्टारं सर्वसाक्षिणम्
9. स्वप्रकाशे सर्वसाक्षिणि

सर्वसाधारण

Chûl. 7. सर्वसाधारणां दोग्ध्रीम्

सर्वसाम्य

Gauda. 3. 10. आधिक्ये सर्वसाम्ये वा

सर्वसार

Mukti. 1. 33. सर्वसारं निरालम्बम्
1. *vide* सरस्वतीरहस्य

सर्वसृज्

Maitri. 7. 1. सर्वसृक् सर्वस्यात्मा

सर्वस्मृत्

Maitri. 6. 35. नमो ब्रह्मणे . . सर्वस्मृते

सर्वस्व

Kathasru. 1. सर्वस्वं दद्यात्

सर्वहत्या

Nrip. 5. 4. स सर्वहत्यां तरति Râmot. 2.

सर्वहर

Gîtâ. 10. 34. मृत्युः सर्वहरश्चाहम्

सर्वाजीव

Swet. 1. 6. सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहन्ते

सर्वात्मक

[Nr]isut. 7. तस्मात्सर्वात्मकेनाकारेण सर्वात्मकमात्मानमन्विच्छेत्

[Râ]map. 82. इदं सर्वात्मकं यन्त्रम्

[M]ukti. 1. 23. मयि सर्वात्मके भावः

सर्वात्मन्

[Śv]et. 3. 21. सर्वात्मानं सर्वगतम्

[Ka]ivalya. 16. यत् परं ब्रह्म सर्वात्मा

[Nr]isut. 4. सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा (bis)

8. अयं हि सर्वात्मा

सर्वात्मैकत्वसार

[Br]ahma. 3. सर्वात्मैकत्वसारेण तद्ब्रह्मोपनिषत्परम् (only in one of six MSS.)

सर्वाधिपत्य

[Śv]et. 5. 3. सर्वाधिपत्यं कुरुते महात्मा

सर्वाधिष्ठान

[Nr]isut. 2. सर्वाधिष्ठानः सन्मात्रः Râmot. 3.

सर्वाननशिरोग्रीव

[Śv]et. 3. 11. सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः

सर्वानुग्राहकत्व

[Br]ahmab. 22. सर्वानुग्राहकत्वेन तदस्म्यहं वासुदेवः

सर्वानुभू

[Bri]h. 2. 5. 19. अयमात्मा ब्रह्म सर्वानुभूः

सर्वानुस्यूत

[...]u. 3. सर्वानुस्यूतमद्वैतम्

सर्वान्तर

[Bri]h. 3. 4. 1. य आत्मा सर्वान्तरस्तं मे व्याचक्ष्व 2; 3. 5. 1.

Brih. 3. 4. 1. एष त आत्मा सर्वान्तरः 2; 3. 5. 1.

— कतमो याज्ञवल्क्य सर्वान्तरः 2; 3. 5. 1.

— यः प्राणेन प्राणिति स त आत्मा सर्वान्तरः (similarly 3 times more).

Maitri. 7. 6. यः प्राज्ञो विधरणः सर्वान्तरः

Nrisut. 7. सर्वं ह्ययमात्मायं हि सर्वान्तरः

सर्वापर

Maitri. 6. 38. सर्वापरं धाम 7. 3.

सर्वापरत्व

Maitri. 6. 23. सर्वापरत्वाय तदेता उपासीत

सर्वाप्ति

Kaush. 3. 3. सैषा प्राणे सर्वाप्तिः

सर्वाभरणभूषित

Râmap. 48. धनुर्धरः प्रसन्नात्मा सर्वाभरणभूषितः

सर्वाभिधान

Nrisut. 7. तस्मादहमिति सर्वाभिधानम्

सर्वाभिलापविगत

Gauda. 3. 37. सर्वाभिलापविगतः सर्वचिन्तासमुत्थितः

सर्वायुष

Tait. 2. 3. 1. प्राणो हि भूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यते (bis.)

सर्वायुस्

Mahânâr. 15. 1. सर्वमसि सर्वायुः

सर्वारम्भ

Gîtâ. 18. 48. सर्वारम्भा हि दोषेण

सर्वारम्भपरित्यागिन्

Gîtâ. 12. 16. सर्वारम्भपरित्यागी 14. 25.

सर्वार्थ

Maitri. 6. 6. अक्षिण्यवस्थितो हि पुरुषः सर्वार्थेषु चरति

Gîtâ. 18. 32. सर्वार्थान्विपरीतांश्च

सर्वावन्त्

Bṛih. 4. 3. 9. अस्य लोकस्य सर्वावतः

सर्वावस्था

Nṛisut. 9. सर्वे जीवाः सर्वमयाः सर्वावस्थासु

सर्वाशिन्

Parama. 3. सर्वाशी ज्ञानवर्जितः

सर्वाश्चर्यमय

Gîtâ. 11. 11. सर्वाश्चर्यमयं देवम्

सर्वाहंमानिन्

Nṛisut. 9. नियन्तेश्वरः सर्वाहंमानी

सर्वेन्द्रिय

Chhâ. 8. 15. 1. आत्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्य

Katha. 1. 26. सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः

Muṇḍ. 2. 1. 3. मनः सर्वेन्द्रियाणि च Kaivalya 15; Nâr. 1.

Śwet. 3. 17. सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् Gîtâ. 13. 14.

Piṇḍa. 8. सर्वेन्द्रियसमाहृतिः

सर्वेश्वर

Bṛih. 4. 4. 22. एष सर्वेश्वर एष भूताधिपतिः

Mâṇḍû. 6. एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञः Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1; Râmot. 3.

Nṛisut. 3. ओङ्कारं सर्वेश्वरं द्वादशान्ते

Vâsu. 1. सर्वेश्वरं वासुदेवं पप्रच्छ

सर्वैश्वर्य

Nṛip. 1. 7. स सर्वैश्वर्यं ददाति

सर्वैषणाविनिर्मुक्त

Kshur. 25. सर्वैषणाविनिर्मुक्तश्छित्त्वा तन्तुम् (not in 5 MSS.)

सर्वोपनिषद्

Mukti. 1. 44. सर्वोपनिषदां मध्ये

सर्वोपनिषत्सार

Prâṇâg. 1. अथातः सर्वोपनिषत्सारं . . व्याख्यास्यामः

सर्वोपनिषद्विद्या

Maitri. 2. 3. इयं ब्रह्मविद्या सर्वोपनिषद्विद्या वा

सर्वौषध

Chhâ. 5. 2. 4. सर्वौषधस्य मन्थम्

Bṛih. 6. 3. 1. सर्वौषधं फलानीति संभृत्य

Tait. 2. 2. 1. तस्मात्सर्वौषधमुच्यते (bis).

सर्षप

Chhâ. 3. 14. 3. अणीयान् . . सर्षपाद्वा

1. सलिल *adj.*

Bṛih. 4. 3. 32. सलिल एको द्रष्टा द्वैतो भवति

Chûl. 13. पार्ष्णिः सलिल एव च (Nârâyaṇa, who says स लिलः सलिलवान् गंगा धरत्वात् The usual reading is सलिलमेव च)

2. सलिल

wet. 6. 15. स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः

rip. 1. 1. आपो ह वा इदमासन् सलिलमेव

सलोकता

hhâ. 2. 20. 2. देवतानां सलोकतां सार्ष्टितां सायुज्यं गच्छति

rih. 1. 3. 22. अश्नुते सास्नः सायुज्यं सलोकताम्

1. 5. 23. सायुज्यं सलोकतां जयति 5. 13. 1–4.

[ahânâr. 12. 3. ब्रह्मणः सायुज्यं सलोकतामाप्नोति

rip. 1. 7. ब्रह्मणः सायुज्यं सलोकतां यन्ति

सव

wet. 2. 2. देवस्य सवितुः सवे

सवन

hhâ. 2. 24. 1. रुद्राणां माध्यन्दिनं सवनम्

7. पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणात्

10. तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनं सवनं संप्रयच्छन्ति

3. 16. 2. इदं मे प्रातःसवनं माध्यन्दिनं सवनमनुसन्तनुत

3. चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यन्दिनं सवनम्

— त्रैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनम्

4. इदं मे माध्यन्दिनं सवनं तृतीयसवनमनुसन्तनुत

[aitri. 6. 7. सवनात्सविता

[ahânâr. 25. 1. यस्सायम्प्रातर्मध्यन्दिनं च तानि सवनानि

[âlâg. 2. द्वितीया रेखा सा.. माध्यन्दिनं सवनम्

सवस्तु

Gauḍa. 4. 87. सवस्तु सोपलम्भं च

सविकार

Gîtâ. 13. 6. सविकारमुदाहृतम्

सविज्ञान

Bṛih. 4. 4. 2. सविज्ञानो भवति सविज्ञानमेवान्ववक्रामति

Gîtâ. 7. 2. ज्ञानं ते ऽहं सविज्ञानम्

सविताख्य

Maitri. 6. 16. एष तत्स्थः सविताख्यः

सवितृ

Chhâ. 1. 12. 5. देवो वरुणो प्रजापतिः सविता

5. 2. 7. तत्सवितुर्वृणीमह इत्याचामति

Bṛih. 6. 3. 6. तत्सवितुर्वरेण्यं.. भर्गो देवस्य धीमहि Maitri. 6. 7.

6. 4. 19. देवाय सवित्रे सत्यप्रसवाय स्वाहा

Śwet. 2. 1. तत्वाय सविता धियः

2. देवस्य सवितुः सवे

3. सविता प्रसुवाति तान्

4. मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः

7. सवित्रा प्रसवेन जुषेत ब्रह्म पूर्व्यम्

4. 18. तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यम्

Maitri. 6. 7. तत्सवितुर्वरेण्यमित्यसौ वा आदित्यः सविता

— सविता वै देवस्ततो यो ऽस्य भर्गाख्यस्तं चिन्तयामि

— सवनात् सविता

8. एष हि खल्वात्मा.. सविता

Maitri. 6. 9. सवितुश्च रश्मयः पुनन्त्वन्नम्

34. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गः Mahânâr. 15. 2.

Mahânâr. 4. 12. तन्मे इन्द्रः..सविता च पुनन्तु

9. 5. सवितारं नृचक्षसम्

6. अथा नो देव सवितः 17. 7.

7. विश्वानि देव सवितर्दुरितानि 17. 7.

Nrip. 2. 4. सविता प्रसविता

Nrisut. 2. यथा तमः सविता

सविद्

Maitri. 6. 35. एतत् सवित् सत्यधर्मः — यो हैवंवित् स सवित्

सव्य

Kaush. 2. 11. इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहीति सव्ये (कर्णे जपति)

15. अथेतरः सव्यमन्वंसमभ्यवेक्षते

4. 2. सव्ये ऽक्षिणि सत्यस्य

18. सव्ये ऽक्षिणि पुरुषस्तमेवाहमुपासे

Maitri. 7. 11. अस्य जायेयं सव्ये चाक्षिण्यवस्थिता

Prâṇâg. 2. सव्ये पाणावपो गृहीत्वा

सव्यसाचिन्

Gîtâ. 11. 33. निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्

सव्यहस्त

Prâṇâg. 4. सव्यहस्त आज्यस्थाली

सव्याहृति

Amṛita. 10. सव्याहृतिं सप्रणवां गायत्रीम् (2 MSS. of the text, and 2 of Nârâyaṇa's Dîpikâ read सव्याहृतिं but see *Vishṇusmṛi* 55. 9).

सशर

Gîtâ. 1. 47. विसृज्य सशरं चापम्

सशरीर

Chhâ. 8. 12. 1. आत्तो वै सशरीरः प्रियाप्रियाभ्यां न वै सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति

सशाख

Nrip. 1. 2. चत्वारो वेदाः साङ्गाः सशाखाः

4. 3. यो वै नृसिंहः..ये वेदाः साङ्गाः सशाखास्तस्मै नमो नमः (13)

Râmot. 5. ये सर्वे वेदाः साङ्गाः सशाखाः (6)

सशान्ति

Mukti. 1. 29. तासां क्रमं सशान्तिं च शृणु

सशिख

Brahma. 2. सशिखं वपनं कृत्वा

Kaṭhaśru. 1. सशिखान् केशान्निष्कृत्य 2. 3.

ससपत्नज

Râmap. 93. *vide* सपत्नज

ससप्तद्वीप

Nrip. 1. 2. ससप्तद्वीपां वसुन्धराम्

ससागर

Nrip. 1. 2. ससागरां सपर्वतां..वसुन्धराम्

ससाधन

Nrisut. 6. लोकैषणायाश्च ससाधनेभ्यो व्युत्थाय

ससूक्ष्म

nap. 76. ससूक्ष्मा मृत्युरूपिणी

सस्थूण

h. 2. 2. 1. स प्रत्याधानं सस्थूणं सदामम्

सस्पृह

itri. 3. 2. लुप्यमानः सस्पृहो ऽयमः 6. 30.

सस्य

ha. 1. 6. सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः

सह्

ânâr. 6. 6. पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम

sa. 2. सन्न्यासं सहते र्च्चिमान्

5. 23. शक्नोतीहैव यः सोढुम्

11. 44. अर्हसि देव सोढुम्

सहज

da. 4. 9. सहजा अकृता च या

ma. 2. प्रजापतेर्यस्सहजं पुरस्तात्

18. 48. सहजं कर्म कौन्तेय

सहदेव

1. 16. नकुलः सहदेवश्च

सहभूत

â. 2. सर्वाणि चेन्द्रियाणि सहभूतानि

सहमाना

. 3. 15. 2. सहमाना नाम दक्षिणा

सहयज्ञ

3. 10. सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा

सहस्

ânâr. 15. 1. ओजो ऽसि सहो ऽसि बलमसि

सहसा

Gîtâ. 1. 13. सहसैवाभ्यहन्यन्त

सहस्र

Kaush. 4. 1. सहस्रं दद्म इत्येतस्यां वाचि

Chhâ. 4. 2. 3. सहस्रं गवाम् 4.

4. 4. 5. ता यदा सहस्रं संपेदुः

4. 5. 1. प्राणाः सोम्य सहस्रं स्मः

7. 26. 2. सहस्राणि च विंशतिः

Brih. 2. 1. 1. सहस्रमेतस्यां वाचि दद्मः

19. हिता नाम नाड्यो द्वासप्ततिः सहस्राणि

2. 5. 19. अयं वै दश च सहस्राणि

3. 1. 1. गवां सहस्रमवरुरोध

3. 9. 1. त्रयश्च त्री च सहस्रेति (bis)

4. 1. 2. हस्त्यृषभं सहस्रं ददामीति 3—7.

4. 3. 14. सो ऽहं भगवते सहस्रं ददामि 15, 16, 33; 4. 4. 7.

6. 4. 24. अस्मिन् सहस्रं पुष्यासम्

Maitri. 1. 2. अन्ते सहस्रस्य (so MS.).

Mahânâr. 4. 3. एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च

17. 6. आसहस्रात्पंक्तिं पुनन्ति 7. 8.

Praśna. 3. 6. प्रतिशाखानाडीसहस्राणि

Yogaśi. 10. जन्मान्तरसहस्रेषु

Brahmav. 12. द्वासप्ततिसहस्राणि Kshur. 17.

Amṛita. 33. सहस्राणि त्रयोदश

Haṁsa. 2. एकविंशति सहस्राणि

Gâruḍa. 3. सहस्रं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा

Gopî. 5. अग्निष्टोमसहस्राणि

Râmot. 4. मन्वन्तरसहस्रैस्तु

Mukti. 1. 3. विधिक्रियासहस्राणाम्

13. सहस्रसंख्यया जाताः

2. 36. *vide* शालिन्

Gîtâ. 7. 3. मनुष्याणां सहस्रेषु

सहस्रकिरण

Mahânâr. 3. 10. सहस्रकिरणाय धीमहि

सहस्रकृत्वस्

Gîtâ. 11. 39. नमो नमस्ते ऽस्तु सहस्रकृत्वः

सहस्रदृश्

Râmap. 56. *vide* अनिल

सहस्रधा

Kaush. 4. 19. तद्यथा सहस्रधा केशो विपाटितः

Brih. 4. 2. 3. यथा केशः सहस्रधा भिन्नः 4. 3. 20.

Nrisut. 8 शतधा सहस्रधा भिन्नः

सहस्रपद्

Śwet. 3. 14. सहस्राक्षः सहस्रपात्

Śiras. 6. सहस्रपादेकमूर्धा व्याप्तम्

सहस्रपरम

Mahânâr. 4. 1. सहस्रपरमा देवी

सहस्रबाहु

Gîtâ. 11. 46. सहस्रबाहो . . विश्वमूर्ते

सहस्रयुगपर्यन्त

Gîtâ. 8. 17. सहस्रयुगपर्यन्तमहः

सहस्ररश्मि

Maitri. 6. 8. सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः Praśna. 1. 8.

Prâṇâg. 2. सहस्ररश्मिभिः परिवृतः

सहस्रशस्

Muṇḍ. 2. 1. 1. सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः

Chûl. 19. एवं सहस्रशो देवं पर्यस्यन्तम्

Nîla. 9. रुद्रा दिक्षु श्रिताः सहस्रशः

Gîtâ. 11. 5. शतशो ऽथ सहस्रशः

सहस्रशाख

Tait. 1. 4. 3. तस्मिन्त्सहस्रशाखे

सहस्रशीर्ष, ॰र्षन्

Śwet. 3. 14. सहस्रशीर्षा पुरुषः

Mahânâr. 11. 1. सहस्रशीर्षं देवम् Mahâ. 3.

सहस्रान्त

Râmap. 9. सहस्रान्तास्तथा तासां

सहस्राक्ष

Śwet. 3. 14. सहस्राक्षः सहस्रपात्

Maitri. 6. 8. अपिहितः सहस्राक्षेण हिरण्मयेनाण्डेन

Mahânâr. 3. 1. सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि

Mahâ. 3. सहस्राक्षं विश्वशंभुवम्

Nîla. 11. सहस्राक्षाय वाजिने

14. अवतत्य धनुस्त्वं सहस्राक्ष

सहस्राक्षजित्

Râmap. 46. घटश्रोत्रसहस्राक्षजिद्भ्यां

सहस्राह्न

Nâda. 5. सहस्राह्नमिति चात्र (printed text has सहस्राक्ष

सहित

Nyâsa. 2. लोकाज्ञार्यया सहितः

Vâsu. 1. द्रव्यमंत्रस्थानादिसहित

— चन्दनं कुंकुमादिसहित

Gopî. 4. मायासहितब्रह्मसंभोगवशात्

Râmap. 25. प्रकृत्या सहितः श्यामः

Gîtâ. 9. 1. ज्ञानं विज्ञानसहितम्

सा

Chhâ. 1. 6. 1. इयमेव सा ऽग्निरमस्तत्

2. अन्तरिक्षमेव सा वायुरमस्तत्साम (similarly in 3, 4, 6.)

ā. 1. 7. 1. वागेव सा प्राणो ऽमस्तत्साम
2. चक्षुरेव सा &c.
3. श्रोत्रमेव सा &c.
4. यदेवैतदक्ष्णः शुक्लं भाः सैव सा &c.
3. 22. वाग्वै सामैष सा चामश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्
4. 20. अमो ऽहमस्मि सा त्वं सा त्वमस्यमो ऽहम्

सांसिद्धिक

4. 9. सांसिद्धिकी स्वाभाविकी

साकम्

4. साकं स एको भूतश्चरति

साक्षात्

4. 1. यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म 2; 3. 5. 1.
5. साक्षाद्विष्णुमयो भवेत्
11. गोपरूपो हरिः साक्षात्
24. गदा च कालिका साक्षात्
18. 75. कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्

साक्षाद्विधिमुख

2. 56. साक्षाद्विधिमुखो ऽसौ समाधिः

साक्षित्व

2. बीजत्वात् साक्षित्वाच्च (ter).

साक्षिन्

6. 11. साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च Brahma. 3.
6. 16. सर्वः कश्चित्प्रभुः साक्षी
ya. 18. देहो विलक्षणः साक्षी
2. चक्षुषः साक्षी श्रोत्रस्य साक्षी वाचः साक्षी

Nrisut. 2. मनसः साक्षी बुद्धेः साक्षी प्राणस्य साक्षी
— तमसः साक्षी सर्वस्य साक्षी
— स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिः (ter); 3 (4 times).
5. एष हि साक्ष्येष हीश्वरः
7. मनआदिसाक्षिणमन्विच्छेत्
9. एक एव साक्षी स्वप्रकाशः
— द्रष्टा द्रष्टुः साक्ष्यविक्रियः

Sarvop. 1. कर्त्ता जीवः क्षेत्रज्ञः साक्षी ..कथम्
3. स साक्षीत्युच्यते

Mukti. 1. 3. साक्षिणं निर्विकारिणम्

Gîtâ. 9. 18. गतिर्भर्त्ता प्रभुः साक्षी

साक्ष्यविशेष

Nrisut. 9. नाल्पः साक्ष्यविशेषो नान्यः

सागर

Chûl. 17. बुद्बुदाः सागरे यथा

Gîtâ. 10. 24. सरसामस्मि सागरः
12. 7. मृत्युसंसारसागरात्

सांकृतीपुत्र

Brih. 6. 5. 2. शौङ्गीपुत्रः साङ्कृतीपुत्रात्
— साङ्कृतीपुत्र आलंबायनीपुत्रात्

सांख्य

Śwet. 6. 13. सांख्ययोगाधिगम्यम्

Chûl. 14. पुरुषं निर्गुणं सांख्यम्

Garbha. 4. तत्सांख्यं योगमभ्यसेत्

Mukti. 1. न कर्मसांख्ययोगोपासनादिभिः

Gîtâ. 2. 39. एषा ते ऽभिहिता सांख्ये
3. 3. ज्ञानयोगेन सांख्यानाम्
5. 4. सांख्ययोगौ पृथक्
5. यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानम्

Gîtâ. 5. 5. एकं सांख्यं च योगं च
13. 24. अन्ये सांख्येन योगेन
18. 13. सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि

सांख्ययोग

Prâṇâg. 1. विनापि सांख्ययोगेन
Mukti. 1. 16. अन्ये तु सांख्ययोगेन

साङ्ग

Nṛip. 1. 2. चत्वारो वेदाः साङ्गाः सशाखाः
3. तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयात् 5, 6, 7
4. 3. यो वै नृसिंहः..ये वेदाः साङ्गाः सशाखास्तस्मै वै नमो नमः (13).
Śiras. 1. सर्वांश्च वेदान् साङ्गानपि
Râmot. 5. ये सर्वे वेदाः साङ्गाः सशाखाः (6)

साज्य

Jâbâla. 4. उद्धृत्य प्राश्नीयात् साज्यं हविरनामयम्

साञ्जीवीपुत्र

Bṛih. 6. 5. 2. प्राचीनयोगीपुत्रः साञ्जीवीपुत्रात्
— साञ्जीवीपुत्रः प्राश्नीपुत्रादासुरवासिनः
4. समानमा साञ्जीवीपुत्रात्
— साञ्जीवीपुत्रो माण्डूकायनेः

सात्त्व

Kṛish. 6. प्रोक्ता सात्त्वी च रुद्रस्य

सात्त्विक

Maitri. 5. 2. अस्य सात्त्विको ऽंशो ऽसौ ..विष्णुः
6. 38. सौरसौम्याग्नेयसात्त्विकानि मण्डलानि भित्त्वा

Gîtâ. 7. 12. ये चैव सात्त्विका भाव
14. 16. सात्त्विकं निर्मलं फल
17. 2. सात्त्विकी राजसी चैव
4. यजन्ते सात्त्विका देवा
11. इति मनः समाधाय सात्त्विकः
17. सात्त्विकं परिचक्षते
20 तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्
18. 9. स त्यागः सात्त्विको
20. तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विक
23. तत्सात्त्विकमुच्यते
26. कर्ता सात्त्विक उच्यते
30. बुद्धिः सा पार्थ सात्त्वि
33. धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी
37. तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्त

सात्त्विकप्रिय

Gîtâ. 17. 8. आहाराः सात्त्विकप्रियाः

सात्य

Bṛih. 2. 5. 12. अयमध्यात्मं सात्यः.. रुषः

सात्यकि

Gîtâ. 1. 17. सात्यकिश्चापराजितः

सादरम्

Mukti. 2. 33. पावने शृणु सादरम्

साध्

Gauḍa. 4. 20. न हि साध्यसमो हेतुः हेतौ साध्यस्य युज्यते
Nṛisut. 9. एतद्धीदं सर्वं साधयति
Râmap. 59. तदधः साध्यमालिखेत्
Mukti. 2. तत्पुरुषप्रयत्नसाध्यम्
— *vide* समाधि

साधक

Gauḍa. 2. 32. न बद्धो न च साधकः
Râmap. 20. सर्वेषां साधकानाम्
59. षडक्षरान्तं साधकं तथा

साधन

su. 1. मुक्तिसाधनं भवति
ikti. 1. साधनचतुष्टयसम्पन्नाः
2. 50. तत्साधनमथो ध्यानम्

साधर्म्य

â. 14. 2. मम साधर्म्यमागताः

साधान

ih. 2. 2. 1. शिशुं साधानं सप्रत्याधानम्

साधार

isnt. 3. अथ सकलः साधारः

साधारण

ih. 1. 5. 1. एकमस्य साधारणम् 2. 2. तत्साधारणमन्नं यदिदमद्यते
vop. 4. प्रमाणाप्रमाणसाधारणा
map. 23. एष साधारणः क्रमः

साधिभूताधिदैव

â. 7. 30. साधिभूताधिदैवं माम्

साधियज्ञ

â. 7. 30. साधियज्ञं च ये विदुः

साधिष्ठ

hâ. 4. 9. 3. आचार्याद्धैव विद्या विदिता साधिष्ठं प्रापयति

साधु

ash. 3. 8. न साधुना कर्मणा भूयान् Bṛih. 4. 4. 22.
— एष ह्येव साधु कर्म कारयति
â. 2. 1. 1. समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु यत् खलु साधु तत् सामेत्याचक्षते
2. तदुताप्याहुः साम्नैनमुपागादिति साधुनैनमुपागादित्येव

Chhâ. 2. 1. 3. अथोताप्याहुः साम नो बतेति यत्साधु भवति साधु बतेत्येव
4. स य एतदेवं विद्वान् साधु सामेत्युपास्ते ऽभ्याशो ह यदेनं साधवो धर्मा आ च गच्छेयुः
3. 19. 4. अभ्याशो ह यदेनं साधवो घोषा आ च गच्छेयुः
4. 1. 4. यत्किञ्च प्रजाः साधु कुर्वन्ति
7. 2. 1. साधु चासाधु च 7. 7. 1.
— न साधु नासाधु
Bṛih. 4. 4. 5. साधुकारी साधुर्भवति
5. 12. 1. किंस्विदेवैवं विदुषे साधु कुर्याम्
Tait. 2. 9. 1. किमहं साधु नाकरवम्
Katha. 2. 1. श्रेय आददानस्य साधु भवति
Mahânâr.23. 1. मानसेन मनसा साधु पश्यति
Mukti. 1. 7. साधु पृष्टं महाबाहो
44. साधुसंगतिरेव च
Gîtâ. 4. 8. परित्राणाय साधूनाम्
6. 9. साधुष्वपि च पापेषु
9. 30. साधुरेव स मन्तव्यः

साधुकारिन्

Bṛih. 4. 4. 5. साधुकारी साधुर्भवति

साधुप्रजावन्त्

Mahânâr.22. 1. लोके साधुप्रजावांस्तन्तुं तन्वानः

साधुभाव

Gîtâ. 17. 26. सद्भावे साधुभावे च

साधुयुवन्

Tait. 2. 8. 1. युवा स्यात्साधुयुवा

साधुवृत्त

Âśrama. 4. साधुवृत्तेषु ब्राह्मणकुलेषु

साध्य

Chhâ. 3. 10. 1. यत्पंचमममृतं तत्साध्या उपजीवन्ति
3. साध्यानामेवैको भूत्वा
4. साध्यानामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता

Muṇḍ. 2. 1. 7. साध्या मनुष्याः पशवो वयांसि

Maitri. 7. 4. वरुणः साध्या उत्तरत उयन्ति

Gîtâ. 11. 22. रुद्रादित्या वसवो ये च साध्याः

साध्यसम

Gauḍa. 4. 20. सदा साध्यसमो हि सः
— न हि साध्यसमो हेतुः

साध्वलंकृत

Chhâ. 8. 8. 2. साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ 3.
8. 9. 1. शरीरे साध्वलङ्कृते साध्वलङ्कृतो भवति 2.

सानन्त

Râmap. 78. स सानन्तो दीर्घयुतः

सानु

Mahânâr. 6. 1. पवित्रे अधि सानो अव्ये

सानुज

Râmap. 93. सपत्नः सानुजः सर्वलोकी

सान्निध्य

Râmot. 3. श्रीरामसान्निध्यवशात्

साफल्य

Mukti. 2. 8. तदाभ्यासस्य साफल्यम्

सामत्व

Bṛih. 1. 3. 22. इति तत्साम्नः सामत्वम्

सामन्

Kaush. 1. 5. बृहद्रथन्तरे सामानी पूर्वपादौ
— ऋचश्च सामानि च प्राची नातानानि
2. 6. तत् सामेत्युपासीत

Chhâ. 1. 1. 2. ऋचः साम रसः साम्न उद्गीथो रसः
4. कतमत्कतमत्साम
5. प्राणः साम
— वाक् च प्राणश्चर्क् च साम
1. 3. 4. यदृक् तत्साम तस्मादप्राणन्ननपानन् साम गायति
यत् साम स उद्गीथः
8. येन साम्ना स्तोष्यन्स्यात्तत्सामोपधावेत्
1. 4. 3. तानु.. पर्यपश्यदृचि साम्नि यजुषि ते नु वित्त्वोर्ध्वा ऋचः साम्नो यजुषः
4. एवं सामैवं यजुः
1. 6. 1. अग्निः साम
— तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढं साम तस्मादृच्यध्यूढं साम गीयते 2–5; 1. 7. 1–4.
— इयमेव सा अग्निरमस्तत्साम (similarly in 2-4)
2. वायुः साम
3. आदित्यः साम
4. चन्द्रमाः साम
5. यन्नीलं परःकृष्णं तत्साम 1. 7. 4.
6. यदेवैतदादित्यस्य शुक्लं भाः सैव सा अथ यन्नीलं परःकृष्णं तदमस्तत्साम

Chhâ. 1. 6. 8. तस्यर्क् च साम च गेष्णौ
1. 7. 1. प्राणः साम
— वागेव सा प्राणो ऽमस्तत्साम (similarly in 2, 3.)
2. आत्मा साम
3. मनः साम
— यदेतदक्ष्णः शुक्रं भाः सैव सा यन्नीलं परः कृष्णं तदमस्तत्साम
5. य एषो ऽन्तरक्षिणि पुरुषो दृश्यते सैवर्क्तत्साम
7. य एतदेवं विद्वान् साम गायति 9.
1. 8. 4. का साम्नो गतिः
5. स्वर्गं वयं लोकं सामाभिसंस्थापयामः स्वर्गसंस्तावं हि साम
6. अप्रतिष्ठितं वै किल ते साम
7. प्रतिष्ठां वयं लोकं सामाभिसंस्थापयामः प्रतिष्ठासंस्तावं हि साम
8. अन्तवद्वै किल ते साम
1. 13. 4. अन्नादो भवति य एतामेवं साम्नामुपनिषदं वेद
2. 1. 1. समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु यत् खलु साधु तत्सामेत्याचक्षते
2. तदुताप्याहुः साम्नैनमुपागादिति
3. अथोताप्याहुः साम नो वतेति
4. स य एतदेवं विद्वान् साधु सामेत्युपास्ते
2. 2. 1. पंचविधं सामोपासीत 3. 1; 4. 1; 5. 1; 6. 1.
3. पंचविधं सामोपास्ते 3. 2; 4. 2; 5. 2; 6. 2.

Chhâ. 2. 7. 1. पंचविधं परोवरीयः सामोपासीत
2. पंचविधं परोवरीयः सामोपास्ते
2. 8. 1. सप्तविधं सामोपासीत 2. 9. 1; 2. 10. 1.
3. सप्तविधं सामोपास्ते 2. 9. 8; 2. 10. 6.
2. 9. 1. सर्वदा समस्तेन साम मां प्रति मां प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम
2. हिंकारभाजिनो ह्येतस्य साम्नः
3. प्रस्तावभाजिनो ह्येतस्य साम्नः
4. आदिभाजीनि ह्येतस्य साम्नः
5. उद्गीथभाजिनो ह्येतस्य साम्नः
6. प्रतिहारभाजिनो ह्येतस्य साम्नः
7. उपद्रवभाजिनो ह्येतस्य साम्नः
8. निधनभाजिनो ह्येतस्य साम्नः
2. 21. 1. एतत्साम सर्वस्मिन् प्रोतम् 2.
2. 22. 1. विनर्दि साम्नो वृणे
2. 24. 3. वासवं सामाभिगायति
7. रौद्रं सामाभिगायति
11. स आदित्यं स वैश्वदेवं सामाभिगायति
3. 3. 1. सामान्येव मधुकृतः
2. एतानि सामान्येतं सामवेदमभ्यतपन्
4. 17. 2. सामान्यादित्यात्
3. स्वरिति सामभ्यः
6. यदि सामतो रिष्येत्..साम्नामेव तद्रसेन साम्नां वीर्येण साम्नां यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति

Chhâ. 6. 7. 2. ऋचः सोम्य यजूंषि सामानि
Brih. 1. 2. 5. ऋचो यजूंषि सामानि
5. 14. 2; Praśna. 2. 6.
1. 3. 22. एष उ एव साम वाग्वै साम
— एष सा चामश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्
— समो ऽनेन सर्वेण तस्माद्वेव साम
— अश्नुते साम्नः सायुज्यं . . य एवमेतत्साम वेद
25. साम्नः . . स्वं वेद (bis).
26. साम्नः . . सुवर्णं वेद (bis).
27. साम्नः . . प्रतिष्ठां वेद (bis).
— न हैवालोक्यतताया आशास्ति य एवमेतत्साम वेद
28. प्रस्तोता साम प्रस्तौति
1. 6. 1. एतदेषां साम 2, 3.
5. 13. 3. प्राणो वै साम . . साम्नः सायुज्यं सलोकतां जयति य एवं वेद ॥
6. 4. 20. सामाहमस्मि ऋक्त्वम्
Tait. 1. 2. 1. साम सन्तानः
1. 5. 2. भुव इति सामानि
1. 8. 1. ओमिति सामानि गायन्ति
2. 3. 1. सामोत्तरः पक्षः
3. 10. 5. एतत्साम गायन्नास्ते
Maitri. 6. 5. ऋग्यजुः सामेति विज्ञानवती
33. ऋग्यजुः सामाथर्वाङ्गिरसः
Mahâ. 2; Śiras. 4 (°रसम्)
Muṇḍ. 2. 1. 6. तस्मादृचः सामयजूंषि
Mahânâr. 12. 2. तानि सामानि स साम्नां मण्डलं स साम्नां लोकः
22. 1. आहवनीयः साम सुवर्गो लोको बृहत्
Praśna. 5. 5. स सामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकम्

Praśna. 5. 7. स सामभिर्यत्तत्कवयो . . यन्ते
Nṛip. 1. 2. तत्साम्नः प्रथमं पादं . . नीयात् 4.
— तत्साम्नो द्वितीयं पादं . . नीयात् 4.
— तत्साम्नस्तृतीयं पादं . . नीयात् 4.
— तत्साम्नश्चतुर्थं पादं जा . . यात् 4.
— ऋग्यजुःसामाथर्वाणः
3. तत्साम्नो ऽङ्गं वेद (t . .
— तस्मादिदं साङ्गं साम . . नीयात् 5-7.
— द्वात्रिंशदक्षरं साम जा . . यात्
4. मृत्युं चतुर्थस्याद्यं स . . जानीयात्
— तस्मादिदं साम यत्र कु . . चिन्नाचष्टे
5. नृकेसरिं . . परमं पदं सा . . जानीयात्
— मृत्युं चतुर्थस्यार्द्धान्त्यं स . . म जानीयात्
— इदं साम येन केनचिदाचा . . र्यमुखेन यो जानीते
6. यो यजुर्वेदवाच्यस्तं सा . . जानीयात्
— नमा चतुर्थान्तार्द्धस्याद्यं साम जानीयात्
— तस्मादिदं साम सच्चिदानन्दमयं परं ब्रह्म
7. ऽयहं चतुर्थस्यान्त्यं सा . . जानीयात्
2. 1. स सामभिः सामवेदः
Nṛisut. 3; Sikhâ. 1.
— स साम्नश्चतुर्थः पादो भवति

4. 2. न सामार्थो ऽस्ति यः सावित्रीं वेद
5. 9. स सामान्यधीते
1. सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहम्
1. 13. शाखाः साम्नः परन्तप
9. 17. ऋक् साम यजुरेव च
10. 35. बृहत्साम तथा साम्नाम्

साममध्यग

1. 7. तस्मादिदं साममध्यगं जपति

साममय

2. 6. ऋङ्मये साममयमुद्गाता (प्रवयति)
5. 2. ऋङ्मयं यजुर्मयं साममयम्

सामर

77. क्ष्वेलः प्रीतिश्च सामरा

सामर्थ्य

2. 36. निन्दन्तस्तव सामर्थ्यम्

सामवेद

1. 3. 7. सामवेद एवोत्
3. 3. 1. सामवेद एव पुष्पम्
2. एतानि सामान्येतं सामवेदमभ्यतपन्
3. 15. 7. सामवेदं प्रपद्य इत्येव तदवोचम्
1. 2. अध्येमि.. सामवेदम्
4. नाम वै.. सामवेदः
2. 1. वाग्वै.. विज्ञापयति.. सामवेदम्
7. 1. विज्ञानेन वै.. विजानाति ..सामवेदम्
5. 5. प्राणः सामवेदः
4. 10. ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदः 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32; Mund. 1. 1. 5.

Nrip. 2. 1. स सामभिः सामवेदः Nrisut. 3; Sikhâ. 1.
Brahmav. 7. सामवेदस्तथा धौश्च
Mahâ. 3. जागतं छन्दः सामवेदः
Kâlâg. 2. तृतीया रेखा सा .. सामवेदः
Mukti. 1. सामवेदगतानां .. उपनिषदाम्
Gîtâ. 10. 22. वेदानां सामवेदो ऽस्मि

सामशिरस्

Kaush. 1. 7. यजूदरः सामशिरा असौ

सामश्रवस्

Brih. 3. 1. 2. एताः सौम्योदज सामश्रवा ३ इति

सामाङ्ग

Nrip. 1. 7. तस्मादिदं सामाङ्गं प्रजापतिः

सामान्य

Gauda. 1. 22. सामान्यं वेत्ति निश्चितः
Nrisut. 9. वटबीजसामान्यवत्
— यथा वटबीजसामान्यमेकम्

सामासिक

Gîtâ. 10. 33. द्वन्द्वः सामासिकस्य च

सामीप्य

Mukti. 1. 23. मत्सामीप्यं भजत्ययम्
— सैव सालोक्यसारूप्यसामीप्यमुक्तिः.

साम्पराय

Katha. 1. 29. यत् साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्
2. 6. न साम्परायः प्रतिभाति बालम्
Nrip. 2. 4. यमप्येति भुवनं साम्पराये

साम्य

Mund. 3. 1. 3. परमं साम्यमुपैति

Gauda. 4. 80. तत्साम्यमजमद्वयम्
93. अजं साम्यं विशारदम् 100.
95. अजे साम्ये तु ये केचित्

Gîtâ. 5. 19. येषां साम्ये स्थितं मनः
6. 33. साम्येन मधुसूदन

साम्राज्य

Chhâ. 2. 24. 13. पश्येम त्वा वयं साम्राज्या-
येति

सायम्

Chhâ. 4. 6. 1. ता यत्राभि सायं बभूवुः
4. 7. 1; 4. 8. 1.

Mahânâr. 22. 1. अग्निहोत्रं सायम्प्रातर्गृहाणां
निष्कृतिः

25. 1. यत्सायम्प्रातरत्ति
— यत्सायम्प्रातर्मध्यन्दिनं च
तानि सवनानि

Kathaśru. 3. स यः सायम्प्राश्नीयात्

Nâr. 5. सायमधीयानः

Gopî. 4. य एतद्रहस्यं सायम्प्रातर्ध्या-
येत्

सायंहोम

Kathaśru. 3. स यः सायं प्राश्नीयात् सो
ऽस्य सायंहोमः

सायकायन

Bṛih. 4. 6. 2. काषायणः सायकायनात्
— सायकायनः कौशिकायनेः

सायुज्य

Chhâ. 2. 20. 2. देवतानां सलोकतां सार्ष्टि-
तां सायुज्यं गच्छति

Bṛih. 1. 3. 22. अश्नुते साम्नः सायुज्यम्
1. 5. 23. सायुज्यं सलोकतां जयति
5. 13. 1—4.

Maitri. 4. 1. आत्मन्नेव सायुज्यमुपैति 4.

Mahânâr. 12. 3. ब्रह्मणः सायुज्यं..एत
मेव देवतानां सायुज्यं
आप्नोति

25. 1. आदित्यस्य सायुज्यं
च्छति
— चन्द्रमसः सायुज्यं गच्छ

Nṛip. 1. 7. ब्रह्मणः सायुज्यं सलोक
यन्ति

Nâda. 15. षष्ठयामिन्द्रस्य सायु

Nâr. 5. नारायणे सायुज्यमाप्नो

Vâsu. 2. योगी मत्सायुज्यमाप्नो

Mukti. 1. 15. स मत्सायुज्यपदवीं
मोति
24. मत्सायुज्यं द्विजः..
25. सैव सायुज्यमुक्तिः स्य

सायुज्यता, °त्व

Maitri. 6. 22. एतत्सायुज्यत्वं निर्वृत

Kathaśru. 2. देवानां..सायुज्यतां ग
ति

सार

Mukti. 1. 44. सारमष्टोत्तरं शतम्

सारणी

Maitri. 7. 11. हृदयादायती..सारणी

सारथि

Katha. 3. 3. बुद्धिं तु सारथिं विद्धि
5. दुष्टाश्वा इव सारथेः
6. सदश्वा इव सारथेः
9. विज्ञानसारथिर्यस्तु

Amṛita. 2. विष्णुं कृत्वा तु सारथि

Nâr. 3. रुद्रं स सारथिं कृत्वा

सारूप्य

Mukti. 1. 21. मत्सारूप्यं भजत्ययम्
22. सैव सालोक्यसारूप्यमु
23. सैव सालोक्यसारूप्यसा
प्यमुक्तिः

सार्गल

6. 4. 23. इन्द्रस्यायं व्रजः कृतः सा-
गैलः

सार्द्धम्

.8. 9. 2. प्राव्राजीः सार्द्धं विरोचनेन
a. 4. 5. विवदामो न तैः सार्द्धम्
ıp. 34. तेन सार्द्धं सुखं स्थिताः
45. तैः सार्द्धमादायास्त्रांश्च
46. तदधीशेन सार्द्धम्

सार्पाद्य

ri. 6. 14. सार्पाद्यं अविष्ठार्द्धान्तं सौ-
म्यम्

सार्वकामिक

. 5. 1. सार्वकामिकं मोक्षद्वारम् 2.

सार्वभौम

a. 12. सार्वभौमः प्रजायते

सार्ष्टिता

â. 2. 20. 2. देवतानां सलोकतां सार्ष्टितां
सायुज्यं गच्छति
ânâr. 12. 3. एतासामेव देवतानां सायु-
ज्यं सार्ष्टितां समानलोक-
तामाप्नोति
hasru. 2. देवानां सार्ष्टितां सालोक्य-
तां सायुज्यतां गच्छति

सालज्य

ısh. 1. 3. सालज्यं संस्थानम् 5.

सालावृक

ısh. 3. 1. अरुन्मुखान्यतीन् सालावृ-
केभ्यः प्रायच्छम्

सालोक्य

kti. 1. 17. सालोक्यादिविभावेन
19. सालोक्यमुक्तिमाप्नोति
22. सालोक्यसारूप्यमुक्तिः

Mukti. 1. 23. सालोक्यसारूप्यसामीप्य-
मुक्तिः

सालोक्यता

Kaṭhasru. 2. देवानां सार्ष्टितां सालोक्यतां
सायुज्यतां गच्छति

सावरा

Bṛih. 6. 4. 23. तमिन्द्र निर्जहि गर्भेण सा-
वरां सहेति

सावित्र

Nṛip. 1. 3. सावित्रस्याष्टाक्षरं पदम् 4.2.
4. 2. अथ सावित्री गायत्री या
यजुषा प्रोक्ता

सावित्री

Bṛih. 5. 14. 4. यामेवामूं सावित्रीमन्वाह
5. एके सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुः
— गायत्रीमेव सावित्रीमनुब्रू-
यात्
6. 3. 6. सर्वां च सावित्रीमन्वाह
Maitri. 6. 2. व्याहृतिभिः सावित्र्या च
Mahânâr. 13. 7. सावित्री गायत्री जगती
15. 1. सावित्रीमावाहयामि
Nṛip. 1. 3. सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं
स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति
— सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं
यदि जानीयात् स्त्रीशूद्रः
4. 1. प्रणवं सावित्रीं..अङ्गानि
जानीयात्
2. न ह वा एतस्य ऋचा..
अर्थो ऽस्ति यः सावित्रीं
वेद
Śiras. 1. सावित्र्यहं गायत्र्यहम्
6. ओङ्कारात् सावित्री सा-
वित्र्या गायत्री
Mukti. 1. 37. सावित्र्यात्मा पाशुपतम्
1. *vide* जाबालि

सावृत

Râmap. 93. रमासहितः सावृतश्च (2 MSS. and Weber read संवृतश्च)

साशीतिक

Garbha. 5. साशीतिकं सन्धिशतम्

साष्टपत्र

Râmap. 62. वृत्तत्रयं साष्टपत्रं सरोजम्

साहङ्कार

Gîtâ. 18. 24. साहंकारेण वा पुनः

सि

Katha. 2. 1. उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः

सिंह

Kaush. 1. 2. सिंहो वा वराहो वा

Chhâ. 6. 9. 2. व्याघ्रो वा सिंहो वा 6. 10. 2.

Mahânâr. 3. 17. तन्नः सिंहः प्रचोदयात् Nṛip. 4. 2.

Nṛip. 2. 4 मृडा जरित्रे सिंह स्तवानः — सिंहो वीर्यतमः श्रेष्ठतमश्च

Nṛisut. 4. सिंहो ऽसौ परमेश्वरः — संस्तभ्य सिंहम् — सम्भक्ष्य सिंहेन

6. सिंहं शृङ्गेषु योजयेत्

7. उकारेण परमं सिंहमन्विष्य — उत्तरार्द्धेन तं सिंहमाकृष्य

8. ओतश्च प्रोतश्च ह्ययमात्मा सिंहः

9. आत्मा सिंहश्चिद्रूप एव

सिंहनाद

Gîtâ. 1. 12. सिंहनादं विनद्योच्चैः

सिंहासनस्थ

Râmap. 48. ततः सिंहासनस्थः सन्

सिंहीकृ

Nṛisut. 7. अकारं.. उकारपूर्वा कृष्य सिंहीकृत्य

सिकता

Bṛih. 1. 1. 1. ऊवध्यं सिकताः

सिच्

Ait. 4. 1. तद्यथा स्त्रियां सिञ्चति

Chhâ. 4. 15. 1. यद्यप्यस्मिन्सर्पिर्वोदक सिञ्चन्ति (°ति in M

5. 10. 6. यो रेतः सिञ्चति

Muṇḍ. 2. 1. 5. पुमान् रेतः सिञ्चति षितायाम्

सितरक्त

Chûl. 5. असिता सितरक्ता च

सितासित

Maitri. 2. 7. सितासितैः कर्मफलैरन भूत इव

3. 1. सितासितैः कर्मफलैर यमानः 2.

6. 30. सितासिताः कद्रुनीलाः

सिद्धत्व

Nṛisut. 9. सिद्धत्वासिद्धत्वाभ्याम्

सिद्धि

Kaush. 3. 3. तस्यैषैव सिद्धिरेतद्विशा

Gauḍa. 4. 18. यदि हेतोः फलात्सिद्धिः — यस्य सिद्धिरपेक्षया

20. सिद्धौ साध्यस्य यु

Amṛita. 31. सिद्धिं कृत्वा तु मनसा न्तयेत्

Vâsu. 3. अपरोक्षात्मसिद्धये

Râmot. 4. सर्वेषां मुक्तिसिद्धये

Mukti. 2. कथं वा तत्सिद्धिः सि वा किं प्रयोजनम्

12. तत्र सिद्धिं प्रयच्छन्ति

2. 49. सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा
3. 4. सिद्धिं समधिगच्छति
4. 12. कांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिम्
— सिद्धिर्भवति कर्मजा
22. समः सिद्धावसिद्धौ च
7. 3. कश्चिद्यतति सिद्धये
12. 10. सिद्धिमवाप्स्यसि
14. 1. परां सिद्धिमितो गताः
16. 23. न स सिद्धिमवाप्नोति
18. 13. सिद्धये सर्वकर्मणाम्
26. सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः
45. सिद्धिं यथा विन्दति
46. सिद्धिं विन्दति मानवः
49. नैष्कर्म्यसिद्धिं परमाम्
50. सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म..
आप्नोति

सिध्

sh. 3. 7. न हि प्रज्ञापेता धीः काचन
सिध्येत्
8. न ह्यन्यतरतो रूपं किंचन
सिध्येत्
ḍa. 1. 11. द्वौ तौ तुर्ये न सिध्यतः
4. 30. अनादेरन्तवत्त्वं च संसार-
स्य न सेत्स्यति
43. जातिदोषा न सेत्स्यन्ति
ut. 9. आत्मैव सिद्धो ऽद्वितीयः
— सिद्धं हि ब्रह्म
— सिद्धं ह्यसिद्धं तत्
— आत्मा पुरतो हि सिद्धः
— सिद्धो निरविद्यः
1. 3. मन्त्रज्ञया सिध्यति स्वयम्
tti. 1. 26. केनोपायेन सिध्यति
i. 7. 3. यततामपि सिद्धानाम्
10. 26. सिद्धानां कपिलो मुनिः
11. 22. महर्षिसिद्धसंघाः
22. गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः

Gîtâ. 11. 36. नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः
16. 14. सिद्धो ऽहं बलवान् सुखी

सिनीवाली

Bṛih. 6. 4. 21. गर्भं धेहि सिनीवालि

सिन्धु

Bṛih. 1. 1. 1. सिन्धवो गुदाः
6. 3. 6. मधु क्षरन्ति सिन्धवः
Mahânâr. 9. 8; 17. 7.
Muṇḍ. 2. 1. 9. अस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः
सर्वरूपाः Mahânâr. 8. 5.
Mahânâr. 6. 2. नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः
5. सिन्धुर्न नावा दुरितातिपर्षि

सिन्धुराज

Maitri. 6. 16. विग्रहवानेष कालः सिन्धु-
राजः प्रजानाम्

सीता

Râmap. 17. सीतारामौ तन्मयौ
24. उत्पन्नं सीतया भाति
36. तद्व्याजेनेक्षितुं सीताम्
44. सीतां दृष्ट्वा सुरान् हत्वा
Râmot. 3. सा सीता भवति ज्ञेया
Mukti. 1. 1. सीताभरतसौमित्रिशत्रु-
घ्नाद्यैः
34. परिव्राट् त्रिशिखी सीता
1. *vide* गारुड

सीमन्

Ait. 3. 12. स एतमेव सीमानं विदार्य

सीस

Chhâ. 4. 17. 7. त्रपुणा सीसं सीसेन लोहम्

1. सु (प्रसवे)

Chhâ. 3. 17. 5. तस्मादाहुः सोष्यत्यसोष्टेति
Bṛih. 6. 4. 22. दशमे मासि सूतवे
23. सोष्यन्तीमद्भिरभ्युक्षति

Maitri. 6. 16. यस्मादेवेमे चन्द्रर्क्षग्रहसंवत्सरादयः सूयन्ते

Mahânâr. 6. 1. बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः

9. 6. प्रजावत्सावीः सौभगम्

Nyâsa. 2. संविभज्य सुतानर्थान्

Gitâ. 9. 10. सूयते सचराचरम्

2. सु (अभिषवे)

Chhâ. 5. 12. 1. तस्मात्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते

Brih. 2. 1. 3. अहरहर्ह सुतः प्रसुतो भवति

Mahânâr. 6. 2. जातवेदसे सुनवाम सोमम्

Maitri. 6. 7. शश्वत् सूयमानात् सूर्यः

सुकृत

Ait. 2. 3. सुकृतं बतेति पुरुषो वाव सुकृतम्

Kaush. 1. 4. तत्सुकृतदुष्कृते धुनुते वा तस्य प्रिया ज्ञातयः सुकृतमुपयन्ति

Chhâ. 8. 4. 1. न सुकृतं न दुष्कृतम्

Brih. 6. 4. 3. स्त्रीणां सुकृतं वृंक्ते.. अस्य स्त्रियः सुकृतं वृञ्जते

6. मयि तेज इन्द्रियं.. सुकृतम्

Tait. 2. 7. 1. तस्मात्तत्सुकृतमुच्यत इति — यद्वैतत्सुकृतं रसो वै सः

Katha. 3. 1. ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके

Muṇḍ. 1. 2. 6. एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः

10. नाकस्य पृष्ठे ते सुकृते ऽनुभूत्वा

Gitâ. 2. 50. उभे सुकृतदुष्कृते

5. 15. न चैव सुकृतं विभुः

14. 16. कर्मणः सुकृतस्याहुः

सुकृतिन्

Gitâ. 7. 16. जनाः सुकृतिनो ऽर्जु

सुकेशन्

Praśna. 1. 1. सुकेशा च भारद्वाज

सुख

Chhâ. 7. 22. 1. यदा वै सुखं लभते ... रोति .. सुखमेव करोति सुखं त्वेव ... शासितव्यमिति सु... विजिज्ञासे

7. 23. 1. यो वै भूमा तत् सुखं ... सुखमस्ति भूमैव सु...

Katha. 5. 12. तेषां सुखं शाश्वतं नेतरे... Swet. 6. 12.

14. अनिर्देश्यं परमं सुखम्

Maitri. 4. 4. अक्षय्यं.. अनामयं सु... श्नुते

6. 20. सुखमव्ययमश्नुते 34.

24. यत् सुखं चात्मसाक्षि...

30. अक्षय्यमपरिमितं सुख... क्रम्य

34. चेतसः.. यत् सुखं भ...

Praśna. 4. 1. कस्यैतत् सुखं भवति

6. तदैतस्मिञ्छरीरे एत... भवति

Gauḍa. 3. 5. तद्वज्जीवाः सुखादिभि...

45. नास्वादयेत् सुखं तत्र

47. अकथ्यं सुखमुत्तमम्

4. 82. सुखमाव्रियते नित्यम्

Śarvop. 4. सुखचैतन्यस्वरूपः — अविशिष्टसुखस्वरूपः

Parama. 2. न सुखं न दुःखम् — *vide* आदि

3. सुखे निस्पृहः

1\. 32. न च राज्यं सुखानि च
33\. राज्यं भोगाः सुखानि च
45\. यद्राज्यसुखलोभेन
56\. सुखेषु विगतस्पृहः
2\. 66. अशान्तस्य कुतः सुखम्
4\. 40. न सुखं संशयात्मनः
5\. 21. विन्दत्यात्मनि यः सुखम्
— सुखमक्षयमश्नुते
6\. 21. सुखमात्यन्तिकं यत्तत्
27\. सुखमुत्तमम्
28\. सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते
32\. सुखं वा यदि वा दुःखम्
10\. 4. सुखं दुःखं भवोऽभावः
13\. 6. इच्छा द्वेषः सुखं दुःखम्
14\. 9. सत्त्वं सुखे सञ्जयति
27\. सुखस्यैकान्तिकस्य च
16\. 23. न सुखं न परां गतिम्
17\. 8. *vide* विवर्द्धन
18\. 36. सुखं त्विदानीं त्रिविधम्
37\. तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तम्
38\. तत्सुखं राजसं स्मृतम्
39\. सुखं मोहनमात्मनः

सुखदुःख

ish. 1. 7. केन सुखदुःखे इति शरीरेणेति
2\. 15. सुखदुःखे मे त्वयि दधानीति पिता सुखदुःखे ते मयि दध इति पुत्रः
3\. 5. तस्य सुखदुःखे परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा
6\. प्रज्ञया शरीरं समारुह्य शरीरेण सुखदुःखे आप्नोति
7\. न हि प्रज्ञापेतं शरीरं सुखं न दुःखं किंचन प्रज्ञापयेत्
— माहमेतत्सुखं न दुःखं प्राज्ञासिषम्

Kaush. 3. 8. न सुखदुःखे विजिज्ञासीत सुखदुःखयोर्विज्ञातारं विद्यात्
Maitri. 6. 10. सुखदुःखमोहसंज्ञं . . इदं जगत्
Tejo. 14. न भयं सुखदुःखं च
Nyâsa. 4. नात्यर्थं सुखदुःखाभ्यां शरीरमुपतापयेत् Katha-śru. 4.
Parama. 2. *vide* आदि
Mukti. 2. कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिलक्षणः
Gîtâ. 2. 38. सुखदुःखे समे कृत्वा
6\. 7. शीतोष्णसुखदुःखेषु
12\. 18.
13\. 20. पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुः

सुखदुःखद

Gîtâ. 2. 14. शीतोष्णसुखदुःखदाः

सुखदुःखबुद्धि

Sarvop. 2. सुखदुःखबुद्ध्याश्रयः

सुखदुःखभाज्

Maitri. 6. 21. निरात्मकत्वान्न सुखदुःखभाग्भवति

सुखदुःखभोक्तृ

Kaivalya. 13. स्वप्ने स जीवः सुखदुःखभोक्ता

सुखदुःखसञ्ज्ञ

Gîtâ. 15. 5. द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः

सुखदुःखहेतु

Śwet. 1. 2. आत्माप्यनीशः सुखदुःखहेतोः
Sarvop. 2. शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः सुखदुःखहेतवः

सुखबुद्धि

Sarvop. 2. इष्टविषये बुद्धिः सुखबुद्धिः

सुखम्

Katha. 1. 11. सुखं रात्रीः शयिता
Râmap. 34. तेन सार्द्धं सुखं स्थिताः
Gîtâ. 5. 3. सुखं बन्धात्प्रमुच्यते
13. आस्ते सुखं वशी

सुखरूप

Kaivalya. 13. तमोभिभूतः सुखरूपमेति
Nrisut. 9. बुद्धः सुखरूप आत्मा

सुखसङ्ग

Gîtâ. 14. 6. सुखसङ्गेन बध्नाति

सुखासनस्थ

Kaivalya. 4. विविक्तदेशे च सुखासनस्थः

सुखिन्

Gîtâ. 1. 37. सुखिनः स्याम माधव
2. 32. सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ
5, 23. स युक्तः स सुखी नरः
16. 14. सिद्धो ऽहं बलवान् सुखी

सुखेतर

Śwet. 1. 1. अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वर्त्तामहे

सुगुप्त

Kathaśru. 1. य आत्मानं क्रियाभिः सुगुप्तं करोति

सुग्रीव

Râmap. 42. सुग्रीवं स्थापयेत्ततः
— हरीनाहूय सुग्रीवः
51. भरताधस्तु सुग्रीवम्
53. सुग्रीवं भरतं तथा

सुघन

Mukti. 2. 62. अज्ञानसुघनाकारा

सुघोष

Gîtâ. 1. 16. सुघोषमणिपुष्पकौ

सुचरित

Tait. 1. 11. 2. यान्यस्माकं सुचरितानि त्वयोपास्यानि

सुज्ञान

Katha. 2. 9. प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय

सुतरसिद्धतरस्

Mahânâr. 6. 3. सुतरसिद्धतरसे नमः
(2 MSS. omit द्ध)

सुतल

Aruṇeya. 1. *vide* तलातल

सुतीक्ष्ण

Kshur. 11. सुतीक्ष्णं बुद्धिनिर्मलम्
24. प्राणायामसुतीक्ष्णेन

सुतेजस्

Chhâ. 5. 12, 1. एष वै सुतेजा आत्मा
5. 18. 2. मूर्द्धैव सुतेजाः

सुदक्ष

Nrip. 2. 4. यतो वीरः कर्मण्यः सु

सुदत्र

Brih. 6. 4. 27. वसुविद्यः सुदत्रः

सुदर्शन

Nrip. 5. 1. षडरं वा एतत् सुदर्शनं महाचक्रम्
— *vide* सुबद्ध
2. तदेव चक्रं सुदर्शनं महाचक्रम्
— षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवति

सुदामन्

Krish. 17. शमो मित्रं सुदामा यः
26. सुदामा नारदो मुनिः

सुदीप्त

und.2. 1. 1. यथा सुदीप्तात् पावकाद्वि-
स्फुलिङ्गाः

सुदुराचार

ítâ. 9. 30. अपि चेत्सुदुराचारः

सुदुर्दर्श

itâ. 11. 52. सुदुर्दर्शमिदं रूपम्

सुदुर्लभ

ítâ. 6. 19. स महात्मा सुदुर्लभः

सुदुष्कर

itâ. 6. 34. वायोरिव सुदुष्करम्

सुदूर

lund.3. 1. 7. दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च

सुदृढ

risut. 9. सैषा चित्रा सुदृढा बह्वङ्कुरा

सुद्युम्न

laitri. 1. 4. *vide* आदि

सुधन्वन्

rih. 3. 3. 1. सुधन्वाङ्गिरसः

सुधूम्रवर्णा

lund.1. 2. 4. सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा

सुध्मात

Swet. 2. 14. भ्राजते तत्सुध्मातम् (so Nârâyaṇa; one MS. has सुधार्तं; Śaṁkarânanda explains सुधाम्तम्)

सुनिर्मल

Swet. 3. 12. सुनिर्मलामिमां शान्तिम्

सुनिर्वृत

Gauḍa. 4. 93. प्रकृत्यैव सुनिर्वृताः

सुनिश्चल

Maitri. 6. 34. मनः कृत्वा सुनिश्चलम्

सुनिश्चित

Muṇḍ.3. 2. 6. वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः Mahânâr. 10. 6; Kaivalya. 3.

Gauḍa. 4. 92. सर्वे धर्माः सुनिश्चिताः
95. ये केचिद्भविष्यन्ति सुनिश्चिताः (विपश्चितः MSS.)

Gîtâ. 5. 1. तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्

सुपथिन्

Brih. 5. 15. 1. अग्ने नय सुपथा राये Iśâ. 18.

सुपर्ण

Brih. 3. 3. 2. इन्द्रः सुपर्णो भूत्वा
4. 3. 19. आकाशे श्येनो वा सुपर्णो वा विपरिपत्य

Śwet. 4. 6. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया Muṇḍ.3. 1. 1.

Chûl. 8. सुपर्णं पिप्पलाशनम्

सुपर्णपक्ष

Mahânâr. 3. 15. सुपर्णपक्षाय धीमहि

सुपर्णेय

Mahânâr.22. 1. प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णेयः

सुपूर्ण

Mukti. 2. 74. सुपूर्णभूमाहमितीह भावय

सुप्रतिष्ठ

Mukti. 1. 7. वेदान्ते सुप्रतिष्ठोऽहम्

सुप्रतिष्ठा

Śwet. 1. 7. तस्मिंस्त्रयं सुप्रतिष्ठाक्षरं च

सुप्रतिष्ठित

Mukti. 1. 9. वेदे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः

सुप्रतीक

Mahânâr.16. 7. सा मां मेधा सुप्रतीका जुषताम्

सुप्रपञ्चहीन

Nṛisut. 3. इहेदं सर्वं दृष्ट्वा सुप्रपञ्चहीनः (Nârâyaṇa also explains असुप्रपञ्चहीनः)

सुप्रशान्त

Gauḍa. 3. 37. सुप्रशान्तः सकृज्ज्योतिः

सुप्रसन्न

Gauḍa. 3. 42. सुप्रसन्नं लये चैव

सुप्रीत

Maitri. 2. 1. भगवाञ्छाकायन्यः सुप्रीतः

सुबद्ध

Nṛip. 5. 1. अरैर्वा एतत्सुबद्धं भवति (some MSS. read एतत्सुदर्शनम्)

सुबाल

Mukti. 1. 32. सुबालक्षुरिमन्त्रिका
1. *vide* मुक्तिका

सुभगा

Mahânâr. 3. 14. सुभगायै विद्महे

सुभिक्ष

Chhâ. 1. 10. 5. साम्र एव सुभिक्षा बभूव

सुभूता

Chhâ. 3. 15. 2. सुभूता नामोदीची

सुभृत

Kaṭha. 4. 8. गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः

सुमनस्

Kaṭha. 1. 10. शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्यात्
[illegible] 6. समना असत्

सुमनस्यमान

Mahânâr.16. 4. विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना

Nyâsa. 1. सर्वभियं दधतु सुमनस्यमाना

सुमन्त्र

Râmap. 55. सुमन्त्रैरेभिरावृतः

सुमित्रिय

Mahânâr. 4. 13. सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु

सुमेधस्

Bṛih. 6. 2. 3. कथं सुमेध इति
Tait. 1. 10. 1. सुमेधा अमृतो ऽक्षितः
Mukti. 1. 49. कुलीनाय सुमेधसे

सुयज्वन्

Chûl. 7. इज्यमानां सुयज्वभिः

सुयुक्त

Maitri. 4. 4. यः सुयुक्तो ऽजस्रं चिन्तयति

सुर

Maitri. 1. 4. स्थानादपसरणं सुराणाम्
6. 35. संस्फुरत्यसावन्तर्गः सुराणाम्
Yogat. 6. त्रयः सन्ध्यास्त्रयः सुराः
Kṛish. 1. ते होचुस्तं सुराः सर्वे
4. मोदितास्ते सुराः सर्वे
9. गोपगोपीसुरैः सह
10. शृंगमिन्द्रः सखा सुराः
12. दुर्जया सा सुरैः सर्वैः
13. बलं ज्ञानं सुराणां वै
Gîtâ. 2. 8. राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्

सुरगण

Gitâ. 10. 2. न मे विदुः सुरगणाः

सुरभि

Chhâ 1. 2. 2. तस्मात्तेनोभयं जिघ्रति सुरभि च दुर्गन्धि च
9. नैवैतेन सुरभि न दुर्गन्धि विजानाति

Mahânâr.16. 6 सा मां मेधा सुरभिर्जुषताम्
7. मेधा सुरभिर्विश्वरूपा

सुरसंघ

Gitâ. 11. 21. अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति

सुरा

Chhâ. 5. 10. 9. सुरां पिबंश्च

सुरापान

Mahânâr. 19. 1. गोस्तेयं सुरापानम्
Kaivalya. 24. सुरापानात्पूतो भवति

सुराष्ट्र

Râmap. 55. विजयश्च सुराष्ट्रश्च

सुरूप

Chhâ. 2. 15. 2. विरूपांश्च सुरूपांश्च पशूनवरुन्धे (all he MSS. read सरूपांश्च)

सुरेन्द्रलोक

Gitâ. 9. 20. ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकम्

सुरेश्वर

Gopî. 5. गोपीचन्दनमित्युक्तं द्वारवत्यां सुरेश्वरैः

सुलक्षण

Gopî. 5. चक्राकारं सुलक्षणम्

सुलभ

Gitâ. 8. 14. तस्याहं सुलभः पार्थ

सुलोहिता

Mund.1. 2. 4. सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा

सुवःकालकर्णी

Mahânâr. 4. 9. भूर्लक्ष्मीर्भुवर्लक्ष्मीः सुवः कालकर्णी Nrip. 4. 2 (*vide* Śaṁkaras' commentary).

सुवर्, स्वर्

Kaush. 2. 14. आकाशात्मानः स्वरीयुः
— आकाशात्मा स्वरेति

Chhâ. 2. 23. 3. भूर्भुवः स्वरिति
3. 15. 3. स्वः प्रपद्ये ऽमुनामुनामुना
7. यदवोचं स्वः प्रपद्य इति
4. 17. 3. स्वरिति सामभ्यः
6. स्वः स्वाहेत्याहवनीये जुहुयात्

Brih. 5. 5. 3. स्वरिति प्रतिष्ठा 4.
6. 3. 3. स्वः स्वाहा..भूर्भुवः स्वः स्वाहा 6.
6. 4. 25. स्वस्ते दधामि भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि

Tait. 1. 5. 1. भूर्भुवः स्वरिति..व्याहृतयः
— सुवरित्यसौ लोकः
2. सुवरित्यादित्यः
— सुवरिति यजूंषि
3. सुवरिति व्यानः
1. 6. 2. सुवरित्यादित्ये

Śwet. 2. 3. देवान् सुवर्यतः

Maitri. 6. 5. भूर्भुवःस्वरिति लोकवत्येषा
6. अनुव्याहरद्भूर्भुवः स्वरिति
— स्वरित्यस्याः शिरः
— एतस्माद्भूर्भुवः स्वरित्युपासीत

Maitri. 6. 35. भूर्भुवः स्वरोम् Mahânâr. 13. 1; 15. 2, 3; Śiras. 6; Prâṇâg. 1.

Mahânâr. 1. 9. अन्तरिक्षमथो सुवः 5. 7.
2. 6. परि दिशः परि सुवः
5. 9. द्यावापृथिव्योर्हिरण्मयं संश्रितं सुवः स नः सुवः संशिशाधि
7. 1. सुवरादित्याय
— भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे
— भूर्भुवः सुवरग्निरोम्
2. सुवरन्नमादित्याय
— भूर्भुवः सुवरन्नं चन्द्रमसे
— भूर्भुवः सुवरन्नमोम्
3. सुवरादित्याय च दिवे च
— भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च
— भूर्भुवः सुवर्महरोम्
5. भूर्भुवः सुवश्छन्द ओम्
8. 1. भूर्भुवः सुवर्ब्रह्म
14. 1. भूर्भुवः सुवराप ओम्
15. 3. ओं भूर्भुवः सुवर्महः
22. 1. तपसऋषयः सुवरन्वविन्दन्
— दमेन ब्रह्मचारिणः सुवरगच्छन्

Śiras. 2. यो वै रुद्रः.. यश्च स्वः
3. स्वस्ते शीर्षम्

Mahâ. 3. स्वरिति व्याहृतिः

Atmapra. 1. यस्मिँल्लोके स्वर्हितम्

Râmot. 5. भूर्भुवः स्वः (47 times).

सुवर्ग

Tait. 1. 3. 4. सन्धीयते.. सुवर्गेण लोकेन

Mahânâr.21. 2. सत्येन न सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्ते

Mahânâr.22. 1. आहवनीयः साम सुव लोको बृहत्
— अग्निहोत्रं.. सुवर्गस्य लो कस्य ज्योतिः

सुवर्गेय

Śwet. 2. 2. सुवर्गेयाय शक्त्या (o MS. reads स्वर्गेया and another, with V स्वर्ग्याय)

सुवर्चस्, सुवर्चस

Tait. 1. 10. 1. द्रविणं सुवर्चसम्

Muṇḍ. 1. 2. 6. आहुतयः सुवर्चसः

सुवर्ण

Chhâ. 1. 6. 6. आप्रणखात्सर्व एव सुव
3. 19. 1. ते आण्डकपाले रजतं च सु वर्णं चाभवताम्
2. यत्सुवर्णं सा द्यौः
4. 17. 7. लवणेन सुवर्णं सन्दध्या सुवर्णेन रजतम्

Bṛih. 1. 3. 26. साम्नो यः सुवर्णं वेद भव ति हास्य सुवर्णं तस्य स्वर एव सुवर्णम्

Sarvop. 4. सुवर्णविकारेषु सुवर्णमि

सुवर्णघन

Sarvop. 3. सुवर्णघनवत्

सुवर्णज्योतिस्

Tait. 3. 10. 6. अहं विश्वं भुवनमभ्यभ सवर्णज्योतीः Nṛip. 2. 4 (तिः)

सुवर्णविकार

Sarvop. 4. सुवर्णविकारेषु सुवर्णमि

सुवर्णस्तेय

Kaivalya. 24. सुवर्णस्तेयात् पूतो भवति

सुवसन

[c]hâ. 8. 8. 2. साध्वलङ्कृती सुवसनौ परिष्कृतौ, 3.
8. 9. 1. सुवसने सुवसनः, 2.

सुविज्ञेय

[Ka]tha. 1. 21. न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः
22. त्वं च मृत्यो यन्न सुविज्ञेयमात्थ
2. 8. न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयः

सुविभात

[Nr]isut. 2. सर्वस्मात्पुरतः सुविभातम्
5. पुरतो ऽस्मात् सर्वस्मात् सुविभातम् 9.
6. सर्वस्य पुरतः सुविभातम्
8. अयं ह्यस्मात् सर्वस्मात्पुरतः सुविभातः
9. एतौ हि पुरस्तात्सुविभातमव्यवहार्यमद्वयम्
— सुविभातं सकृद्विभातम्

सुविरूढमूल

[Bhag]â. 15. 3. अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलम्

सुविस्तर

[Mu]kti. 1. 9. वेदा जाताः सुविस्तराः

सुविस्पष्ट

[Nr]isut. 9. सुविस्पष्टस्तमसः परस्तात्

सुवीर

[Ma]hânâr. 16. 4. बृहद्वदेम विदथे सुवीराः

सुवृष्टि

[C]hâ. 7. 10. 1. यदा सुवृष्टिर्न भवति
— यदा सुवृष्टिर्भवति

सुशब्द

[...]yâna. 4. सुशब्दे चाक्षरे क्षीणे

सुशिक्षित

Gauḍa. 2. 8. यथैवेह सुशिक्षितः

सुशील

Mukti. 1. 49. मद्भक्ताय सुशीलाय

सुषि

Chhâ. 3. 13. 1. प्राङ् सुषिः स प्राणः
2. दक्षिणः सुषिः स व्यानः
3. प्रत्यङ् सुषिः सो ऽपानः
4. उदङ् सुषिः स समानः
5. ऊर्ध्वः सुषिः स उदानः
Maitri. 7. 11. हृदयान्तर्गते सुषौ

सुषिर

Mahânâr. 11. 7. सुषिरं चाप्यधोमुखम् (see हृदय); Brahma. 3.
9. तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मम्
Garbha. 1. तत्सुषिरं तदाकाशम्
Brahma. 2. तत्सुषिरमाकाशम्
Amṛita. 26. सुषिरं मण्डलं विदुः

सुषुप्त

Bṛih. 2. 1. 19. यदा सुषुप्तो भवति
Mahânâr. 18. 1. यत्सुषुप्तश्च जाग्रतश्चैनश्चकृम
Mâṇḍû. 5. यत्र सुप्तः..न कञ्चन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम् Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1; Râmot. 3.
Gauḍa. 3. 34. सुषुप्ते ऽन्यो न तत्समः
35. लीयते हि सुषुप्ते तत्
Nṛisut. 1. त्रयमप्येतत् सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
— त्रयमत्रापि सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
2. सुषुप्ते ऽजाग्रतमस्वप्नम्
Brahma. 1. एवं सुषुप्तो ब्रूते
2. जागरितं स्वप्नं सुषुप्तं तुरीयम्

Brahma. 2. सुषुप्ते रुद्रः
3. सुषुप्तं हृदयस्थं तु
Sarvop. 1. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तं तुरीयं च कथम्
— तदात्मनः सुषुप्तम्

सुषुप्तस्थान

Mâṇḍû. 5. सुषुप्तस्थान एकीभूतः
Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1. Râmot. 3.
11. सुषुप्तस्थानः प्राज्ञः
Nṛisut. 2. सुषुप्तस्थानश्चतुरात्मा प्राज्ञः

सुषुप्ति

Kaivalya. 17. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चम्
Brahmab. 11. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु
Haṁsa. 2. लिङ्गे सुषुप्तिः

सुषुप्तिकाल

Kaivalya. 13. सुषुप्तिकाले सकले विलीने

सुषुम्णा

Kshur. 8. तत्र नाडी सुषुम्णा तु
17. सुषुम्णा तु परे लीना
18. सुषुम्णैका न छिद्यते

सुषुम्णाद्वार

Yogaśi. 7. द्वितीयं सुषुम्णाद्वारम्

सुषुम्नाख्य

Maitri. 6. 21. ऊर्ध्वगा नाडी सुषुम्नाख्या

सुषोमा

Mahânâr. 5. 4. आर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया

सुष्वप

Brahma. 1. सुष्वपे श्येनाकाशवत्

सुसमाहित

Bṛih. 4. 3. 35. यथानः सुसमाहितम्

सुसमिद्ध

Maitri. 6. 28. सुसमिद्धस्य देहिनः

सुसीम

Kaush. 2. 8. यन्मे सुसीमं हृदयं चंद्रमसि श्रितम्
10. यत्ते सुसीमे हृदये ि

सुसुख

Gitâ. 9. 2. सुसुखं कर्तुमव्ययम्

सुसूक्ष्म

Muṇḍ. 1. 1. 6. सुसूक्ष्मं तदव्ययम्

सुस्थित

Nâda. 19. सुस्थितो योगचारेण
Nyâsa. 2. भोगांस्त्यजति सुस्थित

सुहय

Chhâ. 5. 1. 12. यथा सुहयः पड्वीशः संखिदेत्

सुहव

Mahânâr. 20. 3. हवे हवे सुहवं शूरमि ह्वयामि

सुहुत

Bṛih. 6. 4. 24. स्विष्टं सुहुतं करोतु न
Mahânâr. 22. 1. अग्निहोत्रं सायं प्रातः स्विष्टं सुहुतम्

सुहृद्

Śwet. 3. 17. सर्वस्य शरणं सुहृत्
Garbha. 4. पितरः सुहृदस्तथा
Kathaśru. 1. सुहृदो बन्धूननुमोदयि
Gitâ. 1. 27. श्वशुरान् सुहृदश्चैव
5. 29. सुहृदं सर्वभूतानाम्
6. 9. सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्य द्वेष्यबन्धुषु
9. 18. निवासः शरणं सुहृत्

सूकरयोनि

hâ. 5. 10. 7. श्वयोनिं वा सूकरयोनिं वा

सूक्तवाक

ânâg. 3. शारीरयज्ञस्य . . कः सूक्तवाकः
4. दन्तोष्ठौ सूक्तवाकः

सूक्ष्म

hânâr. 11. 9. तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मम्
tha. 3. 12. दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया
vet. 5. 12. स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि चैव रूपाणि
6. 3. आत्मगुणैश्च सूक्ष्मैः
aitri. 2. 5. स वा एष सूक्ष्मो ऽग्राह्यः
und.3. 1. 7. सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति
ivalya. 16. सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं नित्यम्
uda. 2. 23. सूक्ष्म इति सूक्ष्मविदः
isut. 2. स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिः (ter); 3 (4 times).
9. सत्यं सूक्ष्मं परिपूर्णमद्वयम्
ahmav. 11. पद्मसूत्रनिभा सूक्ष्मा
as. 2. यो वै रुद्रः . . यच्च सूक्ष्मम्
3. सूक्ष्मः पुरुषः सर्वम्
— प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषम्
— सूक्ष्मं सूक्ष्मेण . . ग्रसति
— यच्छुक्लं तत् सूक्ष्मं यत् सूक्ष्मं तद्वैद्युतम्
4. कस्मादुच्यते सूक्ष्मम्
— सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति
— तस्मादुच्यते सूक्ष्मम्
rita. 4. पदं सूक्ष्मं च गच्छति
o. 1. स्थूलं सूक्ष्मं परं च यत्
Sarvop. 4. आकाशवत्सूक्ष्मः केवलः
Haṁsa. 2. तनु सूक्ष्म प्रचोदयात् (so 5 MSS.; two तन्नः सूक्ष्मः)
Vâsu. 3. देहादिरहितं सूक्ष्मम्

सूक्ष्मतर

Muṇḍ.3. 1. 7. सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति
Kaivalya. 16. सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं नित्यम्

सूक्ष्मत्व

Nṛisut. 1. सूक्ष्मत्वात् सूक्ष्मभुक्त्वाच्च
2. स्थूलत्वात् सूक्ष्मत्वाद्बीजत्वात् साक्षित्वाच्च (ter).
Gîtâ. 13. 15. सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयम्

सूक्ष्मदर्शिन्

Kaṭha. 3. 12. दृश्यते . . . सूक्ष्मदर्शिभिः

सूक्ष्मप्रज्ञ

Nṛisut. 1. स्वप्नस्थानः सूक्ष्मप्रज्ञः
— न स्थूलप्रज्ञं न सूक्ष्मप्रज्ञम्

सूक्ष्मभुक्त्व

Nṛisut. 1. सूक्ष्मत्वात् सूक्ष्मभुक्त्वाच्च

सूक्ष्मभुज्

Nṛisut. 1. सूक्ष्मभुक् चतुरात्मा

सूक्ष्मयुत

Râmap. 78. सूक्ष्मयुतो विषः

सूक्ष्मविद्

Gauḍa. 2. 23. सूक्ष्म इति सूक्ष्मविदः

सूक्ष्मातिसूक्ष्म

Śwet. 4. 14. सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये

सूच्

Maitri. 3. 1. यद्येवमस्यात्मनो महिमानं सूचयसि

सूचन

Brahma. 2. सूचनात्सूत्रमित्याहुः
Aruṇeya. 3. सूचनात्सूत्रमहमेव सूत्रम्

सूत

Bṛih. 4. 3. 37. उग्राः प्रत्येनसः सूतग्राम-ण्यः 38.

सूतपुत्र

Gîtâ. 11. 26. भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथा-सौ

सूत्र

Chhâ. 6. 8. 2. यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धः
Bṛih. 2. 4. 10. उपनिषदः श्लोकाः सूत्राणि 4. 1. 2; 4. 5. 11; Maitri. 6. 32.
3. 7. 1. वेत्थ नु त्वं काप्य तत्सूत्रम्
— यो वै तत्काप्य सूत्रं विद्यात्
— तच्चेत्त्वं . . सूत्रमविद्वान्
— वेद वा अहं गौतम तत्सूत्रम्
2. वायुर्वै . . तत्सूत्रं वायुना वै . . सूत्रेण . . सर्वाणि . . सन्दृब्धानि
— वायुना हि गौतम सूत्रेण सन्दृब्धानि
Brahma. 2. त्रिवृत् सूत्रं च यन्महत्
— ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयेत्
— सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम्
— तत्सूत्रं विदितं येन
— सूत्रे मणिगणा इव Gîtâ. 7. 7.
— तत्सूत्रं धारयेद्योगी
— ब्रह्मभावमयं सूत्रम्
— धारणात्तस्य सूत्रस्य
3. सूत्रमन्तर्गतं येषाम्

Brahma. 3. तैः सन्धार्यमिदं सूत्रम् (MS. has बहिः for इ
Aruṇeya. 1. यागं च सूत्रं च स्वाः च . . विसृजेत्
3. खल्वहं ब्रह्म सूत्रं सूच सूत्रमहमेव सूत्रं ब्रह्म महमेव विद्वान्

सूत्रयन्त्र

Maitri. 6. 26. अप्सुचारिणः . . सूत्रय णोद्धृत्य

सूत्रविद्

Brahma. 3. ते वै सूत्रविदो लोके

सूनु

Prâṇâg. 2. सर्वेषामेव सूनुर्भवति MSS. have सूनम्)

सूनृता

Katha. 1. 8. आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सू तां च

सूरि

Śwet. 2. 5. वि श्लोक एतु पथ्येव सू
Nṛip. 5. 10. तद्विष्णोः परमं पदं स पश्यन्ति सूरयः Arune 5; Vâsu. 4; Skanda 1 Mukti. 2. 77.

सूर्य

Chhâ. 3. 17. 7. पश्यन्त उत्तरं देवं देव सूर्यम्
4. 4. 1. यदा सूर्यो ऽस्तमेति
4. 7. 3. सूर्यः कला
Bṛih. 1. 1. 1. सूर्यश्चक्षुः
1. 4. 10. अहं मनुरभवं सूर्यश्च
1. 5. 23. यतश्चोदेति सूर्यः Kaṭ 4. 9.
5. 15. 1. पूषन्नेकर्षे यम सूर्य 16.

rih. 6. 3. 6. मधुमाँ अस्तु सूर्यः Mahânâr. 9. 10.
ait. 2. 8. 1. भीषोदेति सूर्यः Nrip. 2.4.
atha. 5. 11. सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुः
15. न तत्र सूर्यो भाति Śwet. 6. 14; Muṇḍ. 2. 2. 10.
6. 3. भयात्तपति सूर्यः
aitri. 6. 5. प्राणो ऽग्निः सूर्या इति प्रतापवत्येषा
7. शश्वत्स्तूयमानात्सूर्यः
8. प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः Praśna. 1. 8.
12. सूर्यो रश्मिभिराददात्यन्नम्
14. सूर्यो योनिः कालस्य
26. सूर्यान्मयूखाश्च तथैव, 31.
27. तेजश्चैवाग्निसूर्ययोः
37. तत्सूर्यो रश्मिभिर्वर्षति
und.1. 2. 5. तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयः
6. सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति
11. सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
2. 1. 4. चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ
5. तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः
6. सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः
ahânâr. 1. 7. तत्सूर्यस्तदु चन्द्रमाः
3. 8. तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्
10. 2. सूर्य एकं जजान
13. 1. घृणिः सूर्य आदित्य ओम्
14. 4. सूर्यश्च मा मन्युश्च
— सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि
20. 7. ज्योतिष्कृदसि सूर्य
8. सूर्याय त्वा भ्राजस्वते
24. 1. वर्चोदास्त्वमसि सूर्यस्य
aśna. 2. 5. एषो ऽग्निस्तपत्येष सूर्यः

Praśna. 2. 9. सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः
5. 5. स तेजसि सूर्ये सम्पन्नः
Nṛip. 1. 4. ऋग्यजुःसामाथर्वरूपः सूर्यः
4. 2. सूर्य इति त्रीणि
3. यो वै नृसिंहः..यश्च सूर्यस्तस्मै वै नमो नमः (28).
5. 10. यत्र सूर्यो न तपति
Brahmav. 11. सूर्यं भित्त्वा तदापरम्
12. सूर्यं भित्त्वा तु मूर्द्धनि
Śiras. 2. यो वै रुद्रः..यश्च सूर्यः
Mahâ. 1. न नक्षत्राणि न सूर्यः
Prâṇâg. 2. सूर्यो ऽग्निर्नाम
Nila. 19. ये च सूर्यस्य रश्मिषु
Dhyâna. 16. चन्द्राग्निसूर्ययोः
Yogaśi. 6. भिन्दन्ति योगिनः सूर्यम्
Haṁsa. 2. सूर्याय सोमाय
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..यश्च सूर्यः
Mukti. 1. 36. सूर्याक्ष्यध्यात्मकुण्डिका
Gîtâ. 7. 8. प्रभास्मि शशिसूर्ययोः
15. 6. न तद्भासयते सूर्यः

सूर्यपूत

Śiras. 7. स सूर्यपूतो भवति Mahâ. 4.

सूर्यमण्डल

Maitri. 6. 30. यो भित्त्वा सूर्यमण्डलम्
Brahmav. 8. सूर्यमण्डलमाभाति (so all the MSS.)

सूर्यमण्डलाकृति

Prâṇâg. 2. सूर्यो ऽग्निर्नाम सूर्यमण्डलाकृतिः

सूर्यमरीचि

Yogat. 11. किञ्चित् सूर्यमरीचिवत्

सूर्यराज्य

Maitri. 6. 36. सूर्यराज्यं षोडशिना

सूर्यसङ्काश

Brahmav. 11. सा नाडी सूर्यसङ्काशा (one MS. reads सूत्रसङ्काशा)

सूर्यसहस्र

Gîtâ. 11. 12. दिवि सूर्यसहस्रस्य

सूर्याचन्द्रमस

Chhâ. 7. 12. 1. आकाशे वै सूर्याचन्द्रमसावुभौ
8. 1. 3. सूर्याचन्द्रमसावुभौ
Bṛih. 3. 8. 9. सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः
Mahânâr. 5. 7. सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्
25. 1. एतौ वै सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वानभिजयति
Nṛip. 5. 2. सूर्याचन्द्रमसौ पार्श्वयोः (आसाते)

सूर्यात्मन्

Mukti. 1. *vide* गारुड

सृ

Bṛih. 6. 4. 5. यदोषधीरप्यसरद्यदपः

सृंका

Katha. 1. 16. सृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण
2. 3. नैतां सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तः

सृज्

Ait. 1. 1. स ईक्षत लोकान्नु सृजै
2. स इमाँल्लोकानसृजत
3. लोकपालान्नु सृजै
2. 1. ता एता देवताः सृष्टाः
3. 1. अन्नमेभ्यः सृजै

Chhâ. 6. 2. 3. तत्तेजो ऽसृजत..तदपो ऽसृजत
4. ता अन्नमसृजन्त
7. 11. 1. तेज एव..अपः सृजते (bis).
Bṛih. 1. 2. 4. तमेतावतः कालस्य परस्तादसृजत
5. इदं सर्वमसृजत यदिदं किञ्च
— यद्यदेवासृजत तत्तदत्तुमध्रियत
1. 4. 4. आपिपीलिकाभ्यस्तत्सर्वमसृजत
5. अहं हीदं सर्वमसृक्षि
6. मुखाच्च..हस्ताभ्यां चाग्निमसृजत
— आर्द्रं तद्रेतसो ऽसृजत
— श्रेयसो देवानसृजत
— मर्त्यः सन्नमृतानसृजत
12. स विशमसृजत
13. स शौद्रं वर्णमसृजत पूषणम्
15. आत्मनो यद्यत्कामयते तत्सृजते
1. 5. 21. प्रजापतिर्ह कर्माणि ससृजे तानि सृष्टानि..अस्पर्धन्त
4. 3. 10. रथान् रथयोगान्पथः सृजते
— आनन्दान् मुदः प्रमुदः सृजते
— वेशान्तान् पुष्करिण्यः स्रवन्त्यः सृजते
5. 5. 1. आपः सत्यमसृजन्त
6. 4. 2. स स्त्रियं ससृजे तां सृष्ट्वाध उपास्त
Tait. 2. 6. 1. तपस्तप्त्वेदं सर्वमसृजत..तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्

4. 5. बह्वीः प्रजाः सृजमानां स-
रूपाः
9. अस्मान्मायी सृजते विश्व-
मेतत्
5. 3. भूयः सृष्ट्वा पतयस्तथेशः
tri. 2. 6. बह्वीः प्रजा असृजत
7. 9. बृहस्पतिः..इमामविद्याम-
सृजत्
ṇḍ. 1. 1 7. यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च
ânâr. 23. 1. मानसा ऋषयः प्रजा असृ-
जन्त
śna. 6. 4. स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्र-
द्धाम्
ṇḍa. 3. 23. भूततो ऽभूततो वापि सृज्य-
माने
p. 1. 1. तस्यान्तर्मनसि कामः सम-
वर्त्ततेदं सृजेयमिति
— तेन वै सर्वमिदमसृजत
7. विश्वसृज एतेन वै विश्वमि-
दमसृजन्त यद्विश्वमसृजन्त
तस्माद्विश्वसृजः
2. 2. अनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टम्
4. सर्वाणि भूतानि..अजस्रं
सृजति (bis).
3. 1. माया..सर्वमिदं सृजति
pisut. 9. देवताः कोशांश्च सृष्ट्वा
rahma. 1. कथं सृजन्ति
3. सृजते संहरत्यपि
r. 1. प्रजाः सृजेयेति
pî. 5. अभ्याम्यतेदं सृजेयमिति
— तैरिदमसृजत
— चतुर्दशलोकानसृजत
ish. 22. यत्सृष्टमीश्वरेणासीत्
ā. 3. 10. सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा
4. 7. तदात्मानं सृजाम्यहम्
13. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम्
15. 14. लोकस्य सृजति प्रभुः

सृति

Bṛih. 4. 2. 3. अथैनयोरेषा सृतिः सञ्च-
रणी
6. 2. 2. द्वे सृती अशृणवं पितॄणामहं
देवानामुत
Gîtâ. 8. 27. नैते सृती पार्थ जानन्

सृप्

Chhâ. 1. 12. 4. संरब्धाः सर्पन्ति
8. 6. 2. ता आसु नाडीषु सृप्ताः..
ते ऽमुष्मिन्नादित्ये सृप्ताः
3. तदा नाडीषु सृप्तो भवति
Bṛih. 3. 9. 22. हृदयादिव सृप्तः

सृम्

Râmap. 68. हं सृं भृं वृं लं शृं जृं च

सृष्टि

Bṛih. 1. 4. 5. अहं वाव सृष्टिरस्मि
— ततः सृष्टिरभवत्सृष्ट्यां हा-
स्यैतस्यां भवति य एवं
वेद
Gauḍa. 1. 7. स्वप्नमायास्वरूपेति सृष्टिः
8. इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टिरिति
सृष्टौ विनिश्चिताः
9. भोगार्थं सृष्टिरित्यन्ये
2. 28. सृष्टिरिति सृष्टिविदः
3. 15. सृष्टिर्या चोदितान्यथा
Gopî. 2. जगत्सृष्टिस्थित्यन्तकारि-
ण्यः
Râmap. 14. सृष्टिस्थितिलयस्य

सृष्टिचिन्तक

Gauḍa. 1. 7. मन्यन्ते सृष्टिचिन्तकाः

सृष्टिप्रपञ्च

Sarvop. 4. अव्यक्तादिसृष्टिप्रपञ्चेषु

सृष्टिविद्

Gauḍa. 2. 28. सृष्टिरिति सृष्टिविदः

सेतु

Chhâ. 8. 4. 1. आत्मा स सेतुर्विधृतिः
— नैतं सेतुमहोरात्रे तरतः
2. एतं सेतुं तीर्त्वा (bis).
Bṛih. 4. 4. 22. एष सेतुर्विधरणः Maitri. 7. 7.
Katha. 3. 2. यः सेतुरीजानानाम्
Śwet. 6. 19. अमृतस्य परं सेतुम्
Muṇḍ. 2. 2. 5. अमृतस्यैष सेतुः

सेना

Kaush. 4. 7. अपराजिता सेनेति वा अहमेतमुपासे Bṛih. 2. 1. 6.
Nṛip. 2. 4. अन्यं ते ऽस्मन्निवपन्तु सेनाः
Râmap. 10. शक्तिसेनाकल्पना
— तस्य सेनादिकल्पना
Gîtâ. 1. 21. सेनयोरुभयोर्मध्ये 24; 2. 10.
27. सेनयोरुभयोरपि

सेनानी

Gîtâ. 10. 24. सेनानीनामहं स्कन्दः

सेव्

Tait. 1. 11. 2. यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि
Kaivalya. 1. सदा सद्भिः सेव्यमानाम्
Nṛip. 1. 2. यक्षगन्धर्वाप्सरोगणैः सेवितमन्तरिक्षम्
— वसुरुद्रादित्यैः सर्वैः सेवितं दिवम्
Râmap. 82. प्रागुक्तमृषिसेवितम्
Gîtâ. 14. 26. भक्तियोगेन सेवते

सेवक

Râmap. 82. सेवकानां मोक्षकरम्

सेवा

Gîtâ. 4. 34. परिप्रश्नेन सेवया

सेवापर

Mukti. 1. 49. सेवापराय शिष्याय

सेवित्व

Gîtâ. 13. 10. विविक्तदेशसेवित्वम्

सैतव

Bṛih. 2. 6. 2. गौतमः सैतवप्राचीनयोग्याभ्याम्
— सैतवप्राचीनयोग्यौ पाराशर्यात्
4. 6. 2. गौतमः सैतवात्
— सैतवः पाराशर्यायणात्

सैन्धव

Bṛih. 6. 1. 13. यथा महासुहयः सैन्धवः
Maitri. 6. 35. तस्मिन्नेव यजमानाः सैन्धव इव व्लीयन्ते

सैन्धवखिल्य

Bṛih. 2. 4. 12. सैन्धवखिल्य उदके प्रास्त

सैन्धवघन

Bṛih. 4. 5. 13. यथा सैन्धवघनो ऽनन्तरो ऽबाह्यः

सैन्य

Gîtâ. 1. 7. नायका मम सैन्यस्य

सोपलम्भ

Gauḍa. 4. 87. सवस्तु सोपलम्भं च
— अवस्तु सोपलम्भं च

सोम

Kaush. 2. 9. सोमो राजासि
4. 19. बृहत्पाण्डरवासः सोम राजेति Bṛih. 2. 1. 3.
(बृहत्)

ihâ. 2. 22. 1. निरुक्तः सोमस्य
3. 9. 1. तन्मरुत उपजीवन्ति सोमेन मुखेन
8. मरुतामेवैको भूत्वा सोमेनैव मुखेन
5. 4. 2. तस्या आहुतेः सोमो राजा संभवति
5. 5. 2. सोमं राजानं जुह्वति Brih. 6. 2. 10.
5. 10. 4. एष सोमो राजा
ih. 1. 4. 6. आर्द्रं तद्रेतसो ऽसृजत तदु सोमः
— सोम एवान्नम्
11. इन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः
2. 1. 3. बृहन्पाण्डरवासाः सोमो राजेति
3. 9. 23. स सोमः कस्मिन्प्रतिष्ठितः
6. 2. 9. तस्या आहुत्यै सोमो राजा संभवति
16. यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेति.. भक्षयन्ति
6. 3. 3. सोमाय स्वाहा
vet. 2. 6. सोमो यत्रातिरिच्यते
aitri. 6. 10. अग्निर्वै देवानामन्नादः सोमो ऽन्नम्
24. यत्.. सोमे ऽग्नौ विद्युति विभाति
35. यस्य हि सोमः प्राणा वा अप्ययङ्कुराः
38. रविमध्ये स्थितः सोमः सोममध्ये हुताशनः
7. 2. भीष्मो ऽग्यानः सोमो रुद्रा दक्षिणत उद्यन्ति
upd. 2. 1. 5. सोमः पर्जन्यः
6. सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः
ahânâr. 6. 2. जातवेदसे सुनवाम सोमम्
131

Mahânâr. 9. 1. सोमः पवित्रमत्येति रेभन् 17. 8.
17. 6. यस्ते सोम प्रजावत्सो ऽभि सो अहम्
— यांस्ते सोम प्राणांस्ताञ्जुहोमि
— ते सोमं प्राप्नुवन्ति 7, 8.
20. 2. सोमं पिब वृत्रहन्
Nrip. 1. 4. तारापतिः सोमः
4. 3. यो वै नृसिंहः.. यश्च सोमस्तस्मै वै नमो नमः (29).
5. 5. स सोमं स्तम्भयति
Siras. 2. यो वै रुद्रः.. यश्च सोमः
3. अपाम सोमम्
Haṁsa. 2. सूर्याय सोमाय
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः.. यश्च सोमः (28).
Gîtâ. 15. 13. सोमो भूत्वा रसात्मकः

सोमदेवत

Brih. 3. 9. 23. किंदेवतो ऽस्यामुदीच्यां दिश्यसीति सोमदेवत इति

सोमपा

Mahânâr. 20. 5. सोमपा अभयंकरः
Gîtâ. 9. 20. त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापाः

सोमपान

Mahânâr. 25. 1. यत्पिबति तदस्य सोमपानम्

सोमपूत

Nrip. 5. 3. स सोमपूतो भवति Siras. 7; Mahâ. 4.

सोमराजन्

Prâṇâg. 1. या ओषधयः सोमराज्ञीः (bis).

सोमराज्य

Maitri 6. 36. सोमराज्यमुक्थेन

सोमलोक

Praśna. 5. 4. अन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते सोमलोकं स सोमलोके विभूतिमनुभूय

Nrip. 2. 1. यावस्थाने ऽस्य चतुर्थ्यर्द्धमात्रा सर्वं सोमलोकः Nrisut. 3.

Nâda. 14. सोमलोके महीयते

सोमसंज्ञ

Maitri. 6. 10. सोमसंज्ञो ऽयं भूतात्मा

सोमसवन

Chhâ. 8. 5. 3. अश्वत्थः सोमसवनः

सोमसूर्य

Śiras. 3. सोमसूर्यः पुरस्तात्

सोमसूर्याग्नितेजस्

Brahmav. 9. तिस्रो मात्रास्तथा ज्ञेयाः सोमसूर्याग्नितेजसः

सोमांशु

Kaush. 1. 5. सोमांशव उपस्तरणम्

सोम्य

Chhâ. 4. 4. 4. किंगोत्रो नु सोम्यासीति
5. समिधं सोम्याहर
— इमाः सोम्यानुसंव्रज
4. 5. 1. प्राप्ताः सोम्य सहस्रं स्मः
4. 6. 3. ब्रह्मणः सोम्य ते पादं ब्रवाणि 4. 7. 3; 4. 8. 3.
4. 9. 2. ब्रह्मविदिव वै सोम्य भासि
4. 14. 1. एषा सोम्य ते ऽस्मद्विद्या
2. ब्रह्मविद इव सोम्य ते मुखं भाति
— किं नु सोम्य किल ते ऽवोचन्निति
3. लोकान्वाव किल सोम्य ते ऽवोचन्
6. 1. 1. न वै सोम्य &c. (*passim*)

Brih. 3. 2. 13. आहर सोम्य हस्तम्

Mund. 2. 1. 1. तथाक्षराद्विविधाः सोम्य भावाः
10. सो ऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सोम्य
2. 2. 2. तदेतद्ब्रह्म सोम्य विद्धि
3. लक्ष्यं .. सोम्य विद्धि

Praśna. 4. 7. यथा सोम्य वयांसि &c.
10. अक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य
6. 2. अन्तःशरीरे सोम्य स पुरुषः

सोहम्भाव

Skanda. 11. सोहम्भावेन पूजयेत्

सौकर

Râmap. 73. बीजं च सौकरम्

सौकरायण

Brih. 4. 6. 2. माध्यन्दिनायनः सौकरायणात्
— सौकरायणः काषायणात्

सौक्ष्म्य

Maitri. 2. 7. अव्यक्तत्वात् सौक्ष्म्यात्

Gîtâ. 13. 32. सौक्ष्म्यात् .. नोपलिप्यते

सौक्ष्म्यत्व

Maitri. 6. 14. सौक्ष्म्यत्वादेतत्प्रमाणम्

सौन्दर्य

Gopî. 5. सर्वलोकोत्कृष्टसौन्दर्यक्रीडाभोगाः

सौभग

Mahânâr. 6. 7. अस्मभ्यं च सौभगमायजस्व
9. 6. प्रजावत्सावीः सौभगम् 17. 7

सौभद्र

Gîtâ. 1. 6. सौभद्रो द्रौपदेयाश्च
18. सौभद्रश्च महाबाहुः

सौभर

ih. 2. 6. 3. वत्सनपाद्वाभ्रवः पथः सौभरात् 4. 6. 3.
— पन्थाः सौभरो ऽयास्यादाङ्गिरसात् 4. 6. 3.

सौभाग्य

ukti. 1. 40. *vide* मुक्तिका
1. *vide* बह्वृच

सौमदत्ति

tâ. 1. 8. सौमदत्तिस्तथैव च

सौमित्रि

mot. 3. सौमित्रिर्विश्वभावनः
ukti. 1. 1. सीताभरतसौमित्रिशत्रुघ्नाद्यैः

सौम्य

ih. 3. 1. 2. एताः सौम्योदज
aitri. 6. 14. सार्पाद्यं श्रविष्ठार्द्धान्तं सौम्यम्
38. सौरसौम्याग्नेयसात्त्विकानि
ahânâr. 19. 1. तिलाः सौम्या वशानुगाः
ras. 3. सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषम्
— सौम्यं सौम्येन . . प्रसति
amsa. 2. सौम्ये रतिप्रीतिः
tâ. 11. 51. रूपं तव सौम्यं जनार्दन

सौम्यगुणत्व

rbha. 2. परस्परं सौम्यगुणत्वात् षड्विधो रसः

सौम्यत्व

tâ. 17. 16. मनःप्रसादः सौम्यत्वम्

सौम्यवपुस्

tâ. 11. 50. भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा

सौर

itri. 6. 2. स एषो ऽग्निर्दिवि श्रितः सौरः

Maitri. 6. 30. सौरं द्वारं भित्त्वा
38. सौरसौम्याग्नेयसात्त्विकानि

सौर्यायणिन्

Praśna. 1. 1. सौर्यायणी च गार्ग्यः 4. 1.

सौवर

Brih. 2. 5. 9. शब्दः सौवरः . . पुरुषः

स्कन्द्

Brih. 6. 4. 4. सुप्तस्य वा जाग्रतो वा रेतः स्कन्दति
5. यन्मे ऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीत्

स्कन्द

Chhâ. 7. 26. 2. तं स्कन्द इत्याचक्षते
Siras. 2. यो वै रुद्रः . . यश्च स्कन्दः
Mukti. 1. 34. दक्षिणा शरभं स्कन्दम्
1. *vide* सरस्वतीरहस्य
Gîtâ. 10. 24. सेनानीनामहं स्कन्दः

स्कन्ध

Chhâ. 2. 23. 1. त्रयो धर्मस्कन्धाः
Maitri. 7. 11. स्कन्धात्स्कन्धमनुसरति
Kâlâg. 1. शिरोललाटवक्षःस्कंधेषु

स्कम्भ

Chûl. 11. स्कम्भो ऽथ पलितस्तथा

स्कम्भन

Mahânâr. 20. 13. वरुणस्य स्कंभनमसि

स्कम्भसर्जन

Mahânâr. 20. 13. वरुणस्य स्कंभसर्जनमसि

स्तन्

Chhâ. 2. 3. 1. स्तनयति स प्रतिहारः 2. 15. 1.
7. 11. 1. स्तनयति वर्षिष्यति वै
Brih. 1. 1. 1. यद्विजृम्भते तत्स्तनयति

स्तन

Brih. 1. 5. 2. स्तनं वानुधापयन्ति
5. 8. 1. तस्याश्चत्वारः स्तनाः
— द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति
6. 4. 5. अन्तरेण स्तनौ वा भ्रुवौ वा निमृंज्यात्
27. एनं मात्रे प्रदाय स्तनं प्रयच्छति
— यस्ते स्तनः शशयः
Tait. 1. 6. 1. य एष स्तन इवालम्बते
Garbha. 4. पीता नानाविधाः स्तनाः
Brahma. 1. तमेव स्तन इव लंबते
Râmap. 22. दक्षवामयोः स्तनयोः

स्तनयित्नु

Kaush. 4. 2. स्तनयित्नौ शब्दः
6. य एवैष स्तनयित्नौ पुरुषस्तमेवाहमुपासे
Chhâ. 8. 12. 2. अभ्रं विद्युत्स्तनयित्नुरशरीराण्येतानि
Brih. 2. 5. 9. स्तनयित्नुः सर्वेषां भूतानां मध्वस्य स्तनयित्नोः सर्वाणि..मधु
— स्तनयित्नौ..अमृतमयः पुरुषः
3. 9. 6. स्तनयित्नुरेवेन्द्रः..कतमः स्तनयित्नुः
5. 2. 3. दैवी वागनुवदति स्तनयित्नुर्ददद इति

स्तन्य

Yogat. 3. यः स्तन्यं पूर्वं पीत्वापि (3 MSS. have स्तनम्)

स्तंबशाखा

Maitri. 4. 3. स्तंबशाखेवापराणि

स्तम्भ्

Chhâ. 6. 1. 2. अनूचानमानी स्तब्धः 3.

Swet. 3. 9. वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः Mahânâr. 10. 4
Nrip. 5. 5. सो ऽग्निं स्तंभयति
— स वायुं स्तंभयति
— स आदित्यं स्तंभयति
— स सोमं स्तंभयति
— स उदकं स्तंभयति
— स सर्वान्देवान् स्तंभयति
— स सर्वान् ग्रहान् स्तंभयति
— स विषं स्तंभयति
Gîtâ. 16. 17. आत्मसम्भाविताः स्तब्धा
18. 28. अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः

स्तु

Chhâ. 1. 3. 8. येन साम्ना स्तोष्यन् स्यात्
10. येन छन्दसा स्तोष्यन् स्यात्
— येन स्तोमेन स्तोष्यमाणः स्यात्
12. आत्मानमन्तत उपसृत्य स्तुवीत
— यत्कामः स्तुवीत
1. 10. 8. उद्गातॄनास्तावे स्तोष्यमाणानुपोपविवेश
1. 11. 3. एत एव समतिसृष्टाः स्तुवताम्
1. 12. 4. बहिष्पवमानेन स्तोष्यमाणाः
2. 22. 2. एतानि मनसा ध्यायन्नप्रमत्तः स्तुवीत
Brih. 3. 1. 10. कति..स्तोत्रियाः स्तोष्यति
Maitri. 6. 9. ध्यानं प्रयोगस्थं मनो विद्वद्भिष्टुतम्
34. तस्मादग्निः..स्तोतव्यः (bis).
38. न क्रोधान् स्तुन्वानः (न क्रोधन् क्रोधम् MS.)

...śna. 2. 4. ते प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति
...p. 1. 1. स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः 2. 4; Nṛisut. 1.
2. 4. स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं युवानम्
— मृडा जरित्रे सिंह स्तवानः
4. 3. कैर्मन्त्रैर्देवः स्तुतः प्रीतो भवति
— एतैर्द्वात्रिंशन्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तुवध्वम्
— एतैर्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तौति स देवं पश्यति Râmot. 5.
...hâl. 4. स्तूयते पुरुषार्थं च (so MSS., but Nârâyaṇa सूयते)
13. स्तूयते मंत्रसंयुक्तैरथर्वविहितैः
...iras. 1. ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुवन्ति
...yâsa. 4. स्तूयमानो न तुष्येत Kaṭhaśru. 4.
Krish. 8. स्तुवन्ति सततं यन्मे
Râmap. 34. अन्ति स्तुत्य देवाद्याः
35. स्तुवन्त्येत्रं हि ऋषयः
Râmot. 5. कैर्मन्त्रैः स्तुतः..प्रीतो भवति
— तुष्टाव परमेश्वरम्
— एतैः सप्तचत्वारिंशन्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तुवन्
Mukti. 1. 2. स्तूयमानमहर्निशम्
4. स्तुवन्पप्रच्छ मारुतिः
...itâ. 11. 21. स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः

स्तुतशस्त्र

...hhâ. 8. 17. 3. स्तुतशस्त्रैरेव तदेति

स्तुति

Maitri. 5. 1. अथ यथेयं कौत्सायनी स्तुतिः
Râmap. 30. स्तुतिं चक्रुश्च जगतः पतिम्
Gitâ. 11. 21. स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः

स्तृ

Kaush. 2. 13. पर्वतौ..तुस्तूर्षमाणौ न हैनं स्तृण्वीयाताम्
Bṛih. 6. 4. 12. प्रतिलोमं शरबर्हिः स्तीर्त्वा

स्तेन

Chhâ. 5. 10. 9. स्तेनो हिरण्यस्य
5. 11. 5. न मे स्तेनो जनपदे
Bṛih. 4. 3. 22. स्तेनो ऽस्तेनो भवति
Mahânâr. 5. 11. स्तेनो भ्रूणहा गुरुतल्पगः
Gîtâ. 3. 12. यो भुंक्ते स्तेन एव सः

स्तेय

Kaush. 3. 1. न स्तेयेन न भ्रूणहत्यया
Chhâ. 6. 16. 1. स्तेयमकार्षीत्

स्तोत्र

Bṛih. 1. 3. 28. यानीतराणी स्तोत्राणि

स्तोत्रिया

Bṛih. 3. 1. 10. कति .. स्तोत्रियाः स्तोष्यति

स्तोभ

Chhâ. 1. 13. 3. अनिरुक्तस्त्रयोदशस्तोभः

1. स्तोम (= स्तुत्य)

Kaṭha. 2. 11. स्तोममहदुरुगायम्

2. स्तोम

Chhâ. 1. 3. 10. येन स्तोमेन स्तोष्यमाणः स्यात्तं स्तोममुपधावेत्
Mahânâr. 5. 4. इमं मे..स्तोमं सचता

Maha. 1. तस्य . . यज्ञः स्तोममुच्यते (so Nârâyaṇa and some MSS.; others यज्ञस्तोमम्)

स्त्री

Ait. 4. 1. तद्यथा स्त्रियां सिंचति
2. तत्स्त्रिया आत्मभूयं गच्छति
3. तं स्त्री गर्भं बिभर्ति
Kaush. 1. 7. केन स्त्रीनामानीति वाचेति
Kena. 25. स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम
Chhâ. 2. 13. 1. स्त्रिया सह शेते स उद्गीथः
5. 2. 8. यदि स्त्रियं पश्येत् समृद्धं कर्मेति विद्यात्
9. यदा . . स्त्रियं स्वप्नेषु पश्यति
8. 2. 9. सङ्कल्पादेव स्त्रियः समुत्तिष्ठन्ति
8. 12. 3. रममाणः स्त्रीभिर्वा
Brih. 1. 4. 3. तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते
3. 9. 11. तस्य का देवतेति स्त्रिय इति
4. 1. 6. मनसा वै स्त्रियमभिहार्यते
4. 3. 13. उतेव स्त्रीभिः सह मोदमानः
21. यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तः
6. 4. 2. स स्त्रियं ससृजे
— तस्मात्स्त्रियमध उपासीत
3. आसां स स्त्रीणां सुकृतं वृंक्ते . . आस्य स्त्रियः सुकृतं वृञ्जते
6. श्रीर्ह वा एषा स्त्रीणाम्
Swet. 4. 3. त्वं स्त्री त्वं पुमानसि
5. 10. नैव स्त्री न पुमानेषः
Kaivalya. 12. स्त्र्यन्नपानादिविचित्रभोगैः
Sims. 1. पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहम्
Garbha. 3. मातू रेतोतिरेकात् स्त्री
Prâṇâg. 2. स्त्रियस्तिस्रः
Krish. 2. गोपांस्तस्त्रीश्च नो कुरु
14. शताधिकाः स्त्रियस्तथा
15. ब्रह्मरूपा ऋचः स्त्रियः
Râmap. 8. पुंस्त्र्यंगाद्यादिकल्पना
Gîtâ. 1. 41. स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय
9. 32. स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रा

स्त्रीपुंस्

Brih. 1. 4. 3. यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ
Nrip. 1. 7. स्त्रीपुंसोर्वा

स्त्रीपुन्नपुंसक

Maitri. 6. 5. स्त्रीपुन्नपुंसकेति लिङ्गवत्
Gauḍa. 2. 27. स्त्रीपुन्नपुंसकं लैङ्गाः

स्त्रीप्रज्ञ

Brih. 4. 5. 1. स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायनी

स्त्रीलोक

Chhâ. 8. 2. 9. स्त्रीलोकेन सम्पन्नो महीयते

स्त्रीलोककाम

Chhâ. 8. 2. 9. यदि स्त्रीलोककामो भवति

स्त्रीशूद्र

Nrip. 1. 3. सावित्री प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति
— सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि जानीयात् स्त्रीशूद्रः

स्थण्डिल

Chhâ. 5. 2. 8. चर्मणि वा स्थण्डिले वा
Jâbâla. 6. शून्यागारदेवगृहतृणकूटवल्मीकवृक्षमूलकुलालशालाग्निहोत्रनदीपुलिनगिरिकुहरकन्दरकोटरनिर्झरस्थण्डिलेषु

स्थल

3. 5. स्थलमिति भस्म
l. 2. ललाटादिद्वादशस्थलेषु

स्थविष्ठ

l. 6. 5. 1. यः स्थविष्ठो धातुः 2, 3.
ri. 2. 6. यो ऽयं स्थविष्ठो धातुरन्नस्य
6. 6. एषैवास्य . . स्थविष्ठा तनूः

स्था

sh. 2. 4. अपि वाताद्वा तिष्ठेत् संभाषमाणः
4. 19. पिंगलस्याणिम्ना तिष्ठन्ति
l. 1. 3. 6. अन्नं थमन्नि हीदं सर्वं स्थितम्
3. 11. 1. एकल एव मध्ये स्थाता
6. 11. 1. मोदमानस्तिष्ठति
6. 12. 2. एतस्य . . अणिम्न एवं महान्यग्रोधस्तिष्ठति
7. 8. 1. बलेन वै पृथिवी तिष्ठति
— बलेन लोकास्तिष्ठति
8. 6. 1. ताः पिङ्गलस्याणिम्नस्तिष्ठन्ति
. 2. 3. 1. द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे . . स्थितं च यच्च
2. एतत्स्थितमेतत्सत् . . एतस्य स्थितस्यैतस्य सत एष रसः 4.
3. 5. 1. पाण्डित्यं निर्विद्य बाल्येन तिष्ठासेत्
3. 7. 3. यः पृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अन्तरः (similarly, in 4—23.)
3. 8. 9. सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः
— द्यावापृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः

Brih. 3. 8. 9. संवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्ति
3. 9. 28. परायणं तिष्ठमानस्य
4. 3. 9. तस्मिन्सन्ध्ये स्थाने तिष्ठन्
20. तावताणिम्ना तिष्ठन्ति
Isâ. 4. तद्धावतो ऽन्यानत्येति तिष्ठत्
Katha. 4. 6. गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तम्
7. गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तीम्
12. मध्य आत्मनि तिष्ठति
6. 9. न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य Swet. 4. 20; Mahânâr. 1. 11.
Śwet. 2. 8. त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरम्
16. प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति 3. 2; Śiras. 5.
3. 2. एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः
9. वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः Mahânâr. 10. 4.
16. सर्वमावृत्य तिष्ठति Gîtâ. 13. 13.
Maitri. 1. 2. ऊर्ध्वबाहुस्तिष्ठति
2. 4. स्वे महिम्नि तिष्ठति 6. 28.
6. प्रजापतिर्वा एको ऽग्रे ऽतिष्ठत्
— स्थाणुरिव तिष्ठमानाः
6. 19. निःसङ्कल्पस्ततस्तिष्ठेत्
20. प्रसन्नात्मात्मनि स्थित्वा 34.
28. स्वे महिम्नि तिष्ठमानं दृष्ट्वा
30. अपरिमितं सुखमाक्रम्य तिष्ठति
— निरध्यवसायो निःसङ्कल्पो निरभिमानस्तिष्ठेत्
— दीपवद्यः स्थितो हृदि
— ऊर्ध्वमेकः स्थितस्तेषाम्

Maitr. 6. 36. इमौ स्थितावात्मशुचौ
38. चैतन्यं स्वे महिम्नि तिष्ठमानं पश्यति
— रविमध्ये स्थितः सोमः
— तेजोमध्ये स्थितं सत्त्वं सत्त्वमध्ये स्थितो ऽच्युतः
Mund. 2. 1. 9. येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा Mahânâr. 8. 5.
Mahânâr. 2. 1. प्रत्यङ्मुखास्तिष्ठति सर्वतोमुखः
11. 6. तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः Vâsu. 3.
8. नाभ्यामुपरि तिष्ठति
10. विभर्जास्तिष्ठन्नाहारम्
20. 6. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा
Praśna. 2. 10. आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति
Gauḍa. 1. 1. एक एव त्रिधा स्थितः
28. सर्वस्य हृदये स्थितम्
3. 22. कथं स्थास्यति निश्चलः 4. 8.
4. 63. दिक्षु वै दशसु स्थितान् 65.
Nṛip. 1. 7. य इह स्थातुमपेक्षते
2. 4. सर्वगः सर्वतस्तिष्ठति
Brahmav. 10. प्रणवस्योपरि स्थिता
12. सर्वं व्याप्यैव तिष्ठति
Śiras. 4. ईशानमिन्द्र तस्थुषः
5. एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्थौ
— बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे (bis).
Śikhâ. 2. परमात्मनि स्थाप्य
Brahma. 2. हृदि चैतन्ये तिष्ठति
Prâṇâg. 2. मूर्द्धनि तिष्ठति
— मुखे तिष्ठति
— हृदये तिष्ठति
— नाभ्यां तिष्ठति
Brahmab. 45. [illegible]तिष्ठति पुष्करे

Amrita. 3. स्थित्वा रथपथस्थानम् (so 4 MSS. and Nârâyaṇa.)
18. उत्तराभिमुखः स्थितः
35. सदा व्यावृत्य तिष्ठति
Dhyâna. 4. नादं बिन्दोः परे स्थितम्
8. ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः Gî 5. 20.
9. स बाह्याभ्यन्तरे स्थितः
21. योगी योगपदे स्थितः
Tejo. 1. विश्वातीतं हृदि स्थितम्
9. तद्व्योम परमं स्थितम्
Yogat. 6. स्थिताः सर्वे त्र्यक्षरे
9. हृदि स्थाने स्थितं पद्मम्
— तस्य मध्ये स्थितं मनः
Nyâsa. 5. श्रोत्रे स्थाप्य तथा भुवि
Gopî. 5. सर्वान् वेदान् .. ब्रह्मणो स्थापयामास
Râmap. 17. स्थितानि च प्रहतान्येव
30. पतिं कल्पतरौ स्थितम्
34. तेन सार्द्धं सुखं स्थिताः
42. सुग्रीवं स्थापयेत्ततः
47. विभीषणं तत्र स्थाप्य
Mukti. 2. 19. यस्तिष्ठति गतव्यथः
37. मनो मूलमिदं स्थितम्
Gîtâ. 1. 14. महति स्यन्दने स्थितौ
21. रथं स्थापय मे ऽच्युत
24. स्थापयित्वा रथोत्तमम्
26. तत्रापश्यत्स्थितान्
53. यदा स्थास्यति निश्चला
72. स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि
3. 5. न हि कश्चित् .. जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्
5. 18. येषां साम्ये स्थितं मनः
19. तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः
6. 10. रहसि स्थितः
14. ब्रह्मचारिव्रते स्थितः

[illegible]	6.	21.	यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः
		22.	यस्मिन् स्थितो न . . विचाल्यते
	10.	16.	लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि
		42.	विष्टभ्याहमिदं . . स्थितो जगत्
	13.	16.	विभक्तमिव च स्थितम्
		27.	तिष्ठन्तं परमेश्वरम्
	14.	18.	मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः
	15.	10.	उत्क्रामन्तं स्थितं वापि
	18.	61.	हृद्देशे ऽर्जुन तिष्ठति
		73.	स्थितो ऽस्मि गतसन्देहः

स्थाणु

[illegible]hâ. 5.	2.	3.	यथाग्नेनश्छुष्काय स्थाणवे ब्रूयात्
[illegible]h. 6.	3.	7.	अपि य एनं शुष्के स्थाणौ निषिञ्चेत् 8—12.
[illegible]tha.	5.	7.	स्थाणुमन्ये ऽनुसंयन्ति
[illegible]aitri.	2.	6.	स्थाणुरिव तिष्ठमानाः
[illegible]tâ.	2.	24.	नित्यः सर्वगतः स्थाणुः

स्थान

[illegible]ush.	1.	2.	तेषु तेषु स्थानेषु प्रत्याजायते
[illegible]hâ. 5.	10.	8.	एतत्तृतीयं स्थानम्
[illegible]h. 2.	4.	1.	उद्यास्यन्वा अरे ऽहमस्मात्स्थानात्
	4. 3.	9.	एतस्य पुरुषस्य द्वे एव स्थाने
		—	सन्ध्ये स्थाने तिष्ठन्नेते उभे स्थाने पश्यति
		11.	शुक्रमादाय पुनरेति स्थानम्
	4. 5.	2.	प्रव्रजिष्यन्वा अरे ऽहमस्मात्स्थानादस्मि

Śwet.	5.	11.	स्थानेषु रूपाण्यभिसंप्रपद्यते
Maitri.	1.	4.	स्थानादपसरणं सुराणाम्
	6.	23.	मूर्ध्नि स्थाने ततो ऽभ्यसेत्
Praśna.	3.	12.	उत्पत्तिमायतिं स्थानम्
Gauḍa.	2.	5.	स्वप्नजागरिते स्थाने
		11.	उभयोरपि . . स्थानयोः
Nṛip.	2.	3.	उग्रं प्रथमं स्थानं जानीयात्
		—	वीरं द्वितीयं स्थानम्
		—	अहमित्येकादशं स्थानं जानीयात्
Brahmav.		3.	स्थानं कालं लयं तथा
Kshur.		16.	तयोर्मध्ये वरं स्थानम्
Garbha.		5.	त्रीणि स्थानानि भवन्ति
Brahma.		2.	पुरुषस्य चत्वारि स्थानानि भवन्ति
Amṛita.		34.	प्राण आद्यो हृदि स्थाने
Dhyâna.		12.	कुंभकेन हृदि स्थाने
Tejo.		5.	परं गुह्यमिदं स्थानम्
		6.	त्र्यंबकं त्रिगुणं स्थानम्
		7.	उपाधिरहितं स्थानम्
Yogat.		9.	हृदि स्थाने स्थितं पद्मम्
Piṇḍa.		2.	कस्मिन् स्थाने व्यवस्थितः
Kâlâg.		1.	किं द्रव्यं किं स्थानं कति प्रमाणम्
Jâbâla.		2.	कतमं चास्य स्थानं भवति Râmot. 4.
Vâsu.		1.	द्रव्यमंत्रस्थानादिसहितम्
Gîtâ.	5.	5.	यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानम्
	8.	28.	योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्
	9.	18.	प्रभवः प्रलयः स्थानम्
	18.	62.	स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्

स्थानत्रय

Brahmab.	11.	स्थानत्रयाद्व्यतीतस्य

स्थानिधर्म

Gauḍa.	2.	8.	अपूर्वं स्थानिधर्मो हि

स्थानीय

Maitri. 7. 11. एतत्..प्रकाशप्रक्षेपकौष्ण्यस्थानीयम्

स्थाने

Gîtâ. 11. 36. स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या

स्थालीपाक

Brih. 6. 4. 19. स्थालीपाकावृताज्यं चेष्टित्वा स्थालीपाकस्योपघातं जुहोति

Maitri. 6. 36. *vide* आदि

स्थावर

Ait. 5. 3. यत्किंचेदं प्राणि जंगमं च पतत्रि च यच्च स्थावरम्

Śwet. 3. 18. स्थावरस्य चरस्य च

Chûl. 17. यस्मिन् सर्वमिदं..स्थावरजङ्गमम्

Gâruḍa. 2. स्थावराणां जङ्गमानाम् (so margin of 2 MSS.)

Vâsu. 3. जङ्गमस्थावरेषु च

Râmot. 5. यत्स्थावरजंगमात्मकम् (18)

Gîtâ. 10. 25. स्थावराणां हिमालयः

13. 26. सत्त्वं स्थावरजंगमम्

स्थावरान्त

Chûl. 16. ब्रह्माद्यं स्थावरान्तं च

स्थितधी

Gîtâ. 2. 54. स्थितधीः किं प्रभाषेत

56. स्थितधीर्मुनिरुच्यते

स्थितप्रज्ञ

Gîtâ. 2. 54. स्थितप्रज्ञस्य का भाषा

55. स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते

स्थिति

Brih. 4. 1. 7. स्थितिरित्येनदुपासीत

Śwet. 6. 16. संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः

Gauḍa. 2. 28. स्थितिरिति स्थितिविदः

3. 9. गत्यागमनयोरपि स्थितौ

4. 80. निश्चला हि तदा स्थितिः

Parama. 1. तेषां का स्थितिः

2. तस्य स्वयमेव स्थितिरि

Gopî. 2. जगत्सृष्टिस्थित्यन्तकारिण्यः

Râmap. 14. सृष्टिस्थितिलयस्य च

Râmot. 3. उत्पत्तिस्थितिसंहारकारि

Mukti. 1. 8. वक्ष्यामि वेदान्तस्थितिम्

2. 63. स्थितिः सम्मृष्टबीजवत्

Gîtâ. 2. 72. एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ

6. 33. स्थितिं स्थिराम्

17. 27. यज्ञे तपसि दाने च स्थिति

स्थितिता

Brih. 4. 1. 7. का स्थितिता..हृदयमेव

स्थितिविद्

Gauḍa. 2. 28. स्थितिरिति स्थितिविदः

स्थिर

Brih. 3. 9. 28. किनाटं स्नावतत्स्थिरम्

Katha. 6. 11. स्थिरामिन्द्रियधारणाम्

Maitri. 2. 4. स्थिरः शाश्वतः 6. 28.

7. शुद्धः स्थिरो ऽचलः

6. 23. स्थिरमचलममृतमच्युत

7. 3.

Nrip. 1. 1. स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनू
2. 4; Nrisut. 1.

Gîtâ. 6. 11. स्थिरमासनमात्मनः

13. धारयन्नचलं स्थिरः

33. स्थितिं स्थिराम्

12. 9. अथ चित्तं समाधातुं ... स्थिरम्

17. 8. रस्याः स्निग्धाः स्थिरा ... आहाराः

स्थिरबुद्धि

[illegible]na. 8. स्थिरबुद्धिरसम्मूढः
Gîtâ. 5. 20.

स्थिरमति

[illegible] 12. 19. अनिकेतः स्थिरमतिः

स्थिरमात्रादृढ

[illegible]hur. 6. स्थिरमात्रादृढं कृत्वा

स्थिरस्थ

[illegible]rama. 3. ज्ञाने स्थिरस्थः

स्थिरस्थायिन्

[illegible]rita. 22. स्थिरस्थायी विनिष्कम्पः

स्थिरा (=ज)

[illegible]map. 79. अथो ऽथ स्थिरा स ए (5 MSS. read अथोऽस्य-स्थिरेच्छया)

स्थूणा

[illegible]h. 2. 2. 1. प्राणाः स्थूणाऽन्नं दाम

स्थूल

[illegible]et. 5. 12. स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि चैव रूपाणि
[illegible]uda. 1. 4. स्थूलं तर्पयते विश्वम्
2. 23. स्थूल इति च तद्विदः
[illegible]sut. 2. स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिः (ter); 3 (4 times).
[illegible]as. 2. यो वै रुद्रः. . यच्च स्थूलम्
[illegible]hâ. 1. स्थूलह्रस्वदीर्घप्लुतः
[illegible]rita. 21. स्थूलातिस्थूलमात्राणाम्
[illegible]o. 1. स्थूलं सूक्ष्मं परं च यत्
[illegible]vop. 1. शब्दादीन् विषयान् स्थूलान्

स्थूलत्व

[illegible]sut. 1. स्थूलत्वात् स्थूलभुक्त्वाच्च
2. स्थूलत्वात् सूक्ष्मत्वाद्बीजत्वात् साक्षित्वाच्च (ter)

स्थूलप्रज्ञ

Nrisut. 1. जागरितस्थानः स्थूलप्रज्ञः
— न स्थूलप्रज्ञं न सूक्ष्मप्रज्ञम्

स्थूलभुक्त्व

Nrisut. 1. स्थूलत्वात् स्थूलभुक्त्वाच्च

स्थूलभुज्

Mâṇḍû. 3. स्थूलभुग्वैश्वानरः Nrip. 4. 1; Râmot. 3.
Gauḍa. 1. 3. विश्वो हि स्थूलभुङ् नित्यम्
Nrisut. 1. स्थूलभुक् चतुरात्मा

स्थैर्य

Gîtâ. 13. 7. स्थैर्यमात्मविनिग्रहः

स्ना

Śiras. 7. स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति Mahâ. 4; Kâlâg. 2; Vâsu. 4.

स्नातक

Chûl. 8. स्नातकाध्वर्यवो हये
Jâbâla. 4. स्नातको वा ऽस्नातको वा

स्नान

Nyâsa. 4. स्नानं दानं तथा शौचम् Kathaśru. 4.
Aruṇeya. 2. त्रिसन्ध्यादौ स्नानमाचरेत्
Skanda. 12. स्नानं मनोमलत्यागः

स्नानद्रव्य

Nyâsa. 4. स्नानद्रव्यमश्रारितम्

स्नानशाटी

Nyâsa. 4. पवित्रं स्नानशाटीं च Kathaśru. 4.

स्नायु

Maitri. 1. 3. *vide* संघात
Garbha. 5. सनवकं स्नायुशतम्

स्नावन्

Brih. 3. 9. 28. किनाटं स्नावतस्थिरम् (so MSS. and printed text ; Bhâshya has स्नावत्)

Tait. 1. 7. 1. चर्म मांसं स्नावास्थिमज्जा

Garbha. 2. मेदुसः स्नावा स्नाव्नो ऽस्थीनि

स्निह्

Gîtâ. 17. 8. रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः

स्नुषा

Brahma. 2. तत्र . . स्नुषा न स्नुषा

स्नेह

Maitri. 3. 5. अन्तस्तृष्णा स्नेहो रागः

6. 36. वर्त्त्याधारस्नेहयोगात्

Nrip. 2. 4. स्नेहो यथा पललपिण्डमोतं प्रोतमनुप्राप्तं व्यतिषक्तः

Siras. 4. यथा स्नेहेन पललपिण्डमिव

स्पन्द्

Gauda. 3. 29. स्पन्दते मायया मनः (bis).

4. 47. अलातस्पन्दितं यथा — विज्ञानस्पन्दितं तथा

49. अलाते स्पन्दमाने वै

51. विज्ञाने स्पन्दमाने वै

72. चित्तस्पन्दितमेवेदं (चित्तं स्पन्दति मे सर्वम् MSS.)

स्पर्ध्

Brih. 1. 3. 1. त एषु लोकेष्वस्पर्धन्त

1. 5. 21. तानि सृष्टान्यन्योन्येनास्पर्धन्त

. . . इमांविदा स्पर्धते.

स्पर्श

Chhâ. 2. 22. 3. सर्वे स्पर्शा मृत्योरात्मा

4. यथेनं स्पर्शेषूपालभेत

5. सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिहिता वक्तव्याः

Brih. 2. 4. 11. सर्वेषां स्पर्शानां त्वगेवायनम् 4. 5. 12.

3. 2. 9. स स्पर्शेनातिग्राहेण गृहीतस्त्वचा हि स्पर्शान् वेदयते

Katha. 4. 3. स्पर्शान् . . एतेनैव विजानाति

Garbha. 1. त्वक् स्पर्शो

Sarvop. 2. शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः

Parama. 2. न शब्दं न स्पर्शम्

Krish. 3. शब्दस्पर्शार्पिते ऽस्माकम्

Gîtâ. 5. 27. स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यान्

स्पर्शन

Swet. 5. 11. संकल्पनस्पर्शनदृष्टिहोमैः

Gîtâ. 15. 9. श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च

स्पृ

Tait. 1. 4. 1. स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु

1. 7. 1. पांक्तेनैव पांक्तं स्पृणोति

2. 9. 1. आत्मानं स्पृणुते (bis)

स्पृश्

Ait. 3. 7. स्पृष्ट्वा हैवान्नमत्रप्स्यत्

11. यदि त्वचा स्पृष्टं . . अहम्

Kena. 27. ते ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्शुः

28. स ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श

Chhâ. 8. 6. 3. तं न कश्चन पाप्मा स्पृशति

8. 12. 1. अशरीरं वाव सन्तं न प्रियाप्रिये स्पृशतः

Brih. 4. 3. 29. यद्वै तन्न स्पृशति स्पृशन्वै तन्न स्पृशति . . न तु . . विभक्तं यत्स्पृशेत्

Brih. 4. 3. 31. अन्यो ऽन्यस्पृशेत्
4. 4. 2. एकीभवति न स्पृशति
4. 5. 15. इतर इतरं स्पृशति .. तत्केन कं स्पृशेत्
Maitri. 6. 7. घ्राता द्रष्टा श्रोता स्पृशति च
— यत्र द्वैतीभूतं विज्ञानं तत्र .. नैव स्पर्शयति
10. यद्वत्.. कामिन्यः.. स्पृशतीन्द्रियार्थास्तद्वद्यो न स्पृशति
Prasna. 4. 2. न स्पृशते नाभिवदते
8. त्वक् च स्पर्शयितव्यं च
Gauda. 4. 41. अचिन्त्यान् भूतवत् स्पृशेत्
Nrip. 5. 1. नात्मानं माया स्पृशति
Nrisut. 4. शुक्लप्रोतान् पदान् स्पृष्ट्वा
Nyâsa. 5. न त्वचं न स्पर्शयेत्
(4 MSS. स्पर्शयति)
Parama. 3. हिरण्यं रसेन स्पृष्टम्
— न दृष्टं च न स्पृष्टं च न माह्यं च
Gîtâ. 5. 8. स्पृशन् जिघ्रन्

स्पृष्टि

Brih. 4. 3. 29. न हि स्प्रष्टुः स्पृष्टेर्विपरिलोपः

स्पृहा

Gauda. 1. 9. आप्तकामस्य का स्पृहा
Gîtâ. 4. 14. न मे कर्मफले स्पृहा
14. 12. लोभः प्रवृत्तिः .. अशमः स्पृहा

स्प्रष्टृ

Brih. 4. 3. 29. न हि स्प्रष्टुः स्पृष्टेर्विपरिलोपः
Maitri. 6. 11. यदि खल्वभाति .. स्प्रष्टा भवति
Prasna. 4. 9. एष हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता

स्फटिक

Śwet. 2. 11. खद्योतविद्युत्स्फटिकशशीनाम्

स्फुट

Gauda. 1. 20. उत्कर्षो दृश्यते स्फुटम्
2. 15. स्फुटा एव च ये बहिः

स्फुर्

Maitri. 6. 24. अलातचक्रमिव स्फुरन्तम्
Nrisut. 4. वश्यां स्फुरन्तीमसतीं निपीड्य

स्फुलिङ्गिनी

Mund. 1. 2. 4. स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी

स्मर

Kaush. 2. 4. अथातो दैवः स्मरः
Chhâ. 7. 13. 1. स्मरो वा आकाशाद्भूयः
— स्मरेण वै पुत्रान् विजानाति स्मरेण पशून् स्मरमुपास्स्व
2. स यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत्स्मरस्य गतं तत्र
— अस्ति भगवः स्मराद्भूय इति स्मराद्वाव भूयो ऽस्तीति
7. 14. 1. आशा वाव स्मराद्भूयस्याशेद्धो वै स्मरो मन्त्रानधीते
7. 26. 1. आत्मतः स्मरः

स्मार

Mahânâr. 23. 1. स्मृत्या स्मारं स्मारेण विज्ञानम्

स्मृ

Kaush. 2. 4. स्मरन्ति हैवास्य
Chhâ. 7. 13. 1. न स्मरन्तो नैव ते कञ्चन शृणुयुः .. यदा वाव ते स्मरेयुरथ शृणुयुः

Chhâ. 7. 26. 2. पुनश्चैकादशः स्मृतः
8. 12. 3. [illegible] स्मरन्निदं शरीरम्
Brih. 5. 15. 1. क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर Isâ. 17.
Maitri. 4. 2. न स्मरेत् परमं पदम्
6. 13. अन्नं संवननं स्मृतं . . अन्नं भिषक् स्मृतम्
25. तस्माद्योग इति स्मृतः
34. मोक्षे निर्विषयं स्मृतम्
Gauda. 1. 10. देवस्तुर्यो विभुः स्मृतः
26. प्रणवश्च परः स्मृतः
2. 4. तथा जागरिते स्मृतम्
7. मिथ्यैव खलु ते स्मृताः 4. 32.
3. 1. तेनासौ कृपणः स्मृतः
4. 46. एवंधर्मा अजाः स्मृताः
88. लोकोत्तरमिति स्मृतम्
90. उपलम्भाविषु स्मृतः
94. तस्मात्ते कृपणाः स्मृताः
Nrip. 2. 4. स्वभक्तानां स्मृत एव मृत्युं . . मारयति
Nrisut. 3. सा . . भास्वती स्मृता
Kshur. 15. तासां मध्ये वराः स्मृताः
Garbha. 3. पूर्वजातीः स्मरति
4. यदा न स्मरति जन्ममरणानि
Brahma. 3. क्रियाङ्गं तद्धि वै स्मृतम्
Nâda. 1. उकारस्तूत्तरः स्मृतः
2. अधर्मश्चोत्तरं स्मृतम्
Brahmab. 2. मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्
21. तद्ब्रह्माहमिति स्मृतम्
Amrita. 23. कालतो नियतः स्मृतः
Krish. 18. मेषश्चोपस्तु स स्मृतः
Mukti. 2. 1. मोक्षं द्विविधं स्मृतम्
Gitâ. 3. 6. य आस्ते मनसा स्मरन्
6. 19. सोपमा स्मृता
8. 5. अन्तकाले च मामेव स्मरन्
Gitâ. 8. 6. यं यं वापि स्मरन्भाव
14. यो मां स्मरति नित्यशः
17. 20. तज्ज्ञानं सात्त्विकं स्मृतम्
21. तज्ज्ञानं राजसं स्मृतम्
23. निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः
18. 38. तत्सुखं राजसं स्मृतम्

स्मृति

Ait. 5. 2. मनीषा जूतिः स्मृतिः सं
Chhâ. 7. 26. 2. सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति
Maitri. 6. 31. बुद्धिर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञा
Mahânâr. 10. 3. स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्ति
23. 1. चित्तेन स्मृतिः स्मृत्या [illegible]रम्
Gauda. 2. 36. अद्वैते योजयेत् स्मृति
Prânâg. 4. स्मृतिर्दया क्षान्तिरहिं[illegible] स्त्रीसंयाजाः
Râmap. 74. निद्रायाः स्मृतिः
Gitâ. 10. 34. स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा
15. 15. मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोह
18. 73. नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्

स्मृतिलंभ

Chhâ. 7. 26. 2. स्मृतिलंभे सर्वग्रन्थीनां प्रमोक्षः

स्मृतिभ्रंश

Gitâ. 2. 63. स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशः

स्मृतिविभ्रम

Gitâ. 2. 63. सम्मोहात्स्मृतिविभ्रम

स्यन्द्

Chhâ. 2. 4. 1. याः प्राच्यः स्यन्द उद्गीथः
6. 10. 1. पुरस्तात्प्राच्यः स्यन्द
Brih. [illegible] प्राच्यो नद्यः स्यन्द

...2. 1. 9. अस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः Mahânâr. 8. 5.
3. 2. 8. यथा नद्यः स्यन्दमानाः
Prasna. 6. 5. यथेमा नद्यः स्यन्दमानाः

स्यन्दन

1. 14. महति स्यन्दने स्थितौ

स्रंस्

1. 30. गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्

स्रक्ति

3. 15. 1. दिशो ह्यस्य स्रक्तयः

स्रवन्ती

4. 3. 10. न तत्र . . स्रवन्त्यो भवन्त्यथ . . स्रवन्त्यः सृजते

स्रष्टृ

4. 14. विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूपम् 5. 13.

स्राम

.8. 9. 1. स्रामे स्रामः 2.
8. 10. 1. यदि स्राममस्रामः 3.
2. नास्य स्राम्येण स्रामः 4.

स्राम्य

..8. 10. 2. नास्य स्राम्येण स्रामः 4.

स्रु

..6. 11. 1. जीवन् स्रवेत् (ter).
..ri. 6. 14. कालात्स्रवन्ति भूतानि
37. अतो यो रसो ऽस्रवत्
7. 1. तपन्ति वर्षन्ति स्रवन्ति

2—64

...a. 2. पञ्चमे स्रवते तालु (so MSS.)

स्रुव

...h. 2. ... स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति
..1. 6. 3. 13. औदुम्बरः स्रुवः

Prânâg. 3. शारीरयज्ञस्य . . कः स्रुवः
4. दक्षिणहस्तः स्रुवः

स्रोतस्

Swet. 1. 15. आपः स्रोतःसु Brahma. 3.
2. 8. स्रोतांसि सर्वाणि भयावहानि
Gîtâ. 10. 31. स्रोतसामस्मि जाह्नवी

स्व

Ait. 4. 2. तत्स्त्रिया आत्मभूयं गच्छति यथा स्वमङ्गम्
Kaush. 4. 20. यथा श्रेष्ठिनं स्वास्तद्यथा श्रेष्ठी स्वैर्भुङ्क्ते यथा वा स्वाः श्रेष्ठिनं भुंजन्ति
Chhâ. 5. 1. 2. वसिष्ठो ह स्वानां भवति
5. आयतनं ह स्वानां भवति
6. 8. 1. स्वमपीतो भवति
7. 24. 1. स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नि
8. 3. 4. स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते 8. 12. 3; Maitri. 2. 2.
8. 12. 2. स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यन्ते
Brih. 1. 3. 18. एनं स्वा अभिसंविशन्ति
— भर्ता स्वानां . . भवति
— य एवंविदं स्वेषु प्रतिप्रतिर्बुभूषति
25. एतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एव स्वम्
— अथो यस्य स्वं भवति
— भवति हास्य स्वं य एवमेतत्साम्नः स्वं वेद
1. 4. 11. अन्ततः उपनिश्रयति स्वां योनिम्
— स्वां स योनिमृच्छति
15. स्वं लोकमदृष्ट्वा प्रैति
16. स्वाय लोकायारिरिष्टमिच्छेत्

Brih. 2. 1. 18. स्वे जनपदे यथाकामं परि-वर्त्तेत
— स्वे शरीरे यथाकामं परि-वर्त्तते
3. 1. 2. स्वमेव ब्रह्मचारिणमुवाच
4. 3. 5. यत्र स्वः पाणिर्न विनिर्ज्ञा-यते
9. स्वेन भासा स्वेन ज्योतिषा
5. 3. 1. अभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद
— ददत्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद
6. 1. 1. ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भ-वति (bis).
2. वसिष्ठः स्वानां भवति (bis).
5. आयतनं स्वानां भवति (bis).
6. 4. 24. एधमानः स्वे गृहे
Katha. 2. 23. तस्यैष आत्मा विवृणुते त-नूं स्वाम् Mund. 3. 2. 3.
6. 17. तं स्वाच्छरीरात्प्रवृहेत्
Maitri. 2. 4. स्वे महिम्नि तिष्ठति 6. 28.
6. 8. स्वाच्छरीरादुपलभेतैनम्
27. स्वं योगश्च ततो ऽस्माकम्
28. स्वे महिम्नि तिष्ठमानं दृष्ट्वा
38. स्वे महिम्नि तिष्ठमानं पश्य-ति
Mahânâr. 5. 8. बत्पृथिव्यां रजः स्वम्
6. 7. स्वां वामे तन्वं पिप्रयस्व
11. 11. सन्तापयति स्वं देहम्
Ganda. 2. 34. न स्वेनापि कथञ्चन
Nrisut. 7. स्वे महिम्नि सदा समासते
Siras. 1. तर्पयामि स्वेन तेजसा
Brahma. 1. याति स्वमालयम्
Prâṇâg. 1. स्वेन विधिनान्नं भूमौ नि-क्षिप्य

Prâṇâg. 2. स्वे शरीरे यज्ञं परिव-र्त्तयामि
Parama. 1. स्वपुत्रमित्रकलत्रबन्ध्वादी
Vâsu. 2. स्वमात्मानं पश्यन्
8. स्वमात्मानं भावयेत् (bis
— हृत्पंकजे स्वमात्मानम्
Râmap. 2. स्वोद्रेकतो ऽथवा
14. स्वेनैव भासते
22. स्ववाङ्मविनियोगवान्
35. स्वनिवृत्त्यर्थम्
50. उदग्दक्षिणयोः स्वस्य
Mukti. 2. 38. मनसः स्वस्य निग्रहे
Gîtâ. 3. 33. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृ-तेः
4. 6. प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय
6. 13. सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वम्
7. 20. प्रकृत्या नियताः स्वया
9. 8. प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य
18. 45. स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः
60. निबद्धः स्वेन कर्मणा

स्वक

Maitri. 6. 31. स्वकैर्लिङ्गैरुपगृह्यः
Mukti. 2. 42. जयेद्वादौ स्वकं मनः
Gîtâ. 11. 50. स्वकं रूपं दर्शयामास भूय

स्वकर्मन्

Swet. 5. 7. प्राणाधिपः सञ्चरति स्व-कर्मभिः
Gîtâ. 18. 45. स्वकर्मनिरतः
46. स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य

स्वकारण

Sarvop. 2. स्वकारणविज्ञानेन

स्वकृत

Mund. 1. 2. [illegible] एष वः पन्थाः स्वकृतस्

स्वगुण

Swet. 1. 3. अपश्यन्देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम्
5. 12. रूपाणि देही स्वगुणैर्वृणोति

स्वगुरु

Kaivalya. 5. भक्त्या स्वगुरुं प्रणम्य

स्वकेता

Râmap. 29. यथाणुश्च स्वकेतया (MSS. vary considerably).

स्वचक्षुस्

Gitâ. 11. 8. अनेनैव स्वचक्षुषा

स्वचित्तस्थ

Swet. 6. 5. देवं स्वचित्तस्थमुपास्य

स्वच्छन्द

Chûl. 6. स्वच्छन्देन वशानुगः

स्वजन

Nila. 21. यः स्वजनान्नीलमीवो यः स्वजनान् हरितुत (स्वजनानाम् in both places, is a variant).

Gitâ. 1. 28. दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण
31. हत्वा स्वजनमाहवे
37. स्वजनं हि कथं हत्वा
45. हन्तुं स्वजनमुद्यताः

स्वतन्त्र

Maitri. 2. 4. अजः स्वतन्त्रः स्वे महिम्नि तिष्ठति 6. 28.
6. 38. स्वतन्त्रं चैतन्यं स्वे महिम्नि तिष्ठमानम्
7. 2. अपरप्रयोज्यः स्वतन्त्रः

स्वतन्त्रास्वतन्त्रत्व

Nrisut. 9. सत्त्वमसत्त्वं च दर्शयति स्वतन्त्रास्वतन्त्रत्वेन

स्वतस्

Gauda. 4. 22. स्वतो वा परतो वापि
Nrisut. 8. न हीदं सर्वं स्वत आत्मवत्
Mukti. 2. 22. चक्षुरादीन्द्रियं स्वतः

स्वतेजस्

Nrip. 3. 4. सर्वाणि भूतानि स्वतेजसा ज्वलति
Gitâ. 11. 19. स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्

स्वदारनिरत

Aśrama. 1. स्वदारनिरत ऋतुकालाभिगामी

स्वदीर्घाङ्ग

Râmap. 52. आदौ स्वदीर्घाङ्गैरेष संयुतः.

स्वदेह

Śwet. 1. 14. स्वदेहमरणिं कृत्वा Dhyâna. 20.
Mukti. 2. 66. स्वदेहाशुचिगन्धेन
76. स्वदेहे कालसात्कृते

स्वधर्म

Maitri. 4. 3. स्वधर्मस्यानुचरणम्
— स्वधर्मस्य वा एतद्व्रतम्
— एष स्वधर्मो ऽभिहितो यो वेदेषु
— न स्वधर्मातिक्रमेणाश्रमी भवति
Gitâ. 2. 31. स्वधर्ममपि चावेक्ष्य
33. ततः स्वधर्मं कीर्तिं च
3. 35. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः 18. 47.
— स्वधर्मे निधनं श्रेयः

स्वधा

Chhâ. 2. 22. 2. आगायेत्स्वधां पितृभ्यः
Mahânâr. 10. 2. वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः

Praśna. 2. 8. पितॄणां प्रथमा स्वधा
Kathaśru. 2. त्वं स्वाहा त्वं स्वधा
— अहं स्वाहा अहं स्वधा
Gîtâ. 9. 16. स्वधाहमहमौषधम्

स्वधाकार

Bṛih. 5. 8. 1. स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारः
— स्वधाकारं पितरः (उपजीवन्ति)

स्वधामन्

Maitri. 6. 30. तेन देवनिकायानां स्वधामानि प्रपद्यते

स्वधिति

Mahânâr. 9. 1. स्वधितिर्वनानाम् 17. 8.

स्वनवन्त्

Maitri. 6. 5. स्वनवत्येषास्य तनूर्या ओमिति

स्वनुष्ठित

Gîtâ. 3. 35. परधर्मात्स्वनुष्ठितात् 18. 47.

स्वप्

Kaush. 2. 5. जाग्रच्च स्वपंश्च संततं जुहोति
3. 3. यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं न कंचन पश्यति
4. 15. पुरुषः सुप्तः स्वप्नया चरति
19. तौ ह सुप्तं पुरुषमाजग्मतुः
— यदा सुप्तः स्वप्नं कंचन न पश्यति
Chhâ. 4. 3. 3. स यदा स्वपिति प्राणमेव वागप्येति
6. 8. 1. यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति . . तस्मादेनं स्वपितीत्याचक्षते
8. 6. 3. सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः स्वप्नं न विजानाति 8. 11. 1.
Bṛih. 2. 1. 15. तौ ह पुरुषं सुप्तमाजग्मतुः
16. यत्रैष एतत्सुप्तो ऽभूत् 17.
17. अथ यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति
4. 3. 11. असुप्तः सुप्तानभिचाकशीति
14. यानि ह्येव जाग्रत्पश्यति तानि सुप्तः
19. यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते Mâṇḍû. 5 Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1 Râmot. 3.
6. 4. 4. सुप्तस्य वा जाग्रतो वा रेतः स्कन्दति
Kaṭha. 5. 8. य एष सुप्तेषु जागर्ति
Maitri. 2. 5. सुप्तस्येवाबुद्धिपूर्वं विबोधः
7. 11. सुप्तः सुप्तात् परश्च यः
Mahânâr. 18. 1. यत्स्वपन्तश्च जाग्रतश्चैनश्चकृम
Praśna. 4. 1. एतस्मिन्पुरुषे कानि स्वपन्ति
2. स्वपितीत्याचक्षते
Kaivalya. 14. स एव जीवः स्वपिति
Gauḍa. 1. 16. अनादिमायया सुप्तः
Kathaśru. 4. देवागारेषु वा स्वपेत्
Gîtâ. 5. 8. स्वपन् श्वसन्

स्वपुत्रगृह

Aśrama. 4. स्वपुत्रगृहेषु भिक्षाचर्यं चरन्तः

स्वपुर

Râmap. 47. स्वपुरं तैर्जगाम सः

स्वप्न

Ait. 3. 12. तस्य त्रय आवसथास्त्रयः स्वप्नाः
Kaush. 3. 3. यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं कंचन पश्यति
4. 2. स्वप्ने यमः
19. यदा सुप्तः स्वप्नं कंचन पश्यति

...hâ. 5. 2. 2. यदा कर्मसु काम्येषु स्त्रियं स्वप्नेषु पश्यति
8. 6. 2. स्वप्नं न विजानाति 8. 11. 1.
8. 10. 1. स्वप्ने महीयमानश्चरति
...rih. 4. 3. 7. स्वप्नो भूत्वेमं लोकमतिक्रामति
11. स्वप्नेन शारीरमभिप्रहत्य
15. आद्रवति स्वप्नायैव
16. स्वप्ने रत्वा चरित्वा
19. यत्र सुप्तः..न कञ्चन स्वप्नं पश्यति Mâṇḍû. 5; Nṛip. 4. 1; Nṛisut. 1; Râmot. 3.
...atha. 6. 5. यथा स्वप्ने तथा पितृलोके
...aitri. 4. 2. स्वप्न इव मिथ्यादर्शनम्
6. 25. स्वप्न इव यः पश्यति..प्रणवाख्यम्
...rasna. 4. 1. कतर एष देवः स्वप्नान् पश्यति
5. अत्रैष देवः स्वप्ने महिमानमनुभवति
6. अत्रैष देवः स्वप्नान्न पश्यति
...aivalya. 13. स्वप्ने स जीवः सुखदुःखभोक्ता
17. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चम्
...auḍa. 1. 14. न निद्रां नैव च स्वप्नम्
15. अन्यथा गृह्णतः स्वप्नः
2. 1. वैतथ्यं सर्वभूतानां स्वप्न आहुर्मनीषिणः
3. वैतथ्यं तेन वै प्राप्तं स्वप्ने..प्रकाशितम्
4. यथा तत्र तथा स्वप्ने
5. स्वप्नजागरिते स्थाने
7. स्वप्ने विप्रतिपद्यते 4. 32.
31. स्वप्नमाये यथा दृष्टे

Gauḍa 3. 29. यथा स्वप्ने द्वयाभासं स्पन्दते मायया मनः
30. अद्वयं च द्वयाभासं मनः स्वप्ने
4. 33. सर्वे धर्मा मृषा स्वप्ने
36. स्वप्ने चावस्तुकः कायः
37. तद्धेतुः स्वप्न इष्यते
39. स्वप्ने पश्यति तन्मयः
41. तथा स्वप्ने विपर्यासात्
61. यथा स्वप्ने द्वयाभासम्
62. द्वयाभासं चित्तं स्वप्ने
63. स्वप्नदृक् प्रचरन् स्वप्ने
Nṛisut. 1. त्रयमप्येतत् सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
— त्रयमत्रापि सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
2. स्वप्ने ऽजाग्रतमसुषुप्तम्
Brahma. 1. देवदत्तः स्वप्ने आनन्दमभियाति
— भूयस्तेनैव स्वप्नाय गच्छति
2. जागरितं स्वप्नं सुषुप्तं तुरीयम्
— स्वप्ने विष्णुः
3. जाग्रत् स्वप्ने तथा जीवो गच्छति
— कण्ठे स्वप्नं विनिर्दिशेत्
Brahmab. 11. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु
Sarvop. 1. जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तं तुरीयं च कथम्
— तदात्मनः स्वप्नम् (so 2 MSS.; the rest have तन्मनःस्वप्नम्)
Haṁsa. 2. कर्णिकायां स्वप्नम्
Gîtâ. 18. 35. यया स्वप्नं भयं शोकम्

स्वप्नचारिन्

Maitri. 7. 11. चाक्षुषः स्वप्नचारी च

स्वप्नदृश्

Gauda. 4. 63. स्वप्नदृक् प्रचरन् स्वप्ने

स्वप्नदृक्चित्त

Gauda. 4. 64. स्वप्नदृक्चित्तमिष्यते

स्वप्नदृक्चित्तदृश्य

Gauda. 4. 64. स्वप्नदृक्चित्तदृश्यास्ते न विद्यन्ते ततः पृथक्

स्वप्ननिदर्शन

Chhâ. 5. 2. 9. समृद्धिं तत्र जानीयात्तस्मिन्स्वप्ननिदर्शने

स्वप्ननिद्रायुत

Gauda. 1. 14. स्वप्ननिद्रायुतावाद्यौ

स्वप्नमय

Gauda. 4. 68. यथा स्वप्नमयो जीवः

स्वप्नमायास्वरूप

Gauda. 1. 7. स्वप्नमायास्वरूपेति सृष्टिरन्यैर्विकल्पिता

स्वप्नया, स्वप्न्यया

Kaush. 4. 15. पुरुषः सुप्तः स्वप्नया चरति

Brih. 2. 1. 18. स यत्रैतत्स्वप्न्यया चरति

स्वप्नवत्

Gauda. 3. 10. संघाताः स्वप्नवत्सर्वे

Skanda. 3. स्वप्नवच्च विनश्यति

स्वप्नवृत्ति

Gauda. 2. 9. स्वप्नवृत्तावपि त्वन्तश्चेतसा कल्पितम्

स्वप्नस्थान

Brih. 4. 3. 9. सन्ध्यं तृतीयं स्वप्नस्थानम्

Mâṇḍû. 4. स्वप्नस्थानो ऽन्तःप्रज्ञः Nṛip. 4. 1; Râmot. 3.

10. स्वप्नस्थानस्तैजस उकारः

Nṛisut. 1. स्वप्नस्थानः सूक्ष्मप्रज्ञः

2. स्वप्नस्थानश्चतुरात्मा तैजसः

स्वप्नान्त

Chhâ. 6. 8. 1. स्वप्नान्तं मे सोम्य वि॰ नीहि

Brih. 4. 3. 12. स्वप्नान्त उच्चावचमीयम

17. आद्रवति स्वप्नान्तायैव

18. स्वप्नान्तं च बुद्धान्तं च

34. एतस्मिन् स्वप्नान्ते रत्वा

Katha. 4. 4. स्वप्नान्तं जागरितान्तं च

स्वप्रकाश

Nṛisut. 2. स्वराट् स्वयमीश्वरः स्व॰ काशः

5. एष हि स्वप्रकाशो ऽस॰

— तस्मादयं . . स्वप्रकाशो ह्येव

6. स्वप्रकाशमानन्दघनम्

— एवंवित् स्वप्रकाशं परं ब्रह्म भवति

8. एतदद्वयं स्वप्रकाशं . . ह्येव

9. स्वप्रकाशोपि . . न वि॰ नाति

— स्वप्रकाशे सर्वसाक्षिणि

— एक एव साक्षी स्वप्रका॰

— मायया नासंवित्तिः स्व॰ काशे

— अतो यूयमेव स्वप्रका॰ (bis).

स्वप्रभ

Vâsu. 3. स्वप्रभं सच्चिदानन्दम्

स्वबान्धव

Gîtâ. 1. 37. धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवा॰

स्वबीज

Nṛisut. 9. वटाम् स्वबीजानुत्पाद्य MSS. read सबीजा॰

स्वभ

ikhâ. 1. रुचिरा भास्वती स्वभा (3 MSS. have शुभा)

स्वभक्त

Nrip. 2. 4. स्वभक्तानां स्मृत एव मृत्युमपमृत्युं च मारयति

स्वभाव

Śwet. 1. 2. कालः स्वभावो नियतिः
5. 5. यश्च स्वभावं पचति विश्वयोनिः
6. 1. स्वभावमेके कवयो वदन्ति

Gauḍa. 1. 9. देवस्यैष स्वभावोऽयम्
3. 22. स्वभावेनामृतो यस्य भावः
4. 8 (धर्मः)
4. 9. स्वभावं न जहाति या

Tejo. 7. स्वभावभावनाग्राह्यम्

Sarvop. 3. विज्ञानचिन्मात्रस्वभावः

Gîtâ. 2. 7. कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
5. 14. स्वभावस्तु प्रवर्त्तते
8. 3. स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते

स्वभावज

Gîtâ. 17. 2. देहिनां सा स्वभावजा
18. 42. ब्रह्मकर्म स्वभावजम्
43. क्षात्रं कर्म स्वभावजम्
44. वैश्यकर्म स्वभावजम्
— शूद्रस्यापि स्वभावजम्
60. स्वभावजेन..स्वेन कर्मणा

स्वभावतस्

Śwet. 6. 10. स्वभावतो देव एकः समावृणोति

Gauḍa. 4. 10. सर्वे धर्माः स्वभावतः
29. फलं चापि स्वभावतः
81. धर्मो धातुः स्वभावतः

Mukti. 2. 74. न मे ऽस्ति कश्चिद्विषयः स्वभावतः

स्वभावनियत

Gîtâ. 18. 47. स्वभावनियतं कर्म

स्वभावप्रभव

Gîtâ. 18. 41. स्वभावप्रभवैर्गुणैः

स्वभू

Râmap. 14. स्वभूर्ज्योतिर्मयः

स्वमहिमन्

Nrip. 2. 4. स्वमहिम्ना सर्वाँल्लोकान्.. उद्गृह्णाति
— स्वमहिम्ना सर्वाँल्लोकान्.. विरमति
— स्वमहिम्ना सर्वाँल्लोकान्.. स्वतेजसा ज्वलति

स्वमहिमस्थ

Nrisut. 9. आत्मा हि स्वमहिमस्थः

स्वमाया

Kaivalya. 13. स्वमायया कल्पितविश्वलोके

Gauḍa. 2. 12. कल्पयत्यात्मनात्मानमात्मा देवः स्वमायया

Krish. 25. धनुः शार्ङ्गं स्वमाया तत्

स्वमृत

Tait. 1. 10. 1. ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि

स्वयंज्योतिस्

Brih. 4. 3. 9. अयं पुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति 14.

Sarvop. 3. आविर्भावतिरोभावहीनः स्वयंज्योतिः

Haṁsa. 2. सर्वत्रावस्थितः स्वयंज्योतिः

स्वयन्धीर

Kaṭha. 2. 5. स्वयन्धीराः पण्डितम्मन्यमानाः Maitri. 7. 9; Muṇḍ. 1. 2. 8.

स्वयम्

Kaush. 2. 13. यांश्च स्वयं द्वेष्टि
Brih. 4. 3. 9. स्वयं विहत्य स्वयं निर्माय
Tait. 2. 7. 1. तदात्मानं स्वयमकुरुत
Katha. 1. 23. स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि
Maitri. 6. 34. स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते
Mund.3. 2. 10. स्वयं जुह्वत एकर्षिम्
Prasna. 3. 5. चक्षुःश्रोत्रे मुखनासिकाभ्यां प्राणः स्वयं प्रातिष्ठते
Gauda. 2. 19. यया सम्मोहितः स्वयम्
4. 81. प्रभातं भवति स्वयम्
89. क्रमेण विदिते स्वयम्
Nrip. 2. 4. स्वयं यतः कुतश्चिन्न बिभेति
— स्वयं भद्रो भूत्वा
Nrisut. 4. तानयसत् स्वयम्
— नृसिंहः स्वयमुद्बभौ
9. माया चाविद्या च स्वयमेव भवति
— स्वयं गुणभिन्ना
Brahma. 2. स्वयममनस्कमश्रोत्रम्
Amrita. 28. स्वयमुत्पद्यते ज्ञानम्
Sarvop. 2. स्वयं भावरहितम्
3. स्वयमेवमाविर्भावतिरोभावहीनः
Parama. 2. तस्य स्वयमेव स्थितिरिति (so MSS.)
Gâruda. 2. यदि वानन्तकः स्वयम्
— यदि वा वासुकिः स्वयम्
— यदि वा तक्षकः स्वयम्
— यदि वा कर्कोटकः स्वयम्
— यदि वा शंखपुलिकः स्वयम्
— यदि वा पद्मकः स्वयम्
— यदि वा महापद्मकः स्वयम्
— यदि वैलापत्रकः स्वयम्
Gâruda. 2. यदि वा महैलापत्रकः स्वयम्
— यदि वा कालिकः स्वयम्
— यदि वा कुलिकः स्वयम्
— यदि वा कंबलाश्वतरः स्वयम्.
Vâsu. 3. मद्भक्त्या सिध्यति स्वयम्
Krish. 3. प्रोवाच भगवान् स्वयम्
18. यः शंखः स स्वयं विष्णुः
Râmap. 44. पुरं दग्ध्वा तथा स्वयम्
81. गुणान्तः सगुणः स्वयम्
Râmot. 4. तं प्रत्युवाच स्वयमेव याज्ञवल्क्यः
— यस्य कस्यापि वा स्वयम्
Mukti. 1. 42. देशिकस्य मुखात्स्वयम्
2. 64. स्वयं केवलरूपतः
— ब्रह्म न ब्रह्मवित्स्वयम्
Gîtâ. 4. 38. तत्स्वयं योगसंसिद्धः
10. 13. स्वयं चैव ब्रवीषि मे
15. स्वयमेवात्मनात्मानम्
18. 75. साक्षात्कथयतः स्वयम्

स्वयमविकार

Sarvop. 4. स्वयमविकाराद्विकारहेतौ निरूप्यमाणे

स्वयमीश्वर

Nrisut. 2. स्वराट् स्वयमीश्वरः स्वप्रकाशः

स्वयम्प्रभ

Mukti. 2. 75. स्वयम्प्रभः सर्वगतो ऽहमव्ययः

स्वयम्भू

Brih. 2. 6. 3. ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे; 4. 6. 3; 6. 5. 4.
Isâ. 8. परिभूः स्वयम्भूः
Katha. 4. 1. पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयम्भूः

...hânâr. 12. 3. कतमः स्वयम्भूः
23. 1. स्वयम्भूः प्रजापतिः संवत्सर इति
...hur. 2. यथोक्तं हि स्वयम्भुवा

स्वयोनि

...aitri. 6. 34. स्वयोना उपशाम्यते (bis).
— स्वयोना उपशान्तस्य मनसः

स्वर्

vide सुवर्

स्वर

...hâ. 1. 3. 2. स्वर इतीममाचक्षते स्वर इति प्रत्यास्वर इत्यमुम्
1. 4. 3. स्वरमेव प्राविशन्
4. एष उ स्वरो यदेतदक्षरमेतदमृतमभयम्
5. एतदेवाक्षरं स्वरममृतमभयं प्रविशति
1. 8. 4. का साम्नो गतिरिति स्वर इति होवाच स्वरस्य का गतिः
1. 13. 2. प्राणः स्वरः
2. 22. 3. सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मानः
— तं यदि स्वरेषूपालभेत
5. सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्याः
...rih. 1. 3. 25. तस्य वै स्वर एव स्वम्
— वाचि स्वरमिच्छेत
...ait. 1. 2. 1. वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्
...aitri. 7. 11. मन्त्रं जनयाति स्वरम्
...ahânâr. 10. 7. यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः
...rahmab. 7. स्वरेण सन्धयेद्योगम्
...âsu. 2. त्रयो वेदास्त्रयः स्वराः
...âmap. 62. विलिखेत्स्वरान्

स्वरवन्त्

...rih. 1. 3. 25. [illegible] स्वरवन्तं दिदृक्षन्ते

स्वरसम्पन्न

Brih. 3. 25. वाचा स्वरसंपन्नयार्त्विज्यं कुर्यात्

स्वरसौष्ठव

Swet. 2. 13. वर्णप्रसादं स्वरसौष्ठवं च

स्वराज्

Chhâ. 7. 25. 2. स स्वराड् भवति
Mahânâr. 11. 13. सो ऽक्षरः परमः स्वराट्
Kaivalya. 8; Nrip. 1. 4; Mahâ. 3.
14. 1. स्वराडापः
Nrip. 1. 4. सम्राट् स्वराड् विराट्
Nrisut. 2. स्वराट् स्वयमीश्वरः स्वप्रकाशः
7. स स्वराड् भवति य एवं वेद (ter).

स्वरूप

Maitri. 7. 11. एतद्वाव तत्स्वरूपम् (bis).
Sarvop. 3. स्वरूपलाभहेतुर्भूत्वा
4. सुखचैतन्यस्वरूपः
— अविशिष्टसुखस्वरूपः
Gopî. 5. गोपिकास्वरूपैः
Mukti. 1. 3. स्वरूपध्याननिरतम्
2. 60. स्वरूपं यज्जहाति तत्

स्वर्ग

Ait. 4. 6. स्वर्गे लोके सर्वान्कामानाप्त्वा 5. 4; Atmapra. 1.
Kaush. 1. 2. एतद्वै स्वर्गस्य लोकस्य द्वारं यच्चन्द्रमाः
2. 15. स्वर्गाँल्लोकान् कामानाप्नुहि
3. 2. आप्नोत्यमृतत्वमक्षितिं स्वर्गे लोके
4. 8. पूर्यते.. स्वर्गेण लोकेन
16. प्रजायते.. स्वर्गेण लोकेन

Kena. 34. अनन्ते स्वर्गे लोके..प्रतितिष्ठति

Chhâ. 1. 8. 5. न स्वर्गं लोकमतिनयेदिति
— स्वर्गं वयं लोकं सामाभिसंस्थापयाम:
2. 22. 2. स्वर्गं लोकं यजमानाय
3. 13. 6. स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपाः
— स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपान् (bis).
— प्रतिपद्यते स्वर्गं लोकम्
8. 3. 3. अहरहर्वा एवंवित् स्वर्गं लोकमेति

Bṛih. 3. 1. 6. केनाक्रमेण..स्वर्गं लोकमाक्रमते
4. 4. 8. तेन..अपियन्ति ब्रह्मविदः स्वर्गं लोकम्
5. 3. 1. एति स्वर्गं लोकं य एवं वेद

Kaṭha. 1. 12. स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति

Maitri. 6. 30. *vide* हेतु

Śiras. 1. देवा ह वै स्वर्गं लोकमायन्

Mukti. 2. यथा..ज्योतिष्टोमेन स्वर्गम्

Gîtâ. 2. 37. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्

स्वर्गकाम

Maitri. 6. 36. अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः

स्वर्गति

Gîtâ. 9. 20. स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते

स्वर्गद्वार

Gîtâ. 2. 32. स्वर्गद्वारमपावृतम्

स्वर्गनिवासिन्

Gauḍa. 2. 8. यथा स्वर्गनिवासिनाम्

स्वर्गपर

Gîtâ. 2. 43. कामात्मानः स्वर्गपराः

1. स्वर्गलोक *adj.*

Kaṭha. 1. 13. स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्ते

2. स्वर्गलोक

Kaṭha. 1. 12. शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके

Gîtâ. 9. 21. ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालम्

स्वर्गवासिन्

Kṛish. 27. वैकुण्ठं स्वर्गवासिनम्

स्वर्गसंस्ताव

Chhâ. 1. 8. 5. स्वर्गसंस्तावं हि साम

स्वर्ग्य

Kaṭha. 1. 13. त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि
14. स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्
19. एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्यः

Maitri. 7. 8. अस्वर्ग्यैः सह स्वर्ग्यस्य

Kaṭhaśru. 2. स स्वर्ग्यो भवति

स्वर्दृश्

Śiras. 4. ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशम्

स्वर्लोक

Nṛip. 5. 6. स स्वर्लोकं जयति

Nâda. 3. स्वर्लोकः कटिदेशे तु

Aruṇeya. 1. *vide* तपोलोक

स्वलीला

Kṛish. 25. धृतं पाणौ स्वलीलया

स्वल्प

Gîtâ. 2. 40. स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य

स्ववपुस्

Parama. 2. स्ववपुः कुणपमिव दृश्यं

स्ववाचामि

Aruṇeya. 2. गायत्रीं च स्ववाचाग्नौ समारोपयेत्

स्वशरीर

yâsa. 2. स्वशरीरे समारोपः
arama. 1. स्वशरीरस्योपभोगार्थाय

स्वसिद्धान्त

auḍa. 3. 17. स्वसिद्धान्तव्यवस्थासु द्वैतिनो निश्चिता दृढम्

स्वसुत

Nrisut. 4. स्वसुतान् गुणर्द्धान्

स्वसृ

Chhâ. 7. 15. 1. प्राणः स्वसा
2. स यदि..स्वसारं वा.. किञ्चिद्भृशमिव प्रत्याह
8. 2. 4. स्वसारः समुत्तिष्ठन्ति

स्वसृलोक

Chhâ. 8. 2. 4. स्वसृलोकेन सम्पन्नो महीयते

स्वसृलोककाम

hâ. 8. 2. 4. यदि स्वसृलोककामो भवति

स्वसृहन्

hhâ. 7. 15. 2. स्वसृहा वै त्वमसि
3. न स्वसृहासीति

स्वस्ति

Katha. 1. 9. स्वस्ति मे ऽस्तु
Mund. 2. 2. 6. स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात्
Mahânâr. 6. 4. स्वं पारया..स्वस्तिभिराति दुर्गाणि विश्वा
20.* 3. स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः
11. स्वस्ति नो मघवा करोतु,
Nrip. 1. 1. स्वस्ति न इन्द्रः..स्वस्ति नः पूषा..स्वस्ति नस्तार्क्ष्यः..स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु Nrisut. 1.
Kathaśru. 4. स्वस्ति सर्वजीवेभ्यः
Skanda. 9. तथा मे स्वस्तिरायुषि
Gîtâ. 11. 21. स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः

स्वस्तिक

Amrita. 18. पद्मकं स्वस्तिकं वापि

स्वस्तिदा

Mahânâr. 20. 5. स्वस्तिदा विशांपतिः

स्वस्थ

Maitri. 2. 7. प्रेक्षकवदवस्थितः स्वस्थश्च
Gauda. 3. 47. स्वस्थं शान्तं सनिर्वाणम्
Nyâsa. 1. स्वस्थो वाश्रमपारं गच्छेयम्
Gîtâ. 14. 24. समदुःखसुखः स्वस्थः

स्वातन्त्र्य

Maitri. 6. 22. असा अभिध्याता..स्वातन्त्र्यं लभते

स्वात्मन्

Nrip. 4. 3. स्वात्मानं दर्शयति (bis); Râmot. 5.
Nrisut. 2. अस्य सर्वस्य स्वात्मानं ददाति
— इदं सर्वं स्वात्मानं करोति
7. स्वात्मानमेषां ददाति
8. एष ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानमनुजानाति

स्वात्मबन्धहर

Nrisut. 2. अविद्यातत्कार्यहीनःस्वात्मबन्धहरः Râmot. 3.

स्वात्मस्थ

Nrisut. 9. अयोनि स्वात्मस्थमानन्दचिद्घनम्

1. स्वादु

Ait. 5. 1. येन वा स्वादु चास्वादु च विजानाति

Swet. 4. 6. तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति Munda. 3. 1. 1.

Maitri. 6. 10. बुद्ध्यादीनि स्वादुनि भवन्ति
— इन्द्रियार्थान् पञ्च स्वादुनि भवन्ति

2. स्वादु

Maitri. 6. 10. नहि बीजस्य स्वादुपरिमहो ऽस्तीति यावन्न प्रसूतिः

स्वाधिष्ठान

Hamsa. 1. स्वाधिष्ठानं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य

स्वाध्याय

Kaush. 1. 1. सदस्येव स्वाध्यायमधीत्य

Chha. 1. 12. 1. स्वाध्यायमुद्व्राज
8. 15. 1. शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानः

Tait. 1. 9. 1. स्वाध्यायप्रवचने (13 times).
1. 11. 1. स्वाध्यायान्मा प्रमदः
— स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्

Parama. 1. यागस्वाध्यायं च
2. न स्वाध्यायं नाच्छादनं च

Aruneya. 1. यागं च सूत्रं च स्वाध्यायं च . . विसृजेत्

Gîtâ. 16. 1. स्वाध्यायस्तप आर्जवम्
17. 15. स्वाध्यायाभ्यसनं चैव

स्वाध्यायज्ञानयज्ञ

Gîtâ. 4. 28. स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः

स्वाभाविक

Swet. 6. 8. स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च

Maitri. 5. 1. स्वार्थे स्वाभाविके ऽर्थे च

Gauḍa. 4. 9. सांसिद्धिकी स्वाभाविकी

स्वाराज्य

Kaush. 4. 20. श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्यैत्
— श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति

Chhâ. 2. 24. 12. पश्येम त्वा वयं स्वाराज्याय
3. 6. 4. आधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता 3. 7. 4; 3. 8. 4; 3. 9. 4; 3. 10. 4.

Tait. 1. 6. 2. आप्नोति स्वाराज्यम्

Maitri. 6. 36. स्वाराज्यमतिरात्रेण

स्वार्थ

Maitri. 5. 1. स्वार्थे स्वाभाविके ऽर्थे च

Mukti. 2. 22. प्रवर्त्तते बहिः स्वार्थे वा नामात्रकारणम्

स्वाव्यतिरिक्त

Nrisut. 9. स्वाव्यतिरिक्तान् वट स्वबीजानुत्पाद्य
— स्वाव्यतिरिक्तानि परिपूर्णानि क्षेत्राणि दर्शयित्

स्वाश्रम

Maitri. 4. 3. स्वाश्रमेष्वेवानुक्रमणम्

स्वासन

Râmap. 86. पृथिव्यब्जे स्वासनाधःप्र ल्प्य

स्वाहा

Kathaśru. 2. त्वं स्वाहा त्वं स्वधा
— अहं स्वाहा अहं स्वधा

स्वाहाकार

Brih. 5. 8. 1. तस्याश्चत्वारः स्तनाः स्वाहाकारो वषट्कारः &c.

Brih. 5. 8. 1. द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च

स्वाहाकृत

Mahânâr. 9. 11. स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्

1. स्विद्

Chhâ. 6. 2. 3. यत्र क्व च शोचति स्वेदते वा पुरुषः

2. स्विद्

Chhâ. 1. 10. 4. न स्विदेते ऽप्युच्छिष्टा इति

Brih. 3. 9. 28. मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृक्णः (bis).

Katha. 1. 5. किं स्विद्यमस्य कर्त्तव्यम्

स्विष्ट

Brih. 6. 4. 24. अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान् स्विष्टं सुहुतं करोतु नः

Mahânâr. 22. 1. अग्निहोत्रं सायं प्रातर्गृहाणां निष्कृतिः स्विष्टं सुहुतम्

स्विष्टकृत्

Brih. 6. 4. 24. अग्निः..स्विष्टकृत्

Mahânâr. 19. 2. अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा

Nyâsa. 1. अग्नये स्विष्टकृत इति हुत्वा

स्वृ

Chhâ. 1. 5. 1. ओमिति ह्येष स्वरन्नेति 3.

स्वेद

Mahâ. 3. ललाटात्स्वेदो ऽपतत्

स्वेदज

Ait. 5. 3. स्वेदजानि चोद्भिज्जानि च

Gauḍa. 4. 63. अण्डजान् स्वेदजान् वापि 65.

स्वैरिन्

Chhâ. 5. 11. 5. न स्वैरी स्वैरिणी कुतः

हंस

Chhâ. 4. 1. 2. हंसा निशायामतिपेतुस्तद्धैवं हंसो हंसमभ्युवाद

4. 7. 1. हंसस्ते पादं वक्ता

2. तं हंस उपनिपत्याभ्युवाद

Katha. 5. 2. हंसः शुचिषद्वसुः Mahânâr. 9. 3; 17. 8; Nrip. 3. 1.

Śwet. 1. 6. तस्मिन् हंसो भ्राम्यते

3. 18. हंसो लेलायते बहिः

6. 15. एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये

Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा..हंसः 7. 7.

34. महद्धंसस्तेजोवृषः

35. अष्टपादं शुचिं हंसम्

Kshur. 22. पाशं छित्त्वा यथा हंसः

Chûl. 1. अष्टपादं शुचिर्हंसम्

8. उदासीनं ध्रुवं हंसम्

Tejo. 4. त्रिधामा हंस उच्यते

Piṇḍa. 2. हंसस्त्यक्त्वा गतो देहम्

Haṁsa. 1. हंसस्य गतिविस्तारम्

— हंसपरमहंसनिर्णयम्

— हंस हंसेति

2. अथ हंस ऋषिः

— यदा हंसो नादे लीनो भवति

— एवं सर्वं हंसवशात् (bis).

— तस्मान्मनो हंसो विचार्यते (MSS. omit हंसो, but it is explained in Dîpikâ).

Âśrama. 4. कुटीचरा बहूदका हंसाः परमहंसाश्च

— हंसा एकदण्डधराः शिखावर्जिताः

Mukti. 1. 31. श्वेताश्वो हंस आरुणिः

— गर्भो नारायणो हंसः

1. *vide* मुक्तिका

हंसयोग

Nâda. 5. हंसयोगविचक्षणः (so most MSS.; other readings are हंसः, हंसं)

हंसात्मन्

Haṁsa. 2. हंसात्मानं ध्यायेत्

हठ

Mukti. 2. 46. हठान्नियमयन्ति ये
47. हठाच्चेतसो जयम्

हन्

Kaush. 3. 1. त्रिशीर्षाणं त्वाष्ट्रमहनम्
4. 20. अथ हत्वासुरान्

Chhâ. 1. 10. 1. मटचीहतेषु कुरुषु
6. 16. 1. स दह्यते ऽथ हन्यते
8. 1. 5. न वधेनास्य हन्यते
8. 10. 2, 4.
8. 10. 2. घ्नन्ति त्वेवैनम् 4.

Bṛih. 2. 4. 7. यथा दुन्दुभेर्हन्यमानस्य
4. 5. 8.
4. 3. 20. एनं घ्नन्तीव जिनन्तीव
5. 5. 3. हन्ति पाप्मानं जहाति च य एवं वेद 4.
6. 3. 1. घ्नन्ति पुरुषस्य कामान्

Kaṭha. 2. 18. न हन्यते हन्यमाने शरीरे
Gîtâ. 2. 20.
19. हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते हतं.. नायं हन्ति न हन्यते

Maitri. 3. 3. अयस्पिण्डः.. कर्तृभिर्हन्यमानः
— भूतात्मा.. गुणैर्हन्यमानः
— अयस्पिण्डे हन्यमाने
6. 20. चित्तस्य हि प्रसादेन हन्ति कर्म शुभाशुभम् 34.
28. इमानि खलु भूतानि हन्ति

Maitri. 6. 28. तं हत्वा.. ब्रह्मशालां विशेत्

Muṇḍ. 1. 2. 8. जंघन्यमानाः परियन्ति मूढाः

Mahânâr. 4. 2. शतं मे घ्नन्ति पापानि
6. त्वया हतेन पापेन
17. 6. ब्रह्महत्यां वा एते घ्नन्ति
7. भ्रूणहत्यां वा एते घ्नन्ति
8. वीरहत्यां वा एते घ्नन्ति
20. 2. जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्व
4. विद्विषो विमृधो जहि
11. हन्तु पाप्मानं यो ऽस्मान् द्वेष्टि

Nṛisut. 4. स्वसुतान् गुणर्द्धान्.. हत्वा
— गृध्रपोतान्पदान्.. हत्वा

Nîla. 23. विरूपाक्षेण बभ्रुणा.. हत्वा
24. इमामस्य प्राशं जहि

Nyâsa. 4. घातयन्तीन्द्रियाणि Kaṭhaśru. 4 (some MSS. have तापयन्ति)

Gâruḍa. 2. हतं विषं.. हतमिन्द्रस्य वज्रेण

Râmap. 37. असुरं हत्वा कबन्धम्
44. सीतां दृष्ट्वासुरान् हत्वा
46. तमाहवे हत्वा

Gîtâ. 1. 31. हत्वा स्वजनमाहवे
35. एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतो ऽपि मधुसूदन
36. हत्वैतानाततायिनः
37. तस्मान्नार्हा वयं हन्तुम्
— स्वजनं हि कथं हत्वा
45. हन्तुं स्वजनमुद्यताः
46. धार्तराष्ट्रा रणे हन्युः
2. 5. हत्वार्थकामांस्तु गुरून्
6. यानेव हत्वा न जिजीविषामः
19. यश्चैनं मन्यते हतम्
— नायं हन्ति न हन्यते

Gîtâ.	2. 21.	कं घातयति हन्ति कम्
	37.	हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्
	3. 43.	जहि शत्रुं महाबाहो
	11. 34.	मया हतांस्त्वं जहि
	16. 14.	असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि
	18. 17.	हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते

हनु

Tait. 1.	3. 4.	अधरा हनुः पूर्वरूपम्
		— उत्तरा हनुरुत्तररूपम्

हनुमन्त्, हनू°

Râmap.	43.	ततस्ततार हनुमान्
	50.	हनुमन्तं च श्रोतारम् (so all MSS. but printed editions हनू°)
Mukti.	1. 8.	हनूमञ्छृणु वक्ष्यामि

हन्त

Mahânâr.	19. 2.	मनुष्येभ्यो हन्ता
Nrisut.	9.	हन्तासङ्गा वयम्
Gîtâ.	10. 19.	हन्त ते कथयिष्यामि

हन्तकार

Brih. 5.	8. 1.	स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारः
		— हन्तकारं मनुष्याः (उपजीवन्ति)

हन्तृ

Katha.	2. 19.	हन्ता चेन्मन्ये हन्तुम्
Gîtâ.	2. 19.	य एनं वेत्ति हन्तारम्

हम्

Haṁsa.	2.	हमिति बीजं स इति शक्तिः

हय

Brih. 1.	1. 2.	हयो भूत्वा देवानवहत्
Katha.	3. 4.	इन्द्रियाणि हयानाहुः
Maitri.	2. 6.	कर्मेन्द्रियाण्यस्य हयाः
Chûl.	8.	स्नातकाध्वर्यवो हये (4MSS. read हयेत् which is one of the 5 variants explained by Nârâyaṇa. He says, however, that हये is the traditional reading.)
Gîtâ.	1. 14.	ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते

हयग्रीव

Mukti.	1. 39.	शाट्यायनी हयग्रीवम्
		1. *vide* गारुड

हर

Śwet.	1. 10.	अमृताक्षरं हरः

1. हरि

Brih. 2.	5. 19.	युक्ता ह्यस्य हरयः
		— अयं वै हरयः
Nîlâ.	21.	यः स्वजनान् हरिरुत
	5.	यस्य हरी अश्वतरी
Râmap.	42.	हरीनाहूय सुग्रीवः
Mukti.	1. 13.	पञ्चाशद्भिरतो हरे

2. हरि

Mahânâr.	11. 2.	विश्वं नारायणं हरिम्
		Mahâ. 3.
Nrip.	1. 4.	स ब्रह्मा स शिवः स हरिः
Vâsu.	3.	स्वमात्मानं भावयेन्मां परं हरिम्
		— ध्यायते हरिमव्ययम्
		— हृदये चिन्तयेद्धरिम्
Krish.	11.	गोपरूपो हरिः साक्षात्
Skanda.	2.	संविन्मात्रस्थितो हरिः
Râmap.	1.	जाते दशरथे हरौ
Mukti.	1. 3.	स्वरूपध्याननिरतं..हरिम्
Gîtâ.	11. 9.	महायोगेश्वरो हरिः
	18. 77.	रूपमत्यद्भुतं हरेः

हरिण

Maitri. 6. 8. विश्वरूपं हरिणं जातवेद-
. . सम् Praśna. 1. 8.

1. हरित

Brih. 4. 3. 20. हरितस्य लोहितस्य पूर्णाः
4. 4. 9. पिङ्गलं हरितं लोहितं च
Śwet. 4. 4. हरितो लोहिताक्षः

2. हरित

Brih. 6. 5. 3. असितो वार्षगणो हरिता-
त्कश्यपात्
— हरितः कश्यपः शिल्पात्
कश्यपात्

हरिततृण

Kaush. 2. 8. हरिततृणे वा प्रत्यस्यति

हरिश्चन्द्र

Maitri. 1. 4. *vide* आदि

हर्ष

Katha. 2. 12. धीरो हर्षशोकौ जहाति
Parama. 2. *vide* आदि
Gîtâ. 1. 12. तस्य सञ्जनयन् हर्षम्
12. 15. हर्षामर्षभयोद्वेगैः
18. 27. हर्षशोकान्वितः

हव

Mahânâr.20. 3. हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रं
ह्वयामि

हविष्मन्त्

Katha. 4. 8. हविष्मद्भिर्मनुष्येभिः
Śwet. 4. 22. हविष्मन्तः सदमित्त्वा ह-
वामहे

हविस्

Ait. 2. 5. यस्यै कस्यै च देवतायै ह-
विर्गृह्यते
Śwet. 4. 13. कस्मै देवाय हविषा विधे-
म Nrip. 2. 4.

Maitri. 6. 16. होता भोक्ता हविर्मन्त्रः
34. यजमानो हविर्गृहीत्वा
37. यद्धविरग्नौ हूयते (यज्ञा-
ग्नौ MS.)
Mahânâr. 25. 1. यद्भाति तद्धविः
Śiras. 1. हविर्हविषा . . तर्पयामि
Garbha. 5. कर्मेन्द्रियाणि हवींषि
Prâṇâg. 4.
Prâṇâg. 2. हविरविष्कन्दी
3. शारीरयज्ञस्य . . कानि ह-
वींषि
Jâbâla. 4. उद्धृत्य प्राश्नीयात् साज्यं
हविरनामयम्
Gîtâ. 4. 24. ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः

हव्यवाहन

Mund.1. 2. 2. समिद्धे हव्यवाहने

हस्

Chhâ. 3. 17. 3. यद्धसति यज्जक्षति

हस्त

Kaush. 1. 7. केन कर्माणीति हस्ताभ्या-
मिति
3. 5. हस्तावेवास्या एकमङ्गमुदू-
ल्हम्
6. प्रज्ञया हस्तौ समारुह्य ह-
स्ताभ्यां सर्वाणि कर्माण्या-
प्नोति
7. न हि प्रज्ञापेतौ हस्तौ क-
किंचन प्रज्ञापयेयाताम्
Brih. 1. 4. 6. हस्ताभ्यां चाग्निमसृजत
2. 4. 11. सर्वेषां कर्मणां हस्तावेका-
यनम् 4. 5. 12.
3. 2. 8. हस्तौ वै ग्रहः . . हस्ताभ्यां
हि कर्म करोति
13. आहर सोम्य हस्तम्
3. 8. 2. द्वौ बाणवन्तौ . . हस्ते कृ-
त्वा

Tait. 3. 10. 2. कर्मेति हस्तयोः
Śwet. 3. 6. यामिषुं..हस्ते बिभर्षि
Nîla. 5.
Mahânâr. 10. 1. सप्त हस्तासो अस्य
14. 3. पापमकार्षं..हस्ताभ्यां 4.
Praśna. 4. 8. हस्तौ चादातव्यं च
Nîla. 13. याश्च ते हस्त इषवः
17. हस्ते बभूव ते धनुः
Yogaśi. 2. हस्तौ पादौ च संवृतौ
Piṇḍa. 6. हस्ताङ्गुल्यः शिरो मुखम्
Aśrama. 4. शिक्यकमण्डलुहस्ताः
Gopî. 4. य एवं विद्वान् यतिहस्ते दद्यात्
Kâmap. 9. हस्ताः शंखादिभिर्युताः
Mukti. 2. 42. हस्तं हस्तेन सम्पीड्य
Gîtâ. 1. 30. गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्

हस्तगृहीत

Chhâ. 6. 16. 1. पुरुषं ..हस्तगृहीतमानयन्ति

हस्तिन्

Ait. 5. 3. अश्वा गावः पुरुषा हस्तिनः
Bṛih. 4. 3. 20. हस्तीव विच्छाययति
5. 14. 8. कथं हस्ती भूतो वहसि
Gîtâ. 5. 18. ब्राह्मणे गवि हस्तिनि

हस्तिहिरण्य

Chhâ. 7. 24. 2. हस्तिहिरण्यं दासभार्यम्
Kaṭha. 1. 23. हस्तिहिरण्यमश्वान्

हस्त्यृषभ

Bṛih. 4. 1. 2. हस्त्यृषभं सहस्रं ददामीति
3—7.

हा (त्यागे)

Chhâ. 4. 16. 3. हीयते ऽन्यतरा
4. न हीयते ऽन्यतरस्
6. 11. 2. यद्येकां शाखां जीवो जहाति..द्वितीयां जहाति..तृतीयां जहाति..सर्वं जहाति
Bṛih. 2. 1. 10. नैनं पुरा कालात्प्राणो जहाति
3. 2. 12. किमेनं न जहाति
4. 1. 2. नैनं वाग्जहाति
3. नैनं प्राणो जहाति
4. नैनं चक्षुर्जहाति
5. नैनं श्रोत्रं जहाति
6. नैनं मनो जहाति
7. नैनं हृदयं जहाति
5. 5. 3. हन्ति पाप्मानं जहाति च 4.
Tait. 2. 5. 1. शरीरे पाप्मनो हित्वा
Kaṭha. 2. 1. हीयते ऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते
12. धीरो हर्षशोकौ जहाति
Śwet. 4. 5. जहात्येनां भुक्तभोगाम्
Mahânâr. 9. 2.
5. 14. ते जहुस्तनुम्
Maitri. 4. 1. येनेदं हित्वात्मन्नेव सायुज्यमुपैति
Praśna. 3. 11. न हास्य प्रजा हीयते
Gauḍa. 3. 16. *vide* दृष्टि
4. 9. स्वभावं न जहाति या
90. हेयज्ञेयाप्यपाक्यानि
Śiras. 5. क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलम् (bis).
Sarvop. 3. स्वयमेवमाविर्भावतिरोभावहीनः
Parama. 1. अयं ब्रह्माण्डं च हित्वा
2. ऽहर्षासूयाहंकारादींश्च हित्वा
Mukti. 2. 60. स्वरूपं यज्जहाति तत्
64. दर्शनादर्शने हित्वा
Gîtâ. 2. 33. ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा
50. बुद्धियुक्तो जहातीह

हाइकार

Chhâ. 1. 13. 1. वायुर्हाइकारः

हाउकार

Chhâ. 1. 13. 1. अयं वाव लोको हाउकारः

हाटक

Parama. 3. हाटकादीनां नैव परिग्रहेत्

हानि

Gîtâ. 2. 65. हानिरस्योपजायते

हार

Chhâ. 4. 2. 3. हारेत्वा शूद्र तवैव सह गोभिरस्तु (see note to p. 295, Vol. iii, Muir's *Sanskrit Texts*).

हारिद्रुमत

Chhâ. 4. 4. 3. हारिद्रुमतं गौतमम्

हा३वु

Tait. 3. 10. 5. हा३वु हा३वु हा३वु

हिंस्

Ait. 4. 2. तस्मादेनां न हिनस्ति
Brih. 1. 4. 11. य उ एनं हिनस्ति
— यथा श्रेयांसं हिंसित्वा
5. 5. 1. नैनं विद्वांसमनृतं हिनस्ति
Śwet. 3. 6. मा हिंसीः पुरुषं जगत्
Muṇḍ.1. 2. 3. आसप्तमांस्तस्य लोकान् हिनस्ति
Mahânâr. 2. 9. मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्वम्
Nîla. 5. मा हिंसीत्पुरुषान्मम
Gîtâ. 13. 28. न हिनस्त्यात्मनात्मानम्

हिंसक

Maitri. 7. 9. वेदादिविद्याविहिंसकधर्माभिध्यानमस्तु

हिंसा

Maitri. 3. 5. हिंसा रतिर्हिंष्टिः
Brahma. 1. पुरुषः प्राणो हिंसा
Gîtâ. 18. 25. अनुबन्धं क्षयं हिंसाम्

हिंसात्मक

Gîtâ. 18. 27. लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः

हिंकार

Kaush. 2. 11. गवां त्वा हिङ्कारेणाभिहिङ्करोमि
Chhâ. 1. 13. 2. प्रजापतिर्हिङ्कारः
2. 2. 1. पृथिवी हिङ्कारः 2. 17. 1.
2. द्यौर्हिङ्कारः
2. 3. 1. पुरोवातो हिङ्कारः
2. 4. 1. मेघो [illegible]संप्लवते स हिङ्कारः
2. 5. 1. वसन्तो हिङ्कारः 2. 16. 1.
2. 6. 1. अजा हिङ्कारः 2. 18. 1.
2. 7. 1. प्राणो हिङ्कारः
2. 8. 1. यत्किञ्च वाचो हुमिति स हिङ्कारः
2. 9. 2. तस्य यत्पुरोदयात्स हिङ्कारः
2. 10. 1. हिङ्कार इति त्र्यक्षरम्
2. 11. 1. मनो हिङ्कारः
2. 12. 1. अभिमन्थति स हिङ्कारः
2. 13. 1. उपमन्त्रयते स हिङ्कारः
2. 14. 1. उद्यन् हिङ्कारः
2. 15. 1. अभ्राणि संप्लवन्ते स हिङ्कारः
2. 19. 1. लोम हिङ्कारः
2. 20. 1. अग्निर्हिङ्कारः
2. 21. 1. त्रयी विद्या हिङ्कारः

हिंकारभाजिन्

Chhâ. 2. 9. 2. हिंकारभाजिनो ह्येतस्य सा

हिंकृ

Chhâ. 1. 12. 4. ते ह समुपविश्य हिञ्चक्रुः
2. 9. 2. तस्मात्ते हिङ्कुर्वन्ति
Bṛih. 6. 3. 4. हिङ्कृतमसि हिङ्क्रियमाणमसि

हितकाम्या

Dhyâna. 1. योगिनां हितकाम्यया (one MS. omits.); Yogat. 1.
Gîtâ. 10. 1. वक्ष्यामि हितकाम्यया

हिततम

Kaush. 3. 1. यं त्वं मनुष्याय हिततमं मन्यसे
— एतदेवाहं मनुष्याय हिततमं मन्ये

हितपुत्र

Mukti. 1. 49. हितपुत्राय मारुते

हिता

Kaush. 4. 19. हिता नाम पुरुषस्य नाड्यः
Bṛih. 2. 1. 19. हिता नाम नाड्यः 4. 2. 3; 4. 3. 20.

हिमांशुप्रभा

Prâṇâg. 2. हिमांशुप्रभाभिः प्रजननकर्मा (3 MSS. have °प्रभुः one °प्रभाः and one °प्रभः)

हिमालय

Gîtâ. 10. 25. स्थावराणां हिमालयः

हिरण्मय

Chhâ. 1. 6. 6. य एषो ऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते
8. 5. 3. प्रभुविमितं हिरण्मयम्,
Bṛih. 4. 3. 11. हिरण्मयः पुरुष एकहंसः 12.
5. 15. 1. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् Îśâ. 15; Maitri. 6. 35.
6. 4. 22. हिरण्मयी अरणी
Tait. 1. 6. 1. मनोमयो ऽमृतो हिरण्मयः
Maitri. 6. 1. य एषो ऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः Mahânâr. 12. 2.
8. अपिहितः सहस्राक्षेण हिरण्मयेनाण्डेन
Muṇḍ. 2. 2. 9. हिरण्मये परे कोशे
Mahânâr. 5. 9. एष मृत्यो हिरण्मयः.. हिरण्मयं.. सुवः.. संशिशाधि
Kaivalya. 20. हिरण्मयो ऽहम्
Nṛip. 1. 4. अन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः
Mahâ. 3. तासु तेजो हिरण्मयमण्डम्

हिरण्य

Kaush. 2. 11. हिरण्यमस्तृतं भव
Chhâ. 5. 10. 9. स्तेनो हिरण्यस्य
Bṛih. 6. 2. 7. अस्ति हिरण्यस्यापात्तम्
Parama. 3. हिरण्यं रसेन दृष्टम्
— हिरण्यं रसेन स्पृष्टम्
— हिरण्यं रसेन ग्राह्यम्
— हिरण्यं यो न दृष्टं च न स्पृष्टं च न ग्राह्यं च

हिरण्यकेश

Chhâ. 1. 6. 6. हिरण्यश्मश्रुः हिरण्यकेशः

हिरण्यगर्भ

Swet. 3. 4. हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वम्
4. 12. हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानम् Mahânâr. 10. 3.
Maitri. 6. 8. एष हि खल्वात्मा.. हिरण्यगर्भः 7. 7.

Mahânâr. 1. 12. अद्भ्यः सम्भूतो हिरण्यगर्भः
Nrisut. 1. तैजसो हिरण्यगर्भः 2.
9. सर्वाहम्मानी हिरण्यगर्भः
Mahâ. 4. इत्याह भगवान् हिरण्यगर्भः
Râmot. 5. यो वै श्रीरामः..यो हिरण्यगर्भः (37).

हिरण्यदंष्ट्र

Chhâ. 4. 3. 7. हिरण्यदंष्ट्रो बभसः

हिरण्यनाभ

Prasna. 6. 1. हिरण्यनाभः कौसल्यो राजपुत्रः

हिरण्यनिधि

Chhâ. 8. 3. 2. हिरण्यनिधिं निहितं..न विन्देयुः

हिरण्यपति

Mahânâr. 13. 4. नमः..हिरण्यपतये

हिरण्यबाहु

Mahânâr. 13. 4. नमो हिरण्यबाहवे

हिरण्यरूप

Mahânâr. 13. 4. नमः..हिरण्यरूपाय

हिरण्यवर्ण

Maitri. 6. 34. हिरण्यवर्णः शकुनः
Mahânâr. 13. 4. नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय
16. 7. विश्वरूपा हिरण्यवर्णा

हिरण्यवस्थ

Maitri. 6. 1. यः पश्यतीमां हिरण्यवस्थात्

हिरण्यशृङ्ग

Mahânâr. 4. 11. हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये

हिरण्यश्मश्रु

Chhâ. 1. 6. 6. हिरण्यश्मश्रुः हिरण्यकेशः

हीनतर

Mund. 1. 2. 10. इमं लोकं हीनतरं चाविशन्ति

हु

Kaush. 2. 3. स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति
4. एता आज्याहुतीर्जुहोति
— वाचं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा (similarly five times more).
5. प्राणं तदा वाचि जुहोति
— वाचं तदा प्राणे जुहोति
— जाग्रच्च स्वपंश्च संततं जुहोति
— अग्निहोत्रं न जुहवांचक्रुः
Chhâ. 2. 24. 5. अथ जुहोति 9, 14.
4. 17. 4. भूः स्वाहेति गार्हपत्ये जुहुयात्
5. भुवः स्वाहेति दक्षिणाग्नौ जुहुयात्
6. स्वः स्वाहेत्याहवनीये जुहुयात्
5. 2. 4. अग्नावाज्यस्य हुत्वा 5.
5. 4. 2. एतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति Brih. 6. 2. 9.
5. 5. 2. देवाः सोमं राजानं जुह्वति Brih. 6. 2. 10.
5. 6. 2. देवा वर्षं जुह्वति
5. 7. 2. देवा अन्नं जुह्वति Brih. 6. 2. 12.
5. 8. 2. देवा रेतो जुह्वति Brih. 6. 2. 13.
5. 19. 1. यां प्रथमामाहुतिं जुहुयात्तां जुहुयात्प्राणाय स्वाहेति (similarly 4 times more).
5. 24. 1. य इदमविद्वानग्निहोत्रं जुहोति यथाङ्गारानपोह्य भस्मनि जुहुयात्तादृक् तत्स्यात्

Chhâ. 5. 24. 2. य एतदेवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति 3.
— तस्य . . सर्वेष्वात्मसु हुतं भवति
4. आत्मनि हैवास्य तद्वैश्वानरे हुतं स्यात्
Brih. 1. 4. 16. यज्जुहोति यद्यजते तेन देवानां लोकः
1. 5. 2. हुतं च प्रहुतं च
— जुह्वति च प्र च जुह्वति
— संवत्सरं पयसा जुह्वत्
— यदहरेव जुहोति
3. 1. 8. कति . . आहुतीर्होष्यति
— या हुता उज्ज्वलन्ति या हुता अतिनेदन्ते या हुता अधिशेरते
3. 8. 10. यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोके जुहोति
4. 1. 2. इष्टं हुतमाशितं पायितम् 4. 5. 11.
6. 2. 2. यतिथ्यामाहुत्यां हुतायाम्
11. एतस्मिन्नग्नौ देवा वृष्टिं जुह्वति
14. देवाः पुरुषं जुह्वति
16. ते पुनः पुरुषाग्नौ हूयन्ते
6. 3. 1. मन्थं सन्नीय जुहोति
— तेभ्यो ऽहं भागधेयं जुहोमि
2. अग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रवमवनयति (20 times).
13. आज्यस्य जुहोति
6. 4. 12. शरभृष्टीः . . जुहुयात्
— मम समिद्धे ऽहौषीः (four times).
19. स्थालीपाकस्योपघातं जुहोति . . इति हुत्वा . . प्राश्नाति
24. पृषदाज्यस्योपघातं जुहोति
— मयि प्राणांस्त्वयि मनसा जुहोमि

Maitri. 6. 26. उदरे ऽग्नौ जुहोति
— अनामये ऽग्नौ जुहोति
36. अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः
37. एषाग्नौ हुतमादित्यं गमयति
— यद्धविरग्नौ हूयते तदादित्यं गमयति
38. अग्निहोत्रं जुह्वानो लोभजालं भिनत्ति
Muṇḍ. 1. 2. 2. श्रद्धया हुतम्
3. अविधिना हुतम्
3. 2. 10. स्वयं जुह्वत एकर्षिम्
Mahânâr. 5. 10. अहमेवाहं मां जुहोमि
9. 11. स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्
14. 3. सत्ये ज्योतिषि जुहोमि
4. सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि
15. 8. अमृतं जुहोमि (5 times) 9 (5 times).
16. 1. अमृतं हुतम् (5 times).
17. 6. यांस्ते सोम प्राणांस्ताञ्जुहोमि
25. 1. यदस्य विज्ञानं तज्जुहोति
Praśna. 3. 5. हुतमन्नं समं नयति
Siras. 3. हुतमहुतं दत्तमदत्तम्
Prâṇâg. 1. अमृतं प्राणे जुहोमि
— अङ्गुष्ठेन च प्राणे जुहोति
— तूष्णीमेकामेकऋषौ जुहोति
2. अग्निहोत्रं जुहोमीति
Nyâsa. 1. अग्नये स्विष्टकृत इति हुत्वा
— अग्नावरणी हुत्वा
— आज्याहुतीर्जुहुयात्
Kaṭhaśru. 3. द्वादशरात्रं पयसाग्निहोत्रं जुहुयात्
— दारुपात्राण्यग्नौ जुहुयात्
— मृन्मयाण्यप्सु जुहुयात्
— भूः स्वाहेत्यप्सु जुहुयात्

Jâbâla. 4. यद्यग्निं न विन्देदप्सु जुहुयात्
— सर्वाभ्यो देवताभ्यो जुहोमि स्वाहेति हुत्वा
Gitâ. 4. 24. ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्
26. संयमाग्निषु जुह्वति
— इन्द्रियाग्निषु जुह्वति
27. आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति
29. अपाने जुह्वति प्राणम्
30. प्राणान्प्राणेषु जुह्वति
9. 16. अहमग्निरहं हुतम्
27. यज्जुहोषि ददासि यत्
17. 28. अश्रद्धया हुतं दत्तम्

हुंकार

Chhâ. 1. 13. 3. सञ्चरो हुंकारः
Râmap. 74. हुंकारं चात्र रामस्य

हुतसंवित्क

Nṛisut. 3. शो ऽमृतो हुतसंवित्कः

हुताशन

Maitri. 6. 38. सोममध्ये हुताशनः

हुम्

Chhâ 2. 8. 1. यत्किंच वाचो हुमिति स हिंकारः
Nṛip. 2. 2. ओं कवचाय हुम्

1. हृ

Kaush. 1. 1. स्वाध्यायमधीत्य हरामहे
2. 1. सर्वा देवताः..बलिं हरन्ति 2. 2.
— सर्वाणि भूतानि..बलिं हरन्ति 2. 2.
Chhâ. 2. 21. 4. सर्वा दिशो बलिमस्मै हरन्ति
5. 9. 2. तं प्रेतं दिष्टमितो ऽग्नय एव हरन्ति
Bṛih. 4. 1. 2. नाननुशिष्य हरेतेति 3—7.
Bṛih. 5. 11. 1. यं प्रेतमरण्यं हरन्ति
6. 2. 14. अथैनमग्नये हरन्ति
Katha. 1. 7. हर वैवस्वतोदकम्
Mahânâr. 4. 1. सर्वं हरतु मे पापम्
6. मृत्तिके हर मे पापम्
20. 1. तेभ्यो बलिं पुष्टिकामो हरामि
Praśna. 2. 7. प्रजास्त्विमा बलिं हरन्ति
Nṛisut. 4. भृङ्गप्रोतान्पदान् स्पृष्ट्वा ... त्वा (हत्वा Nârâyaṇa)
Krish. 13. तेषां ज्ञानं हृतं क्षणात्
Gitâ. 2. 60. हरन्ति प्रसभं मनः
67. तदस्य हरति प्रज्ञाम्
6. 44. ह्रियते ह्यवशो ऽपि सः

2. हृ

Bṛih. 5. 3. 1. त्र्यक्षरं हृदयमिति हृ इत्येकमक्षरम्

हृतज्ञान

Gitâ. 7. 20. कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः

हृत्पंकज

Vâsu. 3. हृत्पङ्कजे स्वमात्मानम्

हृत्पद्म

Atmapra. 1. हृत्पद्ममध्ये सर्वं तत्प्रज्ञानम्

हृत्पद्मस्थ

Vâsu. 3. हृत्पद्मस्थं ततो ऽभ्यसेत् (two MSS. read हृत्पद्मे तु)

हृत्पुण्डरीक

Kaivalya. 5. हृत्पुण्डरीकं विरजं विशुद्धम्

हृत्पुष्कर

Maitri. 6. 1. एषो ऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितः 2.

हृत्स्थ

â. 4. 42. हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः

हृद्

hâ. 8. 3. 3. स वा एष आत्मा हृदि तस्यैतदेव निरुक्तं हृदयमिति तस्माद्धृदयम्

h. 4. 3. 7. हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः

4. 4. 7. कामा ये ऽस्य हृदि श्रिताः Katha. 6. 14.

tha. 6. 9. हृदा मनीषा मनसाभिक्लृप्तः Śwet. 13. 3; 4. 17, 20; Mahânâr. 1. 11.

'et. 2. 8. हृदीन्द्रियाणि मनसा संनिवेश्य

ıitri. 6. 27. हृद्याकाशमयं कोशम्

30. दीपवद्यः स्थितो हृदि

34. हृद्यादित्ये प्रतिष्ठितः

— हृदि यावद्गतक्षयम्

7. 11. स्वजाभियोगाद्धृदि सम्प्रयुक्तम्

ahânâr. 13. 3. वोचेम शन्तमं हृदे

24. 1. ज्ञात्वा तमेवं मनसा हृदा च

:aśna. 3. 6. हृदि ह्येष आत्मा

auda. 1. 2. आकाशे च हृदि प्राज्ञः

rip. 1. 1. हृदि प्रतीष्य कवयो मनीषा

shur. 3. मनो हृदि निरुध्य च Gîtâ. 8. 12.

iras. 8. हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः Brahma. 2.

— हृदि त्वमसि यो नित्यम्

arbha. 5. हृदि दक्षिणाभिः

rahma. 2. हृद्याकाशे तद्विज्ञानमाकाशम्

— तद्धृदयं हृद्याकाशम्

Brahma. 2. हृदि प्राणश्च ज्योतिश्च

— हृदि चैतन्ये तिष्ठति

Brahmab. 4. सन्निरुद्धं मनो हृदि

5. यावद्धृदि गतं क्षयम्

Amṛita. 34. प्राण आद्यो हृदि स्थाने

Dhyâna. 12. कुम्भकेन हृदि स्थाने

Tejo. 1. विश्वातीतं हृदि स्थितम्

Yogaśi. 3. हृत्कृत्वा परमेष्ठिनम्

Yogat. 9. हृदि स्थाने स्थितं पद्मम्

Piṇḍa. 6. हृत्कंठं तालु जायते

Râmap. 61. लिखेद्बीजं हृदादिभिः

Mukti. 2. 40. बलन्ति हृदि वासनाः

51. प्राणो यावन्नाभ्युदितो हृदि

Gîtâ. 13. 17. हृदि सर्वस्य धिष्ठितम्

15. 15. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः

हृदन्तर

Maitri. 2. 6. हृदन्तरादकृतार्थो ऽमन्यत

हृदय

Ait. 1. 4. हृदयं निरभिद्यत हृदयान्मनः

2. 4. चंद्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्

5. 2. यदेतद्धृदयं मनश्चैतत्

Kaush. 2. 8. यन्मे सुसीमं हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्

10. हृदयमभिमृशत्यसे सुसीमे हृदये श्रितम्

11. हृदयादधिजायसे Bṛih. 6. 4. 9.

4. 19. हृदयात्पुरीततमभिप्रतन्वन्ति

Chhâ. 3. 12. 4. यदिदमस्मिन्नन्तःपुरुषे हृदयम्

9. यो ऽयमन्तर्हृदय आकाशः

3. 13. 1. एतस्य हृदयस्य पंच देवसुषयः

Chha. 3. 14. 3. एष म आत्मान्तर्हृदये 4.
5. 18. 2. हृदयं गार्हपत्यः
8. 1. 3. तावानेषो ऽन्तर्हृदय आकाशः
8. 3. 4. हृद्ययमिति तस्माद्धृदयम्
8. 6. 1. या एता हृदयस्य नाड्यः
6. शतं चैका च हृदयस्य नाड्यः Katha. 6. 16.

Brih. 2. 1. 17. य एषो ऽन्तर्हृदय आकाशः 4. 2. 3; 4. 4. 22. Tait. 1. 6. 1.
19. हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते
2. 4. 11. सर्वासां विद्यानां हृदयमेकायनम् 4. 5. 12.
3. 9. 11. हृदयं लोकः 14, 16, 17.
20. कस्मिन्नु रूपाणि.. हृदये .. हृदयेन हि रूपाणि जानाति हृदये ह्येव रूपाणि
21. कस्मिन्नु श्रद्धा ..हृदये.. हृदयेन हि श्रद्धां जानाति हृदये ह्येव श्रद्धा
22. कस्मिन्नु रेतः..हृदये.. हृदयादिव सृप्तो हृदयादिव निर्मित इति हृदये ह्येव रेतः
23. कस्मिन्नु सत्यं..हृदये.. हृदयेन हि सत्यं जानाति हृदये ह्येव सत्यम्
24. कस्मिन्नु वाक्..हृदय इति कस्मिन्नु हृदयं प्रतिष्ठितम्
4. 1. 7. हृदयं वै ब्रह्मेति (bis).
— हृदयमेवायतनम्
— का स्थितिता..हृदयमेव
— हृदयं वै..आयतनं हृदयं वै..प्रतिष्ठा हृदये ह्येव सर्वाणि भूतानि प्रतिष्ठितानि
— हृदयं वै..परमं ब्रह्म

Brih. 4. 1. 7. नैनं हृदयं जहाति
4. 2. 3. य एषो ऽन्तर्हृदये लोहितपिण्डः
— यदेतदन्तर्हृदये जालकम्
— हिता नाम नाड्यो ऽन्तर्हृदये
— हृदयादूर्ध्वा नाड्युच्चरति
4. 3. 22. तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान् हृदयस्य
4. 4. 1. हृदयमेवान्ववक्रामति
2. एतस्य हृदयस्याग्रं प्रद्योतते
5. 3. 1. एष प्रजापतिर्यद्धृदयम्
— तदेतत् त्र्यक्षरं हृदयमिति
5. 6. 1. अन्तर्हृदये यथा व्रीहिर्वा

Katha. 6. 15. हृदयस्येह ग्रन्थयः
17. सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः Swet. 3. 13; 4. 17.

Maitri. 6. 17. यश्चायं हृदये यश्चासा आदित्ये स एष एकः 7. 7.
7. 7. एष हि खल्वात्मान्तर्हृदये
11. हृदयादायती तावत्..सारणी

Mund. 2. 1. 4. हृदयं विश्वम्
2. 2. 7. हृदयं सन्निधाय..परिपश्यन्ति

Mahânâr. 11. 7. हृदयं चाप्यधोमुखम् (3 MSS. read सुषिरं); Mahâ. 3 (हृदये).
8. हृदयं तद्विजानीयात् Brahma. 3.
25. 1. हृदयं यूपः

Gauda. 1. 28. सर्वस्य हृदये स्थितम्
Nrip. 2. 2. ओं हृदयाय नमः
Nrisht. 3. उकारं विष्णुं हृदये
Kshur. 4. किञ्चिद्धृदयमुन्नतम्

ras. 5. बालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये
6. मूर्द्धानमस्य संसीव्य . . हृदयं च यत्
arbha. 2. हृदये ऽन्तराग्निः
— वायुतो हृदयं प्राजापत्यात् क्रमात्
5. हृदयं पलान्यष्टौ
rahma. 2. नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्द्धा
râṇâg. 2. हृदयमन्वालभ्य जपेत्
— दक्षिणाग्निर्भूत्वा हृदये तिष्ठति
âda. 4. जनलोकस्तु हृदये
yâsa. 5. संस्थाप्य हृदयं तपः
laṁsa. 2. हृदये ऽष्टदले हंसात्मानं ध्यायेत्
— हृदयाद्यङ्गन्यासकरन्यासौ
âsu. 2. ललाटकण्ठहृदयबाहुमूलेषु
— शिरोललाटहृदयेषु
3. हृदये चिन्तयेद्धरिम्
Skanda. 8. शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः
Mukti. 1. 38. हृदयं कुण्डली भस्म
1. *vide* सरस्वतीरहस्य
2. 20. हृदयेनात्तसर्वेहः
Gitâ. 1. 19. हृदयानि व्यदारयत्
2. 3. क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यम्

हृदयग्रन्थि

Muṇḍ.2. 2. 8. भिद्यते हृदयग्रन्थिः
Mukti. 2. 13. हृदयग्रन्थयो दृढाः

हृदयज्ञ

Chhâ. 7. 2. 1. हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च
7. 7. 1.
— न हृदयज्ञो नाहृदयज्ञः

हृदयकमल

Vâsu. 3. हृदयकमलमध्ये वा

हृदयस्थ

Brahma. 3. सुषुप्तं हृदयस्थं तु
Vâsu. 3. हृदयस्थोर्ध्वपुण्ड्रमध्ये

हृदयान्तर्गत

Maitri. 7. 11. हृदयान्तर्गते सुषौ

हृदिव्यवस्थ

Garbha. 2. हृदिव्यवस्थानीति

हृदिस्थ

Śwet. 4. 20. हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं विदुः (This is the reading of printed text, but it has very little support).
Śiras. 3. हृदिस्था देवताः सर्वाः
Brahma. 2.

हृद्ग्रन्थि

Sarvop. 2. तल्लिङ्गशरीरं हृद्ग्रन्थिरित्युच्यते

हृद्देश

Gitâ. 18. 61. हृद्देशे ऽर्जुन तिष्ठति

हृद्वार

Amṛita. 26. हृद्वारं वायुद्वारं च

हृद्य

Gitâ. 17. 8. रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः

हृद्याकाश

Bṛih. 2. 5. 10. अयमध्यात्मं हृद्याकाशः

हृम्

Râmap. 68. हृं स्रं भृं वृं लं शृं जृं च

हृष्

Râmap. 40. तेन हृष्टः कपीन्द्रो ऽसौ

Gîtâ. 11. 45. अदृष्टपूर्वं हृषितो ऽस्मि दृष्ट्वा
12. 17. यो न हृष्यति न द्वेष्टि
18. 76. हृष्यामि च मुहुर्मुहुः
77. हृष्यामि च पुनः पुनः

हृषीकेश

Gîtâ. 1. 15. पाञ्चजन्यं हृषीकेशः
21. हृषीकेशं तदा वाक्यम्
24. एवमुक्तो हृषीकेशः
2. 9. एवमुक्त्वा हृषीकेशम्
10. तमुवाच हृषीकेशः
11. 36. स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
18. 1. त्यागस्य च हृषीकेश

हृष्टरोमन्

Gîtâ. 11. 14. हृष्टरोमा धनञ्जयः

हेति

Nîla. 16. परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु
17. या ते हेतिर्मीढुष्टम

हेतु

Chhâ. 1. 3. 5. एतस्य हेतोर्व्यानमेवोद्गीथमुपासीत
Śwet. 5. 12. संयोगहेतुः
6. 5. संयोगनिमित्तहेतुः
16. संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः
17. नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय
Maitri. 6. 30. तस्मात् सर्गस्वर्गापवर्गहेतुर्भगवानसावादित्यः
Kaivalya. 10. ब्रह्म परमं याति नान्येन हेतुना
Gauḍa. 2. 1. संवृतत्वेन हेतुना
5. प्रसिद्धेनैव हेतुना
3. 26. अग्राह्यभावेन हेतुना
4. 14. हेतोरादिः फलं येषामादिर्हेतुः फलस्य च 15.
— हेतोः फलस्य चानादिः

Gauḍa. 4. 16. संभवे हेतुफलयोः
17. न ते हेतुः प्रसिध्यति
— अप्रसिद्धः कथं हेतुः
18. यदि हेतोः फलात्सिद्धिः फलसिद्धिश्च हेतुतः
20. न हि साध्यसमो हेतुः
23. हेतुर्न जायते ऽनादेः
37. तद्धेतुः स्वप्न इष्यते
53. द्रव्यं द्रव्यस्य हेतुः स्यात्
76. यदा न लभते हेतून्
78. हेतुं पृथगनाप्नुवन्
Brahmab. 9. हेतुदृष्टान्तवर्जितम्
Sarvop. 3. स्वरूपलाभहेतुर्भूत्वा
Parama. 2. संशयविपरीतमिथ्याज्ञानानां यो हेतुः
Gîtâ. 1. 35. त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः
9. 10. हेतुनानेन कौन्तेय
13. 20. कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः
— भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते
18. 15. पञ्चैते तस्य हेतवः

हेतुजाल

Śiras. 5. क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलम् (bis).

हेतुत्व

Gauḍa. 4. 37. तद्धेतुत्वात्तु तस्यैव सज्जागरितमिष्यते

हेतुफलाजाति

Gauḍa. 4. 54. एवं हेतुफलाजातिं प्रविशन्ति मनीषिणः

हेतुफलावेश

Gauḍa. 4. 55. यावद्धेतुफलावेशः 56.
— क्षीणे हेतुफलावेशे 56.

हेतुफलोद्भव

Gauḍa. 4. 55. तावद्धेतुफलोद्भवः
— नास्ति हेतुफलोद्भवः

हेतुमन्त्

Gîtâ. 13. 4. हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः

हेत्वभाव

Gauḍa. 4. 76. हेत्वभावे फलं कुतः

हेमन्त

Chhâ. 2. 5. 1. हेमन्तो निधनम् 2. 16. 1.
Maitri. 6. 33. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः शरद्धेमन्तः
7. 5. हेमन्तशिशिरा उदानः.. ऊर्ध्वा उद्यन्ति
Mukti. 2. 41. पद्मिन्य इव हेमन्ते

हेमपुण्डरीक

Atmapra. 1. तस्य य आत्मा हेमपुण्डरीकमध्ये

हेमाभ

Râmap. 27. हेमाभया द्विभुजया
28. हेमाभेनानुजेनैव

हैमवत

Kena. 25. उमां हैमवतीम्

होतृ

Kaush. 2. 6. यजुर्मय ऋङ्मयं होता (प्रवयति)
Chhâ. 4. 16. 2. वाचा होताध्वर्युरुद्गातान्यतराम्
Bṛih. 3. 1. 2. जनकस्य वैदेहस्य होताश्वलो बभूव
— प्रष्टुं दध्रे होताश्वलः
3. होत्रर्त्विजाग्निना वाचा वाग्वै यज्ञस्य होता
— सो ऽयमग्निः स होता
7. कतिभिरयमद्यर्ग्भिर्होतास्मिन्यज्ञे करिष्यति
10. होताश्वल उपरराम

Kaṭha. 5. 2. अन्तरिक्षसद्धोता Mahânâr. 9. 3; 17. 8; Nṛip. 3. 1.
Maitri. 6. 16. होता भोक्ता हविर्मन्त्रः
Mahânâr. 6. 7. सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि
25. 1. दक्षिणा वाग्घोता
Prâṇâg. 3. शारीरयज्ञस्य..को होता
4. होता चित्तम्

होतृषदन

Chhâ. 1. 5. 5. इति होतृषदनाद्धैवापि दुरुद्गीथमनुसमाहरति

होत्रा

Śwet. 2. 4. वि होत्रा दधे वयुनावित्

होम

Śwet. 5. 11. सङ्कल्पनस्पर्शनदृष्टिहोमैः
Muṇḍ. 2. 1. 8. सप्तार्चिषः समिधः सप्त होमाः
Nṛip. 5. 2. अनुष्टुभा होमं कुर्यात्
Râmot. 4. जपहोमार्चनादिभिः

होमय

Prâṇâg. 2. यज्ञपरिवृताहुतीर्होमयति

होमीय

Chhâ. 5. 19. 2. यद्भक्तं प्रथममागच्छेत्तद्धोमीयम्

होहोयि

Chhâ. 4. 1. 2. होहोयि भल्लाक्ष भल्लाक्ष (2 MSS. have भोभोयि)

ह्रद

Kaush. 1. 3. एतस्य ब्रह्मलोकस्यारो ह्रदः
4. स आगच्छत्यारं ह्रदम्

ह्रस्व

Nṛip. 3. 1. ह्रस्वा वा दीर्घा वा प्लुता वेति
— यदि ह्रस्वा भवति
Sikhâ. 1. स्थूलह्रस्वदीर्घप्लुतः

ह्रादुनि

Chhâ.5. 5. 1. ह्रादुनयो विस्फुलिंगाः
Bṛih. 6. 2. 10.

ह्री

Bṛih. 1. 5. 3. ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एव Maitri. 6. 30.

Tait. 1. 11. 3. श्रिया देयं ह्रिया देयम्

Râmap. 66. विलिखेल्केसरे ह्रियम्

Gitâ. 16. 2. मार्दवं ह्रीरचापलम्

ह्लादिनी (= द)

Râmap. 75. ह्लादिन्ययो दीर्घा समानदा

Râmap. 77. सप्रतिष्ठा ह्लादिनी त्वक्

ह्वे

Bṛih. 6. 4. 22. तं ते गर्भं हवामहे दशमासि सूतवे

Śwet. 4. 22. हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे

Mahânâr. 6. 6. अग्निमुग्रं हुवेम परमात्स्थात्

9. 5. विधर्त्तारं हवामहे

20. 3. ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रम्



PRINTED AT THE EDUCATION SOCIETY'S STEAM PRESS, BOMBAY.

